१ श्रीऋषभ देवजी.
२ श्रीअजित नाथजी.
३ श्रीसंभवजिन राज
४ श्रीअभिनंदन स्वामि.
५ श्रीसुमति नाथ.
६ श्रीपद्मप्रभ देव.
७ श्रीसुपार्श्वना थजी.
८ श्रीचंद्रप्रभ स्वामि.
९ श्रीसुविधि नाथजी
१० श्रीशीतलना थजी.
११ श्रीश्रेयांस जिन.
१२ श्रीवासुपू ज्यजी.
१३ श्रीविमलना थजी.
१४ श्रीअनंत नाथजी.
१५ श्रीधर्मना- थजी.
१६ श्रीशांतिना थजी.
१७ श्रीकुंथुना थजी.
१८ श्रीअरना थजी.
१९ श्रीमल्लीना थजी
२० श्रीमुनिसुव्रत स्वामि.
२१ श्रीनमिना थजी.
२२ श्रीनेमिना थजी.
२३ श्रीपार्श्वना थजी.
२४ श्रीवर्धमान स्वामि.

प्रस्तावना.

दृढ स्तंभ जेम मेहेलनी दृढताना कारणरूप छे, तेम दरेक शासननी प्रौढताना, ते शासनमां थएला महान पंमितो अने ज्ञानवंत एवा धुरंधर आचार्योनाअसाधा रण बुद्धिवैभवे रचाएला एवा सुविहितग्रंथो, कारणरूप छे; एमाटे कार्य करतां कारणनी यत्ना विशेषे करवी के, जेथीकरी कार्य निरंतर निर्विघ्नपणे जगत्नेविषे प्रव र्ते. कारणनी यत्नाए करी कार्यनीज अक्षयस्थिति रहे छे एटलुंज नही; पण तेनो उपभोग करनारा घणा जनोने आ संसारनेविषे घणां एक अगत्यनां बाह्यांतरंग सु खोनी सगवडता पण ते कारण करी आपेछे. चिरकालपर्यंत महान् वृक्षनुं अस्तित्व रा खवानी इच्छा करनारा रक्षपाले, ते वृक्षना मूलने जलसिंचनादिक करवुं; के जेथी क री ते वृक्ष, पोताना बीजा बाह्यना अवयवोने आपो आप पुष्टता मलतां निरंतर पत्र पुष्प फलादिके करी उपकार करतुं रहे छे.

हालमां आ दुषम कालनेविषे आपणा जिनशासनरूप धर्मवृक्षनां दृढ मूल, अ गाध बुद्धिवाला पंमितो अने आचार्यो—एउए रचेला परंपराए मोक्षसुखदायक एवा सुविहित ग्रंथोज छे. तेउने वर्त्तमान समयानुसारे ज्ञानरक्षणार्थे सद्बुणी सहेलो अने उत्तम तथा जेथी शुद्धधर्म प्रवृत्तिनी परंपरा चाले, ते उपाय ए छे के, ते ग्रंथोने शो धावी छपावीने बाहार पाडवा, तेउनो जगत्नेविषे प्रसार करवो, अल्पमूल्ये भाविकज नोने तेनो लाभ आपवो; इत्यादिक धर्मवृक्षमूलनी पोषण क्रिया तन मन अने धनथी करवी, ए आपणा दरेक साधर्मिकभाइउनुं सर्व अगत्यनां कामोमांनुं प्रथम कामछे.

अथवा एवा सुविहित ग्रंथोनुं संशोधन करी बीजा अप्रसिद्धग्रंथो महा प्रयासे अने महोटा खरचे पण जो ते ग्रंथो प्राप्त थता होय तो ते प्राप्त करी, तथा वली ते जो संस्कृत भाषामां होय तो तेनां गुर्जरभाषामां भाषांतर करावी छपावीने बाहार पाडवानुं महा दुर्घट अने अतिशय द्रव्यविनियोगनुं काम, जे माणस, मात्र शास नोन्नतिने माटेज, पोताना बीजां व्यवहारीक कृत्य मूकीने करे, तेने जेटलो पोता थी बने तेटलो तन मन अने धनथी आश्रय आपवो. वर्त्तमानसमयमां आपणा जिनशासननेविषे पंमितोनी न्यूनताने लीधे नवीन ग्रंथो रची शासनी उन्नति कर वी, तेम तो बनतुं नथी; ए दृढता तो बुद्धिनिधान एवा पूर्वाचार्यो संपूर्ण प्रकारे करी गया छे. हवे आपणुं काम मात्र एटलुंज छे के, जगत्जीवोना उपकार माटे पूर्वोक्त पंमितो सूरिउ प्रमुख जे ग्रंथोनी रचना करी गया छे, ते ग्रंथोने केटलाक

महान् सम्यक्दृष्टि पुरुषो लखावीने ज्ञानना भंमार जे करी गयाछे, अने ते ज्ञान भंमाराउ कालप्रबलताए अने अल्पबुद्धिउनी अज्ञानताए करी आधुनिककालनेवि षे बंधनपणुं पामी गोप्य रह्या छे; एटलुंज नही पण ते ग्रंथोना भंमारोने घणो का ल व्यतित थवाने लीधे तथा प्रमादनेयोगे पुनः ते ग्रंथोनो उद्धार न थवाने लीधे ते मांना घणा ग्रंथो तो विछेद गया छे, अने थोडाज ग्रंथो जे हालमां विद्यमान छे; ते उनो कोइपण रीते जगत्नेविषे प्रसार करी ते ग्रंथोना कर्त्ताउना परोपकार कृत्यनो लाभ सर्व साधर्मिकभाइउने सुखे लेवा देवो जोइए. बीजां बधां दानो करतां ज्ञानदान ए सर्वोत्कृष्ट छे. आ शिवसुखकारक शासन छे, अने आ मिथ्यात्वि शासन छे, एवो विवेकमय जे अनुभव ते ज्ञानना योगेज थाय छे. अने एवो शुद्धविवेक प्रगट थये भविकजनो, शुद्धशासननो आश्रय करी परभवनेविषे कल्याणकारक देव संपदा अथवा मोक्षसंपदा प्राप्त करे छे. अर्थात् भविकजनोनी परलोकसुख संबंधी संपूर्ण सामग्री कहीए तो ते मात्र एक उत्तम ज्ञानज छे. एवुं जे उत्तम ज्ञान, ते पूर्वाचार्योए ग्रंथ रूपे साक्षात् मूर्तिमंत स्थापन कर्युंछे; तेनी आधुनिककालने अनुसरता संस्कारे प्र तिष्ठा करी अर्थात् तेने शोधावी छपावीने भविकजनोना उपकार माटे अने फरी वि छेद नजाय तेमाटे जगत्नेविषे विस्तार करवो; के जे थकी हालना समयमां थएली पंमितोनी अत्यंत न्यूनता पूराय. ए विस्तार करनारने, तेमज एवा शुभ काममां तन मन धनथी आश्रय आपनाराउने अप्रमेय अने अखंम यशछे; ए वगर विवादे स्वतःसिद्ध छे.

वली जेम सैन्य, किल्ला, अने कोषादिक ए राज्यनां अंगो छे; ते अंगो जेटला प्र माणमां सबल होय, तेटला प्रमाणमां ते राज्यनी प्रबलता अने दृढता लेखाय छे. परचक्रीउना मनमां भय प्रवेश कराववा माटे अने स्वचक्रीउ, बलवो करी स्वतंत्र थवा माटे अथवा परराज्यमां जवामाटे उद्योग न करे, तेमाटे तेउने आंकोशमां रा खवा ए राज्यांगोनी प्रबलता तेउना मनमां उतरे एवीरीते निरंतर प्रसिद्धपणे बताव वी, ए अतिशय जरुरनुं कामछे; तेम इहां सुविहित ग्रंथो, ए धर्मरूपी राज्यनुं एक मु ख्यमां मुख्य अंगछे; ते अंगनी प्रबलताथी अन्य तीर्थिउना मनमां जिनधर्मनेविषे हमेश उत्तम विचार, अने साधर्मिकभाइउने शुद्धदेव, शुद्धगुरु, अने शुद्धधर्म उपर नि रंतर श्रद्धा रहे, अने कुदेव कुगुरु तथा कुधर्मना आग्रहथी तेउ दूर रहे, ए कारणमाटे ते अंगने मजबुत राखवुं, ए खरेखर महा आवश्यकतानुं कामछे. एक देशमां सर्वोत्तम रत्नोनी खाण छे, ते संबंधी त्यांना सर्व लोकोने माहिती पण छे; तथापि प्रमाद, अज्ञान अने आलस प्रमुख अवगुणोएकरी ते लोको ते रत्नोनी आवश्यकता छतां ते रत्नोने खाणमांज रहेवा देवामां कोण जाणे शुं मोटुं पोतानुं महापण समजता होय!! परंतु

कालांतरे तेउनी अप्रमादी, ज्ञानी अने उद्योगी एवी प्रजानी जाणमां ते उत्तम रत्नोनी खाण आवी; ते समये तेउ ते रत्नोने खाणमांथी बहार काढी तेनो उपयोग करती वेला वा रंवार पोताना वडीलोनी बुद्धिनो उपहास करशे के, आवां उत्तम रत्नोनी ते कालना आपणा वडिलोए कांइ गणना करी नही ? ए तेउनी बुद्धिने शुं कहेवुं? तेम धर्मना ग्रंथोने जगत्नेविषे न प्रसिद्ध करवामां जे लोको महापण समजता होय, ते उ ना महापणने शुं कहेवुं? कालांतरे अमूल्य ग्रंथोतो कोइ परीक्षकना अने शोधकबु द्धिवालाना हाथमां जशे, ते समये तेउनी आवश्यकताविषेनी उत्तम गणना थइ प्र सिद्धि थवानीज, तेनीसाथे अज्ञानीउनी अज्ञानबुद्धिनी ते समये जे हेलना थशे तेप ण कांइ जेवी तेवी नही थाय–सारांश सारी वस्तुनी गणना कालांतरे परीक्षकना हाथे जगत्नेविषे थवानीज, तो ते आपणे पोतेज कां न करीए ?

ए पूर्वोक्त कारणो शीवाय बीजां पण ए पुस्तको छपावी प्रसिद्ध करवानां घणां का रणो ज्ञानवृद्धिनांछे, ते यद्यपि अहीं प्रस्तावनामां गौरवता थाय, तेना जयनेलीधे द र्शाव्यां नथी, तथापि विवेकीजनोना मननेविषे ग्रंथो प्रसिद्ध करवानी रमणेता हर हमेश थइ रहेली छे, ए वात प्रसिद्धज छे. इत्यादिक हेतुउने माटेज में आ प्रकरण र त्नाकर नामनुं पुस्तक छापी प्रसिद्ध करवानुं काम चालुं कर्युं छे, तेमांनो प्रथम जाग तथा बीजो जाग [illegible] जाग पण सुज्ञजनो नी कृपाथी समा[illegible] [illegible]दिप्त थयो छे.

निरंतर धर्मे[illegible] [illegible]ावि एवा सुज्ञसा धर्मिक जाइउनी तथा साधुजनोनी सेवामां आ प्रकरणरत्नाकरनो त्रीजो जाग निवेदन करतां मने परम हर्षथायछे. अने एवे समये आपणा सर्व साधर्मिकजाइउने अति शय नम्रतापूर्वक विनती करुंछुंके, माणस कोइपण काममां निरंतर उद्योगवंत रह्योथ को ते कामना अनुजवे करी ते कामनी स्पष्टता तेनाथी उत्तरोत्तर जेम सारी थाय छे; अर्थात् कामु कामने शीखवे, तेम आ, सर्व साधर्मिकजाइउनी रुडी सहायताए में आरंजेला उद्योगने करतां मारो एमांने एमां केटलोक काल निर्गमन थयो छे;

तेणे करी ग्रंथोने शुद्ध केवी रीते करवा. तथा करावबा? साधर्मिकनाइउनी ज्ञानवृत्तिने अनुसरती गाथाना अर्थनी, श्लोकना अर्थनी, अने वाक्यरचनानी स्पष्टता केवीरीते करवी तथा करावबी? इत्यादिक वातोनो महारी अल्पबुद्धि प्रमाणे मने पण किंचित् उत्तरोत्तर अनुनव थयो ठे; अने ते अनुनवनो आ प्रकरणरत्नाकरना त्रीजा नागमां उपयोग कर्यो ठतां पण श्री प्रवचनसारोद्धारना स्थंमिल परठववाना एक हजार चोवीश नांगाना द्वारमां, तथा बीजा पण कोइ कोइ स्थले अशुद्धताना दोष, बुद्धिदोषे करी तथा दृष्टिदोषे करी तथा गुरुगम्यना अनावथी रह्या हशेज; ते मां कांइपण शक नथी. वली आ प्रकरणरूपी रत्नाकरनेविषे दोषरूपी तृणना अंश, जे उ क्षुद्र होवाथी निरंतर रत्नाकरनी उपरज तस्या करवाना स्वनाववाला ठे; ते उपर उपरथी दृष्टि करनारा अर्थात् दोषदृष्टि धारण करनाराउने तो सेहेज दृष्टिगोचर थशे; पण महामूल्य एवां प्रकरणरूपी रत्नो, जेउ निरंतर महत्वबालां होवाथी रत्नाकरना अंतरनागनेविषे घणां ऊंमां रहेठे; तेउने अवलोकन करनारा अने प्राप्त करनारा तो मर्मज्ञ एवा वीरला जनोज ठे. माटे हुं सर्व साधर्मिकनाइउनी पासे आ पुस्तकमां रहेला दोषोने माटे क्षमा मागुंठुं; अने विनती करुं ठुं के तेउ सर्व दोषोने सुधारी वांचशे, अने मने अल्पबुद्धिवालो जाणी बाल समजीने माहारा कोइपण दोष नणी न जोतां महारा उपर स्नेहयुक्त कृपादृष्टि राखी तेउ पोतानुं उदारचित्त प्रदर्शित करशे.

आ पुस्तकने आशरो आपनारा सद्गृहस्थोनी यादी.

आ प्रकरणरत्नाकर नामनुं पुस्तक ठापी प्रसिद्ध करवा माटे जेउ मुख्य मुख्य मदद करनारा साहेबो ठे, तेमनां नाम अंकित करतां प्रथम आ पुस्तकना वांचनार सज्जनोने मदद आपनारा जनोना सद्लक्षणोनी सूचना करुंठुं.

जेम हंसपक्षीनी चंचुमां एवाज कोइ जातिना पुजलो रह्या ठे, के तेथी तेनी चंचु सदाकाल दूधने ग्रहण करवानाज स्वनाववाली होय ठे; तेमज काकपक्षीनी चंचुमां एवा कोइ जातना पुजलो रह्या ठे, के तेथी तेनी चंचु सदाकाल विष्टानेज ग्रहण करवाना स्वनववाली होय ठे; तेमज सद्गुणीजनोना अंतःकरणना परिणामनेविषे एवाज कोइ उत्तम जातिना पुजलो रहेला होय ठे, के तेथी तेमनी बुद्धि सदाकाल सत्कार्य करवानेविषेज प्रवर्त्तमान थकी रहे, ठे; अने दुर्गुणीजनोना अंतःकरणना प

रिणामनेविषे एवाज कोइ जातना पुंजलो रह्या छे, के तेथी तेमनी बुद्धि सदाकाल दुष्कृत्यो करवानेविषेज प्रवर्त्तमान थकी रहे छे.

ए वातनो प्रत्यक्ष अनुभव आ ग्रंथ छापवाना पहेलां ए ग्रंथ छापवाना सहायनो आरंभ कर्यो, ते दिवसथी मांमीने आ त्रीजो भाग समाप्त थतां सुधीमां मने दिवसानुदिवस स्पष्ट थतो जाय छे. एटले मह्यारा आ ग्रंथो छापवाना अति दुस्तर, अने सर्वोत्कृष्ट पुण्यहेतु कृत्यनो आरंभ चालु रेहेवाथी तेनो आश्रय लेतां लेतां जे राजहंस तुल्य मोक्षनिकट भव्यजनो सद्बुद्धि वाला छे; तेमां जोपण कोइ अल्प द्रव्यवान छे, तो पण आ माह्रा प्रारंभित शुभकृत्यने आजपर्यंत हरेक रीते जेम पोताथी बने तेवी रीते आश्रय आपताज जाय छे; अने पोताना सज्जनपणानो गुण पोतानी उदारता युक्त बतावताज जाय छे. अने जे काकपक्षीतुल्य अभव्य दूर्भव्य दुष्ट दुर्गुणीजनो छे, तेउनुं द्रव्य जो के दुष्टकृत्योमां व्यय थतां ते दुष्टो पोताने कृत्यकृत्य मानता जाय छे, तथापि आ शुभकृत्यने तेउनाथी आश्रय मलतो नथी, ए कर्मनी विचित्रताज छे.

आ ग्रंथने शेठ केशवजी नायके आपेली मददविषे.

हरेक देश, राज्य, ज्ञाति तथा संघनेविषे सर्वोत्कृष्ट शुभकर्मफलभोक्तापुरुष दीपकनी पठे प्रकाशक होय छे; तेमां वली अद्भुत उद्युक्तमतिमान, आतपनामकर्मादिसहायकसाधनयुक्तशरीराकृतिवान, स्वनिवासस्थानजनादिकउत्तरोत्तरसुखपदादिआरोहणकरणोत्सुकपुमान, ते ते स्थानीय महादीपक कहेवामां पण कांइ दोष नथी. केमके, अंधकारे करी आवरित पदार्थोने जेम दीपशिखा प्रकाश करे छे, तेम पूर्वोक्त लक्षण पुरुष स्वाश्रित स्थानने अद्भुत प्रख्यातिरूप दीप्तिमान करे छे. जे संस्थाननेविषे एक प्रख्यात पुरुष होय, तेना योगे तत्संबंधी इतर जनोनी पण प्रख्याती थाय छे. एवा प्रभाविक पुरुषो क्वचितज होय छे. केम के, पूर्वजन्मनेविषे उत्कृष्ट शुभ कर्मोनुं बंधन कर्या विना एवी उत्कृष्टतानी प्राप्ति थती नथी. त्यारे जे एवी उत्तमता पाम्या छे, ते पुरुष धन्यछे.

जुवो संप्रतिराजा, के जेणे जिनप्रणीत सर्वोत्तम धर्मने अंगीकार करीने एवां धर्म कृत्यो कर्यां के, जैनशासननी अति प्रख्याती थई. तेणे ठेकाणे ठेकाणे देवालयो कराव्यां; केटलाएक ज्ञानना भंमारा कराव्या; स्वधर्मीउने विविध प्रकारे आश्रयो आप्या; अ

ने पोते शुद्धश्रावकव्रतादि आचरण करी अंते उत्तम गतिने पाम्या. त्यार पछी केट लाएक काले वस्तुपाल तथा तेजपाल ए बे प्रख्यात श्रावको सर्व संपत्तियुक्त थ या; तेउए पण नानाप्रकार जिनचैत्यो तथा ज्ञानभंमारादि करावीने स्वधर्मनी प्र ख्यातीनी वृद्धि करी. त्यार पछी अणहिल्लपुरपाटणमां कुमारपाल राजा जिनप्र रूपितधर्मश्रद्धानवान थया. तेणे पण जे विचित्र स्वधर्मकृत्यो कस्यांछे, ते सर्वजग प्रसिद्ध छे. अत्युत्तम अर्हद्देवालयो तथा अत्युत्कृष्ट ज्ञानभंमार कराव्या छे, ते कोईने अज्ञात नथी. एना राज्यना समयमां विद्वत्शिरोमणीभूत श्रीहेमाचार्य थई गया छे; तेमणे साडात्रण क्रोड श्लोक संख्यांक विविधविषयक ग्रंथो गुंथन क स्या छे. तेमांना घणा ग्रंथो वर्त्तमान कालमां विद्यमान छे. ए कुमारपाल राजाना प रम गुरु हता. ए कुमारपाल राजाए पोताना आखा राजमां हिंसानो लेश पण रहेवा दीधो न होतो. तेथी जैननी कीर्त्ति ज्यां त्यां प्रसरी रही हती. अन्य दर्शनीउ गमे तेटलो द्वेष करता, तो पण तेउनुं कांई चालतुं नही. सर्वत्र जिनधर्म नो जय जयकार थई रह्यो हतो.

ए उपरथी जुवो के प्रभाविकपुरुषने लीधे धर्मनुं केवुं दीपन थाय छे! धर्मनुं दीपवुं धर्मनां कृत्योउपर आधार राखे छे. नवीन जिनचैत्यो कराववां; पुरातन जर्ज रीभूत थई गएलां देवालयोना जीर्णोद्धार कराववां; स्वधर्मीउने यथायोग्य आश्रयो देवा; इत्यादिक अनेक धर्मकृत्योछे, ते बधां धर्मकृत्यो करतां ज्ञाननी वृद्धि करवा जेवुं एके उत्तम कृत्य नथी. ते कृत्य तो आ ग्रंथो छापीप्रसिद्ध करवानुंछे. ते उद्यमने मुख्य पेहेला नंबरना मदद करनार पूर्वोक्त संपति राजा प्रमुख महापुरुषोनी पंक्तिमां गणवा लायक हालमां श्रीमुंबइनगरना रेहेवासी श्रावकमंमलना आगेवान जगत् प्रसिद्ध, जेनी कीर्त्ति दशे दिशाउनेविषे प्रसार पामेली छे, अने जे एवा शुभ कृत्यो निमित्ते कोटी गमे द्रव्यनो व्यय करी कृत्यकृत्य थयला छे; एवा शेठ केशवजी ना यकछे. तेमनुं नामस्मरणार्थे आ पुस्तकनेविषे अंकित करुंछुं.

तेवार पछी सरल स्वभावि, दयावंत, कृपणतारहित, निर्लोभि, सदा शांतमुद्रा वान; वैरागवान, परमोपकारी, अनेक शास्त्रज्ञ, चतुर, विवेकी, जे हरहमेश आवां शुभकृत्योने महोटी उदारताथी आशरो आपताज आव्याछे, अने जे धैर्य, औदार्य तथा शिलादिक उत्तम गुणोए शोभनिक, महान् पुरुषोनी पंक्तिमां गणायला एवा वणारसी विनयसागरजीना शिष्य मुनि, महिमासागरजी तथा मुनि सुमति सागरजी–एमणे महोटी उदारता सहित आ ग्रंथने घणोज सारो आशरो आप्योछे;

अने हजी आजपर्यंत पण ए कृत्यने उत्तेजन आपताज जायछे. माटे ए महा पुरुषो नुं नाम स्मरणार्थे आ पुस्तकनेविषे अंकित करुंछुं.

ते वार पछी पूर्वोक्त संपत्यादिक राजाउं जे अति अद्भुत धर्मकृत्यना करनार महान् पुरुषो थई गयलाछे; तेमनीज पंक्तिमां गणना करवा योग्य, अने वर्त्तमान समये नृपतिसादृश साक्षात् दिव्यमूर्त्तिमंतलक्ष्म्यादि अनेक वैजवोएयुक्त श्रीमकसुदाबा दनगरनिवासी रायबाहाडर. बाबु साहेब, लक्ष्मीपतिसिंहजी छत्रपति सिंहजी, तथा रायबाहाडर बाबुसाहेब, धनपतिसिंहजी छत्रपति सिंहजी, एमणे आ ग्रंथने सारो आशरो आप्योछे; माटे आ पुस्तकनेविषे नामस्मरणार्थे अंकित करुंछुं.

तेवारपछी श्री मुंबइनगरनिवासी. शेठ हरजम नरसी, शेठ पेलाजाइ पदमसी, शेठ वर्द्धमान पुनसी, शेठ जोजराज-देसल एउ मुबइमांना श्रावकमंमलना मुख्य शेठीआ छे; एमणे आ पुस्तक अंकित करवाने अर्थे घणोज सारो आशरो आप्यो छे, माटे एमनां नाम स्मरणार्थे अत्युपकारपूर्वक आ पुस्तकनेविषे अंकित करुं छुं.

तेवारपछी श्रीमुंबइनगरनिवासी शेठ कस्तुरचंद सिंघजी पारेख, तथा शेठ कीका जाई फूलचंद-एमणे आ ज्ञानवृद्धिकृत्यने अति उदारतापूर्वक महोटो आश्रय आ प्यो. माटे एमनां नाम स्मरणार्थे महोटा मानसहित अंकित करुं छुं.

तेवारपछी श्रीमुंबइनगरनिवासी शेठ. परबत लधा, शेठ जीवराज वसाइआ, शेठ वर्द्धमान टोकरसी, शेठ जादवजी परबत, शेठ मूलजी देवजी, शेठ ठाकरशी देवजी, शेठ मुंगरसी सेजपाल-एउए पण यथाश्रद्धानपणे आ पुस्तकने आश्रय आप्यो छे, माटे एमनां नाम महोटा उपकारपूर्वक अंकित करुं छुं.

श्री अमदावादनगरनिवासी श्रावकमंमलमां मुख्य शेठ, दलपतजाइ जगुजाइ अने शेठ मयाजाइ प्रेमाजाइ-एउए आ पुस्तकने घणी उदारताथी सारो आशरो आ प्यो छे, माटे एमनां नाम स्मरणार्थे महोटा आजारसहित अंकित करुं छुं

श्रीजरुचनगरनिवासी शेठ अनुपचंद मलुकचंद एमणे आ ज्ञानवृद्धि कृत्यने आशरो आपवाथी एमनुं नाम स्मरणार्थे अंकित करुं छुं.

श्रीसाणंदनगरनिवासी शेठ सांकलचंद हुकुमचंद-एउए पण आ शुजकृत्यने अति उत्कृष्ट आशरो आप्योछे, तथा आपता रह्या छे, तेमनुं नाम स्मरणार्थे अंकित करुंछुं.

हवे साधुमंमलमां मुख्य मदद आपनारा तथा अपावनारा अने जेटलुं पोता थी बने तेटलुं उत्साहपूर्वक उत्तेजन आपनारा एवा धुरंधर संवेगपक्षी गुणानुरा गी महामोह विध्वंस करनारा मुनिश्री मूलचंदजी महाराज तथा फवेरसागरजी महा राज छे. एउनां नाम स्मरणार्थे आ पुस्तकमां महोटा मान सहित अंकित करुं छुं.

तेमज संवेगीमुनि आत्मारामजी तथा मुनि नीतिविजयजी एमना तरफथी ज्ञान वृद्धि आकत्यने आश्रय मलवानो गुण स्मरण करी आ पुस्तकनेविषे नाम अंकित करुंछुं.

श्रीअचलगच्छाचार्य भट्टारक श्री विवेकसागरसूरि, तथा श्री तपगच्छाचार्य भट्टारक श्रीधरणेंद्रसूरि, तथा पंमित रूपसागरजी पन्यास-एउनी तरफथी आ उद्यमनेविषे आशरो मलवाथी आपुस्तकनेविषे नाम अंकित करुं छुं.

बीजापण जे जे सद्ज्ञानवानजनोए पोतानी उत्कंठित रुचिए ज्ञाननुं महत्व दर्शाववा निमित्ते स्वशक्त्यानुसारे आरंभित ज्ञानवृद्धिरूप कार्यने मदद आपी छे, ते समस्त सज्जनोनां नाम हुं आवता चोथाभागना अंतनेविषे अंकित करीश.

श्री

प्रकरणरत्नाकर नामना पुस्तकना त्रीजाजागमाहेला ग्रंथोनी स्थूलविषयानुक्रमणिका प्रारंजः

पहेलो ग्रंथ श्रीनेमिचंद्रसूरिकृत प्रवचनसारोद्धार नामेछे. ए ग्रंथ मूल तथा बालावबोध सहित छाप्योछे. ए ग्रंथमां जैनसेलीमांना जूदा जूदा बशे छउतेर विषयो लेइने तेनां बशेने छउतेर द्वार बांधेलांछे. तेमांनां वली केटलांएक द्वारोमां तो प्रसंगागत् ते द्वारना नामने अनुसारें बीजा पण अपूर्व अपूर्व अनेक विषयो आवेलाछे. एवां पण घणां द्वारोछे; ते वांचनारा विवेकीजनोने आ ग्रंथ वांचवाथी स्पष्ट समजाइ आवशे. पण एनी अनुक्रमणिका मात्र बशे छउतेर द्वारोनीज करीए छैए; कारण ते द्वारोमां वली प्रसंगे बीजी वातो जे आवीछे तेनी अनुक्रमणिका करतां गौरवता थायछे.

इति प्रवचनसारोद्धार ग्रंथनी स्थूल विषयानुक्रमणिका समाप्तमिदम्.

बीजो ग्रंथ श्रीमहावीरजिनस्तुतिरूप दोढसो गाथानुं हुंडिनुं स्तवन, श्रीमद्यशो विजयजी उपाध्यायनुं रचेलुं छे. जेमां ढुंढकमतिनुं निराकरण करेलुं छे. ते ग्रंथ श्री पद्मविजयजीना करेला बालावबोध सहित छाप्यो छे. तेनी स्थूल विषयानुक्रमणिका.

इतिश्रीप्रकरणरत्नाकर नामना पुस्तकना त्रीजा जाग मांहेला ग्रंथोनी स्थूलविषयानुक्रमणिका समाप्तः

॥ श्री जिनेंद्राय नमः ॥

अथ

श्री प्रवचनसारोद्धारग्रंथ बालावबोधसहित प्रारभ्यते.

प्रथम अर्थकर्त्ता, ऋषभादि तीर्थंकरोने नमस्कार करेछे.

आर्यावृत्तं ॥ श्रीमन्नाभेयादीन्, नत्वा कृत्वा च शारदां चित्ते ॥
प्रवचनसारोद्धारे, करोमि बालावबोधमहं ॥ १ ॥

अवतरणः– प्रत्येक शास्त्रना आरंभमां अभीष्ट देवताना वंदनरूप मंगलाचरण करवानी श्रेष्ठ पुरुषोनी रीति छे, ते प्रमाणे आ ग्रंथना आरंभमां पण प्रथम ग्रंथकर्त्ता मंगलाचरण करे छे. अने ते मंगलाचरण द्वाराए ग्रंथनां अभिधेय संबंध प्रयोजन तथा अधिकारी ए चार अनुबंधोनी सूचना करे छे.

मूल आर्याः– नमिऊण जुगाइ जिणं, वोछं भवाण जाणण निमित्तं; पवयण सारुद्धारं, गुरूवएसा समासेणं. ॥ १ ॥ अर्थः– जुगादि जिन जे श्री ऋषभदेव भगवान, तेमने नमस्कार करीने भव्य प्राणीउने बोध थवासारु संक्षेपे करी गुरुना उपदेश वडे प्रवचन सारोद्धारने कहुं छुं. आ आर्यामां जुगादि जिन श्री ऋषभदेव भगवानने नमस्कार कर्यो छे ते वडे आद्यनेविषे मंगलाचरण सिद्ध थयुं. भव्य प्राणीउ कहेवाथी अधिकारीनी सूचना करी, जाणवा निमित्ते ए प्रयोजन जाणवुं अने प्रवचनसारोद्धार ए अभिधेय कह्युं; गुरुना उपदेशरूप कथनवडे ग्रंथनो वाच्य वाचक भाव संबंध जणाव्यो. ॥ १ ॥

अवतरणः– हवे चोसठ गाथाए करी बशें ने छोतेर द्वार कहेछेः– मूल आर्याः–चिइ वंदण वंदणयं, पडिकमणं पच्चखाण मुस्सग्गो; चोवीस समहिय सयं, गिहि पडिकमणाइ याराणं ॥ २ ॥ अर्थः– प्रथम चैत्यवंदनद्वार, जे बधा द्वारोमां श्रेष्ठ छे; तेनुं वर्णन करुं छुंः–त्यां चैत्य शब्दे जिन प्रतिमा ते चंद्रकांत, सूर्यकांत, मरकत, (सोनुं) मुक्ताफल, अथवा शैलदल (पाषाण) प्रमुखनी बनावेली पण चित्तना भावेकरी अथवा कर्मेकरी साक्षात् तीर्थंकरनी बुद्धि उत्पन्न थाय तेथी "चैत्य" कहियें तेने काया, मन, तथा वचनेकरी जे प्रणिधान करवुं तेने

"चैत्य वंदना" कहियें. एवी चैत्यवंदनानी विधिने केहेवे करी चैत्य वंदनारूप प्रथम द्वार समजवो.

हवे किया किया नाविके केवी केवी रीते चैत्यवंदन करवुं ते प्रकार दर्शावे छेः— चैत्यवंदन करनारो जो कोई महर्द्धिक ऋद्धिवंत राजादिक होय तो तेणे "सवाए इड्डिए, सवाए दित्तिए, सवा पजुइए, सव बलेणं, अने सव पोरिसेणं" एवां वचनो वडे जिनशासन प्रजावना निमित्ते मोटी ऋद्धिएकरी चैत्यवंदना करवी. अने जो सामान्य वैजववालो पुरुष होय तो तेणे औद्धत्यादिकनो परिहार करी अने लोकोना उपहासनो त्याग करीने चैत्यवंदन करवाने प्रवर्त्तवुं. त्यां पुष्प तांबुलादिक सचित्त द्रव्यनो परिहार करी, कटक, (कडा) कुंमल, केयूर, अने हारादिक उचित द्रव्य लईने एक वस्त्र परिधान पहेरवो ने बीजा उपला वस्त्रवमे उत्तरासण करवुं. एवी रीते पुरुषाश्रयी विधि जाणवी. हवे स्त्रीए केवीरीते चैत्यवंदन करवुं ते दर्शावे छेः— पोतानुं शरीर सारीपठे ढांकीने विनय नत गात्र छतां मस्तकें अंजली बंधन करी चित्तने एकाग्र राखी श्री वीतरागनुं दर्शन करवा पांच अजिगम पूर्वक श्री जिन मंदिरमां प्रवेश करे. एविषे श्री जगवती सूत्रमां कह्युं छेः— "सचित्ताणं दिवाणं, विउसरणाए, अचित्ताणं दिवाणं, अविउसरणा याए, एगल साडिएणं, उत्तरा संगेणं, चरकुफासे, अंजलिय ग्गहेणं, मणसो एगति करणेणं," अने क्यांक "एगांइ अचित्ताणं, दिवाणं, विउसरणाए" एवो पाठ पण दीठामां आवे छे. एनो अर्थ आवीरीते थाय छेः— पूर्वोक्त ऋद्धिवान राजादिक पुरुष ज्यारे चैत्यवंदन करवाने अर्थे जिनमंदिरमां प्रवेश करे त्यारे तत्काल पोतानां राजचिन्ह छत्र, चामर, तथा मुकुटादिक बाहेर मूकी देवां जोइए; पोतानी साथे राखवा नही. एविषे सिद्धांतमां बीजे ठेकाणे पण कह्युं छेः— "अवहट्टुरायकंकुहांइ, पंचवरराई कंकुहरूवाई; खग्गंछत्तोवाहण, मउमंतचामराउय." एवीरीते ए विधि संक्षेपे देखामी अने देवताउनो चैत्यवंदननी विधि ग्रंथकर्त्ता आगलदेखामशे.

हवे "वंदणयं" एटले जे गुणवंतनी वंदना करवी ए बीजो द्वार, परिक्रमवुं ए त्रीजो द्वार, पच्चखाण करवां ए चोथोद्वार, पच्चखाण (प्रत्याख्यान) एटले प्रत्याख्यान शब्दमांथी प्रति-आ-ख्यान ए त्रण पद नीकले छे ते दरेक पदनो जुदो जुदो अर्थ थाए छे ते आवीरीतेः— "प्रति" एटले स्वेछा प्रवृत्तिने प्रतिकूलपणे, "आ" एटले मर्यादा विवक्षित कालमान लक्षण, "ख्यान" एटले कथन करवुं. तेने पच्चखाण कहियें; अने पांचमो उत्सर्ग द्वार. ॥ २ ॥

मूल आर्याः—नरहंमि नूयसंपइ, नविस्स तिछंकराण नामाइं; एरवयंमिवि ताइं, जिणाणु संपइ नविस्साणं. ॥३॥ उसहाइ जिणंदाणिं, आइम गणहर पवि तणी नामा; अरिहंत जिनछाणा, जिण जणणी जणय नाम गई. ॥४॥ उक्किठ ज हन्नेणं, संखा विहरंत तिछ नाहाणं; जम्मा समएवि संखा, उक्किठ जहन्निया तेसिं ॥५ जिण गणहर मुणि समणी, वेउव्विय वाइ अवहि केवलिणो; मण नाण चउदस पु, वि सद्द सड्ढीण संखाओ.॥६॥ जिण जक्खा देवीओ, तणु माणं लंछणाणि वन्नाय; वय परि वारो सव्वा, उअंच सिवगमण परिवारो. ॥७॥ निव्वाण गमण ठाणं, जिणंतराइंच तिछ वुछेआ; दस चुलसीवा आसा, यणाउ तह पाडिहेराइं.॥८॥ चउतीसाइ सयाणं, दोसा अठारसारिह चउक्कं; निरकमणो नाणम्मी, निव्वाणं मिछ जिणाण तवो. ॥ ए ॥ नावि जिणेसर जीवा, संखा उड्ढाह तिरिय सिद्धाणं; तहयइक समय सिद्धा, एं ते पन्नरस नेएहिं. ॥ १० ॥ अवगाहणायसिद्धा, उक्किठ जहन्न मझिमाएअ; गिहिलिंग अन्नलिंग स्सलिंग सिद्धाण संखाओ. ॥११॥ बत्तीसाई सिज्झंतिय विरयंजा व अठ अहिय सयं; अठ समयेहि एक्किकूणं जावेक्क समयंतं. ॥१२॥ थेवेए पुंवे ए, नपुंसए सिज्झमाण परिसंखा; सिद्धाणं संगाणं, अठहिइ ठाणंच सिद्धाणं. ॥ ॥ १३ ॥ अवगाहणाय तेसिं, उक्कोसा मझिमा जहन्नाय; नामाइ चउन्हंपिहु, सासय जिणनाह पडिमाणं. ॥ १४ ॥ उवगरणाणं संखा, जिणाण थविराण साहुणीणं च; जिण कप्पिआण संखा, उक्किठा एक वसहीणं. ॥१५॥ बत्तीसं सू रिगणा, विणओ बावन्न नेअ पडिनिन्नो; चरणं करणं जंघा, विज्झा चारण गम ण सत्ती. ॥ १६ ॥ परिहार विसुद्धि अहा, लंदानिज्झा मयाण अडयाला; पण वीस नावणाओ, सुहाय असुहाय पण वीसं. ॥ १७ ॥ संखा महव्वयाणं, किइ क म्माणय दिणे तया खित्ते; चारित्ताणं संखा, ठियकप्पो अठियकप्पोय. ॥१८॥ चेइय पुंछय दंमय, तण चम्म डुसाइ पंच पत्तेयं; पंच अवग्गह नेया, परीसहा मंमलीस त. ॥ १ए ॥ दस ठाण वुवछेओ, खवगस्सेढीअ उवसमस्सेढी; थंमिल्लाण सह स्सो, अहिओ चउसहिय वीसाए. ॥ २० ॥ पुव्वाणं नामाइं, पयसंखा संजुआइ चउदसवि; निग्गंथा समणाविय, पत्तेयं पंच पंचेव. ॥ २१ ॥ गासे सणाण पण गं, पिंमे पाणेय एसणा सत्त; निरका यरिया वीही, णु मठगं पाय छित्ताइं. ॥२२॥ सामायारीओहं, मि पय विज्ञागंमि तहय दसहाओ; निग्गंथत्तं जीव, स्स पंच वारा उ नववासे. ॥२३॥ साहु विहार सरूवं, अप्पमिबद्धोय सोविहे यवो; जाया जा या कप्पो, परिठवणु च्चार करणदिसी. ॥२४॥ अठारस पुरिसेसु, वीसं इछीसु दस

नपुंसेसु; पवावणा अणरिहा, तहविगलंगस्सरूवाइं. ॥ २५ ॥ जंमुक्खजईकप्पं, वब्बं सेज्जाय रस्सपिंमोय; जेत्तिय सुत्तेसम्मं, जह निग्गंथा विचरुगइआ. ॥ २६ ॥ खित्ते मग्गे काले, तहा पमाणे अईय मक्कप्पं, डुह सुह सेज्ज चउक्कं, तेरस किरियाण ठाणाइं. ॥ २७ ॥ एगम्मि बहु नवे सुअ, आगरिसा चउविहेवि सामइए; सीलंगाणठारस,हस्सं नय सत्तगं चेव. ॥ २८ ॥ वब्गगहणविहाणं, ववहारा पंच तह अहा जायं; निसि जागरणम्मि विही, आलोअण दोयगन्नेसा. ॥२९॥ गुरु पमुहाणं कीरइ, असुहसुहेहि जे तिअं कालं; उवहीधोअणकालो, नोअण नायाव सहिसुद्धि. ॥ ३० ॥ संलेहणा डुवालस, वरिसे वसहेण वसहि संगहणं; उसणिस्सफासु अस्सवि, जलस्स सच्चित्तया कालो. ॥ ३१ ॥ तेरच्छीओ तिरिया,णमाणवीओ नराण देवीओ; देवाण जग्गुणाओ, जिति अ मत्तेण अहिआओ. ॥ ॥ ३२ ॥ अचेरयाण दसगं, चउरो नासाउ वयण सोलसगं; मासाण पंच नेया, नेया वरिसाण पंचेव. ॥ ३३ ॥ लोग्गस्सरूव सन्ना, उ तिन्नि चउरोव दसव पनरसवा; तह सत्तसठ लरकण, नेअ विसुद्धंच सम्मत्तं. ॥ ३४ ॥ एग विह डुविह तिविहं, चउहा पंचविह दसविहं सम्मं; दव्वाइ कारगाई, उवसम नएहि वासम्मं. ॥ ३५ ॥ कुल कोडीणं संखा, जीवाणं जोणि लरक चुलसीइ; तिक्कालाई वित्त,ब्विवरणं सड्ढि पडिमाओ. ॥ ३६ ॥ धन्नाण मबीअत्तं, खेत्ताईआण तह अचित्तत्तं; धन्नाई चोवीसं, मरणं सत्तरस नेयंच. ॥ ३७ ॥ पलिओवम अयर वस, प्पिणीण उवसप्पिणीण विसरूवं; दव्वे खेत्ते काले, नावे पोगाल परिअट्टो. ॥३८॥ पन्नरस कम्मनूमी, अकम्म नूमी उ तीस अठमया; दोन्निसया तेआला, नेया पाणा इवायस्स. ॥ ३९ ॥ परिणामाणं अंठोत्तरसय बंनंच अठदस नेअं; कामाण चउव्वीसा, दस पाणा दस य कप्पडुमा. ॥ ४० ॥ नरया नेरइआणं, आवासा वेयणाउ तणुमाणं; उप्पत्ति नास विरहो, लेसावाहे परम अहिमाय ॥ ४१ ॥ नरउ वट्टाणंल,ध्दिसंनवो तेसु जेसि उववाउ; संखाउ पज्जत्ताणं, तहायउ वट्टमाणाणं ॥ ४२ ॥ कायठिइ नवठिईउ, एगिंदिय विगल सन्नि जीवाणं; तणुमानमेसि इंदिय, सरूव विसयाय लेसाउ ॥ ४३ ॥ एआणं जब गई, जत्तोगणेहिं आगईएसिं; उप्पत्ति मरण विरहो, जायंत मरंत संखाय ॥ ४४ ॥ नवणवइ वाणमंतर, जोइसिअ विमाणवास देवाणं; ठिइ नवण देहमाणं, लेसाउ उहि नाणंच ॥ ४५ ॥ उप्पत्तीए तहुवट्टणाइ विरहो इमाण संखाय; जम्मियएयाणगई, जत्तो वाआगईएसिं॥ ४६ ॥ विरहो सिद्धि गईए, जीवाणाहारगा

हय कसासा; तिन्नि सया तेसठी, पासंमिणछयपमाया ४७ नरहाढ़ि वा हलहरा, रहिणो पडिवासु देवरायाणा; रयणाइं चउदस नव, निहिउ तह जीव संखाउ ४८ कम्माइ अठतेसिं, उत्तर पयडीण अठवन्न सयं; बंधोदयाणुदीरण, सत्ताणय किं पिहु सरूवं ॥ ४ए कम्मठिई साबाहा बायालीसाय पुन्न पयडीउ; बासीइ पाव प यमी उनाव छक्कस पमिनेयं ॥ ५० ॥ जीवाण अजीवाणय, गुणाण तह मग्ग णाण पत्तेयं; चउदसगं उवउंगा, बारस जोगाय पन्नरस ॥ ५१ ॥ परलोअगई गु णठा,एसु तहताण काल परिमाणं; नरय तिरि नर सुराणं, उक्कोस विउवणाका लो ॥५२॥ सत्तसमुग्घाया छप्पज्जत्तिउ अणहारया चउरो; सत्तनयठाणाइं, छप्नासा अप्पसछाउ ॥ ५३ ॥ नंगागिहिवयाणं, अठारस पावठाण गाइंपि; मुणि गुण स त्तावीसा, इगवीसा सावय गुणाण ५४ तेरिच्छीणुक्कठा, गप्नठिइ तहय सामणुस्सी णं; गप्नस्सय काय ठिई, गप्नठिई जीव आहारो ॥ ५५ ॥ रिहु रुहिर सुक्क जोए, तेत्तिअ कालेण गप्न संनूइ; जेति अपुत्ता गप्ने, जेत्ति अ पिअरोअ पुत्तस्स ॥५६॥ महिला गप्न अजोगा, जेत्ति अ कालेण अबीअउ पुरिसो; सुक्काईण सरीर,ठिया ण सव्वाण परिमाणं ॥५७॥ संमत्ताई णुत्तम, गुणाणलाहंत रंज मुक्कोसं; न लहंति मा णु सत्तं, सत्ता जेणंत रूवट्टा ॥५८॥ पुव्वंग परीमाणं, माणं पुव्वस्स लवण सिहमाणं; उस्सेह आय अंगुल, पमाण अंगुल पमाणाई ॥ ५ए ॥ तम कायसरूवमणं,- तछक्कगं अठगं निमित्ताणं; माणुम्माण पमाणं, अठारस नरक नोज्जाई ॥ ६० ॥ छठाण वुड्डिहाणी, अवहरिउ जाइ नेव तीरंति; अंतर दीवा जीवा, जीवाणं अप्प बहुअंच ॥ ६१ ॥ संखानिस्सेस जुग,-प्पहाण सूरीण वीर जिणतिछे; उस्स प्पिणि अंतिमजिण, तिछ अविछेय माणंच ॥ ६२ ॥ देवाणप्प वियारो, सरूव म ठाह कण्हराईणं; सज्ञायस्स अकरणं, नंदीसर दीव ठिइ नवणं ॥ ६३ ॥ लद्धीउ तव पाया,ल कलस आहारगस्स रूवंच ; देसा अणारिया आ,- रिया य सिद्धे ग तीस गुणा ॥६४ ॥ समय समुद्धरियाणं, आसत्थ समत्तिमेसि दाराणं; नामुक्कित्त ण पुव्वा, तंविसय विआरणा नेआ ॥ ६५ ॥

अर्थः—आ ग्रंथमां आरंनथी अंत पर्यंत बधा द्वारोना नावनो उद्धार सिद्धांतो मांथी कर्यो छे. ते उपर कहेला द्वारोनां नामोत्कीर्त्तन पूर्वकज तेमां विषयविषे पण विचारणा जाणवी ॥ ६५ ॥

एवी रीते सर्व द्वारोनां नाम कह्या पछी अनुक्रमे द्वारवखाणतां प्रथम चैत्यवं दन द्वारनुं वर्णन करे छेः— आ ग्रंथ उपर संस्कृत नाषामां टीका कर्त्ताए शास्त्रां

तरनी संमतथी चैत्यवंदना कारने विषे (१९७) स्थानकनी जणावनारी त्रण गाथाउ कहेछेः– आर्याः– "सोलस पुण आगारा, दोसाए गूणवीस उस्सग्गे; ब ध्धिय निमित्त हुंतिअ, पंचेवयहेयवो जणिया ॥१॥ अहिगारा पुणबारस, दंमापंचे व हुंति नायवा; तिन्नेव वंदिणिज्जा, थुइउ पुण हुंति चत्तारि ॥२॥ तिन्नि निसीहीए मा,इ तीस तह संपयाउ सत्तणउ; चियवंदणंमि नेयं, सत्तण उसयंतु गणाणं ॥३॥ अगणीउ छिंदिज्जवि, बोही खोहाइ दीहमक्कोय; इय एव माइएहिं, अप्पग्गो हु ज्ज उस्सग्गो." ॥ ४ ॥ एमां चोथी गाथा पूर्वे कोई प्राकृत व्याख्या कर्त्ताए ना खी जणाय छे. तेथी अमे पण आंही लई लीधीछे.

हवे सूत्र कारक कहेछेः–मूल आर्याः–तिन्नि निसीहिय तिन्निय, पयाहिणा ति न्नि चेवय पणामा; तिविहा पूयाय तहा, अवछतिय जावणं चेव. ॥६६ ॥ तिदि सिनिरिक्कण विरई, तिविहं जूमी पमज्जणं चेव; वन्नाइ तिअं मुद्दा, तिअं च ति विहं च पणिहाणं; ६७ ॥ इय दह तिय संयुत्तं, वंदणयंजोजिणाण तिकालं; कु णइनरो उवउत्तो, सो पावइ निज्जरं विउलं ॥६८॥ अर्थः–दश प्रकारनी त्रिक वमे चैत्यवंदन करवुं; ते दर्शावे छेः–जे निषेधे करी नीपनी ते नैषेधिका कहियें तेमां प्रथम काया, वचन, अने मनना अनुक्रमे करी जे घर संबंधी व्यापार थाएछे तेनो निषेध करवो. इत्यादि निषेधिकात्रिक् आगल कहेसे बीजी प्रदक्षिणा त्रिक् एटले ज्ञान, द र्शन, अने चारित्रनी आराधना रूप अनुक्रमे चैतने दक्षिण दिशाथी त्रण प्रद क्षिणा करवी. त्रीजी प्रणाम त्रिक, एटले जिन प्रतिमाने सन्मुख आवी जक्तिने अतिशय करी जूमि उपर त्रण वार माथुं टेकीने नमस्कार करवो. चोथी पूजा त्रिकनो प्रकार "पुप्फरकय" इत्यादि आगल कहेशे पांचमी अवस्थात्रिक ते "अवछ तिअ होइ छउमछ" इत्यादिक वाक्ये करी ग्रंथ कर्त्ता आगल कहेशे. छठी त्रिदिशा निरख णवर्ज्य त्रिक एटले चैत्यवंदन समये जे दिशामां जिन प्रतिमां होय ते दिशाएज निर खवुं; अर्थात् प्रतिमा सांबे जोवुं, बाकीनी त्रण दिशा कोरे नजर करवी नही. बालबोध व्याख्या कर्त्ता लखे छे के कायाए करी बे हाथ जोमी मस्तके लगाडी, मने एकांत जगवं त नेध्यावतो वचने करी मधुर वाणीवडे परमेश्वरना गुण स्तवतो जे दिशिए प्रतिमां होय ते दिशिए जोवुं बाकीनी त्रण दिशि सन्मुख जोवुं नही. जो बीजी दिशा तर फ जोइए तो चैत्यवंदनाने अनादर थाय. सातमी जूमि प्रमार्जन त्रिक् एटले चै त्यवंदन करनाराए जीवयत्नने अर्थे सम्यक् प्रकारे दृष्टिवडे जोईने जो गृहस्थ हो य तो वस्त्रांचले करी अने साधू होय तो रजोहरणे करो त्रण वार जूमिका प्रमा

र्जन करवुं "आठमी वन्नाइ तिअंवन्नबा" इत्यादि नवमी "मुद्दाइतियं जिणमुद्द" इत्यादिवडे जाणी लेवुं. एटले आठमी वर्णत्रिक, नवमी मुद्दात्रिक ए त्रिकोना अर्थ आगल कहेवाशे तेथी अत्रे लख्या नथी. अने दशमी प्रणिधान त्रिक पण "कायम णा" इत्यादि गाथावडे आगल आवशे माटे आ ठेकाणे विस्तार कर्यो नथी. एवी रीते उक्त दश त्रिक वडेज पुरुष प्रभात मध्यान्ह अने संध्या समये सावधा न चित्तथी श्री वीतराग भगवाननुं वंदन करे; ते समस्त कर्मनो क्षय करवा वा ली अने मोक्षरूपी लक्ष्मीने देवावाली विस्तीर्ण निर्जराने पामे. ॥ ६७ ॥

अवतरणः–उपर कहेली तिन्निनिसही प्रमुख दश त्रिकनुं विस्तारथी वर्णनकरेछे.

मूलः–घर जिणहर जिणपूआ, वावारच्चायउ निसीह तिगं; पुप्फरकय थुएहिं, तिविहा पूया मुणेयव्वा. ॥ ६९ ॥

अर्थः– गृहस्थ संबंधी जे जे सावद्य व्यापार छे ते सरवेनो त्याग करवो तेने प्रथम निषेध कहेवुं, एटले चैत्यवंदन करवा जतां जिनालयनी पायरी उपर पग मूकतांज पोताना घर संबंधी अथवा धंधा व्यवहार संबंधी सर्व व्यापारने त जी देवुं. अर्थात् तेनोनिषेध करवो. बीजो जिनगृह संबंधी जे जे पाषाण तथा काष्ट प्रमुख घडाववारूप सावद्य व्यापार थतो होए ते सरवेनो त्याग करवो तेने बीजो निषेध कहेवो. एटले जिनगृहमां प्रवेश थया पछी श्री जिननी सन्मुख स्थित छ तां ते जिनगृह संबंधी समारवा वगैरे व्यापारनो निषेध करवो. अने श्री जिनेश्वर नी पूजा करती वखते फूल, फल, जल दीपक इत्यादि पूजानी सामग्री जे भेली करी होए ते पूजा थई रह्या पछी चैत्यवंदन करवाना समये ते सावद्य व्यापार जाणीने सरवे तजी देवुं. अर्थात् तेनो निषेध करवो. तेने त्रीजो निषेध कहे छे. बीजी प्रदक्षिणा तथा त्रीजी प्रणाम त्रिकनुं लक्षण आगल कह्युं छे. चोथी पूजा त्रिकनुं व्याख्यान आगल कर्युं नथी माटे ते कहे छेः–पूजा त्रण प्रकारनी कही छे. तेमां पहेली विविध वर्णना महासुगंधवाला फूलो वडे पूजा करवी कही छे ते. बीजी शाली तंडुलादिकवडे पूजा कहीछे ते. अने त्रीजी स्तुतिरूप पूजा; एट ले जेमां लोकोत्तर सद्भूत तीर्थंकरना गुणोनी अने संवेगनी उपजावनारी स्तुति होय. इहां गाथामां "पुप्फादि" प्रमुखना उपलक्षण वडे बीजा ठेकाणे कहे ली श्री भगवंतनी पूजा विधिनेविषे महा मनोहर रत्न, सुवर्ण, मुक्ता भरणादिक अलंकारो अने नाना प्रकारना वस्त्र पेहेराववानुं कह्युं छे ते आंही पणजाणी लेवुं. अने श्री जिनेश्वर आगल सरसव, तथा चोखा प्रमुखे करी आठ मांगलिक

लखवां पछी प्रधान जल मंगल दीप, दधि, घृत, प्रमुख पदार्थोने श्री भगवंतना भालनेविषे ढोववुं. गोरोचन तथा कस्तूरिकादिक वडे तिलक करवुं. ए प्रमाणे श्री भगवंतनी पूजा करीने इरिआ वही पडिकमवा पूर्वक शक्रस्तवादिक दंडके चैत्य वंदना करीने जे उत्तम कवि विरचित, गंभीर अर्थ सहित, विविध वर्ण युक्त, संवेग उत्पन्न करनार, अने जेमां पोताना पापनुं वर्णन करेलुं होय इत्यादिक गुणवाला उत्तम स्तोत्र वडे गुणोत्कीर्तन करवुं. इत्यादिक प्रकारे त्रिविध पूजा कही छे तेना उपलक्षणवडे सर्व जनने आनंदने करवावाली श्रीअरिहंतनी अष्ट प्रकारनी पूजा पण जाणी लेवी. ते विषे आ एक गाथा कही छेः– "वरधूयगंध चोख रकएहिं कुसमेहिं पवर दीवेहिं; नेवज्ज फल जलेहिंय, जिणपूआ अठ्ठा भणिया."॥६ए॥

हवे गाथाना पूर्वार्द्ध वडे पांचमी अवस्था त्रिकनुं वर्णन करे छेः– मूल आर्याः– होइ छउमछ केवलि, सिद्धत्तेहिं जिणे अवछ तिगं; अर्थः–छद्मस्थावस्था, कैवल्यावस्था, तथा सिद्धावस्था ए त्रण अवस्था चैत्यवंदन करवाना समये भाववी. छठी त्रिदिशा निरखण वर्ज्य त्रिक, सातमी भूमि प्रमार्जन त्रिक ए बे त्रिकनो अर्थ पूर्वे कह्यो छे माटे आ ठेकाणे लख्यो नथी.

गाथाना उत्तरार्धवडे आठमी वर्णादित्रिक कहेछेः– मूल आर्या.– वन्नछा लंबणउं, वन्नाइ तियं वियाणिज्ञा. ॥ ७० ॥ अर्थः– अकार तथा ककारादि अक्षरोना श्लोकप्रमुखनो उच्चार करियें ते वर्णालंबन कहिये अने अर्थ थकी कहियें ते अर्थालंबन कहियें तथा सूत्र अने अर्थ बेहुथकी उच्चरिये ते आलंबनालंबन कहियें अर्थात् श्री भगवंत संबंधी गुणानुवाद सहित आलंबने करी भगवंतनी प्रतिमाने जोवुं. ए रीते त्रण बोलेकरी वर्णादित्रिक जाणवी. ॥ ७० ॥ हवे नवमी मुद्रा त्रिक अने दशमी प्रणिधान त्रिक एक गाथावडे कहे छेः–

मूल आर्याः– जिण मुद्द जोग मुद्दा, मुत्ता सुत्तीय तिन्नि मुद्दाउ; कायमणो वयणनिरो, हणंच तिविहंच पणिहाणं पागंतरे, हणं च पणिहाण तियमेयं ॥७१॥ अर्थ ॥ एक जिण मुद्रा, बीजी योगमुद्रा त्रीजी मुक्तासुक्ति मुद्रा; ए त्रण मुद्रानां नाम मात्र आ गाथामांना पूर्वार्धमां कहेलां छे एनां अर्थ आगल कहेशे. अने प्रणिधान त्रिकनो अर्थ अत्रेज कहेछेः– शरीरना अशुभ व्यापारने रोकीने शुभ व्यापार करवो एटले काय महा सुसंभ्रतपणे कर कमल जोडीने मननेविषे अचिंत्य चिंतामणि श्री भगवंतने स्थापी मुखे करी मधुर वचन वडे स्तवन करवुं ए त्रिविध प्रणिधान जाणवो. ॥ ७१ ॥

अवतरणः– हवे जे मुद्रावडे जे करवुं ते कहे ठेः–मूलः– पंचंगो पणिवाउ, थुय पाढो होइ जोग मुद्दाए; वंदण जिण मुद्दाए, पणिहाणं मुत्त सुत्तीए ॥ ७२ ॥ अर्थ ॥ सूत्रमां प्रणिपात पंचांग कह्युंठे ते प्रणिपात पंचांगमुद्राए जाणवो. स्तुति पाठ ते योग मुद्राए थाएठे "अरिहंत चेइआणं" इत्यादि चैत्यवंदना जिनमुद्रा वडे थाय ठे. अने "प्रणिधानते जयवीराय" मुक्तासुक्ति मुद्रायें थाय ठे.॥७२॥

अवतरणः–पंचांग प्रणिपात करवानो प्रकार कहेठेः–मूलः–दो जाणू डुन्नि करा, पंचमगं होइ उत्तमंगं तु; संमं संपणिवाओ, नेउ पंचंग पणिवाओ. ॥७३॥ अर्थः–बे जानु एटले गुठणो बे कर एटले हाथ ए चार अंग थया अने पांचमो उत्तमांग एटले मस्तक ए पांचे अंग समके० रूडीरीते पृथवीने लगाडी नमस्कार करवो. यद्यपि इहां सूत्रमां नूमीए लगाडवानुं कह्युं नथी तथापि परंपरा संप्रदायथी अंगीकार करी लेवुं, प्रकर्षे करी श्रीनगवंत आगल प्रपतन एटले नमन करवुं तेने संप्रणिपात जाणवो. एवी रीते पंचांग प्रणिपातनो प्रकार कह्यो. ॥ ७३ ॥

अवतरणः– मुद्रा करवानो प्रकार कथन करेठेः– मूलः– अन्नोनंतर अंगुलि, कोसागारेहिं दोहि हत्थेहि; पिट्टोवरि कुप्परिसिं, ठिएहि तह जोग मुद्दत्ति. ॥ ७४ ॥ अर्थः–बे हाथनी दशे आंगलीओ माहोमांहे घालीने कमलना डोडानी परे आकार करवो. पठी पेट उपर बेउ नुजानी कोणीउंटेकवी राखवी एम करता योगमुद्रा थाय.

मूलः– चत्तारि अंगुलाइं, पुरओ ऊणाइ जब पछिमओ; पायाणं उस्सग्गो, एसा पुण होइ जिणमुद्दा. ॥ ७५ ॥ अर्थः–बे पगे सरखा उना रहीने पग वच्चे चार आंगला जेटलो अंतर राखवो तेमां पण पेनीओ वच्चे चार आंगलथी पण कांइक ओठो अंतर राखीने काउसग्ग करिये ते जिनमुद्रा कहेठे. ॥ ७५ ॥

मूलः– मुत्तासुत्ती मुद्दा, जब समा दोवि गप्निया हबा; ते पुण निडाल देसे, लग्गा अन्ने अलग्गत्ति. ॥७६॥ अर्थः–बेहु हाथ नेला करी डाली राखवा पण हथेलीने हथेली लगाडवी नही. मात्र आगलीओना उपरना नाग अने हथालीओनो थडनो नाग एक बीजानी साथे लागी रेहवो जोईए. जोडेला हाथोनी वच्चे थोडीक पोकल जागा राखवी. एवी रीते उल्लास सहित गर्नितपणे मुद्रा करीने ते ललाटने लगाडवी. केटलाएक ग्रंथकर्त्ताओ कहेठे के, ते मुद्रा करीने नलाडनो सांवे जे आकाश प्रदेशे रह्या थका हाथ आंखे देखाय त्यां राखियें एटले ललाट अने ते मुद्रावच्चे अवकाश रेहेवो जोइए. एने मुक्तासुक्ति मुद्रा कहेठे.॥ ७६ ॥

अवतरणः– चैत्यवंदना करवाना समये वंदन करनाराए किये ठेकाणे उना रही

ने वंदना करवी ते अवग्रहपूर्वक कहेछेः—मूलः—दाहिण वामंग ठिउ, नर नारिगणा जिवंदए देवे; उक्किठ सठि हत्थु, ग्गहे जहन्नेण कर नवगे. ॥ ७७ ॥ अर्थः— चैत्यवंदन कर्त्ता दक्षिण एटले जमणी बाजुए पुरुषोनो समूह रह्यो थको देव वांदे अने वाम एटले डाबी बाजुए स्त्रीउनो समूह रह्यो थको देव वांदे. त्यां उत्कृष्टो साठ हाथनो अवग्रह एटले अंतर अने जघन्य नव हाथनो अंतर तीर्थंकरथी होवो जोइए, ए बन्ने अंतरना वच्चेनो जे अंतर तेने मध्यम अवग्रह कहियें. ॥ ७७ ॥

अवतरणः— नमस्कारादिकनी संपदा एटले विश्राम लेवानास्थानकनी संख्या कहेछेः— मूलः— अठ्ठ नवठ्ठय अ,ठवीस सोल सय वीस वीसामा; मंगल इरिया वहिया, सक्कछय पमुह दंमेसु ॥ ७८ ॥ अर्थः— आ ठेकाणे अनुक्रमे करी मंगल रूप नवकारनेविषे आठ संपदा, इरिया वहियानेविषे आठ संपदा शक्रस्तवनेविषे नव संपदा, अरिहंत चेइयाणंनेविषे आठ संपदा, चोवीसछानेविषे अठावीश संपदा, पुष्कर वरदीनेविषे शोल संपदा, अने सिद्धाणं बुद्धाणंनेविषे वीश संपदा एटला वीसामाना स्थानक ए दंमकोमां जाणवा. ॥ ७८ ॥

अवतरणः— सरवे संपदाउनी संख्या कहे छेः— मूलः— पंच परमेठि मंते, पए पए सत्त संपया कमसो; पजंत सत्तर सरकर, परिमाणा अठमी नणिया. ॥ ७९ ॥ अर्थः— पंच परमेष्टी मंत्रनेविषे प्रत्येक पदने अंते संपदा कही छे, एवा अनुक्रमे सात पदनी सात संपदाओ थाए अने छेली अठमी संपदा सतर अक्षर प्रमाण प्रवचन प्ररूपक नगवंते कही छे. कोइक आचार्य एम कहेछे के पढमं हवइ मंगलं ए नव अक्षरनी आठमी संपदा अने ए सो पंच नमुक्कारो सव्व पावप्पणासणो ए बे पदनी छठी संपदा जाणवी. ॥ ७९ ॥

अवतरणः— इरिआ वही प्रमुखनी संपदाना धुरिया कहे छेः— मूलः— इछ गम पाण ओसा, जे मे एगिंदि अनिहया तस्स; इरिया वीसामेसुं, पढम पया हुंति नायवा ॥ ८० ॥ अर्थः— पहेली "इछामि पडिक्कमिउं" बीजी इरिया वहियाए त्रीजी गमणागमणे चोथी पाणक्कमणे पांचमी जेमेजीवाविराहिया छठी एगेंदिया सातमी अनिहया आठमी तस्सउत्तरिकरणेणं इहां "ठामिकाउसग्गं" ए पद शुधी इरियावहीनुं सूत्र छे, ए सूत्रमां सर्वे मलीने बत्रीश पद छे अने आठ संपदा छे. 'ठामिकाउसग्गं' पाछल कह्यो तेमाटे काउसग्ग दंमक कहिये ॥ ८० ॥

मूलः— अरिहं आइग पुरिसो, लोगो नय धम्म अप्प जिण सव्वा; सक्कछय संपयाए, पढमुल्लिंगाए पया नेया. ॥ ८१ ॥ अर्थः— "नमोछूणं" ए प

छेला पद वमे वंदना करनाराने क्रियानुं कहेनारपणुं जणाव्युं. अने अरहंताण जगवंताण" ए बे पदोवमे जगवंतनेविषे स्तोतव्य करवानी योग्यता जणावी. ए त्रणे पदोनी एक संपदा थई. "आदिगर" इत्यादि जे त्रण पद छे ते स्तुतिपर छे माटे स्तोतव्य जाणवा; अने तेनी बीजी संपदा समजवी. एने साधारणासाधारणरूप संपदा कहे छे. जे कारण माटे तीर्थंकर स्वयंसंबुद्ध अने आदिकरणशील छे. ते कारण माटे ते स्तुति करवाने योग्य छे. एवुं आ संपदाथी सिद्ध थाय छे. "पुरुषोत्तमाण" इत्यादि जे चार पद छे. तेमां जिननी स्तुति होवाथी तेनी स्तोतव्य संपदा थाय छे. एज असाधारणगुणरूप हेतु संपदा थाय छे. ते हेतु दर्शावे छेः– सिंह, पुंमरीक एटले कमल, अने गंधहस्ति ए त्रणेना धर्मने जोगववाथीपुरुषोत्तम कहेवाय छे. तेथी स्तोतव्यपणानी उत्पत्ति सिद्ध थाय छे "लोग्" इत्यादि पांच पदनी चोथी संपदा थाय छे. एमां सामान्यपणे स्तुति कही छे, ने एथी सर्व जनो पर उपकारीपणु सिद्ध थाय छे, तेने लीधे एने उपयोग संपदा कहे छे. वली एमां ज लोकोत्तमादि विशेषण कह्यांछे तेथी परार्थत्वपणे जणाव्युं छे. "अजय" इत्यादि पांच पदनी पांचमी संपदा थाय छे. एमां पूर्वोक्त उपयोग संपदाने हेतु संपदापणुंजणाव्युं छे. केमके, अजय दानादि पदे करी परना अर्थिनी सिद्धिनुं प्रतिपादन होवाथी एने उपयोग हेतु संपदा कहे छे. "धम्मदयाणं" इत्यादि पांच पदनी छठी संपदा थाय छे. एमां धर्म दायकादिक विशेषणे करीज स्तुति करी छे, ए संपदानेविषे उपयोग होय तेथी एने विशेषें उपयोग संपदा कहे छे. "अप्पमिहय" ए पदनी सातमी संपदा थाय छे. एमां श्रीअरिहंत जगवंतने अप्रतिहत वर ज्ञान दर्शन धर व्यावृत्त छद्मस्थ प्रमुखतावडे स्तुति करीछे, ने स्तुति करनार पण तेवोज थाय तेथी एने सकारण स्वरूप संपदा कहे छे. "जणाणं" इत्यादि चार पदे करी आठमी संपदा थाय छे. एमां पोतानी पठे बीजा जनोने फलनुं करवा पणुं अर्थवडे दर्शाव्युंछे. केमके, ए पदनो अर्थ एवोज छे, तेथी एने आत्मतुल्य परफल कर्त्तव्य संपदा कहे छे. "सव्वन्नूणं इत्यादिथी जिअजयाणं" पर्यंत नवमी संपदा थाय छे. एमां प्रधान गुणनो अपरिक्षय थकी प्रधान फलनी प्राप्तेंकरी अर्थ रहेलो छे, अने जे सर्वज्ञ सर्व दर्शी छे, तेनेज शिव अचलादि स्थानकनी प्राप्तें जित जय पणानो अंगीकार होय तेथी एने अजय फल संपदा कहे छे. ए संपदायें करी शक्रेंद्र श्रीजिनवरना जन्मादिकने विषे स्तवे तेथी ए शक्रस्तव केहेवाय छे, तेनेविषे जे संपदा छे तेना ए उल्लिंगन चितारवाना पद जाणवा. इहां जे

अइआ सिद्धा,, इत्यादि गाथा महाश्रुत धरे शक्र स्तवना अंतमां कही छे तेथी अवश्य कहेवी जोये. एंविषे केटलाएक कहेछे के, उवाइ प्रमुखने विषे "जियन्न याण," शुद्धीज कह्युं छे. तेथी अमे पण एटलुंज कहेछुं. पण नवुं अमाराथी कहेवाशे नही. एवा कुबोधवडे थयाछे ग्रसित चित्त जेमना, तेउ नाना प्रकारनी नवी नवी अनेक कल्पनाउ कस्या करे छे, ते सर्व व्यर्थ छे. केमके पूर्वे जे असव अनभिमानी गीतार्थ थया ते जे पक्षने स्वीकारी गया छे, ते पक्षने आपणे पण अंगीकार करवो जोये. माटे ए गाथा अवश्य कहेवी जोये. ॥ ८१ ॥

अवतरणः- "अरिहंत चेइयाणं" एनी संपदा कहे छेः- मूलः- अरिहं वंदण सिद्धा, अन्नत्थु सुहूम एवजा ताव; अरिहंत चेइय पए, विस्सामाणं पया नेया. ॥ ८२ ॥ अर्थः- "अरिहंत चेइयाणं, ए बे पदनी पहेली संपदा, "वंदणवत्ति आए" ए छ पदनी बीजी संपदा, "सवलोए" ए सात पदनी त्रीजी संपदा "अन्नत्थूससिएणं, ए नव पदनी चोथी संपदा, "सुहुमेहिं अंग" ए त्रण पदनी पांचमी संपदा, "एवमाइहिं" ए छ पदनी छठी संपदा, "जाव अरिहंताणं" ए चार पदनी सातमी संपदा अने "ताव कायं" ए छ पदनी आठमी संपदा जाणवी. ए सूत्रमां सर्व मली आठ संपदाना तेतालीस पद छे. ॥ ८२ ॥

मूलः- अट्ठावीसा सोलस, वीसाय जहक्कमेण निद्दिठा; नाम जिण ठवणा इसुं, वीसामाणाय माणेण. ॥ ८३ ॥ अर्थः- लोगस्स उज्जोयगरेमां अठावीस संपदा, अने अठावीस पद पुष्करवरदीपमां शोलपद अने (संपदा) पण सोल जाणवी अने सिद्धाणं बुद्धाणंमां वीश पद अथवा संपदा कही छे; एवा अनुक्रमे नामर्हत तथा स्थापना र्हतनेविषे विश्राम पद प्रमाण संपदा जाणी लेवी. ॥ ८३ ॥

अवतरणः- हवे बार अधिकार कहे छेः- मूलः-दुन्नेगं दुन्निदुगं, पंचेव कमेण हुंति अहिगारा; सक्कथयाइ सुइहं, थोय विसेस विसयाउ. ॥ ८४ ॥ अर्थः- पहेले शक्रस्तव दंमके बे, अधिकार बीजे चैत्यस्तव दंमके एक, अधिकार अने त्रीजे नामस्तव दंमके बे; अधिकार चोथे श्रुतस्तव दंडके बे अधिकार पांचमां सिद्धस्तवदंमके पांच अधिकार एवी रीते बार अधिकार निश्चे क्रमेकरी शक्रस्तव प्रमुख दंमकोनेविषे स्तवन करवा योग्य विशेष विषयक कह्याछे. ॥ ८४ ॥

हवे बार अधिकारना धुरियां कहेछेः- मूलः- पढमं नमोत्थु जेअइयसिद्ध अरिहंत चेइयाणंति; लोगस्स सव्व लोए पुक्कर तम तिमिर सिद्धाणं. ॥ ८५ ॥ अर्थः- नमोत्थुणं आदि प्रथम अधिकार, जेअइयासिद्धादि बीजो अधिकार अरिहंतचेइ

याणआदि त्रीजो अधिकार, लोगस्स आदि चोथो अधिकार, सव्व लोए आदि पांचमो अधिकार, पुक्खरआदि छठो अधिकार, तमतिमर आदि सातमो अधिकार, अने सिद्धाणं बुद्धाणं आदि आठमो अधिकार जाणवो. ॥ ७५ ॥

मूलः— जो देवाणवि उज्जिं तसेल चत्तारि अठ दस दोय; वेयावच्च गराणय, अहिगारु ल्लिंगण पयाइ. ॥ ७६ ॥ अर्थः— जोदेवाणविआदि नवमो अधिकार, उज्जिंतसेल आदि दसमो अधिकार, चत्तारि अठ दस दोइ वंदिया प्रमुख अग्यारमो अधिकार अने वैयावच्च गराणं आदि बारमो अधिकार जाणवो. ए बार अधिकारो जाणवाना दरएकेका अधिकारना ए प्रथम पद समजवा. ॥ ७६ ॥

मूलः— पढमे छठे नवमे, दसमे इक्कारसेय भाव जिणा; तइयम्मि पंचमम्मिअ, ठवण जिणे सत्तमे नाणं. ॥ ७७ ॥ अर्थः— पहेला, छठा, नवमा, दसमा अने अग्यारमा अधिकारोवमे सीमंधरादिक भावजिननी स्तवना करी छे. त्रीजा तथा पांचमा अधिकारे करी स्थापनार्हतनी स्तवना करी छे अने सातमा अधिकारवमे ज्ञाननी स्तवना करीछे.॥७७॥ मूलः—अठम बीअ चउत्थे, सुसिद्ध दव्वारिहंतनामजिणे; वेयावच्चगरसुरे, सरेमि बारसम अहिगारे.॥७८॥ अर्थः—आठमा, बीजा, अने चोथा अधिकारवडे सिद्धनी स्तवना करी, तेमां आठमा अधिकारथी द्रव्य जिननी स्तवना करी, तथा बीजा अने चोथा अधिकारथी नामार्हतनी स्तवना करी छे. अने बारमा अधिकारे करी वैयावच्चना करनारा देवताउनुं स्तवन कर्युं छे. ॥७८॥

मूलः— साहूण सत्तवारा, होइ अहोरत्त मज्झयारम्मि; गिहिणो पुण चिइ वंदण, तिय पंचव सत्त वावारा. ॥ ७९ ॥ अर्थः— साधुए रात्र दिवसमां सात वार चैत्य वंदन करवुं अने गृहस्थिए रात्र दिवसमां त्रण, पांच तथा सात वार चैत्यवंदन करवुं.॥७९॥ मूलः— पमिकमणे चेइहरे, भोयण समयम्मि तहय संवरणे; पडिकमण सुयण पमिबो, ह कालियं सत्तहा जइणो ॥ ८० ॥ अर्थः— प्रभातना पडिकमणा समये एक वार चैत्य वंदना करवी, बीजी वार जिनमंदिरमां करवी, त्रीजीवार भोजनना समय पहेला करवी, संवर के० पच्चरकाण पाळतां पहेला करवी सांजना पमिकमणानेधुरे करवी, सुवानी वखते करवी, तथा पाछली रात्रे निद्रानो त्याग करीने करवी अवी रीते यतीने सात वखत चैत्यवंदना करवी कही छे ते विषे महा निशीथमांपण कह्युं छे ते आ प्रमाणेः—प्रातः प्रतिक्रमावसाने प्रथमा चैत्य वंदना गोचरी समये चैत्योपयोगार्थं द्वितीया चैत्य वंदना भोजन समये तृतीया चरिम प्रत्याख्याना नंतरं चतुर्थी संध्याप्रति प्रमादौ पंचमी स्वापवे

लायां षष्ठी प्रतिबोधे सप्तमी सामान्यतो यतेरहो रात्रमध्ये सप्त वेला जघन्यतो पि चैत्य वंदना कार्येवान्यथातिचार संजवात् महानिशीथे प्रायश्चित्त जणनात् संघाचा रवृत्तौ साधः साध्वीवा त्रिसंध्यं चैत्यवंदना न कुर्यात्तस्य प्रायश्चित्तं. इति महानिशीथे. ॥ ए० ॥ मूलः–पडिकमउ गहिणो विहु, सत्तविह पंचहाउ इअरस्स; होइ जह न्नेण पुणो, तीसु संजासु इयतिवीहं ॥ए१॥ अर्थः– बन्ने पडिकमणानेविषे निश्चये करीने गृहस्थनेपण सात प्रकारे चैत्यवंदना करवी, अने इतरके० बीजाजे एक पडिक मणा ना करनार तेने पांच वखत चैत्यवंदना करवानुं कह्युं ठे. अने जे पडिकमणो न करे तेने उंठामांउंठी त्रण संध्या समये तो जरूर चैत्य वंदना करवी. ॥ ए१ ॥

अवतरणः– हवे जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट रीते चैत्यवंदनाना प्रकार क हेठेः– मूलः– नवकारेण जहन्ना, दंडग थुइ जुअल मज्जिमा नेआ; उक्कोसा विहि पुवग, सक्कडय पंच मिम्माया. ॥ ए२ ॥ अर्थः– काउसग्गनेविषे एक नवकार चिंतवी, “नमो जिणाणं” इत्यादि वडे एक नमस्कार कही जय वी राय कहियें अथवा पंचांग प्रणाम करवो ते जघन्य चैत्यवंदना नूमिउपर बेशीने “सव्वलोए” इत्यादिक दंमक थुइ बन्ने करी देवनी वंदना करवी तेने मध्यम चै त्यवंदना कहे ठे. अने उत्कृष्ट चैत्यवंदनातो साधु अथवा श्रावक चैत्य गृहादि कनेविषे जइने यथोचित प्रतिलेखित प्रमार्जित स्थंमिलनेविषे रह्यो ठतां त्रैलोक्य गुरुनेविषे स्थाप्यां ठे पोतानी दृष्टि अने मन जेणे, वली संवेग वैराग्यना समूहें उलसि रह्या ठे जेना रोमांच, तेणे करीने कंचुकित थयुं ठे जेनुं शरीर, अने हर्ष ने वश थइने प्रवर्त्यो ठे हर्षाश्रुनो पूर तेणेकरी जेना नयनकमल पूरण थयाठे, एवां नक्तिचिन्ह युक्त थयो थको अत्यंत डुर्लन नगवंतनुं नमन मनमां मानीने सुसंगत सांगोपांग योगमुद्रावमे परमेश्वरनी सन्मुख स्थित रह्यो थको अस्खलि तादिगुणेयुक्त पांच शक्रस्तवेकरी चैत्यवांदे तेने उत्कृष्ट चत्यवंदना कहेठे.॥ ए२ ॥

एवी रीते सत्तावीश गाथाए करी चैत्यवंदना द्वारतुं वर्णन कर्युं. हवे (गुरुवंदना) नो द्वार कथन करतां ठतां प्रथम एक शो ने बाणु स्थानिक वांदणाना कहेठेः–

अथ द्वितीय गुरुवंदनद्वार प्रारभ्यते.

मूलः– मुहणंतय देहाव,स्स एसु पणवीस हुंति पत्तेयं; ठगणा ठच्चगु णा, ठच्चेव हवंति गुरुवयणा. ॥ ए३ ॥ अहिगारिणोय पंचय, इयरे पंचेव पंच पडिसेहा; एक्कावगाह पंचा, निहाण पंचेव आहरण. ॥ ए४ ॥ आसायण तेत्ती सं, दोसा बत्तीस कारणा अठ; बाणओ असय ठाणाण वंदणे होइ नायवं. ॥एए॥

अर्थः–मुखनो अनंतक एटले वस्त्र, एने मुखानंतक अथवा मुंहपती कहेछे. एनी पचीशपडिलेहणा तथा शरीरा श्री पचीश पडिलेहणा, आवश्यके पचीश वांदणा, एम पचीस प्रत्येके जाणवा, छ स्थानक, छ गुण, अने छ गुरुवचन. आचार्यादिक अधिकारी पांच, इतर अनधिकारी पासछादिक पांच, व्याक्षिप्तादि प्रतिषेध पांच, अवग्रह एक, अभिधान पांच वंदणचिइ इत्यादि पांच आहरण सीयले इत्यादि, तेत्रीश आसातना, बत्रीश दोष, "अणाढियं" इत्यादि वांदणा देवाना कारण आठ, ए सर्वमळी एकशो ने बाणु स्थानक वांदणानेविषे थाय छे. ॥ ए३ ॥ ए४ ॥ ए५ ॥

अवतरणः– एवी रीते उद्देश मात्र देखाडीने हवे विस्तारपणे अनुक्रमे करी कथन करतां छतां प्रथम मुहपतीनी पचीश पडिलेहणा देखाडे छेः– मूळः– दिठि पडिलेहण एगा, नव अक्खोडा नवेव पक्खोडा; पुरि मिल्ला छच्चनवे, मुहपत्ती होइ पणवीसा. ॥ ए६ ॥ अर्थः–प्रथम मुहपती लईने दृष्टि पडिलेहण करवुं, पछी नव अखोडा, नव पखोडा तथा छ पुरिमिला करवां, ए संप्रदायगम्य छे माटे विस्तार कर्यो नथी. एवी रीते मुहपतीनी पचीश पडिलेहणा जाणवी. ॥ए६॥

हवे देहनी पचीस पडिलेहणानी गाथा ग्रंथांतरथी कहेछेः–"बाहू सिर मुह उयरे, पाए सु य तिन्नि हुंति पत्तेयं; पिठी इहुंति चउरो, एसा पुण देह पणवीसा." मूळः– छब्बाहुसु तिन्नि सिरे, तिन्नि मुहे तिन्नि उरसि चउ पिठे; चलणे सुछज्ञ एवं, पणवीस पमज्जणा देहे॥ ए७ ॥ अर्थः–छ बांहनेविषे, तेमां प्रथम डाबी बांहनो मध्य पछी जमणो पासो पछी डावोपासो ए त्रण एमज जमणी बांह नेविषे पण त्रण, एवीज रीते मस्तक उपर त्रण, मुख उपर त्रण, उरएटले हृदय उपर त्रण, ते पण सर्वत्र मध्य दक्षण अने वामभागें अनुक्रमे देवी पीठ एटले वांसा उपर चार, ते दक्षण भागे वामे भागे उपर अने हेठे एवी रीते चार जाणवी अने चरणोनेविषे छ, एमां पण प्रथम डाबा चरणनेविषे ने पछी जमणा चरणनेविषे ते पण मध्य दक्षण तथा वाम भागना क्रमेदेवी एवी रीते देहनेविषे पचीश प्रमार्जन करवां ए पुरुष शरीर संबंधी प्रमार्जन कह्यां अने स्त्रीना शरीरना केटलाएक अवयवो गोप्य रहेवाने लीधे दर्शन राखवा भणी पूर्वोक्त पुरुषनी रीति प्रमाणे छ बाहोनी उपर, छ चरणोनी उपर, तथा त्रण मुखनी उपर एवी रीते पंदर प्रमार्जन करवां. ॥ए७॥

हवे पचीश आवश्यक कहेछेः– मूळः–दुउणय अहाजायं, किइ कम्मं बारसावयं चउसि रं; ति गुत्तंच दुपवे, सिंएग निक्खमणं ॥ ए८ ॥ अर्थः– बे वार अवनमन एटले नमन कराय छे, तेने द्यवच नत कहे छे. तेमां एक तो ज्यारे

गुरुनी पाशे जाय छे अने "इछामि इत्यादिथी ते निसीहीया सुधी पोताना अ भिप्राय जणाववा शारू मुखथी उच्चार करे छे त्यारे, अने बीजुं बीजी वखते पूर्व नी पठे वांदणुं करे त्यारे एम बे वार अवनमन करवुं. तथा अहा जायं (यथा जा तं) एटले जेम जन्म. एमां बे प्रकार छे. एक श्रमणपणा आश्रयी, अने बीजुं योनि निर्गमन आश्री जन्म जाणवुं. तेमां श्रमणपणुं आश्रयी एटले जेम श्रमण थती वखते उंगो, मुहपती अने चोल पट्टक एटलो श्रमण आश्रयी जे थयो अने योनि निर्गमनपणुं एटले जेम योनिमांथी प्रसव थतां बालक पोताना मस्तकने हाथनी संपुट लगाडयो छतां बाहेर निर्गमन करे छे तेम वांदणुं पण क रवुं ते माटे यथा जात वांदणु पण कहीयें वली कृतकर्म वांदणुं पण केवो ए त्रण. तथा हाथ जोडी राखीने अहो कायादि बार आवर्त्त हस्तना न्यासविशेष करवां, ए पन्नर. मस्तकवडे चार वांदणां करवां खामेमिखमासमणो इहां एक शिष्यनो अने एक गुरुनो एरीते बीजे वांदणे मली चार वार मस्तक नमावे अथवा संफासं ख मणिजोभे एमपण गुरु शिष्यना चार जाणवा ए (१९) अने त्रण गुप्ति एटले पोतानुं मन संकल्पादिक रहित कर्युं छतां एकाग्र राखवुं, अस्खलित वचननो उ च्चार करवो, अने कायायें यथोक्त आवर्त्त साचवे ए त्रण गुप्ति ए बावीस थया. तथा अवग्रहमां प्रवेश करवां समये बे वार वांदणा करवां, अने अवग्रहमांथी नीकलतां एकवार वांदणु करवुं. ए पचीस थया. बीजे वांदणे अवग्रहथकी निकलवुं नही.९७

अवतरणः--हवे छ स्थानकोनुं वर्णन करे छेः—मूलः—इछाय अणुन्नवणा, अवा बाहंच जत्तजवणाय; अवराह खामणाविय, छठाणा हुंति वंदणए. ९९ अर्थः—प्रथम इछारूप स्थानक छ प्रकारनुंछेः—प्रथम नाम इछा, अने बीजी स्थापना इछाए बे सु गमछे माटे विस्तार कर्यो नथी अने त्रीजी द्रव्य इछा एटले सचितादि द्रव्यनी अभि लाषा अथवा अनुप युक्तने "इछामि" एवी रीते कहेवुं ते. तथा चोथी क्षेत्र इछा एट ले मगधादि क्षेत्रनी इछा करवी ते. वली पांचमी कालेछा एटले रात्र प्रमुख कालनी अभिलाषा. जेमके, "रयणि भमिसारियाओ, चोरा पर दारियाइ इछंति, ताला यरासु भिरकं, बहु धन्नाकेइ डुभिरकं" अने छठी भाव इछा, एना बे प्रकार छेः— एक प्रशस्त अने बीजी अप्रशस्त. ज्ञानादिकनी अभिलाषाने प्रशस्त भाव इछा क हे छे अने कामिनी प्रमुखनी अभिलाषाने अप्रशस्त भावइछा कहे छे. ए बन्ने प्रका रनी भावइछामांनी प्रशस्त भावइछा ग्रहण करवानो आंही अधिकार छे. हवे बीजो अनुज्ञापनारूप स्थानक पण नामादि भेदे करी छ प्रकारनो छेः— पहेली नामानु

ज्ञापना, अने बीजी स्थापनानुज्ञापना, ए बे सुगम छे माटे विस्तार कर्यो नथी. त्रीजी द्रव्यानुज्ञापनाना त्रण प्रकारछेः– प्रथम लौकिक, बीजी लोकोत्तर, अने त्रीजी कुप्रावचनिकी. तेना एकेकना वली सचित्त, अचित्त अने मिश्रना भेदे करी त्रण त्रण प्रकारछे. लौकिकी सचित्त एटले अश्वादिकनी अनुज्ञापना, लौकिकी अचित्त एटले मुक्ताफल तथा वैडुर्यादिकनी अनुज्ञापना, अने लौकिकी मिश्र एटले आभरणादि भूषित वनितादिकनी अनुज्ञापना जाणवी. लोकोत्तर सचित्त एटले शिष्य प्रमुखनी अनुज्ञापना, लोकोत्तर अचित्त एटले वस्त्रादिकनी अनुज्ञापना, तथा लोकोत्तर मिश्र एटले वस्त्रादि सहित शिष्यनी अनुज्ञापना जाणवी. अने कुप्रावचनिकी अनुज्ञापना पण उपर कहेली बे अनुज्ञापनाउनी पठे त्रणप्रकारे छे त्रीजो अव्याबाधरूप स्थानक द्रव्य अने भाव ए बे भेदे करी बे प्रकारनो छे. व्याबाध एटले पीडा तेथी जे प्रतिकूल एटले पीडा रहित होय तेने अव्याबाध कहे छे. खड्गादिकना अभिघात एटले मार वमे जे पीडा थाय छे तेने द्रव्य व्याबाध कहे छे, अने मिथ्यात्वादिकना उपघात एटले वचनादिक मार वडे जे पीडा थाय छे तेने भाव व्याबाध कहे छे. ए बेहु प्रकारना व्याबाधना अभावे अव्याबाध स्थानक थाय छे ते "बहु सुभेणभे" इत्यादि पदे करी जाणी लेवुं. चोथो यात्रारूप स्थानक. एना पण द्रव्य अने भाव ए बे भेद छे. तेमां तापसादि मिथ्यादृष्टिने पोतानी क्रियामां उत्सर्प्पण तेने द्रव्य यात्रा कहे छे, अने साधुने विषे भाव यात्रा कहे छे. पांचमो यापनारूप स्थानक द्रव्य अने भाव ए बे भेदे करीने बे प्रकारनो छेः– तेमां शर्करा अने द्राक्षादि सारी औषधीए करीने शरीरनी दृढ यापना करवी एटले वृद्धि करवी, तेने द्रव्य यापना कहे छे, अने इंद्रिय नोइंद्रियोने उपशमेकरी विषयोथी उपराग करी शरीरने सामाहितपणु शांति करवी तेने भाव यापना कहेछे. अने छगे खामणारूप स्थानक पण द्रव्य अने भाव ए बे भेदे करीने बे प्रकारनो छे. तेमां कलुषित चित्तवाला आ लोकना भयवडेथी बीक राखनाराने ते द्रव्यथी खामणा कहे छे अने संविग्न चित्तवाला आ संसारथी बीक राखनाराने भाव खामणा कहेछे. एवी रीते वांदणानेविषे छ स्थानक थाय छे ते कह्या. ॥ ९९ ॥

अवतरणः-वांदणाकरनारने छ गुणथायतेकहेछे. मूलः– विणओवयारमाण,स्स भंजणा पूयणा गुरुजणस्स; तिछयराणय आणा,सुअधम्माराहणा किरिया.॥१००॥ अर्थः– प्रथम विनयोपचाररूप गुण एटले आठ प्रकारना कर्मोनो नाशकरवारूप विनयवडे तेने उपचारके०आराधवानो प्रकारछे ज्यां तेने विनयोपचार कहेछे, ते विन

योपचारवडे गुरुनुं वांदणुं करायछे बीजो माणस्स नंजनारूपगुण जे जात्यादि आठ प्रकारना, मदेकरी युक्त होय ते देवने माने नही, गुरुनी वंदना करे नही, परनी श्लाघा करे नही, माटे माननुं त्याग करीने अमानादि गुण वडे वांदणुं थायछे. त्रीजो पूयणा गुरुजणस्स गुरु एटले ज्ञानादिक गुणेकरीने अधिक एवा जे गुरुजन तेमनी बहुमान वडे पूजा थायछे चोथो तिळयराण के० तीर्थंकरनी आज्ञाने आराधवारूप गुण थायछे पांचमो सुयधम्माराहणा के० श्रुत धर्मनी आराधना रूपगुण थायछे अने छठो अकिरियारूप गुण एटले अक्रिया थी सिद्धस्थानकज प्राप्त थायछे. एवी रीते परंपराए करी वांदणा लक्षण विनयवडे होय छे. यडुक्तं "तहारूवेणं नंते, समणंवामाहणं वा वंदमाणस्सवा, पज्जुवा समाणस्सवा वंदण पज्जुवासणाय, किंफलागोयमा, सवणफला, सेणं सवणे, किंफले नाणफले, नाणं किं फले, विन्नाणफलं, विन्नाणो पच्चखाण फले, पच्चखाणे संयम फले, संयमे अनण्हए फले, अनण्हएतव फले, तवेवोदाणफले, वोदाणे अकिरियाफले, अकिरिया सिद्धिगइ गमणफलत्ति वांदणा देतां ए छ गुण थायछे. ॥ १०० ॥

अवतरणः--हवे गुरुना छ वचन देखाडेछेः—मूलः—छंदेण अणुजाणामि, तहत्ति तुब्भंपि वट्टई एवं; अहमविखामेमि तुमे, वयणाइं वंदणरिहस्स. ॥ १०१ ॥ अर्थः—प्रथम छंदेण एटले मने निराबाध छे. बीजुं अणुजाणामि एटले अनुज्ञा आपुं छुं. त्रीजुं तहत्ति एटले जेम तूं कहेछे तेमज. चोथुं तुब्भंपिवट्टई एटले मने संयमयात्रा प्रवर्त्ते छे, पांचमुं तेम तुने पण एवं एटले एवी रीते. प्रवर्त्ते छे. छठुं अहमविखामेमितुमे एटले हुं पण तमने अवधिशिष्यणादिव्यतिक्रम खमाळु छुं. ए छ वचन वंदना करवा योग्य आचार्यादिकना जाणवा. ॥ १०१ ॥

अवतरणः— पांच अधिकारी कहे छेः— मूलः— आयरिय उवज्झाए, पवत्ति थेरे तहेव रायणिए; ए एसिं किइ कम्मं, कायव्वं णिज्जरठाए ॥ १०२ ॥ अर्थः— प्रथम आयरिय एटले जे सूत्र तथा सूत्रना अर्थने सारी पठे जाणता होय, जेनुं शरीर समस्त श्रेष्ट लक्षण सहित होय, अने गंजीर धीरतादि गुण विनूषित होय एवा आचार्यनी मुमुक्षुए मोक्षने अर्थे सेवा करवी. बीजो उवज्झाए एटले जेने उपसमीपे कहेतां समीप रहीने जणीयें एवा उपाध्यायने वांदवुं. त्रीजो पवत्ति एटले यथोचित प्रशस्त योगनेविषे साधुने प्रवर्त्तावे एवाप्रवर्त्तकने वांदवुं. यडुक्तंः— "तव संजम जोएसुं, जो जोग्गो तछतं पवत्तेइ; असहंच नियत्तेइ, गणतत्तिलो पवत्तीउ" चोथो थेरे एटले जे ज्ञानादिकनेविषे सीदाय छे कहेतां संकोचने पामे छे एवा

प्राणीने आ लोक अने परलोकना उपायने देखाडीने स्थिर करे एवा स्थविरनी वंदना करवी. उक्तंहि:– "थिर करणा पुण थेरा, पवत्ति वावारिएसु अत्थेसु, जो जब सीयइजइ, संतबलोतंथिरंकुणई." अने तहेवके० तेमजवली पांचमो रायणिए एटले ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए त्रण रत्ने करीने जे पोताथी अधिक होय ते रत्नाधिकने पण वांदवुं. ए पांचेने कर्मक्षय लक्षण जे निर्जरा तेने अर्थे कृत कर्म एटले वंदण कर्म करवाने योग्य वांदणुं करवुं. ॥ १०२ ॥

अवतरणः– पांच अवंदनीय कहे छेः– मूलः– पासत्थो ओसन्नो, होई कुसीलो तहेव संसत्तो; अहछंदो विय एए, अवंदणिज्जा जिण मयंमि. ॥ १०३ ॥ अर्थः– पहेलो पासत्थो एटले जे ज्ञानादिकनी पासे तटस्थपणे रहे अथवा जे मिथ्यात्वादिक बंधन हेतुरूपपास तेनेविषे रहतो होय ते पार्श्वस्थ बीजो ओसन्नो त्रीजो कुसीलो, चोथो संसत्तो, पांचमो अहछंदो. ए पांचेजण वंदन करवा योग्य नथी. १०३

अवतरणः– एज विस्तारथी कहे छेः– मूलः–सो पासत्थो डुविहो, सव्वे देसेय होय नायव्वो; सव्वंमि नाण दंसण, चरणाणं जो उपासंमि. ॥ १०४ ॥ अर्थः– ते पासत्थो बे प्रकारनो होय छे. एक सर्वतः बीजो देशतः तेमां जे ज्ञान दर्शन अने चारित्रनी पासे तटस्थपणे रहे तेने सर्व पासत्थो कहेछे. ॥ १०४ ॥

अवतरणः– हवे देश पासत्थो कहेछेः– मूलः– देसम्मि अ पासत्थो, सेज्जायर निहम रायपिंमंच; नियंच अग्गि पिंमं, भुंजइ निक्कारणे चेव. ॥ १०५ ॥ अर्थ ॥ देश पासत्थो एटले सेज्जातर पिंम, अन्याहृतपिंम राजपिंम नित्यपिंम अने अग्रपिंम एटला पिंम कारण विना भुंजे एटले भोजन करे ते. ॥ १०५ ॥

अवतरणः– उसन्नाना बे भेद देखामे छेः– मूलः– उसन्नो विय डुविहो, सव्वे देसेय तब सव्वंमि; उउबद्ध पीढ फलगो, ठविय गभोईय नायव्वो.॥१०६॥ अर्थः– एक सर्व उसन्नो अने बीजो देश उसन्नो तेमां रुतु बद्ध काळनेविषे चोमासा विना जे पीठ फलकनुं सेवन करे अने स्थापना पिंमने भोगवे. ते सर्व उसन्नो ॥ १०६ ॥

अवतरणः–देश ओसन्नो कहेछेः–मूलः– आवस्सग सज्झाए, पडिलेहण झिरकझाण भत्तठे; आगमणे निग्गमणे, ठाणेअ निसीअण तुयट्टे.॥१०७॥ अर्थः–पचीश आवश्यक अने पचीश पडिलेहणपूरे पूरा करे नही. स्वाध्यायनकरे भिक्षा गोचरी विधि पूर्वक करे नही, एम ध्यान अन्नकार्थ पण विधिए करी करे नही, आगमन एटले बाहेरथी आववुं, निर्गमन एटले उपाश्रयमांथी बाहेर जवुं, ठाणेअ एटले काउसग्गनो करवो निषीदन एटले बेशी रहेवो, तथा तुयट्ट एटले रात्रीनेविषे सुवो,

मूलः– आवस्सयाइ न करे, अहवा विकरे इहीण महियाइं; गुरु वयण बलाइ तहा, जणिओ देसावसन्नोति. ॥ १०८ ॥ अर्थ. ए सर्व पूर्वोक्त आवश्यकादिक जे बोल कह्या ते करे नही, अथवा न्यूनाअधिकपणे करे, तेने जो गुरु कहे के, तूं आवश्यादिक कर, तो तेमने तेज वचन वडे पाछो जवाब आपे अने उलटु कांई अनिष्ट वचन कही संभळावे, तेने देस उसन्नो गणधर तीर्थंकरे कह्यो छे. ॥१०८॥

अवतरणः– कुसीलनुं वर्णन करे छे. मूलः– तिविहो होइ कुसीलो, नाणे तह दंसणे चरित्तेय; एसो अवंदणिज्जो, पन्नत्तो वीयरागेहिं. ॥ १०९ ॥ अर्थ॥ कुशीला त्रण प्रकारना छेः– एक ज्ञान कुशील; बीजो दर्शन कुशील, त्रीजो चारित्र कुशील. कुशील एटले जेनो आचार कुत्सितशीलवाळो होय. माटे श्री वीतराग भगवाने एवा कुशीला अवंदनीय कह्या छे. ॥ १०९ ॥

अवतरणः–उपली गाथाना सगला द्वार दर्शावे छेः– मूल ॥ नाणे नाणायारं जोउ विराहेइ काल माईहिं; दसणे दसणायारं, चरण कुशीलो इमो होइ. ११० अर्थः– ज्ञाननेविषे काळ अने विनयादिक आठ अतिचार लगाडीने जे ज्ञाननी विराधना करे तेने ज्ञान कुशील कहे छे. दर्शननेविषे निस्संकिय इत्यादिक अतिचार लगाडीने जे दर्शननी विराधना करे दर्शनाचारविराधे तेने दर्शन कुशील कहे छे. अने चरण एटले चारित्र कुशील आगळ देखाडे छे. ॥ ११० ॥

अवतरणः– चारित्र कुशील दर्शावतां द्वार गाथा कहेछेः– मूलः– कोउअ भूइ कम्मे, पसिणा पसिणे निमित्ति माजीवी; कक्क कुरुयाइ लक्खण, उवजीवइ विज्जा मंताइ ॥ १११ ॥ ए गाथानो अर्थ द्वारे वखाणेछे. अवतरणः– चारित्र कुशीलनुं वर्णन करतां पहेला गाथाना बे पदवडे तेना लक्षणरूप कौतुक कहेछेः– मूलः– सोहग्गाइ निमित्तं, परेसि नवाणइ कोउअभणियं; जरियाइ भूइदाणं, भूई कम्मं विणि दिहं ॥११२॥ अर्थः– सौभाग्य एटले जन मान्यताने अर्थे नाना प्रकारना चेटक करवा जेमके, संतानादिकने अर्थे स्नानादिकनुं कराववुं, अथवा जडी प्रमुखनु बंधाववुं, इत्यादिक मूळना आदि शब्द वडे जाणी लेवुं. अथवा कौतुक एटले आश्चर्यकारक कृत्य करी देखाडवुं. जेमके, पोताना मुखमां गोळी घालीने नाककानमांथी कहाडवी, अने मुखमांथी अग्निनी ज्वाळा कहाडवी. इत्यादिक करी देखाडे तेने आश्चर्य कहेछे. भूति कर्म एटले ताप प्रमुख निवारण करवाने अर्थे मंत्रादिके सिद्ध करीने रक्षा आपे अने ते सय्याना चारे पाशे बंधावे इत्यादि. ॥११२॥

अवतरणः– पसिणा पसिण कहे छेः– मूलः– सुविणग विज्जा कहियं, आइं

खिणि घंटियाइ कहियंवा; जं सीसई अनेसिं, पसिणा पसिणं हवइ एयं. ॥११३॥ अर्थः— विद्याए करी स्वप्नतुं शुभाशुभपणुं कहेवुं, कर्ण पिशाचिका विद्यावडे गुह्य वार्त्ताओ कहेवी, घांट प्रमुख मंत्रवमे अभिमंत्रीने प्रश्न पूछनारने तेनो जवाब कहेवो. ते प्रश्नाप्रश्न जाणवुं ॥ ११३ ॥

अवतरणः—निमित्त अने आजीवी ए बन्ने एक गाथावमे कहे छेः— मूलः— तीयाइ भाव कहणं, होइ निमित्तं इमंतु आजीवं; जाइ कुल सिप्पकम्मे, तव गुण सुत्ताइ सत्तविहं. ॥११४॥ अर्थः—अतीत, आगामि, अने वर्त्तमान ए त्रणे कालना लाभालाभ भावनुं जे कथन करवुं तेने निमित्त कहे छे. इमंतु के० एमज आजीविका ते जाइते माता संबंधीनी जाति, कुलते पिता संबंधी, शिल्प, ने कर्म आजीव, एम तप प्रगटपणे करे तेनो अभ्यास प्रसिद्ध करे, तथा गुण शब्द अशुद्ध जणायछे माटे गण ते चंद्रादिक समजवा. अने सूत्र कालिकादिकनो अभ्यास प्रगट करे, आदि शब्दवमे एवा पोताना अनेक भेद सुचवे. एम गुण अने सूत्र ए बन्नेकरी सात प्रकार थायछे. इत्यादि कारणो दर्शावी अजीविका चलावे. ॥ ११४ ॥

अवतरणः— कक्कादि कहे छेः— मूलः—कक्क कुरुआइ माया, नियमीएमंभणंतिजं भणियं; थीलरकणाइ लरकण, विज्ञा मंताइआपयडा. ॥ ११५ ॥ अर्थः— कक्क कुरुआ शब्दनो अर्थ माया थाय छे, एनुंज तात्पर्य कहेछे नियडीए एटले निकृति शब्दे करी शठपणुं धारण करीने बीजाने मंभण एटले ठगी लेवुं. केटलाएक आवो अर्थ करे छेः— प्रसूति प्रमुख रोग उपर जे काढो पाय छे तेने कक्क कहेछे अथवा पोताना शरीरने लोध्र प्रमुखनो उगटणो लगाडवो, ते शरीरना एक देशमां अथवा सर्व शरीर उपर तेने कक्क कहेवुं, अने कुरुका पण शरीरना एक देशने अथवा आखा शरीरने धोइ नाखवुं. अने स्त्रीनां सामुद्रिक लक्षण प्रमुख कहेवां, जेमके, हाड लक्षणोपेत होय तो द्रव्य मले, अने मांश लक्षणोपेत होय तो सुख थाय इत्यादि लक्षणनो कहेवो वली ज्यां साधना सहित स्त्री देवी अधिष्ठायिक होय, ते विद्या अने जिहां साधनारहित देव अधिष्ठायिक होय तेने मंत्र कहे छे, मूलना आदि शब्दवडे मूल कर्म चूर्णादिक आपे ते इत्येव मादिक प्रगटेज जाणवा. ॥ ११५ ॥

अवतरणः— त्रण गाथाए करी संसक्तो कहे छेः— मूलः— संसत्तो उइआणिं सो पुण गोभत्तलंद ए चेव; उच्छिठ मणुच्छिठं जंकिंची बुज्झई सवं. ११६ अर्थः—जे मां गुण अने दोष मिश्र थया होय एटले एकठा मल्याहोये एटले केटलाक गुण होय अने केटलाएक दोष होय तेने संसक्त कहे छे. तेनो वली प्रकार देखाडे छेः—जे

म गायनी पासे तेनो चारो नाखीए ते जे वासणमां नाखीए ते वासणमां गाइना खाधेलमांनो केटलो एकठो थयो होय अने केटलोएक जेमनो तेम एक कोरे रही गयो होय एम जे अनुछिष्ट एटले एकठो न थयो होय. ते पण तेनेविषे बुझइ के० भेल सेल करे सरवे एकठो थई रहेछे.॥११६॥ मूलः--एमेवय मूलुत्तर, दोसा य गुणाय जत्तिया केई; ते तंमिसन्निहीया, संसत्तो भसुईतम्हा. ॥११७॥ अर्थः-- एवी रीते मूल अने उत्तर गुण संबंधी जेटला दोष अने गुण छे ते तेनेविषे संनि हतके० एकठा लाभे एटले मूलनुं रूप बदलावी नाखे अने प्रसंग वडे सारा अथ वा नरशा गुण दीठामां आवे पण सारा अनेनरसागुण साथेजरहे माटे संसक्त कहे छे. ॥११७॥ मूलः-- पासत्थाईएसुं, संविगेसु च जत्थ मिलईउ; तहि तारीसउ होइ, पियधम्मो अहवईयरोउ. ११८ अर्थः-- तेसंसक्त पासत्थादिनी साथे अथ वा संवेगीउनीसाथे ज्यां जेनीसाथे मले त्यां तेना जेवो थई जाय वली प्रिय धर्म एटले पोताने प्रियजे धर्म होय ते अथवाइतर जे बीजानो धर्म अप्रिय होय तो पण ते गमे त्यां प्रसंगानुसार मली जाय तेने संसक्त कहे छे. ॥ ११८ ॥

अवतरणः-- बे गाथाए करी संसक्तना बे भेद देखाडे छेः-- मूलः-- सोडविग प्पो भणिउ, जिणेहि जिय राग दोस मोहेहिं; एगो उ संकिलिट्ठो, असंकिलिट्ठो त हा अन्नो. ११९ अर्थः-- राग, दोष अने मोहने जेणे जीत्या छे एना उपलक्षण वडे बीजा अनेक दोष पण जीत्याछे जेणे एवा जे श्रीजिनवर तेमणे ते संसक्त बे प्रकारनो कह्यो छे. एक संक्लिष्ट अने बीजो असंक्लिष्ट. ॥ ११९ ॥

मूलः-- पंचासवप्पसत्तो, जोखलु तिहिगारवेहिं पडिबद्धो; इछिगिहि संकिलिट्ठो संसत्तो संकिलिट्ठोउ. १२० अर्थः--जे प्राणातिपातादि पांच आश्रवनेविषे आसक्त, वली ऋद्धि रस साता लक्षण त्रणे गारव वडे प्रतिबंध सहित, होय वली स्त्रीनो सेवनार ते स्त्रीसंक्लिष्ट जाणवो, अने जे गृहस्थसंबंधी द्विपद एटले बे पगवाला दा सी दास प्रमुख, तथा चतुःपद एटले गाई भेंस अने घोडा प्रमुख पशु होय, अने धन धान्यादिकनी जेने घणी चिंता होये तेने ग्रहस्थ संक्लिष्ट संसक्त जाणवो. १२०

अवतरणः-- त्रण गाथावमे यथाछंदो कहे छेः-- मूलः-- उस्सुत्त मायरंतो, उ स्सुतंचेव पन्नवे माणो; एसो उअहा छंदो, इछा छंदेत्तिएगट्ठा. ॥ १२१ ॥ अर्थः-- पोते उत्सूत्रने आचरे, अने बीजाने पण उत्सूत्रवडे प्ररूपे, तेने यथाछंदो कहेछे अ थवा इछाछंदोपण तेनेज कहे छे, यथाछंद अने इछाछंद ए पदोनो अर्थ एकजछे.

मूलः--उस्सुत्तमणुवइठं, सछंद विग्गपियं अणणुवाइ; परतत्ति पवत्तेतिं, तणेअ

इणमो अहाछंदो. ॥ १२२ ॥ जे तीर्थंकर अथवा गणधरे उपदेस्यो न होय, मात्र पोताना मन गमता छंदेके० अभिप्राय वडे कल्पना करेलुं होय एवुं अनुपपाती एटले पोतानी बुद्धिवडे जेनी रचना करी छे तेथी भगवंतना आगमने अनुयायी थाय नही. एवा उत्सूत्रने जे प्रवर्त्तावे तेने उत्सूत्र कहियें वली यथाछंदानो लक्षणांतर कहेछे जे ग्रहस्थना प्रयोजनने विषे, करण करावण अनुमतीए करी जे प्रवर्त्ते तथा कोइ एक साधु प्रमुखथी कांइ अपराध थइ गयो होय तो ते वारंवार ज्यां त्यां बकतो फरे तेने यथाछंदो कहे छे. ॥ १२२ ॥

मूलः— सछंदमइ विगप्पिय, किंचिअसुह साय विगइ पडिबद्धो ; तिहि गारवेहि मज्जइ, तं जाणाइ अहा छंदं. ॥ १२३ ॥ अर्थः— पोताना मतवडे अने पोताना अभिप्राय प्रमाणे नाना प्रकारना विकल्पे करी कांइक अध्ययनादिकनी रचना करे अपुष्ट आलंबनवडे नाना प्रकारना सुखनी इछा करे विगयनेविषे प्रतिबंध होय कारण विना विगयनो आहार करे ऋध्यादि गौरवता पामीने जे गर्व करे तेने यथा छंदो जाणवो. इहां पासछाने सर्वथा अचारित्रिउज केइक मानेछे ते अयुक्त छे जो सर्वथा एकांत अचारित्रिहोय तो देश अने सर्व एवां बे भेदनो करवो ते असंमत चारित्रना अभावनो बे स्थानके सरिखोज तेमाटे बे भेदना कल्पना थकीज चरित्र सत्ताजाणवी ए सर्ववात पोताना मनथी नथीकही किंतु निसिछचूर्णिमांपण एमकह्युंछे पासछो अइ सुत्त पोरसिंवा नकरेइ दंसणाइ यारेसु वट्टइ चारित्तेसु नवट्टई अइयारेवा नवज्जेई एवं सछो अछई पासछोति एटले एने सबल चारित्र युक्तपणो जाणवो ए अढारगाथायेकरी पासछादिक पांचे अवंदनीयका एटले वांदवायोग्य नही. ॥ १२३ ॥

अवतरणः—पांच प्रतिषेध कहेछेः—मूलः—वक्खित्तं परहुत्ते,पमत्तेमाकयाइ वंदिज्जा; आहारंच करिंतो, नीहारं वाजइ करेइ. ॥ १२४ ॥ अर्थः— अनेक भविक लोक सहित सभामां देशनादि करवाना श्रमथी जेनुं चित्त विक्षेपने पामेलुं छे तेने व्याक्षिप्त कहे छे. तेवखते वांदवुं नही, कोइ एक कारणे जे उपरांगपणाने पामेलो होय तेवारे वांदवुं नही वली प्रमादेकरी क्रोधे करी अथवा निद्राएकरी युक्त जे होय तेवारेपण वांदवुं नही, एमज चोथो आहार करता अने पांचमो निहार करतां पण वांदवुं नही. ए पांच बोल वडे अनुक्रमे पांच दोष जणाव्या छे ते आप्रमाणेः— पहेलो धर्मांतराय, बीजो अनवधारण, त्रीजो कोप, चोथो आहारांतराय, अने पांचमो लज्जाने वश थयो थको शंका न भांजे ए पांच दोष जाणी लेवा. ॥ १२४ ॥

अवतरणः– हवे क्यारे वांदवा ते कहे छेः– मूल अनुष्टुप छंदः– पसंते आ सणछेय, उवस्संते उवछिए; अणुन्न वित्तुमेहावी, किइ कम्मं पउंजए ॥ १२५॥ अर्थ.–१ प्रशांत ते व्याक्षिप्तादिकना अभाव थकी, २ आसन उपर बेठा छतां, ३ उ पशांतइंद्रिय नोइंद्रियेने उपशमे वर्त्ते छे क्रोधादि प्रमादथी रहित वर्त्तेछे उवछिएछंदेण इत्यादि वचन उच्चरतो एवा गुरुनी सन्मुख उपस्थितथइने छंदादिक वचन वडे बुध्दिमान पुरुष अनुज्ञा मांगीने कृत कर्म वांदणानी प्रयोजना करे. ॥ १२५ ॥

अवतरणः– हवे अवग्रह कहे छेः– मूलः– आयप्पमाण मित्ते, चो दिसिं होइ उग्गहो गुरुणो; अणणुणायस्सत्सया, न कप्पए तछ पविसेउं. १२६ अर्थः– नामादिक भेदे करी छ प्रकारना अवग्रह छेः– तेउंमां नामावग्रह अने स्थापना वग्रह ए बे प्रकार सुलभ छे, द्रव्यावग्रह एटले मुक्ता फलादिकनुं देवुं, क्षेत्रकल्पे ते क्षेत्रावग्रह ते सक्रोश योजन एकज क्षेत्रनेविषे अवग्रह लीधाथी थाय छे. कालावग्रह एटले रुतु बध्द कालनेविषे एक मास, वर्षनेविषे चार मास अथवा जे जेटला कालनो अवग्रह करे तेने कालावग्रह कहे छे. अने भावाग्रह ते प्रशस्त अने अप्रशस्त ए बे भेद वडे बे प्रकारनो छे. प्रशस्त ते ज्ञानादिकनो अ वग्रह अने अप्रशस्त ते क्रोधादिकनो अवग्रह कहेवो अथवा "देविंदराय गि हिवइ" इत्यादि वक्ष्माण एटले जे आगल अवग्रह कहेवाशे ते जाणवा. परं तु इहां तो क्षेत्रावग्रहने प्रशस्त भावावग्रहनो अधिकार छे. हवे गाथार्थ कहे छे. शरीरनो प्रमाण साडा त्रण हाथ होवाथी ते प्रमाणे चारे दिशिए साडात्रण त्रण हाथ गुरुनो अवग्रह थाय छे. तिहां आज्ञा मांग्या विना प्रवेश करवो कल्पेनही.

अवतरणः–हवे पांच वंदनना नाम गाथामां कहेछे.–मूलः–वंदण चिइ किइक म्मे, पूया कम्मंच विणयकम्मं च; वंदणयस्स इमायं हवंति नामाइ पंचेव. ॥१२७॥

अर्थः– प्रथम वंदन एटले स्तवन करवुं, एटले प्रशस्त मनो वचन तथा कायाना व्यापारे करी गुरुने जे वंदन करवुं ते कर्मने वंदन कर्म समजवुं. ते वंद न बे प्रकारनुं छे एक द्रव्य वंदन अने बीजो भाव वंदन तेमां मिथ्यादृष्टि अथवा अनुपयुक्त सम्यकदृष्टिने जे वंदना थाय छे ते द्रव्यवंदना कहेवाय छे, अने उपयु क्त सम्यकदृष्टीने जे वंदन थाए छे ते भाववंदन कहेवाय छे. बीजुं चिइ चिइते इति चयनं जे कुशल कर्मनुं चयन एटले वृध्दि थाय छे तेने चिति कहे छे आंही कारणनेविषे कार्यना उपचारनुं करवुं. एटले कुशल कर्मना उपचय ननुं कारण जे रजो हरणादि उपधिनो समूह एना पण द्रव्य अने भाव

रूपे बे नेद जाणवा. तेमां तापसादिकनालिंग ग्रहण तेनो कर्म अथवा अनुपयुक्त स म्यकदृष्टिना रजोहरणादि ग्रहणनुं कर्म तेने ड्व्यरूप जाणवुं, अने उपयुक्त सम्यकदृ ष्टिनुं रजोहरणादि कर्म ते नावरूपे जाणवुं त्रीजुं करवुं ते कृति एटले जे नमन आव र्तादिक क्रिया करवी एना पण ड्व्य अने नावरूप बे नेद छे. तेमां निन्ह्वादिकने अ थवा अनुपयुक्त सम्यकदृष्टिने जे नमनक्रिया करवी ते ड्व्यरूप जाणवी, अने उपयुक्त सम्यकदृष्टिने जे नमनआवर्त्तादिक्रिया करवी ते नावरूप जाणवी. चोथुं पूजा एटले पूजनकर्म ते प्रशस्त मन, वचन अने कायनी जे चेष्टा तेने पूजन कर्म कहेवुं. ए पण ड्व्य अने नावरूप बे नेदे पूर्वनीपरें जाणवुं. पांचमुं विनीय कहेतां विणासीए जे थकी आठ प्रकारनुं कर्म तेने विनय कहिये एना पण ड्व्य अने नावरूप बे नेद छे ते पण पूर्ववत् जाणी लेवा एवी रीते वांदणानां ए पांच नाम थाय छे. ॥१२४॥

अवतरणः—पांच वांदणाना पांच आहरण दृष्टांत कहे छेः—मूलः—अनुष्टुप् छंद. सी यले खुड्डए किन्हे, सेवए पालए तहा; पंचेहिं दिठंता किय, कम्मेहुवंति नायवा.१२८ अर्थः—वंदण कर्म उपर शीतलाचार्यनो दृष्टांत लेवो. चिति कर्म उपर खुडुगचेला ना नाने आचार्य पद दीधु छे ते दृष्टांत लेवो. कृति कर्म उपर कृष्ण तथा वीराशालवीनो दृ ष्टांत लेवो. पूजा कर्मनी उपर बन्ने सेवकोनो दृष्टांत लेवो. अने विनय कर्म उपर पाल कने संबुकुमरनो दृष्टांत लेवो. ए पांच दृष्टांते करी पांचवंदन कर्म समजी लेवा.१२८

हवे त्रण गाथायेकरी तेत्रीश आसातना कहेछेः—पुरउ परकासन्ने, गंताचिठण निसीयणाय मणे ए आलोयण पडिसुणणे, पुवालवणेय आलोए ॥ १२९ ॥ तह्उवदंस निमंतण, खद्धा अयणे तहा अपडिसुणणे ॥ खद्धत्तिय तछगए,किं तुम तज्जाय नोसुमणे ॥ १३० ॥ नोसरसि कहंछित्ता, परिसंनित्ता अणुठियाइक हे ॥ संथारपायघट्टण, चिठुच्च समासणेयावि ॥ १३१ ॥

हवे एना नामोनो वखाण गाथाये.करी कहे छेः— मूलः—पुरउ अग्ग पएसे, परके पासंमि पछ आसन्ने ॥ गमणेण तिन्निठाणे,ण तिन्नि तिन्निय निसीयणए ॥१३२॥ अर्थः—पुरउके० अग्रप्रदेशे गुरु थकी आगलें परकेपासंमिके० बेहुपासे पछआसन्नेके० ढूकडो ए त्रणे स्थानके गमणेणके० चालताथका त्रण आशातना एमज ए त्र ण स्थानके उनारहेवाथी पण त्रणआशातनाथाय अने निसीयणएके०.ए त्रण स्थानके बेसवाथी पण त्रण आशातनाथाय केमके ढूकडो रहेवाथो सासोस्वास तथा छीकनो श्लेषमलागे तेवारे आशातना थाय. ॥ १३२ ॥

एज वात सूत्रकार देखाडे छेः— मूलः— विणयभ्रंसाइग दू,सणाउ आसायणा

उ नवएत्र्या ॥ सेहस्स वियारगमे, रायणिए पुव्व माय मणे ॥ १३३ ॥ अर्थः– विनयभंगादिक दूषण थकी ए पूर्वोक्त नव आशातना जाणवी एमज वली रत्ना धिकजे गुरु तेनीसाथे थंडिलें गयाथका पहेलाआवी शोचे ते दशमी आशातना.

मूलः– पुव्वंगमणा गमणे, लोए सेहस्स आगयस्स तउ॥ राउसुत्तेसु जाग,रस्स गुरुनणि अपमिसुणणा ॥१३४॥ अर्थः–बाहेर थकी गुरुसाथें आवेलो शिष्य गुरु थकी पहेला गमणा गमण आलोचे ए इग्यारमी आशातना राउसुत्तेसु जागरस्स के० रात्रिनेविषे गुरु बोलावे जे कोण सुतो ठे कोण जागे ठे एवुं सांजली जागतो होय तोपण सादआपेनही ते अप्रति श्रवणनामे बारमी आशातना ॥ १३४ ॥

मूलः– आलवणाए अरिहं, पुव्वं सेहस्स आलविंतस्स ॥ रायणियाउएसा, तेरस मासायणा होइ ॥ १३५ ॥ अर्थः– आलापनके० बोलाववुं तेने अर्ह के० योग्य जे श्रावकादिक ते श्रावकादिको आव्याथकाने रत्नाधिकजे गुरु तेनाथी पहेलाज जे शिष्य बोलावे ते शिष्यने तेरमी आशातना थाय ॥ १३५ ॥

मूलः– असणाईयं लद्धुं, पुव्वंसेहे तहेव रायणिए ॥ आलोए चउदसमिं, एवं उवदंसणे नवरं ॥१३६॥ अर्थः–अशनादिक लेइने प्रथम शिष्यादिक आगलें आलो इ पठी रत्नाधिक आगलें आलोवतांने चउदमी आशातना होय तेमज प्रथम शिष्यने अशनादिक देखाडी पठी रत्नाधिकने देखाडे ते पन्नरमी आशातना जाणवी॥

मूलः– एवं निमित्तणोवी, लद्धं रयणाहि गेण तह लिद्धं; असणाए पुव्वाए, खद्धंति बहुं दलं तस्स. ॥ १३७ ॥ अर्थः– एमज पहेला बीजाने अशनादिकनी निमित्रणाकरी पठी गुरुने निमंत्रण करे ए सोलमी वली गुरुने पूठ्याविना बीजाने आहारादि आपे तथा पोते खाए ए सतरमी ॥ १३७ ॥ इहां शिष्य प्रश्न करेठे.

मूलः– संगह गाहाए जो, नखद्ध सद्दो निरूविए वीसु; तं खद्धायण पए, खद्धत्ति विनज्ज जोइज्जा. ॥ १३८ ॥ अर्थः– संग्रह गाथामां खंधशब्द जूदो कयो नथी तो इहां क्यांथी लीधो तेनो उत्तर जे यद्यपि संग्रह गाथामां खंधशब्द जूदो कयो नथो ते खंधाइण ए पदनेविषे खंध एवो शब्द जूदो करी लीजे केमके ए गाथा पण सूत्रकारनी करेली जाणवी. ॥ १३८ ॥

मूलः– एवं खद्धा अयणें खद्धं बहु अंति अयण मसणंति; आई सद्दामायं, होइ पुणो पत्त सागंतं. ॥ १३९ ॥ अर्थः– एमज खंधाअयणे ए पदे अढारमो दोष थायठे ते आवीरीतेः– खंध शब्दे घणो अयन शब्दे अशन आदिशब्दे डाइ शाक शालणो होय पुणो के० वली ते पत्रशाक वेगण चीनडी चिणादिक ए गा

थातुं विवरण दशाश्रुतस्कंधनी अपेक्षाये लख्योछे ते सूत्र आवीरीते छे सेहेअस णंवा रायणिएण सिद्धिं भुंजमाणे तत्र सेहेखद्धं डसढं रसियं मणुनं मणामंनिद्धं लुखं अहारित्ताभवत्ति आसायणा सेहेस्सि ॥ १३ए ॥

अवतरणः– वली एनोज विशेष सूत्रकार गाथायेकरी वखाणेछेः– मूलः– वन्नाइजुअं डसढं, रसियं पुण दाडिमं बगाईयं ॥ मणइठंतु मणुसं, मन्नइ मणसा मणामंतं ॥ १४० ॥ अर्थ ॥ वर्णादिकें करी सहित डसढं के० डंचो रसेकरी सहित. ते वली कोइकरीते अचित्त करेला एवा दाडिम आंबाप्रमुख मनने इष्ट मनोज्ञ एटले मनने माने जे सारो अथवा खराब तेने मणाम कहिये. ॥ १४० ॥

मूलः– निद्धं नेहवगाढं, रुक्खं पुण नेह वज्जिअं जाण; एवं अप्पम्मि सुणणे नवर मिणंदिवस विसयंति. ॥ १४१ ॥ अर्थ ॥ निद्धते स्निग्ध चोपडे करीने अवगाढ के० व्याप्त लूखो ते चीगट रहीत इत्यादिक आहार गुरुनी साथेकरतां सरस वस्तु पोते वापरे ते अढारमी, एवं के० एमज अप्पमीसुणणे के० गुरुना वचन सांभल्या छतां गणकारे नही पाछो जवाब न आपे ते ओगणीसमी नवरं के० एटलो विशेष छे जे प्रथम बारमी आशातना कही गया ते रात्रीनेविषे गणकारे नही एम समजवुं अने आ हमणानी कही ते दिवससंबंधी जाणवी ॥ १४१ ॥

मूलः– खद्धंति बहु भणंते, खर कक्कस गुरु सरेण रायणियं; आसायणाउ सेहे, तत्र गए होइ भावन्ना. ॥ १४२ ॥ अर्थ ॥ गुरुयें बोलाव्योथको खद्ध के० खर कर्कस वचने आकरे शब्देकरी रत्नाधिकने कहे तथा तिहांज बेठो उत्तर आपे एम अवज्ञाकरे ते शिष्य ने वीशमी आशातना कहियें. ॥ १४२ ॥

मूलः– सेहो गुरुणा भणिउ, तत्र गउ सुणइ देइ उल्लावं; एवं किंतव भणइ, नमत्थएणंतु वंदामि. ॥ १४३ ॥ अर्थ ॥ शिष्यने गुरुयें बोलाव्यो थको तिहांज पोताने स्थानके रह्योथको गुरुनुं वचन सांभली उत्तर आपे पण पासेनावे ते एकवीसमी आसातना कहिये तथा गुरुये पुछ्यु छता त्यांजमत्थएण वंदामि कही पूछे सुं आदेश आपोछो ए बावीसमी ॥ १४३ ॥

मूलः–एवं तु मंति भणई, कोसि तुमं मज्झ चोयणाएओ; एवं तज्जाएणं, पम्हि भणणा सायणा सेहे. ॥१४४॥ अर्थ॥ तुं कोणछो जे म्हारी चोयणानेविषे प्रवर्त्तेछे एम तुकारे बोलावे ते त्रेवीसमी. एमज जेवुं वचन गुरु कहे तेहीज वचन कहीने पाछो जवाब देतां शिष्यने आशातना थाय ते कहेछे. ॥ १४४ ॥

मूलः–अज्जो किं न गिलाणं, पडिजग्गसि पडिभणेइ किं न तुम; रायण एक

हयंते, कहंच एवं असु मणत्ति ॥ १४५ ॥ अर्थः– गुरु कहे हे आर्य आ ग्ला ननी प्रति जागरणा सार सुद्धि केमनथी करतो तेवारे पाछो जबाब आपे जे तुं केम नथी करतो एम तर्कना करी बोले ते चोवीसमी. गुरुधर्म कथा कहे ते शु न्य चित्ते सांजले पण एम न कहेजे हे महाराज तमे जलो अर्थ कह्यो एवी श्ला घा न करे ते असुमण नामे. पचीसमी आसातना ॥ १४५ ॥

मूलः–एवं नो सरसि तुमं, एसो अत्थो न होइ एवंति; एवं कहमा छिंदिय, सयमे व कहेउ मारजई ॥ १४६ ॥ अर्थः–रत्नाधिके अर्थ केतेछते कहेके तमने बराबर अर्थकेतां आवडतुं नथी ए अर्थ एम नथी ते छवीसमी. एमज गुरु कथा केताहो य तेना व्याख्यानने छेदीने पोते आगलथी केवामांडे ते सतावीसमी. ॥ १४६ ॥

मूलः– तह परि संपिय जिंदइ, तह किंचि जणइ जहन्न सामिलई; ताए अ णुठियाए, गुरु जणिय सविछरं जणई ॥ १४७ ॥ अर्थः– तेम वली गुरु कथा क रता होय प्रमुदित परखदा सांजलतां छतां शिष्य एवुं कहे के जोजन वेला थई जिक्षावेला सूत्रपौरसीनी वेला थई छे पछी जिक्षा मलशे नही माटे हवे उठो इत्या दिक कहीने परखदा जंग करे ते अठावीसमी. तथा तेहीज परखदा उठ्यानी अ गाउ गुरुयेंजे अर्थ ते सजा आगल कह्योछे तेज अर्थ सविस्तरपणे पोतानुं माप ण बतावबाने सजाजनोने वारंवार कहे ते ओगणत्रीसमी. ॥ १४७ ॥

मूलः– सिज्जासंथारंवा, गुरुणो संघट्टउण पाएहिं; खामेइ न जो सेहो, एसा आसायणा होइ. ॥ १४८ ॥ अर्थः–सय्या ते शरीर प्रमाण संथारोते अढोहाथ प्र माण जे गुरु संबंधी छे तेने पग साथे संघटी फरसीने तथा गुरुना पगने पग ल गाडी पछी खमावे नही एवा शिष्यने त्रीसमी आशातना जाणवी. ॥ १४८ ॥

मूलः– गुरु सेज्जा संथारग, चिठण निसियण तुयट्टणेऽह वरा; गुरु उच्च स मासण चिठणाइ करिणेण दो चरिमा ॥ १४९ ॥ अर्थः– गुरु संबंधी सय्या सं थारकनेविषे चिठणके० उजो रहे अथवा निसियणके० बेसे तुयट्टणके० सुईरहे एवी रीते करतां शिष्यने एकत्रीसमी आशातना. अहके० हवे अवराके० बीजीक हेछे गुरु थकी उचाआसन उपर बेसे ते बत्रीसमी गुरुने बराबर सरखे आसने बेशे ते तेत्रीसमी आदिशब्द थकी निसीयण तुयट्टण करतानेपण ए चरम के० छेली बेहु आशातना बत्रीशमी तथा तेत्रीसमी जाणवी एटले ए एकवीस गाथायें करी तेत्रीस आशातना देखाडी. ॥ १४९ ॥

हवे वांदणाना बत्रीश दोष देखाडे छेः–तेमां प्रथम गाथाए सात, बीजी गाथा

वमे आव, त्रीजी गाथा वमे सात चोथी गाथा वडे सात अने ठेल्ली पांचमी गाथा ए करीने त्रण दोष; एवी रीते पांच गाथाए करीने बत्रीश दोष देखामे ठे, तेमां प्रथम नाम मात्र कहीने पढी अर्थ कहेशेः–

मूल अनु० अणाढियंच थद्धंच, पविद्धं परि पिंमयं; टोलगं अंकुसं चेव, तहा कछन रिंगिअं ॥ १४९ ॥ मबुवत्तं मणसापउठं तहय वेइया; नय सा चेव नयंतं, मित्ती गारव कारणं ॥ १५० ॥ तेणिअं पडिणियं चेव रुठं तज्जिय मेवय; सढंच हिलियं चेव तहा विप्पलियं चियं ॥ १५१ ॥ दिठ मदिठंच तहा, सिंगंच करमोयणं; आलिद्ध अमणा लिद्धं, ऊणं उत्तर चूलियं ॥ १५२ ॥ मूअंच ढड्ढरं चेव, चुमलिंच अपछिमं; बत्तीस दोस प्पसुद्धं किइ कम्मं पउज्जाए ॥१५३॥ अर्थः– पहेलो अणाढिय एटले अनादृत दोष, बीजो थद्ध एटले स्तब्ध दोष. त्रीजो पविद्ध एटले पविद्ध दोष. चोथो परिपिंमिय एटले परिपिंमित दोष. पांचमो टोलगइ एटले टोलगति दोष. ठठो अंकुस एटले अंकुश दोष. सातमो कछव एटले कछप दोष. आठमो मछुवत्त एटले मत्स्योद्वत दोष. नवमो मनसा प्रदुष्ट दोष. दशमो वेइया वद्ध एटले वेदिकाबद्ध दोष. एकादशमो नयसा एटले नय दोष. बारमो नयंत एटले नजंत दोष. तेरमो मित्ती एटले मैत्री दोष. चौदमो गारव एटले गर्व संबंधीदोष. पंदरमो कारण दोष. शोलमो तेणिय एटले स्तैन्य दोष. सत्तरमो पमिणिय एटले प्रत्यनीक दोष. अढारमो रुष्ट एटले रुठ दोष. ओगणीशमो तज्जित एटले तर्जित दोष. वीशमो सढं एटले सठ दोष. एकवीशमो हीलिय एटले हीलित दोष. बावीशमो विप्पलिय एटले परिकुंचित दोष. त्रेवीशमो दिठमदिठ एटले दृष्टादृष्ट दोष. चोवीशमो सिंघ एटले शृंग दोष. पचीशमो कर एटले करदोष. ठवीशमो मोचण एटले मोचन दोष. सत्तावीशमो आलिद्ध अमणालिद्धं एटले आश्लिष्टानाश्लिष्ट दोष. अठावीशमो ऊण एटले न्यून दोष. ओगणत्रीशमो उत्तर चूलिय एटले उत्तर चूलित दोष. त्रीशमो मूअ एटले मूक दोष. एकत्रीसमो ढढर एटले प्रश्न दोष. अने बत्रीशमो चूमलीअ एटले चूमलिकदोष. एवी रीते बत्रीश दोषनां नाम जाणी लेवां. ॥१४९॥ १५० ॥१५१॥ १५२ ॥१५३॥

हवे ए बत्रीश दोषनुं विस्तार सहित वर्णन करे ठेः–मूलः– आयर करणं आढा, तव्विवरीयं अणाढियं होइ; दव्वे नावे थद्धो, चोनंगो दव्वउ नइउ ॥ १५४ ॥ अर्थः– आदर विना वांदवुं, तेने अणाढा दोष कहेछे. आदर करवुं ते आढा, अने तेथी जे विपरीत एटले अनादर करवुं ते अणाढा कहिये एनेज अनाढत ना

मे प्रथम दोष कहे छे. बीजो स्तब्ध दोष छे, तेना द्रव्य अने जावरूप बे जेद छे एमां चतुर्जंगी छे. (१) कोइ द्रव्य वडे स्तब्ध होय छे, अने जावथी नथी होतो, (२) कोइ जावथी स्तब्ध होय ने द्रव्यथी नथी होतो, (३) कोइ जाव अने द्रव्य ए बन्नेथी स्तब्ध होय छे अने (४)कोइ जाव अने द्रव्य ए बन्ने करी स्तब्ध होतो नथी. तेमां जे उदर शूलादिक कारणथी नमी शके नही पण नमवानो जाव होय तो तेने श्रेष्ठ स्तब्ध कहवो. जे कोईपण कारण विना नमी शके तोपण स्तब्ध पणा थकीन मे नही तेने पाडूओ स्तब्ध कहे छे. उक्त चारे जांगामांना जे जावे अने द्रव्ये स्तब्ध न होय तेने उत्तम कहेवो. अने जे द्रव्ये तथा जावे स्तब्ध रहे ते महा पाडूओ जाणवो ए तात्पर्य छे. ॥ १५४ ॥

मूलः– पविद्ध मणु वयारं, जं अप्पिंतोणि जंतिउ होई; जछव तछव उज्ऊइ, कियं किच्चो वर वरंचेव. ॥ १५५ ॥ अर्थः– जे उपचार रहित होय तेने पविद्ध कहे छे. वांदणुं देता जे अनिमंत्रित एटले व्यवस्था रहित होय वांदणुं पूरुंकीधा विना नासी जाय. तेने त्रीजो पविद्ध दोष कहे छे. जेम जारुत प्राणोने कोई पण कामे लगाड्यो छतां धणीनुं काम बराबर थाओ के न थाओ पोतानुं ते जाडा पूरतुं लक्ष राखीने उपर पड्युं ते करवुं एम जाणीने गमे तेवी रीते अस्ताव्यस्त ते क्रिया मात्रने करी छुटो थायछे ते पविद्ध विषे जाणवुं. ॥ १५५ ॥

मूलः– संपिंमि एव वंदइ, परि पिंमिय वयण करणओ वावि.; टोलोव्व उप्फिमंतो, उस्सक्क अहिसक्कणे कुणए. ॥ १५६ ॥ अर्थः– संपिंमित एटले आचार्यादिकने एकठा वांदे अथवा प्रथम ज्यां बत्रीश दोषनां नाम कह्यां छे त्यां ए दोषनुं नाम परिपिंडित कह्युं छे तेनो अर्थ आवी रीते छेः– मुख थकी सूत्रोनां वचनो शिवाय बीजा वचन बोले अने पोताना हाथ अने पग स्थिर राखे नही ते संपिंमित नामे चोथो दोष समजवो. जेम तीम ए नामना वर्षाकालमां एक जातना पक्षी थाए छे ते पृथवी उपर स्थिर थई बेशता नथी, अंही तहीं कूदता फिरे छे तेम जे वांदणु देतां ज्यां त्यां आगो पाछो फख्या करे तेने पांचमो टोलक दोष कहे छे.

मूलः– उवगरणे हत्थंमिव, थितुं निवेसेइ अंकुसं बिंति; विअचिफरिंगणं जं, तं कछव रिंगियं जाण. ॥ १५७ ॥ अर्थः–जेम महंत हाथीने अंकुश वडे गमे तेम फेरवे छे तेम शिष्य गुरुने फेरवे एटले सूरि उजा होय के बेठा होय अथवा कोइ कार्य व्यग्रहमां होय तेने अवज्ञा वडे चोलपट अथवा कपडुं पकडीने आसन उपर बेसाडी वांदणुं करे तेने छठो अंकुश दोष कहे छे. वांदणुंदेतां काचबानी पठे आगलने

सांबो अथवा पाछले सांबो गमे त्यां स्वेच्छा वडे फिरवुं तेने सातमो कच्छप दोष कहे छे.

मूलः– उठिंत निवेसंतो, उव्वत्तइ मच्छ उव्व जल मज्झे; वंदिउ कामो वन्नं, उ सोव्व परियट्ट ए तुरिअं ॥ १५७ ॥ अर्थः– जेम पाणीमां माछलुं स्थिर रहे नही, तेम जे वांदणु करतां स्थिर रहे नही, जेम माछलुं घडीकमां बाहेर देखाय घडीक मां पाणीमां गेप थई जाय तेम जे वांदणुंकरतां उठता बेसतां त्रबकी मारे विचित्र चाला करे अथवा एकने वांदी बीजा आचार्यने वांदे तेने आठमो मच्छ दोष कहे छे.

मूलः–अप्प परि पत्तिएणं, मणप्पउ सोय वेइआ पणगं; तं पुण जाणू परि जा,णु हिठ्ठउ जाणु बाहिंवा ॥ १५८ ॥ अर्थः– पोताने अर्थे अथवा बीजाने अर्थे गुरुद्वाराए कांई कार्य सिद्धि न थवाथी तेनो मनमां द्वेष उत्पन्न थाय छे तेमां पोताने आचार्यादिके प्रद्वेप कह्यो ए आत्मअप्रीति इम शिष्यना संबंधीने पण कहेछते परअप्रीति एम इर्षालु थकोवांदे तेने नवमो मनप्रदुष्टदोष कहे छे.॥१५८॥

अवतरणः– वेदिकादोप पांच प्रकारे कहे छेः– मूलः– कुणइ करे जाणुंवा एगकरं उवइ कर जुअल मज्झे; उवछंगे करइ करे, भयंति निज्जूहणाईयं ॥ १५९ अर्थः–बेहु हाथ गूठण उपर मूकी १ अथवा बेउ हाथनी विचमा ढीचणराखे २ एक गुठण बे हाथनीवचे राखे ३ अथवा खोळामां हाथ राखवा ४ बेहु हातउत्संगे धरे ५ ए पांच प्रकारे वेदिकाबद्ध दशमो दोष जाणवो. अने जो हूं वांदणुं प्रमुख दईश नही तो आचार्य मने कहाडी मूकशे एवो जे भय तेने अग्यारमो भय दोष कहेछे

मूलः– भयइव भइ सत्तिवई, इवदइ एहो रयंतिवेसंतो; एमेवय मोत्तीए, गारव सिरका विणीउहं ॥ १६० ॥ अर्थः– बीजा मुनिओ भजे छे अनुवर्त्तेछे अथवा भजशे इत्यादिक देखीने हुं पण बीजानी पठे वांदणुं करुं तेने बारमो भजंत नामे दोष कहे छे. जोहुं आचार्यने वांदू तो मारी साथे आचार्यनी प्रीति थाए अने मित्राइ थाए वगैरे मित्रताना कारणथी जे वांदवुं तेने तेरमो मैत्री दोष कहे छे. मने लोको समाचारिमां पंडित कुशलविनीत जाणे एमज बीजासाधु पण जाणे एवा अभिप्राये जे वांदवुं तेने चौदमो गारव दोष कहे छे. ॥ १६० ॥

मूलः– नाणाइ तिगंमातुं, कारण मिह लोअ साहयं होइ; पूआ गारव हेऊ, नाणग्गहणे विए मेव. ॥ १६१ ॥ अर्थः– ज्ञानादिक त्रण मूकीने जे आलोक संबंधी सुखना साधनोनी प्राप्तिने अर्थे वांदणुं दिए एटले वस्त्र कांबल्यादिकनी इछा राखे तेने पंदरमु कारण वांदणुं कहे छे. आंही कोई आशंका करे के एकांत ज्ञानादिक आश्रयी वांदणुं देतां तेने कारण वांदणुं शावास्ते न कहिये ? तेनो उत्तर

जो पूजाना अभिप्रायथी गौरवनी अभिलाषा करे, अने जो ज्ञानना ग्रहणने अर्थे वांदे. उपलक्षणथी दर्शनादिक पण लेवां तो तेने पण कारण वांदणुंज कहिये.॥१६१॥

मूलः– हाउं परस्स दिठ्ठिं, वंदंते तेणियं हवइएयं; तेणोविव अप्पाणं, गूहइ उन्नावणामामे. ॥ १६२ ॥ अर्थः– बीजा साधुनी दृष्टिने चुकवीने वांदणुं करे एटले पोतामां अने साधु प्रमुखमां अंतरो राखीने पोताने छुपावे केमके, जो हुं घणाने देखतां वांदीश तो लाज थशे, अथवा मने बीजाथी लघु जाणशे ए कारण माटे पोताने गोप्य राखीने चोरनी पठे जे वांदे ते स्तैन्य नामनो शोलमो दोष.

मूलः–आहारस्स उ काले, नीहारस्साविहोइ पडिणीयं; रोसेण धमधमंतो, जो वंदइ रुठ मेयंतु. ॥१६३॥ अर्थः– आहारना कालनेविषे अथवा नीहारना कालनेविषे जे वांदणु दिये तेने सत्तरसुं प्रत्यनीक दोष. दोषे करीने धमधमतो थको अथवा गुरुने क्रोधायमान करतो थको जे वांदणुं करे तेने अडारमो रुष्ट दोष कहेछे.

मूलः– नवि कुप्पिसि न पसीयसि, कठसिवोचेवतज्जियं एयं; सीसंगुलिमाइहियं, तज्जेइ गुरुं पणिवयंतो. ॥१६४॥ अर्थः–गुरु कोप करता नथी तेम प्रसाद पण करता नथी, एटले घडेली जेम शिव देवनी कावनी पूतली विशेष तेनी पठे रहे छे अथवा मस्तके करी आंगलीए करी अथवा भृकुटीए करीने तर्जना करवी तेने उगणीशमो तर्जित दोष कहे छे. ॥ १६४ ॥

मूलः– वीसंभठाणमिणं, सप्भाव जढे सढंभवइएअं; कवडंति कइअ वंतिअ, सढयाविकहोति एगठा. ॥ १६५ ॥ अर्थः–ए वांदणु विश्वासनुं स्थानक छे केमके वांदतां छतां आचार्य तथा श्रावकादिक माहरो विश्वाश करशे. एवा भावे करी वांदे परंतु भलाभावेकरी शुन्यछे तेने वीशमो सठ दोष कहे छे एनेज कपट कैतव अने सठ ए त्रण नामे कहे छे. ॥ १६५ ॥

मूलः– गणिवायगजिठ्ठजत्ति, हीलीउं किं तुमे पणमिऊणं; दर वंदिअंमिविकहं, करेइ पलियं चियं एयं. ॥ १६६ ॥ अर्थः– हे गणिन्, हे वाचक, हे ज्येष्ठ हे आर्य इत्यादिक शब्दे करीने गुरुनी हीलना करेने कहे के सुं तने प्रणाम करियें एम कहीने जे वांदणुं करे तेने एकवीशमो हीलित-दोष कहे छे. थोडुंक वांदणुं कर्या छतां देशादि संबंधीनी विकथा करे तेने बावीशमो कुंचित दोष कहेछे.१६६

मूल.– अंतरिउंतमसेवा, न वंदई वंदई उदीसंतो; एयं दिठमदिठं, सिंगे पुण कुंभ पासेहिं. ॥१६७॥ अर्थः– अंतरित के० यती प्रमुखने अंतरे रह्यो थको अथवा अंधारानेविषे रह्यो थको कोई देखे नही त्यारे वांदे नही, अने कोईना देखतां

वांदे तेने त्रेवीशमो दृष्टा दृष्ट दोष कहे छे. मस्तकने सन्मुख टालीने मावी तथा जमणी ए बन्ने बाजु तरफ वांदणु दिए तेने चोवीशमो शृंग दोष कहे छे.॥१६७॥

मूलः— करमिवमन्नइदिंतो, वंदणयं आहरंति अकरोति; लोइय कराउ मुक्का, न मुच्चिमो वंदण कराउं. ॥ १६८ ॥ अर्थः— जेम राजादिकनो कर प्रजाने जरूर देवो पडे छे तेम वांदणा संबंधी अरिहंतनो कर पण शिष्योए देवो जोइये. एम जाणीने जे वांदणुं दिए तेने पचीशमो कर दोष कहे छे. ग्रहित व्रते करीने अमे लोक संबंधी करथी तो मुक्त थया छैए पण अर्हंत संबंधी वांदणा लक्षण करथी मुकाणा नथी एम जाणीने जे वांदणुं करे तेने छवीशमो मोचन दोष कहे छे.

मूलः— आलिद्ध मणालिद्धं, रयहरणसिरेहिं होइ चउभंगो; वयण खिरेहिंकणं, जहन्न काले वसेसेहिं. ॥ १६९ ॥ अर्थः— आश्लिष्ट अने अनाश्लिष्ट दोषनी रजोहरण ने मस्तक साथे चतुर्भंगी थाय. प्रथम रजोहरण साथे हाथ लगाडे माथे न लगाडे ए एक भांगो, बीजो मस्तके लगाडे पण उघे न लगाडे; त्रीजो मस्तके न लगाडेने रजोहरणे पण न लगाडे; चोथो रजोहरणे लगाडे अने मस्तके पण लगाडे ए सत्तावीशमो दोष समजवो. अक्षरोना समूहने वचन कहे छे. ते वचनमां प्रमादे करीने एक बे अक्षरो उछा कहे अथवा कोईक अति उतावलो प्रमादना वशे करीने वांदणुं थोडी वारमां पूरुं करे, त्यां वचनाक्षर तो रह्या पण शेष अवनामादिक ते आवश्यक पण उछा थाय तेने अठावीसमो न्यून दोष कहेछे.॥१६९॥

मूलः— दाऊण वंदणं मछएण वंदामि चूलिया एसा; मूअव्व सद्दरहिउं, जं वंदइ मूयगं तं तु. ॥ १७० ॥ अर्थः—वांदणुं दईने पछी मोटे सादे करी "मछएण वंदामि" कहे तेने उगणत्रीशमो चूलिकादोष कहेछे. मूअव्वके० मूगानी पठे मुखथकी शब्द कहाडयाविना जे वांदे तेने त्रीशमो मूक दोष कहेछे. ॥ १७० ॥

मूलः— ढड्डर सरेण जो पुण, सुत्तंघोसेइ ढड्डरं तमिह; चुडलिं विगिण्हिकणं, रयहरणं होइ चुडलिं तु. ॥ १७१ ॥ अर्थः— मोटा स्वरवडे जे वांदणानुं सूत्र घोषे उच्चार करे तेने एकत्रीशमो ढड्डर दोष कहेछे. अने उमाडनी पठे रजोहरण झालीने फरावतो छतां जे वांदणुं दिये तेने बत्रीशमो चुडलिक दोष कहेछे एवी रीते वांदणाना बत्रीश दोष कही बताव्या. ॥ १७१ ॥

हवे नियत अने अनियत ए बे प्रकारना वांदणाना स्थानक देखाडे छे. तेमां प्रथम आठ नियत स्थानक कहेछेः— मूलः—पडिकमणे सझाए, काउस्सग्गा वराह पाहुणए; आलोयण संवरणे, उत्तम छेय वंदणयं. ॥ १७२ ॥ अर्थः— प्रथम

पडिकमणे एटले अगुणस्थानकथी जे गुणस्थानकनेविषे आववुं तेनेविषे, बीजुं सज्झाए एटले वाचनादिकनेविषे, त्रीजुं काउसग्ग के० विगयना परिभोगने अर्थे आंबिल प्रमुखनुं विसर्जन थायछे तेनेविषे, चोथुं अपराध एटले गुरुसंबंधी विनयना उल्लंघननेविषे, पांचमुं पाहुणए एटले परोणानेविषे, तेपरोणा बे प्रकारनाछेः- एक सांभोगिक अने बीजा असांभोगिक छे. तेमां सांभोगिक एटले एक समाचारीना साधुनुं आगमन थयाथी तेने गुरुने पूछी वांदणुं देवुं. अने असांभोगिक एटले जुदी समाचारीनो साधु आवे तो पहेलां गुरुने वांदणुं दईने गुरुने पूछी वांदे. अने लहुडो होयतो वंदावे. छटुं आलोयण एटलेवांदणुं दईने आलोयणा लेवी. सातमुं संवरणे एटले जे एकासणादि पच्चरकाण घणा अगारे लीधा होय छे त्यां भोजन पछी आगार संक्षेपवाने अर्थें अथवा नोकारसी प्रमुख कीधा थका अजीर्णादि कारणे, अभक्तार्थे लेतांसंवर वांदणुं थाय आठमुं उत्तमार्थे एटले अनशनमांपण वांदणुंदेवुं. १४एतथा १५७ए बे गाथाओना आंक दबल मंडाणा तेथीइहां १७४

हवे वांदणाना छ अनियत स्थानक कहेछेः- मूलः-माण निय कम्म बंधण, आसायण करण पवयण खिसणया; भववुड्ढि अबोहीए, छ दोसा वंदणा करणे. ॥ १७५ ॥ अर्थः- (१) ज्यां मान होय, (२) नित्य कर्म बंधन थतुं होय, (३) आशातनानुं कृत्य होय, (४) प्रवचननी आज्ञानुं उल्लंघन होय, (५) भवनी वृद्धि थती होय (६) अने ज्यां अज्ञानी होय. ए छ स्थानके वंदना करवी नही. वंदन न करवाने अर्थे ए छ दोष कह्या छे माटेज ए अनियत स्थानक छे

एवी रीते चोवीश गाथाए करी वांदणाना दोष कह्या. आंही बीजो वांदणानो द्वार संपूर्ण थयो. हवे त्रीजो पडिकमणानो द्वार कहे छे.

अथ प्रतिक्रमण द्वार त्रितीय प्रारंभ.

तेना आरंभमां प्रथम प्रतिक्रमण शब्दनो व्युत्पत्ति अर्थ करे छेः-प्रतिए उपसर्ग प्रतिकूल अर्थनेविषे प्रवृत्तेछे क्रमशब्द पादना विक्षेपनेविषे प्रवृत्तेछे एनो भावः- प्रतीप-प्रतिकूल अथवा प्रतिक्रमण एटले पाछो फरवुं एवो समजवो अथवा पडिकमणंति पडिकमणो कहियें संयमरूप लक्षणवालुं जे पोतानुं स्थानक ते मुकीने बीजा असंयमरूप लक्षणवाला स्थानके जे जवुं तेने क्रमण कहे छे. अने ते असंयमरूप लक्षणवाला स्थानकथी पाछा पोताना संयमरूप लक्षणवाला स्थानके आववुं तेने प्रतिक्रमण कहेछे. यतः उक्तंः-"स्वस्थानात्यत्परं स्थानं, प्रमादस्य वशाद्गतः; तत्रैव क्रमणं भूयः प्रतिक्रमणमुच्यते" ए श्लोकनो अर्थः- आवो छेः- जे पोताना

स्थानकथी पर एटले भिन्न स्थान छे, त्यां प्रमादने वश थइने गतः एटले जवायुं छतां फरी त्यांथी जे पोताना स्थानके पाछुं आववुं तेने प्रतिक्रमण कहेछे. हवे बीजी रीते अर्थ करे छेः- अथवा प्रतिकूल गमन जे क्षायोपशमिक भावथी औदयिक भावने विषे जवुं तेने पण प्रतिक्रमण कहे छे. तथापि तेनो अर्थ तेज छे प्रतिकूल गमनथी प्रतिशब्दनी सर्वत्र व्याप्ति जाणवी. उक्तंच प्रति प्रति प्रवर्त्तन अथवा शुभ फल जे मोक्ष फलदायकनेविषे निःशल्य यतिने ते प्रतिक्रमण कहियें. एवी रीते ए प्रतिक्रमण अतीत अनागत अने वर्त्तमान ए त्रणे कालविषयक जाणी लेवुं. अंहि शिष्य प्रश्न करे छे के, प्रतिक्रमण तो अतीत कालने विषेज युक्त छे एम कहेलुं छे. जेमकेः- "अईयं पडिकमामि, पडु पुन्नं संवरेमि, अणागयं पच्चक्खामीति" आवो प्रमाण छतां प्रतिक्रमणने त्रिकालविषयक केम प्रतिपादन करोछो तेनो गुरु उत्तर कहेछेः-अंही प्रतिक्रमण शब्दमात्र अशुभयोगथकी निवृत्ति जाणवी. यदुक्तं "मिछत्तिप्पडिक्कमणं, तहेव अस्संजमे पडिक्कमणं; कसायण पडिक्कमणं, जोगाणयं अप्प संथाणं." तेकारण माटे प्रतिक्रमण त्रणे कालनेविषे जाणी लेवुं. जेमके,पूर्वकृतपापनी निंदा करवी ते द्वारें अशुभयोगनो निवृत्तिरूप अतीत विषयनो प्रतिक्रमण जाणवो अने संवर द्वारें करी प्रत्युत्पन्न विषय एटले वर्त्तमान समये संवर कर्युंछे तेवर्त्तमान प्रतिक्रमण जाणवो अने प्रत्याख्यान द्वारे करी एटले पच्चक्खाण लेवो ते अशुभ योगनिवर्त्तन पच्चक्खाणे अनागत समयनो प्रतिक्रमण जाणवुं. इत्यादि ते प्रतिक्रमण दैवसिकादि भेदोएकरी पांचप्रकारे थाय छेः-दिवसना अंतनेविषे दैवसिक प्रतिक्रमण थायछे. रात्रना अंते रात्रिक प्रतिक्रमण, पक्षना अंते पाक्षीक प्रतिक्रमण, चार मासना अंते चातुर्मासिक प्रतिक्रमण; अने संवत्सरना अंते सांवत्सरिक प्रतिक्रमण थायछे. दैवसिक शब्दनी व्युत्पत्तितो दिवस संबंधिथाय कणि दैवसिक इत्यादि तेनेविषे स्थित नर पण बे प्रकारना छे. एक ध्रुव ने बीजा अध्रुव. तेमां भरत अने ऐरवत क्षेत्रोनेविषे प्रथम अने चरम तीर्थंकरना समये बन्नेकालें प्रतिक्रमण करवुं तेने ध्रुव कहियें. अने महाविदेह क्षेत्रनेविषे सदाकाल तथा भरतादिक दश क्षेत्रनेविषे मध्यना बावीश तीर्थंकरोना समये कोइ कारणने लीधे प्रतिक्रमण करवुं पण अन्यदा न करवुं ते अध्रुव कहेवाय छे. यदाहः- "सपडिक्कमणो धम्मे, पुरिमस्सय पच्छिमस्सय जिणस्स; मझमगाण जिणाणं, कारण जाए पडिक्कमणं." प्रतिक्रमण विधि आवी रीते छेः- पंच विहा

यार विशुद्ध हेउ मिह साहु सावगो वावि; पडिकमणं सहगुरुणा गुरुविराह कुण इ इक्कोवि." ते चिइवंदण इत्यादिके करी कहेछे:-

हवे प्रथम संध्याप्रतिक्रमण विधि देखाडे छे:- मूळ:-चिइ वंदण मुस्सग्गो, पुत्तिअपमिलेह वंदणा लोए; सुत्तं वंदण खामण, य वंदण चरित्त उस्सग्गो. ॥ १७३ दंसणु नाणोसग्गो, सुयदेवय खित्त देवयाणंच; पुत्तिअवंदण थुइ तिय, स क्कथयोत्त देवसिअं. ॥ १७८ ॥ अर्थः-तेमांप्रथम त्रसस्थावर प्राणीए करी रहित प्रेक्षित प्रमार्जित गमनेविषे इरियावही पडिकम्मीने, चैत्यवंदन विधान करवुं. पछे आचार्यादिकने खमाश्रमणादिक देइने देवसिक अतिचारना चिंतननेअर्थे काउसग्ग करे; पण काउसग्गमां बहु व्यापारवाळा साधु जेटले एक गुण देवसिक अतिचार चिंतवे, तेटले तेथी बमणा अतिचार अल्प हिंडक गुरु चिंतवे तेथी गुरु हळवेथी चिंतवे, त्यारपछी साधु गुरुनी समीपे काउसग्गनो उच्चार करे ते पालीने लोगस उज्जो यगरे नणीने पछीमुहपत्ती पडिलेहिवी; त्यार पछी वांदणो देवुं पछी आलोपति एटले आलोचन आलोववुं कायोत्सर्ग तथा चिंतित अतिचार गुरुने केवा पछी पडिकमण सूत्र नणवुं साधु ए पण पोते नणवुं अने श्रावकेपण पोते नणवुं त्यार पछी वांदणो आपवुं खामणेति एटले गुर्वादिकने खामणु करे ते प्रथम गुरुने खमावी पछी अनुक्रमे बीजा सर्वे मोटाओने खमाववुं ज्यारे पंचकादि गण होय त्यारे त्रीजो खामणु करवुं ते पंचकमां जे मोटो होय तेने खमाववुं एवी रीते प्रनातना प्रतिक्रमणनेविषे पण तदणुं वंदणयत्ति एटले वांदणु देवुं मूळमां (च) शब्द समुच्चय वाचीछे ए गुरुनो आश्रय करवाने अर्थे अलियावण नामनुवांदणु कहेछे पछी चारित्रातिचारनो काउसग्ग करवो. पछी दर्शन विशुद्धिनिमित्ते तथा ज्ञानातिचार शुद्धि निमित्ते काउसग्ग करवा; त्यार पछी श्रुत समृद्धि निमित्ते श्रुत देवतानो कायोत्सर्ग करवो. पछी स्तुति देवी अथवा बीजाए स्तुति देतां शांनळवी. त्यार पछी सर्व विघ्नोनुं निर्दलन करवाने अर्थे क्षेत्र देवतानो कायोत्सर्ग करवो. ते समये एक नमस्कारनुं चिंतवन करीने स्तुति देवी अथवा बीजाए स्तुति देतां शांनळवी. मूळमां चकार समुच्चय अर्थे छे. त्यार पछी नमस्कार करी बेशीने 'पुत्तियत्ति' एटले मुखपोतीका ए करी प्रत्युपेक्षण करवुं; त्यार पछी मंगळादि निमित्ते वांदणुं देवुं. त्यार पछी इछामो अणुसछि एम नणीने नीचे बेशी एक गुरुनी स्तुति नणतां छतां प्रवर्द्धमान स्वरे करीने प्रवर्द्धमान एटले श्री महावीर स्वामीनो त्रण स्तुतिओ नणवी. तदनुतर 'सक्कछयंति' एटले शक्रस्तव नणवुं, त्यार पछी 'थो

तंति ' एटले स्तोत्र नणवुं. त्यार पछी दिवसातिचारनी विशुद्धिने अर्थे कायोत्सर्ग करवो ते समये चार लोकस्य उद्योतकर कहेवां. एवुं गाथामां कह्युं नथी तो पण जाणी लेवुं ' देवसियंति ' एटले ए संध्या समये दैवसिक प्रतिक्रमण जाणवुं. एट ले बे गाथा वमे देवसी प्रतिक्रमणनी विधि कही. इति संध्या प्रतिक्रमण विधि.

हवे प्रनात प्रतिक्रमण विधि कहे ठेः– मूलः–मिछाउक्कड पणिवा, य दंडगं काउसग्ग तिअ करणं; पुत्तिअ वंदण आलो अ सुत्त वंदणय खामणयं. ॥१७७॥ वंदणयं गाहा तिअ, पाढो छम्मासि अस्स उस्सग्गो; पुत्तिअ वंदण नियमो, थुइ तिअ चिय वंदणा राउ ॥ १७८ ॥ इत्थवि पढमे चरणे, दंसण सुद्धीय बीय उ स्सग्गो; सुअ नाणस्स तईउ, नवरं चिंतेइ तिछइमं॥१७ए॥ तइय निसायइआरं, चिं तइ चरमंमि किंतवं काहं; छम्मासा एग दिणा, इहाणिजा पोरिसि नमोवा॥१८०॥

अर्थः– नूमिकाने मस्तक लगामी, आखी रात्रना अतिचारनो मिछामि डुक्क म दइने, प्रतीपाद दंमक नमोत्थुणं कहीने उस्सग्गतियके०काउस्सग त्रण करवा. पछी मुहपती पडिलेही, वांदणुं दइ, आलोअणुं आलोइ, प्रतिक्रमण संबंधी सूत्र गुणी, उना थइ, पछीबे वांदणा दइ, खामणुंकरी वली बे वांदणा दइ, "आयरिय उवज्का ए" इत्यादि त्रण गाथा कही पछी ठ मासी तप चिंतववा संबंधी काउसग्ग करवो. तेमां ठ मासी तपनी चिंतवना आवी रीते करवीः–श्री महावीरना तीर्थनेविषे उ त्कृष्टताथी ठ मासी तपवर्त्ते ठे. माटे हे जीव ए तप तूं करी शकशे के नही? एम पोताना अंतरमां चिंतवना करवी पछी जो ते तप पोताथी थइ शके नही तो वली चिंतवन करवुं के एक दिन ओठा ठ मासी तप थई शकशे? एम एक एक दिवस ओठो करतां ज्यारे ओगणत्रीश दिवश उंठा थई रहे त्यारे तेनो मास एक गणीने पांच मासी तपने विषे प्रथमनी पठे अंतर प्रश्न करवुं, पछी चोमासी, त्रीमासी, बेमासी अने एक मासी चिंतवना करवी. ते पण जो पोता थी बनी शकतुं होय नही तो तेमांथी एक एक दिवस उंठो करतां तेर दिवश उ ठा करीने वली चिंतववुं के हवे चोत्रीसम तप करी शकाशे के नही? ते पण जो ठरे नही तो बत्रीसम विषे चिंतववुं. एमयावत् पठी दशम, अठम, ठठ, चउछ, अने शेवट आंबिल सुधी आववुं. त्यार पठी निवी एकासणुं पोरिसीनी अवधिसुधी नी चिंतवना करवी. एम नवकारशी आदि जेटलुं करी शकाय ते पच्चरकाण मनमां चिंतववुं. अने ते नमो अरिहंताणं कहीने पालवुं. त्यार पठी मुहपती पडिलेही, बे वांदणा दईने, पच्चरकाण करवां. पठी थुअतिअ एटलेगोडलीए बेशीने गिलोई प्रसु

खचरे नही तेम अल्प स्वर वडे त्रण वर्द्धमान स्तुति कहेवी. अने चैत्यवंदन कर बुं. ए रात्रि प्रतिक्रमण विधि कही. इहां विशेषता दर्शावे छेः—इछविय के० आंही पण प्रथम चारित्र शुद्धिनो काउसग्ग करवो. बीजो दर्शननी शुद्धिनो काउसग्ग करवो. अने त्रीजो श्रुत ज्ञाननो काउसग्ग करवो. पछी आटली विशेष चिंतवना करवी एटले त्रीजा काउसग्गमां रात्रि संबंधी अतिचारनी चिंतवना करवी. एनुं कारण बतावे छे. " निद्दामत्तो न सरे, अइआरे काय घट्टणनोन्ने; किइ अकरण दोसावा, गोसाइ तिन्नि उस्सग्गा ॥ १ ॥" वली छेला काउसग्गमां पूर्वेनी परे मनमां चिंतवना करे. तेनो अनुक्रम पूर्वेनी परे जाणी लेवो. छमासी तपथी लई ने पोरसी नमस्कार सहितादि सुधी करवुं. इति प्रजात प्रतिक्रमणविधि समाप्त.

हवे पाक्षिक प्रतिक्रमणनी विधि कहे छेः— मूलः— मुहपोत्ती वंदयणं, संबुद्धा खामणं तहा लोए; वंदण पत्तेय खामणाणि खामणाय सुत्तंच.॥१८१॥ सुत्तंअप्रुट्ठा णं, उसग्गोपोत्ति वंदणं तहय; पज्जंत खामणाणिय एसविही परक पडिकमणे ॥ १८२ ॥ अर्थः—देवसी पडिकमणो परिक्रमणा सूत्र सीमा कह्या पछी देवसिअं आलोइयं, तं पडिक्कतं, इछाकारेण संदिसह जगवान पक्खिअ मुहपोत्तिं पडिलेहेमि " एम कही मुहपति पम्लिेही, बे वांदणा दई संबुद्ध शब्दे गीतार्थ कहेवो. ते संबंधी खामणो करी, आलोअणा अनंतरे बे वांदणादई, जेष्टानुक्रमे प्रत्येक साधुने खामणुं करवुं; पछी बे वांदणा दईने एक साधु ऊनो रहीने पाक्षिक सूत्र गुणावे ते थइ रह्या पछी बेशीने वली सुत्तंके० पडिकमणा सूत्र गुणीने अप्रुट्ठान एटले ऊठवुं. (ऊनो थईने पछी मूल गुण, उत्तर गुण विशुद्धि निमित्त काउसग्ग करीने पज्जंत खामणुं, तथा समाप्ति खमावणुं करवुं ए पाक्षिक प्रतिक्रमण विधि थई.॥१८२॥

हवे काउस्सग्गनेविषे लोगस्स श्लोक अने पदनी संख्या कहे छेः—मूलः—चत्तारि दोदुवालस, वीसं चत्ताय हुंति उज्जोया; देसिअ राइअ परकिअ, चाउम्मासेय वरि सेय. ॥१८३॥ अर्थः— चार लोगस्स, बे लोगस्स, बार लोगस्स वीस लोगस्स अ ने चालीश लोगस्स ए अनुक्रमे जे जे पम्किमणामां लोगस्स केवाय छे तेनो अनुक्रम आवी रीते जाणवो. देवसीय पडिकमण, रात्रि पडिकमण, पाखी पडि कमण, चउमासी पम्किमण, अने संवछरी पम्किमण. ॥ १८३ ॥

मूलः— पणवीस अद्ध तेरस, सिलोग पन्नतिरिय बोधवा; सयमेग पन्नवीसं, बे बावन्नाय वरिसम्मी. ॥ १८४ ॥ अर्थः— कहेला प्रत्येक प्रतिक्रमणमांना प्रत्येक लोगस्सना संख्यांकना केटला केटला श्लोको थाय छे ते अनुक्रमे कहे छेः—देवसि

प्रतिक्रमण संबंधी चार लोगस्सना पचीश श्लोक समजवा रात्रि प्रतिक्रमणसंबंधी बे लोगस्सना साडाबार श्लोक; पाखी पडिकमण संबंधी बार लोगस्सना पंचोतर श्लोक; चौमाशी पडिकमणासंबंधी वीस लोगसना सवासो श्लोक अने संवत्सरी प्रतिक्रमणसंबंधी चालीश लोगस्सना बेशोने बावन श्लोक जाणवा.॥१७४॥

मूलः— सायसयंगोसद्धं, तिन्नेवसया हवंति पक्खंमि; पंचसय चाउमासो, वरिसि पयछोत्तर सहस्सो. ॥ १७५ ॥ अर्थः— संध्या कालना पडिकमणा संबंधी चार लोगस्सना एकशो पद थाय छे. प्रभातना पडिकमण संबंधी बे लोगस्सना पचास पद थाय छे. पाखी पडिकमण संबंधी बार लोगस्सना त्रणशो पद थायछे. चोमासी पडिमण संबंधी वीश लोगसना पांचशो पद थाय छे. अने संवछर पडिमण संबंधी चालीश लोगस्सना एक हजारने आठ पद थायछे. ॥१७५॥

मूलः— देवसिअ चाउम्मासिअ, संवछरिएसु पडिकमण मज्झे; मुणिणो खामिझंति, तिन्नि तहा सत्त पंच कमा. ॥ १७६ ॥ अर्थः— देवसी प्रतिक्रमण अने रात्रि प्रतिक्रमण तेमज पाखी प्रतिक्रमणमांपण त्रण अने पांच खामणा देवानुं कह्युंछे. इहां आवश्यकनी चूर्णिमांपाखी पडिकमणाने अधिकारे कह्युंछे के, "जहन्नेणंतिन्नि, उक्कोसेणं सव्वोवि, चउमासे पांच, संवत्सरीये सात अने वृद्ध सामाचारियेतो देवसिक राइयइ तिन्नि, पाखीयइ पंच, चउमासाइ संवत्सरइ सत्त, एवी रीते पाखी सूत्रनी वृत्तिमां कह्युं छे एटले दिवशि अने रात्रीनेविषे त्रण अने पक्खे पांच तथा चउमासी अने संवछरे सात एवी रीते त्रीजो प्रतिक्रमण द्वार समाप्त थयो.

अथ पच्चरकाण द्वार चतुर्थ प्रारभ्यते.

मूलः—नावि अईयं कोडी सहियं नियंटियंच सागारं; विगयागारं परिमाणयंच निरवसेसमठमयं ॥ १७७ ॥ अनुष्टुप् छंद, संकेअंच तहहा पच्चरकाणंच दसमयं; संकेअं अध्दाहोइ, अद्धायं दसहा नवे ॥१७८॥ अर्थः— प्रथम पच्चरकाण शब्दनी व्युत्पत्तियुक्त अर्थ दर्शावेछेः— पच्चरकाण एटले प्रत्याख्यान. एशब्दमां त्रण पद छे एक प्रति बीजो आ अने त्रीजो आख्यान तेमां प्रति एटले अविरति स्वरूप प्रवृत्तिने प्रतिकूल पणे आ एटले आगार करवाने स्वरूपे मर्यादाए करीने आख्यान कहेतां कथन ते प्रत्याख्यान एवो अर्थ थाय छे ते आ ग्रंथना आरंभमां ज्यां सर्व द्वारोनां नाम कह्या छे त्यां ए द्वारनुं नाम लखतां एनो अर्थ पण कहेलोछे. ते प्रत्याख्यान बे प्रकारनुं छेः—मूल गुणरूप अने उत्तर गुणरूप. यतिने मूल गुण महाव्रतछे; श्रावकना मूल गुण अणुव्रत. यतिना उत्तर गुण पिंड विशुद्धयादि; अने श्रा

वकना उत्तर गुण शिक्षाव्रत छे. हिंसादिकनी निवृत्तिरूपे करी मूल गुणोनुं प्रत्या ख्यानत्व थायछे; प्रतिपक्ष निवृत्तिरूपे करी पिंडविशुद्ध्यादिक अने दिग्व्रतादि उत्तर गुणनुं प्रत्याख्यानत्व थाय छे. त्यां पोते करेला प्रत्याख्यान काळनेविषे विनय सहित सम्यक् उपयुक्त गुरु वचननो उच्चार करतां प्रत्याख्यान करेछे. ते प्रत्याख्याननेविषे चतुर्भंगी थायछेः– जेम के, पोते प्रत्याख्याननुं स्वरूप जाण तो छतां जाणनारा गुरुनीपाशे करेछे ए प्रथम भंग; गुरु जाणनारा होय अने पोते अजाण छतां गुरुनीपाशे करे ते द्वितीय भंग; शिष्य जाण होय अने गुरु अजाण छतां तेनी पासे करे ते तृतीय भंग; अने गुरु तथा शिष्य बन्ने अ जाण छतां गुरुनी पासे करे ते चतुर्थ भंग जाणवो. ए चार भंग पोताना मने कल्पीने कह्या नथी पण सिद्धांतनेविषे कहेला छे. यदाहः– "जाणगो जाणग सगासे जाणगो अजाणग सगासे अजाणगो जाणग सगासे अजाणगो अजाण ग सगासे इत्यादि." तेमां प्रथम भंग शुद्ध छे. केमके, बन्नेने जाणपणुं छे. बीजो भंग पण शुद्ध छे. केमके, गुरु जाणनार अने शिष्य अजाण छतां तेने संक्षेपेथी बोध करी प्रत्याख्यान करावे छे. अन्यथा अशुद्ध छे. त्रीजो भंग जो पण अशु द्ध छे, परंतु ए पण तथाविध गुरुनी अप्राप्ति छतां गुरुना बहु मानेकरी गुरुसंबं धी पिता, पितृव्य, बंधु, मामा, अने शिष्यादि बीजापण कोई साक्षी करीने ज्यारे प्रत्याख्यान करेछे त्यारे शुद्ध छे. चोथो भंग अशुद्धज छे. ॥ १८७ ॥ १८८ ॥

अ० उत्तर गुण प्रत्याख्यान प्रतिदिन उपयोगित्वेकरी कहेवाय छेः–ते पच्चक्खा णना दश प्रकार छे ते कहेछेः– पहेलो भावी पच्चक्खाण, बीजो अतीत पच्चक्खाण, त्रीजो कोटि सहित पच्चक्खाण, चोथो नियंत्रित पच्चक्खाण, पांचमो सागार पच्चक्खा ण, छठो विगतागार पच्चक्खाण, सातमो परिमाणकृत पच्चक्खाण, आठमो निर्विशेष पच्चक्खाण नवमो सांकेत पच्चक्खाण, अने दशमो अद्धा पच्चक्खाण छे. तेमां नवमो सांकेत पच्चक्खाण आठप्रकारे छे. अने दशमो अद्धा पच्चक्खाण दश प्रकारे छे.

मूलः– होही पज्जोसवणा, इतज न तवो हवेज कालंमे; गुरु गण गिलाण सिरकग, तवस्सि कज्जा उलत्तेण. ॥ १८९ ॥ इअ चिंतिअ पुव्वं जो, कुणइ तवंतं अणागयं बिंति; तमइक्कंतंते णे, व हेउणातव इजं उद्दं. ॥ १९० ॥ अर्थः– प्रथ म भावि पच्चक्खाणनुं वर्णन करे छेः– गुरु एटले आचार्यादि, गण एटले साधुनो समूह, ग्लान एटले रोगे करीने ग्रसित शिष्य, अव्यंजन जात एटले नाना चेलाउ अने तपस्वी एटले उत्कृष्ट तपना करनारा एउ संबंधी जे कार्य विश्रामणादिक था

य छे तेणे आकुल व्याप्त पणाथी मारुं मन व्याकुल थवाथी पर्युषणादिक पर्वना दिवशे अष्टम्यादिक तप जो थइ शकशे नही तो मने ए लाजनी हाणी थशे इयचिंति के० एवो चिंतवीने जे कोई ते पर्व आव्यानी पहेलांज ए तप करवा विषे गुरुनी पाशे पच्चरकाण लइने नावि शुन्न कार्यनी सिद्धि करी लेवाना हेतुथी जे तप करेछे तेने अनागत नावी तप तीर्थंकरादिक कहे छे. ए पहेलो नावी पच्चरकाण जाणवो. हवे बीजो अतीत पच्चरकाण देखाडे छेः— अनागत नावी तपनी पठे पूर्वोक्त कारणोने लीधे पर्युषणादि पर्वने दिवशे जो तप थइ शक्यो न होय तो ते पर्व गया पछी इछित तप करवो तेने अतिक्रांत अतीत तप कहे छे. ॥ १८९ ॥ १९० ॥

मूलः— गोसे अप्पत्तठं, जं काउ तं कुणइ बीअ गोसेवि; इअ कोडी डुगमिलणे, कोडी सहियंति नामेणं. ॥ १९१ ॥ अर्थः— हवे त्रीजा कोटि सहित पच्चरकाणनुं स्वरूप कहे छेः— प्रनातना समये अनक्तार्थ एटले उपवास करीने एमज आंबिल, नीवी, एकासणुं, अने एकलठाणो प्रमुख व्रत करीने वली बीजा दिवशमां प्रनातने समये गत दिवशनी पठेज व्रतनो आरंन करवो त्यारे गतदिवशना प्रनात समयथी व्रतनो आरंन थयो ने वर्त्तमान दिवशना प्रनात समयमां अंत थयो कहेवाय. ते पूर्व व्रतना अंतने समये पूर्वनी पठेज वली बीजा व्रतनो आरंन करवो एम एक पछी एक शृंखलाबद्ध एकनो आरंन अने बीजानो अंत एवा कोटिक्रम वडे जे तप करवो तेने कोटि सहित पच्चरखाण कहे छे. ॥ १९१ ॥

मूलः— हिठेण गिलाणेणव, अमुग तवो मुगदिणंमि नियमेण; कायव्वोत्ति निअंटिअ, पच्चरकाणं जिणाबिंति. ॥ १९२ ॥ अर्थः— नियंत्रित पच्चरकाण कहेछेः— हिठेण एटले निरोगता छते अथवा गिलाणेणके० सरोगीछते पण चिंतवेजे अमुक दिवशे अमुक छठ अठमादिक तप मारे जरुर करवो एवा नियमेण के० निश्चय वडे जे तप करवो तेने त्रिलोकनाजाण नगवंत नियंत्रितनामे चोथो पच्चरकाण कहेछे. १९२

अवतरणः—ए तप कया कालेहतो ते देखाडे छे. मूलः— चोद्दस पुव्विसु जिणकप्पिएसु पढमंमि चेव संघयणे; एवंवोछिन्नं चिय, थेरावि तया करे सीय. ॥ १९३ ॥ अर्थः— चौद पूर्वना धरनार अने जिनकल्पीनेविषे वली प्रथम वज्रऋषननाराच संघयणनेविषे एतप विछेद गयोपण ए तपने तेकाले स्थविरकल्पी करता हतां.

अवतरणः— सागार नामे तप अथवा पच्चरकाण कहे छे. मूलः— महत्तरयागाराइ, आगारेहिं जुअंतु सागारं; आगार विरहियं पुण, नणिय मणागार नामंतु. ॥ १९४ ॥ अर्थः— महत्तरागारेणं इत्यादिक आगारे करी सहित होय तेने सागार

तप अने ए आगारे करीरहित होय तेअनागार नामे तप· एवी रीते श्रीतीर्थंकर अने गणधरादिके कह्युंछे. ए पांचमो आगार ने छठो अनागारपच्चरकाण कहेवायछे.

आंही कोई आशंका करेके "अन्नछणा जोगेणं, सहसागारेणं" एमूकीने महत्त राादि आगारेकरी रहित अनागार कहेवानुं कारण शुं तेनो उत्तर आवी रीतेछेः—

मूलः— किंतु अणा जोगाइह, सहसागारेयडन्नि जणियव्वा; जेणतिणाइ खवि ज्ञा, मुहंमि निविविज्ञ वाकहवि ॥ १९५ ॥ इय कय आगारडुगपि, सेस आगार रहिअमणागारं; डुन्निक विति कंता,र गाढ रोगाइ एकुज्ञा ॥ १९६ ॥ अर्थः— अ नाजोग एटले जोला होय अथवा जेनी स्मरणशक्ति ओछी होय तेथी पच्चरकाण नुं स्मरण रहे नही. ते अने इहां सहसात्कारेकरी मुखमां तृणादि घाले, अथवा पोतानी मेले कांइ पदार्थी मुखमां पडे, तेनो शो उपाय थाय? इयकय के० ए कार णयकी ए बे आगार कह्या छतां पण अनागार कहेवायछे. ते अनागार कयां करवा ते कहेछेः— डुन्निक, एटले ज्यां डुकाल पड्यो होय अनेफिरतां पण वृत्ति मलती नहोय ते डुर्निक्ष अने वृत्तिकांतार ते वृत्तिकहेतां वर्त्तवुं एटले जेणेकरी शरीरनो निर्वाह चाले ते वृत्तिनिक्षा प्रमुख ते विषयक कांतार ज्यां होय तेने वृत्ति कांतार कहेछे. जेम अटवीमांनिक्षा मले नही. तेमज लिणवह्यादि गाममां अदाता ब्राह्मणो प्रमुख होय तेथी, अथवा शासनना द्वेषी होय तेना आकीर्ण पणाने लीधे निक्षा न मले ते ठेकाणे. वली कोइ मोटो रोग थयो होय ते मटाडवा शारू कांइ ग्रहण करवुं पडे आदि शब्दवरू कांतार ते केसरी सिंहनी आपदावडे करवुं पडे ते.

मूलः— दत्तीहिव कवलेहिव, घरेहिं जिरकाहिं अहव दवेहिं; जो जत्तपरिच्चायं करेइ परिमाणकम्मेअं ॥ १९७ ॥ अर्थः— दांतनी संख्याए करी कोलीआनी सं ख्याए करी अथवा घेरोनी संख्याथें करी संक्षेप निक्षा ते संसृष्टादिक तेणे करी, अथवा ड्व्यते दूध, उदन, मूग, प्रमुख तेणे करीने जे कोई शेष आहारनो परि त्याग करे, तेने परिमाण कृत सातमो पच्चरकाण कहे छे. ॥ १९७ ॥

मूलः—सवं असणं सवं, च पाणगं खाइमंपि सवंपि; वोसिरइ साइमंपिहु, सवं जं निरवसेसंतं. ॥१९८॥ अर्थः—असण शब्दनो अर्थ संस्कृतमां अशन थाय छे. ए शब्द अश् धातु मांथी थयो छे. ए धातु जोजनने अर्थें वर्त्ते छे. अश्यते एटले जे जमीए छैए ते अशन छे. पाणग शब्दनो संस्कृतमां पानक थाय छे. ए शब्दनी मू ल धातु पा छे. ते पीवानी क्रियाने अर्थें वपराय छे. तेनुं रूप पान थाय छे तेने करिये ते पानक. खाइमनो संस्कृतमां खादिम शब्द छे. एनी मूल धातु खाद् छे

खावाने अर्थे वपराय छे तेनुं रूप खादिम थाय छे अने स्वाद (ष्वर्द) ए धातु आस्वादने अर्थे वपराय छे तेनुरूप स्वादिम थायछे हवे समयज्ञाषार्थे जे निरुक्ति तेणे करीव्युत्पत्ति दर्शावे छे. आशु एटले उतावलपणे, नूखने उपशमावाने अर्थे अशन शब्द छे. प्राणेंद्रियादि दशने तृप्तिकार पणे वर्त्ते तेपान शब्दनो अर्थ जाणवो. ख शब्द आकाशवाची छे तेथी मुखना पोलाणने ते रूपे करी तेमां वस्तु खवाय छे तेने खादिम कहे छे. अने रसादिक स्वाद वडे स्वादयति स्वादरूपी गुणवालो जे पदार्थ तेने स्वादिम कहे छे. एवी रीते जे ए अर्थ देखाडयो ते यद्यपि एकार्थिक छे; तोपण जे तथाविध ज्ञानथी रहित बाल छे तेने सुखावबोधने अर्थे अने विवक्षित द्रव्यनी सुखे परिहरणादिने अर्थे एजेद कल्पना देखाडीछे. एवाउक्त प्रकारना अशनादिक सर्वेनुं जे वोसिरवुं तेने निरविशेप नामे आठमो पच्चरकाण कहेछे.

मूलः—केयंगिहंति सहते, ण जेउतेसिं इमंतिसाकेयं; अहवा केयं चिंधं, सकेयमे वाहु साकेयं ॥ १एए ॥ अर्थः—केत शब्दनो अर्थ घर थायछे तेणे करीने जे सहित होय ते ग्रहस्थ जाणवो ए साकेत अथवा केत शब्दनो अर्थ चिन्ह पण थायछे. एटले अंगुठादि चिन्ह प्रमुख सहित जे होय तेने साकेत सचिन्ह कहेछे.

अवतरणः—ए नवमो साकेत पच्चरकाण आठ प्रकारे थायछे ते कहेछे. मूलः—अंगुठि मुठि गंठि, घरसेउस्सास थिवुग जोइके; पच्चरकाण विचाले, किच्चमिण मजिग्गहे सुवियं ॥२००॥ अर्थः— अंगुठादि आठ पच्चरकाण एवी रीते करवा ते पच्चरकाणने विचाले थाय एटले कोइके पोरसि प्रमुख पच्चरकाण कीधो छतां ते पोरिसिनोकाल पूरो थइ रह्या पछी मनमां कल्पना थाय के मारे अमुक एक काम करवुं छे ते काम करीने पछी जमीश त्यांसुधी वली साकेतक पच्चरकाण करुं तो सारु एम विचारी पहेलो "अंगुठसहिअं पच्चरकामि" एटले ज्यांसुधी मूठमां आंगोठो राखुंछुं त्यांसुधी पच्चरकाणनी शीमाथइ. एमज बीजो मूठ बांधवी तेने मूठसहियंपच्चरकामी त्रीजो गांठ बांधवी ते गांठिसहियं पच्चरकामि चोथो घरसहियं पच्चखामि पांचमो सेउपरसेउ एटले आंगनो परसेवो ते ज्यांसुधी परसेवानो बिंदु नीकले त्यांसुधी ते सेउसहियंपच्चरकामि छठो श्वासोश्वास एटले उस्साससहियं पच्चरकामि. सातमो थिवुग एटले पाणीनो पपोटो ते सहित, एटले थिवुग सहियं पच्चरकामि; आठमो जोइ एटले दीवा प्रमुखनी ज्योति सहित, ते जोइ सहियं पच्चरकामि; ए आठ प्रकारनो नवमो साकेत पच्चरकाण कहेवायछे. ए पच्चरकाण जेम प

च्चरकाण विचाले थाय छे तेम अभिग्रहनेविषे पण थाय छे अने ज्यां सुधी गुरु मांमलीमां आवे नही त्यां लगे साधुने पण एपच्चरकाण थाय छे. ॥२००॥

हवे दशमो अद्धापच्चरकाण कहेछेः— मूलः— अद्धाकालो तस्सय, पमाण मद्धंतु जं नवे तमिह; अद्धा पच्चरकाणं, दसमंतु पुण इमं नणिअं॥२०१॥ अर्थः— अद्धा शब्द वडे काल जाणवो. तेनो जे प्रमाण मुहूर्त्त, प्रहर, प्रमुख उपचारथी जाणी लेवुं. एटले दशमो काल दर्शक अद्धा पच्चरकाण तीर्थंकर गणधरे कह्यो छे. ॥ २०१ ॥ ए पच्चरकाणनो चालना पूर्वक जघन्य कालमान कहेछे.

मूलः— अद्धा पच्चरकाणं, एयंतु जइ विनेव कालंतु; तह वि जहन्नो कालो, मुहुत्त मित्तो मुणेयवो ॥ २०२ ॥ अर्थः— अद्धा प्रत्याख्यान एयंतु के० ए यद्यपि कह्युं तथापि काल मान कह्यो नथी तोपण जघन्ये मुहूर्त्त मात्र जाणवो. ॥२०२॥

हवे अद्धा पच्चरकाणना दश नेद देखामे छेः— मूलः— नवकार पोरिसीए, पुरिमड्ढेकासणेगठाणेय; आयंबिल अनत्तट्ठे, चरिमेय अनिग्गहे विगई ॥ २०३ ॥

अर्थः— नवकारसी, पोरिसी, पुरिमड्ढ, एकासणो, एकलठाणो, आंबिल, उपवास, दिवसचरिम अथवा नवचरिम, अभिग्रह, अने विगइ, ए दश नामछे

हवे नोकारसी प्रमुख दश पच्चरकाणनी आगार संख्या कहे छेः— मूलः— दोचेव नमुक्कारो, आगारा छच पोरिसीएउ; सत्तेवय पुरिमड्ढे, एकासणगंमि अट्ठेव. ॥२०४॥ सत्तेगठाणस्सउ, अट्ठेवय अंबिलंमि आगारा; पंचेवय अनत्तट्ठे, छ प्पाणे चरिम चत्तारि. ॥ २०५ ॥ पंच चउरो अनिग्गहि, निव्वीए अठ नवय आगारा; अप्पाउरणे पंचउ, हवंति सेसेसु चत्तारि. ॥ २०६ ॥ अर्थः— प्रथम "नोकारसी नंगपरिहारार्थे" अन्नछणाभोगणं, अने सहसागारेणं, ए बे आगार जाणवा. "पोरसी नंगपरिहारार्थे" अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, पच्छन्नकालेणं, दिसामोहेणं, साहुवयणेणं, अने सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, ए छ आगार छे. साढ पोरसी नंगपरिहारार्थे पण एज छ आगार जाणी लेवा. पुरिमड्ढनेविषे उपलक्षणथी अवड्ढनेविषेपण पोरसी अथवा साढ पोरसी नंगपरिहारार्थे कहेला छ आगार लइने तेओमां महत्तरागार मेलवीने सात आगार समजी लेवा. एकासणा नंगपरिहारार्थे अन्नछणाभोगेणं, सहसागारेणं, सागारिआगारेणं, आउंटणपसारेणं, गुरु अभ्रुठाणेणं, पारिठावणीआगारेणं, महत्तरागारेणं, अने सव्वसमाहिवत्तिआगारेणं, ए आठ आगार छे. अने बेआसणा नंगपरिहारार्थे पण एज आठ आगार जाणवा. एकलठाणानंगपरिहारार्थे पण आउंटण पसारे

एं विना बाकीना सात आगार एकासणानीपठे जाणवा. आंबिल भंगपरिहारार्थें अन्नडणाभोगेणं, सहसागारेणं, लेवालेवेणं, गिहडसंसठेणं, उखित्तविवेगेणं, पारि ठावणीयागारेणं, महत्तरागारेणं, अने सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए आठ आगार ठे. उपवास भंगपरिहारार्थे अन्नडणाभोगेणं, सहसागारेणं, पारिठावणीयागारेणं, महत्तरागारेणं, अने सव्व समाहिवत्तियागारेणं, एपांच आगारठे. पाणीभंगपरिहारा र्थे, लेवेणवा, अलेवेणवा, अडेणवा, बहलेणवा, ससिडेणवा, अने असिडेणवा. ए ठ आगारठे. दिवस चरिम भंगपरिहारार्थें" अन्नडणा भोगेणं, सहसागारेणं, म हत्तरागारेणं, अने सव्वसमाहिवत्तियागारेणं ए चार आगारठे. वली भवचरिम भंगपरि हारार्थें महत्तरागार, तथा सव्वसमाहिवत्तियागार ए बन्नेनुं कांइ काम नथी एम जो ते जाणे तो अन्नडणाभोगेणं, अने सहसागारेणं ए बे ठतां पण ते निरागार ठे. अभिग्रह पच्चरकाण भंगपरिहारार्थें" दिवस चरिमनेविषे कहेला चार आगार जाणी लेवा. इव्य, क्षेत्र, काल, तथा भाव ए चार प्रकारे अभिग्रह थाय ठे तेने विषे पूर्वोक्त चार आगार कह्या ठे ते वली कोइक स्थले पांच पण कह्या ठे. नीवीनेविषे, आंबिल पच्चरकाणमां कहेला आठ आगार लइने तेमां पडुच्चमरिकएणं उमेरवो एटले नव थाय ठे. अने केटलाक आठ पण कहे ठे. नीवी शब्दनो व्यु त्पत्ति सहित अर्थ कहे ठेः— एनो मूल शब्द संस्कृतमां निर्विकृतिक ठे. एमां निः उपसर्ग ठे अने विकृतिक पदठे. निः उपसर्ग अभाव देखाडे ठे अने विकृतिक ए टले चित्तने विकार करणार. ते विकृति निर्गत थई एटले विकृति नही तेथी निर्वि कृतिसिद्ध थयुं. अथवा मूल संस्कृत शब्द निर्विगतिक ठे. एमां पण प्रथमनी पठे निःउपसर्ग अभाव वाची अने विगतिक शब्द वर्मे पाडुइ गतिनुं निर्गतन सिद्ध थाय ठे. एटले जे करवाथी प्राणीनी नरशी गति निवृत्त थाय ठे. माटे एनुं नाम निरविगति क कहिये एने आठ अने नव आगारनो कारण ते नवणी उगाहिम ए गाथायेकरी आगल कहेसे अप्रावरणाभिग्रहनेविषे पूर्वोक्त इव्यादि अभिग्रह पच्चरकाणमां कहेला चार आगार लईने अने तेओमां पांचमो चोलवट्टागारेणं ए आगार उमेरवो. ए आगार श्रावक प्रमुखना आववाथी चोल पटे लेतां पण भंग थाय नही. ए आगार कीजे त्यारे पांच आगार जाणवाअन्यथा शेष सर्व अभिग्रहनेविषे चार आगार जाणवा.

नीवी पच्चरकाणनेविषे आठ आगार पण कह्या ठे ने नव आगार पण कह्या ठे तेनुं कारण शुं? ते कहे ठेः— मूलः— नवणी ओगाहिमगे, अद्दव दहि पिसि अ घय गुडेचेव; नव आगाराएसिं, सेस दवाणंच अठेव. ॥ १०७ ॥ अर्थः—नव

नीत एटले माखण, ओगा ह्मिग कहेतांपकवान अद्दव दही एटले कढीण मद्दा दधि पिशित एटले मांस, घृत, तथा गोल प्रसिद्ध छे एटली नवनीतादि अद्दव विगयनेविषे नव आगारछे जेनो उक्खित्त एटले विवेक करी सकिये के जेनुं मूल कारण द्रव्य जुदुं छतां पछी परिणामथी रूपांतर थयुं छे अने ए विषयमां अद्रव्य कह्युं छे. एवा पदार्थनेविषे नव आगार थाय छे अने बाकी जेनो विवेक करी स कीयेनही तेनेविषे आठ आगार थाय छे. ॥ २०७ ॥

पूर्वे "सवं असणं सवं च पाणगं" ए गाथामां चार असनादि कह्या छे. तेउ नु विवेचन करीने देखाडे छेः— मूलः—असणं ओयण सत्तुग, मुग्ग जगाराइ खज्ज ग विहीय ; खीराइ सूरणाई मंमग प्पभिइ उविन्नेयं. ॥ २०८ ॥ अर्थः—अशन एट ले चावलादिक धान सघलुं समजवुं, सातु, मूग, प्रमुखनी जगाराइ एटले राब अ थवा पेज बनावे छे ते खज्जग विधि एटले खाजा, मांमा, मोदक, सुआली, घेवर, लापसी, अने साकली प्रमुख समस्त पकवाननी जाति जाणवी. अने क्षीर एटले दूध. आदि शब्द वडे दही, घृत, छास, तीमण रसालादिक मेवा जाणवा. वली सूरण प्रसिद्ध छे. आदि शब्दे आदु प्रमुख सगली वनस्पतिना सालणानो परिग्रह जाणवो. वली मांमा प्रभृति प्रभृतिना ग्रहणवमे रोटी कूलिर, इडर इत्यादि सम जी लेवा. ए सर्व पदार्थोने अशन जाणवो ॥ २०८ ॥

हवे पानक कहे छे. मूलः— पाणं सोवीरजवो, दगाइ चित्तं सुराइयं चेव; आ उक्काउ सव्वो, कक्कडगजलाइयंच तहा. ॥ २०९ ॥ अर्थः—पान एटले पानक पदा र्थ. सोवीर एटले कांजी, यवोदिकादि एटले यवादिक धाननोनुं धोवण. आदि शब्दे करी गोधूम, चोखा, तथा कोद्रवादिकनुं धोवणनो पाणी. चित्र एटले नाना प्रका रनो सुरादि संबंधी प्रवाही पदार्थ. अंही पण आदि शब्द वडे सरको लेवो. आ उक्काउ अपकायना जेटला भेद कह्या छे भोमंतरिक्ख इत्यादि समस्त जाणवा. तेम कक्कमग एटले काकडी खडबुजा प्रमुखमांथी जे पाणी नीकले छे ते जाणवुं. आदि शब्दवमे खजूर, द्राक्ष, नालीयर, प्रमुखनी आंबीलवाणी इत्यादि जाणवा. २०९

हवे खादिम कहे छेः— मूलः—भत्तोसं दंताई, खज्जूरगनालिकेर दरकाई ; कक्कड अंबड फणसा,इ बहुविहं खाइमं नेयं, ॥ २१० ॥ अर्थः—भक्तोष एटले भूजेला चणा, गोधुम, अने जव अने दंताई एटले दांतोने हितूछदात्य गुडादि आदिशब्दवमे चा रोली, खांम, अने शाकर एमज सर्व जातनी सुखडी अथवा दंतादि देशविशेषे प्रसिद्ध गुलें करी संस्कारयुक्त दंत पवनादिक तेमज नालियर, खजूर, द्राक्ष आदि

शब्दे अखोम वगेरे जाणवा. तेमज फल विशेष कक्कड एटले काकडी, आंबा, फणस, आदि शब्दे करी केला प्रमुख सर्व फल लेवा, एवी रीते बहु विहंके० अनेक प्रकारे खादिम जाणीलेवुं. ॥ २१० ॥

हवे स्वादिम कहे छेः— मूलः— दंतवणं तंबोलं, चित्तं तुलसी कुहेडगाईयं; महु पिप्पलि सुंगाई, अणेगहा साइमं नेयं. २११ अर्थः— दंतवणं एटले जेणेकरी दांतनी शुद्धि थाय छे एवी बावल प्रमुखनी दाल ते प्रसिद्ध छे. तांबोल एटले नागवेलिना पान अने शोपारी प्रमुख चित्रके० अनेक प्रकारना थायछे ते. तुलछी कुहेडक एक जातनुं फल विशेष आदि शब्दे करी जीरो; वरेआली, लेवा; महुके० मधु, पीपरी, सूठ आदि शब्द वडे गुल मरचां, अजमोद, हरमे, बहेडा अने आमला तथा जेकटु भांडादि सर्वे लेवा. एम अनेगहाके० अनेक प्रकारे स्वादिम पदार्थ जाणवा.

हवे असनादिमां जे विगइ जेमां आवे छे ते देखाडे छेः— मूलः— पाणम्मि सरइ विगई, खाइम पक्कन्न अंसउ नणिउ ; साइम गुलमहु विगई, सेसाउ सत्त असणंमि. २१२ अर्थः— पानक पदार्थोमां मदिराविगइ कह्युं छे. खादिमनेविषे पक्कन्न अंसउ के० पकवानांश विगइ कह्याछे. स्वादिमनेविषे मधु, अने गुलादिपदार्थ विगइ थाय ते. बाकी सात विगइ असणंमिके० धान्यमां जाणवा. नवरंके० एटलो विशेष जे सरउमह खादिमगुलनेविषे तलेला गुदरनो अवयव जाणवो. ॥ २१२ ॥

हवे छ प्रकारनी शुद्धि कहे छेः— मूल अनुष्टुप् छंदः— फासिअं पालिअं चेव सोहिअं तीरअं तहा; कित्तिअ माराहियं चेव, जइज्जा परि सम्मिउ. ॥ २१३ ॥ अर्थः— स्पर्श कर्युं. पाल्युं, शोध्युं, निश्चे तीर्युं, तेमज कीर्त्युं, आराध्युं, वली आदर कर्युं एवा पच्चख्खाणविषे विशेष जइज्जा के० यत्न करवो. ॥ २१३ ॥

एवा पच्चख्खाणने विषे नाम मात्र कहीने हवे गाथाए करीने व्याख्यान करेछेः

मूलः— उचिए काले विहिणा, पत्तंजं फासिअं तयं नणियं; तह पालिअं च असइ, सम्मं उवओग पडियरियं ॥२१४॥ अर्थ.—साधु अथवा श्रावकना पच्चख्खाणनो अर्थ कहेछेः— समस्त प्रकारे जाणतो छतां सूर्यउदय थयानी पहेलां पोतानी साखे चैत्यस्थापना चार्यनी समक्ष. पोताना विवक्षित पच्चखाणनो अंगीकार करीने पछी चारित्र पात्र गीतार्थ गुरुने समीपे विधि वडे कृतकर्म वांदणु करीने विनये करी रागादि रहित उपयुक्त थयो थको अंजली बंध करीने जीणे अवाजे गुरुना वचन पछे जेवारे उचरे तेने फासिअं कहेछे. तेमज पालित एटले असइ कहेतां वारंवार तेज पच्चखाणनो उपयोग चिंतवो. तेणेकरी सहित करीपालवो ते पालित जाणवो.

मूलः– गुरु दत्त सेस न्नोयण, सेवणयाएय सोहियं जाण; पुस्रेविथेवि काला वङ्घाणा तीरियं होइ. ॥ २१५ ॥ अर्थः– गुरुने पहेलां आपीने तेनो रहेलो शेष न्नोजन जे असनादि तेनुं सेवन करवुं एटले जमवुं. तेथी शोन्नित पच्चखाण कहे ने पुस्रेवि पोरिसी प्रमुख जे पच्चखाण कीधेलुं होय ते पूरुं थया पठी वली थो डाक कालसुधी अवस्थान रहेवुं तेने तीरित कहे ने. ॥ २१५ ॥

मूलः– न्नोयण काले अमुगं, पच्चखायंतु न्नुंज कित्तीयं; आराहियं पयारे, हि सम्ममे एहि निठविअं ॥ २१६ ॥ अर्थः– न्नोजन काल एटले जमवाना समये अमूक में आज पच्चरकाण कीधो ने. एवीरीते जमवानेकीर्त्तित कहे ने. अने जे स म्यक् एटले पूर्वोक्त प्रकारे करीने निष्टापणे पामड्यो तेने आराधित कहे ने.॥२१६॥

आगार कहतोथको हेतु देखाडे ने:–मूलः–वयन्नंगे गुरु दोसो, थेवस्स विपाल णा गुण करीय; गुरु लाघवं च नेयं, धम्मंमि अओय आगारा. ॥ २१७ ॥ अर्थः– व्रतन्नंग एटले नियमना विराधवाने विषे श्री न्नगवंतनी आज्ञानी विराध ना थवाने लीधे गुरु दोष एटले मोटा अशुन्न कर्म बंधादिरूप दूषण, थाय ने अने जो आज्ञासहित थोडा पण नियमनी अनुपालना एटले जे आराधना करतां तो ते गुणे करी विशुद्ध परिणामरूप पणाने लीधे कर्म निर्जरा लक्षण उपकारनी कर वावाली थाय ने कारण के ते विशुद्ध परिणाम स्वरूपत्वपणु ने माटे एवो थोडो व्रत पालवो पण न्नलुं ने चारित्र धर्मनेविषे अथवा उपवासादिक कीधे नते जो असमाधी उपजे, तो तेने औषधादिक देवाथीजे समाधि संपादान करवी तेविषयी निर्जरा लक्षण जे गुण तेगुरु एटले सार जाणवो अने जो औषधादि दइए नही तो लघुगुण थाय ते असार जाणवुं. जे एकांतनो आग्रह ने ते प्राणीने एकांत अवगुणनो करवावालो ने. अजयके०ए कारण माटे एआगार, पच्चरकाणनेविषे अवश्य करवा.

हवे विगइ देखाडे ने:– मूलः– डुद्धं दहि नवणीयं, घयं तहा तेल मेव गुम्म मज्जं; महु मंसं चेव तहा, उंगाहिमगं च विगईउ. ॥ २१८ ॥ अर्थः– दूध, दही, नवनीत एटले माखण, घृत, तेल, तेमज गोल, मदिरा, मधु, मांस, ओगा हिमग एटले पकवान, ए दश विगय जाणवा. ॥ २१८ ॥

विगयना न्नेद देखाडे ने:–मूलः–गोमहि सुठि पसूणं, ए लग खीराणि पंचचत्तारि; दहि माइयाइ जम्मा, उठीणं ताणनो हुंति. ॥२१९॥ अर्थः–गाइ, न्नेंस, सांढ, नाली, अने गाडर ए पांच पशुउनुं दूध विगइरूप जाणवुं. एमां दही, माखण, अने घृत एटलावाना चार जातना पशुउना दूधमांथी थाय ने, सांढना दूधमांथी नथी थतां.

मूलः– चत्तारि हुंति तेल्ला, तिल अयसि कुसुंभ सरीसवाणं च; विगईउ सेसा णं, फोलाईणं न विगईउ. ॥ २२० ॥ अर्थः– तिलनुं तेल, अलशीनुं तेल, कुशुंभानुं तेल, अने सरसवनुं तेल ए जातना तेलने विगईमां गणवां. अने बाकीना जे फोला के० महुडाना फलनुं तेल, आदि शब्दे करी नालीअरनुं तेल, एरंमीआनुं तेल, तथा कागुणी प्रमुखनुं तेल प्रमुख ते विगई थाय नही. ॥२२०॥ मूलः–दव गुड पिंम गुडादो, मज्जं पुण कठ पिठ निप्फन्नं; मछिल अपुत्ति अ नामर, नेयंच महुं तिहा होई ॥२२१॥ अर्थः– दवगुड एटले नरम गोल, अने पिंम गुड एटले कठण गोल, ए बे प्रकारना गोल; मद्य एटले मदिरा ते पण एक ताडप्रमुख काष्ठादिक पदार्थोथीथाय छे, तथा बीजो धान्यादिकथी थाय छे. तथा महोटी माखीनुं मधु, नानी माखीनुं मधु, तथा भ्रमरीनुं मधु, ए त्रण प्रकारनां मधु थाय छे. ए सर्व वस्तु विगयमां गणायछे. ॥२२१॥ मूलः– जल थल खहयर मंसं, चम्मं वस सोणियं तिभेयंच; आइल्ल तिन्नि चल चल, उगाहिमगंच विगईउं. ॥२२२॥ अर्थः– जलचर जे माछला प्रमुख छे तेनुं मांस, थलचर एटले सूवर, शशला, तथा हरिण प्रमुखनुं मांस, खेचर एटले तीतर, चीड, अने कूकडा प्रमुखनुं मांस, एवा त्रण भेदे कह्युं छे. अथवा चर्म, शोणित, अने वसा एत्रण सहित त्रण भेद मां सना थाय छे. अने आइल्लतिन्नि के० आदना त्रण घाणसीम उगाहिमग के० पकवान एटले जे कडाइ प्रमुखमां तलतां चल चल शब्द तलेलुं होय ते विगई छे उपरांत विगइ न थाय योगवाही नीवीपच्चखाणवालाने पण कल्पे अथवा एक पूडे संपूर्ण कडाइभरी थकी तेना उपर बीजो पूडोमूक्यो थको निविगईयो थाय परंतु जो सम्यक्प्रकारे जाणी जे के ए बीजो घणोके चोथो घाणो छे अने नवो घृत इहां नाख्यो नथी. इत्यादि जाणे तो कल्पे अन्यथा न कल्पे. ॥ २२२ ॥

दूध प्रमुख विगय जे छे ते जे रीते निर्विगयरूप थाय ते प्रकार देखाडे छेः– मूलः– खीर दही वियमाणं, चत्तारि अंगुलाइं संसठं; फाणिय तेल घयाणं, अंगुल मेगं तु संसठं ॥ २२३ ॥ अर्थः– दूध, दही, तथा वियड एटले मद्य एपदार्थोना ज्यांशुधी उदनादिक वालेथके चार आंगला चडे तेटले शुधी शीमा कही छे. अने तेने निर्विगइ जाणवुं ने जो तेथी वधारे चडे तो विगई थाय. फाणिय शब्द वमे नरम गोल, तेल, तथा घृत, ए जो उदन, तथा रोटी प्रमुख उपर एक आंगल प्रमाण शुधी तेल तथा घी चमे त्यांशुधी नीवीतो जाणवो अने उपरांत विगइ थाय. तेटला माटेज अंगुल मेगंतु संसठं एम कह्युं छे. ॥ २२३ ॥

मूलः– मद्दु पुग्गल रसयाणं, अद्धंगुलयं तु होइ संसट्ठं ; गुल पोग्गल नवणीए, अद्दामलयं तु संसट्ठं ॥ २२४ ॥ अर्थः– मधु मांस अने माखणनो रस एनो अर्द्ध आंगलानो प्रमाण कह्यो छे. तेटलुं लीधाथी निव्विगइ थाय अने उपरांत विगइ जाणवुं अने गोल पोग्गल के० मांस नवनीत एटले माखण, तथा अद्दामलके० खारी जालनुं मोर अथवा पीलु ए वस्तुउ जेटली निव्विगइ पदार्थोमां मले ते विगइ थायछे॥२२४॥

मूलः– विगई विगइगयाणिय. अणंतकायाण वज्जवत्थूणि; दस तीसं बत्तीसं, बावीस सुणेह वन्नेमि. ॥ २२५ ॥ अर्थः– विगई ए दश छे, अने विगइगत एटले विगयथी नीपना निर्विगइआ ते छ नक्ष्य विगयना त्रीशछे, अनंत काय बत्रीश छे, अने वर्ज्य वस्तु जे अनक्ष्य ते बावीश छे ए सर्व सविस्तर हुं कहुं छुं ते तमे शांनलो. ए गाथामां " सुणेह " ए आज्ञावाचक शब्द कहेवाथी जे पोतानी सांबे शांनलवाने नव्य जीवो आवे तेनेज धर्म शंनलाववो. अने बीजा जे सांनलवा न आवे तेने कहिये नही. यदुक्तंः–अणुवट्ठियस्स धम्मं, साहु कहिज्जाइ सुट्ठुविपिअस्स विडगयं होइ सुहं, विज्जा अग्गिं धमं तस्स; ए गाथामां अनुपस्थित एटले जे सांबे आव्यो नथी ते जाणवो. बाकीनो अर्थ सुलन्न छेः यतः सुच्चा जाणइ कल्लाणं, सुच्चा जाणइ पावगं; उनयं जाणई सुच्चा, जं छेयं तं समायरे" अर्थ सुगम जाणवो. २२५

हवे दश विगईनां विकृतिनेद कहेछेः– मूलः– डुद्द दहि तेल्ल नवणिय, घय, गुड मद्दु मंस मज्ज पक्कंच; पण चउ चउ चउ चउ डुग, तिग तिग डुग एग पडिनिन्नं ॥ २२६ ॥ अर्थः– दूध, दही, तेल, माखण, घी, गोल, मधु, मांस, मद्य, अने पकवान्न ए दश नाम विगयनां छे. एमां पांच दूधना, चार दहीना, चार तेलना, चार माखणना, चार घृतना, बे गोलना, त्रण मधुना, त्रण मांसना बे मद्यना, एक पकवान्ननो, एम एकेकना नेद थाय छे. ॥ २२६ ॥

विकृति गत निविगया देखाडे छेः– मूलः– दव्व हया विगइगयं, विगई पुण तेण तं हयं दव्वं; उद्धरिए तत्तंमिउ, उक्किट्ठ दव्वं इमं अन्ने ॥२२७॥ अर्थः–"द्रव्य एटले कलमशाली तंडुलादिक, तेणे करीने निर्विगय करेली जे क्षीरादिक; तेने "विगइ गयं" एटले विकृतिगत कहे छे. तेण के० ते कारण माटे चोखा प्रमुखवडे दूधप्रमुखनुं जे रूपांतर थाय छे ते द्रव्य कहेवाय पण विगई कहेवाय नही ए माटेज नीवीना पच्चरकाण करनारा जे छे तेने क्यां क्यां कांई कांई कल्पे छे. तेम वली " उद्धरिये " एटले रसोई करवाना गामडामांथी पूरी वगैरे जे तली कहाडीए छैए मतलब के बलगता चूलाउपर घी घालीने चडावेलुं गामडुं अग्नि वडे तप्त

थया पछी तेमां घहुं आदि धान्यनो लोट घाली तेनी जे रशोई थाय छे तेने उत्कृष्ट द्रव्य जाणवुं. एटले ते विकृतिगतज छे. इमं अन्ने के० एम कोइ बीजा केटलाक कहेछे अंही गीतार्थनो आवो अभिप्राय छे. के चूलाउपर चमावेला घृतादिकने नीचे ऊतारी तेमां घृत प्रमुख टाढो थया पछी तेमां जे कणिक प्रमुख घालीए ते वखते तथाविध पाकना अभाव होवाथी विकृतिगत कहेवाय अने चूला ऊपर तप्त थता घीमां घालीने सारी रीते जे पकववुं एटले परिपक्व थयला तेने विकृतिज कहे छे. ए गाथानुं व्याख्यान टीका कारें एवी उक्त रीतिए कह्युं छे अने पंमित जनोए विचार करीने व्याख्यान करी लेवुं. हवे कोई कहेशे के ए आचार्ये पोतानी मन कल्पना करी हशे? तेम न जाणवुं केमके सिद्धांतमां पण विकृति गतनुं स्वरूप एवी रीतेज कह्युं छे. यतः " आवस्सग चुन्नीए गाहा " एटले अवश्यक चूर्णिनेविषे परिभाषित छे. आंही ग्रंथनेविषे सामान्य द्वारे वर्णन कर्युं छे. अने विशेष द्वारे कहेवुं छे जे कुशल बुद्धिवान छे तेमना अर्थें पउंजियव्वंति एटले प्रयुंजवुं अर्थात् कारणनेविषे कहेवुं ए अभिप्राय जाणवो. आंही यद्यपि क्षीरादि प्रमुख साक्षात विगई नथी किंतु विकृतिगत कह्यां छे. अने ते नीवीताने पण कल्पे छे तथापि जे ए उत्कृष्ट द्रव्य जमताथकां जे संत जन छे तेना मनने पण विकार पमाडेछे अने जे ए नीवी कीधी छे तेने उत्कृष्ट निर्जरा पण प्राप्त थाय नही. माटे एवा द्रव्य न लेवां तेज सारुं छे अने जे विविध तप करवा थकी महाकृश थयो होय अने अनुष्ठान, सज्झाय, तथा अध्ययनादिक करी शकतो न होय तो उत्कृष्ट द्रव्य जमवुं तेने कांई दोष नथी अने कर्मनिर्जरा पण मोटी थाय छे. यदाहुः नवरं इह परि भोगो, निव्विगइयाणं पि कारणावेक्खो ॥ उक्कोस दव्वगहणे, नउं विसेसेण विन्नेओ ॥ १ ॥ आवन्न निव्विगइयस्स, असाहुणो जुज्जई परी भोगो ॥ इंदिय जय वुद्धीए, विगई चायं भिनो जुत्तो ॥ २ ॥ जो पुण विगई चायं, काऊणं खाइ निद्धमहुराई ॥ उक्कोसग दव्वाई, तुच्छ फले तस्स सोनेउ ॥ ३ ॥ दीसंति अ केइ इहं, पच्चक्खाएवि मंदधम्माणो ॥ कारणियं पडिसेवं, अकारणेणवि कुणमाणा ॥ ४ ॥ तिलमोयग तिलवट्टिं, वरिसोलग नालिकेर खंडाई ॥ अइ बहुल घोलखीरिं, घय पुप्फय वंजणाईय ॥ ५ ॥ घयबुम मंमगाई । दहि दुद्ध करंबनेह माईहिं ॥ कुल्लरि चूरिमपमुहं । अकारणेकेइ भुजंति ॥ ६ ॥ नयतंपि इहपमाणं । जहुत्तकारीण आगमन्नूणं ॥ जरजम्ममरण भीसण । भवन्नबुव्विग्गचित्ताणं ॥ ७ ॥ मोत्तुं जिणाणमाणं । जिआण बहु डुहदवग्गित वियाणं ॥ नहु अन्नोपमियारो । कोइ

इहं जव वणे जेण. ॥ ८ ॥ विगई परिणय धम्मो । मोहो जमुदिज्ज एउ दिन्नेय ॥ सुडुविचित्त जयपरो । कहं अकज्जे निविट्टिहिई ॥ ए ॥ दावानलमज्झगउ । कोत डुवस मढयाइ जलमाई ॥ संतेविनसेविज्जा । मोहानल दीवए उवमा ॥१०॥ विग ई विगई नीउ । विगइगयं जो न झुंजए साहू ॥ विगई विगइसहावा । विगई विगई बलानेई ॥११॥ ए गाथानो जावार्थ कहेछेः—विगतिनीत एटले नरकादिकथी नय पामेलो छे, एवो जे साधु ते विगई एटले क्षीरादिक, तथा विगईगय एटले क्षीरान्नादिक जमे तो डुर्गतिनेविषे जाय जे कारण माटे जीवते विगईनी इछा राखतो छतां पण नरकादिकने पामे. आंही हेतु कहे छेः— विगई ते मनोविकार करणार जाणवुं.

हवे छ जक्ष्य विगइना विकृतगत निवीता त्रीश कहेछेः— मूलः—अहपेया डुद्ध ठी, डुद्ध वलेहीय डुद्ध साडीअ; पंचय विगइ गयाइं, डुद्धंमी खीरसहियाइं २२८ अर्थः— कांजीमां दूध जेलीए तेने पेया कहेछे. बीजुं डुद्धठी, त्रीजुं दूध अवलेही चोथुं डुद्ध साटिका, पांचमुं चावलसहित दूध एटले क्षीर. ए पांच दूधना विकृ तिगत नीविता कहेवाय छे. ॥ २२८ ॥ मूलः— अंबिलजुअंमि डुद्धे, डुद्धठी द क्खमीसरद्धंमी; पयसाडी तह तंडुल, चुन्नय सिद्धंमि अवलेही. ॥२२ए॥ अर्थः—खा टी छाश सहित जे दूध तेने डुद्धठी कहेछे. द्राक्ष सहित दूधने पयसाडी कहेछे. चोखानो आटो नाखीने रांधेला दूधने अवलेही कहेछेः—ए दूधना नीवीता जाणवा. ॥२२ए॥

हवे दहीना पांच नीवीयाता कहेछेः— मूलः— दहिए विगइगयाइं, घोलवडा घोल सिहरिणि करंबो; लवण कण दहि य महियं, संगरिगा इम्मि अप्पडिए ॥ ॥ २३० ॥ अर्थः— १ दहीने घोळीने तेमां वडां घालवा, २ दही घोळीने वस्त्रमां थी गालीए, ३ दही हाथथी मथी तेमां खांम नाखीए, अथवा कपडामां दही बांधीने तेमांथी पाणी क़हाडीने तेमां खांम अथवा शाकर जेलीए, तेने शीखरणी अथवा श्रीखंम कहे छे. दही अने चोखा एकठा करीए तेने करंबो कहेछे. लु ण नाखीने दही घोळीए सांगरी प्रमुख न पडे तो नीवीता जाणवा ए पांच दही ना नीवीयाता जाणवा. ॥ २३० ॥

हवे घीना नीवीयाता कहे छेः— मूलः— पक्कघयं घयकिट्टी, पक्कोसहि उव रि तरिय सप्पिंच; निप्भंजण वीसंदण, गाइ घयविगइ विगइगया. ॥ २३१ ॥ अर्थः— एक औषधे करीने पकावलो जे घी तेने पक्कघृत कहेछे. बीजो घृतनी कीटी जे मल थाय छे ते, त्रीजो जे घीमां कोइ औषधि पक्कवी होय तेने पक्कौष धि घृत कहे छे. घृतनी उपरनी तरीनुं जे घी ते. चोथो लहिगटा ते उपरलो घृत

निर्भंजण; पांचमो दहीनी तरीमां गहुनो आटो नाखीए ते वीसंदण एवी रीते घीना पांच निवियाता जाणवा. ॥ २३१ ॥

तेलना नीवीयाता पांच कहेछेः— मूलः— तिल्लमलं तिलकुट्टी, दड्ढं तिल्लं तिहो सहोव्हरियं; लक्काइ दव्व पक्कं, तिल्लं तेलंमि पंचेव. ॥२३२॥ अर्थः— तेलनी मली, तिलवट्टी, बलेलुं तेल, ओसह एटले उपरली तरी, अने लाक्कादिक द्रव्य थी पाकेलुं जे तेल ते. ए पांच तेलना नीवीयाता जाणवा. ॥ २३२ ॥

गोल विगइना नीवीयाता पांच कहेछेः— मूलः— अद्ध कढिय इक्कुरसो, गुल पाणीयंच सक्करारवंम; पाय गुडं गुलविगइ, विगइगयाइं तु पंचेव. ॥ २३३ ॥ अर्थः— अरधो काढेलो शेरडीनो रस, गोलनी राब, शाकर, फूलखांम, अने गोलनी पाति ए पांच गोल विगइना नीवीयाता जाणवा. ॥ २३३ ॥

मूलः— जेणेगेणंतवउ, पूरिज्जइ पूयगेण तव्वीउ; अख वियनेहो पच्चइ, जईस नेहोइ तेविगई. ॥ २३४ ॥ अर्थः— जो एक खाजा वडे कडाइ नराइ गइ होय तो ते थकी बीजो खाजो नीवीयातो थाय छे. तेमां मात्र बीजुं घी नाखवुं न जोये. एटले तेज घृतवडे पकावीए तो ते पेहेलो नीवीयातो थाय छे. ॥ २३४ ॥

मूल.— एगं एगस्सुवरिं, तिन्नो वरि बीयगंच जं पक्कं; तुप्पेणं तेणं चिय, तइ अं गुलहाणियापन्नइ. ॥ २३५ ॥ अर्थः— एकनी उपर एक नाखीए एम त्रण घाणा उपर तेज घीमां जे बीजो पकावीए ते बीजो निवीयातो कहीए. अने गुल धाणी प्रमुखनो त्रीजो निवियातो जाणवो. ॥ २३५ ॥

मूलः— चोत्थं जलेण सिद्धा, लप्पसिया पंचमंतु पूयलिया; चोप्पडियतावियाए, परिपक्क तीस मिलिएसु. ॥ २३६ ॥ अर्थः— पाणीमां रांधेली जे लापसी ते चोथो नीवीयातो जाणवो. नीवीयाते चोपडी कहाडेला तावडानी उपर पूडा धारमी प्रमुख करे ते पांचमो नीवीयातो जाणवो. एवी रीते छ ए विगइना पांच पांच नीवीयाता थाय छे. ते सर्व मलीने त्रीश थाय. एम आवश्यक चूर्णीमां कह्युं छे.॥२३६

मूलः— आवस्सय चुण्णीए, परिणिणिअं इत्थवसि अं कहियं; कहियवं कुसलाणं, पउंजियवं तु कारणिए. ॥ २३७ ॥ अर्थः— आवश्यकनी चूर्णीमां पण समस्तपणे कह्युं छे. अत्रे सामान्यताथी वर्णन कर्युं छे. पंमित लोकोने कोइ कारणने लीधे प्रयुंजवुं कहेतां लेवुं योग्य छे. ॥ २३७ ॥

हवे बत्रीश अनंतकाय कहे छेः— मूलः— सव्वाहु कंदजाई, सूरण कंदोय वज्ज कंदोय; अल्ल हलिदा य तहा, अल्लं तह अल्ल कच्चूरो. ॥ २३८ ॥ सत्तावरी विरा

ली, कुमारि तह थोहरी गिलोईय; ल्हसणं वंस करिल्ला, गज्जर तह लोणउ लो ढो. ॥ २३९ ॥ गिरिकन्नि किसल पत्ता, खीरसुआ थेग अल्ल मुत्थाय; तह लो ण रुक्क छल्ली, खिल्लुडो अमयवल्लीय. ॥ २४० ॥ मूला तह जूमिरुहा, विरुहा तह ढक्क वत्थुलो पढमो; सूअरवल्लो य तहा, पल्लंको कोमलंबिलिया ॥२४१॥ आलू तह पिंमालू, हवंति एए अणंतनामेहिं; अन्न मणंतं नेयं, लरकण जुत्ती य समयाउ. ॥२४२॥ अर्थः— सव्वाहु कंदजाइ के० निश्चेयकी १ सर्व कंदनीजाति अनंत कायकादिक जे छे ते. २ सूरणकंद ३ वज्रकंद ४ अल्लहलिद्दाके० नी लीहलिद् तेमज ५ अल्ल के० नीलोआदु ६ अल्लकचूरो के० नीलोकचूरो ७ सता वरीप्रसिद्ध ८ विरालीलताविशेष ए कुंआरी १० थोहरि ११ गिलोइ एटले गुलवेल १२ लसण १३ वंस संबंधीनी कारेली १४ गाजर तेमज १५ लोणउके० साजी वृक्ष. १६ लोढो लोढक ते पद्मनी कंद वनस्पति विशेष १७ गिरिकन्नि एटले गि रिकर्णिका वल्लि विशेष तेना किसलय पत्ता के० कुपलपान ते नवुनिकलतुं कोम ल पान १८ खीरसुकंद अने १९ थेगकंद ए बे कंदविशेषछे. २० अल्लमुत्थाय के० नीलीमोथ तेमज २१ लोण वृक्षनी छाल २२ खिल्लुडो कंदविशेष. २३ अमृत वे ली तथा २४ मूला ए प्रसिद्ध छे तेमज २५ जूमिरूहा के० जूमि फोडा तथा २६ विरुहा प्रसिद्ध द्विदलधान जेने अंकुर आव्या होय ते तेमवली २७ ढक्क वत्थुलो के० ढाक ते वनस्पति शाकविशेष पहेलो उगे ते २८ सूकरवाल देश प्रसिद्ध. ते मज २९ पालंकोते शाकविशेष ३० कोमलंबिलिआ के० काची आंबली जेमां ठडीउं थयुं न होय ते ३१ आलु अने ३२ पिंमालु ए बे कंदविशेष प्रसिद्ध छे एटली व नस्पति संबंधी वस्तु अनंत काय कही छे ते आर्यदेशमां प्रसिद्ध छे. तेम बीजी पण अनंतकाय वस्तुनां लक्षणोनी युक्तिये करी सहित थकां सिद्धांत थकी जाण वा ॥ २३८ ॥ २३९ ॥ २४० ॥ २४१ ॥ २४२ ॥

वली केटलाएक अनंतकाय देखाडीने तेना लक्षण समयोक्त देखाडे छेः—मूलः— घोसाड करीरंकुर, तिंडुअ अइकोमलंबगाईणि; वरुण वड निंबगाइण, अंकू राई अणंताई ॥ २४३ ॥ अर्थः— घोषातकी अने करीर ए बे वनस्पतिना अंकुरो थाय छे. तेने अनंतकाय कहे छे अने तिंदुक ते वृक्षना अतिकोमल फल, जेमां गुटली बंधाणी न होय एवा आंबा प्रमुख तथा वरुण जातनो वृक्षविशेष, तथा वडनुं झाड, अने निंबादि जातना वृक्षना अंकुर ते सर्व अनंतकाय जाणवा.

मूलः— गूढ सिर संधि पव्वं, समजंग महीरगं च छिन्नरुहं; साहारणं सरीरं,

तव्विवरीयंच पत्तेयं. ॥ २४४ ॥ अर्थः— जेनी नेसो तथा सांध अने पर्व के० गां ठ ते गूढ के० गुप्त होय पण जाण्यामां न आवे जे समभंग के० भांग्या थकाथ रखा भांगे अहीरगके० जेने छेदता तांतुआ थाय नही अने छिन्नरुहं के० जे छे द्या थका पाछा वावीये तो उगी आवे ते साधारण शरीर, अने जे ए लक्षणोथी विपरीत होय ते प्रत्येक वनस्पति जाणवी. ॥ २४४ ॥

मूलः— चक्कं व भज्जमाण, स्स जस्स गंठी हवेज्ज चुन्न घणो; तं पुढविस रिस भेयं, अणंतजीवं वियाणाहि. ॥ २४५ ॥ अर्थः— जे भांगतां थकां कुंभारना चकला जेवा देखाय, जेनी गांठमां चूर्ण घणुं थाय, जेनो पृथवीनी पठे भेद थाय, ए सरवने अनंतकाय जाणवी. ॥ २४५ ॥

मूलः— गूढ सिरागंपत्तं, सक्षीरं जंच होइ निक्षीरं; जंपिअ पयावसंधिं, अणंत जीवं वियाणाहि. ॥२४६॥ अर्थः— जेनी नेसो देखाती न होय, एवा पांदडां जेमां क्षीर होय, अथवा जे क्षीररहित होय, जेनी सांधमां उष्णता घणी होय, अथवा सर्व प्रकारे जेनो सांधो दीठामां आवे नही, एवी वनस्पतिने अनंतकाय जाणवी.

हवे बावीश अभक्ष्य कहे छेः— मूलः— पंचुंबरि चउ विगई, हिम विस करगे य सव्वमट्टीय; रयणीभोयणगं चिय, बहुबीय अणंत संधाणा ॥ २४७ ॥ अर्थः— पांच उंबर एटले वड वृक्षना फल, पीपलाना फल, पीपरीनां फल, उंबर फल, अने कोटिंबडी ए पांच. तेमज चउके० चार मद्यादिक विगइ एटले मदिरा, माख ण, मध, अने मांस ए चार मली नव थया. दशमुं हिम, अग्यारमो वछनागादिक विषनी जाति, बारमुं करगा, तेरमुं सर्व जातनी माटी, चोदमुं रात्रिभोजन, पंद रमुं पंपोटक केवल बीजमय दाडिम खस खस प्रमुख बहुबीज, जाणवा. शोल मुं सगला अनंतकाय. सत्तरमुं संधाणा के० सर्व जातनु अथाणुं. ॥२४७॥

मूलः— घोलवडा वायंगण, अमुणिय नामाणि पुप्फ फलयाणि; तुच्छफलं चलियरसं, वज्जह वज्जाणि बावीसं. ॥ २४८ ॥ अर्थः— अढारमुं घोलवडा एट ले काचा घोलमां नाखेला वडा, ओगणीशमुं रींगणा, वीशमुं जेना नाम जाणता न होये एवां फूल तथा फल, एकवीसमुं तुच्छफल के० असारफल ते अतिकाचा फल महुडा जांबु मुगनी फरी इत्यादि. अने बावीशमुं शडेलुं अन्न जेनुंरस चला यमान थयुं होय एवो कुत्सितअन्न कालातिक्रांत सुखडी प्रमुख जाणवी. वज्जाणि के० वर्जवा योग्य बावीसं के० ए बावीस अभक्ष्य छे. तेने तुमे वज्जह के० वर्जो एटले त्याग करो. इतिश्री पच्चरकाण द्वार चतुर्थ समाप्त ॥ २४८ ॥

हवे पांचमो उत्सर्ग काउसग्गनो द्वार कहे छेः—

प्रथम शब्दार्थ करे छेः— स्थान, मौन, ध्यान, अने क्रियाना अव्यतिरेक पणे उसासादि बोल टालीने काय एटले शरीर, तेनो उत्सर्ग एटले जे त्याग, तेने कायोत्सर्ग कहे छे. तेना बे प्रकार छेः— तेमां एक गमनागमनादि चेष्टाए करी इरियावही प्रमुखने पडिकमवा समये. बीजो अभिनव एटले देवतादि कोइ उपसर्गादि पराभव करे तेवारे ते उपसर्गने जीतवाने अर्थे काउसग्ग करवो.

हवे प्रथम काउसग्गना उगणीस दोष कहे छेः— मूलः— घोडग लयाय खंभे कुड्डे मालेय सबरि बहु नियले; लंबुत्तर थण उद्धी, संजइ खलिणेय वायस कविठे. ॥२४५॥ सीसो कंपिअ मूइ, अंगुल भमुहाइ वारुणी पेहा; एए काउसग्गे, हवंति दोसा इगुणवीसं.॥२५०॥ ए पूर्वोक्त उगणीसदोषनो अर्थ गाथाए करी वखाणे छे.

मूलः— असोव्व विसम पायं, आउंटा वित्तु गइ उस्सग्गो; कंपइ काउस्सग्गे, लयव्वखर पवण संगेण. ॥२५१॥ अर्थः—घोडानी परे एक पग लगारेक वांकुं राखीने जे काउसग्ग करवुं तेने प्रथम घोडक नामनो दोष कहे छे. कठोर पवनना योगे जेम वेली हाल्या करे तेम काउस्सग्गमां कंपायमान थवुं तेने बीजोलता दोष कहेछे.

मूलः— खंभेवा कुड्डेवा, आवठंभीअ कुणइ उसगंतु; मालेअ उत्तमंगं, अववंभिअ कुणइ उस्सग्गं ॥२५२॥ अर्थः—थांभलाने अथवा कुड्डेके०भीतने आधारे उभा रहीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने त्रीजो स्तंभदोष कहे छे उपरनो माल अथवा चांदना प्रमुखने उत्तमंगं जे माथुं ते टेकीने काउस्सग्ग करवुं तेने चोथो माल दोष कहे छे.

मूलः— सबरी वसण विरहिया, करेइ सागारिअं जहठवेइ; ठविऊण गुज्झदेसं, करेहि इअ कुणइ उस्सग्गं. २५३ ॥ अर्थः—जेम भीलडी वस्त्र रहित छतां पोताना गुह्य अंग हाथे करीने ढांके छे तेमज बन्ने हाथो गुह्य देशविषे राखीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने पांचमो सबरी दोष कहे छे. ॥ २५३ ॥

मूलः— उवणामि उत्तमंगं, काउस्सग्गं जहा कुलवहुव्व; निअलिअउ विव चरणे, विछारिय अहव मेलविउं ॥ २५४ ॥ अर्थः— जेम सारा कुलनीवहु नीचु माथुं करीने रहे छे तेम मस्तक नमावीने जे काउस्सग्ग करवुं, तेने छठो वधू दोष कहे छे. जेम कोइ पुरुषना पगमां बेडी घाली होय तेना जोगे ते पोताना पग एकठा मेलवीने अथवा पसारीने रहे छे तेवीरीते जे काउस्सग्ग करवुं, तेने सातमो निगडित दोष कहे छे. ॥ २५४ ॥

मूलः— काऊण चोल पट्टं, अविहीए नाहिमंडलस्सुवरिं; हेठाय जाणुमि

त्तं, चिठ्ठइ लंबुत्तरुस्सग्गं. ॥ २५५ ॥ अर्थः— चोलवटो नाभी करतां उंचो बांध्या थी नीचे गूठणो सुधी जांग ढाकी रहे छे. एवी अमर्यादावडे जे काउस्सग्ग कर वुं तेने आठमो लंबोत्तर दोष कहे छे.॥ २५५ ॥

मूलः—पच्छाऊणय थणे, चोलगपट्टेण ठाइ उस्सग्गं; दंसाइ रक्कणठा, अहवा णाभोग दोसेण. ॥२५६॥ अर्थः—दंस मसकादिकना भयेकरी एटले काउसग्ग क रतां मछर के माख कोइ करडे नही माटे अथवा अनाभोगे करी पोताना स्तन चोलपटादिके ढाकीने जे काउस्सग्ग करवुं, तेने नवमो स्तनदोष कहे छे. ॥२५६॥

मूलः— मेलित्तु पण्हियाओ, चरणे विछारि ऊण बाहिरउ; काउस्सग्गं एसो, बाहिर उद्धी मुणेयव्वो. ॥ २५७ ॥ अंगुठे मेलविउं, विछारिय पण्हियाउ बाहिंतु; काउस्सग्गं एसो, भणिओ अप्भिंतरुद्धित्ति.॥ २५८ ॥ अर्थः— पगनी बन्ने पेनी मे लवीने तथा आगला बन्ने पगनां फण मोकला राखीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने बाह्य शकट दोष कहेछे, अने बन्ने पगना आगला फण साथे मेलवीने तथा पाछली पेनी मोकली राखीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने अभ्यंतर दशमो शकटोध्विकदोष कहेछे.

मूलः— कप्पंवा पट्टंवा, पाउणियं संजइव्व उस्सग्गं; ठायइ खलिणं च जहा, रयहरणं अग्गओ काउं. ॥ २५९ ॥ अर्थः— कपडो ते पछेडी अथवा चोलवटो पहेरीने महासतीनी परे जे काउस्सग्ग करवुं तेने अग्यारमो संयति दोष कहे छे. जेम घोडाना चोकडानी लगाम हाथमां झालीने स्वार स्थित रहे छे तेम र जोहरण अने ओघो आगल करीने जे काउस्सग्ग करवुं तेने बारमो खलिन दोष कहेछे. अथवा कोईक आ दोषनुं वर्णन आवी रीते करे छेः— जेम घणुं हां क्याथी चोकडाए करी पीडा पामेलो घोडो स्थिर न रहेतां वारंवार माथुं उंचुं नीचुं कर्यां करे, तेनी पठे जे काउस्सग्ग करवुं तेने खलिन दोष कहे छे. ॥२५९॥

मूलः— भामेइ तहा दिठिं, चल चित्तो वायसोव्व उस्सग्गे; छप्पइ आण भए णं, कुणइअ पट्टं कविठंव. ॥ २६० ॥ अर्थः— जेम कागडो पोतानी दृष्टि स्थिर न राखतां प्रत्येक क्षणमां दशे दिशा तरफ नजर फेरव्या करे छे तेम जे काउ स्सग्ग करतां दृष्टि स्थिर न राखतां गमे त्यां नजर फेरव्या करवी तेने तेरमोवायस दोष कहे छे. चोलवट जमीनने लागशे तो जूआदिक भराइ जशे तेना भयथी संकेलीने को ठना फलनी पठे काउस्सग्ग करवुं तेने कोठ नामे चौदमो दोष जाणवो. ॥२६०॥

मूलः—सीसं पकंपमाणो, जक्काइठोव कुणइ उस्सग्गं; मूअव्व हूहु अंतो, तहेव छि ज्ञंत माएसु. ॥२६१॥ अर्थः— जेम कोइने भूत वलग्युं होय अथवा कोइ यक्षनी

ठाया पडी होय तेथी ते माथुं हलावीने धूणे तेवी रीते मस्तक धूणावतो ठतां काउसग्ग करवुं तेने पंदरमुं शीर्षोत्कंपित दोष कहे ठे. बोबडानी पठे अव्यक्त हुं हुं शब्द करवुं, अथवा जेम कोइ वनस्पति प्रमुखने कापतां जेम हुंकार शब्द करे तेनी पठे काउसग्ग करवुं तेने सोळमुं मूक दोष कहे ठे. ॥ २६१ ॥

मूलः— अंगुलि नमुहाओविअ, चालंतो कुणइ तहय उस्सग्गं; आलावग गणणाए, संठवणडंच जोगाणं. ॥२६२॥ अर्थः—काउसग्गना आलावा गणवाशारु आंगुलीना चाळा करे योग जे व्यापारांतर तेने संस्थापन ते निरूपण करवा सारु नृकुटी चलावता अने चकार शब्दथी आंखना पांपणआगळ पाछळ फरावतां का उस्सग्ग करवुं, तेने सत्तरमो अंगुली नमुहा दोष कहेठे. ॥ २६२ ॥

मूलः— काउस्सग्गंमि विठे, सुरा जहा बुडबुडेइ अव्वत्तं; अणुपेहंतो तह वा नरोव चालेइ उठपुडं ॥ २६३ ॥ अर्थः— जेम मदिरा बुडबुडाट करे तेम नम स्कारादिकनी चिंतवना करतो ठतां अव्यक्त बुडबुड करवुं तेने अढारमो वारुणी दोष कहे ठे. अने तेवी रीतेज नमस्कारादि चिंतवतां वांदरानी पठे होठ पुट चला वतां रहेवुं तेने ठगणीशमो प्रेष्य दोष कहे ठे. एवी रीते ठगणीश दोष काउस्सग्ग ना कह्या ठे तेमां स्तंन अने कुड्य ए बे दोष कोई जुदा माने ठे तेमज अंगुली अने नमुहा ए बे जुदा दोष मानीए तो एक वीश दोष थाय. ॥ २६३ ॥

मूलः— ए ए काउस्सग्गं, कुणमाणेण विबुहेण दोसाउं; सम्मं परिहरियव्वा, जिण पडिसिद्धत्ति काऊणं. ॥ २६४ ॥ अर्थः— पूर्वोक्त कायोत्सर्ग करतां पंमितें सम्यक् प्रकारे आ कहेला दोषोनो त्याग करवो. एवी रीते श्री वीतरागे एनो निषेध कह्यो ठे. एवुं जाण्या ठतां पण “ अगिणीउ ढिंदिज्जव ” इत्यादि कारणे चालतां दोष नही. ॥२६४॥ एवी रीते दूषणमात्रने कहीने पांचमो काउस्सग्ग द्वार कह्यो. हवेगृहस्थने पमिकमवाना बारव्रतना एकशोनेचोवीश अतिचारोनो ठगो द्वार कहेठेः—

मूलः— पण संलेहण पन्नर,स कम्म नाणाइ अठ पत्तेअं; बारस तव विरि अ तिअं, पण सम्म वयाइं पत्तेयं. ॥२६५॥ अर्थः—संलेषणाना पांच अतिचार, क र्मादानना पंदर अतिचार, ज्ञानना आठ अतिचार, दर्शनना आठ अतिचार, चा रित्रना आठ अतिचार, तपना बार अतिचार, वीर्यना त्रण अतिचार, सम्यक्त्व ना पांच अतिचार अने प्रत्येक व्रतना पांच पांच अतिचार प्रमाणे बार व्रतना साठ अतिचार मळी सर्व एकशो ने चोवीश अतिचार थकी पमिकमवो. ॥२६५॥

एवी रीते द्वार गाथा कहीने एज द्वारनुं विस्तारथी वर्णन करतां जेवी रीते

सूत्रमां उद्देश कीधो छे तेज क्रम लईने प्रथम संलेषणाना पांच अतिचार कहेछे

मूलः– इह परलोगासंसा, पउग मरणंच जीवियासंसा; कामे भोगे य तहा, मरणंते पंच अइआरा. ॥ २६६ ॥ अर्थः– प्रथम इहलोकाशंसा, द्वितीय पर लोकाशंसा, तृतीय मरणाशंसा, चतुर्थ जीविताशंसा, अने पांचमी कामभोगा शंसा ए पांच अतिचार संलेषणानेविषे कह्याछे. एटले श्रीजिनशासननेविषे जे जे क्रियाउनो कलाप थाय छे ते सघलो आशंसा विना करवो जोये. जेमके, "आशं सया विनिर्मुक्तो, नुष्ठानं सर्वमाचरेत्; मोक्षे भवेच सर्वत्र, निस्पृहोमुनि सत्तमः॥१॥ एनो अर्थः–जे प्राणी आशंसाने मूकीने सर्व अनुष्ठानने आचरे छे अने जेने मो क्षनी अने संसारनी तेमज बधा पदार्थोनी इछा नथी तेने मुनिउमां श्रेष्ट कहिये.

पहेली इहलोकाशंसा एटले मनुष्यने अन्य मनुष्यना भवनी जे वांछा थवी ते इहलोकाशंसा अने तेनो प्रयोग ते आवी रीते जेम के, आ अणसणने प्रमाणे आवता भवनेविषे हुं राजा अथवा धनवान श्रेष्ट थाउं इत्यादि जे प्रार्थना करवी तेने इहलोकाशंसा प्रयोग कहिये ए प्रथम इह लोकाशंसातिचार कहिये.

एवी रीतेज मनुष्यना भवनेविषे उक्त युक्तियुक्त जे सुंदर देवांगना स्त्रीओ छे, तेओना नेत्र कमल वडे पान करेलुं जेमनुं देदीप्यमान लावण्य तद्रूप जे पुण्य तेज जेने अमृत छे एवा इंद्रादि देवता थवानी जे प्रार्थना करवी तेने बीजो पर लोकाशंसा नामे अतिचार कहेछे.

अणसण व्रत धारण कर्युं छतां कोई गामडीआ प्रांतने लीधे तेनी बीजा पुरु षो घणी पूजा अथवा प्रशंसा करे नही अथवा शरीरमां कोई गाढ रोगनी पीडा थी अंतःकरणमां खेदने पामीने हवे जलदी मृत्यु आवे तो सारुं थाय एवी जे प्रार्थना करवी तेने त्रीजो मरणाशंसा नामनो अतिचार कहेछे.

कर्पूर, कस्तुरी, चंदन, वस्त्र, गंध, पुष्प, इत्यादि पूजा सामग्रीना पदार्थो देखी तथा नाना प्रकारना धोल तथा रासा प्रमुख गीतो गवाता सांभलीने अथवा ए शेठ मोटा परिवारवालो छे तेथी माणशो घणा आवे छे, माटे ए धन्य छे, ए पु न्यवान छे तेथी श्लाघा करवा योग्य छे एवी पोतानी प्रशंसा सांभलीने पोताना मनमां जाणे के शासननी प्रभावना मारा उद्देशथी वृद्धिने पामे छे तेथी जो हुं घणुं जीवुं तो शारुं एवी जे प्रार्थना करवी तेने चोथो जीविताशंसा नामनो अतिचार कहेछे.

आवता जन्ममां मने काम भोगनी प्राप्ति थाय तो सारुं एवी अणसण ली

धा छतां जे प्रार्थना करवी तेने पांचमो कामजोगाशंसा नामनो अतिचार कहेछे. काम शब्दे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, अने गंध, जाणवा. ॥ २६६ ॥

एवी रीते अणसण व्रत धारण कर्या पछी मरणना समये जो उपर कहेला पांच अतिचार होय तो तेनुं प्रतिक्रमण करवुं. आलोवणा लेवी.

हवे कर्मादानना पंदर अतिचारनी व्याख्या करे छेः– मूलः– जाडी फोडी साडी, वण अंगारस्सरूव कम्माइं; वाणिज्जाणिय विस लख्क दंत रस केस विसयाणि ॥ २६७ ॥ दव दाण जंत वाहण, निल्लंछण असइ पोस सहियाणि; सज लासय सोसाणिय, कम्माइ हवंति पन्नरस. ॥ २६७ ॥ अर्थः– पोताना गाडा बलद तथा उंटेकरी बीजानुं जाडुं करे, अथवा बीजा कोईने जाडे आपे तेने प्रथम जाटक कर्मातिचार कहे छे. हडेकरी जूमि खणाववी, पाषाणो तोडवां, तलावो अथवा कुवा खणाववा, लूण प्रमुख जेटली पृथ्वीकायवस्तुउ छे ते खणी कढ्हाडवी, अथवा यव, घहू मूग अने सरसव प्रमुख धान्यनुं वेचवुं, अथवा सातु तथा आटा प्रमुख आजीविकाने अर्थे करे अथवा करावे, तेने बीजो स्फोटककर्मातिचार कहेछे. गाडां पइडा अथवा पावर प्रमुख करावीने वेचे वेचावे तेना अंग संग्रह आजीवीकाने निमित्ते जे करे तेने त्रीजो शकट कर्मातिचार कहे छे. फूल, फल, पत्र, पुष्प अने कंदादिक उत्पन्न करवां अथवा कराववां अथवा एवी जेटली वस्तुउ वनमां उत्पन्न थती होय तेउनो व्यापार करवो अथवा कराववो अथवा वन छेदाववुं तेने चोथो वनकर्म अतिचार कहे छे. अंगार एटले अग्निनी जठी प्रमुखमां पकावीने सिद्ध करेली हरेक व्यापारोपयोगी वस्तु जेवी के, कुंजार लोहार सोनार कंसार तथा चणा प्रमुखनो सेकवो इत्यादिक अग्निकायने समारंजे जे आजीविका करवी तेने पांचमो अंगार कर्मातिचार कहे छे. ए पांच प्रकारना कर्मातिचार कह्या हवे एना जेवा बीजा पांच प्रकारना कुवाणिज्यातिचार कहे छे. तेओमां प्रथम विषवाणिज्य एटले विष अफीण वछनाग, अने शोमल प्रमुख जे वस्तुनो थोडो जाग खाधाथी प्राणनी हाणी थाए, अथवा लोहना सर्व हथीआर जेवा के तरवार, कटारी, कमान, सरकसी, अने कुदाल प्रमुख जेथी अनेक जीवोनी हाणी थाय तेवा मालनो क्रय विक्रय करवो तेने छठो विषवाणिज्यातिचार कहे छे. लाख, धाडी, गुली, मणशील, हरीआल, अने तुरी प्रमुख जे वस्तुउमांथी रंग उत्पन्न थाय छे ते वस्तुनो क्रय विक्रय करवो तेने सातमो लाक्ष वाणिज्यातिचार कहे छे. दांत, नख, चर्म, शंख, कोडा शीप अने क

सूरी प्रमुख बीजा पण एवा जे पदार्थों होए तेनो जे क्रय विक्रय करवो तेने आठमो दंत वाणिज्यातिचार कहे छे. मधु, मद्य, माखण, मांस, दूध, घृत, तेल, प्रमुख जेटली रसरूप वस्तुउ छे तेना क्रय विक्रयने नवमो रसवाणिज्यातिचार कहे छे. मनुष्य, दास, दासी, घोमा, हाथी, उंठ, बोकमा, बलद अने गाय प्रमुख पोतानी आजीविकाने अर्थे लईने जे वेचवां तेने दशमो केशवाणिज्य कर्मातिचार कहे छे केटलाएक वनमां आग लगाडवामां पुण्य जाणिने ते कर्म करे छे अथवा जुना तृणादिक बाली नाखीये तो बीजा नवा थशे इत्यादिक अनिप्रायथी जे वनमां आग लगाडवी तेने अग्यारमो दवदान कर्मातिचार कहे छे. शेरमी, तल, सरसव, अने अलसी प्रमुख वस्तुउने यंत्रमां पीलवी, तेने बारमो यंत्र पीलन कर्मातिचार कहे छे. कान कापवां, नाक विंधवां, गाय अथवा बलद प्रमुखने मांज देवा, अने गल, कंबल, तथा पूछ प्रमुख अवयवोमांना कोई अवयवने कापी नाखवुं, तेने तेरमो निर्लंछन कर्मातिचार कहे छे. मार्जार,मोर, कूकड, कुतरा, सारही अने सूडा प्रमुख डुष्ट पक्षीउने अथवा डुराचार दास दासी प्रमुखनुं जे पोषण करवुं तेने चौदमो असती पोषणकर्मातिचार कहे छे. अने पाणीथी नरेलो सरोवर, इह, अथवा तलाव प्रमुख जलस्थानकोनुं शोषण करवुं के जेथी घणा जीवोनो क्षय थाय तेने पंदरमो जलाशय शोषणातिचार कहे छे. ए पंदर कर्मथी ज्ञानावरणी आदिकर्मोनुं आदान एटले ग्रहण थाय छे. माटे ए कर्मादान श्रावके जाणवा, पण समाचरवां नही. जो अनानोगादि थकी कांई समाचरवुं थयुं होय तो तेनुं प्रतिक्रमण करवुं.

हवे ज्ञानना आठ अतिचार कहे छेः— मूलः— काले विणए बहुमाण उवहाणे तहा य निन्ह्वणे; वंजण अछ तडुनए, अठ विहो नाण मायारो.॥ २६७ ॥ अर्थः— शुन कृत्यादि करवानो जे नियमित विधियुक्त काल कह्यो होय ते कालमां ते क्रिया कस्याथी फलदायक थाय छे अने समयोल्लंघन कस्याथी ते निष्फल थाय छे. जेम कह्युं छे के, “कालम्मि कीरमाणं, किसि कम्मं बहु फलं जहा नणिअं; इअ सव्वच्चिय किरिया, निय निय कालम्मि कायव्वा.” जे सूत्र नणवानो जे काल होय, ते कालनेविषे ते न नणवुं, अथवा अकाले नणवुं गणवुं ए पहेला अकालाध्ययनातिचार. ज्ञाननो, ज्ञानीनो अथवा ज्ञानना साधन पुस्तकादिकनो विनयोपचार करवो. तेमां ज्ञानीनीपासे आसन, दान अथवा आज्ञा पालनादि विनयथी नणवुं तेम न करतां विनयने अनावे नणवुं तेने बीजो अविनयातिचार कहेछे. बहुमान ते गुरुऊपर प्रीति एटले अंतरंग चित्तनो प्रमोद राखीने नणवुं एवो विधिछतां

तेने मूकीने जे जणवुं तेने त्रीजो अबहुमानातिचार कहे छे. सिद्धांतमां कहेला तप विना सूत्र जणवां अथवां जणाववां ते चोथो उपधानहीनातिचार. जे गुरुनी पासे विद्याभ्यास कीधो होय तेनुं नाम छुपावीने बीजा मोटा आचार्यादिकनुं नाम लेवुं तेने पांचमो अतिचार कहे छे. व्यंजन, स्वर, अथवा मात्रादिकनो जे न्यूनाधिक उच्चार करवो तेने छठो अतिचार कहे छे. तेमज अर्थ न्यूनाधिक केहेतां सातमो अतिचार जाणवो अने व्यंजनादिक अने अर्थ ए उजयनो न्यूनाधिक कहेवुं ते आठमो अतिचार जाणवो. एवी रीते ज्ञानना आठ प्रकारना अतिचार छे. ॥ २६७ ॥

हवे दर्शनना आठ अतिचार कहे छे. मूलः— निस्संकिय निक्कंखिअ, निव्वितिगिछा अमूढदिठीय; उववूह थिरी करणे वछल्ल पजावणे अठ. ॥ २६ए ॥ अर्थः सम्यक्त्वने धारण करनार जे श्रावक, तेणे कोई प्रकारे श्री तीर्थंकरे कहेलां वचनोमां शंका करवी नही, एटले तीर्थंकरे आ वाक्य आम केम कह्युं छे एवी जे आशंकानो अजाव ते दर्शननो प्रथम निस्संकिय गुण. जिन धर्म थकी जिन्न जे बीजा घणा दर्शनो छे तेउनी आकांक्षा एटले जे वांछा करवानो अजाव ते दर्शननो बीजो निकांक्षा गुण. आ क्रिया कलापादि करवाथी फल थशे के नही? एवी विचिकित्सा करवी; अथवा मल मलिन गात्र, संयम पात्र महा मुनींद्रने देखीने मनमां जुगुप्सा करवी एने विद्वज्जुगुप्सा कहे छे. तेनो जे अजाव ते दर्शननो त्रीजो निर्विचिकित्सागुण जाणवो. बीजा दर्शननेविषे विद्या अथवा तपनी अधिकता देखी, ते ऋद्धिना अवलोकनथी मोहने पामीने जे चित्तनुं विचलपणुं करवुं तेनो जे अजाव तेने दर्शननो चोथो अमूढदृष्टिगुण जाणवो. समान धर्मीनी गुणस्तवना वेयावच्चादिक करे तेनुं अनुमोदन न करतां तटस्थ रहेवुं तेनो जे अजाव ते दर्शननो पांचमो उववूह एटले उपबृंहणा गुण. कोई साधर्मी धर्मनेविषे शीदाईने चल विचल चित्तवालो थयो होय तेने धर्मनेविषे स्थिर न करतां उदासीन रहेवुं तेनो जे अजाव तेने दर्शननो छठो स्थिरी करण गुण जाणवो. साधर्मीने कोई पण जातनी धर्म संबंधी अथवा व्यवहार संबंधी आपत्ति प्राप्त थई होय ते निवारण करवानी शक्ति छतां तटस्थ रहेवुं तेनो जे अजाव तेने दर्शननो सातमो वात्सल्यता गुण जाणवो. श्री जिनशासन प्रवचन श्री जगवंत जाषित ते सुरासुरना नमवाथी स्वतः देदीप्यमान छे तथापि पोताना सम्यक्त्वनी शुद्धिनी इछा करनार प्राणी जेथी धर्मनी अधिक प्रशंसा थाय एवा प्रतिवादीजय डुक्कर तपश्चरणादिके करी जिन प्रवचननो प्रकाश करवो तेने दर्शननो आठमो प्रजा

वना गुण कहे छे. ए आठ बोलने अण करवे दर्शनना आठ अतिचार थाय छे.

हवे चारित्रना आठ अतिचार देखाडे छेः— मूलः— पणिहाण जोग जुत्तो, पंचहि समिईहि तिहि य गुत्तीहिं; चरणायारो विवरीय, याइ तिएहंपि अइयारा. ॥ २७० ॥ अर्थः— प्रणिधान एटले चित्तनुं स्वस्थपणुं, तेणे करी प्रधान जे योग मन प्रमुखना व्यापारे करी युक्त जे साधु पांच समिति अने त्रण गुप्तीए करी गुप्त तेने चरणायारो एटले चारित्राचार कहेवो. अने ए पांच समिति तथा त्रण गुप्ति ए आठथी मनादिक त्रणे योगने जे विपरीत पणे वर्त्ताववुं तेथी चारित्राचारना आठ अतिचार थाय छे. ॥ २७० ॥

हवे बार भेदेकरीने तप वखाणे छेः— मूल.— अणसण मूणोयरिया, वित्तीसंखेवणं रसच्चाओ; काय किलेसो संलीणयाय बज्झो तवो होई. ॥ २७१ ॥ अर्थः— प्रथम अनशन एटले भोजननो त्याग करवो. ए तप बे प्रकारनो छेः— एक इत्वर बीजो यावत्कथिक. तेमां इत्वर अनशन आवीरीतेः— श्री महावीरना शासननेविषे नोकारसीआदि लईने छमासी तपनी सीमा पर्यंत सर्व तप अने श्री आदिनाथना शासननेविषे नोकारशी आदि लईने वर्ष तपनी शीमा पर्यंत सर्व तप, तथा वचला बावीश तीर्थंकरना शासननेविषे नोकारशीआदि लईने आठ मासनी शीमा पर्यंत सर्व तपने इत्वर अनशन तप कहे छे. बीजो यावत्कथिक अनशन तप एटले जहांसुधी शरीर रहे तहां सुधी आहारनो त्याग करवो अर्थात् अशन एटले भोजन करवुं नही. ते अनशन कहियें. ए बे प्रकारे प्रथम अनशन तप कह्यो छे, एना पादोपगमनादिक अनेक भेद छे ते आगल वखाणशे. ॥ २७१ ॥

बीजो ऊणोदरता तप एटले ओछो उदर ज्यां राखवो ते ऊणोदरता कहिये ए व्युत्पतिमात्र जाणवी पण एनी प्रवृत्ति तो मात्रा आश्रयीने गुणपणो. ते बे प्रकारे छे. एक द्रव्यथी, बीजो भावथी; तेमां द्रव्यनेविषे बे प्रकार जाणवाः— एक उपकरण विषयी, बीजो भक्तपान विषयी. तेमां उपकरण विषयी, जिन कल्पी अथवा जिनकल्पीनी तुलना करनार होय तेनेविषे संभवे, अने स्थविर कल्पीने उपधिना अभावने लीधे यद्यपि संयम पले नही तथापि स्थविर कल्पीने पण अधिक उपकरणनो अग्रहण करवाथी थाय छे. यदुक्तं "जं वट्टइ उवगारे, उवगरणं तंच होइ उवगरणं; अइरित्तं अइ गरणं, जओय अजयं परिहरंतो." जओय के० जे कारण माटे अजयणाथी भोगवतां भक्त पाननेविषे अधिकरण थाय ते ज्यां भक्त पान ओछुं लीजे त्यां थाय. अने बीजो भावथी तो जे रागादिक अंतर विकारनो

त्याग करवो ते. हवे त्रीजो वृत्तिसंक्षेप तप ते जे द्रव्यनो संक्षेप करवो. चोथो रस त्याग तप ते जे, विगईनो त्याग करवो. पांचमो काय क्लेश तप ते जे लोचप्रमुखनुं करवुं. छगो संलीनता तप चार प्रकारनो छेः– इंद्रिय संलीनता तप, कषाय संलीनता तप, योग संलीनता तप, अने विवक्तशयना संलीनता तप. प्रथम श्रोतादि पांच इंद्रियनी सन्मुख शब्दादिक विषय आवीने प्राप्त थयाथी ते मनोज्ञ एटले सुंदर होय तो तेमां राग न करवो. अने जो अमनोज्ञ एटले असुंदर होय तो तेनो द्वेष न करवो; तेने इंद्रिय संलीनता तप कहेछे. बीजो जे कषाय उदय आव्या नथी, तेउनुं रुंधन करवुं एटले रोकी राखवा; अने जे कषायो उदयताने पाम्या छे तेउने विफल करवा तेने कषाय संलीनता तप कहेछे. त्रीजो मन, वचन अने कायना अशुन योगनुं रुंधन करवुं. अने शुन मनोयोगादिकनी प्रवृत्ति करवी तेने योग संलीनता तप कहे छे. चोथो स्त्री, पशु अने नपुंसकादिक रहित जे एषणीय पीठफलकादिक एटले चबुतरा प्रमुखनुं ग्रहण करीने रहेवुं तेने विविक्त शयनासन संलीनता कहे छे; ए छ प्रकारनो बाह्यतप कह्यो छे तेनुं कारण ए जे एमां बाह्य द्रव्यादिकनी अपेक्षा छे. अथवा बाह्य शरीरादिकनी अपेक्षा छे; अने प्राये तापकपणाने लीधे लोकनेविषे तपपणे प्रसिद्धी होवाथी तेमज कुतीर्थीउ पण पोतपोताना अनिप्रायवडे ए तपनुं सेवन करे छे तेथी एने बाह्य तप कहेछे.

हवे छ प्रकारनो अभ्यंतर तप कहेछेः– मूलः– पायच्छित्तं विणउ, वेयावच्चं तहेव सज्झाउ; झाणं उस्सग्गोविय, अप्निंतरो तवो होइ. ॥ २७२ ॥ अर्थः–प्रथम प्रायश्चित तप कह्यो छे तेनो अर्थ आवी रीते छेः– प्रायश्चित्त ए एक शब्द छे तेमां प्रायः अने चित्त ए बे पदो छे. तेउमांना चित्त पद वमे जीव जाणवो. तेने अर्थे प्रायः कहेतां बाहुल्यताए मूलोत्तर गुणविषे शोधन करवुं. अर्थात् अतिचारोना योगथी नाना प्रकारना कर्ममलनुं जे उपार्जन करेलुं छे तेनो त्याग करीने निर्मलता करवी. तेने प्रायश्चित तप कहेछे. ए विषे "आलोयण पडिकमणे" इत्यादिके करी अगाणुमां द्वारनेविषे सविस्तर कहेशे. ॥ २७२ ॥

बीजो विनय तप आवी रीतेः– विनीयते एटले जेणे करी आठ प्रकारना कर्मनुं क्षपन करवुं अर्थात् त्याग करवो. ते विनय ज्ञानादिक भेदे करीने सात प्रकारनो छे. "नाणे दंसण चरणे" इत्यादिनो विनय करवो तेमां ज्ञानविषयक विनय पांच प्रकारे जाणवोः–मतिज्ञानादिक जे पांचज्ञान छे, तेउनुं सद्दहण, तेउनी नक्ति

तेउनुं बहुमानता, तेउनेविषे कथित अर्थनी सम्यक् नावनानुं विधिपूर्वक ग्रहण करवुं, अने तेउनो अन्यास करवो. एवी रीते ए जिनकथित विनय जाणवो.

दर्शननो विनय बे प्रकारे जाणवो. एक शुश्रूषणाविनय, अने बीजो अनाशातना विनय. तेमां जे पोताथी दर्शन गुणे अधिक होय तेनो विनय करवो तेने सुश्रूषणा विनय कहे ठे. ते आवी रीतेः–सक्कारपुठाणा, सम्माणासण अनिग्गहो तहय; आसणा णुप्पयाणं, किइकम्मं अंजलिगहोय. १ इत्तस्स णुगठणया, वियस्स तह पङ्गुवासणा नणिया, गठंताणुवयणं, एसो सुस्सूसणाविणउ" "सक्कार" एटले स्तवन वंदनादिक. "अन्युठान" एटले विनय योग्यनुं दर्शन थतां जे आसन मूकीने उंची उना थवुं. "सन्मान" एटले वस्त्र पात्रादिके करी पूजन करवुं. "आसनानिग्रह" एटले गुरुने बेशवा शारु आदरे करी आसन मांकीने आंही वेशो एम कहेवुं. "आसनानुप्रदान" एटले ए एक स्थानकथी स्थानांतरनेविषे आसननुं फेरववुं. "कृतकर्म" एटले वांदणुं करवुं. "अंजलिग्रहण" एटले दर्शननेविषे अंजलीनुं करवुं. "इत्तस्सणुं गठणया" एटले आवता जोईने सन्मुख निरखवुं. "विअस्स तह पङ्गुवासणा नणिया" एटले बेगा पठी पर्युपासना करवी. "गठंताणुव्वयण" एटले जतां पोते पण पाठल मूकवाने केटलेएक दूर जवुं एवी रीते दर्शनाधिकने शुश्रूषणा विनय करवो.

बीजो अनासातना विनय पंदर नेदे ठे ते आवी रीतेः– तिठयर धम्म आयरिय वायगे थेर कुलगणे संघे; संन्नोइय किरियाए, मईनाणाईणय तहेव." तेनो अर्थः–तीर्थंकर, धर्म, आचार्य, वाचक, थिविर, कुल, गण, संघ, सांजोगिक, क्रिया, अने मतिज्ञानादिक पांच ज्ञानना पांच मलीने पंदर नेदे अनासातना विनय ठे.

त्रीजो वेयावच्च तप आवी रीतेः– आचार्य, उपाध्याय, स्थविर, तपस्वी, ग्लान, शिष्य, साधर्मिक, कुल, गण, अने संघ ए दशमांना प्रत्येकनो तेर तेर प्रकारे व्यावृत्त करवो एटले नक्तदान, पानदान, आसनदान, उपगरणनुं पमिलेहवुं, चरणनुं पूजवुं, वस्त्रदान, पात्रदान, नोजनप्रदान, मार्गनेविषे सहाय्यनुं करवुं, दुष्ट चोरादिक थकी रक्षा करवी, उपाश्रयनेविषे प्रवेश करतां दांमानुं लेवुं, कायिकनी मात्रानुं देवुं, अने संज्ञानी मात्रानुं देवुं. चोथो सज्झाय (स्वाध्याय) तप पांच नेदे ठे सज्झाय वाचना, प्रठना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा अने धर्मकथा.

पांचमो ध्यान तप ते एक धर्मध्यान अने बीजुं शुक्लध्यान; ए बे प्रकार

नां ध्यान करवा. अने छगो उत्सर्ग तप एटले काउसग्ग करवो. एवी रीते ७ प्रकारे अभ्यंतर तप कह्यो छे. सर्व मलीने बार प्रकारनुं तप कह्युं. ॥ २७२ ॥

तेमज तपना बार प्रकारना अतिचार छे. अने त्रण वीर्यना अतिचार छे ते कहे छेः– मूलः– सम्मगकरणे बारस, तवाइयारा तिगंतु विरियस्स; मण वय काया पाव, प्पउत्त विरिअ ति अइआरा. ॥२७३॥ अर्थः–ए बार प्रकारना जे तप कह्या, ते सम्यक् मन वचन अने कायानी शुद्धिविना करवा तेने अकरण कहिये ते सम्यक्रीते न कराय अथवा विपरीत पणाने करवेकरी अथवा तेओमां कांई अधिको ओछोकरता अथवा अयथावस्थित अनुष्ठान प्रमुखना करवाथी बार प्रकारना तपना अतिचार थाय छे. एमज मन, वचन तथा काया ए त्रणेनी शुद्धि कर्या विना जे करवुं तेथी त्रण अतिचार वीर्यना थाय छे. ॥ २७३ ॥

हवे सम्यक्त्वना पांच अतिचार कहेछेः– मूलः– संका कंखाय तहा, वितिगिछा अन्नतिछियपसंसा; परतिछियउवसेवण, मइयारा पंच संमत्ते ॥ २७४ ॥ अर्थः– शंका एटले जीवादिक नव तत्वनेविषे संशय करवो. कंखा एटले अन्य दर्शननेविषे पण श्री वीतरागना दर्शननी तुल्यता करवी. वितिगिछा एटले मतिनी भ्रमता थकी क्रियाना फलनेविषे जे संदेह थवो ते. अन्य तीर्थी जे अन्य दर्शनीनी प्रशंसा करवी एटले आ महा तपस्वी भला क्रियानुष्ठान करे छे इत्यादिरूप. अने परतीर्थीनुं उपसेवन एटले तेनी सेवा करवी. तेथकी तेनी क्रिया सांभल्यामां तथा दीठामां आवे. तेथी सम्यक्त्वने मलिनता थाय तेथी अतिचार लागे. एवी रीते सम्यक्त्वना पांच अतिचार कह्यां छे. ॥ २७४ ॥

हवे बार व्रत संबंधी अतिचार कहतां छतां प्रथम प्राणातिपात विरमणव्रतना पांच अतिचार कहे छेः– मूलः–पढमवए अइआरा, नर तिरियाणन्न पाण वोछेओ; बंधो वहोय अइभा ररोवणं तह छविछेओ. ॥ २७५ ॥ अर्थः– नर एटले मनुष्य, अने तिर्यंचादिकने अन्न पाणीनो व्यवछेद करवो एटले तेमां विघ्न करवो; ए प्रथमातिचार. इहां आ विधि जाणवो के, रोगादिक कारणे अथवा पोताना पुत्रादिकने शीखामण देवासारु आज आने जमवानुं देसो नही. तोपण जमती वेलाए पहेला तेमनो सार करीने पछी पोते जमे परंतु संभाल न लेतां पोते भोजन कर्याथी अतिचार लागे ए प्रथम अन्न पाण व्यवछेदातिचार जाणवो. ॥

श्रावके श्वापदादिकने बंधन वडे एवी रीते बांधवुं जोये के आग पाणी आदिकना उपद्रवनी वेलाए तत्काल ते बंधनथी मुक्त थई शके. तेमज पुत्रादिकने

सीखामण देवासारु सबल बंधनथी बांधवुं नही एवी विधि छतां पशुआदि अथ वा पुत्रादिकने सबल बंधन वडे बांध्याथी बीजो बंध अतिचार लागे.

पश्वादिकने अथवा पुत्रादिकने कोई अपेक्षाने लीधे अर्थात् कोई कारणने लीधे योग्य रीते ताडन करवुं एवी विधि छतां कोई पण अपेक्षा अथवा कारण विना मारतां त्रीजो वध अतिचार लागे.

पश्वादिकनी पीठ पर एटलो भार नाखवो जोये के जेथी ते पोतानी मेले उठी शके, अने ते भार सुखथी उतारी अथवा चडावी शकाय एम छतां जो वधारे भार आरोपिए तो चोथो अतिभार आरोपण अतिचार लागे.

पश्वादिकनुं गल कंबल कापवुं नही, नाक वींधवुं नही, वृषणनुं छेदन करवुं नही इत्यादिक दुःखदायक क्रिया करतां छतां पांचमो छविच्छेद अतिचार लागे.॥ २७५॥

हवे थूल मृषावाद विरमण नामना बीजा व्रतना पांच अतिचार कहे छेः—

मूलः— सहसा कलंकणं रह सदूसणं दारमंतभेयंच ; तह कूम लेह करणं, मुसो वएसो मुसादोसो. ॥ २७६ ॥ अर्थः— सहसा पणेकरी कोई पण निरपराधी मा णशने चोर, यार, अथवा जुगारी प्रमुखनो जे आल चडाववो ते प्रथम सहसा त्कारातिचार जाणवो. कोईक बे माणसो एकांते कांई वातो करतां होय ते जोई ने ए राजविरुद्ध वातो करे छे एवुं जे कहेवुं तेने बीजो रहस्य भाषण दूषणाति चार जाणवो. पोतानी स्त्री आदिक स्वकुटुंबी माणसना हाथथी अथवा मित्रादि कना हाथथी भूले चूके कोई एवुं काम बनी गयुं होय के ते छानुंज राखवुं जोये. प्रसिद्ध करायज नही एवुं होय. अने ते काम थई गया पछी ते कामना करना राए तेनो पश्चात्ताप करीने ते दोषनो त्याग कीधो होय तेमछतां केटलाएक दिवस वीत्या पछी ते वात गई गुजरी थई गई होय तेवा अवसरे ते वात प्रकट कर्याथी ते लोक लाजना बंधनथी कोई विषादिक प्रयोगथी पोताना प्राणनी हाणी करे तेनुं कारण ते वात प्रकट करनार होवाथी तेने ते दोष लागे तेने त्रीजो दारमंत्र भेदातिचार कहे छे. कूडो लेख बनाववो कूडुं नामुं लखवुं. कमवेश अक्षरो लखवा, प्रथम लखेला अक्षरो छरी प्रमुखना प्रयोगथी कहाडी नाखवा, परवाना उपर कूडी महोर करवी, अने कूडा खतो बनाववा इत्यादिक प्रकार वडे जे कांई कूडुं बनाववुं तेने चोथो कूटलेखनातिचार कहेछे. पोते उपदेष्टा बनीने नाना प्रकारनो पापोपदेश करवो एटले कोई वनमांनी जडी बूटी बतावीने कहेवुं के अमुक बूटीनुं मूल क हाडी अमुक बूटीना रसमां भेलीने तेनी साथे आटली चीजोनो गूटो करी जो

पुरुष खाय, तो तेना शरीरनेविषे अतिशय जोग करवानी शक्ति थाय. आ मंत्र नो जप कस्याथी अमुक देवता प्रसन्न थाय ठे अने जेवी इच्छा होय ते मले ठे. हुं कामशास्त्रमां महानिपुण हुं एम कहीने चोराशी जोगनां आसननी विधि शीखडाववी, ने कहेवुं के आ शीख्याथी विविध प्रकारे रति विलास सारी रीते घणो वखत करी शकशो. वीर्यनी वृद्धि थशे. कामनो विशेष उद्भव थशे. अथवा औषध्यादिकनां शास्त्रो शीखडाववां. कोईने दुःखमां नाखी देवाना उपाय बताववा पोताना स्नेहीना प्रतिपक्षिने कुबुद्धि देवी, अने विषय कषायदिकनी उत्पत्ति थाय एवी नवी नवो वातो बनावीने करवी तेने पांचमो मृषोपदेशकथनातिचार कहे ठे.

हवे त्रीजा थूल अदत्ता दान विरमण व्रतना पांच अतिचार कहेठेः– मूलः– चोराणीअं चोर,प्पयोगजं कूडमाण तुलमाणं; रिउरज्जववहारो, सरिसजुइ तइअ वयदोसा. ॥ २७७ ॥ अर्थः– प्रथम चोरे चोरी करीने आणेली वस्तु सस्ती जाणीने जे वेचाती लेवी तेने स्तेनाहृतातिचार जाणवो. बीजो चोरने चोरी करवानी प्रेरणा करवी, अथवा धैर्य देवुं. अने तेने शंबल प्रमुख दईने तेवो प्रयोग कराववो तेने स्तेनप्रयोगातिचार कहे ठे. त्रीजो तोल तथा माप कूडां राखवा, एटले लेवाना जुदा अने देवाना जुदां राखवां अर्थात् लेवानां मोटा, अने देवाना नाना राखवा तेने कूटमानातिचार कहे ठे. चोथो पोताना राजाना वैरीना राज्यनेविषे द्रव्यना लोजथी कोई वस्तु पोताना गाममांथी लई जईने त्यां वेचवी, अथवा तेना गाममांथी कोई सस्ती वस्तु लईने पोताना गाममां आवीने मोटे जावे वेचवी. तेथी राजाज्ञानुं उल्लंघन थाय ठे. तेने राजविरुद्धगमनातिचार जाणवो. पांचमो सरिसजुइ एटले लोजने लीधे कोई सारी वस्तुमां तेना जेवी बीजी हलकी वस्तु जेलीने वेचवी एटले मूल उत्तम शुद्ध द्रव्य होय तेमां बीजी सादृश्य गुणवाली वस्तु जेलीने तेनो व्यापार करवो जेम के, कर्पूरमां लूण, घृतमां ठासनुं मंथन, अने केशरमां कसुंबो प्रमुख जेली देवो तेने तत्प्रतिरूपातिचार कहेठे.

हवे चोथा ब्रह्मचर्य व्रतना पांच अतिचार कहे ठेः– मूलः– जुंजइ इतरपरिग्गह, अपरिग्गहिअं थिअंच उब्बवए; कामेतिव्वहिलासो, अणंगकीडा परविवाहो. ॥ २७८ अर्थः– प्रथम कोईएक पुरुषे द्रव्य दईने वेश्याप्रमुख सामान्य स्त्रीने माश अथवा वर्षपर्यंत पोतानी सत्तातले स्वकीया करी राखेली ठतां तेनी साथे जे संजोग करवो तेने इतरपरिगृहीतागमनातिचार कहेवो. बीजो विधवा अथवा कुमारिका प्रमुख जे पति विनानी स्त्री होय, जेनी उपर स्वपत्नी जाव बीजा कोई

पुरुषनो होय नही, अने कोई पुरुषनी पतिरूप सत्तातले होय नही एवी स्त्रीने कोई पुरुषे ग्रहण करेली नही होवाथी तेनी साथे संजोग करवो तेने अपरिगृही तागमनातिचार कहेवो. त्रीजो कामनी तीव्र अनिलाषा करवी, एटले परस्त्रीनुं दर्शन थतां ज कामाग्निनी ज्वाला ऊठे. हृदयमां निरंतर स्त्रीनुं चिंतन कर्यां कर वुं, दीवानानी पठे बुद्धि काम वश थयाथी अस्थिर रहेवुं, अने शरीरमां कामनी वृद्धि करवाने अर्थे कोई औषधीप्रमुख अथवा माद्य पदार्थ खावो. वीर्यस्तंभ न करवाने अर्थे कोई मात्रा अथवा पाकप्रमुखनुं सेवन करवुं तेने त्रीजो तीव्रानुरागाति चार कहेवो. चोथो कामोद्दीपन करवाने अर्थे कामशास्त्रमां कह्या प्रमाणे नाना प्रकारना हाव जाव युक्त अनेक तरेहथी विविध विधिए कामक्रीडा करवी जेम के, भृकुटीरूप धनुष्यमां नेत्र कटाक्षरूप बाण चढावीने स्त्रीए पुरुषने अथवा पुरुषे स्त्रीने मारवा तेमज आलिंगन, चुंबन, अने हास्य प्रमुख करवां तेने अनंगक्रीडाति चार कहेवो. पांचमो लोकोमां पोतानी प्रतिष्ठा अथवा कीर्ति वधारवाने अर्थे कोई पुरुषनो कोई स्त्रीनी साथे पोते आगेवान थईने विवाह करी देवो, तेने परविवाह करणातिचार कहे छे. एम जो स्त्रीए ब्रह्मचर्यव्रत धारण कर्युं होय तो तेणे उक्त रीतिए पुरुष विषे प्रवर्त्तन कर्याथी ए अतिचार लागे एम सर्व स्थले जाणी लेवुं. २७८

हवे पांचमा थूल परिग्रह परिणाम व्रतना बे गाथावडे पांच अतिचार कहेछेः—

मूलः— जोएइ खित्त वत्थू,णि रुप्प कणगाइ देइ सययाणं; धण धन्नाइ परघरे, बंधइ जातिय पमक्कंतो. ॥ २७९ ॥ डुपयाइ चउप्पयाइ, गप्भं गाहेइ कुप्पसंखंच; अप्पधणं बहुमुल्लं, करेइ पंचम वए दोसा. ॥ २८० ॥ अर्थः— प्रथम पोतानुं एक क्षेत्र अथवा एक घर होय तेना पडोशना बीजा क्षेत्र तथा बीजा घरनी शीम भांगीने ते पहेलानी साथे जोडी लेवुं. अर्थात् नियम ग्रहण करती वेलाए पांच अथवा सात प्रमुख संख्या धारण करेली होवाथी तेनी अपेक्षावडे जे पोताना क्षेत्रने लागतुं क्षेत्र होय ते जोडी लेवुं, तेमज पोतानुं प्रथमनुं नांनळुं घर होय तेनी जोडेनुं कोई बीजानुं घर वेचातुं लईने तेनी साथे जोडी लेवुं, पोताना स्थाननुं वधारवुं ने मनमां जाणवुं के मारी नियमित संख्यामां कांई पण दोष आवशे नही ते प्रथम क्षेत्र परिणामातिचार कहेवो. बीजो रुपुं अथवा सोनुं आटलुंज राखवुं एवुं संख्या परिणाम कीधुं छतां तेनी वृद्धि थई जवाथी मनमां विचार करे के आटलुं पुत्र शारु राखवुं, आटलुं स्त्रीने अर्पण करवुं, आटलुं अमुक कुटुंबने आपवुं, एटले मारे तो परिमाण संख्या जेटलुंज रहेशे, तेमां मने कांई दोष

लागनार नथी. मारा पोताना नामनुं होय तो मने दोष लागे. एवी रीते लोभने लीधे खोटा विचारे करी कुरीत करवी तेने बीजो रौप्यसुवर्णपरिमाणातिक्रमातिचार कहेवो. त्रीजो एक वर्ष प्रमुख सुधी आटलुं धान्य अथवा आटलुंज द्रव्य पासे राखवुं, एथी वधारे राखवुं नही एवो संख्या परिमाण नियम लीधा पछी धान्य अथवा द्रव्यनो वधारो थई जवाथी ते वधेलुं सर्व बीजानी पाशे राखीने अथवा कोई बीजानी पाशे होय तो तेनी पाशेज रहेवा दईने पोते मनमां जाणे के, में तो पोतानी पाशे राखवानो नियम कर्यो छे, पण बीजानी पाशे रहेवा देवो नही एवो नियम कर्यो नथी; तेथी एम कर्याथी कांइ दोष लागनार नथी. एम कुविकल्प करीने जेनी पाशे द्रव्य होय तेने कहे के आटला दाहाडा अथवा आटला माश के वर्ष पछी तमारी पाशेथी हुं हिशाब चुकवी लईश. तेमज धान्य पण जो क्षेत्रमां होय तो नियमित समय सुधी त्यांज रहेवा दईने अथवा बीजा खेडुतना घरमां रहेवा दईने नियम पूरो थया पछी लेवानी इछा राखवी अने पोताने निर्दोषी समजवो तेने धन धान्य परिणामातिक्रमातिचार कहेवो. चोथो द्विपद एटले दास अने दासी प्रमुख, तेमज चतुष्पद एटले गाई, भेंस, उंट, तथा घोडा प्रमुख, पशुउं आटलांज राखवां एथी अधिक राखवां नही एवो संख्यारूप नियम कर्या पछी ते दास दासीओ अथवा पशुओ प्रमुख गर्भ धारण कर्याथी तेउंनी संततिनी वृद्धि थवाथी ते नियमित दास दासी अथवा पशुउंथी उत्पन्न थया छे तेथी तेओ पोताना मावित्रोथी जुदा कहेवाय नही. अथवा वधेली संतति कोई संबंधीने आपी देवी अने तेनुं गुप्त रीते स्वामित्व पोतेज राखवुं. तेने द्विपदचतुष्पद प्रमाणातिक्रमातिचार कहेवो. पांचमो त्रांबुं, पीतल, अथवा कांशा प्रमुख धातुउंना आटला वाशणोज घरमां राखवां एवो संख्या परिमाण नियम छतां ते वासणोनी संख्या नियम प्रमाणे रहेवा देतां तेउंनी तोलमां वधारो करवो. अने मनमां एम जाणवुं के मारेतो मात्र वासणोनी संख्यानो नियम छे पण तोलनो तो नियम नथी तेथी तोल अधिक कर्याथी कांई दोष लागे नही. तेमज जो काचा तोलनी संख्यायुक्त नियम लिधो होय तो ज्यां मोटो तोल चालतो होय एवा कोई देशांतरमां त्यांना तोलना परिमाणे वासणो कराववा, अने मनमां एम जाणवुं के में काचा तोलनो नियम लीधो छे खरो पण काचो अने पाको तो अांहिजछे बीजा देशमां काचो अने पाको नही होवाथी त्यांना गमे तेवा तोलवडे वाशणोनुं वजन थयुं होय

तेथी व्रतभंग थाय नही एवी कुटिलता करवी तेने कुपद परिमाणातिक्रमातिचार कहेवो. ए पांच अणुव्रतना अतिचारो कह्या. ॥ २७ए ॥ २७० ॥

हवे त्रण गुण व्रतना अतिचार कहे छे. तेमां प्रथम छठा दिसि परिणाम व्रतना पांच अतिचार कहेछेः— मूलः— तिरियंअ होय उड्ढं, दिसि वय संखा अइक्कमे तिन्नि; दिसि वइ दोसा तह से, विम्हरणं खेत्तवुड्ढीय. ॥ २७१ ॥ अर्थः— प्रथम तीर्छा लोकमां आटलासुधी गमनागमन करवुं एवुं व्रतनुं परिमाण कीधा पछी अनाभोगादिकवशे कांई अधिक गमनागमन थई जाय तो तिर्छो गमनातिक्रमातिचार लागे. बीजो अधोगमन करतां विस्मृति अथवा चित्तनी विभ्रमताने लीधे व्रतना परिमाण करतां कांई वधारे गमन थई जाय तो अधोदिसि गमनातिक्रम अतिचार लागे. त्रीजो ऊर्ध्व गमन करतां उक्त कारणादि वशे कांई वधारे गमन थाय तो ऊर्ध्वदिशि परिमाणातिक्रम अतिचार लागे. चोथो कोई दिशिए गमन करतां में दश ५, नन पंथ कर्यो के पंदर योजन कर्यो छे एवी विस्मृति थई जाय अथवा दिशिपरिमाण कर्याने घणा दिवस थई गयाथी जे दिशिविषे जेटला योजननो परिमाण होय ते भूली जईने ते परिमाणमां न्यूनाधिकता करवी. अथवा ते परिमाण कागलमां लखी राखेलुं नही होवाथी तेमां वधघटथई जाय अथवा बुद्धिनी मंदताने लीधे अथवा विभ्रमताने लीधे अधिक न्यूनता कर्याथी अस्मृति अंतर्धान अतिचार लागे. पांचमो जे दिशिनेविषे जेटला योजन जवानी छूट राखी होय ते दिशिमां ते छूटना करतां वधारे गमन थई जाय त्यारे बीजी दिशानेविषे ते वधेला पंथगमननो आरोप करी लईने परिमाण पूरुं करवुं. एटले पूर्व दिशानेविषे शो कोश जवानी छूट होय ने पश्चिम दिशानेविषे पचाश कोश जवानी छूट होय. हवे पश्चिम दिशाए पोणोशो कोशनुं गमन थई जाय त्यारे पूर्व दिशाना शो कोशमांना पचीश कोश नाखी देवा अर्थात् हरेक प्रकारे दिशिउने विषे गमन परिमाणमां न्यूनाधिक थवाने लीधे एक दिशिनुं अधिक गमन बीजी दिशिना न्यूनगमनमां भेलवी लेवुं तेने क्षेत्रवृद्धि अतिचार कहे छे. ॥२७१

हवे सातमा भोगोपभोग व्रतना पांच अतिचार कहेछेः— मूलः— अप्पक्कं उप्पक्कं, सच्चित्तं तह सचित्त पडिबद्धं; तुच्छोसहि भरकणयं, दोसा उवभोग परिभोगे. ॥ २७२ ॥ अर्थः— ए व्रतने उपभोग परिभोग पण कहे छे. केमके क्रियाना भेदथकी भोगना बे प्रकार थाय छे एक उपभोग अने बीजो परिभोग, उपभोग एटले एकज वार आहार तथा फूल प्रमुखनो भोग करवो. अने परिभोग एटले

वारंवार जोग जोगववा जेम के, गृह तथा स्त्री प्रमुख जोग वारंवार जोगवाय छे. ए परिजोग कर्मनेविषे पूर्वोक्त पंदर कर्मादान जाणवा. तेमां श्रावके उत्सर्गे समयने विषे प्रासुक एषणीय आहार लेवो. जो ते न होय तो बहु पाप सचित्तनो त्याग करवो. प्रथम आटो डाण्याविना तेनी रोटी कस्याथी तेमां ते अनाजना कण रही जाय छे तेम छतां तेने अचित जाणीने खावुं अथवा लोटने अचेतन जाणीने अग्निसंस्कार कस्याविना काचोज खावो. तेने अपक्क जक्षणातिचार कहेवो. बीजो कांईक पाकेलुं तथा कांईक नही पाकेलुं जे अन्न प्रमुख होय जेमके, जुवारी प्रमुख सर्व जातिना कणिश (पोंक) अग्निमां पकाव्याथी तेमांना केटलाएक कण पाके छे ने कटलांएक काचां रही जाय छे तेम छतां ते अचित जाणीने खावुं तेने छिपक्क जक्षणातिचार कहेवो. त्रीजो श्रावकने सचित्त आहारनुं अवश्य पच्चरकाण छतां अनाजोग थकी परिमाणनुं उल्लंघन थई जाय एटले पाणीने त्रण उकाला दीधाथी ते अचित्त थाय छे एवुं परिमाण छतां तेने एक अथवा बे उकाला दई अचित्त थयुं एम जाणीने ते पाणी पीवाई जाय. तथा सचित्त वस्तुने अचित्त थवामां कांईक वखत बाकी रह्यो छतां ते वस्तु अचित्त जाणीने खवाई जाय तेने सचित्ताहार अतिचार कहेवो. चोथो अचित्त वस्तुनो सचित्त वस्तुनी साथे संबंध छतां ते संबंधनो जंग थया पछी तरतज ते वस्तु खवाई जाय, जेमके, गुंदर अचित्त छे तेने वृक्षनी साथे संबंध छतां ते संबंधनो जंग थया पछी तरतज खावुं जोइए नही, केमके सचित्त वस्तुना स्पर्शथी केटलो एक वखत तेमां पण सचित्तपणुं रहे छे तेवा समयमां ते खवाइ जवाय तेने सचित्त प्रतिबद्धातिचार कहेवो. पांचमो जे वस्तु मेलव्यामां घणो प्रयत्न करवो पडे, अने जक्षण कस्याथी पूर्ण तृप्ति थाय नही, जेमके, बदरी फल (बोर) मां जे ठळीयुं थाय छे ते जांग्याथी तेमां अति सूक्ष्म स्वादिष्ट जक्षणीय पदार्थ नीकले छे ते हजारो ठळीयां जांग्यानो प्रयत्न कस्यो छतां तेमांथी मेलवेली वस्तुथी आत्मानी तृप्ति थाय नही तेम छतां तेनुं जक्षण करवुं तेने तुच्छौषध्यातिचार कहेवो.॥२८१॥

हवे आठमां अनर्थदंड विरमण व्रतना पांच अतिचार कहे छेः– मूलः– कुंकुइअं मोहरिअं, जोगुवजोगाइरेग कंदप्पा; जुत्ताहिगरण मेए, अइयाराणठ दंडवए. ॥ २८२ ॥ अर्थः– अनर्थदंडनो शब्दार्थ आवी रीते थाय छेः– कांईपण अर्थ एटले प्रयोजन नही छतां पोतानी आत्माने दंडनी प्राप्ति थाय तेने अनर्थदंड कहेवो. एना पांच अतिचारोमानो प्रथम नयनादिक शरीरना अवयवोए करी

बीजाने हास्यादिकनी उत्पत्ति करवी, अथवा थार पुरुषना जेवी कुचेष्टा करवी तेने कौकुच्यातिचार कहेवो. बीजो मुख थकी एवा शब्दो उच्चार करवा के जेथी शांजल नारनो हृदय कचवाय अने पोतानी अप्रतिष्ठा थाय तेने मौखर्य वाचालातिचार कहेवो. त्रीजो भोगोपभोगनी अधिकता करवी, जेमके, अंगमल हरण करनार साबु वगैरे वस्तुथी स्नान करतां पाणी वधारे वापरवुं, केशादिकने सुगंधी तेल लगाडवुं अंतरादिक सुगंधि पदार्थोनो उपयोग करवो, इत्यादिक व्यर्थ आरंभ करवो तेने भोगो पभोगाद्यतिचार कहेवो. चोथो शृंगाररस विषयक कथन करवुं, एटले मंद मंद हास्ययु क्त भाषण करवुं, जेथी विषय कामना उत्पन्न थाय एवा नाना प्रकारना श्लोको कहेवा. अथवा बीजाने क्रोध उत्पन्न थाय एवुं भाषणकरवुं तेने कंदर्पोत्पादकातिचार कहेवो. अने पांचमो पोताना उपयोग करतां वधारे अधिकरणनो संग्रह करवो, अथवा जेनुं परिणाम हिंसारूपे थाय एवा पदार्थोने एकठा करी राखवा. अने महत्ता मेलववाने ते वस्तुउ बीजाने मांगी आपे जेम के, रथ उखल, मुशल, अने तलवार प्रमुख ह थीआरो पोताना उपयोग करतां वधारे राखवा. तेने अधिकरणातिचार कहेवो. ए पांच अतिचार अनर्थदंड नामना व्रतनेविषे कह्या छे. एवी रीते ए त्रण गुण व्रत ते पांच अणुव्रतने गुणनी उत्पत्ति करनारा होवाथी एउने गुणव्रत कह्या छे.

हवे नवथी ते बार सुधी चार शिक्षाव्रतो कहे छेः– ए चारे व्रत शिक्षानी पठे अथवा शिक्षारूप होवाथी एओने शिक्षा व्रतो कह्या छे. जेम नवीन शिक्षानो पु नः पुनः अभ्यास करवो जोयेछे. तेओमां प्रथम जे सामायक नामनुं नवमुं व्रत छे तेनो अर्थ आवी रीते थाय छेः–राग द्वेषना अभावने सम कहेवुं, अने आय ए टले तेनो लाभ थवो. तेने समाय कहेवो. अने ते समतारूप लाभने करनारुं हो वाथी सामायिक व्रत कहेवुं. बीजो अर्थः– आर्त्त अने रौद्र ए बे ध्याननी परि णतिरूप जे क्रियाओ कराय छे ते अशुभ अने सावद्य व्यापार छे तेनो त्याग क रीने जघन्ये बे घडी प्रमाण आत्माने समता परिणाममां राखवुं, तेने सामायि क व्रत कहेवुं. त्रीजो अर्थः– सम कहेतां सम्यक् प्रकारे ज्ञान, दर्शन, तथा चारि त्र ए रत्नत्रयीरूप सहज उदाशीन वृत्ति एज मोक्ष मार्ग, तेनो आय एटले ला भ थवो तेने सामायिक व्रत कहेवुं. ते पुनः पुनः करवुं. यदुक्तंः– "जाहे खणि ओताहे, सामाइयं करेइ" ॥ २७३ ॥

ए सामायिकव्रतना पांच अतिचार कहे छेः– मूलः– काय मणो वयणाणं, डुप्पणिहाणं सई अकरणं च; अणवट्ठिय करणं चिअ, सामाइए पंच अइआरा.

॥ २७४ ॥ अर्थः– प्रथम शरीरना हस्त पादादिक अवयव पुंज्याविना अने प्रमा
र्ज्या विना हलावववा, भीतने पीठ लगाडीने बेशवुं, पृथवी पुंज्याविना निद्रा प्रमु
ख करवी, अप्रेक्षित तथा अप्रमार्जित स्थंमिलनेविषे बेशवुं तेने काय दुःप्रणिधा
न अतिचार कहेवो. बीजो मनो दुःप्रणिधान ते मनमां ग्रह संबंधी सावद्यनुं चिं
तवन करवुं. त्रीजो वचन दुःप्रणिधान ते उघाडे मुखे सावद्यपणे बोलवुं, सई क
रणं ते निद्रा तथा विकथाने मली शून्य चित्ते करीने जे अनुष्ठाननुं करवुं. अनव
स्थित काल ते जे सामायक काल पूरो थवानी निरत रहे नही. अने जेम तेम
अनादर पणे करवुं. ए पांच अतिचार सामायकना जाणवा. ॥ २७४ ॥

दसमां देशावगासिक व्रतना पांच अतिचार कहेछेः– मूलः– आणयणं पे
सवणं, सद्दणुवाउ य रूव अणुवाउ; बहि पोग्गल परकेवो, दोसा देसावगासस्स
॥ २७५ ॥ अर्थः– देशेकरी ज्यांहां अवकाश छे तेने देशावकाश कहिये. ते प्रथम
दिग्व्रती एटले परदेशनो व्यापार प्रमुखे करीने पोतानी व्रती चलाववाने अर्थे जे
योजन शतादिक प्रमुख सुधी दूर जवानो नियम कर्यो छे तेनो वली संक्षेप करवो
एटले गृहशय्यास्थानादिकथी दूर जवानो निषेधरूप अथवा सर्व व्रतसंक्षेपकरण
रूप नियम छे. ए उपर दृष्टांत कहेछेः– जेम बार योजनमां व्यापनार दृष्टिविष
अथवा आसीविष विषम विषधर संबंधी विष कोई मनुष्यना सर्व अंगनेविषे
व्यापी रह्यो होय, तेने कोई मंत्रवादी उतारीने एक अंगुली प्रदेशे लावीने मूके.
एथी आम समजवुं के, जेम मंत्रवादी आखा शरीरमां व्यापेलो विष अनुक्रमे ए
केक अवयवमांथी उतारतो उतारतो छेवटे एक अंगुलीना एक प्रदेशमां आणी
राखेछे, तेम व्रत धारण करनार पुरुष शत योजनादि गमनरूप नियमने घटाडतां
घटाडतां शय्यादिकसुधी आवी राखे. ते देशावकाशिक व्रत कहेवायछे. ए व्रतमां
देशनी पठे मुहूर्त्तादि कालनो पण संकोच थायछे ते अर्थात् जाणी लेवुं.

देशावकाशिक व्रतना पांच अतिचार छे, ते आ प्रमाणेः– प्रथम आनयन, बी
जो प्रेषवण, त्रीजो शब्दानुपात, चोथो रूपानुपाती, तथा पांचमो पुद्गल प्रक्षेप. तेमां
घरप्रमुखनो देशावकाशिक कीधो छे ते विवक्षित क्षेत्रथी बाहेर रहेलुं जे सचेतना
दिक द्रव्य, ते त्यांथी चाकरादिकना हाथे मंगावी विवक्षित (इछेला) क्षेत्रमां र
खाववुं ते एवा अभिप्रायथी के जो हुं पोते जई लावीश तो व्रत भंग थशे. तेने
प्रथम आनयनातिचार कहिये; एज अभिप्रायेथी विवक्षित क्षेत्रमां रहेली कांई
वस्तु कोई मनुष्यद्वारा बाहेर मोकलावी देवी तेने बीजो प्रेषणातिचार कहिये.

एवी रीते पोते लीधेला व्रतनो भंग न थाय माटे पोते करवानी क्रिया कोई बीजा द्वाराए करावी पोतानुं प्रयोजन सिद्ध करी लेवुं तेथी यद्यपि व्रतनो भंग थतो नथी तथापि व्रत सफल थतुं नथी, केमके, बाहेर गयाथी गमनादिक व्यापारे करी सूक्ष्म प्राणीउनो घात थाय छे तेनो बचाव करवाने अर्थे देशावकाशिक व्रत लीधामां आवे छे, ते व्रत लीधा पछी पोते तो गमन क्रियानो त्याग करे परंतु पोतानुं प्रयोजन सिद्ध करवाने अर्थे कोई बीजानी मारफते ते क्रिया करावे तेथी शुं हिंसा थती नथी? उलटी वधारे हिंसा थवानो संभव छे. केमके, पोते गमन कर्याथी ईर्यासमितिनी शुद्धतारूप गुण थाय छे, ते बीजाने मोकल्याथी थतो नथी. किंतु ईर्यासमितिना अभावथी दोषनी प्राप्ति थायछे. माटे एम कर्याथी अतिचार लागे छे. तेमज पोताना घरने फरती भीत प्रमुख जे प्राकार होय छे तेटली ज गोथी बाहेर जई कोईने हाक मारवी नही एम अभिग्रह पूर्वक व्रत धारण कर्युं छतां पोते ते क्रिया करे तो व्रतनो भंग थाय, माटे पोतानुं कांई प्रयोजन सिद्ध करवाने अर्थे ते भीतनी पासे जई कोईने बोलाववुं होय तो मोटा अवाजे खुंकारो करीने बोल्याव्याथी त्रीजो शब्दानुपातातिचार लागे छे. अथवा ते भीतादिक ऊंचा स्थलनेविषे पोतानुं कार्य सिद्ध करवाने अर्थे जई ऊभो रहे तेने जोईने जे माणस द्वारे काम कराववुं होय ते माणस पासे आवे त्यारे पोतानुं प्रयोजन सिद्ध करी लीधाथी चोथो रूपानुपातातिचार लागे. अने पोतानुं कार्य सिद्ध करवाने अर्थे नियमित जागाथी पोते बाहेर न जतां पाषाण अथवा काष्टनुं ककडुं लईने कोई माणसनी पासे फेंकवुं तेथी ते पाछो आवे त्यारे तेने कहीने ते प्रयोजन सिद्ध करी लेवाथी पांचमो पुद्गल प्रक्षेपातिचार लागे छे. ॥ २७५ ॥

हवे त्रीजा पौषध नामना शिक्षा व्रतना पांच अतिचार कहे छेः— मूलः— अप्पडिलेहिय मपम, ज्जियं च सेज्जाइ थंडिलाणि तहा; सम्मं च अणणुपालण, अइआरा पोसहे पंच. ॥ २७६ ॥ अर्थः— पौषधं एटले पुष्टि धर्मने धारण करनार. ते पौषध व्रत अष्टमी आदि पर्वने विषे धारण करिये. एवी विशेषता छे. ते आ प्रमाणेः— चार शिक्षा व्रतमांना सामायक तथा देशावकाशिक ए बन्ने प्रति दिवशे करवा अने पौषध तथा अतिथिसंविभाग ए बे प्रतिनियत दिवस अष्टमी आदि पर्वने विषे करवां एम आवश्यकादि शास्त्रोमां कह्युंछे. तेमां त्रीजा पौषध व्रतना पांच अतिचार छे ते आ प्रमाणेः—अप्पडि लेहिय दुप्पडिलेहिय सज्जासंथारे अप्पमज्जिय दुप्पमज्जियसज्जा संथारे अप्पडिलेहिय दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि, अप्पमज्जि

य डुप्पमज्जिय उच्चारपासवण नूमि, तथा पोसह विधि विचरिए ए पांच अतिचार बे. तेमां जे स्थानकनेविषे पोसह संथारो करवो होय ते संथारानी जे प्रतिलेखना न करवी एटले पोसहनी जगा सारी पेठे पोतानीदृष्टे जोयाविना अथवा जेवी ते वी रीते जोईने शय्या संथारके बेशीने पोसह करतां प्रथम अतिचार लागे एमज रजोहरण प्रमुख वमे पोसह करवानी जगा सारी रीते पूंज्याविना अने जो पूंजी तो कांई पूंजी कांई न पूंजी करी रहेवा दई त्यां संथारा नाखी पोसह करतां बीजो अतिचार लागे; अप्रतिलेखित डुःप्रतिलेखित स्थंमिले लघुनीति अथवा वडीनीति अनानोगे करवाथी त्रीजो अतिचार लागे; अप्रमार्जित डुः प्रमार्जित स्थंमिले लघुनीति अथवा वडीनीति करवाथी चोथो अतिचार लागे; अने पोसह करतां बतां क्षुधादिक परिसह उत्पन्न थयाथी प्रजातना समयनेविषे ज पारणा प्रमुखनुं चिंतवन करवुं अथवा किवारे पोसह पुरोथासे केवारे हुं जीवतो रहीस एम सम्यक् प्रकारे न पालवाथी ते पांचमो अतिचार लागे बे. २०६

हवे चोथुं अतिथि संविनाग नामनुं शिक्षा व्रत कहे बे. मूलः— सच्चित्ते निक्खि वणं, सचित्त पिहणं च अन्नववएसो; मच्छरियं च काला, ईयं दोसा तिहिवि नाए. ॥ २०७ ॥ अर्थः— जेणे तिथि, पर्व तथा उत्सवादि लोकना व्यवहारनो त्याग कस्यो बे तेने अतिथि कहिये; एवा अतिथिने श्रद्धा सत्कार क्रम युक्त पश्चा त्कर्म तथा पुरःकर्मादि दोषनो त्याग करीने न्यायोपार्जित अन्नपानादिक नाग विशिष्टे जे आत्मानो अनुग्रह बुद्धिथी देवुं तेने अतिथि संविनाग व्रत कहिये. आंही आ विधि बे के, पोसह कीधा पठी पारणाने दिवसे श्रावके सञ्चावथी साधुने अव श्य अतिथि संविनाग करवो एवो नियम कह्यो बे अन्यदा नियम नथी. एना पां च अतिचार बे ते आ प्रमाणेः—सचित्त निक्षेप, सचित्त पीहण, अन्यव्यपदेश; स मत्सरदान, तथा कालातिक्रम, ए पांच अतिचार जाणवा. तेमां प्रथम जे साधुने देवालायक अचेत वस्तु होय ते न देवानी बुद्धिथी अथवा अनानोग थकी बीजो कोई सचेत वस्तुनी ऊपर अथवा अंदर राखी मूकवी ते एवा हेतुथी के, स चेत वस्तुनीसाथे रहेली अचेत वस्तु साधुने दीगमां आव्याथी ते लेनार नथी तेथी मारा व्रतनो नंग न थतां धास्या प्रमाणे सिद्ध थशे एवी युक्ति करी ते वस्तु बचावे तेने सचित्त निक्षेपातिचार लागे; एवाज अनिप्रायेथी अचेत वस्तुने कोई सचेत वस्तुथी ढां कीराखी बचाववी तेने बीजो सचित्तपीहणातिचार कहिये; घेर साधु आव्याथी मोटा आदरनी साथे कोई वस्तु अर्पण करती वेलाये कोई एवी युक्ति कहाडवी के जेथी ते

साधुने सहज पूछवुं पडे के आ चीज कोनी छे, त्यारे बीजा कोई संबंधी वगैरेनुं नाम लिए जेथी ते साधु ते वस्तुनुं ग्रहण करे नही तेथी पोतानुं व्रत पण रह्युं ने चीज पण बची एम कह्याथी त्रीजो अन्यव्यपदेशातिचार कहिये; कोई घेरमां पडेली चीज साधुए जोई ने मांगी छतां ना कहेवाय नही तेथी मनमां कांईक चीडाईने आपवी अथवा बीजो कोई सामान्य पुरुष दान देतो होय तेनी कीर्त्ति शांभलीने मत्सरथी तेथी अधिक दान देवुं तेने मत्सर दानातिचार कहिये; अने साधु आहारादिक लई आव्या पछी तेने तेडी आवीने ते वस्तुनुं दान दीधाथी पांचमो कालातिक्रमातिचार लागे छे. ॥ २७७ ॥ ए छठो द्वार थयो.

हवे सातमो द्वार कहे छेः—मूलः—भरहम्मि भूय संपइ, भविस्स तिछंकराण नामाइं; एरवयंमि विताई, संपइ जिण भावि नामाइं॥२७८॥ अर्थः—भरत अने ऐरवत क्षेत्रोमां भूत वर्त्तमान तथा भविष्य कालमां चोवीशी पणे जे तीर्थंकरो थई गया, थया छे तथा थशे तेमनां नामनो आ सातमो द्वार कहे छेः— ॥ २७८ ॥

मूलः—भरहे तीए संपइ, भावि जिणे वंदिमो चउवीसं; एरवयंमिवि संपइ, भावि जिणे नामउ वंदे. ॥२७९॥ अर्थः— भरत ऐरवत क्षेत्रोमां भूत भविष्य अने वर्त्तमान कालमां थई गएला, थया छे तथा थवाना जे तीर्थंकरो तेउने हुं वंदना करुंछुं. २७९

प्रथम भरत क्षेत्रना अतीत चोवीस जिनोनां नाम कहेछेः— मूलः— केवयनाणी निवा,णि सायरो जिण महायसो विमलो; सवाणुभूइ सिरिहर, दत्तो दामोयर सुतेउ. ॥ २८० ॥ सामिजिणोय शिवासी, सुमई सिवगइ जिणोय अछोउ; नाहनमीसर अनिलो; जसोहरो जिण कयग्घोय. ॥ २८१ ॥ धम्मीसर सुद्धमई,सिवकर जिण संदणोय संपइय; तीउस्सप्पिणि भरहे,जिणेसरे नामउ वंदे.२८२ अर्थः— केवल ज्ञानी, निर्वाणी, सागरजिन, महायश, विमल, सर्वानुभूति, सिरिधर, दत्त, दामोदर, तथा सुतेज. ॥ २८० ॥ स्वामीजिन, शिवासी, (एमने मुनिसुव्रत पण कहेछे) सुमति, शिवगति, अस्तांग, अथवा अबाध, नमीश्वर, अनिल, यशोधर तथा कृतार्थ. ॥ २८१ ॥ धर्मीश्वर, शुद्धमति, शिवकर, स्यंदन तथा संप्रति ए नामे चोवीस जिनेश्वर आ भरतक्षेत्रनेविषे उत्सर्प्पिणी अतीत कालमां जे थई गया छे तेउने हुं वंदना करुं छुं. ॥ २८२ ॥

भरत क्षेत्रना वर्त्तमान चोवीश जिनोनां नाम कहेछेः— मूलः— उसभं अजियं संभव, मभिनंदण सुमइ पउम सुप्पासं; चंदपह सुविहि सीयल, सेजंसं वासुपुज्जं च. ॥ २८३ ॥ विमल मणंतं धम्मं, संतिं कुंथुं अरंच मल्लिंच; मु

णिसुव्वय नमि नेमिं, पासं वीरं च पणमामि. ॥ २९४ ॥ अर्थः— रूषन्न, अजित, संजव, अनिनंदन, सुमति, पद्मप्रन्न, सुपार्श्व, चंद्प्रन्न, सुविधि, शीतल, श्रेयांस तथा वासुपूज्य. ॥ २९३॥ विमल, अनंत, धर्म्म, शांति, कुंथु, अर, मल्लि, मुनिसुव्रत, नमि, नेमि, पार्श्वनाथ, तथा श्रीवीर ए चोवीश जिन नरत क्षेत्रनेविषे वर्त्तमान कालना थया तेमने हुं प्रणाम करुं बुं. ॥ २९४ ॥

नरत क्षेत्रना अनागत चोवीश जिनोनां नाम कहेबेः— मूलः— जिण पउमनाह सिरि सूरदेव सुप्पास सिरिसयंपनयं; सव्वाणुनूइ देवसुय, उदय पेढाल मनिवंदे. ॥ २९५ ॥ पोट्टिल सयकित्ति जिणं, मुणिसुव्वयं अमम निक्कसायंच; जिण निप्पुलाय सिरि नि, म्ममत्त जिण चित्तगुत्तं च. ॥ २९६ ॥ पणमामि समाहिजिणं, संवर य जसोहरं विजय मल्लिं; देव जिण णंत वीरिअ, नद्दजिणं नावि नरहंमि. ॥ २९७ ॥ अर्थः— पद्मनान, श्री सूरदेव, श्री सुपार्श्व, श्री स्वयंप्रन; सर्वानुनूति, देवश्रुत, उदय, पेढाल; ए गाथाना आद्यमां जिन शब्द बे ते बधां नामोने लगाडवो, तेमनी हुं वंदना करुंबुं. ॥ २९५ ॥ पोट्टिल जिन, शतकीर्त्ति, मुनिसुव्रत, अमम, निःकषाय जिन, निःपुलाक, श्री निर्म्ममत्व जिन, चित्रगुप्त, आंही पण पाउली गाथामांथी हुं वंदना करुंबुं एम लेवुं. ॥२९६॥ समाधि जिन, संवर, यशोधर, विजय, मल्लि, देव,अनंतवीर्य, नद्र जिन, अथवा नद्रकृत ए नरतक्षेत्रनेविषे नावि जिन थवाना बे ते कह्या. समवायांगनेविषे तो आ प्रकारे नामदीगमां आवेबेः—यथा "महापउमे सुरा देवे सुपासेय सयंप्रन्ने सव्वाणुनूई अरहा देवगुत्ते यहोरकई उदए पेढालपुत्तेय पोट्टले सयएइया मुणिसुव्वय अरहा सव्वनाव विक्र जिणे अमम निक्कसाएय निप्पुलाएय निम्ममे चित्तगुत्ते समाहीय आगम्मस्सेण होरकई संवार अनियहीय विवाए विमलेइय देवोववाए अरहा अणंतविजएइय आगचस्सेण होरकइत्ति" ए नविष्य कालमां थनारा बे. ए प्रकारे करी आगल पण नामविषे जे कोई तेकाणे समवायांगादिकथी विसम वाद दीगमां आवे त्यां मतांतर बे, एम जाणवुं. ॥ २९७ ॥

अवतरणः— हवे ऐरवत नामना क्षेत्रमां वर्त्तमान जिननां नाम कहे बेः— मूलः— बालचंदं सिरि सिचय, अग्गीसेणं च नंदिसेणं च; सिरि दत्त वयधरं सोमचंद जिण दीहसेणं च. ॥ २९८ ॥ वंदे सयाउ सच्चइ, उ जुत्तिसेणं जिणं च सेयंसं; सीहस्सेण सयंजल, उवसंतं देवसेणं च. ॥ २९९ ॥ महविरिय पास मरुदेव सिरिहरं सामिकुट्ट मनिवंदे; अग्गिस्सेणं जिण म ग्गदत्त सिरि वारिसेणं

च ॥ ३०० ॥ इय संपइ जिणनाहा, एरवए कित्तिया सनामेहिं; अहुणा नाव जिणंदे, नियनामेहिं पकित्तेमि. ॥ ३०१ ॥ अर्थः— बालचंद्र, श्रीसिचय, अग्नि सेन, नंदिसेन, श्रीदत्त, व्रतधर, सोमचंद्र जिन, दीर्घसेन, ॥ २९८ ॥ शतायुष, स त्यकी, युक्तिसेन, श्रेयांसजिन, सिंहसेन, स्वयंजल, उपशांत, देवसेन, एउनी वंदना करुं बुं. ॥ २९९ ॥ महावीर्य, पार्श्व, मरुदेव, श्रीधर, स्वामिकोष्ठ, अग्निसेन, अग्र दत्त, अथवा मार्गदत्त, श्रीवारिषेण, ए सर्वने समस्त पणे वंडुंबुं. ॥ ३०० ॥ एप्रकारे सांप्रत वर्त्तमान जिन ऐरवत क्षेत्रनेविषे तेमनां नाम कह्यां. ॥ ३०१ ॥

हवे ते ऐरवत क्षेत्रमां नावि जिननां नाम कहुं बुं.— मूलः— सिद्धत्त पुन्न घो सं, जसघोसं, सायरं, सुमंगलयं; सवठसिद्धि निवाणसामि वंदामि धम्म धयं ॥ ३०२ ॥ तह सिद्धिसेण महसेण नाह रविमित्त सवसेण जिणे; सिरि चंदं दढकेउं. महिंदयं दीहपासं च. ॥ ३०३ ॥ सुवय सुपासनाहं, सुकोसलं जि णवरं अणंतबं; विमलं उत्तर महरिद्धि देवयाणंदयं वंदे. ॥ ३०४ ॥ अर्थः— सिद्धार्थ, पूर्णघोष अथवा पुण्यघोष, यशघोष, सागर, सुमंगल, सर्वार्थसिद्धि, नि र्वाणस्वामी, ने धर्मध्वज, एमने वंडुं बुं. ॥ ३०२ ॥ तथा सिद्धसेन, महासेननाथ, रविमित्र, सत्यसेनजिन, श्रीचंद्र, दढकेतु, महेंद्र, दीर्घपार्श्व, एमने हुं वंडुं बुं. ॥ ३०३ ॥ सुव्रत, सुपार्श्वनाथ, सुकोशल जिनवर, अनंतनाथ अथवा अनंतार्थ, वि मल, उत्तर, महर्द्धि, ने देवतानंदक, एमने हुं वंदना करुं बुं. ॥ ३०४ ॥

अवतरणः— हवे पूर्वोक्त गाथामां कहेला तीर्थंकरोनी सर्व संख्या कहेळेः— मूलः— निद्धिस्स नवसमुद्दे, वीसाहिय सय जिणे सुहसमिद्धे; सिरिचंद मुणिव इनए, सासय सुहदायए नमह. ॥ ३०५ ॥ अर्थः— नव समुद्रथी तरेला जे एक शोने वीश संख्या जिन जे सुखना समुद्र अने जेमने श्रीचंद्रमुनिपतिए नमन कर्युं बे एवा शाश्वत सुखदायकने हे नव्य लोको तमे नमस्कार करो. ॥ ३०५ ॥ अहीं पांच चोवीशीना एक शो ने वीश तीर्थंकरना नामोनुं सप्तम द्वारनेविषे विवरण कर्युं.

हवे 'उसन्नादि जिणिंदाणं आइम गणहरत्ति' अष्टम द्वारने विवरतां कहेबेः—

मूलः— सिरि उसहसेण पहु सीहसेण चारूरु वज्जनाहरका; चमरो पक्कोय विय, प्रदिन्न पहुणा वराहोय. ॥ ३०६ ॥ पहुनंद कुबुहा विय, सुनोम मंदर जसा अरिष्ठो य; चक्काउह संब कुंन, निस्सह मल्ली य सुंनो य॥ ३०७ ॥ वरदत्त अज्जदिन्ना, तहिंदनूईय गणहरा पढमा; सिस्सा रिसहाईणं, हरंतु पावाइ पण याणं. ॥ ३०८ ॥ अर्थः— श्री ऋषनसेन, सिंहसेन, चारूरु, वज्रनानाख्य, चमर,

प्रद्योत, विदर्भ, दत्तप्रभु, वराह. ॥ ३०६ ॥ प्रभु नंद, कौस्तुभ, सुभौम, मंदर यश, अरिष्ट, चक्रायुध, शंबू, कुंभ, भिषज, मल्लि, ने शुंभ. ॥ ३०७ ॥ वरदत्त, आर्यदत्त, तथा इंद्रभूति; ए प्रकारे ऋषभादि जिनोना प्रथम गणधरो छे ते प्रणत जनोना दुरितने हरण करे छे. ॥ ३०८ ॥

हवे नवमो पवत्तिणीनो द्वार कहेछेः– मूलः– बंभी फग्गू सामा, अजिया तह कासवी रई सोमा; सुमणा वारुणि सुजसा, धारिणि धरिणी धरा पउमा ॥ ३०९ ॥ अज्झा सिवा सुई दामणीय रक्की य बंधु वइ नामा; पुप्फवई अनिला ज,रूकदिन्न तह पुप्फचूला य. ॥ ३१० ॥ चंदणसहिय पवत्तिणि उ चउवीसाण जिणवरिंदाणं; दुरियाइ हरंतु सया, सत्ताणं भत्तीजुत्ताणं. ॥ ३११ ॥ अर्थः– ब्राह्मी, फल्गु, श्यामा, अजिता, काश्यपी, रति, सोमा, सुमना, वारुणी, सुयशा, धारिणी, धरणी,धरा, ने पद्मा ॥३०९॥ आर्या. शिवा, शुभा, अथवा सुचि दामिनी, रक्षी, बंधुमती, पुष्पवती, अनिला, यक्षदत्ता, ने पुष्पचूला; ॥ ३१० ॥ चंदना, सहीत ए चोवीस जिनवरेंद्रनी प्रवर्त्तिनीओ, ते भक्तिएकरी सहित प्राणिओनुं दुरित एटले पाप हरण करेछे. ॥ ३११ ॥ एवी रीते त्रण गाथाएकरी तीर्थंकरोनी प्रथम प्रवर्त्तिनीओनां नाम कथन पूर्वक नवमो द्वार कह्यो.

हवे 'अरहंतञ्चण गणत्ति' अर्हंत नाम कर्म उपार्जवाना स्थानक लक्षण दशमो द्वार कहेछेः–मूलः–अरहंत सिद्ध पवयण, गुरु थेर बहुस्सुए तवस्सीसुं; वच्छलयाय एसिं, अभिक्खनाणो वउगे अ. ॥ ३१२ ॥ अर्थः–पहेला अशोकादि आठ महाप्रातिहार्यरूप पूजाने जे अर्ह एटले योग्य ते अर्हंत; बीजा अपगत सकल कर्मांश, परम सुखी ने एकांत कृतकृत्य ते सिद्ध; त्रीजा प्रवचन एटले द्वादशांग अथवा संघ; चोथा गुरु ते आचार्य धर्मोपदेश कर्त्ता; पांचमा स्थविर ते त्रण प्रकारना छेः– छठा उपाध्याय ते सूत्रादिकना जाणनारा बहुश्रुत; ते त्रण प्रकारनाः– सूत्रधर, अर्थधर ने उभयधर तेमां सूत्रधर करतां अर्थधर प्रधान अने अर्थधर करतां उभयधर एटले सूत्र ने अर्थ ए बन्नेने धारण करनार श्रेष्ठ छे. सातमां विचित्र अनशनादि भेद भिन्न बार प्रकारना तपने करनारा ते तपस्वी; ए सात स्थानोनेविषे वात्सल्य भाव करवुं एटले अनुराग ते तीर्थंकर नाम बंधनुं कारण थाय छे. तथा अभीक्ष्ण एटले निरंतर पणे ज्ञानोपयोग व्यापार छे जेहने ते ज्ञाननेविषे व्याप्रियमाणता ए आठमुं कारण छे. ॥ ३१२ ॥

मूलः– दंसण विणए आवस्सए अ सीलव्वए निरइयारो; खण लव तवच्चिया

ए, वेयावच्चे समाहीय. ॥ ३१३ ॥ अर्थः— नवमो दर्शन एटले सम्यक्त्व; दशमो विनय एटले ज्ञानादिनो जे पूर्वे कही आवेला छैये ने आगलपण कहेवाना छे; इग्यारमो एनी शुद्धितुं करवुं ते आवश्यक एटले अवश्य कर्त्तव्य सामायिकादि; बारमो शीलव्रतपालवुं ते उत्तर गुण व्रत; अने मूल गुण व्रत; एउने निरतिचार पणे पाल्याथी तीर्थंकर नाम कर्म बांधाय छे. तेरमो क्षणलव एटले लवादि स्तोक काल विशेष, एम सर्वकालने विषे निरंतर संवेग भावनाए अने ध्यान सेवनेकरी जे समाधि ते क्षण लवसमाधि; चउदमो तप एटले बाह्याभ्यंतर भेद भिन्न अनशनादिनेविषे यथाशक्तिए निरंतर जे प्रवृत्ति ते तपसमाधि; पनरमो त्याग बे प्रकारनो छेः— एक द्रव्य त्याग ने बीजो भाव त्याग. तेमां द्रव्य त्याग एटले आहार उपधि तथा सय्यादिक जे पोताने काम न आवे तेनो परित्याग अने उपयोगमां आवे तेनुं यतिउने दान देवुं; अने भाव त्याग एटले क्रोधादिकनो त्याग तथा ज्ञानादिकनुं यति जनोने दान देवुं. एबन्ने प्रकारना त्यागनेविषे सूत्रनो अतिक्रम न करतां यथा शक्तिये जे प्रवृति करवी ते त्याग समाधि; सोलमा वेयावच्चना दशभेदने विषे सूत्रने अनतिक्रमे स्वशक्ति अनुसार जे निरंतर प्रवृत्ति ते वेयावच्च समाधि; सत्तरमो मन वचन तथा कायाए करी जे अशुभ व्यापारनुं रुंधन करवुं ते योग समाधि; ॥ ३१३ ॥

मूलः— अपुव्वनाण ग्गहणे, सुयभत्ती पवयणे प्पभावणया; एएहिं कारणेहिं, तित्थयरत्तं लहइ जीवो. ॥ ३१४ ॥ अर्थः—अढारमो निरंतर नवीन नवीन ज्ञाननुं जे ग्रहण ते अपूर्व ज्ञान ग्रहण जाणवुं. उगणीसमो श्रुत ज्ञाननी भक्ति एटले श्रुतविषे बहुमाननुं करवुं; वीसमो प्रवचननेविषे प्रभावनानुं करवुं. ए कहेला वीस हेतु करीने जीव तीर्थंकरपणुं पामेछे. ॥ ३१४ ॥

अवतरणः— एमांना केटलाएक बोलोनुं सूत्रकार स्वतः व्याख्यान करेछेः—

मूलः— संघो पवयण मित्थं, गुरुणो धम्मोवएसयाईया; सुत्तत्थोभयधारी, बहुस्सुया हुंति विरकाया. ॥३१५॥ अर्थः— संघ शब्दे प्रवचन कहेवुं अने गुरु ते धर्मोपदेशादिकना देवावाला तथा सूत्र अर्थ अने तदुभयना धरनार ते बहुश्रुत जाणवा.॥३१५॥

मूलः— जाई सुय परियाए, पडुच्च थेरोत्ति जह क्कम्मेणं; सट्ठीवरसो समवाय, धारउ वीस वरिसो य. ॥ ३१६ ॥ अर्थः—जाति, श्रुत, अने पर्याय आश्री स्थविर त्रण प्रकारना छे, तेमां शाठवर्ष प्रमाण जाति स्थविर, समवायांगना धरनार ते श्रुतस्थविर, जेने दीक्षा लीधे वीस वर्ष थई गया ते पर्याय स्थविर होय ॥३१६॥

मूलः— नत्ती पूआ वसुप्पयमण वञ्जण मवन्न वायस्स; आसायण परिहारो, अरिहंताईण वञ्जलं. ॥ ३१७ ॥ अर्थः— नक्ति ते जे अंतरंग बहुमाननी विशेषता अने पूजा ते यथोचितपणे फल आहार वस्त्रादिके करी उपचरवुं वर्णके० श्लाघा तेनुं प्रकटनके० प्रकाशवुं वली अवर्णवादनुं वर्जवुं एम आसातानुं परिवर्जवुं पूर्वोक्त अरिहंतादिक सातपदनुं वाब्ल्य करवुं ॥ ३१७ ॥

मूलः— नाणुवउंगो निरकं, दंसण सुद्धी अ विणय सुद्धी अ; आवस्स य जो एसु, सील वएसु निरइयारो. ॥ ३१८ ॥ अर्थः— ज्ञान लेवामां सावधान निरंतर एज उपयोग होय, दर्शन शुद्धि ते निरतिचार पणे सम्यक्त्व निर्मल राखे, विनय शुद्धि ते पण निरतिचारपणे विनयनुं करवुं, आवश्यकना योगनेविषे पण मन वचन कायाना योग स्थिर राखे, तथा शीलव्रतपाले ते मूल गुण तथा उत्तरगुण विषे निरतिचारपणुं ए बार स्थानक थया. ॥ ३१८ ॥

मूलः—संवेग नावणा जाण सेवणं खण लवाइ कालेसु; तव करणं जइ जणसं, विनाग करसं जइ समाही. ॥३१९॥ अर्थः— १३ संवेगनावनायें करी शुक्लध्यान तथा धर्म ध्याननुं आसेववुं ते क्षणलवादिक विशेषणनेविषे ते क्षण लव समाधी, १४ यथा शक्तिए तपनुं करवुं, १५ यतिजनने संविनागनुं करवुं जेम समाधिने करवे.३१९॥

मूलः— वेयावच्चं दसहा, गुरुमाईणं समाहि जिणाणं च; किरिया दारेण तहा, अपुव नाणस्स गहणं तु.॥३२०॥ अर्थः—१६ व्यावृत ते गुरु प्रमुख दशनुं दश प्रकारे करवुं, १७ गुरुवादिकने क्रिया द्वारे समाधिनुं उपजाववुं जेम तेमने सुख थाय तेम करवुं १८ अपूर्व ज्ञाननुं ग्रहण ते नवुं नवुं ज्ञान जाणवुं इति. ॥ ३२० ॥

मूलः— आगम बहुमाणोविय, तिञ्चस्स पनावणं जहासत्ती; एएहि कारणेहिं, तिञ्चयरत्तं समक्किणई. ॥३२१॥ अर्थः— १९ सिद्धांतनेविषे बहुमाननुं करवुं. २० तीर्थ ते चतुर्विध संघरूप तेनी पूजा प्रनावना पोतानी शक्तिने अनुसारे करवी. ए वीस कारणे करी तीर्थंकरपणुं प्राणी उपार्जे; इहां वर्द्धमान स्वामी अने रुषन देव एओए पूर्व नवनेविषे कहेला सर्व वीसे स्थानकनुं सेवन कर्युं ठे. मध्यम अजितनाथस्वामी आदे दईने बावीश तीर्थंकरमांना कोईए एक, कोईए बे, कोईए त्रण, अने कोईए सर्व वीसे स्थानकना सेवन कर्यां ठे. ए तीर्थंकरनाम कर्म मनुष्य गतिनेविषेज वर्त्तमान पुरुष स्त्री किंवा नपुंसक ते तीर्थंकर नाव पामवानी पूर्वे त्रीजा नवमां बंधनो आरंन करेठे. ॥ ३२१ ॥ इति दशम द्वार समाप्त.

अवतरणः— ' जिणजणणी जणय नामेत्ति ' एटले रुषनादिक जिनेश्वरनीमा

ता तथा पिताना नामोनो अग्यारमो द्वार कहेछे.– मूलः– मरुदेवि विजयसेणा, सिद्धा मंगला सु सीमाय; पुहवी लरकण रामा, नंदा विन्हू जया सामा. ॥ ३१२ ॥ सुजसा सुव्वय अइरा, सिरिदेवी य प्पनावई; पउमा वईय वप्पा, सिववम्मा तिसल याई य. ॥ ३१३ ॥ नाभि जिअ सत्तुरिआ, जिआरि संवरो अ; मेहे धरे पईठे अ महसेण अ खत्तिए. ॥ ३१४ ॥ सुग्गीवे दढ रहे पिअ वसुपुज्जे अ खत्तिए; कयवम्म सिंहसेण अ, नाणु विसा सणेइ अ. ॥ ३१५ ॥ सुरे सुदंसण कुंने, सुमित्तविजए समुद्दविजए अ; राया य अस्स सेणे, सिद्धे विय खत्तिए. ॥ ३१६ ॥ अर्थः– रुषन स्वामीनी माता मरुदेवी; अजित स्वामीनी माता विजया; संनव नाथनी माता सेना; अनिनंदन स्वामीनी माता सिद्धार्था; सुमतिनाथनी माता मंगला; पद्मप्रन स्वामीनी माता सुशीमा; सुपार्श्वस्वामीनी माता पृथ्वी; चंद्रप्रन स्वामीनी माता लक्ष्मणा; सुविधि स्वामीनी माता रामा; सीतल स्वामीनी माता नंदा; श्रेयांसस्वामीनी माता विष्णु; वासुपूज्य स्वामीनी माता जया; विमल स्वामीनी माता श्यामा; अनंतजिन स्वामीनी माता सुयशा; धर्मनाथनी माता सुव्रता; शांतिनाथ स्वामीनी माता अचिरा; कुंथुनाथनी माता श्री; अर स्वामीनी माता देवी; मल्लिजिननी माता प्रनावती; मुनिसुव्रतनी माता पद्मावती; नमिनाथ स्वामीनी माता वप्रा; अरिष्टनेमीनी माता शिवा; पार्श्वनाथ स्वामीनी माता वामा; अने श्री वर्द्धमान स्वामीनी माता त्रिशला जाणवी. ए बे गाथाएकरी जिननी माताओनां नाम कह्यां. हवे एज अनुक्रमे पिताओनां नाम कहेछे. तेमज श्री रुषनदेव स्वामीनो पिता नानि; अजितस्वामीनो पिता जितशत्रु; संनवनाथ स्वामीनो पिता जितारि; अनिनंदन स्वामीनो पिता संवर; सुमतिनाथ स्वामीनो पिता मेघ; पद्मप्रन स्वामीनो पिता धर; सुपार्श्व स्वामीनो पिता प्रतिष्ट; चंद्रप्रन स्वामीनो पिता महासेन क्षत्रिय; सुविधि स्वामीनो पिता सुग्रीव; शीतल स्वामीनो पिता दृढरथ; श्रेयांस स्वामीनो पिता विष्णु; वासुपूज्य स्वामीनो पिता वसुपूज्य क्षत्रिय; विमलस्वामीनो पिता कृतवर्म; अनंतजिन स्वामीनो पिता सिंहसेन; धर्मनाथनो पिता नानु; शांतिनाथनो पिता विश्वसेन; कुंथुनाथनो पिता सूर; अरस्वामीनो पिता सुदर्शन; मल्लिजिननो पिता कुंन; मुनिसुव्रतनो पिता सुमित्र; नमिनाथनो पिता विजय; अरिष्टनेमिनो पिता समुद्र विजय; पार्श्वनाथ स्वामीनो पिता अश्वसेन; अने वर्द्धमान स्वामीनो पिता सिद्धार्थ क्षत्रिय.३१६

अवतरणः– 'जिण जणणि जणय गत्ति' एटले तीर्थंकरना माता तथा पिता

नी गतिनो बारमो द्वार कहे छेः– मूलः– अठएहं जणणीउ, तिन्नयराणं तु हुंति सिद्धाउ; अठय सणं कुमारे, माहिंदे अठ बोधव्वा. ॥ ३१७ ॥ नागेसु उसन्न पिआ, सेसाणं सत्त हुंति ईसाणे; अठय सणंकुमारे, माहिंदे अठ बोधव्वा॥३१८

अर्थः– रुषन्न देव नगवाननी आदि लईने चंद्रप्रन्नना अंतसुधी आठ तीर्थंकरोनी माताउ सिद्धिने पामी; सुविधि स्वामीने आदि लईने शांतिनाथना अंतसुधी आठ तीर्थंकरोनी माताउ त्रीजा सनत्कुमार नामना देवलोकमां गई; तथा कुंथु स्वामीने आदि लईने श्री महावीर स्वामीना अंतसुधी आठ तीर्थंकरनी माताउ माहेंद्र नामना चोथा देवलोकमां गई. तेमज श्री रुषन्न देव स्वामीना पिता नान्निराजा, नाग कुमारनामा नवनपतिनी द्वितीय निकायनेविषे गया; अजित नाथनी आदि लई चंद्रप्रन्न स्वामिसुधी सात तीर्थंकरोना पिताउ ईशान नामना बीजा देवलोकनेविषे गया; सुविधि प्रन्नृति शांतिनाथ पर्यंत आठ तीर्थंकरोना पिताउ सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां गया; अने कुंथु प्रमुख श्रीमहावीरांत आठ तीर्थंकरोना पिताउ माहेंद्र नामना चोथा देवलोकमां गया. एवी रीते जाणवुं. ॥ ३१८ ॥

अवतरणः– हवे 'उक्कि8 जहन्नेहिं, संखा विरहंत तिऊ नाहाणं' एटले उत्कृष्टे अने जघन्ये करी विचरता तीर्थंकरोनी संख्या गाथाना पूर्वार्द्धवडे तेरमो द्वार तथा 'जम्म समएवि संखा, उक्कि8 जहन्निया तेसं' एटले उत्कृष्टथी तथा जघन्यथी तेउना जन्मनी संख्या गाथाना उत्तरार्द्धमां चौदमो द्वार कहे छेः–

मूलः– सत्तरि सय मुक्कोसं, जहन्न वीसाय देस विरहंति; जम्मं पइ उक्कोसं वीस दस हुंति हु जहन्ना. ॥ ३१९ ॥ अर्थः– उत्कृष्टेकरी समय क्षेत्रनेविषे एक ज काले एकशोने सित्तेर तीर्थंकरो विहार करे छे; ते आ प्रमाणेः– पांच नरत क्षेत्रनेविषे एक एक अने पांच ऐरवतनेविषे पण एक एक उत्कष्टे विहार करेछे. ते आवी रीतेः–पांच महाविदेह क्षेत्रमांना प्रत्येक क्षेत्रनेविषे उत्कृष्ट बत्रीश विजयना सद्भाव थकी बत्रीश बत्रीश तीर्थंकरो विचरे छे. ते बधा एकशोने साठ थाय तथा पांच नरतने पांच ऐरवतना मली दश नेलियेत्यारे एकशोने सित्तेरनी संख्यानो संनव थाय छे. तथा जघन्यथी वीश तीर्थंकरो विहार करे छे. ते आवी रीतेः– जंबुद्वीपना पूर्व विदेहमां शीता महा नदीए द्विनाग कर्या जे दक्षिण अने उत्तर नाग. त्यां एक एकनो सद्नाव होवाथी बे; अपर विदेहनेविषे पण शीतोदया महानदीए द्विनागीकृत जे दक्षिणोत्तर नाग तेउनेविषे एक एक होवाथी बे; ए बन्ने मली चार थया. ए प्रकारेज अपर द्वीप द्वय संबंधी चतुष्टय महाविदेह

नेविषे चार चार करतां शोल थाय ने प्रथमना चार मली वीसनी संख्या थाय. भरत अने ऐरवत एओनेविषे युगलियाना काले एकांत सुख आश्रीने अभावज छे. वीजा केटलाएक सूरि कहे छे के, जघन्ये करी दशज तीर्थंकरो विहार करे छे. कारण के, पांच महाविदेहना पूर्वापर विदेहनेविषे प्रत्येक विहार करनार एकेक नोज सद्भाव होवाथी दश तीर्थंकरो लन्यमान थाय छे. ए तेरमो द्वार थयो.

हवे प्रतिजन्म आश्रयीजोतां उत्कृष्टथी एक काले वीस जिनोनी पछे वीस तीर्थंकरोनो जन्म थाय छे. केमके, सर्व तीर्थंकरनो अर्द्धरात्र समयेज जन्म थाय छे. माटे महाविदेह क्षेत्रनेविषे तीर्थंकरना जन्म समये भरत ने ऐरवत क्षेत्रोमां दिवसोनो सद्भाव होवाथी तीर्थंकरनो उत्पत्तिनो अभाव छे, तेथी एटलाज थायछे आशंकाः— महाविदेहवर्त्ति विजयनेविषे चार थकी अधिक तीर्थंकरोनी उत्पत्तिनो संभव छे, तेथी उत्कृष्टथी वीसज केम कह्या ?

उत्तरः— अहो मेरुनेविषे पांडुक वनमांनी चूलिकानी चार दिशाउ मध्ये प्रत्येक चार योजन प्रमाण बाहुल्य ने पांच योजन शत प्रमाण आयाम ने मध्य भागनेविषे साडात्रण शें योजन प्रमाण विष्कंभ. अर्द्धचंद्र संस्थान संस्थित, सर्वश्वेत, सुवर्णमय, एवी चार अभिषेकशिला छे. त्यां चूलिकाना पूर्व दिग्भाविनी पांडुकंबल शिलानेविषे बे तीर्थंकरोना अभिषेक सिंहासन छे, तेमां एक उत्तर ने एक दक्षिण छे. त्यां जे शीता महानदीना उत्तरमां कच्छादि विजयनेविषे तीर्थंकर उत्पन्न थायछे. तेने उत्तर सिंहासननेविषें देवेंद्र अभिषेक करेछे. अने जे शीता महानदीना दक्षिण भागनेविषे मंगलावती प्रमुख विजयमां उत्पन्न थायछे तेने दक्षिणात्य सिंहासननी उपर अभिषेक करेछे. तेमां एक उत्तर ने एक दक्षिण एवा बे सिंहासन छे. त्यां शीतोदा महानदीनी दक्षिण दिशामां पद्मादि विजयनेविषे जे तीर्थंकर उत्पन्न थायछे ते दक्षिण सिंहासने अभिषिक्त थाय छे. अने जे शीतोदा महानदीनी उत्तर दिशामां गंधिलावति प्रमुख विजयनेविषे उत्पन्न थाय छे ते उत्तर सिंहासने अभिषिक्त थायछे, तथा जे भरत क्षेत्रनेविषें तिर्थंकरो उत्पन्न थायछे, ते चूलिकाना दक्षिण दिग्भाविपांडु कंबल शिलानेविषे अभिशिक्त थायछे. जे ऐरवत क्षेत्रनेविषे उत्पन्न थायछे ते उत्तर दिग्भाविनी रक्त कंबल शिलानेविषे अभिषिक्त थायछे. जे सिंहासन कह्यां ते बधां रत्नमय छे ते बधां पांचसें धनुष्य आयाम विष्कंभनां. अने साडात्रणशें धनुष्य बाहुल्य प्रमाणे छे. एथी अधिक सिंहासननो अभाव होवाथी विदेहोनेविषे चारना करतां अधिक तीर्थंकरोनो एक

काले उत्पन्न थवानो अन्नाव छे. अने जघन्यथी एक काले दशज तीर्थंकरो उत्पन्न थाय छे. तेमां नरतनेविषे पांच, अने ऐरवतनेविषे पांच, मली दश जाणवा. कारण के, प्रत्येके एकेकनोज सद्भाव छे. नरत ने ऐरवतनेविषे जिनजन्म समयेमहा विदेहमां दिवस सद्भाव होवाथी अधिकनी उत्पत्ति थती नथी. ए चौदमो द्वार थयो. ३२ए

अवतरणः– जिण 'गणहरत्ति' एटले श्री तीर्थंकरोना गणधरोनी संख्यानो पंदरमो द्वार कहेछेः– मूलः– चुलसोइ पंच नवई बिउत्तरं सोल सुत्तर सयंच; सत्तुत्तर पण नवई, केणउई अट्ठसोई य. ॥ ३३० ॥ एक्कासीई बावत्तरी य छाव ठि सत्तवन्ना य; पन्ना तेआसोला, उत्तीसा चेव पणतीसा, ॥३३१॥ तेतीस अठ वीसा, अठारस चेव तहय सत्तरस; इक्कारस दस इक्कारसेव इय गणहर पमाणं॥३३२॥

अर्थः– श्री ऋषनदेव स्वामीना चोराशी गणधर; अजित नाथ स्वामीना पचाणु गणधर; संनव स्वामीना एक शो ने बोतेर गणधर; अनिनंदन जिनना एक सो ने सोल गणधर; सुमतिनाथना एक शो पूरा; पद्मप्रन स्वामीना एक शो ने सात गणधर; सुपार्श्व स्वामीना पंचाणु गणधर; चंद्रप्रन स्वामीना त्र्याणु गणधर; सुविधि नाथना अठ्याशी गणधर; शीतल जिनता एक्याशी गणधर; श्रेयांश स्वामीना छोतेर गणधर; वासुपूज्यना छासठ गणधर; विमल नाथना सत्तावन; अनंत नाथना पचाश; धर्म जिनना तेतालीश; शांतिनाथना छत्रीश गणधर; कुंथुनाथना पांत्रीश गणधर; अर जिनना तेत्रीश गणधर; मल्लि जिनना अठ्यावीश गणधर; मुनि सुव्रत स्वामीना अढार गणधर; नमिनाथना सत्तर गणधर; नेमिनाथना अग्यार गणधर; श्री पार्श्वनाथ स्वामीना दश गणधर; अने श्रीवीर नगवानना अग्यार गणधर जाणवा. ए प्रकारे करी ऋषनादि चोवीश तीर्थंकरोना यथा क्रमे करी गणधर एटले जे मूल सूत्र कर्त्ता तेउनुं प्रमाण कह्युं. ॥ ३३२ ॥ ए पंदरमो द्वार थयो.

अवतरणः– 'मुणित्ति' एटले तीर्थंकरोना मुनिओनी संख्यानो शोलमो द्वार कहे छेः– मूलः– चुलसीइ सहस्साए, ग लक्क दो लक्क तिन्नि लक्का य; वीसहिया तीसहिया, तिन्निय अट्ठाई ड इक्कं ॥ ३३३ ॥ चउरासीइ सहस्सा, बिसत्तरी अठ सठि छावठी; चउसठी वासठी, सठी पन्नास चालीसा ॥ ३३४ ॥ तीसा वीसा अठारसेव सोलसय चउदस सहस्सा; एअं साहु पमाणं, चउवीसाए जिण वराणं ॥ ३३५ ॥ अर्थः– आद्य जिनना चोरासी हजार, अजित नाथना एक लाख, ए प्रमाणे अनुक्रमे त्रीजातीर्थंकरना बे लाख; चोथाना त्रण लाख; पांचमाना त्रण लाखने वीस हजार; छगना त्रण लाखने त्रीश हजार; सातमाना त्रण लाख; आठ

माना अढी लाख; नवमाना बे लाख; दशमाना एक लाख; अग्यारमाना चोराशी हजार; बारमाना बोतेर हजार; तेरमाना अम्सव हजार; चौदमाना ढासव हजार; पंदरमाना चोसव हजार; शोलमाना बासव हजार; सतरमाना साव हजार; अहारमाना पचाश हजारः उंगणीशमाना चालीश हजार; वीशमाना त्रीश हजार; एकवीशमाना वीश हजार; बावीशमाना अढार हजार, त्रेवीशमाना शोल हजार; अने चोवीशमा श्रीवर्द्धमान स्वामीना चउद हजार मुनिउ हता. ए क्रमे करी चोवीश तीर्थंकरोना साधुउनुं प्रमाण कह्युं. ॥ ३३५ ॥

अवतरणः— कहेला सर्वे साधुउनी जे संख्या थाय छे ते कहेछेः— अहावीसं लक्का, अडयालीसं च तह सहस्साइं; सव्वेसिंपि जिणाणं, जईणमासं विणिद्दिहं ॥ ३३६ ॥ अर्थः— अठ्यावीश लाख ने अडतालीश हजार एटलुं सर्वे जिनोना यतिउनुं परिमाण जाणवुं. तें जेउने जिनेंद्रे पोते दीक्षा दीधेली छे तेउनुं समजवुं, परंतु गणधरोए जेउने दीक्षा दीधी छे तेउनुं नही. केम के, ते यतिउ घणा छे. ॥ ३३६ ॥ ए शोलमो द्वार पूरो थयो.

अवतरण.— 'समणित्ति' एटले साध्वीउनी संख्यानो सत्तरमो द्वार कहेछेः— मूलः— तिन्निय तिन्निय तिन्निय, छ पंच चउरो चऊ तिगेक्केक्का; लखाउ सहमो तुं, तडवरि सहसाणि मासंखा. ॥ ३३७ ॥ आ गाथामां एकली संख्या मात्रज कही छे. जेम के. त्रण. त्रण. त्रण. छ. पांच. चार, चार, त्रण, एक अने एक एटला लाख क्रमेकरी थायछे; तेमां ऋषभ जिननी आर्यिकाउनी संख्या त्रण लाख; एमने मुकीने बाकीना जिनोनी साध्वीउनी संख्यानी उपर क्रमेकरी जेटला हजारो अधिक छे ते कहे छेः— मूलः— तीसा छत्तीसा तीस तीसा वीसा य तीस असई य; वीसा दसम जिणिंदे, लक्कोवरि अह्निया छक्कं. ॥३३८॥ अर्थः—त्रीश; छत्रीस; त्रीश, त्रीश, वीश; त्रीश; एशी; वीश एटला हजार अनुक्रमे कहेली बीजा तीर्थंकर थी दशमां तीर्थंकर सुधि लक्षांक संख्यानी उपर समजवी. जेम के, प्रथम जिननी तो त्रण लक्षज जाणवी. अने अजित नाथनी त्रण लाखने त्रीश हजार; संभव जिननी त्रण लाख ने छत्रीश हजार; अभिनंदन जिननी छ लाखने त्रीश हजार; सुमति नाथनी पांच लाख ने त्रीश हजार; पद्मप्रभनी चार लाख ने वीश हजार; सुपार्श्व जिननी चार लाख ने त्रीश हजार ; चंद्रप्रभनी त्रण लाख ने एशी हजार; सुविधि जिननी एक लाख ने वीश हजार; अने दशमा शीतल जिननी एक लाख ने छ आर्या उ जाणवी. ॥ ३३८ ॥

अवतरणः— हवे श्रेयांशादि जिनोनी आर्य्यीओनुं प्रमाण कहेछेः— मूलः— लरको तिन्नि सहस्सा, लरको लरको य अठ सय सहिउ; बासठी पुण बासठि स हस अहिया चक सणहिं. ॥ ३३९ ॥ छ सया सव इग सठी, सठी छ सया य सठि पण पन्ना; पन्नेग चत्त चत्ता; अडतीस छतीस सहसा य. ॥३४०॥ अर्थः—श्रे यांश जिननी एक लाखने त्रण हजार साध्वीउ; वासुपूज्य जिननी एक लाख; विम ल जिननी एक लाख ने आठ शे; अनंत जिननी बासठ हजार; धर्म जिननी बा सठ हजारने चारशें; शांति जिननी एकसठ हजार ने छ शें; कुंथुनाथ जिननी साठ हजार अने छ शें; अर जिननी साठ हजार; मल्लि जिननी पंचावन हजार मुनि सुव्रतनी पचाश हजार; नमिनाथ जिननी एकतालीश हजार; नेमिनाथ जि ननी चालीश हजार; पार्श्वनाथ स्वामीनी अमत्रीश हजार अने श्रीमहावीर स्वा मीनी साध्वीउनी संख्या छत्रीश हजार जाणवी. ॥ ३४० ॥

अवतरणः— कहेली सर्व साध्वीउनी जे एकंदर संख्या थाय छे ते कहेछेः— मूलः— चोआलीसं लरका, बायाल सहस्स चोसय समग्गा; अज्जा छक्कं एसो, अ ज्जाणं संगहो कमसो. ॥ ३४१ ॥ अर्थः— चुमालीस लाख बेतालीस हजार बार शें ने छ साध्वीउ एकंदर थायछे. एम क्रमे करीने सर्व आर्याओनो संग्रह जाणीले वो॥ ३४१ ॥ सत्तरमो द्वार पूर्ण थयो.

अवतरणः— 'वेउव्वियत्ति' एटले वैक्रिक लब्धिने धारण करणाराउनी संख्या नो अढारमो द्वार कहे छेः— मूलः— वेउव्विय लद्धीणं, वीस सहस्सा य सय छ गप्पहिया; वीस सहस्सा चउ सय, इगुणीस सहस्स अठ सया. ॥ ३४२ ॥ इगु णिस सहस्स अठार चउ सया सोल सहस अठ सया; सतिसय पनरस चउद स, तेरस बारस सहस दसमे. ॥ ३४३ ॥ इक्कारस दस वव अठ सत्त छ सहस्स एग वन्न सया; सत्त सहस्स सति सया, दुन्नि य सहसा नव सयाइं. ॥ ३४४ ॥ डुन्नि सहस्सा पंचय, सहस्स पनरस सयाइ नेमिंमि; इक्कारस सयपासे, सयाइ सत्तेव वीर जिणे. ॥ ३४५ ॥ अर्थः— जेओने अनेक प्रकारना वैक्रियरूप करवा नी शक्ति छे एवा वैक्रिय लब्धिवान जनोनी संख्या आद्य जिनने वीस हजार ने छ शेंनी जाणवी. अजित जिनना वीस हजार ने चारशें; संभव जिनना ओग णीश हजार ने आठ शें; अभिनंदन जिनना ओगणीश हजार; सुमति जिनना अ ढार हजार ने चार शें; पद्म प्रभना शोल हजार एक शें ने आठ; सुपार्श्वना पं दर हजार ने त्रण शें; चंद्रप्रभना चौद हजार; सुविधिना तेर हजार; शीतल

जिनना बार हजार; श्रेयांस जिनना अग्यार हजार; वासुपूज्यना दश हजार; विमलना नव हजार; अनंत जिनना आठ हजार; धर्म जिनना सात हजार; शांति नाथना छ हजार, कुंथु जिनना पांच हजार ने एक शो, अर जिनना सात हजार ने त्रणशें; मल्लि जिनना बे हजार ने नवशें; मुनिसुव्रत स्वामीना बे हजार; नमि जिनना पांच हजार; नेमि जिनना दोढ हजार; श्रीपार्श्वनाथना अग्यार शें; अने वीर जिनना सातशें वैक्रिय लब्धिवान मुनीओ जाणवा. ॥ ॥ ३४५ ॥ ए अढारमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः– 'वाइत्ति' एटले तीर्थंकरोना वादीओनी संख्यानो ओगणीशमो द्वार कहेछेः– मूलः– सड्ढ छ सया दुवालस, सहस्स बारसय चउसय नहीया; बारेक्कारस सहसा, दस सहसा छ सय पन्नासा. ॥ ३४६ ॥ छन्नउई चुलसीई, छ हत्तरी सट्ठि अट्ठवन्ना य; पन्नासा य सयाणं, सीयाला अट्ठ बायाला. ॥३४७॥ छत्तीसा बत्तीसा, अट्ठावीसा सयाणि चउवीसा; बिसहस्सा सोल सया, चउदस बारस दस सयाइं. ॥ ३४८ ॥ अट्ठ सया छच्च सया, चत्तारि सयाइ हुंति वीरंमि; वाइ मुणीण पमाणं, चउवीसाए जिनवराणं. ॥ ३४९ ॥ अर्थः– राजसभानेविषे प्रतिवादीओनी साथे प्रमाण युक्त भाषण करनारा बार हजारने साडा छ शें वादीओ प्रथम तीर्थंकरना जाणवा. अजितनाथना बार हजार ने चार शें; संभव जिनना बार हजार; अभिनंदन जिनना अग्यार हजार; सुमति जिनना दश हजार ने सा डा छ शें; पद्मप्रभ जिनना नव हजार ने छ शें; सुपार्श्वजिनना आठ हजार ने चार शें; चंद्रप्रभ जिनना सात हजार ने छ शें; सुविधि जिनना छ हजार; शीतल जिनना पांच हजार ने आठ शें; श्रेयांस जिनना पांच हजार; वासुपूज्य जिनना चार हजार ने सात शें; अथवा मतांतरे चार हजार ने बशें पण कहेला छे. वि मल जिनना त्रण हजार ने छशें; अनंत जिनना बत्रीश शें; धर्म जिनना बे ह जार ने आठ शें; शांतिनाथ जिनना चोवीस शें; कुंथु जिनना बे हजार; अरनाथ जिनना शोल शें; मल्लि जिनना चौद शें; मुनिसुव्रतना बार शें; नमिनाथ जिनना एक हजार; नेमिनाथ जिनना आठ शें; श्रीपार्श्व जिनना छ शें अने वीर जिनना चार शें वादी वाद समारंभनेविषे सुरासुरने पण अजय एवा यतिओनुं प्रमाण कह्युं. ॥ ३४९ ॥ ए ओगणीशमो द्वार परिपूर्ण थयो.

अवतरणः– हवे 'अवहित्ति' एटले तीर्थंकरोना अवधि ज्ञानीओनो वीशमो द्वार कहे छेः– मूलः– ओहीनाणि मुणीणं, नउइ चउणवइ छन्नवइ सयाणि;

अट्ठाणवइ सयाइं, इक्कारस दस नव सहस्सा. ॥ ३५० ॥ असीइ चुलसि बहुत्तरि सट्ठी चउपन्न अठ चत्ताला; तेआला छत्तीसा, तीसा पणवीस छवीसा. ॥ ३५१॥ बावीसा अट्ठारस, सोलस पन्नरस चउ दस सयाणि; तेरस साहुण सयाणि, उही नाणीण वीरस्स. ॥ ३५२ ॥ अर्थः—प्रथम जिनना अवधि ज्ञानी मुनि नव हजार जाणवा; अजित नाथना नव हजार ने चार शें; संभव जिनना नव हजार ने छ शें; अभिनंदन जिनना नव हजार ने आठ शें; सुमति जिनना अग्यार हजार; पद्मप्रभ जिनना दश हजार; सुपार्श्व जिनना नव हजार; चंद्रप्रभ जिनना आठ हजार; सुविधि जिनना आठ हजार ने चार शें; शीतल जिनना बोतेर शें; श्रेयांस जिनना छ हजार; वासुपूज्य जिनना पांच हजार ने चार शें; विमल जिनना चार हजार ने आठ शें; अनंत नाथना चार हजार ने त्रण शें; धर्म जिनना त्रण हजार ने छ शें; शांतिनाथ जिनना त्रण हजार; कुंथुनाथ जिनना बे हजार ने पांच शें; अरनाथना बे हजार ने छ शें; मल्लि जिनना बे हजार ने ब शें; मुनिसुव्रतना एक हजार ने आठ शें; नमिनाथना एक हजार ने छ शें; नेमीश्वर भगवानना पंदर शें; श्रीपार्श्व जिनना चउद शें अने चरम जिनना तेर शें अवधि ज्ञानिउ जाणवा. ॥ ३५२ ॥ ए वीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः— हवे 'केवलित्ति' एटले तीर्थंकरोना केवल ज्ञानीओनी संख्यानो एकवीशमो द्वार कहे छेः— मूलः— वीस सहस्सा उसहे, वीसं बावीस अहव अजियस्स; पनरस चउदस तेरस, बारस इक्कारस दसेव. ॥ ३५३ ॥ अड्ढम सत्तेवय, छस्सड्ढा छच्च पंच सड्ढाय; पंचेव अड्ढ पंचम, चउ सहसा तिन्नि य सयाय. ॥ ३५४ ॥ बत्तीस सया अहवा, बावीस सयाइ हुंति कुंथुस्स; अट्ठावीसं बावीस तहय अट्ठारस सयाइं. ॥ ३५५ ॥ सोलस पन्नर दस सय, सत्तेव सया हवंति वीरस्स; एयं केवलि नाणं, मण पज्जव नाण मिन्हिंतु. ॥ ३५६ ॥ अर्थः— ऋषभदेव भगवानना वीस हजार केवली. अजित जिनना वीश हजार अथवा बावीश हजार; संभव जिनना पंदर हजार; अभिनंदनना चौद हजार; सुमति जिनना तेर हजार; पद्मप्रभ जिनना बार हजार; सुपार्श्व जिनना अग्यार हजार, चंद्रप्रभ जिनना दश हजार; सुविधि जिनना साडा सात हजार; शीतल जिनना सात हजार; श्रेयांस जिनना साडा छ हजार; वासुपूज्य जिनना छ हजार; विमल जिनना साडा पांच हजार; अनंत जिनना पांच हजार; धर्म जिनना साडा चार हजार; शांतिनाथ जिनना चार हजार ने त्रण शें, कुंथु जिनना त्रण हजार ने ब शें अ

थवा बे हजार ने बशें; अरजिनना बे हजार ने आठ शें; मल्लि जिनना बावीस शें; मुनिसुव्रत जिनना एक हजार ने आठ शें; नमि जिनना एक हजार ने ब शें; नेमि जिनना दोड हजार; पार्श्वनाथ स्वामीना एक हजार अने वीर जगवानना सात शें; एटले केवलज्ञानवान साधुओनी संख्या समजवी. ए प्रमाणे पूर्वोक्त क्रमे करी तीर्थंकरोना केवलीओनुं प्रमाण कह्युं; हवे मनः पर्यव ज्ञानीओनुं मान कहे बेः— ॥ ३५६ ॥ ए एकवीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः— हवे 'मणनाणित्ति' एटले बावीशमो मनःपर्यव ज्ञानीओनो द्वार कहेबेः— मूलः— बारस सहस्स तिएहं, सय सड्ढा सत्त पंचय दिवड्ढं; एगदस सड्ढ बस्सय, दस सहसा चउ सया सड्ढा. ॥३५७॥ दस सहसा तिन्नि सया, नव दिवढ सया य अठ सहसा य; पंच सय सत्त सहसा, सुविहि जिणे सीयले चेव ॥ ३५८ ॥ ब सहस्स दोन्हि मित्तो, पंच सहस्साय पंच य सयाइं; पंच सहस्सा चउरो, सहस्स सय पंच य प्रहिया. ॥ ३५९ ॥ चउरो सहस्स तिन्नि य, तिन्ने व सया हवंति चालीसा; सहस डुगं पंच सया, इगवन्ना अर जिणंदस्स ॥३६०॥ सत्तरि सयाइ पन्ना, पंच दस सया य बार सय सठा; सहसो सय अद्धठम, पंचेव सयाउ वीरस्स. ॥ ३६१ ॥ अर्थः— आदि जिनना मनः पर्यव ज्ञानी बार हजार ने साडा सात शें; अजित जिनना साडा बार हजार; संजव जिनना बार हजार ने दोड शें; अजिनंदन जिनना अग्यार हजार ने साडा ब शें; सुमति जिनना दश हजार ने साडा चार शें; पद्मप्रज जिनना दश हजार ने त्रण शें; सुपार्श्व जिनना नव हजार ने दोड शें; चंद्रप्रज जिनना आठ हजार; सुविधि जिनना साडा सात हजार; शीतल जिनना साडा सात हजार; श्रेयांस जिनना ब हजार; वासुपूज्य जिनना ब हजार; विमल जिनना साडा पांच हजार; अनंत जिनना पांच हजार; धर्म जिनना साडा चार हजार, शांति जिनना चार हजार; कुंथु जिनना त्रण हजार त्रण शें ने चालीश; अरजिनना अडी हजार ने एकावन; मल्लिजिनना साडा सत्तर शें; मुनिसुव्रतना पंदर शें; नमि जिनना बार शें ने साठ; नेमि जिनना एक हजार; पार्श्वनाथ स्वामीना साडा सात शें अने श्री महावीर स्वामीना पांच शें मनःपर्यव ज्ञानी जाणवा. ॥३६१॥ ए बावीशमो द्वार पूर्ण थयो.

अवतरणः— हवे 'चउदस पुव्वित्ति' एटले तीर्थंकरोना चौद पूर्वने धारण करनारा साधुओनी संख्यानो त्रेवीशमो द्वार कहेबेः— मूलः— चउदस पुव्वि सहस्सा, चउरो अद्धठ माणिय सयाणि; वीसहिय सत्ततीसा, इगवीस सयाय पन्नासा.॥

॥ ३६२ ॥ पनरस चउवीस सया, तेवीस सया य वीस सय तीसा; दो सहस प नरस सया, सय चउदस तेरस सयाइं. ॥ ३६३ ॥ सय बारस एक्कारस, दस नव अठेव छच्च सय सयरा; दसहिअ छच्चेव सया, छच्च सया अठ सठ हिया. ॥ ३६४ ॥ सय पंच अद्ध पंचम, चउरो अद्ध तिन्निय सयाइं; उसभाइ जिणंदा णं, चउदस पुव्वीण परिमाणं. ॥ ३६५ ॥ अर्थः– आदि जिनना चार हजार ने साडा सात शें चौद पूर्वधर; श्रीअजित जिनना त्रण हजार सात शें ने वीश; श्रीसंभव जिनना बे हजार एक शो ने पचाश; श्रीअभिनंदन जिनना दोढ हजार; श्रीसुमतिजिनना बे हजार ने चार शें; श्रीपद्मप्रभ जिनना बे हजार ने त्रण शें; श्रीसुपार्श्व जिनना बे हजार ने त्रीश; श्रीचंद्रप्रभ जिनना बे हजार; श्रीसुविधि जिनना दोढ हजार; श्री शीतल जिनना एक हजार ने चार शें; श्री श्रेयांस जिनना तेर शें; श्री वासुपूज्य जिनना बार शें; श्रीविमल जिनना अग्यार शें; श्रीअनंत जिनना एक हजार; श्रीधर्मजिनना नव शें; श्रीशांति जिनना आठ शें; श्रीकुंथु जिनना छ शें ने शितेर; श्रीअर जिनना छ शें ने दश; श्रीमल्लि जिनना छ शें ने अडसठ; श्रीमुनिसुव्रत जिनना पांच शें; श्रीनमि जिनना साडा चार शें; श्रीनेमि जिनना चार शें; श्रीपार्श्व जिनना साडा त्रण शें; श्रीवीर जिनना त्रण शें; ए पूर्वोक्त ऋषभादि जिनेंद्रोना क्रमे करी चतुर्दश पूर्विओनुं परिमाण कह्युं.

अवतरणः– हवे 'सड्ढित्ति' एटले तीर्थंकरोना श्रावकोनो चोवीशमो द्वार कहेछेः–मूलः– पढमस्स तिन्नि लक्खा, पंच सहस्सा दु लक्ख जा संति; लक्खोवरि अड नउई, तेणउई अठसीई य. ॥ ३६६ ॥ एगासी छावत्तरि, सत्तावन्नाय तह्य पन्नासा; एगुण तीस नवासी, इगुणासि पन्नरस छेव. ॥ ३६७॥ छन्निय सहस्स चउरो, सहस्स नउई सहस्स संतिस्स; तत्तो एगो लक्खो, उवरिं गुणसी य चुलसी य ॥ ३६८ ॥ तेयासी बावत्तरि, सत्तरि इगुणत्तरीय चउसठी; एगुणसठि सहस्सा, सावग्गाणं जिणवराणं. ॥३६९॥ अर्थः–आदि जिनना श्रावक त्रण लक्ष ने पांच हजार; श्री अजित जिनना बे लाख ने अठाणु हजार; श्री संभव जिनना बे लाख ने त्र्याणु हजार; श्री अभिनंदन जिनना बे लाख ने अठ्याशी हजार; श्री सुमति जिनना बे लाख ने एक्याशी हजार; श्री पद्मप्रभ जिनना बे लाख ने छोतेर हजार; श्री सुपार्श्व जिनना बे लाख ने सत्तावन हजार; श्री चंद्रप्रभ जिनना बे लाख ने पचाश हजार; श्री सुविधि जिनना बे लाख ने ओगणत्रीश हजार; श्री शीतल जिनना बे लाख ने नेव्याशी हजार; श्री श्रेयांस जिनना बे लाख ने ओ

गणाशी हजार; श्री वासुपूज्य जिनना बे लाख ने पंदर हजार; श्री विमल जिन ना बे लाख ने आठ हजार; श्री अनंत जिनना बे लाख ने छ हजार; श्री धर्म जिनना बे लाख ने चार हजार; श्री शांति जिनना बे लाख ने नेवु हजार; कुंथु जिनना एक लाख ने ओगणाशी हजार; श्री अर जिनना एक लाख ने चोराशी हजार; श्री मल्लि जिनना एक लाख ने त्याशी हजार; श्री मुनि सुव्रत जिनना एक लाख ने बोतेर हजार; श्री नमि जिनना एक लाख ने सित्तेर हजार; श्री नेमि जिनना एक लाख ने उगणोतेर हजार; श्री पार्श्व जिनना एक लाखने चोसठ हजार; श्री महावीर स्वामीना एक लाख ने ओगणसाठ हजार; एवी रीते चोवीश जिनवरेंद्रना श्रावकोनुं क्रमेकरी प्रमाण जाणवुं॥३६९॥ए चोवीशमो द्वारथयो.

अवतरणः–हवे 'सड्ढीणंत्ति' एटले तीर्थंकरोनी श्राविकाउनी संख्यानो पचीशमो द्वार कहेछेः–मूलः–पढमस्स पंच लक्खा, चउपन्न सहस तयाणु पण लक्खा; पणयालीस सहस्सा, छ लक्ख छत्तीस सहसा य ॥ ३७०॥ सत्तावीस सहस्सा, हिय लक्खा पंच पंच लक्खा य; सोलस सहस्स अहिया, पण लक्खा पंचउ सहस्सा ॥ ३७१ ॥ उवरिं चउरो लक्खा, धम्मोजा उवरि सहस तेणवई; इग नवई इगहुत्तरि, अमवन अडयाल छत्तीसा. ॥ ३७२ ॥ चउवीसा चउदस तेरसेव तत्तो तिलक्ख जावीरो; तडुवरि तिनवइगासी, बिसत्तरी सयरि पन्नासा. ॥ ३७३ ॥ अमयाला छत्तीसा, इगु चत्तद्वार सेवय सहस्सा; सड्ढीण माण मेयं, चउवीसाए जिणवराणं ॥३७४॥ अर्थः--तत्र प्रथम श्री आदिजिननी श्राविकाओ पांच लाख ने चोपन हजार जाणवी. श्री अजित जिननी पांच लाख ने पिसतालीश हजार; संभव जिननी छ लाख ने छत्रीश हजार; श्री अभिनंदन जिननी पांच लाख ने सत्यावीश हजार; श्री सुमति जिननी पांच लाख ने शोल हजार; श्री पद्मप्रभ जिननी पांच लाख ने पांच हजार; श्री सुपार्श्व जिननी चार लाख ने त्याणु हजार; श्री चंद्रप्रभ जिननी चार लाख ने एकाणु हजार; श्री सुविधि जिननी चार लाख ने एकोत्तेर हजार; श्री शीतल जिननी चार लाख ने अठावन हजार; श्री श्रेयांस जिननी चार लाख ने अमतालीश हजार; श्री वासुपूज्यनी चार लाख ने छत्रिस हजार; श्री विमल जिननी चार लाख ने चोवीश हजार; श्री अनंत जिननी चार लाख ने चौद हजार; श्री धर्म जिननी चार लाख ने तेर हजार; श्री शांति जिननी त्रण लाख ने त्याणु हजार; श्री कुंथु जिननी त्रण लाख ने एक्याशी हजार; श्री अर जिननी त्रण लाख ने बोत्तेर हजार; श्री मल्ली जीननी त्रण लाख ने शित्तेर हजार. श्री मुनिसुव्रत जिननी त्रणला

ख ने पचाश हजार; श्री नमि जिननी त्रण लाख ने अमतालीश हजार; श्री नेमि जिननी त्रण लाख ने उत्रीश हजार; श्री पार्श्व जिननी त्रण लाख ने ओगणचालीश हजर; अने श्रीवीर जिननी त्रण लाख ने अढार हजार; ए रीते चोवीश जिनेंद्रोनी श्राविकाओनुं प्रमाण कह्युं. ॥ ३७४ ॥ पचीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः— हवे 'जिण जरकत्ति' सर्व तीर्थंकरोना यक्षोनां नामोनो बवीशमो द्वार कहे छेः— मूलः— जक्क गोमुह मह् जक्क तिमुह ईसर सतंबरू कुसुमो; मायंगो विजया जिय, बंनो मणुउसुरकुमारो. ॥ ३७५ ॥ छम्मुह पयाल किन्नर, गुरुम्हो गंधव तह्य जरिकंदो; कूबर वरुणो निउम्ही, गोमेहो वामण मयंगो. ॥३७६

अर्थः— नक्तिनेविषे दक्ष एवा तीर्थंकरोना यक्ष तेमां प्रथम श्री आदि जिनेंद्रनो गोमुख नामे यक्ष तेनो सुवर्णना जेवो वर्ण कह्यो छे, गज वाहन, चार भुजाउ, वरदाक्ष मालिका युक्त, बे दक्षिण हस्तोनेविषे मातुलिंग अने बे वाम हस्त पाशकान्वित छे. श्री अजित जिननो महा नामनो यक्ष, तेना चार मुख, श्यामवर्ण, करींद्र वाहन, आठ हाथ; वरद मुग्नराक्ष सूत्र पाशक अन्वित दक्षिण दिशाना चार हाथ अने वाम दिशाना चार हाथो बीजपूरक अनय अंकुश शक्तियुक्त जाणवा. श्रीसंनव जिनना यक्षनुं नाम त्रिमुख; तेना त्रण मुख छे, त्रण नेत्र, श्याम वर्ण, मयूर वाहन, ब भुजाउ तेमां नकुल गदानय युक्त, दक्षिण कर कमल त्रय; अने मातुलिंग नागाक्षसूत्रयुक्त वामपाणिपद्मत्रय जाणवां. श्री अनिनंदन जिनना यक्षनुं नाम ईश्वर; श्याम कांति, गजवाहन, चार भुजाउ, तेमां दक्षिणना करकमलद्वय मातुलिंगाक्षसूत्रयुक्त अने वामपाणिद्वय नकुलांकुशान्वित जाणवा. श्रीसुमति जिनना यक्षनुं नाम तुंबरु, श्वेतवर्ण, गुरुम्ह वाहन. चार भुजाउ, तेमां दक्षिणना बे हाथ वरद शक्तियुक्त, अने वामपाणिद्वय गदानागपाश युक्तजाणवां. श्री पद्मप्रन जिनना यक्षनुं नाम कुसुम, नीलवर्ण, कुरंग वाहन, चतुर्नुजा, तेमां दक्षिणनी बे फलानय युक्त, वाम दिशानी बे नकुलाक्षसूत्रयुक्त कही छे. श्री सुपार्श्व जिनना यक्षनुं नाम मातंग, नील वर्ण, गजवाहन, चतुर्नुजा, तेमांनी बे दक्षिण भुजा बिल्व पाशयुक्त अने बे वाम भुजाउ नकुलांकुश युक्त छे. श्रीचंद्रप्रन जिनना यक्षनुं नाम विजय, हरित वर्ण, त्रण लोचन, हंसवाहन, चार भुजाउ तेमां दक्षिणनी बेमां चक्र तथा वाम बाजुनी बेमां मुग्नल छे एम जाणवुं. श्री सुविधि जिनना यक्षनुं नाम अजित, श्वेतवर्ण, कूर्म वाहन, चार हाथ, तेमां दक्षिणना बे मातुलिंगाक्षसूत्रयुक्त, अने वाम हस्तद्वय नकुल कुंतकालयुक्त जाणवा. श्रीशीत

ल जिनना यक्षनुं नाम ब्रह्मा, एनां चार मुख, त्रण नेत्र, सितवर्ण पद्मासन, अ ष्ट भुजाउं तेमां दक्षिण पाणि चतुष्टय मातुलिंग मुजर पाशका नय युक्त, तथा वाम पाणि चतुष्टय नकुल गदा कुशाक्ष सूत्रयुक्त जाणवा. श्रीश्रेयांस जिनना य क्षनुं नाम मनुज, मतांतरे ईश्वर नाम पण कहेलुं छे, धवल वर्ण, त्रण नेत्रो, वृष भ वाहन, चतुर्भुजा, तेमां दक्षिण पाणि द्वय मातुलिंग गदायुक्त तथा वाम पाणि द्वय नकुलाक्ष सूत्रयुक्त जाणवा. श्रीवासुपूज्य जिनना यक्षनुं नामअसुर कुमार, श्वेत वर्ण, हंसवाहन, चतुर्भुजा तेमां दक्षिण पाणि द्वय मातुलिंग बाणान्वित तथा वाम पाणिद्वय नकुल धनुर्युक्त कह्या छे. श्री विमल जिनना यक्षनुं नाम षण्मुख, श्वेतवर्ण, शिखि वाहन, द्वादश भुजा, तेमां दक्षिण पाणिषट्क फल चक्र बाण खड्ग पाशाक्ष सूत्रयुक्त अने वाम पाणीषट्क नकुल चक्र धनु फलक अंकुश ने अनय युक्त जाणी लेवां. श्रीअनंत जिनना यक्षनुं नाम पाताल, त्रण मुख, रक्त वर्ण, मकर वाहन, छ भुजाउं, तेमां दक्षिण पाणित्रय पद्म, खड्ग तथा पाशयुक्त अने वाम पाणित्रय नकुल तथा फलकाक्ष सूत्र युक्त जाणवां. श्रीधर्म जिनना यक्षनुं नाम किन्नर, त्रण मुख, रक्तवर्ण, कूर्मवाहन, छ भुजाओ तेमांनी दक्षिण त्रण बीज पूरक गदा तथा अनय युक्त अने वाम भुजा त्रण नकुल प द्माक्ष नानायुक्त जाणवी. श्रीशांतिनाथ जिनना यक्षनुं नाम गरुड, वराह वाह न, क्रोड वदन, श्याम रुचि, चार भुजा तेमां दक्षिणकरद्वय बीज पूरकने पद्म युक्त अने वामकरद्वय नकुल अने अक्षयुक्त छे. श्रीकुंथुजिनना यक्षनुं नाम गं धर्व, श्यामवर्ण, हंस वाहन, चतुर्भुज तेमां दक्षिण बे पाणिमां वरद ने पाशक छे; अने वाम बे हाथमां मातुलिंग ने कुश छे. अरजिनना यक्षनुं नाम यक्षेंद्र, छ मुख, त्रण नेत्र, श्यामवर्ण, शंख वाहन, बार भुजा तेमां दक्षिण हाथ, बीज पूरक बाण खड्ग मुजर पाशक ने अनय युक्त छे; अने वाम हाथ, नकुल धनु फलक शूल अंकुश अक्ष सूत्र युक्त छे. श्री मल्लिजिनना यक्षनुं नाम कूबर चार मुख, इंद्रायुध वर्ण, गज वाहन, अष्ट भुजा तेमां दक्षिण हाथमां वरद परशु शू ल ने अनय छे अने वाम हाथमां बीजपूरक शक्ति मुजर अक्षसूत्र ने अनय छे. कोई कूबरने बदले कुबेर पण कहेछे. श्रीमुनिसुव्रतना यक्षनुं नाम वरुण, चतु र्मुख, त्रण नेत्र, श्वेत वर्ण, वृषभ वाहन, जटामुकुट भूषित, आठ भुजा तेमां दक्षिण हाथमां बीजपूरक गदा बाण शक्ति छे अने वाम हाथमां नकुल पद्मधनु परशु छे. श्री नमिजिनना यक्षनुं नाम भृकुटी चार मुख, त्रण नेत्र, सुवर्णवर्ण

वृषन वाहन, आठ भुजा तेमां दक्षिण करमां बीजपूरक शक्ति मुजर ने अनय ठे अने वाम करमां नकुल परशु वज्र ने अक्षसूत्र ठे. श्री नेमिजिनना यक्षनुं नाम गोमेधो, त्रण मुख, श्याम कांति, पुरुष वाहन, ठ भुजा तेमां दक्षिण हाथमां मातुलिंग परशु अने चक्र ठे; अने वाम हाथमां नकुल शूल ने शक्ति ठे. श्री पार्श्वजिनना यक्षनुं नाम वामन, मतांतरे पार्श्व पण नाम ठे. गजमुख, सर्पफणा मंभित मस्तक, श्याम वर्ण, कूर्म वाहन, चतुर्मुख, बे भुजा तेमां दक्षिण हाथमां बीजपूरक सर्प ठे अने वाम हाथमां नकुल सर्प ठे. श्रीमहावीर जिनना यक्षनुं नाम मातंग, श्यामवर्ण, गज वाहन, बे भुजा तेमां दक्षिणकरमां नकुल ने वाम करमां बीजपूरक ठे. ॥ ३७६ ॥ ए ठवीशमो द्वार कह्यो.

अवतरणः– हवे 'जिणदेवीउत्ति' जिन देवी एटले जे तीर्थंकरोनी देवीउं शासनाधिष्ठायिका तेओनां नामोनो सत्यावीशमो द्वार कहेठेः–

मूलः– देवीओ चक्केसरि, अजिआ डुरिआरि कालि महकाली; अच्चुय संता जाला, सुतारया सोय सिरिवच्छा. ॥ ३७७ ॥ पवर विजयंकुसा पन्न यत्ति निव्वाणि अच्चुया धरणी; वइरुट्ट छुत्त गंधारि अंब पउमावई सिद्धा. ॥ ३७८ ॥ अर्थः– तत्र आद्य जिननी देवीनुं नाम चक्रेश्वरी मतांतरे सणा प्रतिचक्रा, सुवर्ण वर्णा, गरुड वाहन, अष्ट भुजा, दक्षिण हाथमां वरद बाण चक्र ने पाश ठे अने वाम करमां धनुष्य वज्र चक्र ने अंकुश ठे. श्री अजित जिननी देवीनुं नाम अजिता, गौर वर्ण, लोहासनाधिरूढ, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां वरद ने पाशक ठे, अने वाम हाथमां बीजपूर ने अंकुश ठे. श्री संभव जिननी देवीनुं नाम डुरितारि, गौर वर्ण, मेघ वाहन, चतुर्भुज; दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र ठे अने वाम हाथमां फल ने अनय ठे. श्रीअभिनंद जिननी देवीनुं नाम काली, श्याम वर्ण, पद्मासन, चतुर्भुजा; दक्षिण हाथमां वरद ने पाश अने वाम हाथमां नाग ने अंकुश ठे. श्री सुमति जिननी देवीनुं नाम महाकाली सुवर्ण वर्ण, पद्मासन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां वरद ने पाश अने वाम हाथमां मातुलिंग ने अंकुश ठे. श्रीपद्मप्रभ जिननी देवीनुं नाम अच्युता, मतांतरे श्यामा नाम पण ठे. श्याम वर्ण, नर वाहन, चतुर्भुज; दक्षिण हाथमां वरद ने बाण अने वाम हाथमां धनुष्य ने अनय ठे. श्री सुपार्श्व जिननी देवीनुं नाम शांता, सुवर्णवर्ण, गज वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र ठे अने वाम करमां शूल ने अनय ठे. श्री चंद्रप्रभ जिननी देवीनुं नाम ज्वाला, मतांतरे भृकुटी नाम पण ठे. पीतवर्ण, व

राजकाख्य जीव विशेष वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां खडग ने मुद्गर अने वाम हाथमां फलक अने परशु छे. श्री सुविधि जिननी देवीनुं नाम सुतारिका, गौर वर्ण, वृषभ वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र छे अने वाम करमां कलश ने अंकुश छे. श्री शीतल जिननी देवीनुं नाम अशोका, नीलवर्ण, पद्मासन, चतु र्भुज; दक्षिण हाथमां वरद ने पाश छे अने वाम हाथमां फलक ने अंकुश छे. श्री श्रेयांस जिननी देवीनुं नाम श्रीवत्सा, मतांतरे मानवा नाम पण छे. गौर वर्ण, सिंह वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण बे हाथोमां वरद अने मुद्गर छे अने वाम बे हाथोमां कलश ने अंकुश छे. श्री वासुपूज्य जिननी देवीनुं नाम प्रवरा, मतांतरे चं द्रा पण नाम छे. श्यामवर्ण, अश्व वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण बे हाथमां वरद ने श क्ति छे अने वाम हाथमां पुष्प ने गदा छे. श्रीविमल जिननी देवीनुं नाम विज या, मतांतरे विदिता, हरित वर्ण, पद्मासन, चतुर्भुज, दक्षिण बे हाथोमां बाण ने पाश अने वाम बे हाथोमां धनुष्य ने नाग छे. श्री अनंत जिननी देवीनुं नाम अं कुशा, गौरवर्ण, पद्मासन, चतुर्भुज; दक्षिण हाथमां खड्ग ने पाश छे अने वाम हाथमां फलक ने अंकुश छे. श्रीधर्म जिननी देवीनुं नाम पन्नगा, मतांतरे कंदर्पा गौर वर्ण, मत्स्य वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां उत्पल ने अंकुश अने वाम हाथमां पद्म ने अभय छे. श्रीशांतिनाथ जिननी देवीनुं नाम निर्वाण, सुवर्ण कां ति, पद्मासन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां पुस्तक अने उत्पल, अने वाम हाथमां कमंडलु ने कमल छे. श्रीकुंथुजिननी देवीनुं नाम अच्युता, मतांतरे बला क नकछवि, मयूरवाहन चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां बीजपूरक ने शूल अने वाम हा थमां मुषंढी ने पद्म छे. श्री अरजिननी देवीनुं नाम धारणी, नीलवर्ण, पद्मास न, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां मातुलिंग ने उत्पल अने वाम हाथमां पद्म ने अ क्षसूत्र छे. श्रीमल्लि जिननी देवीनुं नाम वैराट्या, कृष्णवर्ण, पद्मासन, चतुर्भुज दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र अने वाम हाथमां बीजपूरक ने शक्ति छे. श्री मुनिसुव्रत जिननी देवीनुं नाम अछुप्ता. मतांतरे नरदत्ता; कनकरुचि, भद्रासन चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां वरद ने अक्षसूत्र अने वाम हाथमां बीजपूरक ने शूल छे. श्रीनमि जिननी देवीनुं नाम गांधारी, श्वेतवर्ण, हंस वाहन, चतुर्भुज, दक्षि ण हाथमां वरद ने खड्ग अने वाम हाथमां बीजपूरक ने कुंत छे. श्रीनेमि जिननी देवीनुं नाम अंबा, कनककांति, सिंह वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां आम्रलुंबी ने पाश वाम हाथमां चक्र ने अंकुश छे. श्रीपार्श्व जिननी देवीनुं

नाम पद्मावती, कनक वर्ण, कुर्कुट सर्प वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां पद्म ने पाश वाम हाथमां फल ने अंकुश छे. श्री वीर जिननी देवीनुं नाम सिद्धायिका, हरितवर्ण, सिंह वाहन, चतुर्भुज, दक्षिण हाथमां पुस्तक ने अभय अने वाम हाथमां बीजपूरक ने वीणा छे, अत्र सूत्रकारे यक्ष अने देवीउनां केव ल नामज कह्यां, पण नयन वदन वर्णादि स्वरूप कह्यां नथी ते अमे शिष्यना हितने अर्थे निर्वाणकलिकादि शास्त्रानुसारे करी किंचत् तदीय मुख, वर्ण, प्रहर णादिकनुं स्वरूप कह्युं. ॥ ३७८ ॥ ए सत्यावीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः–हवे ' तणुमाणंति ' एटले तीर्थंकरोना शरीरोना प्रमाणनो अठ्या वीशमो द्वार कहेछेः– मूलः–पंच धणुस्सय पढमो, कमेण पन्नासहीण जा सुविही दसहीणजा अणंतो, पंचूणा जाव जिण नेमि ॥ ३७९ ॥ नव हत्थ पमाणो पा,स सामिओ सत्त हत्थ जिण वीरो; उस्सेह अंगुलेणं, सरीरमाणं जिण वराणं.॥३८०॥ अर्थः– श्री आद्य जिनना शरीरनुं प्रमाण पांच शें धनुष्य; पछी श्री अजित जिनथी ते सुविधि जिन सुधि क्रमेकरी पचाश पचाश धनुष्य उछुं देहप्रमाण जाणवुं. एनो फलितार्थः– श्री अजित जिनना शरीरनुं प्रमाण साडा चार शें धनुष्योनुं, संभव, चार शें धनुष्य, श्री अभिनंदन साडा त्रण शें; श्री सुमति जिन त्रण शें; श्री पद्मप्रभ जिन, अडी शें; सुपार्श्व जिन ब शें; श्रीचंद्रप्रभ दोड शें; श्री सुविधि जि न एक शो. सुविधि नंतर अनंत जिनसुधी जेटला तीर्थंकरो छे, तेओनां शरीरोनुं प्रमाण क्रमेकरी दश दश धनुष्य उछुं करवुं. एटले सुविधिजिनना शरीरना प्र माणमांथी दश धनुष्यो उछां कस्याथी शीतल जिनना देहनुं मान नेवु धनुष्य छे. श्रेयांस जिन एंशी; श्री वासुपूज्य जिन सित्तेर; श्री विमल जिन साठ; अनं तजिन पचाश; हवे अनंत जिन पछी नेमि जिनसुधि जेटला तीर्थंकरो छे, तेटला ना शरीरोनुं प्रमाण अनुक्रमे पांच पांच धनुष्य उछुं करवुं. जेम के, अनंत जिन ना देहमानमांथी पांच धनुष्य उछुं कस्याथी श्री धर्म जिनना देहनुं मान पिशता लीश धनुष्य जाणवुं. श्री शांतिनाथ चालीश; श्री कुंथु पात्रीश; श्री अरजिन त्री श; श्री मल्लि जिन पचीश; श्री मुनिसुव्रत जिन वीश; श्री नमि जिन पंदर, श्री नेमि जिन दश; श्री पार्श्वजिनना शरीरनुं प्रमाण नव हाथ; अने श्री वीर जिन ना शरीरनुं प्रमाण सात हाथ जाणवुं. ए प्रकारे उत्सेधांगुलेकरी श्री जिनवरना शरीरनुं प्रमाण जाणवुं. ॥ ३८० ॥ ए अठ्यावीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'लछणत्ति, एटले श्री तीर्थंकरोनां लक्षणोनो उगणत्रीशमो

द्वार कहेछेः– मूलः– वसह गय तुरय मक्कड, कुंचो कमलंच सत्थिउ चंदो; मयर सिरिवच्छ गंमय, महिस वराहो य सेणेय. ॥ ३७१ ॥ वज्जं हरिणो छगलो, नंदा वत्तो य कलस कुम्मो य. नीलुप्पल संख फणी, सीहोअ जिणाण चिन्हाइंः॥३७२॥ अर्थः– वृषभ, गज, तुरंग, मर्कट, क्रौंच, कमल, स्वस्तिक, चंद्र, मकर, श्रीवत्स, गंमक, महिष, वराह, शीचाणो, वज्र, हरिण, छगल, नंदावर्त्त, कलश, कूर्म, नीलो त्पल, शंख, सर्प, सिंह, ए क्रमेकरी चोवीसे तीर्थंकरोनां चिन्ह जाणवां ॥ ३७२॥ ए उंगणत्रीशमो द्वार पूर्ण थयो.

अवतरणः– हवे 'वन्नाइति' एटले तीर्थंकरोना वर्णनो त्रीशमो द्वार कहेछेः– मूलः– पउमाभवासुपुज्जा, रत्ता ससि पुप्फदंत ससिगोरा; सुव्वय नेमी काला, पासो मल्ली पियंगाभा. ॥ ३७३ ॥ वरतवियकणयगोरा, सोलस तिछंकरा मुणे यव्वा; एसो वन्नविभागो, चउवीसाए जिणंदाणं. ॥ ३७४ ॥ अर्थः– पद्मप्रभ ने वासुपूज्य ए बन्नेनो वर्ण जासूना फूलना जेवो रातो छे; श्रीचंद्रप्रभ ने सुविधिनो वर्ण चंद्रनी पठे गौर छे; श्रीमुनिसुव्रत ने नमिनो वर्ण इंद्रनील मणिना जेवो कृष्ण छे; श्रीपार्श्व ने मल्लिनो वर्ण प्रियंगुपुष्पना जेवो नील छे. एओना शिवाय बाकी रहेला शोल तीर्थंकरो तपावेला सुवर्णना जेवा वर्ण वाला जाणवा. ए चो वीश तीर्थंकरोनो वर्णविभाग जाणवो. ॥ ३७४ ॥ ए त्रीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'वयपरिवारोत्ति' एटले जे तीर्थंकरे जेटला परिवारनी साथे दीक्षा लीधी ते व्रत परिवारनो एकत्रीशमो द्वार कहेछेः– मूलः– एगो भगवं वीरो, पासो मल्ली य तिहि तिहि सएहिं; भगवंपि वासुपुज्जो, छहिं पुरिस सएहि निरकंतो. ॥ ३७५ ॥ उग्गाणं भोगाणं, रायन्नाणं च खत्तियाणं च; चउहिं सहसेहि उसभो, सेसाउ सहस्स परिवारा. ॥ ३७६ ॥ अर्थः– तत्र एक श्री वर्द्धमान स्वामीए कोईनी साथे व्रत ग्रहण कर्युं नथी; भावथी तथा द्रव्यथी एक लाएज दीक्षा लीधी छे. श्री पार्श्वनाथ भगवान तथा श्री मल्लि जिन एमणे त्रण त्रण शे परिवारनी साथे दीक्षा लीधी छे. तेमां श्री मल्लि जिन स्त्रीउ तथा पुरु षो प्रत्येक त्रण त्रण शेनी साथे मली एटले छ शेनी साथे मली ने प्रव्रजित थ या छे, अने आ सूत्रकारे तो त्रण शेनी साथे दीक्षा लीधी एम कह्युं छे. तेमां के वल पुरुष अथवा स्त्रीउनुं ज गृहण करेलुं छे. बीजो पक्ष छतां पण कांई विव क्षा नथी एवो संप्रदाय छे. ए विषे स्थानांगटीकामां पण कह्युं छे के, मल्लि जि नं स्त्रिशतैरपि त्रिभिरिति' एटले मल्लि जिने त्रण शो स्त्रीउनी साथे दीक्षा लीधी

छे: श्री वासुपूज्य जगवान छ शे पुरुषोनी साथे आ संसार कांतारथी निष्क्रांत थया छे. प्रव्रजित इति यावत्. श्री ऋषज देव जगवान उग्गाणं जोगाणं एटले उग्र जोग राजन्य क्षत्रिय स्थानीय अनुक्रमे कोटवालसमान गुरुसमान मित्रसमान सामंतसमान एवा सर्व संख्या चार हजार जनोनी साथे संसारथी निष्क्रांत थया छे, एटले व्रततुं गृहण कर्युं. शेष एटले वीर, पार्श्व, मल्लि, वासुपूज्य तथा नाजेय व्यतिरिक्त अजितादिक उंगणीश तीर्थंकरो प्रत्येक एक एक हजार पुरुषोनी साथे प्रव्रजित थया छे ॥ ३०६ ॥ ए एकत्रीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'सव्वाउयंति' एटले सर्व तीर्थंकरोना आउखानां प्रमाणनो बत्रीशमो द्वार कहे छेः– मूलः– चउरासीइ बिसत्तरि, सठी पन्नास मेव लरकाई॥ चत्ता तीसा वीसा, दस दो एगं च पुव्वाणं. ॥३०७॥ चउरासीई बाव,त्तरी य सठी य होइ वासाणं; तीसा य दस य एगं, एवं मेए सय सहस्सा. ॥ ३०८ ॥ पंचाणउइ सहस्सा, चउरासीई य पंचवन्ना य, तीसा य दस य एगिं, सयं च बावत्तरी चेव. ॥ ३०९ ॥ अर्थः– तत्र प्रथम जिनतुं आयुष्य चोराशी लाख पूर्व, श्रीअजित जिनतुं बोतेर लाखपूर्वतुं, श्रीसंजव जिनतुं साठ लाखपूर्व, श्रीअजिनंदन जिनतुं आयुष्य पचाश लाखपूर्व, श्रीसुमति जिनतुं चालीश लाखपूर्व; श्रीपद्मप्रज जिनतुं आयुष्य त्रीश लाखपूर्व; श्रीसुपार्श्व जिनतुं आयुष्य वीश लाख पूर्व; श्री चंद्रप्रज जिनतुं आयुष्य दश लाख पूर्व; श्री सुविधि जिनतुं आयुष्य बे लाख पूर्व; श्री शीतल जिनतुं आयुष्य एक लाख पूर्व; तथा श्री श्रेयांसजिनतुं आयुष्य चोराशी लाख वर्ष; श्री वासुपूज्य जिनतुं आयुष्य बोतेर लाख वर्ष; श्री विमल जिनतुं आयुष्य साठ लाख वर्ष; श्री अनंत जिनतुं आयुष्य त्रीश लाख वर्ष; श्री धर्म जिनतुं आयुष्य दश लाख वर्ष; श्री शांति जिनतुं आयुष्य एक लाख वर्ष श्रीकुंथु जिनतुं आयुष्य पचाणु हजार वर्ष; श्री अर जिनतुं आयुष्य चोराशी हजार वर्ष; श्री मल्लि जिनतुं आयुष्य पंचावन हजार वर्ष; श्री मुनिसुव्रत जिनतुं आयुष्य त्रीश हजार वर्ष; श्रीनमि जिनतुं आयुष्य दश हजार वर्ष; श्री नेमि जिनतुं आयुष्य एक हजार वर्ष; श्री पार्श्व जिनतुं आयुष्य एक शो वर्ष; अने श्रीवीर जिनतुं आयुष्य बोतेर वर्षनु जाणवुं. ३०९ ए बत्रीशमो द्वार पूरोथयो.

अवतरणः– हवे 'सिवगण परिवारोत्ति' एटले जे जगवंत जेटला साधुओनी साथे निर्वाण पाम्या तेनो, तेत्रीशमो द्वार कहे छेः– मूलः– एगो जगवं वीरो, तेत्तीसाए सह निव्वुओ पासो, छत्तीसेहिं पंचहि, सएहिं नेमिउ सिद्धि गओ. ॥ ३१०॥

पंचहि समण सएहिं, मल्ली संतीउ नव सएहिंति, अठ सएणं धम्मो, सएहि छहि वासुपुज्ज जिणो ॥ ३०१ ॥ सत्त सहस्साणं तइ जिणस्स विमलस्स छ स्सहस्साइं, पंच सयाइ सुपासे, पउमाने तिन्नि अठ सया. ॥३०२॥ दसहि सहस्सहि उसहो, सेसाउ सहस्स परिवुडा सिद्धा; तिछयराउ डुवालस, परिनिठिय अठ कम्म नरा. ॥३०३॥ अर्थः– तत्र एक नगवन् श्री वीर जिन एकाकी छतां निर्वाणे गया. श्री पार्श्व जिन तेत्रीश साधुओनी साथे निर्वृत्त थयाछे. श्री नेमि जिन पांच शें ने छत्रीश साधुओनी साथे मोक्षे गया. श्री मल्ली जिन पांच शें साधुओनी साथे मोक्ष पाम्या. श्री शांतिजिन नव शें साधुओनी साथे निर्वाण पाम्या. श्री धर्म जिन एकशेने आठ साधुओनी साथे मुक्ति पाम्या. श्रीवासुपूज्य जिन छ शें साधुओनी साथे सिद्धताने पाम्या छे. श्रीअनंत जिन सात शें साधुओनी साथे मोक्षे पोहोता. श्री विमल जिन छ शें साधुउनी साथे मोक्ष पाम्या. श्री सुपार्श्व जिन पांच शें साधुउनी साथे सिद्ध थया. श्री पद्मप्रन जिन त्रन शें ने आठ साधुउनी साथे मोक्षे पहोता कोई आचार्य कहे छे के, आठ शें ने त्रण साधुउनी साथे मोक्ष पाम्या. ए बन्ने मत आवश्यकनी टिप्पणमां छे. वली कोई आचार्य कहे छे के, त्रण शें ने चोवीश साधुउनी साथे मोक्ष पाम्या छे. तत्व तो केवली जाणे. श्री ऋषन जिनेश्वर दश हजार साधुओनी साथे परमानंद पद पाम्या. तेमज श्रीअजित जिन, श्रीसंनव जिन, श्री अनिनंदन जिन, श्री सुमति जिन' श्री चंद्रप्रन जिन, श्री सुविधि जिन, श्री शीतल जिन, श्री श्रेयांस जिन, श्रीकुंथु जिन, श्री अर जिन, श्री मुनिसुव्रत जिन, तथा श्री नमि जिन, ए द्वादश तीर्थंकर प्रत्येक एक हजार साधुओना परिवार सहित अष्ट कर्मोथी परिनिष्ठित थया थका सिद्धताने पाम्या छे. ॥ ३०१ ॥ ३०२ ॥ ३०३ ॥ ए तेत्रीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे ' निव्वाण गमण गणत्ति ' एटले किया जिनेश्वर किया गामे मोक्षने पाम्या तेनो चोत्रीशमो द्वार कहेछेः– मूलः–अठावय चंपुज्जिय, पावा सम्मेय सेलसिहरेसु; उसन वसुपुज्ज नेमी, वीरो सेसाय सिद्धिगया.॥३०४॥ अर्थः– श्री ऋषन नगवान अष्टापदनेविषे, श्री वासुपूज्य चंपा नगरीनेविषे, श्री नेमीश्वर उज्जयंतगिरि ते गिरनारनेविषे, श्री वीर नगवान अपापा नगरीनेविषे, अने बाकीना वीश जिनेश्वर सम्मेत शिखरनेविषे मोक्षे गया छे. ॥३०४॥ ए चोत्रीशमो द्वार

अवतरणः–हवे 'जिणंतराइंति' एटले प्रथम तीर्थंकर थया पछी केटला काले बीजो तीर्थंकर थयो तेनां अंतरना कालमाननो पांत्रीसमो द्वार कहेछेः– मूलः–

एत्तो जिणंतराइं, वोछ किल उसन्न सामिणो अजिउ; पन्नास कोमि लरके,हि साग राणं समुप्पन्नो. ॥३९५॥ तीसाइ संनव जिणो, दसहिं अनिनंदनो जिण वरिंदो; न वहिं सुमइ जिणिंदो, उप्पन्नो कोडि लरकेहिं. ॥३९६॥ नउई अ सहस्सेहिं, कोमीणं वोलआण पउमानो; नवहि सहस्सेहि तउ, सुपास नामो समुप्पन्नो. ॥३९७॥ कोमी सएहि नवहिं, जाउ चंदप्पहो जिणाणंदो; नउई सागर कोमिहि सुविहि जिणो देसिओ समए ॥३९८॥ सीयल जिणो महप्पा, तत्तो कोडीहि नवहि निद्दि हो; कोमीए सेअंसो, कणाइ इमेण कालेणं. ॥३९९॥ सागर सएण एगे, ण तहय ठावट्ठि वरिस लरकेहिं; ठवीसाइ सहस्से,हि तउपरे अंतरे सुत्ति. ॥ ४००॥ चउप न्ना अयरेहिं, वसुपुज्ज जिणो जगुत्तमो जाउ, विमलो विमल गुणोहो, तीस हि अयरेहि रयरहिउ ॥ ४०१॥ नवहि अयरेहि णंतो, चउहि धम्मो य धम्म धुर धवलो; तिहि कणेहिं संती, तिहि चउ नागेहि पलियस्स ॥४०२॥ नागेहि दोहि कुंथु, पलियस्स अरोउ एग नागेणं; कोडि सहस्सूणेणं, वासाण जिणेसरे नणि उ ॥४०३॥ मल्ली तिसल्लरहिउ, जाओ वासाण कोमिसहसेण; चउपन्न वास लरकेहि सुव्वउ सुव्वउ सिद्धा. ॥४०४॥ जाउ ठहि नमि नाहो, पंचहि लरकेहि जि णवरो नेमि; पासो अद्धठम सय, समहिय तेसीइ सहसेहिं. ॥४०५॥ अढ्ढाइज्ज सए हिं, गएहि वीरो जिणेसरो जाउ; डुसम अइ दूसमाणं, दोएहपि डुन्नत्त सहसेहिं. ॥४०६ ॥ पुव्वाइ कोडा कोमी, उसह जिणाओ इमेण कालेण; नणिअं अंतर दारं, एयं समयाणुसारेण. ॥ ४०७॥ अर्थः—जिनना निर्वाण स्थान पछी जिनोनां अंतर हुं कहुं बुंः— श्री रुषन जिन पछी श्री अजित जिन पचास लाख कोमी सागरोप म काल गया पछी समुप्पन्न एटले सिद्ध थया पण समुप्पन्न एटले उत्पन्न थया एवो अर्थनथी; अहीं रुषन स्वामी इत्यादि पदोनेविषे अवध्यर्थे पंचमी, ते अवधि बे प्रकारनो छे. अनिविधि ने मर्यादा. तेमां जो अनिविधिनेविषे पंचमी राखीने समुत्पन्न ए शब्दनो जात एटले थयो एवो अर्थ करिये तो रुषन स्वामि ना जन्म कालथी यथोक्त अजितादिना जन्म कालनुं मान थशे, तेथी रुषन स्वा मिना सर्व कालमानथी अधिक डुःषम सुषमारकना नेवाशी पक्ष बाकी रह्या छतां श्री महावीर स्वामीनी उत्पत्ति प्रसक्त थशे, अने आगममां तो अन्यूनाधिक ने व्याशी पक्ष बाकी छतां श्री महावीर स्वामीनी सिद्धि कही छे. माटे आगम विरोध प्रसंग आवशे. तेथी अहीं अनिविध्यर्थक पंचमी नथी, किंतु मर्यादानेविषे छे. ते मां पण समुत्पन्न एटले जात एवो अर्थ कस्रो तो यथोक्त जिनांतर कालमाने करी

नेज चतुर्थारक परिपूर्ण थायछे. वली अजितादि जे त्रेवीश तीर्थंकर छे तेओनुं सर्व आयुष्य कालमान जिनांतर काले करी असंग्रहीतत्व छे, ते माटे अधिक थाय छे. तेथी आगल आववानी जे उत्सर्पिणी तेनेविषे महावीरनी उत्पति प्रसक्त थशे ते कांई इष्ट नथी. ते माटे ऋषन स्वाम्यादि निर्वाणथी यथोक्त कालथी अजितादि तीर्थंकर समुत्पन्न एटले सिद्ध थया एवुं व्याख्यान करवुं अन्यथा करवुं नही. तथा अजितना निर्वाणथी त्रीश लक्ष कोटी सागरोपम गया पछी संजव जिन सिद्ध थया, संजव जिननी पछी दश लक्ष कोटी सागरोपम गया पछी अनिनंदन मुक्त थया, अनिनंदन जिननी पछी नव लक्ष कोटी सागरोपम गया पछी सुमति जिनेंद्र मुक्त थया सुमति जिननो पछी नेवु सहस्र कोटी सागरोपम गया पछी पद्मप्रन जिन मुक्त गया. पद्मप्रन जिन पछी नव सहस्र कोमी सागरोपम गया पछी सुपार्श्वनाथ तीर्थंकर निर्वाण पाम्या. सुपार्श्व जिन पछी नवशे कोमी सागरोपम गया पछी चंद्रप्रन जिन जनने आनंद करनार सिद्ध थया. चंद्रप्रन जिन पछी नेवु कोडी सागरोपम गया छतां सुविधि जिन सिद्धांतनेविषे सिद्धत्वे करी कहेलुं छे. सुविधि जिन पछी नव कोडी सागरोपम गया पछी शीतल महात्मा मुक्तपणे कह्या छे. शीतल जिन पछी एक कोडी सागरोपममां एक शो सागरोपम तथा छासठ लाख ने छवीस हजार वर्ष ऊणा करिये एटलो काल गया पछी श्रेयांस सिद्ध थया. श्रेयांस जिन पछी चोपन सागरोपमानंतर वासुपूज्य जिन जगत्त्रयमां उत्तम थया. वासुपूज्य जिन पछी त्रीश सागरोपमानंतर विमल जिन सिद्ध थया. निर्मल गुण सहित अने कर्म रजबध्यमान रहित एवा विमल जिन पछी नव सागरोपमानंतर अनंत जिनसिद्ध थया. अनंत जिननी पछी चार सागरोपमानंतर धर्मनाथ सिद्ध थया. धर्मनीधुर उपाडवाने उत्तम वृषन समान जे धर्मनाथ जिन, तेमनी पछी एक पल्योपमना चार नाग कल्पाथी तेवा त्रण नाग ऊणा त्रण सागरोपमानंतर (एटले त्रण सागरोपममां पोणो पल्योपम ओछो करिये एटलो काल समजवो) शांतिनाथ जिन शिवश्री पाम्या. शांति जिन पछी अर्द्ध पल्योपमानंतर श्री कुंथुजिन निवृत्त थया. कुंथुजिनथी पल्योपमनो चोथो नाग तेमां कोटि सहस्र वर्ष ओछो काल गयानंतर श्री अरजिनसिद्ध थया. अरजिन पछी कोटि सहस्र वर्ष गयानंतर त्रिशल्य रहित मल्लि जिन सिद्ध थया. मल्लि जिन पछी चोपन लाख वर्ष गया नंतर श्री मुनिसुव्रतजिन एटले शोजनिक छे व्रत जेनां ते सिद्ध थया. सुव्रतजिन पछी छ लाख वर्ष गयानंतर नमिनाथ सिद्ध थया. नमिनाथ जिन पछी पांच लाख वर्ष गयानंतर नेमिनाथ जिन सिद्ध थया.

नेमिनाथ जिन पछी त्र्यासी हजार अने साडासातशे वर्ष गयानंतर श्री पार्श्व जिन सिद्ध थया. श्रीपार्श्वजिन पछी अडीशे वर्ष गयानंतर श्रीवीर जिन सिद्धता ने पाम्या. अही त्रीजा आरानेविषे नेव्याशी पक्ष अपरिपूर्ण आदिनाथ सिद्ध थया. अने श्रीमहावीर नेव्याशी पक्ष ऋण चोथा आरामां सिद्ध थया. ए प्रमाणे चतुर्थ आरक कालमान सर्व जिनानंतर काल संवृत थयो. ते चोथो आरो बेतालीश हजार वर्ष न्यून कोटाकोटी सागरोपम प्रमाण छे. तेने पांचमो दुःषम तथा छगो अतिदुःषम ए बन्नेआराना बेतालीस हजार वर्ष सहित करियें तेवारें एककोटा कोटी सागरोपम थायछे.॥४०७॥एवी रीते सिद्धांतानुसारे अंतराय द्वार कह्यो.

अवतरणः– हवे प्रकारांतरेकरी सर्व तीर्थंकर चक्रवर्त्ती, अने वासुदेवो एओनो अंतर जे तीर्थंकरोना कालमां अथवा आंतरे जे चक्रवर्त्ति अने वासुदेव थया छे ते तथा तेउना शरीरोनुं प्रमाण अने ते सर्वनो आयु कहे छेः– मूलः–बत्तीसं घरयाइं, काउं तिरियाय याहि रेहाहिं; उड्डाय याहि काउं, पंच घराइं तउ पढमे. ॥४०८॥ पन्नरस जिणनिरंतर, सुन्न दुगं ति जिण सुन्न तियगंच; दो जिण सुन्न जिणंदो, सुन्न जिणो सुन्न दोन्नि जिणा ॥४०९॥ बिईअ पंतिठवणाः–दो चक्कि सुन्नि तेरस, पण चक्की सुन्न चक्कि दो सुन्ना; चक्की सुन्न दु चक्की, सुन्नं चक्की दुसुन्नं च. ॥ ४१० ॥ तईय पंतिठवणाः– दस सुन्न पंच केसव, पण सुन्नं केसि सुन्न केसी य; दो सुन्न केसवो विय, सुन्न दुगं केसव ति सुन्नं ॥ ४११ ॥ चउछ पंति ठवणाः– उसह नरहाण दोण्हवि, उच्चत्तं पंच धणुसए हुंती, अजिय सगराण दुण्हवि, उच्चत्तं चारि अद्धं च. ॥ ४१२ ॥ पन्नासं पन्नासं, धणु परिहाणी जिणाण तेण परं; ता जाव पुप्फदंतो, धणुं सय मेगं नवे उच्चो. ॥ ४१३ ॥ नउइ धणु सीयलस्सा, सेज्जंसं तिविठमाइणं पुरओ; जा धम्म पुरिससीहा, उच्चत्तं तेसिमं होइ ॥ ४१४ ॥ कमसो असीइ सत्तरि, सठी पन्नास तहय पणयाला; एए हवंति धणुआ, बायालद्धं चमघवस्स. ॥ ४१५ ॥ इगयाल धणुस्सद्ध, सणंकुमारस्स चक्कवट्टिस्सं; संतिस्स य चत्ताला, कुंथु जिणंदस्स पणतीसा ॥ ४१६ ॥ तीस धणूणि अरस्सउ, गुणतीस पुरीसपुंडरीअस्स; अठावीस सुभूमे, छवीस धणूणि दत्तस्स. ॥ ४१७ ॥ मल्लिस्सय पणवीसा, वीसं च धणूणि सुवए पउमे; नारायणस्स सोलस, पनरस नमिनाह हरिसेणे. ॥ ४१८ ॥ बारस जय नामस्सा, नेमी कण्हाण दस धणुच्चत्तं; सत्त धणु बंभ दत्ते, नव रयणीओ अ पासस्स. ॥ ४१९ ॥ वीरस्स सत्त रयणी, उच्चत्तं

नणिअ माउअ अहूणा; पंचम घरय निदिठ्ठे, कमेण सव्वेसि वोठ्ठामि.॥ ४२० ॥ उसह नरहाण दोएहवि, चुलसीई पुव्व सय सहस्साई; अजिय सगराण दोएहवि, बावत्तरि सय सहस्साइ. ॥ ४२१॥ पुरओ जहक्कमेणं, सठ्ठी पन्नास चत्त तीसाया; वीसा दस दो चेवय, लरकेगे चेव पुव्वाणं ॥ ४२२॥ सेज्जंस तिविठ्ठूणं, चुलसीई वास सय सहस्साई; पुरओ जिण केसीणं, धम्मोजा ताव तुल्लमिणं.॥ ४२३ ॥ कमसो बावत्तरि सठ्ठि तीस दस चेव सय सहस्साई; मघवस्स चक्किणो पुण, पं चेवयं वास लरकाई. ॥ ४२४ ॥ तिन्निय सणंकुमारे, संतिसय वास लरक मेगं तु; पंचाणउइ सहस्सा, कुंथुस्सविआउअं नणिअं. ॥ ४२५ ॥ चुलसीइ सहस्साई, आऊअं होइ अर जिणंदस्स; पणसठ्ठि सहस्साई, आउं सिरि पुंमरीयस्सः ॥४२६ सठ्ठि सहस्सा सुजुमे, उप्पन्न सहस्स हुंति दत्तस्स; पणपन्न सहस्साई, मल्लिस्सवि आउअं नणिअं. ॥४२७॥ सुव्वय मह पउमाणं, तीस सहस्साइ आउअं नणियं बारस वास सहस्सा, आऊ नारायणस्स नवे. ॥ ४२८॥ दस वास सहस्सा ई, नमि हरिसेणाण हुंति दोएहंपि; तिन्नेव सहस्साई, आउं जय नाम चक्किस्स. ॥ ४२९ ॥ वास सहस्सो आउं, नेमी कसहाण होइ दोएहंपि; सत्तय वास सयाई चक्कीसर बंनदत्तस्स. ॥ ४३० ॥ वास सयं पासस्स य, वासा बावत्तरीच वीरस्स इय बत्तीस घराई, समय विहाणोण नणिआइ. ॥ ४३१ ॥ व्याख्याः– अही प्रज्ञा पके करी आलेखना उपदर्शनने अर्थे सूत्र कर्त्ता पोते स्वमुखे पटिका एटले कोष्ट कनी स्थापना करवानी रीत बतावेछे. प्रथम तिर्यक् एटले आडी तेत्रीश लीटी क रीने तेना बत्रीश घर करवां. पछी ऊनी छ लीटीओ करी तेनां पांच गृह करवां. ते पांच गृहमांना पहेला गृहमां तेम आडा बत्रीश गृहमाना पण पहेला गृहमां ऋष न जिननुं नाम लखवुं, एम प्रत्येक आडा घरमां अनुक्रमे तीर्थंकरोनां नामो ल खतां धर्म जिनसुधी पंदर नामो लखवां. त्यार पछी शोलमां अने सत्तरमां ए बे घर मां बे शून्यो मूकवां, त्यांथी त्रण गृहोमां शांतिनाथ, कुंथु अने अरजिन ए त्रणनां नाम लखवां. त्यांथी त्रण घरोमां त्रण शून्यो मूकवां. त्यांथी बे गृहोमां क्रमे करी मल्लि अने सुव्रत ए बे जिनोनां नामनी स्थापना करवी, त्यांथी एकगृहमां शून्य मूकवुं. त्यांथी एक गृहमां नमि जिननुं नाम लखवुं; त्यांथी एकग्रहमां शून्य मूकवुं; त्यांथी एक गृहमां नेमि जिननुं नाम लखवुं; तेनी बाजूना घरमां शून्य मूकवुं; त्यार पछी बे गृहने विषे अनुक्रमे पार्श्वजिनने वीर जिनना नामोनी स्थापना करवी. ए प्र थम पंक्तिनी स्थापना कही हवे बीजी पंक्तिनी स्थापना कहे छेः– तत्र प्रथमना

बे गृहोमां क्रमेकरी जरत अने सगर चक्रवर्त्तीउने स्थापवा; त्यांथी क्रमेकरी तेर गृहोमां शून्यो मूकवां; त्यांथी क्रमेकरी पांच गृहोनेविषे मघवा, सनत्कुमार, शांति, कुंथु,ने अर ए पांचचक्रवर्त्तिनां नाम लखवां,त्यांथी एक घरमां शून्य; तेनी पाछेना घरमां सुजूम चक्रवर्त्तिनुं नाम लखवुं; त्यांथी बे खाणामां क्रमेकरी शून्यो मूकवां तेना आगला खाणामां महा पद्म चक्रवर्त्तिनुं नाम लखवुं; तेनी पाछेना गृहमां शून्य मूकवुं; तेना पाछेना बे खाणामां क्रमेकरी हरिषेण ने जय चक्रवर्त्ति ए बेनां नाम लखवां; त्यांथी पाछेना खाणामां शून्य; तेनी पासेना गृहमां ब्रह्मदत्त चक्री; त्यांथी बे खाणामां क्रमे करी बे शून्यो मूकवां; एम बीजी पंक्तिनी स्थापना करवी. हवे त्रीजी पंक्तिनी स्थापना कहे छेः—प्रथमना दश गृहोमां क्रमे करी शून्यो मूकी ज वां; त्यांथी पांच गृहोमां अनुक्रमे त्रिपृष्ठ, द्विपृष्ट, स्वयंजू, पुरुषोत्तम, ने पुरुषसिंह ए पांच केसवएटले वासुदेवोनां नाम लखवां; त्यांथी पांच गृहोमां शून्यो; तेना परना खाणामां पुरुष पुंमरीक वासुदेव स्थापवुं; तेना परना गृहमां सून्य मूकवुं; तेना परना खाणामां दत्तवासुदेवनुं नाम लखवुं; त्यांथी बे गृहोनेविषे क्रमे करी बे शून्यो मूकवां; तेनी पाछेना घरमां नारायणवासुदेव; त्यांथी बे गृहोनेविषे क्रमे करी शून्यो मूकवां तेना परना गृहनेविषे कृस्न वासुदेव; अने त्यार पछीना त्रण गृहोमां त्रण शून्यो मूकवां; एम तृतीय गृह पंक्तिनी स्थापना जाणवी. हवे चोथी पंक्ति नी स्थापना आ प्रमाणेः— तेमांना प्रथम गृहनेविषे कृषज्ञ जिन ने जरत चक्रव र्त्ति ए बन्नेना शरीरोनी उंचाई पांच शे धनुष्योनी लखवी; बीजा गृहनेविषे अजि त जिन ने सगर चक्रि ए बन्नेना शरीरोनी उचाई साढा चारशें धनुष्योनी लखवी त्यांथी पर संजवादिना शरीरोनी उचाईना प्रमाणोमां पचाश पचाश धनुष्यो ओ छा करतां यावत् पुष्पदंत एटले सुविधि जिनना शरीरनी उचाईनुं मान एकशो ध नुष्योनुं लखवुं; एटले त्रीजा गृहनेविषे संजव जिनना देहनी उचाईनुं मान चार शें धनुष्योनुं, चोथा खाणामां अजिनंदन जिनना देहनी उचाईनुं मान सा डा त्रण शें धनुष्योनुं; पांचमां घरमां सुमति जिनना शरीरनी उचाईनुं मान त्रण शें धनुष्योनुं; छठा खाणामां पद्मप्रज्ञ जिनना देहनी उचाईनुं मान अ डी शें धनुष्योनुं; सातमां गृहनेविषे सुपार्श्व जिनना देहनुं मान ब शें धनुष्योनुं; आठमां गृहनेविषे चंद्रप्रज्ञ जिनना देहनी उचाईनुं मान दोढ शो धनुष्योनुं; नव मां गृहनेविषे सुविधि जिनना देहनी उचाईनुं मान एक शो धनुष्योनुं; त्यांथी द शमां गृहनेविषे शीतल जिनना देहनी उचाईनुं मान नेवु धनुष्य; नेवु धनुष्योनी

आगल श्रेयांसने त्रिपृष्टादीथी लईने यावत् वर्द्धमान जिन ने पुरुषसिंह सुधी देहनी उंचाईनुं प्रमाण अनुक्रमे आप्रमाणे छेः–अग्यारमां गृहनेविषे श्रेयांस जिन ने त्रिपृष्ट वासुदेव एओना देहनी उंचाईनुं मान ऐंशी धनुष्योनुं जाणवुं; त्यांथी बारमां गृहनेविषे वासुपूज्य जिन ने द्विपृष्ट वासुदेव ए बन्नेना शरीरनी उंचाईनुं मान सित्तर धनुष्य; त्यांथी तेरमा गृहनेविषे विमल जिन ने स्वयंभू वासुदेव ए बन्नेना देहनी उंचाईनुं मान साठ धनुष्य; त्यांथी चौदमां गृहनेविषे अनंत जिन ने पुरुषोत्तम वासुदेव ए बन्नेना देहनी उंचाईनुं मान पचाश धनुष्य; त्यांथी पंदरमां गृहनेविषे धर्म जिन ने पुरुषसिंह वासुदेव ए बन्नेना देहनी उंचाईनुं मान पिस्तालीश धनुष्य; तथा शोलमां गृहनेविषे मघवा चक्रवर्त्तिना देहनी उंचाईनुं मान साडी बेतालीश धनुष्य एटले बेतालीश धनुष्य ने बे हाथ; सत्तरमां गृहनेविषे सनत्कुमार चक्रवर्त्तिना देहनी ऊंचाईनुं मान साडी एकतालीश धनुष्य; अढारमां गृहनेविषे शांति जिनना देहनी उंचाईनुं मान पूरा चालीश धनुष्य; ओगणीशमां गृहनेविषे कुंथु जिनेंद्रना देहनी उंचाईनुं मान पांत्रीश धनुष्य; वीशमां गृहनेविषे अर जिनना देहनी उंचाईनुं मान त्रीश धनुष्य; एकवीशमां गृहनेविषे पुंरुषपुंडरीक वासुदेवना देहनी उंचाईनुं मान ओगणत्रीश धनुष्य; बावीशमां खाणामां सुभूम चक्रवर्त्तिना देहनुं मान अठ्यावीश धनुष्य; त्रेवीशमां खाणामां दत्तवासुदेवना देहनी उंचाईनुं मान छवीश धनुष्य; चोवीशमां घरमां मल्लि जिनना देहनी उंचाईनुं मान पचीश धनुष्य; पचीशमां गृहनेविषे मुनिसुव्रत जिनने पद्मचक्रवर्त्तिना देहनी उंचाईनुं मान वीश धनुष्य; छवीशमां गृहनेविषे नारायण वासुदेवना देहनी उंचाईनुं मान शोल धनुष्य; सत्यावीशमां गृहनेविषे नमिनाथ जिन ने हरिषेणचक्रीना देहनी उंचाईनुं मान पंदर धनुष्य; अठ्यावीशमां खानामां जयचक्रवर्त्तिना देहनी उंचाईनुं मान बार धनुष्य; ओगणत्रीशमां गृहनेविषे नेमिनाथ जिन ने कृष्ण वासुदेवना देहनी उंचाईनुं मान दश धनुष्य; त्रीशमां गृहनेविषे ब्रह्मदत्त चक्रीना देहनी उंचाईनुं मान सात धनुष्य; एकत्रीशमां गृहनेविषे पार्श्व जिनना देहनी उंचाईनुं मान नव हाथ, अने बत्रीशमां खाणामां श्री वीर जिनना देहनी उंचाईनुं मान सात हाथनुं जाणवुं. एवी रीते प्रथम जिनादि सर्वनुं उंचत्व कह्युं; हवे पंचम पंक्तिगृहक निविष्ट सर्व जिनादिकनुं क्रमे करी आयु कहुंछुंः– प्रथम खाणामां वृषभ जिन ने भरत चक्रवर्त्ति ए बन्नेनुं आयु चोराशी लक्ष पूर्व; बीजा गृहमां अजित जिन ने सगर चक्रवर्त्ति ए बन्नेनुं आयु बोतेर लक्ष पूर्व; एनी आगल य

था क्रमे संभवादि जिनोनुं आयु साठ, पचाश, चालीश, त्रीश, वीश, दश, बे ने एक लक्ष पूर्व शीतल जिनसुधी छे ते आप्रमाणेः— त्रीजा गृहमां संभव जिननुं आयु साठ लक्ष पूर्व; चोथा गृहमां अभिनंदन जिननुं आयु पचाश लक्ष पूर्व; पांचमां गृहनेविषे सुमति जिननुं आयु चालीश लक्ष पूर्व; छठा गृहनेविषे पद्मप्रभ जिननुं आयु त्रीश लक्ष पूर्व; सातमां गृहनेविषे सुपार्श्व जिननुं आयु वीशलक्ष पूर्व; आठमां गृहनेविषे चंद्रप्रभ जिननुं आयु दश लक्ष पूर्व; नवमां गृहनेविषे सुविधि जिननुं आयु बे लक्ष पूर्व; दशमां गृहनेविषे शीतल जिननुं आयु एक लक्ष पूर्व; तथा अग्यारमां गृहनेविषे श्रेयांस जिननुं आयु ने त्रिपृष्ट वासुदेवनुं आयु चोरासी लक्ष वर्ष; आगल तीर्थंकर,तथा वासुदेवो, जेओनुं तुल्य तुल्य आयुछे ते क्रमे करी कहे छेः— बोतेर, साठ, त्रीश, ने दश लक्ष वर्ष एटले बारमां गृहनेविषे वासुपूज्य जिन ने द्विपृष्ट वासुदेव ए बन्नेनुं आयु बोतेर लक्ष वर्ष; तेरमां गृहनेविषे विमल जिन ने स्वयंभू वासुदेवनुं आयु साठ लक्ष वर्ष; चौदमां गृहनेविषे अनंत जिनने पुरुषोत्तम वासुदेवनुं आयु त्रीश लक्ष वर्ष; पंदरमां गृहनेविषे धर्म जिन ने पुरुषसिंह वासुदेवनुं आयु दश लक्ष वर्ष; तथा शोलमां गृहनेविषे मघवाचक्रिनुं आयुष्य पांच लक्ष वर्षनुं सत्तरमां गृहनेविषे सनत्कुमार चक्रवर्त्तिनुं आयु त्रण लक्ष वर्ष; अढारमां गृहनेविषे शांति जिन चक्रवर्त्तिनुं आयु एक लक्ष वर्ष; उंगणीशमां गृहनेविषे कुंथुजिन चक्रिनुं आयु पचाणु हजार वर्ष; वीशमां गृहनेविषे अरजिन चक्रिनुं आयु चोराशी हजार वर्ष; एकवीशमां गृहनेविषे पुरुषपुंमरीक वासुदेवनुं आयु पांसठ हजार वर्ष; बावीशमां गृहनेविषे सुभूम चक्रीनुं आयु साठ हजार वर्ष; त्रेवीशमां गृहनेविषे दत्त वासुदेवनुं आयु छप्पन हजार वर्ष; चोवीशमां गृहनेविषे मल्लि जिननुं आयु पचावन हजार वर्ष; पचीशमा गृहनेविषे मुनिसुव्रत जिन ने महापद्म चक्रीनुं आयु त्रीश हजार वर्ष; छवीशमां गृहनेविषे नारायण ते लक्ष्मण वासुदेवनुं आयु बार हजार वर्ष; सत्यावीशमां गृहनेविषे नमि जिन ने हरिषेण चक्रीनुं आयु दश हजार वर्ष; अठ्यावीशमां गृहनेविषे जय चक्रीनुं आयु त्रण हजार वर्ष; उंगणत्रीशमां गृहनेविषे नेमि जिन ने कृष्ण वासुदेवनुं आयु एक हजार वर्ष; त्रीशमां गृहनेविषे ब्रह्मदत्त चक्रेश्वरनुं आयु सात शें वर्ष; एकत्रीशमां गृहनेविषे पार्श्वजिननुं आयु एकशो वर्ष; अने बत्रीशमां गृहनेविषे वीर जिननुं आयु बोतेर वर्षनुं जाणवुं. एवी रीते बत्रीश खानाउ समय विधाने करी कह्यां तेनी स्थापना आ प्रमाणेः—

हवे तित्थावच्छेउत्ति एटले जे तीर्थंकरनी वारमां तीर्थनो विच्छेद थयो ते कहेता छतां तेनो अंतर प्रमुख देखाडे छेः— मूलः—पुरिमंतिम अठ्ठ, तरेसु तित्थस्स नत्थि वोछेउ; मज्झिल्लएसु सत्तसु, एत्तिय कालं तु वोछेउ ॥४३२॥ चउ नागं चउ नागो, तिन्नि य चउनाग पलिय चउनागो; तिन्नेवय चउ नागो, चउछ नागो य चउ नागो. ॥४३३॥ व्याख्याः— जेम चार आंगलीओना त्रण अंतरा थाय छे तेम अहीं चोवीश तीर्थंकरोना त्रेवीस अंतरा थाय छे तत्र पूर्वे श्री ऋषभादि जिनथी ते सुविधिजिन सुधी नव तीर्थंकरोना संबंधे करी आठ आंतरा थायछे अने शांतिनाथ जिनथी लईने महावीर जिनना अंतसुधी नव जिनना संबंधे करी आठ आंतरा थायछे ए सोल अंतरानेविषे संघरूप तीर्थनो व्यवछेद थयो नथी. पण 'मज्झिलएसुत्ति' एटले मध्यवर्त्ति सुविधि जिनथी लईने शांतिनाथ जिन पर्यंत आठ तीर्थंकरोना सात आंतरामां तीर्थनो व्यवछेद थयो छे ते आ प्रमाणेः— चउनागेत्यादिः— सुविधिथी ते शीतल जिनसुधी वचमांना आंतरानेविषे पल्योपमना चार नाग कख्याथी तेमांना एक नाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो एटले अर्हद्धर्मनी वार्त्तानो पण नाश थई गयो. शीतल अने श्रेयांस जिनना आंतराने विषे पल्योपमना चोथा नाग जेटला कालसुधी तीर्थनो विछेद थयो. श्रेयांस जिनने वासुपूज्य जिनना आंतरानेविषे पल्योपमना चार नाग संबंधी त्रण नाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो; वासुपूज्यने विमल जिनना आंतरानेविषे पल्योपमना चोथा नाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो. विमल ने अनंत जिनना आंतरानेविषे पल्योपम संबंधी चार नागमाना त्रण नाग जेटला काल सुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो. अनंत ने धर्म जिनना आंतरानेविषे पल्योपमना चोथा नाग जेटला काल सुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो. तथा श्री धर्मनाथने शांतिजिनना अंतरानेविषे पल्योपमना चोथा नाग जेटला कालसुधी तीर्थनो व्यवछेद थयो. ए सर्व कालने एकठो कख्याथी पोणा त्रण पल्योपम जेटलो काल थाय. ॥४३३॥ एनोज विशेष देखाडे छेः—मूलः— मुत्तूण दिठिवायं, हवंति एक्कारसेव अंगाइ ॥ अठ्ठसुजिणंतरेसु, उसह जिणदाउ जा सुविही॥ ४३४ ॥ अर्थः—उसह के० ऋषभ जिनथी मांमीने जासुविही के० जावत् सुविधिनाथ सुधीना आठ आंतरानेविषे एक दृष्टीवादने मुत्तूण के० मूकीने बाकीना इग्यार अंग हवंति के० होय ॥ ४३४ ॥ मूलः— सत्तसुजिणंतरेसु, वोछिन्नाई डुवाल संगाइ ॥ सुविहिजिणा जा संती, कालपमाणं कमेणेसिं ॥ ४३५ ॥ अर्थः— श्री सुविधि जिन

थी मांमीने श्री शांतिनाथ सुधी आठ तीर्थंकरना सात अंतरानेविषे अनुक्रमे पूर्वोक्तरीते पोणत्रण पल्योपमना काल जेटला प्रमाणमां द्वादशांगीनो विछेद थयो छे ॥४३५॥ मूलः— अठसु जिणंतरेसु, वोछिन्नाइं नहुंति अंगाइं ॥ संतिजिणा जा वीरं, वुछिन्नो दिठिवाउ तहिं ॥ ४३६ ॥ अर्थः— श्री शांति जिनथी मांमीने यावत् श्री वीरजिन सुधीना आठ अंतरानेविषे अंगनो विछेद न थयो त्यां दृष्टीवादनो विछेद थयो ॥४३६॥ हवे पूर्वगत केटलो काल रह्यो ते कहे छेः— मूलः— एगं वास सहस्सं, पुव्वगयं वीरतिछ अणुचिणं ॥ सेसाण केसि संखं, कालमसंखं च केसिंपि ॥ ४३७ ॥ अर्थः— श्री वीर जगवानना तीर्थनेविषे एक सहस्र वर्ष लगें पूर्व गत श्रुतनो अर्थ प्रवर्त्त्यो अने शेष तीर्थंकरोना शासनेनेविषे क्यांक संख्यातो काल प्रवर्त्त्यो क्यांक असंख्यातो काल प्रवर्त्त्यो ॥ ४३७ ॥ ए चार गाथाउ प्रक्षेप छे. ए छत्रीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः— हवे दस असायणत्ति एटले दश आशातनानो साडत्रीशमो द्वार कहे छेः— मूलः— तंबोल पाण जोयण, वाणह थीजोग सुयण निछुवणं; मुत्तुच्चारं जूअं, वज्जे जिणमंदिरस्संतो. ॥ ४३८ ॥ व्याख्याः— तांबूल पान प्रमुखनुं जक्षण करवुं, पाणी पीवुं, जोजन करवुं, उपानत् (जोमा पेरवा) स्त्रीजोग करवो, स्वपन एटले सूवुं, निष्ठीवनं एटले थूक नाखवी, लघुनित करवी, उच्चार के० वडी नित करवी, अने जूगारनुं रमवुं, ए दश आशातना श्री वीतरागना जुवननेविषे विवेकी जिने त्याग करवी. ॥ ४३८ ॥ ए साडत्रीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः— हवे 'आसायणाउ चुलसीत्ति' एटले चोराशी आसातनानो आडत्रीशमो द्वार कहेछेः— मूलः—शार्दूलविक्रीडितछंदः—खेलिं केलि कलिं कला कुललयं, तंबोल मुग्गालयं; गाली कंगुलिया सरीरधुवणं; केसे नहे लोहियं; जत्तोसं तय पित्त वंत दसणे विस्सामणं दामणं; दंत छी नह गंम नासिय सिरो, सोत्त छवीणं मलं ॥ ४३९॥ मंतं मीलण लेखयं विजजणं जंमार डुठासणं; ठाणी कप्पड दालि पप्पड वडी विस्सारणं नासणं; अक्कंदं विकहं सरिछुघडणं तेरिछ संठावणं; अग्गीसेवण रंधणं परिखणं, निस्सीहिया जंजणं ॥ ४४० ॥ छत्तो वाणह सछ चामर, मणोणेगत्त मब्भंजणं; सच्चित्ताणमचाय चाय मजिए दिठीइ नो अंजली; साडेगुत्तरसंगजंग मउडं मोलिं सिरो सेहरं; हुड्डा जिडुह गेडियाई रमणं, जोहार जंमक्कियं ॥ ४४१ ॥ रेक्कारं धरणं रणं विवरणं वालाण पल्हछियं; पाऊ पायपसारणं पुमपुडी पंकं रओ मेहुणं; जूया जेमण गुज्झ वेज्ज वणिजं से

ऊं जल्लुम्मऊणं; एमाईयमवज्ञ कज्ञ मुज्जुत वज्ञे जिणिंदालए ॥ ४४२ ॥ अर्थः- आय के० ज्ञानादिकनो लाज तेनो शातयति के० विनाश थाय तेने आशातना कहियें ते कहेछेः-१ खेल एटले मुखश्लेष्म जिन मंदिरमां नाखवुं; २ केलि एटले अनेक प्रकारनी क्रीडा करवी; ३ कलि एटले वचननो कलह करवो, ४ कला एटले धनुर्वेदादिक कलानो अन्यास करवो; ५ कुललयं एटले महोमामांथी पाणीना कोगला अथवा कुरलां नाखवां; ६ तंबोल एटले पान सोपारीनु खावुं; ७ मुग्गालयं एटले तेनो उगल थूकवुं; ७ गाली एटले मुखथी चकार मकार बोलवुं गालनु काढवुं. ए कंगुलिया एटले लघुनीत अथवा वडीनीत करवी; १० सरीर धुवणं एटले शरीरनुं धोवुं प्रक्षालन करवुं; ११ केसे एटले बाल ऊतरावबा; १२ नहे एटले नख ऊतरावबा; १३ लोहियं एटले रुधिर नाखवुं; १४ नत्तोसं एटले मिगाई प्रमुखनुं खावुं १५ तय एटले फोडा प्रमुखनी त्वचा कहाडीने नाखी देवी; १६ पित्त एटले औषधादिकेकरी पित्तनुं कहाडी नाखवुं; १७ वंत एटले वमन करवुं. १७ दसण एटले दांत कहाडी नाखे अथवा समरावे; १ए विस्सामणं एटले अंगसंबाधन अथवा वीसामणनुं करवुं; २० दामणं एटले गाय तथा जेंस प्रमुखने बांधवुं; २१ दंत शब्दे दांतनुं मेल, २२ अछी शब्दे नेत्रोनुं मेल, २३ नह शब्दे नखोनुं मेल, २४ गंम शब्दे गंमस्थलोनुं मेल, २५ नासिय शब्दे नाशिकानुं मेल, २६ सिरो शब्दे माथानुं मेल; २७ सोत शब्दे श्रोत्र एटले कानोनुं मेल; २७ ठवीणं मलं एटले चामडीनुं मेल ऊतारीने प्रासादमां नाखवुं; २ए मंत शब्दे मंत्र एटले मंत्रेकरी नूतप्रेतादिकनुं कहाडवुं; अथवा राज्यादि कार्योनी मसलेहत करवी; ३० मीलण शब्दे कांई विवाद कार्यने अर्थे वृद्ध पुरुषो वगैरे मलीने त्यां एकठा थवुं; ३१ लेखयं एटले व्यवहार संबंधी कागल पत्र लखवां; ३२ विनंजणं एटले दायादिकना विजाग करवा; ३३ नंमार एटले पोताना इव्यनो नंढार करी राखवो; ३४ डुछासणं एटले पग ऊपर पग मूकीने बेशवुं इत्यादि डुष्टासन करवुं; ३५ ठाणी एटले ठाणा करीने सूकववां; ३६ कप्पम एटले कपडां धोईने सूकववां; ३७ दालि एटले मुगादिकनी दाल सूकववी; ३७ पप्पड एटले पापम वाटीने सूकववां; ३ए वडी एटले वडी करीने सूकववी; एटला वानाने विस्सारणं एटले सूकववुं अथवा प्रसारवुं प्रमुख ते ठाणाथी लईने वडी पर्यंत जाणवुं; ४० नासणं एटले ठानी रीते लुपी रहेवुं; ४१ अकंदं एटले पुत्र कलत्रादिकना वियोगथी रडवुं; ४२ विकहं एटले नाना प्रकारनी रमणीय स्त्री पुरुषोनी शृंगार प्रमुखनी विकथाउ एकां

त स्थले बेसी करवी; ४३ सरिबु घमणं एटले बाण घमवां अने शेरडी बोळवी अने सरब एवो पाठ दीठामां आवे त्यां सर एटले बाण ने अब एटले अस्त्र तेनुं घडवुं जाणवुं; ४४ तेरिब्ब संठावणं एटले तिर्यंच पशु पक्ष्यादिक राखवां; ४५ अग्गी सेवणं एटले टाढ प्रमुखना निवारणने अर्थे अग्नीनुं सेवन करवुं; ४६ रंधणं एटले रसोई प्रमुख करवुं; ४७ परिखणं एटले सुवर्णादिक पदार्थोनी परिक्षा करवी; ४८ प्रवेश करतां समाचारी चतुरोए अवश्य निस्सीहि करवी जोइयें तेनो नंग करवो; ४९ बत्तो एटले बत्र, ५० उवाणह एटले जोडा, ५१ सब एटले शस्त्र, ५२ चामर एटला पदार्थो उपाश्रयथी बाहारे कहाडी न मूकतां माहिली कोरे लईजवां; ५३ मणोऐगत्त एटले मनमां नाना प्रकारनी कल्पनाउं करवी; ५४ मज्जणं एटले आंगने तेलादिक लगाडवुं मर्दनकरवुं; ५५ सचित्ताणमचाय एटले तांबूल पुष्पादिक जे सचित्त पदार्थों तेओनो अत्याग; ५६ चाय मजिए एटले मुद्रिका हार प्रमुख रत्नादिक अजीव पदार्थोंनो त्याग करे, जेथकी अवर्णवाद थाय अन्य दर्शनी हासी करे निक्षाचरनो धर्म कहे तेथी न मूकवां. ५७ दिठीइ एटले नगवंतने दीठे अंजली बद्ध न करे. ५८ साडेगुत्तरसंगनंग एटले एक नीचे पहेरवानुं वस्त्र अने एक उतरासण तेनो नंग करवो अर्थात् तेम न करवुं; ५९ मउडं एटले मस्तकनी उपर मुकुट धारण करवुं; ६० मोलिं एटले माथा उपर फेटो बांधवो. ६१ सिरोसेहरं एटले माथानी उपर पुष्पादिक गुंथन करवा अथवा सेहरो राखे. ६२ हुड्डा एटले होड करवी ६३ तथा गेडियाय रमणं एटले गेडी दांडे रमत करवी दडाथी रमवुं. ६४ जोहार एटले नवा मळ्याने जुहारनुं करवुं पित्रादिकने जात्कार करवुं. ६५ नंडक्कियं एटले नांड चेष्टानुं करवुं अथवा नाटकीआनी पठे कांखमां हाथ घाली वगाडवुं वगैरे जे क्रिया करवीते; ६६ रेक्कारं एटले आगलाने रेकारादि तिरस्कारना शब्द बोलवा; ६७ धरणं एटले धरणे लांगणे बेसी रोधनादि करवुं ६८ रणं एटले संग्राम करवो; ६९ विवरणं बालाण एटले केश वीस्तारवा फणी प्रमुखनुं देवुं; ७० पल्हत्थिअं एटले बे गूढण ढातीनी साथे एकठा करी वांसामांथी फालीउं वींटी काब कहाडी बेशवुं; ७१ पाऊ एटले पगमां चाखडीउं नाखवी; ७२ पाय पसारण एटले पग पसारवां; ७३ पुडपुडी एटले पुटपुटिका दीप न करवुं; ७४ पंक एटले स्नान वगैरे करी चीकल करी नाखवुं; ७५ रउ एटले पग प्रमुखने लागेली धूल जाटकी नाखवी; ७६ मेहुणं एटले मैथुन सेवा करवी; ७७ जूया एटले माथामांनी जू कहाडवी; ७८ जेमण

एटले नोजन करवुं; ७ए गुज्झ एटले लिंग उघाडुं करवुं; पाठांतरे जुज्झ एटले बाहुयुद्धादिक करवुं; ७० वेज्झ एटले वैद्यक कृत्य करवुं; ७१ वाणिज्जं एटले क्रय विक्रयादि व्यापार करवो; ७२ सेज्झ एटले मांचाप्रमुखे शय्या करीने त्यां सूवुं; ७३ जल एटले पाणी पीवा सारु राखवुं अने नाखी देवुं; ७४ मज्जणं एटले स्नान करवुं; इत्यादि आशातनाना कारण सदोष कार्य जिनमंदिरनेविषे सरलथका वर्ज करवां; अथवा निर्मल अंतःकरण वालाए त्याग करवां केम के, एम कखाथी आशा तना थायछे. ते पण ऊपर कहेली अशातनाउनोज त्याग करवो एम नथी पण बीजी हास्यादिक जे अपक्रिया छे ते बधीनो त्याग करवो. ॥ ४४२ ॥

आशंकाः– पूर्वे तांबोलादिक दश आशातनाउ कहीछे तेनाज उपलक्षणेकरी ए बधी आशातनाउनुं ग्रहण थायछे तेम छतां बीजो जुदो द्वार शासारु कखो.

समाधानः– सामान्य अनिधान थयुं छतां पण विशेष बालावबोधार्थे अनि धान कखामां आवेछे, एविषे दृष्टांतः– ब्राह्मण बधा आव्या ने वसिष्ठ पण आ व्या एवो लोकमां प्रयोग छे. एटले ब्राह्मणोमां वसिष्ठ पण समाई गयो छतां कांई विशेष बोधने अर्थे वसिष्ठ एवुं जुदुं ज कहेवाय छे.

अवतरणः– ए आशातनाउ कखाथी ग्रहस्थने ज दोष उत्पन्न थाय छे अथवा कोईयेपण करवीज नही एवा विकल्पोनुं निवारण करेछेः– सावद्य करणोद्यत ग्रह स्थोनेज नव च्रमणादिक दोषनी उत्पत्ति थाय छे एम नही पण निरवद्य आचार र तमुनिउने पण ए आशातनाउथी दोषनी उत्पत्ति थाय छे तेविषे कहे छेः– मूलः– आसायणाउ नवन्नमण कारणं इयविन्नाविउं जइणो; मल मलिणत्ति न जिणमं दरम्मि निवसंति इय समउ ॥४४३॥ अर्थः–संसारमां परिच्रमण करवानुं ए आशात नाउ कारण छे. एवो विचार करीने यतिउ जे छे ते पोतानी मलमलिन देह होवाथी श्री जिन मंदिरनेविषे वास करता नथी एवुं सिद्धांतमां गणधरे कह्युं छे. ॥४४३॥

अवतरणः–तेज समय व्यवहार नाष्य नाषित देखाडे छेः– मूलः–डुग्गिगंध मल स्सावि, तणुरप्पेसण्हाणिया; डुहा वायव होवावी, तेण ठंति न चेइए ॥४४४॥ अर्थः– स्नान कखाथी पण शरीर ते मल प्रस्वेदनुं श्रवण द्वार डुरनिगंधवाळुंछे तेमां थी वायु दो के०बे प्रकारनो नीकले छे एक अधो वायु एटले अपान द्वाराए अने बीजो ऊर्ध्वएटले मुखद्वाराए नीकलेछे. तेकारण माटे यति जिनमंदिरमां वास करतां नथी.

अवतरणः– साधुए केटलो कालसुधी जिनमंदिरमां वास करवो ते देखाडे छे मूलः– तिसिवा कहूई जाव, थुईउ तिसलोइया; ताव तत्र अणुन्नाय, कारणेण प

रेणउं. ॥४४५॥ अर्थः— कायोत्सर्ग कस्या पछी त्रण स्तुति ज्यांसुधि बोलाय छे तिसलोईया त्रण श्लोक छंदनीविशेषता ज्यां छे ते आवीरीतेः— जेम के, सिद्धा णं बुद्धाणं ए पहेलो, जो देवाणं ए बीजो, अने एकोविनमोक्काय ए त्रीजो, तेमज आगली बे गाथाउं अने थोईनी चोथी गाथा ते गीतार्थ आचरणा कहिये गीतार्थ नी आचरणा ते मूल गणधर नणित समान जाणवी तेथी तेटला कालसुधी य तिये जिनमंदिरमांहे रहेवुं अनुज्ञात छे, अथवा धर्म देशनादिक धर्म श्रव णादि अर्थे आव्या जे नाविक जन, तेओना उपकार करवाना कारणे चैत्यवंदन नी पाछल पण यतिने त्यां रहेवानी अनुज्ञा छे, बाकीना कालमां जिनाशतानादि नये करी साधुने तीर्थंकर अने गणधरादिके रहेवानी आज्ञा करी नथी. माटे व्रती जनो ते आशातननानो त्याग करे छे. एमज ग्रहस्थे तो अवश्य त्याग करवी जोये छे. एवी तीर्थंकरनी आज्ञा छे. आज्ञानो नंग मोटा अनर्थनुं कारण थाय छे. य दाहुः— "आणश्चियचरणमित्यादि" ॥ ४४५ ॥ ए अडत्रीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः— अठ महा पडिहाराइंति एटले अष्ट महाप्रातिहार्यनो उंगणचा लीशमो द्वार कहे छेः—मूलः—किंकिल्लि कुसुम वुठी, देवज्झुणि चामरा सणाइं च; ना वलय नेरि छत्तं, जयंति जिण पाडिहेराइं ॥ ४४६ ॥ अर्थः—प्रतिहारनी पठे प्रतिहार एटले इंद्रना आदेशकारी देव, तेउना कृत्योने प्रातिहार्य कहेछे. ते प्रातिहार्य आठ छे ते आ प्रमाणेः—जेनेविषे रातां पातरांनो समूह शोनी रह्यो छे; सर्व काल वि कसित पुष्पसमूहमांथी निरंतर अत्यंत परिमलोजार नीकली रह्यो छे; तेना अति शयेकरी लोनायला न्रमरोना समूहनो रण रण शब्द थई रह्यो छे, तेणेकरी नम स्कार करवाने आवेला नव्य जनना कर्णरंध्र शीतल थई रह्या छे; एवो अति म नोरम जेनो आकार अने विस्तीर्ण शाखाउं वालो किंकिल्ली एटले अशोक वृक्ष जिनना उपरला नागनेविषे देव धारण करे छे ए प्रथम प्रातिहार्य. जलनेवि षे तथा स्थलनेविषे उत्पन्न थनारा पांच रंगनां विकसित पुष्प, जेउंनी भेट नीचे ने मुख ऊपर एटले जेम वृक्षनी ऊपर होय छे तेवा फूलोनी जानु प्रमाण देवो वृष्टि करे छे ए बीजुं प्रातिहार्य. अतिशय रसयुक्त अमृतना रसने तुल्य; अति त्वराए करी अनेक देश थकी हरण करेला एवा मुक्ताफलना व्यापारनेविषे जेउंनां प्रसारित मुख छे एवा हरिणोना कुल कान दईने शांनली रह्यां छे, अने सर्व जनने आनंद दायक एवो दिव्य ध्वनि देव करेछे. ए त्रीजुं प्रातिहा र्य; सुंदर कदली कांमसंबंधी तंतु मंमलना जेवी सुंदर किरणोना समूहेकरी

विस्तृत अति उत्तम विचित्र पवित्र रत्नोमांथी नीकळेला किरणांकुर जाल समूहना योगे दिशा दिशानेविषे प्रसारने पामेला इंद्र धनुष्यनी पठे मनोहर सुवर्णना रमणीय दंमयुक्त चामरो देवो ढोळे छे; ए चोथुं प्रातिहार्य. अत्यंत देदीप्यमान ऋटाउना समूहेकरी सुंदर स्कंधबंधयुक्त कर्मरूप वैरीने बीवराववाने कराल दृष्टेकरी जीवता सिंहना रूपनी तुल्यता करनार अने जेमां नाना प्रकारना श्रेष्ठ रत्न ऋडेलां होयछे, तेउथी नीकळेली किरणावलीने लीधे अंधकार मंबर नाश थई गएलो छे एवुं चारुतर मेरुना शृंगनी परे ऊंचुं सिंहासन देव करेछे, ए पांचमुं प्रातिहार्य. शरत् काळनेविषे प्रकाशमान अखंम किरण मंमळे करी प्रचंम सूर्यना मंमळनी पठे डुरालोक एटले जेनी सामे जोवाई शकाय नही; अने स्वभावेकरी देदीप्यमान तीर्थंकरकल्प संबंधी निरुपम रूपनुं आछादन करनार तथा अतुछ एवुं प्रभा पटलने एकठुं करी जिनना पाछला जागनेविषे मंमलाकार जामंमल देव करेछे. ए छठुं प्रातिहार्य; मंद्र एवो जांकार शब्दे करी आखुं जग व्याप्त थई रहे एवी जेरी ते डुंडुनी देवो वगामेछे ए सातमुं प्रातिहार्य; त्रैलोक्यनेविषे परमेश्वरपणानो जणावणहार शरत् काळना चंद्र मुचकुंदनी परे अने उज्वल मोतीउनी मालाये विराजमान कुमुद एटले श्वेत पुष्प ए प्रमाणे स्वछ, लंबायमान मुक्ताफळ समूहनी किनारीरूप जालरी वडे शोजायमान एवां त्रण छत्रो देवो करे छे. ए आठमुं प्रातिहार्य; ए प्रकारे करी जिनेश्वरना आठ प्रातिहार्य सर्वोत्कृष्टत्वे करी वर्त्ते छे एमां अशोक वृक्षना प्रमाण ऊपर गाथा कहेछे. यडुक्तंः—"उसहस्स तिन्नि गाऊ, बत्तीस धणूण वद्धमाणस्स; सेस जिणाणमसोउ, सरीरउ बारस गुणोय" तेमां ऋषभ जिननो अशोक वृक्ष त्रण गाऊनो उंचो श्री महावीरनो अशोक वृक्ष बत्रीश धनुष्य ऊंचो अने अजितादि जिनथी बाकीना जे श्री पार्श्व जिनपर्यंत बावीश तीर्थंकरो छे तेउना अशोक वृक्षो पोतपोताना शरीरना प्रमाण करता बार गुणा अधिकजाणवा.

आशंकाः—महावीरनो अशोक वृक्ष तो पोताना शरीर करतां बार गुणो कहेलो छे; यडुक्तं आवश्यक चूर्णौ श्री महावीर समवसरण प्रस्तावेः—'असोग वरपायवं जिण उच्चत्ताउ बारस गुणं सक्को विउव्वइत्ति' तेम छतां अही बत्रीस धनुष्य केम कह्युं?

समाधान.— आवश्यक चूर्णिमां तो केवल अशोक वृक्षनुं मान कह्युं छे ने अही तो सालवृक्ष सहित प्रमाण कह्युं छे माटे अही पण केवल अशोकवृक्षतो बार गुणोज छे. ते सात हाथ प्रमाण श्री महावीरना शरीर करतां बार गुणो करवाथी एकवीश धनुष्य थाय अने शाल वृक्ष अग्यार धनुष्य प्रमाण छे. ए बन्ने. म

लीने बत्रीश धनुष्य थाय ठे एवो संप्रदाय पण ठे तथा समवायांगेप्युक्तंः— "बत्तीसं धणुयाइं; चेइय रुक्खो य वद्धमाणस्स; निच्चोउगो असोगो, उच्छन्नो सालरुक्खेणं" तट्टीकाचः— निच्चोउगोत्ति— नित्य सर्वदा ऋतुरेव पुष्पादि कालोयस्य स नित्यर्तुकः, असोगोत्ति— अशोका निधानोयः समवसरणनूमिमध्ये नवति, उच्छन्नो सालरुक्खो णंति अवछन्नः शालवृक्षेणेत्यंतएव वचनादशोकस्योपरि शालवृक्षोपि कथंचिद स्तित्यवसीयत इति. तथा योजननूमि पर्यंत पुष्पवृष्टिविषे कोईएक प्रेरणा करेठेः—

आशंकाः— विकसित उत्तम पुष्पना समुदायेकरी युक्त समवसरण नूमिनेविषे जीव दया रसिक अंतःकरण वाला श्रमण लोकोनुं अवस्थान तथा गमन कर वानुं केम थायठे? कारण के त्यां जीवोनो नाश थवानो संनव ठे.

समाधानः— ते पुष्प अचित्तज होय ठे. प्रसार करवा सारुंज देवो करे ठे.

आशंकाः— ए वात अयुक्त ठे. बधां पुष्पो विकुर्वमाणज थता नथी. केमके, त्यां जलज तथा स्थलज पुष्पोनो पण संनव ठे. ए अनार्ष नथी, आर्ष ठे. यतः 'विंटठाई सुरनिं जल थलयं दिव्व कुसुम नीहारिं; पइरिंति ससंतेणं दसद्धवसंकुसुम वुट्ठिं;' सिद्धांत वचने करी ए प्रमाणे शांनल्याथी बीजा सहृदय जनो उत्तर आपे ठे.

समाधानः— ज्यां व्रती रहेठे ते देशनेविषे देव पुष्पनी वृष्टि करता नथी.

आशंकाः— ए पण उत्तरनो आनास ठे; खरेखर उत्तर कहेवाय नही. तपो धन जे ठे तेओए काष्ठीनूत अवस्थानुं अवलंबन करीने तेज देशमां अवश्य रहेवुं नही. कारण के, त्यां प्रयोजन गमनादिकनो पण संनव ठे. तेमाटे निखिल गीतार्थ सम्मत उत्तर हवे कहेठेः—

समाधानः— जेम एक योजनमात्र जे समवसरण नूमि, तेनेविषे पण अपरि मित सुरासुरादिकनो जे संमर्द ते थयो ठतां पण परस्पर कांई बाधा थती नथी. तथा जानुसुधी नाखेलां मंद मकरंदनी संपत संपादित आनंद एवा मंदार, मच कुंद, कमल, बकुल, मालती, विकसित मोगरा, इत्यादि जे कुसुम समूह तेओनी उपर संचार करनारा अथवा रहेनारा त्यां बेसनारा ऊठनारा, एवा मुनि समूह अने विबुध जन समूह ठतां कांई बाधा थती नथी. वधारे शुं कहेवुं! सुधारस जेना आंग ऊपर पडेलो ठे तेमनी पठे अत्यंत अचिंतनीय निरुपम तीर्थंकरना प्रनावथी प्रकाशमान जे प्रसार तेना योगे उल्लास थाय ठे.

आशंकाः— (दिव्यध्वनिनेविषे कोई पूर्व पक्ष वचन कहेठे) सकल जनोने आनंद देनार, उत्तम जे शाकर, द्राक्ष, इत्यादिना रसेकरी मिश्रित अने तपावेला

दुग्ध रसनो सहोदर तीर्थंकरनोज ए ध्वनि छतां प्रतिहारे कह्यो एम केम कह्युं?

समाधानः– उदार मति जे छे तेमणे ए योग्य कह्युं. तीर्थंकरनी उपर परम मधुरताएकरी मनोरम पदार्थ समूहे करी अधिक शब्दनी पंक्ति स्वभावेकरी छे; जे समये मालकौंसादि जे ग्राम, राग, तेओए करी भवजनना उपकारार्थे भगवान देशना दिएछे. ते समये बन्ने बाजूए रहेनारा देवोए अति मनोहर वेणू वीणा एओनुं मंड शब्द करण तेणेकरी तेज तीर्थंकर शब्द अत्यंत कलतर एटले दृढ करायछे. जेम के, मधुर गाननेविषे प्रवृत्त तरुण लोकना गायन रचना समये वीणा वगाडनार तेनो साथकरीने तेनी सहायता करेछे तेम ए पण जाणी लेवुं. माटे अंशेकरी प्रतिहार देवकृतत्वने कांई विरुद्ध नथी. एम कह्याथी सर्व समंजस छे. ॥ ४४६ ॥ ए उंगणचालीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– 'चउतीसा तिसयाणंति' एटले चोत्रीश अतिशयोनो चालीशमो द्वार कहे छेः– मूलः– रय रोय सेयरहिउं, देहो धवलाइ मंस रुहिराइ; आहारा नीहारा, अदिस्सा सुरहिणो सासा. ॥ ४४७ ॥ जम्माउ इमे चउरो, इक्कारस कम्म खय नव इणिहं; खेत्ते जोयणमित्ते, तिजइ जणो माइ बहुउवि. ॥ ४४८ ॥ नियभासाए नर तिरि, सुराण धम्मावबोहिया वाणी; पुव्वप्पवरोगा उवसमंति नय हुंति वेराइं. ॥ ४४९ ॥ दुब्भिक्ख डमर दुम्मारि ईई अइवुट्ठि अणविवुट्ठीउं; हुंति न बहुजियतरणी, पसरे भामंमलुज्जोओ ॥ ४५० ॥ सुररइया गुणवीसा, मणिमय सीहासणं सपय पीढं; छत्तत्तय इंदध्धय, सिय चामर धम्मचक्काइं ॥ ४५१ ॥ सहजग गुरुणा गयण,ठियाण पंचवि इमाइ वियरंति; पाउप्पवई अ सओ, चिट्ठइ जत्थ प्पहू तत्थ. ॥ ४५२ ॥ चउ मुह मुत्ति चउक्कं, मणि कंचण तार रइय साल तिगं; नव कणय पंकयाइं, अहोमुहा कंटया हुंति. ॥ ४५३ ॥ निच्च मवट्ठियमेत्ता, पहुणो चिट्ठंति केस रोम नहा; इंदियअत्था पंचवि, मणोरमा हुंति छप्पि रिओ ॥४५४॥ गंधोदयस्स वुट्ठी वुट्ठी कुसुमाण पंच वन्नाणं; दिंतिय पयाहिणी ओ, सउणा पवणोवि अणुकूलो ॥ ४५५ ॥ पणमंति दुमा वज्जं,ति दुंदुहीउ गज्जी रघोसाओ; चउतीसाइ सयाणं, सव्व जिणिंदाण होइ इमा. ॥४५६॥ अर्थः– १ रुज शब्दे मल, रोग जे श्वास प्रमुख ने स्वेद जे परसेवो एओए करी रहित, उपलक्षणे करी लोकोत्तर रूप तथा गंधे करी सुंदर एवो तीर्थंकरनो देह, २ तथा उज्ज्वल गायना दूधनी धारा समान मांस ने रुधिर होय छे; ३ जेनो आहार अने नीहार अवध्यादिक ज्ञान शिवाय चर्मचक्षुवालाथी देखाय नही. ४ विकसित क

मलनी पठे सुगंधित जेनो श्वासोच्छ्वास होय ठे. ॥४४७॥ जम्माउइमे चउरो केण्ए चार अतिशय तीर्थंकरना जन्मनी वखतेज थएला होय. बीजा इक्कारस कम्म रकय केण् अग्यार अतिशय ज्ञानावर्णी आदि चार घाती कर्मोना क्षयथी थायठे ते कहे ठेः– ५ योजन प्रमाण क्षेत्रनेविषे समवसरणे त्रिजगना कोडाकोडी प्राणीओ मां पण परस्पर बाधा न थाय, किंतु सुखे करी वर्त्ते. ॥४४८॥ ६ नगवंतनी अर्द्धमागधी नाषा मनुष्य तिर्यंच ने देवताओने तेओनी पोतपोतानी नाषारूप थईने धर्मना अवबोधने देनारी अथवा धर्मना अवबोधना जाणपणानी करनारी थाय ठे. एनो नावार्थः– एक योजन व्यापिनी एकरूप एवी ए नगवंतनी वाणी मेघे नाखेला उदकनी पठे तदाश्रयानुरूपत्वे करी परिणामने पामेठे. यडुक्तंः– "देवा देवी नरा नारी, शबराश्चापि शाबरी; तिर्यंचोपि हि तैरिश्चां, मेनिरे नगवत्गिरं" ए विधिए त्रुवननेविषे अद्भुत अतिशय शिवाय एक काले अनेक जीवोनी ऊपर उपकार करवाने समर्थ थाय नही. ७ पूर्वे उत्पन्न थएला रोगादिक शांत थाय ठे ने नवा उत्पन्न थता नथी. ८ पूर्वे नवनेविषे बांधेला वैर अने जाति संबंधी विरोध कांई थाय नही. ॥४४ए॥ ए डुर्निक्षकाल पडे नही. १० मगर शब्दे स्वचक्र अने पर चक्रनो उपद्रव थतो नथी. ११ डुम्मारिशब्दे डुष्ट देवतादिकृत मरण थाय नही. १२ ईतिते घणा तीड सूडा ऊंदर इत्यादि धान्यादिकनो नाश करनार प्राणीओनी उत्पत्ति न थाय. १३ अतिवृष्टि थाय नही. तथा १४ अनावृष्टि थाय नही. एरोगादिक जे सात ठे ते ज्यां ज्यां नगवान विहार करेठे त्यां त्यां चारे दिशानेविषे प्रत्येक पचीश योजनमां थता नथी यडुक्तं समवायांगेः– "जउ जउ वियणं अरिहंता नगवंतो विहरंति तउ तउ वियणं पणुंवीसाएणं ईई न नवइ मारी न नवइ सचक्कं न नवइ परचक्कं न नवइ अइवुठि न नवइ अणा वुठी न नवइ डुप्रिरकं न नवइ अवुपन्ना वियणं उप्पाईयावाही खिप्पामेव उपसमंति त्ति." स्थानांग टीकायामपि दशस्थानके लिखितंः– "महावीरस्य नगवतः स्वनावप्रशमितयोजनशतमध्यगतवैरमारिविड्वरडुर्निक्षाद्युपड्वस्यापीति." १५ तीर्थंकरना पश्चात् नागनेविषे तिरस्कृत ठे द्वादश सूर्यनुं तेज जेणेकरी एवा नामंमलनी प्रजा पटलनो उद्योत प्रसरे ठे. ॥ ४५० ॥ ए अग्यार अतिशय कर्मना क्षयथी थाय ठे, हवे बाकीना ओगणीश अतिशय सुररचित कहेठेः– १६ आकाशनी पठे अत्यंत स्वछ स्फटिक मणिनुं सिंहासन सपाद पीठ युक्त. १७ अति पवित्र त्रण छत्र. १८ जिनना अग्र नागनेविषे हजारोगमे न्हानी पताकाओएकरी सहित अने

अत्यंत सुंदर ऊंची रत्नमय बीजी ध्वजाओकरतां मोटी होवाथी तेने इंद्रध्वज क हे ले ते. १९ जिनना पार्श्व नागनेविषे एटले बन्नेपाशे बे यक्षोना हाथमां श्वेत चामर. २० अग्र नागनेविषे महा किरणोए करी देदीप्यमान कमलाकार धर्म प्रका शक धर्मचक्र. ॥४५१॥ ए कहेला सिंहासनादि पांच ज्यां ज्यां तीर्थंकर गमन करे ले त्यां त्यां साथे जाय ले. २१ ज्यां प्रनु बेशे ले त्यां विचित्र पुष्प, पल्लव तेणे करी प ल्लवित अने अत्यंत स्पृहणीय छत्र, ध्वज, घंटा, पताका इत्यादिके करी परिवृत एवो अशोक वृक्ष प्राडर्नूत त्यां समिपें थाय ले. ॥ ४५२ ॥ २२ चार दिशोनेविषे चार मुख तेमां पूर्वानिमुख नगवान पोते बेशे ले, बाकीनी त्रण दिशा ओनेविषे तीर्थंकरना आकार प्रमाणे तीर्थंकरना प्रनावे करी युक्त तीर्थंकरने अनुरूप एवा सिंहासनादि युक्त देवोए आकार करेला होय ले ते दिशायें रहेला जीवोने एम जणाववा माटे के नगवंत अमारी सामा जोईने प्रत्येकने बोध करेले. २३ समवसरण थाय ले ते मणि, कांचन, रौप्य एओएकरी रचित त्रण प्राकारनुं होय ले. तेमांनो पहेलो प्राकार रत्नमय वैमानिक देव करे ले, बीजो मध्यनो प्रा कार उत्तम सुवर्णमय ज्योतिष्क देव रचे ले; अने त्रीजो बाहारनो उत्तम प्राका र रौप्यमय नवनपति देव करे ले. २४ नव सुवर्णनां कमल माखणना जेवा स्पर्शवाला रचाय ले. तेमांना बे कमलोनी ऊपर नगवान पोते चरण मूके ले. बाकीना सात कमलो पालल रहे ले. नगवान ज्यारे आगल पग नाखे ले त्यारे पाललनां बवे कमलो आगल आवता जायले. २५ ज्यां ज्यां नगवान विहार करेले त्यां त्यां कंटक अधोमुख थाय ले. ॥४५३॥ २६ प्रनुना केश, रोम ने नख अवस्थित मात्र ने अवृद्धि स्वनावेज रहे ले. तेमां दाढी, मूछ ने मस्तकना केश जाणवा अने बाकीना आंग ऊपरना रोम जाणवां २७ पांच इंद्रियोना शब्द, स्पर्श, रूप, रस ने गंध ए पांच विषय ते अमनोज्ञने अनावे करी ने मनोज्ञने प्राडर्नावे करी चित्तने प्रेरण हार थाय ले. २८ वसंतादि ल ऋतु, शरीरने पुष्ट करनार जे सुख स्पर्शादि तेओना संपादकत्वे करी सर्व काल विकसित कुसुमादिकनी समृ द्धियें करी अनुकूल. संपन्न थइ चित्तने हर्ष करनार थाय ले. ॥ ४५४॥ २९ ज्यां न गवान रहे ले त्यां ऊडती धूलनो नाश करवाने अर्थे गंधोदक जे कर्पूर प्रमुख सु गंधिक वस्तुयें मिश्रित जलनी वृष्टि थाय ले; ३० श्वेत, रक्त, पीत, नील ने कृष्ण ए पांच रंगना मंदार पारिजातक ने चंपक, इत्यादिक पुष्पोनी वृष्टि थाय ले. ३१ ज्यां नगवान संचार करे ले त्यां नील, चाष, नारद्वाज तथा मयूर प्रमुख तथा

पक्षीओ ते सर्व प्रदक्षिण गमन करे बीजा पण जे नला शकुनना करनार
बे. ३१ संवर्त्तक वायु एक योजन पर्यंत क्षेत्र सुधी विधायकत्वे करी अने
सुरनि, शीतल ने मंदत्वे करी अनुकूलसुख देनार थाय बे. यदुक्तं समवायांगेः–
"सीयलेणं सुह फासेणं सुरनि मारुएणं जोयणं परिमंमलं सव्वओ समंता संपम
ज्जिकुश्त्ति" ॥४५५॥ ३२ ज्यां नगवान गमन करे बे. त्यां वृक्ष नम्र थाय बे. ३४ ज्यां
नगवान संचार करे बे त्यां सजल मेघना जेवा गंनीर शब्दवाला डुंडुनि वागे बे. ए
प्रकारे सर्व जिनेंड्रोना चोत्रीस अतिशयो थाय बे. अही समवायांगनी साथे कांई
अन्यथापणुं दीगमां आवे बे ते मतांतर जाणवुं. ॥ ४५६ ॥ मतांतरबीज सर्वज्ञ
विज्ञेय बे ए चालीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'दोसो अठारसत्ति' एटले अढार दोषोनो एकतालीशमो
द्वार कहेबेः– मूलः– अन्नाण कोह मय माण लोह माया रईय अरईय; निद्द
सोय अलियवयण, चोरीया मच्छर नया य. ॥ ४५७ ॥ पाणिवह पेम कीला, प
संग हासाइ जस्स इय दोसा; अठारसवि पणठा, नमामि देवाहि देवंतं. ॥४५८॥
अर्थः– १ अज्ञान एटले संशय अनध्यवसायी विपर्ययात्मक लक्षण मौढ्य. २
कोह. एटले क्रोध. ३ मद एटले कुल, बल, ऐश्वर्य, रूप ने विद्यादिकनो अहंकार
करवो अथवा बीजाना अनिमानने निबंधन करवुं ते. ४ मान एटले डुरनिनिवे
शने न मूकवुं अथवा तेनुं युक्तिए करी ग्रहण करवुं. ५ लोन एटले गृद्धि. ६
माया एटले दंन अथवा कपट. ७ रति एटले अनीष्ट पदार्थोंनी उपर मनेकरी
प्रीति करवी. ८ अरति एटले अनिष्ट संप्रयोगना संनवथी मनने डुःख थाय ते.
ए निद्रा एटले स्वापावस्था पांच प्रकारनी. १० शोक एटले वैधुर्य अथवा डुःखा
त्मक अंतःकरणनी वृत्ति इष्टने वियोगें आक्रंदादिरूप ते. ११ अलीक वचन एटले
वितथ नाषण. १२ चोरी एटले परद्रव्यनुं हरण करवुं. १३ मत्सर एटले बीजा
नी संपत्तिने जोई न शकवुं. १४ नय एटले प्रति नय करवो. एटले कोईने न
य उपजाववुं अथवा कोईथी नय उपजे ते. ॥४५७॥ १५ प्राणिवध एटले हिंसा
करवी. १६ प्रेम एटले स्नेह विशेष परस्पर चित्तनो राग. १७ क्रीमा ए
टले विविधप्रकारनी क्रीमाना प्रसंगनेविषे आसक्ति. १८ हास्य एटले हसवुं. ए
अढार दोष जेना नष्ट थएला बे एवा देवाधिदेवने हुं नमस्कार करुं बुं. ॥४५८॥
ए एकतालीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'अरिह चउक्कंति' एटले नामादि चार प्रकारना अरिहंतनो

बेतालीशमो द्वार कहेछे:— मूलः— जिण नामा नामजिणा, केवलिणो सिवगया य भाव जिणा; ठवणजिणा जिणपडिमा, दव्वजिणा भावजिण जीवा ॥ ४५९ ॥ अर्थः— जिन चार प्रकारना छे:— नाम जिन, स्थापना जिन, द्रव्य जिन ने भाव जिन. तेमां रुषभ अजित तथा संभवादि तीर्थंकरोनां जे नाम मात्र तेने नाम जिन कहिये. अष्ट महाप्रातिहार्यादि समृद्धिने साक्षात् अनुभवता एवा केवली एटले जेउने केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थईने परम पदने प्राप्त थया ते भाव जिन जाणवा. अही गाथाना अनुलोमे करी वचमां भावजिननुं व्याख्यान कर्युं छे. अने कांचन मुक्ताफल शैल तथा मरकतादिनी निर्माण करेली जिन प्रतिमाने स्थापना जिन कहेछे. अने भविष्य काळनेविषे श्रेणिकादिकना जीवो जे तीर्थंकर थवाना छे ते द्रव्यजिन कहेवाय छे. ॥ ४५९ ॥ ए बेतालीशमो द्वार पूरोथयो

अवतरणः— हवे 'निक्कमण तवोत्ति' एटले तीर्थंकरोए दीक्षा संबंधी तप लीधो तेनो तेतालीशमो द्वार कहेछे:— मूलः— सुमइत्थ निच्चभत्ते,ण निग्गओ वासुपुज्ज चउछेण; पासो मल्ली विय अट्ठमेण सेसाउ छट्ठेणं ॥ ४६० ॥ अर्थः— आ अवसर्पिणी काळनेविषे चोवीस तीर्थंकरोमध्ये सुमति नाथ भगवाने नित्य भोजन करतां गृहवास त्याग करीने दीक्षा लीधीछे. बारमां वासुपूज्य जिन एक उपवास करी प्रव्रजित थया छे. त्रेवीशमां श्री पार्श्वनाथ जिन अने ओगणीशमां श्री मल्लिजिन ए बन्ने त्रण त्रण उपवासकरी दीक्षालीधी छे; अने बाकीना रुषभादि वीश तीर्थंकरोए बबे उपवास करी व्रत अंगीकार कर्युं छे. एतेतालीशमो द्वार

अवतरणः— हवे 'नाणतवोत्ति' एटले ज्ञान संबंधी तपनो चुमालीशमो द्वार कहेछे:— मूलः— अट्ठम भत्त वसाणे, पासो सह मल्लि रिट्ठ नेमीणं; वसुपुज्जस्स चउछे,ण छट्ठ भत्तेण सेसाणं. ॥ ४६१ ॥ अर्थः— अष्टम भक्तांतसमये श्री पार्श्व जिन, रुषभ स्वामी. मल्लिनाथ, ने अरिष्टनेमि ए चार ने केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थई. वासुपूज्य जिनने एक उपवासने अंते केवलज्ञान ऊपन्नुं;बाकीना अजितस्वामी प्रमुख ओगणीश तीर्थंकरोने छठ भक्ते केवल उत्पन्न थयुं छे. एचुमालीशमो द्वार.

अवतरणः— हवे 'निव्वाणतवोत्ति' एटले मोक्षसंबंधी तपनो पिसतालीशमो द्वार कहेछे:— मूलः— निव्वाणं संपत्तो, चउदस भत्तेण पढम जिणचंदो; सेसाउ मासिएणं, वीरजिणंदोय छट्ठेण. ॥ ४६२ ॥ अर्थः— चतुर्दश भक्त एटले छ उपवासे करी प्रथम जिनचंद्र श्री रुषभदेव निर्वाण एटले परमानंदने प्राप्त थया सामान्यकेवलीमां पूज्य पणानेलीधे जिनचंद्र कहियें बाकीना अजित जिनथी लईने

पार्श्वनाथ पर्यंत बावीश तीर्थंकर मास एटले त्रीश उपवासेकरी मोक्षने पाम्या.अ ने चोवीशमां श्रीवीर जिनेंद्र बठ्ठेणके० बे उपवासेकरीमुक्त थया छे. एपिस्तालीशमो द्वार.

अवतरणः– हवे 'नाव जिणेसर जीवत्ति' एटले नविष्य कालनेविषे थवाना तीर्थंकरोना जीवोनो बेतालीशमो द्वार कहेछे तेनुं विवरण करतां प्रथम तेनी प्र स्तावनानी गाथा कहेछेः– मूलः– वीर वरस्स नगवओ, वोलिअ चुलसीइ वरि स सहसेहिं;पउमाई चउवीसं, जह हुंति जिणा तहा थुणिमो. ॥ ४६३ ॥ अर्थः– अत्रे षष्ठी पंचम्यऽर्थे, अने तृतीया सप्तमीना अर्थे छे. समग्र ऐश्वर्यादि गुणयुक्त श्रीमहावीर नगवान निर्वाण पाम्या पछी चोराशी हजार वर्ष गया केडे पद्मनान प्रमुख चोवीस जिनो जे प्रमाणे थशे, तेओने नाम ग्रहण पूर्वक नमस्कार करुं छुं. अहीं आवी नावना करवीः– आ अवसर्पिणीनेविषे दुःषम सुषमा लक्षण चोथा आरानेविषे नेव्याशी पक्ष अवतिष्ठमान छतां श्रीवर्द्धमान स्वामी निवृत्तथया. तदनंतर नेव्याशी पक्ष अधिक प्रत्येक एकवीश हजार वर्ष प्रमाणनां आ अवस र्पिणी संबंधी बे आरक, तथा उत्सर्पिणी संबंधी अतिदुःषम अने दुःषमरूप प्र त्येक एकवीश हजार वर्ष प्रमाण वाला आद्यना बे आरा व्यतीत थया पछी त्री जा दुःखम सुखम नामना आराना नेव्याशी पक्ष वीत्या पछी श्री पद्मनान उत्प न्न थशे. ए चारे आराना वर्षोनी संख्या चोराशी हजार वर्षनी थायछे. तेनी उ पर बे नेव्यासी पक्षो एटले एक नेव्याशी पक्षो अवसर्पिणीना ने बीजा नेव्यासी पक्षो उत्सर्पिणीना जाणवा. तेनी अल्पत्वने लीधे विवक्षा करी नथी. ॥ ४६३ ॥

अवतरणः– हवे तेज क्रमेकरी कहेछेः– मूलः– पढमं च पउमनानं, सेणिय जीवं जिणेसरं वंदे; बीअं च सूरदेवं, वंदे जीवं सुपासस्स. ॥ ४६४ ॥ तइयं सु पास नामं, उदाय जीवं पणढ नव वासं; वंदे सयंपनजिणं, पोटिल जीवं चउ छमहं. ॥ ४६५ ॥ सवाणुनूइ नामं, दढाउ जीवं च पंचमं वंदे; छठं देवसुय जि णं, वंदे जीवं च कित्तिस्स. ॥ ४६६ ॥ सत्तमयं उदय जिणं, वंदे जीवं च संखना मस्स; पेढालं अठमयं, आणंद जियं नमंसामि. ॥ ४६७ ॥ पोट्टिल जिणं च नव मं, सुरकय सेवं सुनंद जीवस्स; सयकित्ति जिणिंद समं, वंदे सयगस्स जीवंति. ॥ ४६८ ॥ एगारसमं मुणिसुव्वयं च वंदामि देवइय जीयं; बारसमं अमम जिणं, सु वइ जीवं जयपईवं. ॥ ४६९ ॥ निकसायं तेरसमं, वंदे जीयं च वासुदेवस्स; बलदे व जिअं वंदे, चोदसमं निप्पुलाइ जिणं. ॥ ४७० ॥ सुलसा जीवं वंदे, पनरसमं निम्ममत्त-जिण नामं; रोहिणि जीवं नमिमो; सोलसमं चित्तगुत्तंति. ॥ ४७१ ॥

सत्तदसमं च वंदे, रेवइ जीवं समाहि नामेणं; संवर महार समं, सयाल जीवं प णिवयामि. ॥ ४४२ ॥ दीवायणस्स जीवं, जसोहरं वंदिमो इगुणवीसं, कण्ह जि यं गयतिण्हं वीसइमं विजय मभिवंदे. ॥ ४४३ ॥ वंदे इगवीसइमं, नारयजीवं च मल्लिनामेणं; देवजिणं बावीशं, अंबडजीवस्स वंदेहिं. ॥ ४४४ ॥ अमर जिअं तेवीशं, अणंतविरियाभिहं जिणं वंदे; तह साइ बुद्ध जीवं, चोवीस भद्दजिण नामं. ॥ ४४५ ॥ उसप्पिणीए चउवीस जिणवरा कित्तिया सनामेहिं; सिरिचंदसूरि नामेहि सुहयरा हुंतु सयकालं ॥ ४४६ ॥ अर्थः— प्रथम पद्मनाभ जिनेश्वर श्री म न्महावीरना परम श्रावक श्रेणिक महाराजना जीवने हुं नमुं बुं; बीजा सूरदेव जिनने हुं वंडुं बुं ते श्री पार्श्व नामे महावीर भगवानना पितृव्यनो जीव जाणवो. त्रीजा श्री सुपार्श्व नामे जिन ते कोणिक पुत्र उदाय महाराजनो जीव जेणे भव वासनो नास कर्यो बे तेने हुं वंडुं बुं, चोथा स्वयंप्रभ जिन ते श्री वीरनो श्रावक पोटिल नामे तेनो जीव तेने हुं वंडुं बुं, पांचमां सर्वानुभूति जिन ते दृढायुषनो जीव बे; बठा देवश्रुत जिन, ते कीर्त्तिनो जीव बे; सातमां उदय जिन, ते श्री वीरनो श्रावक शंख नामे बे; आठमां पेढाल जिन, ते आनंद श्रावकनो जीव बे; नवमां पोट्टिल जिन जेनी देवताए सेवा करेली बे ते सुनंदननो जीव बे; दशमां श तकीर्त्ति जिन, ते शतक श्रावकनो जीव बे. अग्यारमां मुनिसुव्रत जिन, ते देवकीजी नो जीव बे; बारमां अमम जिन, ते सत्यकीनो जीव जगतनेविषे दीपक समान जाणवो. तेरमां निःकषाय जिन, ते वासुदेवनो जीव बे. चौदमां निःपुलाक जिन ते बलदेवनो जीव बे. पंदरमां निर्ममत्व जिन, ते सुलसा श्राविकानो जीव बे. शोलमां चित्रगुप्त जिन, ते रोहिणीनो जीव बे. सत्तरमां समाधि जिन, ते रेवती श्राविकानो जीव बे. अढारमां संवर जिन, ते सतालीनो जीव बे. उंगणीशमां य शोधर जिन, ते द्वीपायननो जीव बे वीशमां विजय जिन, ते तृष्णा रहित कृ ष्णनो जीव बे. एकवीशमां मल्लि जिन, ते नारदनो जीव बे. बावीशमां देव जिन, ते अंबडतापसनो जीव बे. त्रेवीशमां अनंतवीर्य जिन, ते अमरनो जीव बे. अने चोवीशमां भद्र जिन ते स्वातिबुधनो जीव जाणवो. एवीरीते उत्सर्पिणी काल नेविषे चोवीश तीर्थंकर कह्या. ते कोना कोना जीव थशे तेउना पूर्वेला भवनां नाम पण कह्या तेनी साथे सूत्रकर्त्ता श्री चंद्र नामना सूरिए हुं स्तुति करुं बुं एम पोतानुं नाम पण जणाव्युं बे अने ए तीर्थंकरो सर्वकाल सुखना करनारा थाओ एम प्रार्थना करी बे. अहो तथाविध संप्रदायना अभावथी तथा शास्त्रांतरनीसाथें

विसंवादि पणाने लीधे विशेषेकरी विवरण कर्युं नथी. ॥४७६॥ एछेतालीशमो द्वार

अवतरणः– हवे 'संखा उड्डाह तिरिय सिद्धाणमिति' एटले अध ऊर्ध्व ने तिर्छा लोकनेविषेथता सिद्धोनी संख्यानो सुमतालीमो द्वार कहेछेः– मूलः– चत्तारि उड्ढ लोए, डुवे समुद्दे तिउ जले चेव; बावीस महो लोए, तिरिए अठुत्तर सयं तु. ॥ ४७७ ॥ अर्थः– ऊर्ध्व लोकनेविषे एक समये उत्कृष्टपणे चार सिद्ध थाय छे. समुद्रनेविषे बे; शेष ह्रद नद्यादि संबंधि जलनेविषे त्रण; पण प्राभृताभिप्रायेक री तो जलमां चार सिद्ध थता देखाय छे. अधोलोकनेविषे उत्कृष्टे एक समये बावीश सिद्ध थायछे. सिद्ध प्राभृतनेविषे वली आम दीठामां आवे छेः– यथा. "चत्तारि उड्ढ लोए, जले चउक्कं डुवे समुद्दंपि; अठ सयं तिरि लोए, वीस पहुत्तं अहो लोए." एतट्टीकायां चः– "विंशति पृथक्त्वं द्विविंशति प्रमाणं गृहीतं द्वि प्र भृत्या नवन्य इति" पृथक्त्व वचने करी जो पण अही 'दोवीस महो लोए' एम थाय छे तो पण समीचीनज छे. अने तीर्यग लोके एक समये उत्कृष्टथी एक शो ने आठ सिद्ध थाय छे. ॥ ४७७ ॥ ए सुडतालीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'तह एक्क समय सिद्धाणंति' एटले एक समये सिद्धोनी संख्यानो अम्तालीशमो द्वार कहे छेः– मूलः– इक्कोव दोव तिन्निव, अठ सयं जाव एक्क समएणं; मणुअगईए सिज्झइ, संखाउ य वीयरागाउ. ॥ ४७८ ॥ अर्थः– एक समये जघन्यथी एक, बे अथवा त्रण सिद्ध थाय छे. अने उत्कृष्टथी एक शो ने आठ सिद्ध थाय छे. ते मनुष्यगतिविषे जाणवा पण देवगतिनेविषे नजाणवा ते पण संख्याता आउषावाला जाणवा पण असंख्याता आउषावाला नसमज वा ते वली वीतराग लक्षणवाला एटले जेउए सर्व कर्म कलंक अपगत करेला छे ते समजवा पण बीजा कुतीर्थीउनी संमत पठे सकर्मीउ नही जाणवा. ॥ ४७८ ॥ ए अडतालीशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– 'तेय पन्नरस भएहिंति' एटले ते सिद्ध पंदर भेदे छे तेनो ओगण पचाशमो द्वार कहे छेः– मूलः– तिञ्चयर अतिञ्चयरा, तिञ्च सलिंग न्नलिंग थी पु रिसा; गिहि लिंग नपुंस अतिञ्च सिद्ध पत्तेय बुद्धाय. ॥ ४७९ ॥ एग अणेग सयं बुद्ध बुद्ध बोहिय पभेयओ भणिया; सिद्धांते सिद्धाणं, भेया पन्नरस संखत्ति. ॥ ४८० ॥ अर्थः– १ तीर्थंकरनी पदवी भोगवीने जे सिद्ध थया ते तीर्थंकर सिद्ध २ सामान्य पणे केवल ज्ञान पामीने जे सिद्ध थया ते अतीर्थंकर सिद्ध; ३ जेणे करी संसार सागरने तराय तेने तीर्थ कहिये. यथावस्थित जीवा जीवादि पदार्थ

प्ररूपक, परम गुरु प्रणीत प्रवचन तेथी जे निराधार नही तेने संघ कहिये. ते अ थवा प्रथम गणधर उत्पन्न थए जे सिद्ध थया ते तीर्थ सिद्ध; ४ रजोहरणादिरू प व्यवस्थित छतां जे सिद्ध थया ते स्वलिंग सिद्ध; ५ परिव्राजक संबंधि वल्कल कापायादिरूप वेषना धरनार जाव सम्यक्त्वने अंगीकार करी तेहीज समये जो केवल ज्ञान पामी काल करी सिद्ध थाय ते अन्य लिंग सिद्ध कहिये; अन्यथा ते जो पोतानुं घणुं आयुष्य जुवे तो ते लिंगनो त्याग करीने साधुलिंगने धा रण करे छे. पछी जो सिद्ध थाय तो तेने अन्य लिंग सिद्ध न कहिये ६ स्त्रीलिंग छतां सिद्ध थया ते स्त्री लिंग सिद्ध. ते स्त्री लिंग त्रण प्रकारनो छेः– वेद, शरीर निर्वृत्ति, ने नेपथ्य, तेमां अही मात्र शरीर निर्वृत्तिनुं प्रयोजन छे. पण वेद ने नेप थ्ये करी न जाणवुं. केमके, वेद छतां सिद्धतानो अभाव छे, तेम नेपथ्यनुं पण अप्रमाण पणुं छे. ते स्त्रीलिंगनेविषे वर्त्तमान छतां जे सिद्ध थया ते स्त्रीलिंग सिद्ध ७ पुरुष शरीर निर्वृत्तिरूपे व्यवस्थित छतां जे सिद्ध थया ते पुरुष लिंग सिद्ध. ८ जे गृहस्थ छतां सिद्ध थया ते गृहलिंग सिद्ध ते मरुदेवी प्रमुख जाणवा. ९ नपुंसक लिंगे वर्त्तमान छतां जे सिद्ध थया ते नपुंसक लिंग सिद्ध; १० तीर्थनो जे अ भाव तेने कहिये अतीर्थ. तीर्थना अभावे मरुदेवी प्रमुखनीपरें अथवा श्री सुवि धि नाथने श्री शांतिनाथने अंतरे तीर्थनो व्यवछेद थया पछी पाछी तीर्थ नी उत्पत्ति थई नथी तेना अंतराल समयमां जे जाति स्मरणादिके सिद्ध थया ते अतीर्थ सिद्ध; ११ किंचित् वृषभादि कारण अनित्यादि भावनानो हेतु जाणी ने बोधवान थईने जे परमार्थ जाणीने सिद्धताने पाम्या ते प्रत्येकबुद्ध सिद्ध; १२ एक समये एकाकी जे सिद्ध थया ते एक सिद्ध; १३ एक समये जे अनेकनी सा थें सिद्ध थया ते अनेक सिद्ध; १४ पोतानी मेलेज तत्वज्ञान पामीने आर्द्रकु मारादिनीपरे जे सिद्ध थया ते स्वयंबुद्ध सिद्ध; १५ आचार्यादिकना प्रतिबोधे करी जे बोधने पाम्या थका सिद्ध थया ते बुद्ध बोधित सिद्ध; ए पूर्वोक्त तीर्थंक रत्वादिना विशेषेकरी भेदोनुं प्रतिपादन कर्युं, ए पंदर प्रकार सिद्धांतनेविषे कहे ला छे, पण तीर्थंकर सिद्ध अतीर्थंकर सिद्धरूप बे भेदनेविषे अथवा तीर्थ सिद्ध ने अतीर्थ सिद्धरूप बे भेदनेविषे बाकीना बधा भेदोनो अंतरभाव थाय छे. त्यारे शेष भेदोनुं उपादान शासारु कर्युं? तेम न समजवुं केम के, जो पण ए बोलवुं साचुं छे तेम अंतरभाव थाय छे तो पण विवक्षित बे भेदना उपादान मात्रथी

शेष जेदोनुं परिज्ञान न थाय माटे विशेष परिज्ञानने अर्थें आ शास्त्रारंज प्रयास स फल छे माटे शेष जेदोनुं उपादान कर्युं. ॥ ४७० ॥ ए उंगणपचाशमो द्वार थयो.

अवतरणः– हवे 'अवगाहणाय सिद्ध, उक्किठ जहन्न मज्झिमाएयत्ति' एटले उत्कृष्ट मध्यम ने जघन्य ए त्रण प्रकारनी अवगाहनाएकरी एक समयनेविषे केटला सिद्ध थाय तेनो पचाशमो द्वार कहेछेः– मूलः– दोवेवुक्कोसाए, चउर जहन्नाइ मज्झिमाएउ; अठाहियं सयं खलु, सिज्झइ ओगाहणाइ तहा. ॥ ४७१ ॥ अर्थः– एकज समये उत्कृष्टथी पांच शें धनुष्य प्रमाणना शरीरनी अवगाहना वाला बे सिद्ध थाय; तथा जघन्यथी एक समयमां बे हाथना शरीरनी अवगाहना वाला चार सिद्ध थायछे; अने ते थकी वचमांना मध्यम अवगाहना वाला तो एक समये एक शो ने आठ सिद्ध थायछे,

आशंकाः–नाजिकुलगरनी पत्नी मरुदेवी ने नाजिराजा ए बन्नेनां शरीरोनुं पांच शें पचीश धनुष्यनुं प्रत्येक मान ठरशे नही; केमके, जेटलुं नाजि राजाना शरीर नुं मान छे तेटलुंज मरुदेवीना शरीरनुं मान छे. यतः– "संघयणं संठाणं उच्चत्तं चेव कुलगरेहिं सममिति वचनात्" तेमां मरुदेवी जगवती सिद्ध थया, त्यारे उत्कृष्टथी पांच शें धनुष्य अवगाहना केम घटे? अर्थात् न घटे.

समाधानः– एमां दोष नथी. केमके, मरुदेवीना तनुनुं प्रमाण नाजिराजाना तनुथी कांइक न्यून छे. उत्तम संस्थानवान स्त्री, उत्तम संस्थानवान पुरुषना करतां पोतपोताना कालनी अपेक्षाए किंचित् ओछा प्रमाणवाली थायछे. माटे मरुदेवीनी पण पांच शें धनुष्यनी अवगाहना कहेवाथी कांई दोष नथी. वली हस्तिना स्कंधनी ऊपर आरूढ छतां संकुचितांगी मरुदेवी सिद्ध थया. ते कारण माटे शरीर संकोची जावथी अधिक अवगाहनानो संजव होवाने लीधे कांई विरोध नथी. अथवा जे उत्कृष्टथी पांच शें धनुष्योनुं मान आगमने विषे कह्युं छे. ते बाहुल्यापेक्षाएकरी जाणवुं. अन्यथा पांच शें ने पचीश धनु प्रमाण उत्कृष्टावगाहना ते मरुदेवी माताना कालनेविषे वर्त्तनारा मनुष्यने अजाव करवा योग्य थशे, केमके, मरुदेवीना आ देशांतरे नाजिकुलकर तुल्य छे तडुक्तं सिद्ध प्राजृत टीकायांः– मरुदेवीविआए संतरेण नाजितुल्लत्ति." सिद्धप्राजृत सूत्रेप्युक्तंः– "उंगाहणा जहन्ना, रयण डुगं अह पुणोइ उक्कोसो; पंचेव धणु सयाइं, धणुह पहुत्तेण अहिआइं." एतट्टीकाव्याख्याचः– "पृथक्त शब्दो बहुत्ववाची बहुत्वं चेह पंच विंशति रूपं डृष्टव्यमिति" ॥ ४७१ ॥ ए पचाशमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– 'गिहिलिंग अन्नलिंग स्सलिंग सिद्धाण संखाउत्ति' एटले गृहिलिंग तथा अन्यलिंग अने स्वलिंग सिद्धोनी संख्यानो एकावनमो द्वार कहेछेः मूलः– इह चउरो गिहिलिंगे, दसन्नलिंगे सयं च अठहियं; विन्नेयं च सलिंगे समयेणं सिद्धमाणाणं. ॥ ४७२ ॥ अर्थः– अही जिनशासने मनुष्य लोकमां गृहस्थलिंगि वर्त्तमान एकज समय उत्कृष्टथी चार सिद्ध थाय छे. तथा तापसादि अन्यलिंगे वर्त्तमान उत्कृष्टथी एक समये दश सिद्ध थायछे. तेम यतिलिंगे एक समये उत्कृष्टथी एक शोनेआठ सिद्धथाय. ॥४७२॥ ए एकावनमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– सांप्रत 'बत्तीसाई सिज्झंति अविरयमिति, बत्रीशादि निरंतर पणे सीझतां एक शो ने आठ सीम एक समयथी आठ समय सीझतानी संख्यानो बावनमो द्वार कहेछेः– मूलः–बत्तीसाई सिज्झंति अविरयं जाव अठ अहिय सयं, अठ समएहि एक्के,क्कणं जावेक समयंति ॥४७३॥ बत्तीसा अडयाला, सठी बावत्तरी य बोधव्वा; चुलसीई छन्नउई, दुरहिय मठोत्तरसयं च. ॥ ४७४ ॥ अर्थः– एकथी लईने बत्रीश पर्यंत सिद्ध थायछे. निरंतर आठ समय सुधी यावत् जाणवुं. अही आ परमार्थ छेः– प्रथम समयनेविषे जघन्यथी एक अथवा बे अने उत्कृष्टथी बत्रीश सिद्ध थायछे. बीजा समयनेविषे पण जघन्यथी एक अथवा बे अने उत्कृष्टथी बत्रीस मांडीने यावत् आठमां समये पण जघन्यथी एक अथवा बे अने उत्कृष्टथी बत्रीश सिद्ध थायछे एम जाणवुं. एनी उपर अवश्य अंतर समयादिके कोई पण सिद्ध थाय नही. तथा पूर्वोक्तरीते तेत्रीश आदिदई अडतालीश पर्यंत निरंतर उत्कर्षे करी सात समय यावत् प्राप्त थता सुधी सिद्ध थायछे. एनी उपर नियमे करी अंतर समयादिक रहे. तथा उगण पचाश आदि देईने साठ पर्यंत निरंतर सिद्ध थाय छे ते उत्कृष्टथी यावत् छ समय प्राप्त थता सुधी तेनी उपर अवश्य अंतर रहे. तथा एकसठ आदि देईने बोत्तेर सुधी निरंतर सिद्ध थाय छे ते उत्कृष्टथी पांच समय सुधी त्यार पछी नियमथी अंतर रहे. तथा तोतेरथी लईने चोराशी सुधी निरंतर सिद्ध थाय ते उत्कृष्टथी चार समय सुधी. त्यार पछी अवश्य अंतर रहे तथा पञ्चाशीथी ते छनु सुधी निरंतर सिद्ध थाय छे ते उत्कर्षथी यावत् त्रण समय सुधी. त्यार पछी नियमथी अंतर रहे. तथा सताणुथी ते एक शो ने बे सुधी निरंतर सिद्ध थाय ते उत्कर्षथी बे समय सुधी त्यार पछी नियमथी अंतर रहे. तथा एक शो ने त्रणथी लईने एक शो ने आठ पर्यंत सिद्ध थाय छे ते नियमथी एक समय प्राप्त थता सुधी त्यार पछी अवश्य समयादिक अंतर रहेछे.॥४७४॥

हवे आठ समय आदेदई एकेक ऊणो समय अंतर पडे ते देखाडे छे मूलः—अठ य सत्त य छय पंच चेव चत्तारि तिन्नि दो एक्कं; बत्तीसाइसु समया, निरंतरं अंतरं उवरिं ४७५ अर्थः— बत्रीस सीजे तो आठ समय पछी आंतरो; अडतालीस सीजे त्यां सात समय पछी आंतरो; साठ सीजे ते वारे छ समय पछी आंतरो बहुतेर सीजे तेवारें पांच समय पछी आंतरो; चोरासी सीजे तेवारें चार समय पछी आंतरोपडे छनुं सीजे तेवारें त्रण समयपछी आंतरो पडे एक सो बे सीजे तेवारे बे समय पछी आंतरो पडे अने एक शो ने आठ सीजे तो एक समयपछी आंतरो पडया पछी सीजे परंतु आंतरा विना सीजे नही. ए ४७४—७५ ए बे गाथा तेना अर्थ प्रमाणेज जाणवुं. ॥४७५॥ ए बावनमो द्वार.

अवतरणः— 'थीवेए पुंवेए नपुंसए सिज्झमाण परिसंखा मिति' एटले स्त्रीवेद पुरुषवेद तथा नपुंसक वेदना सिझता जीवो तेनी संख्यानो त्रेपनमो द्वार कहे छेः— मूलः— वीस त्थि गाउ पुरिसाण अठ सयं एग समयउ सिज्झे; दस चेव नपुंसा तह, उवरि समएण परिसेहो. ॥ ४७६ ॥ अर्थः— एक समयनेविषे उत्कर्षथी वीश स्त्री सिद्ध थाय. पुरुष एक शो ने आठ सिद्ध थाय. अने नपुंसक दश सिद्ध थाय. उक्त संख्यानी ऊपर सर्वत्र पणे एक समये सिद्ध थवानो सिद्धांतामां प्रतिषेध छे; एटले एथी वधारे सिद्ध थई शके नही. ॥ ४७६ ॥

अवतरणः एज द्वारनेविषे कई गतिथी आवीने केटला जीवो उत्कर्षथी एक समये सिद्ध थाय छे? ते विशेषे करी प्रतिपादन करता छतां कहे छेः— मूलः— वीस नर कप्प जोइस, पंचय जवण वण दसय तिरियाणं; इत्थीउ पुरिसा पुण, दस दस सव्वेवि कप्प विणा. ॥ ४७७ ॥ कप्पठ सयं पुढवी, आउ पकंप्प नाउ चत्तारि; रयणाउसु तिसु दस दस, छतरूण मणंतरं सिज्झे. ॥ ४७८ ॥ अर्थः— नर के० मनुष्योमांथी स्त्रीए स्त्रीपणानो त्याग करीने बीजा जवे पाछा मनुष्य गतिमां आवीने जे एक समयनेविषे सिद्ध थाय छे ते उक्त रीतीए वीशज जाणवा. सौधर्म तथा ईशान देवलोकनी स्त्रीओ स्वजावे ते जवनो त्याग कस्या पछी मनुष्य गतिमां आवीने एक समयें वीश सिद्ध थाय छे. बेज कल्पमां स्त्रीउ उत्पन्न थाय छे माटे कप्पत्ति एवी सामान्योक्ति छतां सौधर्म ने ईशान लख्युं. ज्योतिषीनी स्त्रीओ मनुष्यगतिमां आवीने एक समये वीस सिद्ध थायछे जुवनपती, दश निकायनी तथा व्यंतरनी स्त्रीओ मनुष्यमां आवीने प्रत्येक पांच पांच सिद्ध थाय छे. पंचेंद्रिय तिर्यग्नी स्त्रीओ त्यां स्त्रीत्वथी निवर्त्तन थईने मनुष्य जवमां आवी दश सिद्ध थाय छे. ए इत्थीउ एटले स्त्रीउ कही. हवें पुरिसाण के० पुरुष ते सर्व कल्प शिवाय मनुष्य, ज्यो

तिष्क, नवनपति, व्यंतर, तथा तिर्यग्गति लक्षण पांच स्थान संबंधि पुरुषो पुरुष त्वथी निवृत्त थई अनंतर मनुष्य नवमां आवी एक समये उत्कर्षे करी प्रत्येक दश दश सिद्ध थाय ढे. ए कल्पना देवोविना कह्युं.॥४७७॥पण कल्पथी आवीने केटला सिद्ध थाय ढे ते कहे ढेः—कल्पस्थ एटले विमानवासी देवो अनंतर नवनेविषे मनुष्यपणुं पामीने एक समयमां उत्कर्षथी एक शो ने आठ सिद्ध थाय ढे. तथा पृथ्वीकायिक, अप्कायिक, तथा पंकप्रना थकी आवीने प्रत्येक चार सिद्ध थाय ढे; रत्नप्रना, शर्कराप्रना, वालुकाप्रना ए त्रण पृथ्वीना आव्या प्रत्येक दश सिद्ध थाय ढे. धूम प्रनादि त्रण पृथ्वीना आवेला सिद्ध थता नथी. वनस्पतिकायथी निवर्त्तन थईने अनंतर मनुष्य नव पामी उत्कर्षे एक समये ढ सिद्ध थाय ढे. तेजने वायुकायना अनंतर नवे मनुष्यपणुं प्राप्त थयाथी तथा द्वि त्रि अने चतुरिंद्रियने नवस्वनावथीज अनंतर नावेकरी सिद्धिनो अनाव ढे. तथाचोक्तं प्रज्ञापनायांः— " अणंतरागयाणं नंते नेरइया एग समएणं तेवइया एग समएणं केवइया अंतकिरियंएकारति गोयमा जहन्नेणं एगो दो वा तिन्नि वा उक्कोसेणं दस रयणप्पना पुढवि नेरइयावि एवं चेव जाव वालुयप्पना पुढवि नेरइया, पंकप्पना पुढवि नेरइया उक्कोसेणं चत्तारि असुरकुमारो दस असुरकुमारीउ पंच एवं जहा असुरकुमारा सदेवीया तहा जाव वणियकुमारा पुढविकाइया ए चत्तारि एवं आउकाइयावि वणस्स काइयासु ढ पंचिंदिया तिरिक्ख जोणिया दस पंचेंदिय तिरिक्ख जोणणीउवि दस मणुस्सा दस मणुस्सीउ वीसं वाणमंतरा दस वाणमंतरीउय पंच जोइसिया दस जोइसिणीउ वीसं वेमाणिया अठसयं वेमाणीउ वीसमिति " सिद्ध प्रानृतनेविषे देव गतिनेविषे. अन्यत्र त्रण गतिनेविषे पण दश एम कह्युं ढे. " सेसाण गईण दस दस गंति वचनात् " तत्व तो श्रुत ज्ञानी जाणे. अही देवादि पुरुषवेदथी अनंतर निवर्त्तिने केटला एक पुरुषो थाय ढे, केटलाएक स्त्रीओ थाय ढे; केटलाएक नपुंसको थाय ढे. एमज स्त्रीओनापण देवी प्रमुखथी चवीने तेज त्रण नांगा जाणवा तेम नारक नपुंसको चवीने तेज त्रण नांगारूपे थाय ढे. ए सर्व नव नांगानो संख्या थाय ढे. तेमां जे देवना पुरुषवेदथी निर्वृत्त थई पुरुष थईने सिद्ध थाय ढे ते एक समयनेविषे एक शो ने आठ सिद्ध थाय ढे. अने बाकीना आठ नांगानेविषे प्रत्येक दश दशज सिद्ध थाय ढे. तेज विवरीने कहेढेः— देवना पुरुषवेदथी आवी पुरुष थईने एक समयनेविषे एक शो ने आठ सिद्ध थाय ढे. अने तेज वेदथी आवी स्त्री तथा नपुंसक थईने प्रत्येक दश दश सिद्ध थाय ढे. तथा देवीना नवथी आवी

पुरुष थईने दश सिद्ध थाय छे; एमज स्त्री तथा नपुंसक पणे थईने पण दश दश सिद्ध थाय छे जे वैमानिक देवीओ थकी, ज्योतिष्क देवी थकी, तथा मानुषी थकी आवीने वीस सिद्ध थाय छे एम पूर्वे कह्युं छे, ते पण अही पुरुष, स्त्री तथा नपुंसकपणुं पामीने तेना द्विक संयोगेकरी अथवा त्रिक संयोगे करी मळो छतां वीस सिद्ध थायछे. पण केवळ पुरुषो, अने केवळ स्त्रीओ अथवा केवळ नपुंसक थईनेज वीश सिद्ध थती नथी. तथा यदपि वीश स्त्रीओ एक समये अही मनुष्यपणे सिद्ध थाय छे एम पूर्वे कह्युं छे, तत्रापि कोई पुरुषवेदपणाथी कोई स्त्रीवेदपणाथी अने कोई नपुंसकवेद पणाथी आवेली मळी अही स्त्रीवेदपणुं पामोने वीश सिद्ध थाय छे. पण केवळ पुरुषथकी, केवळ स्त्रीथकी अथवा केवळ नपुंसकथकीज आवेली वीस सिद्ध न थाय. एरीते ए सर्व दिशाए भांगानी भावना करवी. तदुक्तं सिद्ध प्राभृत सूत्रेः– सेसाउ अठ भंगा, दसगं दसगं तु होइ एकेके; इति. अत्रे कांईक बीजुं विशेष दर्शावे छेः– जेम के, नंदनवननेविषे एक समये चार सिद्ध थाय छे. 'नंदणे चत्तारि' इति प्राभृत टीका वचनात् प्रत्येक विजयनेविषे वीश सिद्ध थाय छे. "वीसा एगयरे विजये' इति वचनात्. वळी संहरणे करी कर्मभूमि अकर्मभूमि कूटशिलादिक सर्व स्थाननेविषे एक समये उत्कर्षे करी दश दश सिद्ध थायछे. अने पंडक वननेविषे संहरणथी बे सिद्ध थायछे. पंदर कर्मभूमिनेविषे जन्म पामेला एक शो ने आठ सिद्ध थायछे. यदुक्तं सिद्ध प्राभृत सूत्रेः– "संकमणाए दसगं, दोचेव हवंति पंडगवणंमि; समयेण य अठसयं, पन्नरससु कम्मभूमीसु." तथा उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी ए प्रत्येकना त्रीजा तथा चोथा आरानेविषे एक समये एक शो ने आठ सिद्ध थाय छे. अवसर्पिणीना पांचमां आरानेविषे एक समये वीश सिद्ध थाय छे. बाकीना प्रत्येक उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणीना सर्व आरानेविषे एक समये दश दश सिद्ध थाय छे. उक्तंच सिद्ध प्राभृतसूत्रेः– उस्सप्पिणि वस्सप्पिणि, तइय चउत्थय समासु अठसयं; पंचमियाए वीसं, दसगं दसगं च सेसासु." अही पांचमोआरो अवसर्पिणि संबंधी जाणवो, पण उत्सर्पिणीनो न जाणवो केमके, ते काळनेविषे तीर्थनो अभाव छे. ॥४७७॥ ए त्रेपनमो द्वार

अवतरणः– हवे 'सिद्धाणं संठाणंति' एटले सिद्धोना संस्थानोनो चोपनमो द्वार कहेछेः– दीहं वा हस्संवा, जं संठाणं तु आसि पुव भवे, तत्तो तिभागहीणा सिद्धाणोगाहणा भणिया. ॥ ४७८ ॥ अर्थः– दीर्घ प्रमाण पांच शें धनुष्योनुं ह्रस्व प्रमाण बे हाथनुं तथा मध्यम प्रमाण विचित्र होयछे. तेमां जेटलुं चरम सम

थनेविषे संस्थान होय ते संस्थानथी त्रीजा भागे हीन एटले वदन तथा उदर प्रमुख छिद्रो पूराई गयाथी त्रीजो भाग हीन सिद्धनी अवगाहना थायछे. ते पोतानी अव स्थानेविषे जाणवी, एम तीर्थंकरो तथा गणधरोए कह्युं छे. ॥ ४८९ ॥

एज स्पष्ट पणे दर्शावे छेः– मूलः– जं संठाणं तु इहं, नवंच यं तस्स चरम समयंमि; आसीय पए सघणं, तं संठाणं तहिं तस्स. ॥ ४९० ॥ अर्थः– जे सं स्थान आ मनुष्य भवनेविषे होय तेज वशवर्त्तिउ भव शरीर अथवा संसारनो त्याग करतां अथवा काययोग मूकतां चरमसमये सूक्ष्मक्रिया प्रतिपत्ति ध्यान ना बले करी वदन तथा उदरादि रंध्रने पूरवाथी त्रीजे भाग हीन प्रदेश घन था य छे. तेज प्रदेशघन मूल प्रमाणनी अपेक्षाए त्रीजे भाग हीन संस्थान कहेवाय छे ते लोकाग्रस्थित सिद्धनुं जाणवुं पण बीजानुं नही ॥ ४९० ॥

ते अवस्थान एक आकारेज थाय छे अथवा अन्य आकारे पण थायछे? ते कहेछेः– मूलः– उत्ताणउव्व पास,ल्ल उ य ठियउ निसन्नउ चेव; जो जह करेइ कालं; सो तह उववज्जए सिद्धो. ॥ ४९१ ॥ अर्थः– उत्तान एटले चीतुं सूतां, उलटुं सूतां, पासुंवाली सूतां ऊभा छतां अथवा बेठा छतां, अधिक शुं कहेवुं प ण जे मनुष्य भवमां जेवा प्रकारे अवस्थित छतां काल करे ते तेवाज प्रकारे करी सिद्ध थाय छे. ॥ ४९१ ॥ ए चोपनमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'अवहि अट्ठाणं सिद्धाणमिति' एटले सिद्धने रहेवाना स्था ननो पचावनमो द्वार कहेछेः– मूलः– ईसिप्पब्भाराए, उवरिं खलु जोयणस्स जो कोसो; कोसस्स य छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भणिया. ॥ ४९२ ॥ अर्थः– सर्वार्थ सिद्ध विमाननी ऊपर बार योजन ऊंचां जता पिस्तालीश लाख योजन विष्कंभ वृत्तवाली, एटलाज आयाम युक्त छे; तेमांना बे पण विचाले कम्माह प्रमाणे आ याम विष्कंभ अष्ट योजन प्रमाण क्षेत्रे अष्ट योजन बाहुल्य छे. तदनंतर एकेक प्रदेश हाणी करतां अंतनेविषे मक्षिकाना पांखथी पण पातली अंगुला संख्येय भाग मात्र बाहुल्य छे. सर्व श्वेतवर्ण एटले निर्मल स्फटिकना जेवी छे. ऊघाडेला छत्र अ थवा घृतथी भरेला वाटकाना आकारे. एवी ईषत् प्राग्भारा नामनी सिद्ध शिला जा णवी. अही केटलाएक कहेछे के, सर्वार्थ सिद्धनी ऊपर बार योजन उपरांत प्राग भारानी ऊपर एक योजन गया पछी लोकांत छे. ते योजनना ऊपरला क्रोश ए टले चोथा गव्यूतिना अथवा क्रोशना सर्वोपरना छग भागनेविषे त्रण शें तेत्रीश धनुष्योने बत्रीस अंगुल जेटली जग्यामां सिद्धनी अवगाहना छे. उत्कर्षथी एटलोज

सिद्धावाहनानो नाव श्री वीतरागेकह्यो छे. यडुक्तं॥ तिन्निसया तेत्तीसा धनुत्तिनागीय कोस छप्नागो; जंपरमो गाहोयं, तो कोसस्स छप्नाग ॥४ए१॥ मूलः– अलोए पहिया सिद्धा,लोयग्गे य पइछिया; इहं बोदिं चइत्ताणं, तह गंतूण सिज्झई.॥४ए२॥अर्थः-अही सप्तमी तृतीयार्थेछे. अलोकनेविषे केवल आकाशास्तिकाय छे. पण धर्मास्तिकायादिना अनाव थकी सिद्ध प्रतिहणाणा थकां पंचास्तिकायात्मक लोकना अग्रे एटले मूर्द्धनि नेविषे प्रतिष्ठित एटले अपुनर्गतिए अवस्थित थया छे. तथा आ मनुष्य क्षेत्रनेविषे शरीरनो त्याग करीने लोकना अग्रे समयांतरे प्रदेशांतरने न स्पर्शतां त्यां प्राप्त थईने सिद्ध थाय छे एटले निष्ठितार्थ थाय छे. ॥४ए३॥ ए पचावनमो द्वारपूरोथयो.

अवतरणः– संप्रति 'अवगाहणाय तेसिं, उक्कोसत्ति'– सिद्धनी उत्कृष्टी अवगाहना देहना माननो छप्पन्नमो द्वार कहेछेः– मूलः–तिन्नि सया तेत्तीसा, धणुत्तिनागो य होइ बोधव्वो; एसा खलु सिद्धाणं, उक्कोसोगाहणा नणिया. ॥४ए४॥ अर्थः– सिद्धोनी उत्कृष्ट अवगाहना त्रण शें तेत्रीश धनुष्य तथा एक धनुष्यना त्रीजा नाग जेटली जाणवी. ते आ प्रमाणेः– सिद्धि गमन योग्य उत्कृष्ट अवगाहना पांच शें धनुष्यरूप छे. तेनो त्रीजो नाग एक शो छासठ धनुष्य ने चोसठ आंगली ते सिद्धि गमनकाले वदन तथा उदरादि विवरणो पूरायाथी संकुचित थई जतां ते पांच शें धनुष्योमांथी ओछा कस्याथी बाकीनी उत्कृष्ट सिद्धावगाहना जाणवी. अने जे सवा पांचशें धनुष्योनी उत्कृष्टथी अवगाहनानुं मान सिद्धिगमन योग्य मरुदेवी प्रमुखनुं क्यांक संनलाय छे, ते देशांतरेकरी जाणी लेवुं. ॥ ४ए४ ॥ ए छप्पन्नमो द्वार पूरो थयो. ॥

अवतरणः– हवे 'मज्झिम सिद्धोगोहणत्ति' एटले मध्यम सिद्धावगाहनानो सत्तावनमो द्वार कहेछेः– मूलः– चत्तारिअ रयणीउ, रयणि तिनागूणिया य बोधव्वा; एसा खलु सिद्धाणं, मज्झिम उगाहणा नणिया. ॥ ४ए५ ॥ अर्थः– चार हाथ उपर एक हाथ त्रीजे नागे ओछो करिये एटली सिद्धोनी मध्यम अवगाहना जाणवी. श्री महावीर नगवानना शरीरनुं मान सात हाथनुं हतुं. तेणे सिद्धावस्थानेविषे रंध्रपूरवाथी बे हाथ ने आठ आंगलां जेटलो नाग संकुचाई गया थी बाकी चार हाथ ने शोल आंगला मध्यमावगाहना जाणवी. उपलक्षणथी उत्कृष्ट सिद्धावगाहनाथी नीचे अने जघन्यथी ऊपर ए सर्व मध्यमावगाहना थाय छे.

आशंकाः– जघन्य पदे सात हाथ उंचा ने आगमनेविषें सिद्धि कही छे. तेथी ए अवगाहना जघन्यथी कहेवाय तेने मध्यम केम कही!

समाधानः– ते अयुक्त छे. केमके, तने वस्तुतत्वनुं अपरिज्ञान छे माटे सामान्य केवलीने तो हीन प्रमाण पण थाय छे, आ अवगाहना माननेविषे सामान्य सिद्धनी अपेक्षाए करी हीनता कही छे अने तीर्थंकरनी अपेक्षाए जघन्य पदे तेम पण कह्युं छे. माटे एमां कांई दोष नथी. ॥ ४७५ ॥ ए सतावनमो द्वार पूरो थयो

अवतरणः– हवे 'जहन्न सिद्धोगाहणत्ति' एटले जघन्यथी सिद्धावगाहनो अठावनमो द्वार कहेछेः– मूलः– एगा य होय रयणी, अठेवय अंगुलाइ साहीया; एसा खलु सिद्धाणं, जहन्न उगाहणा नणिया. ॥ ४७६ ॥ अर्थः– एक हाथने आठ आंगलनी जघन्यथी सिद्धावगाहना तीर्थंकर तथा गणधरोए कहीछे. ते आमः– सिद्धि गमनयोग्यने जघन्य अवगाहना बे हाथ प्रमाण होय छे. तेमां रंध्र पूरण थतां त्रीजा नागना शोल आंगल बाद करतां एक हाथ ने आठ आंगलनी जघन्यथी अवगाहना थाय छे. एवी बे हाथनी अवगाहना कूर्मापुत्रनी जाणवी; अथवा सात हाथ ऊंचुं शरीर छतां पण यंत्रपीलनादिकेकरी संवर्त्तित शरीरनी बे हाथनी अवगाहना थायछे. ॥ ४७६ ॥ ए अठावनमो द्वार पूरो थयो. ॥

अवतरणः– हवे 'सासय जिण पडिमा नामत्ति' एटले शाश्वत जिन प्रतिमां आमंत्रण पूर्वक आशिषांनो उंगणसाठमो द्वार कहेछेः– मूलः– सिरि उसहसेण पहुवा,रि सेण सिरि वद्धमाण जिणनाह; चंदाणण जिण सव्वे, वि नवहरा होह मह तुम्हे. ॥ ४७७ ॥ अर्थः–श्री वृषजसेन एटले ऋषजानन, प्रजु वारिषेण, श्री वर्द्धमान जिननाथ, तथा श्री चंद्रानन जिन ए सर्वे तमे मने संसारना निर्नाशक अथवा नवहर थायो. ॥ ४७७ ॥ ए उंगणसाठमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'जिनकप्पि उपगरण संखत्ति' एटले जिनकल्पीना उपकरणनी संख्यानो साठमो द्वार कहेछेः– मूलः– पत्तं पत्ताबंधो, पायठवणं च पायकेसरिया; पडलाइ रयत्ताणं, च गोछउ पायनिज्जोगो ॥ ४७८ ॥ तिन्नेव य पछागा, रयहरणं चेव होइ मुहपत्ती;. एसो डुवालस विहो, उवही जिणकप्पियाणं तु ॥ ४७९ ॥ अर्थः– जेथी व्रतीनी उपक्रिया थायछे तेने उपकरण कहे छे. ते उपधि बे प्रकारनो छे एक औधिक ने बीजो औपग्रहिक. तेमां उघ एटले प्रवाह, ते सामान्य पणे सदा थाय छे एटले ते परंपरा प्रवाहे करीने साधुने ग्रहण थाय छे ते औधिक; अने उपसमीपे संयमना उपष्टंनने अर्थे जे वस्तुनुं ग्रहण करवुं ते उपग्रह जाणवुं. जे प्रयोजन सहित होय ते उपग्रहिक ; एटले कारण पड्युं छतां संयम मात्रने अर्थे जे ग्रहण थायछे ते उपग्रहिक जाणवो, पण जे नित्य होय

ते न जाणवो. तत्र औधिक उपधि बे प्रकारनो छेः– एक गणना आश्रयीने बी जो प्रमाण आश्रयी. तेमां गणना आश्रयी ते एक बे तथा त्रण आदिरूप; तथा प्रमाण आश्रयी ते दीर्घ तथा पृथुत्वादिरूप जाणवो. तेमज औपग्रहिक उपधि प ण तेज बे प्रकारनो छे तत्र औधिक उपधि गणना प्रमाणथी जिन कल्पीने अही प्रतिपादन करिये छे; तेमां १ पत्तं एटले पात्र २ पात्रबंध तेजोळी ते चार छे डाळावुं वस्त्र ३ पात्रस्थापन एटले ते कंबलमय खंभ जेमां पात्र रखाय छे ते ४ पात्रकेसरिका एटले पात्र प्रत्युपेक्षणिक जे चळवळी ते प्रसिद्ध छे. ५ पटल एटले भिक्षा करवाने फरतां जे पात्रनी ऊपर ढंकाय छे ते. ६ रजस्त्राण एटले पात्रनो विंटणो ७ गोछक एटले कंबलनो खंभ जे पात्रनी ऊपर देवाय छे ते. ए सा त प्रकारनो पात्रनिर्योग एटले पात्र परिकर छे.॥४ए७॥तथा त्रण प्रछादक कपमाछे ते प्रावरणरूप जाणवा. तेमां बे सूत्रना अने एक ऊननो होय छे, ए दश थया तथा रजोहरण अने मुखपोतिका. ए उत्कर्षथी द्वादशविध उपधि जिन कल्पीने थायछे.

आशंकाः– जिनकल्पी एक स्वरूपेज थाय छे के, जुदा जुदा स्वरूपे पण थाय

समाधानः– मूळः– जिनकप्पिआवि डुविहा, पाणीपाया पमिग्गहधरा य; पा उरण मपाउरणा, एक्केका ते नवे डुविहा. ॥ ५०० ॥ अर्थः–जिननो कल्प एटले जे आचार तेने जिनकल्प कहिये ते विद्यमान छे जेनेविषे तेने जिनकल्पी कहेछे. ते जिनकल्पी फरी बे प्रकारना होयछे. एक पाणिपात्र ने बीजा पतग्रहधर, तेमां जेने हाथज पात्र मात्र होय ते पाणी पात्र, ने जेने काष्ट प्रमुखनुं पात्र होय ते पतग्रह धर. ते प्रत्येक वळी बबे प्रकारना होय छेः एक सप्रावरण ते कपमासहित ने बीजा अप्रावरण ते कपमारहित. ॥ ५०० ॥ आशंकाः– जिनकल्पीने द्वादशविध उपधि कही ते सर्वने एक प्रकारेज थाय छे?

समाधानः– एक प्रकारे नही पण आठ प्रकारछे ते कहेछेः– मूळः– डुग ति ग चउक्क पणगं, नव दस एक्कारसेव बारसगं; एए अठ विगप्पा, जिण कप्पे हुंति उवहिस्स. ॥ ५०१॥ अर्थः– द्विक त्रिक, चतुष्क, पंचक, नवक, दशक एकादश क ने द्वादशक ए आठ विकल्प जिनकल्पिनी उपधिना थाय छे. ॥ ५०१ ॥

अवतरण– तेज देखामे छेः– मूळः– पुत्तीं रयहरणेहिं, डुविहो तिविहो य ए क कप्प जुउ; चउहा कप्प डुगेणं, कप्प तिगेणं तु पंचविहो. ॥ ५०२ ॥ डुविहो तिविहो चउहा, पंचविहो विहु सपायनिज्जोगो; जायइ नवहा दसहा, इक्कारस हा डुवालसहा. ॥ ५०३ ॥ अर्थः– मुखपोतिका तथा रजोहरणेकरी द्विविध; उ

पकरण तो पाणिपात्र तथा प्रावरणवर्जित जिनकल्पिक पण धारण करेछे. तेने विषेज एक कपडो युक्त थयाथी पूर्वोक्त त्रिविध उपधि थायछे. तेमज बे कपडां मळी चतुर्विध थाय; त्रण कल्प सहित पंचविध थाय; तथा पूर्वोक्त द्विविध, त्रिविध, चतुर्विध, पंचविध उपधि, सात प्रकारना पात्र निर्योग सहित छतां यथा क्रमे नवविध, दशविध, एकादशविध तथा द्वादशविध थायछे. तत्र रजोहरण मुखपोतिका, अने सप्तविध पात्रनिर्योग सहित नवविध उपधि अप्रावरण पात्रभोजीने जाणवो. बाकीना दशविध, एकादशविध, तथा द्वादशविध पात्रभोजी सप्रावरणने जाणवो. ॥ ५०२ ॥ ५०३ ॥

अवतरणः– हवे सूत्रकारज अप्रावरणना उपकरणोनी संख्या कहेछेः–मूलः–अहवा दुगं च नवगं, उवगरणे हुंति दुन्नि विगप्पा; पाउरण वज्जियाणं, विसुद्ध जिणकप्पियाणं तु. ॥ ५०४ ॥ अर्थः– पूर्वे सामान्ये करी जिनकल्पिक उपधिना आठ भेदोनुं प्रतिपादन कर्युं. अथवा द्विकं नवकं एटले ए बेज भेद छे. तत्र द्विक ते जे पात्रे जमे नही ते रजोहरण तथा मुखपोतिकारूप; अने नवकं ते जे पात्रे जमतो होय तेने रजोहरण मुखपोत्तिका तथा सप्तविध पात्रनिर्योग लक्षण जाणवुं. एवुं जे प्रावरण एटले कपडा वर्जित छे ते स्वल्पोपधिपणेकरी विशुद्ध जिनकल्पिक कहेवाय छे. एओनाज द्विक तथा नव लक्षणवाला बे भेद कह्या. अने कपडा राखनार अविशुद्ध जिनकल्पिकना तो १०-११-१२ ए भेद जाणवा.

अवतरणः– ए कारण माटे जिन कल्प पडिवजण द्वारनी तुलना कहे छेः–मूलः–तवेणय सुत्तेणय, एगत्तेण बलेण य; तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पवज्जउ. ॥ ५०५ ॥ अर्थः–जेणेकरी आत्मानुं तोलन एटले परीक्षा थाय छे, तेने तुलना कहिये. अर्थात् आत्माने जिनकल्पांगी करण प्रति परिक्षण करवुं. ते पांच प्रकारनी कहीछे, ते कहे छेः–प्रथम तवेण के० तपे करी एटले चतुर्थ षष्ठ अष्टम्यादि छ मास सुधीनो तप; तेना अभ्यासे करी आत्माने भाववुं; ज्यारे एवा तप करवाथी प्रथम बाध न थाय त्यारे ते जिनकल्प पडिवजे; अन्यथा नही, ए भाव बीजो सुत्तेण के० सूत्रेकरी एटले पूर्वादिलक्षण श्रुतनो एवो अभ्यास करे के जेथी पश्चानुपूर्व्यादि क्रमे करी तेनुं परावर्त्तन करवाने शक्तिमान थाय. त्रीजो सत्तेण के० सत्वे करी एटले मानसिक अवष्टंभ लक्षणे करी आत्माने ए प्रकारे तोलन करे के जेम शून्यगृह तथा स्मशानादि भयने उत्पन्न करनारा स्थानोनेविषे कायोत्सर्गादि गृहण समये निरर्गल दुर्गोपसर्ग परिसहादिके करी क्षोभायमान थाय नही. चोथुं ए

गत्तेण के० एकत्वे करी एटले एक पणे आत्माने नाववुं. एकाकी विचरवुं; ज्यारे पोतानी ख्याति तेनो बोध करी न शके एटले ए क्यां विचरे ले एवो पण कोइ जाणी शके नही एवी शक्ति थाय त्यारे जिन कल्प अंगीकार कराय ले अन्यथा नही. अने पांचमो बलेणय के० बलेकरी एटले एक अंगुष्ठादिके करी स्थित स्थाई जाव करी ऊना रहेवुं; ए शरीरेकरी; तथा, बीजो धृतिरूप, एटले मनेकरी स्थित थईने आत्मानी परीक्षा करवी. ए प्रकारे पांच नेदेकरी तुलना जाणवी. ए थया पली जिनकल्पनी प्रतिपत्ति करवायोग्य थाय ले. ॥ ५०५ ॥ ए सातमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे 'थविर कप्पोपकरणे इति' एटले स्थविर कल्पना उपकरणनो एकसतमो द्वार कहे ले:– मूलः– एए चेव डुवालस, मत्तग अइरेग चोलपट्टो उ, एसो चउदसरूवो, उवही पुण थेरकप्पस्स. ॥ ५०६ ॥ अर्थः– पूर्वे कहेला जिनकल्पिक संबंधी पात्रकादि मुखवस्त्रिका पर्यंत बार प्रकारना उपधि थकी अतिरिक्त एक मात्रक ने बीजो चोलपट्ट ए बे लीधाथी चतुर्दश उपधि स्थविर कल्पी विषयकने थाय ले. गणना प्रमाणे करी एम जाणवुं, तेमां प्रथम पात्रकनुं प्रमाण कहे ले:– मूलः– तिन्नि विहत्थी चउरं, गुलं च नाणस्स मझिम पमाणं; एत्तो हीण जहन्नं, अइरेगयरं तु उक्कोसं. ॥ ५०७ ॥ अर्थः– त्रण वेत ने चार आंगल जेटला परिधिवालुं जे नाणस्स के० पात्र होय ते मध्यम प्रमाणनुं कहेवाय ले. एटले वर्तुल आकारने छिद्र रहित, स्निग्ध वर्णोपेत, एवुं पात्र परिधियुक्त जाणवुं एत्तो के० एवा मध्यम प्रमाणवालां पात्रथी हीण के० न्यून बे अथवा एक वेत प्रमाण वालुं प्रमुख पात्र होय ते जघन्य कहेवाय; अने एउथी अइरेग के० अतिरिक्त एटले मध्यम प्रमाणथी अधिक होय ते उत्कृष्ट प्रमाणवालुं जाणवुं. ॥ ५०७ ॥ हवे पात्रबंधनुं प्रमाण कहे ले:– मूलः– पत्ताबंधपमाणं, नाणपमाणेण होइ कायव्वं; जह गंठिंमि कयंमि; कोणा चउरंगुला हुंति. ॥ ५०८ ॥ अर्थः– पात्रना बंधनुं प्रमाण ते नाणपमाणेण के० नाजनने प्रमाणे करी थाय ले. जो मध्यम पात्रनो बंध करवो होय तो बंधक पण तेज प्रमाणे करवुं. जघन्यथी करवुं होय तो तेपण ते प्रमाणे करवुं अने उत्कृष्ट करवुं होय तो तेपण ते प्रमाणे मोटुं करवुं. ऊपर गांठवाल्या उपरांत चार आंगला जेटलुं वस्त्र वधारे रहे एवुं करवुं. ॥ ५०८ ॥ हवे पात्रनुं स्थापनक, गोछक तथा पात्रप्रत्युपेक्षणिक एटले पडिलेहिणी ए त्रणेनुं प्रमाण कहे ले:–मूलः– पत्तग ठवणोय तहा गोछग यपायपमिलेहण चेव; तिएहंपिउप्पमाणं, विहत्थि चउरंगुलंचेव. ॥ ५०९ ॥

अर्थः– पात्रक स्थापन, गोछक, तथा पात्र प्रतिलेखनी ए त्रणनुं प्रमाण एक वेतने चार अंगुल एटले शोल आंगलानो छे एम जाणवुं. एनुं प्रयोजन कहे छेः– पात्रबंध तथा पात्र स्थापने करी रज प्रमुखथी रक्षण करवुं; गोछकथी नोजन वस्त्र तथा पटलादिनुं प्रमार्जन करवुं. केसरिकाए करी पात्रप्रमार्जन करवुं उक्तं. चः– " रयमाइ रक्कणठा, पत्ताबंधो य पायठवणं च, होइ पमज्जणहेउं, केस रिया इब्र नायव्वा " ॥ ५०ए ॥ हवे पटलोनुं प्रमाण कहे छेः– मूलः– अ ढ्ढाइज्जा हन्ना, दीहा बत्तीस अंगुले रुंदा; बीयं पडिगाहाउ, ससरीराउ य निप्पन्नं ॥५१० ॥ अर्थः–अढी अडी हाथ दीर्घ एटले लांबी अने बत्रीश आंगल एटले एक हाथने बार आंगलनी रुंदी ए प्रमाणे विस्तीर्ण पटलो होय छे. अथवा बीजुं प्र माण आवी रीते छेः– पतग्रह एटले पात्राथी ने स्वशरीरथी निष्पन्न एनो शुं अ र्थः– मह्योटे पात्रके ने मह्योटे शरीरे, तथा लघुतर पात्रके ने कृश शरीरें पटलो पण तदनुसारे करवां ॥ ५१० ॥ ते पटलोनुं स्वरूप तथा प्रयोजन देखाडे छे.– मूलः– 'कयलीगप्रदलसमा, पडला उक्किठ मज्झिम जहन्ना; गिम्हे हेमंतंमिय वासासु य पाणिरक्कठा ॥ ५११ ॥ अर्थः– कदली गर्नदल समान मह्या उज्वल सुकोमल, बारीक तथा मलेला तारवाला घाटा होवा जोये ते शणनां करेलां पटल उत्कृष्ट मध्यम ने जघन्य ए त्रण नेदेकरी निन्न निन्न थाय छे. ग्रीष्म एटले उष्ण काले, हेमंत एटले शीतकाले, अने वर्षाकाले प्रत्येकनेविषे त्रण प्रकारना जाणवा ते शासारु कराय छे? ए विषे आम कह्युं छेः– उघाडा पात्रानेविषे संपातिम जी व पडे छे. जेम के, पवनेकरी कंपित थएला वृक्षो प्रमुखना पत्र पुष्प फल, स चित्त रज सलिलादिक, व्योमवर्त्ति विहंगमना पुरीष व्यस्याहत पांशु प्रकारादिक आवी पडे छे. ते माटे तेना संरक्षणने अर्थे पटलोने धारण कराय छे. तथा निक्षाने सारु न्रमण करनारा साधुनेपण कदाचित वेदोदयनो संनव छे माटे तेनुं विकुर्व ए थयाथी लिंगने ढांकवाने अर्थे स्थगन कराय छे. ॥ ५११ ॥ हवे एनीज उत्कृ ष्ट मध्यम तथा जघन्ये करी ग्रीष्मादिकनेविषे संख्या कहे छेः– मूलः–तिन्नि चउ पंच गिम्हे; चउरो पंच छगं च हेमंते, पंच छ सत्त वासासुं हुंति घण मसिण रू वाते. ॥५१२॥ अर्थः– ग्रीष्मनेविषे उत्कृष्टथी शोनावाला होय एवा त्रण रेखायछे केम के कालना अतिरूक्ष पणाने लीधे सचित्त पृथ्वी रज प्रमुखनी परिणतिए तेथी नेदाय नही माटे. अने मध्यमथी घणी शोनावाला पण नही नेअशोनन पण नही एवा चार राखवा. जघन्यथी मह्या जीर्ण प्राय अत्यंत अशोनन थाय तो पांच राखवा

एथी घणा कार्य सरे. इहां उत्कृष्ट मध्यम ने जघन्य जे कह्युं ते शोभानी अपेक्षायें जाणवुं. हवे हेमंत ऋतु एटले शीतकालनेविषे उत्कृष्ट चार राखवां; केमके, कालना स्निग्धपणाना संघटने लीधे पटला भेदायानो संभव छे ते माटे अधिक कहिये. ते मज उत्कृष्ट शोभावालां चार, मध्यम पांच, तथा जघन्य शोभावालां छ जाणवां तथा वर्षाऋतुनेविषे अत्यंत स्निग्धपणुं होय छे माटे अतिघणे काले पटला भेदाय छे माटे ते उत्कृष्ट पांच, मध्यम छ, अने जघन्य सात जाणवां. ते पटलो घन को मलादिरूप करिये जेना ढांकवाथी सूर्य न देखाय. ॥ ५१२ ॥

हवे रजस्त्राणनुं प्रमाण कहेछेः– मूलः– माणं तु रयत्ताणे, भाण पमाणेण होइ निप्पन्नं; पायाहिणं करंतं, मज्झे चउरंगुलं कमइ. ॥ ५१३ ॥ रजस्त्राणनुं प्र माण भाजन एटले पात्रना प्रमाणे करी थायछे. ते आवीरीते जाणवुं. तिर्यक् प्रदक्षिणा क्रमेकरी भाजननुं वेष्टन थतां भाजनना मध्य भागे जेम चार आंगल रजस्त्राणना अनुक्रमे सर्व छेडा वधे ते प्रकारे रजस्त्राण ते जोली करवी. एनुं प्र योजनः– मूषक भक्षण, रेणु पतन, वर्षादनुं उदक पडवुं, अने सचित्त पृथ्वीका यादि घात न थाय माटे राखवां. उक्तंचः–'मूसग रय उक्कोरे, वासासिब्हार पयर रक्खठ्ठा; कोति गुण रयत्ताणे, एवं भणियं जिणिंदेहिं' ॥ ५१३ ॥

हवे कल्प के० पछेडीनुं प्रमाण कहेछेः–मूलः–कप्पा आयपमाणे, अड्ढाइज्जा य विछडा हथा, दोचेव सुत्तिआओ; उन्निय तइओ मुणेयव्वो. ॥ ५१४ ॥ अर्थः– कपडुं पोताना शरीरना प्रमाणे एटले साडात्रण हाथ दीर्घ एटले लांबुं, अने अ डी हाथ पहोलुं कहेलुं छे. एवां बे सूत्रनां करेलां अने एक ऊननुं करेलुं मली त्रण जाणवां. ॥ ५१४ ॥

हवे रजोहरणनुं प्रमाण कहेछेः– मूलः– बत्तीसंगुल दाहं, चउवीसं अंगुलाइ दंमेसु; अठ्ठंगुला दसाउ, एगयरं हीण महियं वा. ॥ ५१५ ॥ अर्थः– सामान्यपणे रजोहरण बत्रीश आंगल दीर्घ के० लांबु करवुं. तेमां चोवीस आंगलनी दांमी क रवी अने आठ आंगलनी दशिका करवी. अथवा एक आंगल अधिक अथवा न्यून सुधी करवुं. एनो अर्थ शुं? के कोई दंम हीन होय तो दशिका अधिक प्र माण वाली ने कोई दशिका हीन होय तो दंम अधिक प्रमाणवालो करवो मली बत्रीश आंगलानुं प्रमाण करवुं ॥ ५१५ ॥

हवे मुख वस्त्रिकानुं प्रमाण कहेछेः– मूलः– चउरंगुलं विहत्थी, एयं मुहणंत गस्स उ माणं; बीउं विय आएसो, मुहप्पमाणेण निप्पन्नं. ॥५१६॥ अर्थः–एक वेत ने

चार आंगल चतुरस्त्र मुखवस्त्रिका एटले मुखपोत्तिका अथवा मुखानंतकनुं प्रमाण जाणवुं. द्वितीय आदेश मतांतरे मुखानंतक मुख प्रमाणे निष्पन्न एटले बनाववुं एविषे आम कहेवाय छेः--वसति प्रमार्जनार एटले पोसाल पुंजतां साधु नाशिका तथा मुखमां रज प्रवेश रक्षणाने अर्थे अने उच्चार भूमिनेविषे नाशिकाशी दोषना परिहारने अर्थे जेटलाथी मुख ढंकाय एवी वस्त्रिकानी त्रिकोणकरीने गलाना पाछला शरल भागमां जेवी रीते गांठ देवाई शकाय तेटला प्रमाणनी मुखवस्त्रिका राखे. ॥५१६॥

हवे मात्रक प्रमाण कहेछेः-- मूलः-- जो मागहर्ड पछो, सवि सेसयरं तु मत्त गयमाणं; दोसुवि दव्वग्गहणं, वासा वासेहि अहिगारो.॥ ५१७ ॥ जे मागधो ए टले जे मगध देश उद्भव प्रस्थ 'दो असईउ पसई, दोपसईओ य सेइया होई; चउ सेइयाइ कुमउ, चउ कुमहो मागहो पछो.' ॥५१८॥ एनो भावः--असइ के० मूठ, बे मूठनी एक पसई कहिये, बे पसईए एक सेई थाय; एवी चार सेईए एक कुंभो था य; अने एवा चार कुंभाए एक मगध देशनो पाथो थाय छे. एवा क्रमेकरी निष्पन्न पाथो तेना मानथी वली विशेषतर एटले अधिकतर मात्रक प्रमाण थायछे. तेनुं प्रयो जन शुं ते कहेछेः--वर्षा अने अवर्षा ते ऋतुबंधकाल ए बे कालनेविषे गुरुग्लानादि प्रायोग्य द्रव्यनुं ग्रहण करियें, इहां ए भाव के जे क्षेत्रनेविषे गुरु ग्लान प्राहुणादिने योग्य द्रव्यनो अवश्य लाभ थतो होय त्यां वैयावृत्त्यकर ते मात्रकनेविषे ते संघाटक प्रायोग्य द्रव्य गृहण करे; अने ज्यां तेना प्रायोग्यद्रव्यनो ध्रुव लाभ न होय त्यां सर्व संघाटक मात्रकनेविषे गुरु प्रायोग्य द्रव्य गृहण करे; केमके, एवुं न जणाय के, कोईने कांई भावशे! कोइने शुं भावशे? तथा जे क्षेत्रे जे ते काले स्वभावेज भक्त पान संपजे छे त्यां प्रथम मात्रकनेविषे गृहण करवुं, पछी शोधन करीने भक्त पान इतर गामनेविषे प्रक्षेपन करवुं. तथा दुर्लभ घृतादि दान गृहण सहसात्कारे ला भे तो तेमां लीजे इत्यादि मात्रकनुं प्रयोजन जाणवुं. ॥ ५१७ ॥ ५१८ ॥

हवे बीजुं मात्रकनुं प्रमाण कहेछेः-- मूलः-- सूवोदणस्स भरियं, डुगाउ अद्धा ण मागउ साहू; भुजई एगठाणे, एयं करमत्तग पमाणं. ॥ ५१९॥ अर्थः-- सूपो दन एटले नरम दाल चोखा सहित भरेलुं जे एक स्थान एटले भाजनरूप बे गा उथी आवीने साधु खाए, ते किंचित्मात्र बीजुं प्रमाण जाणवुं. मूल नगरथी उपनगर गोकुलादिकनेविषे बे गाउनेविषे रहेलो छतां त्यांथी भिक्षा मांगी लावीने वसतिनेविषे मात्रकमां सर्व नाखी ते समये थएला श्रमथी एक स्थाने स्थित थाय. अने ते सूपोदन खाय, ते जेटलुं साधु खाई शके तेटलुं, ते पात्रमां माय.

तेथी अधिक अथवा न्यून कांई थाय नही. त्यारे ते प्रमाण जाणवुं ए तात्पर्य.॥५१९

हवे चोलपट्टनुं प्रमाण कहे छेः– मूलः– डुगुणो चउग्गुणो वा, हत्थो चोरंस चउलपट्टोउ; थेरे जुवाणाणय, सण्हे थुल्लंमिय विनासा. ॥ ५२० ॥ अर्थः– द्वि गुण अथवा चतुर्गुण कर्यो छतां जेम चार हाथ चतुरस्र प्रमाण थाय तेम चोल शब्दे पुरुषनुं चिन्ह, तेनुं पट शब्दे वस्त्र तेने चोलपट्ट कहेवो. ए द्विगुण अने चतु र्गुणनुं प्रमाण केवी रीते छे ते कहे छेः– क्रमेकरी स्थविर एटले वृद्ध अने बीजो तरुणनेविषे सामर्थ्यनां प्रयोजनने अर्थे जाणवुं. तेमां स्थविरने बे हाथनो चोल पट्ट जाणवो केमके, तेनी इंड्रियने प्रबल सामर्थ्यनो अभाव छे; माटे अल्प प्राव रणथी पण निर्वाह थाय छे, अने तरुणने इंड्रियना प्रबलपणा माटे चार हाथनो चोलपट्ट करवो; ए भाव. ते वली श्लक्ष्ण एटले जीणो अने स्थूल एटले जाडो होवो जोये. ए बे भेदमांथी स्थविरे बारिक करवो, केमके, इंड्रियना स्पर्शथी चो लपट्टना उपघातनो अभाव छे माटे. अने तरुणने माटे स्थूल कर्त्तव्य छे. केमके, एनी इंड्रियथी उपघात थाय ते माटे. ॥ ५२० ॥

हवे पूर्वे अनुद्दिष्ट उपकरण प्रस्तावादिनेविषे परिगृहिक उपधिरूप संस्थारक उत्तर पट रखाय छे तेनुं मान कहे छेः– मूलः– संथारुत्तरपट्टो, अड्डाइज्जा य आ यया हत्था; दोण्हंपिय विछारो, हत्थो चउरंगुलो चेव. ॥ ५२१ ॥ अर्थः– संस्ता रक तथा उत्तरपट्ट ए बन्ने प्रत्येक अढी हाथना आयत के० लांबा जोये. अने एक हाथने चार आंगला पहोलाईवाला जोये. एनुं प्रयोजनः– संस्तारकेकरी प्राणी तथा शरीरे जे रजरेणुं लागे तेनी रक्षा थाय छे; माटे तेनो अभाव होय तो शुद्ध भू मिविषे शयन कर्या छतां पण साधु पृथ्वीआदि प्राणीउनो उपमर्द्दन करनारो थाय अने शरीरनी ऊपर रेणु लागे; तथा उत्तरपट्ट पण क्षौमिक षट्पदादि संरक्षणा र्थे एटले दाबना करेला संथारामांनी भ्रमरिओनो घात न थवा माटे संस्तारकनी ऊपर पथराय छे. एम न करतां कंबलमय संस्तारक कर्याथी शरीरना संघर्षणने लीधे जुं प्रमुख जीवोनी विराधना थाय. ॥ ५२१ ॥

हवे सूत्रकार, केटलाएक उपकरणोना प्रयोजन प्रतिपादन करतां प्रथम रजो हरणनुं प्रयोजन कहे छेः– मूलः– आयाणे निरकेवे, गण निसीयण तुयट्ट संको ए; पुविं पमज्जणहा, लिंगठं चेव रयहरणं॥ ५२२ ॥ अर्थः– आदाने एटले गृहण करती वखते, निक्षेपे एटले त्याग करवाना समये, स्थाने एटले ऊभा रहेतां, नि षीदने एटले बेशतां, ऊठतां, शयन करतां संकोचने एटले आंगने संकेलतां, उप

लक्षणथी आंगनो प्रसार पण जाणवो. एटली क्रिया करतां संपातिमादि सूक्ष्म जीवनी रक्षा करवाने अर्थे पूर्वे नूम्यादिनुं प्रमार्जन करवा सारु रजोहरण राखवुं एवुं तीर्थंकरे कथन करेलुं छे. पूर्वे प्रमार्जन करेला पात्रादिकनेविषे आदान करवाथी अवश्य मशक कुंथादिकनो उपघात थाय. तेने जो रजोहरणे करी प्रमार्जन कर्युं होय तो तेओनी रक्षा करी एम थायछे. तथा अर्हद्दीक्षानो लिंग एटले ए प्रथम चिन्ह छे ते जणाववाने अर्थे रजोहरण राखवुं. ॥ ५१२ ॥

हवे मुखवस्त्रिकानुं प्रयोजन कहेछेः— मूलः— संपाइम रयरेणू, परमज्जण गाव यंति मुह पोत्तिं; नासं मुहं च बंधइ, तीएव सहिं पमज्जंतो. ॥ ५१३ ॥ अर्थः— संपातिम जीवो मक्षिका मांस तथा मशकादि तेओना रक्षणने अर्थे नाषण करतां मुखनी ऊपर मुखवस्त्रिका देवाय छे. तथा रज एटले सचित्त पृथ्वीकाय तेना प्रमार्जनने अर्थे, तथा रेणु प्रमार्जनने अर्थे मुखपोतिका तीर्थंकरादिकोए प्रतिपादन करेली छे. तथा वसतिउपाश्रयने प्रमार्जतांछतां साधु नासिका तथा मुख बांधे छे एटले आछादन करेछे, तेणे करीने मुखादिकनेविषे रेणु प्रवेश करे नही, तेमबांधवी. ५१३

हवे पात्र गृहणनुं प्रयोजन कहेछेः— मूलः—छकाय रक्कणहा; पायग्गहणं जिणेहिं पन्नत्तं, जेय गुणा संनोए, हवंति ते पायगहणेवि. ॥ ५१४ ॥ अर्थः— छकायनो रक्षणाने अर्थे जिनेश्वरे पात्र गृहण करवानुं कह्युं छे. पात्रक विना साधु नोजनार्थी छ कायना जीवोने परिशातनादि दोषे करी विणासे छे. अने जे गुणी गुरु, ग्लान, वृद्ध, बाल ते निक्षा भ्रमण करवाने असमर्थ राजपुत्रादि अने प्राहुणा तथा अलब्धिमान साध्वादिकने अर्थे निक्षा ग्रहणादिक संनोगे के० सांनोगिक एटले एक मंफली रूपनेविषे जे गुण सिद्धांतमां वर्णन करेला छे, ते गुणो पात्र गृहण करवाथी थायछे. पात्र गृहणविना पूर्वे कहेला जे गुरुप्रमुख सांनोगिकादिक तेने निमित्ते निक्षा शाथी लावी शकाय? इति नावः ॥ ५१४ ॥

हवे वस्त्र ग्रहणना गुण कहे छेः— मूलः— तणगहणा नलसेवा, निवारणं धम्म सुक्कजाणहा; दिठं कप्पग्गहणं, गिलाण मरणछयाचेव. ॥ ५१५ ॥ अर्थः— वस्त्रविना तृण व्रीहि पलालदर्नादिनुं गृहण करे; टाढेपीड्यो थको अनल एटले अग्निनी सेवा करे तेम करता जीवोनो वध थाय तेना निवारणने अर्थे कल्पनुं गृहण थाय छे. एनो नाव जेनी पासे कपडुं न होय अने गाढ शीतपडतुं होय, तेने पलाल तथा अग्निनुं सेवन अवश्य करवुं पडे छे, तेम करवाथी जीवोनो वध थाय छे. तथा धर्म शुक्लध्यान निमित्ते शीतादिकना उपद्रवनेविषे कपडाथी आछादित

थएलो सुखेकरी धर्मध्यानने शुक्लध्यान करी शके छे. अन्यथा शीतादि कंपमान काय थयाथी ते ध्यान केम थई शके? तथा ग्लान संरक्षणार्थे कपडुं गृहण थायछे; अन्य था शीत वातादिक करी ते गाढतर ग्लानि थईजाय, तथा मृतकनी उपर आछादनने अर्थे कपडुंलेवुं अन्यथा आछादन न कस्याथी लोक व्यवहारादिविरोध थाय. ५२५

हवे चोलपट्टनुं प्रयोजन कहे छेः– मूलः– वेउव्व वाउम्मे वा, इए यही खद्धप जणणे चेव; तेसिं अणुगारद्या, लिंगुदया य पट्टोउ. ॥ ५२६ ॥ अर्थः– जे साधु ने प्रजनन साधन जे इंद्रिय ते वैक्रिय एटले विकारवान थाय, जेमके, दाक्षिणात्य पुरुषोने अग्र जागनेविषे पुरुषाकार दीगामां आवे; तेवी रीते विकृत थाय त्यारे तेने प्रछादनने अर्थे चोलपट्ट धारण करवो. अवाउम्म पदनो सर्वत्र संबंध छे. ते जो चोलपट्टेकरी अप्रावृत होय तो आटला दोषो प्राप्त थाय यथाः– कोई साधु आछादन विनाना साधनवालो थाय छे; एटले आगलना जागनेविषे चर्मे करी अनाछादित लिंग होय ते डुश्चर्म कहेवाय तेना अनुगृहने अर्थे चोलपट्ट जाणवुं तथा कोई साधुनो लिंग वायुये करी उपज्यो होय, तेने करी खद्ध के० महोटो पजणो के० प्रजनन ते लिंग थाय तेना अनुगृहने अर्थे चोलपट्ट अनुमत छे; त था कोई प्रकृतिएकरीज लज्जावान होय छे तेने ढाकवाने माटे चोलपट्ट जाणवो. तथा स्वजावे करीनेज कोईनो बृहत् साधन एटले विकारवान इंद्रिय थाय, तेने लोक जोईने हांसी करे; त्यारे तथाविध अनुग्रहने अर्थे चोलपट्ट छे. तथा लिंगु दयछा के० लिंगोदयने अर्थे जेम के, कदाचित् मनोहर रूपवाली अनुपमेय यौ वन युक्त वनिताने जोईने लिंगनो उदय थाय छे; अथवा जे लिंग मनोरम होय तेनी ऊपर चोलपट्ट ढांक्युं न होय तेने जोईने स्त्रीओने स्त्रीवेद उदय थाय माटे तेना आछादनने अर्थे चोल पट्टनी अनुज्ञा तीर्थंकरे दीधी छे. ॥ ५२६ ॥

हवे एज द्वारनेविषे उपकरणादिनी व्यवस्थाने अर्थे साधुना जेद कहे छेः– मूलः– अवरेवि सयं बुद्धा, हवंति पत्तेय बुद्ध मुणिणोवि; पढमा डुविहा एगे, ति छयरा तदियरा अवरे. ॥ ५२७ ॥ अर्थः– अवरेवि के० बीजा जिनकल्पी तथा स्थविर कल्पी जे कही आव्या तेओथी जुदा पण मुनिओ थाय छे. ते स्वयंबुद्ध तथा प्रत्येक बुद्ध जाणवा. तेमां पढमा के० पहेला स्वयंबुद्ध ते बे प्रकारना छे– एक तीर्थंकर स्वयंबुद्ध अने अवरे के० बीजा तदितर ते अतीर्थंकर. स्वयंबुद्ध ते सामान्य साधु तेनो तीर्थंकरथी जुदो अधिकार जाणवो. तत्र स्वयंबुद्ध प्रत्येक बुद्धने बोधि, उपधि, श्रुत तथा लिंगकृत विशेष माटे स्वयंबुद्धने बोधि प्रमुख कहे

छे ॥५२७॥ मूलः—तित्थयर वज्जियाणं, बोही उवही सुयं च लिंगं च; तेयाइ तेसि बोही, जाइस्स रणाइणा होइ. ॥ ५२८ ॥ अर्थः— तीर्थंकर वर्जित एटले जुदा जे स्वयंबुद्ध तेओने जिन धर्मनी प्राप्ति ते बोधि, उपधि एटले उपकरणो, श्रुत एटले ज्ञान अने लिंग ए चार वस्तु प्रत्येकबुद्ध थकी भेद देखाडनारी छे. तेज क्रमेकरीने कहेछेः— तेओमां बोधि ते बाह्य प्रत्ययांतरे करीने जातिस्मरणादिथी बोध थाय छे. ॥५२८

हवे उपधिनो भेद कहेछेः—मूलः— मुहपत्ती रयहरणं, कप्पतिगं सत्तपायनिज्जोगो ॥ इह बारसहा नवही, होइ सयंबुद्ध साहूणं ॥५२९॥ अर्थः—मुखपोत्तिक रजोहरण, कल्पत्रिक, सप्तविध पात्राओ, ए स्वयंबुद्धने बार प्रकारनो उपधि जाणवो. ॥५२९

हवे श्रुतनो भेद कहेछेः—मूलः— हवइ इमेसि मुणीणं, पुव्वाहीयं सुअं अहवनेअं ॥ जइ होइ देवयासे, लिंगं अप्पइ अहव गुरुणो ॥ ५३० ॥ अर्थः— ए स्वयंबुद्ध साधुने पूर्व जन्मनेविषे अधीत एटले पठन करेलुं श्रुत थाय छे; अथवा नथी पण थतुं. किंतु नवतर पठित थाय छे. तेमां ज्यारे पूर्वाधीत श्रुत तेने प्राप्त थाय त्यारे ते स्वयंबुद्धने देवताओ रजोहरणादि लिंग अर्पण करेछे. अने जो पूर्वाधीत श्रुत उद्भूत न थयो ने नवो श्रुत भण्यो होय तो तेने गुरु लिंग आपे छे. ॥५३०॥

वली एनोज विशेष कहेछेः— मूलः— जइ एगागी विहुविह, रणक्खमो तारिसी वसेइछा, तो कुणई तमनह गछ वासुमुणु सरइ निअमणुवा ॥ ५३१ ॥ अर्थः— ए जो एकाकी विहार करवाने समर्थ होय, अने तेवीज इछा एटले एकाकी विहार करवानी अभिलाषा थाय तो ते एकलो विहार करे; अन्यथा एकाकी विहार करवाने समर्थ छतां जो इछानो अभाव होय तो ते गछना वासने अनुसरे ते गछनेविषे नियमे निश्चयेकरीने रहे. ए पूर्वाधीत श्रुतनो सद्भाव जाणवो. अने पूर्वाधीत श्रुतना अभावे नवा श्रुतना भणनारने तो गछ वासज अवश्य कर्त्तव्यछे तथाचोक्तंः— पुव्वाहीयं तु सुयं सेह चइ वानवा जइ सेनछितो लिंगं नियमा गुरु सन्निहे पडिवज्जइ गछेय विहरइत्ति अहवा पुव्वाहीय सुय संभवो अछितोसे लिंगं देवयाओ पयछइ गुरु सन्निहे वा पडिवज्जइ जइ य एक विहार विहरणे सम्मछो इछा वसेतो एकोवेव विहरइ अन्नहा गछे विहरइत्ति" ॥ ५३१ ॥

हवे प्रत्येकबुद्धना बोध्यादि चार स्थान कहेछेः— मूलः— पत्तेय बुद्ध साहूण होइ वसहाइ दंसणे बोही; पोत्तिय रय हरणेहिं, तेसिं जहन्नो दुहा उवही. ॥५३२॥ मुहवत्ती रयहरणं, तह सत्तय पत्तयाइ निज्जोगो; उक्कोसावि नवविहो, सुयं पुणो पुव्वभवपढियं ॥५३३ ॥ लिंगं तु देवया दे, इ होइ कइयावि लिंग रहिंडवि;

एगागिच्चिय विहरइ, ना गच्छे गच्छ वासेसो. ॥ ५३४ ॥ एक्कारस अंगाइं, जहन्नउ होइ तं न उक्कोसं; देसेण असंपुन्ना, इ हुंति पुव्वाइ दसवतस्स. ॥ ५३५ ॥ अर्थः– प्रत्येकबुद्ध साधुने बाह्य वृषन्नादि कारणना दर्शनथी नियमथी बोध थाय ठे. तथा तेने उपधि बे प्रकारनो होयठेः– जघन्य तथा उत्कृष्टथी. तेमां जघन्यथी मुख पोत्तिका तथा रजोहरण ए बे प्रकारे तथा उत्कृष्टथी मुखपोत्तिका, रजोहरण तथा सप्तविध पात्र निर्योगरूप मली नवविध जाणवो. एने पूर्वपठित श्रुत नियमथी उन्नव थाय ठे. ते जघन्यथी एकादश अंग आचारांगादिक तथा उत्कृष्टथी एक देशेकरी न्यून दशपूर्वसुधी थाय अने प्रत्येक बुद्धना लिंग रजोहरणादिक देवता ठज तेने आपे ठे; कदाच्चित् लिंगरचित पण होयठे. तथा वसुंधरानेविषे एकाकीज विहारकरे पण ते गच्छ वासमां आवे नही. ॥ ५३५॥ ए एकसठमो द्वारपूरो थयो

अवतरणः– हवे 'साहूणीणोवगरणा इति' एटले साध्वीओनां उपकरणनो बासठमो द्वार कहेठेः– मूलः– उवगरणाइ चउद्दस, अचोलपट्टाइ कमठ य जुंयाइं; अज्जाणवि नणियाई, अहियाणिय हुंति ताणवरं ॥ ५३६ ॥ अर्थः– पूर्वोक्त पत्त पत्ताबंध इत्यादि उपकरणादि चतुर्दश ते चोलपट्ट रहित अने कमठग युक्त आर्यिकाने पण कह्याठे पात्रादिनुं प्रमाण गणना स्वरूपे स्थविरोनी पठे जाणवुं. कमठक ते लेपित तुंबक नाजनरूप कांसानी मोटी कटोरीने आकारे एकेक संयतीने निज उदर प्रमाण जाणवुं. संयतिने पण मंमलि मध्ये पतग्रह न थाय. केमके, तुच्छ स्वनाव ठे माटे. किंतु आर्या कमठकेज आर्यिका नोजनक्रिया करेठे. माटे कमठनुं ग्रहण ठे. ॥ ५३६ ॥ पूर्वोक्त चतुर्दश उपकरणोथी व्यतिरिक्त अधिक उपकरणो पण आर्यिकाने थायठे तेज कहेठे. मूलः– ओगहणं तगपट्टो, अड्ढोरुय चलणिया य बोधव्वा; अन्नंतर बाहि नियं,सिणी यं तह कंचुए चेव. ॥ ५३७ ॥ अर्थः– अवग्रहानंतक पट्टक एटले योनिने ढाकवानुं वस्त्र; अर्धोरुक ने चलनिका जाणवी. अन्यंतर निवसनी तथा बाह्य निवसनी, तथा कंचुक; ॥ ५३७ ॥ मूलः– उक्कच्चिय वेकच्चिय, संघाडी चेव खंधकरणी य; आहो विहम्मि एए, अज्जाणं पन्नवी संतु. ॥५३८॥ अर्थ उपकक्षिका, विकक्षिका, संघाटी तथा स्कंध करणी. ए आर्यिका संबंधि नियोध उपधिना पचीश नेद ठे. ॥५३८॥

हवे अवग्रहानंतकादिक बोल सविस्तरपणे वखाणे ठेः– मूलः– अह उग्गहणंतक नावसंठियं गुज्झ देस रक्खठा; तं तु पमाणे णेकं, घणमसिणं देह मासज्ज. ॥ ५३९ ॥ अर्थः– उग्गह एटले योनि द्वार ते सिद्धांतोनी संज्ञानो शब्द ठे.

तेनुं अनंतक एटले वस्त्र तेने अवग्रहानंतक कहिये. ते नाविकाना संस्थान जेवुं करवुं. एटले जेम बेडी मध्यभागे विशाल अने छेडाना भागे सूक्ष्म होय छे तेम जाणवुं. ते गुह्य प्रदेश रक्षणार्थे एटले ब्रह्मचर्य रक्षणार्थे गृहण कराय छे. ते गणना प्रमाणे एकज होय छे. ते वस्त्र ऋतुबीजपात संरक्षणार्थे घन एटले घाटुं करवुं जोईये. मसृण ते पुरुष समान कर्कश स्पर्शने परिहरवाने अर्थे ते वस्त्र सुकोमल कराय छे. कारण के, जेवी स्त्रीनी योनी सुकुमाल होय छे तेवा सुकुमाल वस्त्रनो स्पर्श थयाथी सजातीयने सजातीयथी संघातन पराभव न थवा सारु कोमल वस्त्र करवुं. तथा देहना प्रमाणनी बराबर ते वस्त्रनुं मान करिये. केमके, कोईनो देह बारीक होय ने कोईनो देह स्थूल होय ते प्रमाणे वस्त्र पण करवुं. ॥५३९

हवे पटक वखाणे छेः— मूलः— पट्टोवि होय एगो, देहपमाणेण सोउ भइयव्वो; छायंतो गहणंतं, कडिबद्धो मल्लकच्छो व. ॥ ५४० ॥ अर्थः— पट्टो पण गणना प्रमाणे एक थाय छे. ते छेला भागे बीटाकने बंध होवो जोइये. पोहालाईए चार आंगलानो जोइये. अथवा तेथी कांई अधिक न्यून पोलो होय तो चिंता नही. अने लांबाई स्त्रीनी कटी प्रमाणे करवी. जेम के, कोईनी न्हानी कटी होय तेने पट्टो पण न्हानो जोइये ने कोईनी मोटी कटी होय तेने पट्टो पण मोटो जोइये छे. ते अवग्रहानंतकनी आगलथी तथा पाछलथी छेम्हानो भाग ढांकतो थको बांध्यामां आवे छे. ते बन्ने छेडा बांध्याथी मल्लना काछनी परे दीठामां आवे छे. ॥ ५४० ॥

हवे अर्द्धोरुक कहे छे मूलः— अद्धोरुओ वि तेदो, वि गिण्हिउं छायए कडीभागं; जाणुपमाणा चलणी, असि वियालंखिया एवं. ॥ ५४१ ॥ अर्थः— अर्द्धोरुक एटले साथलने जे भजे ते अर्द्धोरुक जाणवुं. ते दोविके० पूर्वे कह्यां जे अवग्रहानंतक अने पट्टो ते बन्ने गिण्हिउं के० गृहण करीने सर्व कटी भागने छायए के० आछादन करे ढाकी मूके ते मल्ल चलनाकृति प्रमाणे जाणवुं. तथा जाणुपमाणा के० गूढणने प्रमाणे होयते चलणी के० चलनीका जाणवी ते सीवेली न होय पण तेथी कशोये करी केवल सूर्वांतरे बे जंघाज बंधाय छे, जेम वलनिपीट एटले चर्मी पहेरीने नर्त्तकी वांसनी ऊपर चडी जाय छे ने त्यां नृत्य करे छे तेनां जानु ऊघाडां रहे छे ते प्रमाणे जाणवी. ॥ ५४१ ॥

हवे अभ्यंतरनी असणी तथा बाह्यासणी एटले साडी कहे छे—मूलः— अंतो नियंसिणी पुण, लीण तरी जाव अद्धजंघाओ; बाहिरगा पुण जा खलु, कडी य दोरेण पडिबद्धा. ॥ ५४२ ॥ अर्थः— अंतर्निवसनी ते वली लीनतर आश्रीत

थाय कटीना ऊपरला भागथी मांमीने अर्द्ध जंघा सुधी थाय छे. ते परिधान काले ढीली पहेरवी; आकुलपणे जनमां हांसो न थाय माटे. अने बहिर्निवसनी कटीना उपरला भागथी लईने जाखलुगा के० यावत् नीचे पगना गिरिया ढंकाय तेटली लांबी करवी. ए प्रमाणे साधवीना शरीरना नीचला भागना छविधिए उपकरणकह्यां

हवे ऊर्ध्व कायना उपकरण कहे छेः– मूलः– छाएई अणु कुइए, उरोरुहो कंचुओ असिधियओ; एमेवय उकछिय, सानवरं दाहिणे पासे. ॥ ५४३ ॥ अर्थः– दीर्घता आश्रिन एटले लंबाई पोताना हाथ प्रमाणे अडी हाथनी जाणवी; पोहोलाई एक हाथनी; अथवा पोत पोताना शरीरना प्रमाणे अणसीव्युं करवु; तेनी कसो बन्ने पासे बांधवी; एवुं कापालिकना कंचुकनी पठे कंचुक करवुं; तेथी उर अने स्तनोनुं आछादन थाय छे ते आ प्रमाणेः–जे आंगमां सहेलाईथी घाली शकाय; लगार पण आंग संकुचित थाय नही. एवी ढीली कंचुकी न होवाथी अति विचित्र विभागथी नयन तथा मनने अति अभिलाषिणीय देखाय; माटे कंचुकनुं परिधान शिथिलज कह्युं छे. अने एमेवय के० एनीपरेज उकछी एटले कांखनी समीपे होय तेने उपकक्षिका कहे छे. एटले जे कुक्षीनुं आछादन करे ते. कंचुकनी पठे न सीवेली थाय छे ते चतुरस्र एटले समचोरस पोता पोताना हाथ प्रमाणे दोड हाथनी होवी जाये तेथी दक्षिण एटले जमणुं पाशुं अने पूठ ढंकाय छे, अने वाम पाशुं तथा वाम स्कंधने विषे बीटक व फेवांधी थकी पहेराय छे.॥५४३॥

हवे विकक्षिका कहे छेः–मूलः– वेगछिआउ पट्टो, कंचुक मुक्कछियं च छायंतो; संघामीओ चउरो, तछ डुहछक उव सयंमि. ॥ ५४४ ॥ अर्थः– उपकक्षिकाथी विपरीत लक्षणवालो पट्टो ते विकक्षिक थाय छे. तु शब्द उपकक्षिकाना सादृश्यपणाना अवधारणने माटे छे; अथवा मावापासे पहेरवानो विशेष कांचूओ जाणवो. अने बेउ उपकक्षिकनी ऊपर वाम पाशेथी पहेराय छे. अने संघाटकनेविषे उपरला वस्त्रो चार होय छे तेमां एक बे हाथवालुं उपाश्रयनेविषे काम आवे. ॥ ५४४ ॥

मूलः–दोन्नि ति हछा यामा, निरकछा एग एग मुच्चारे; उसरणे चउ हछा, निसस्र पछायणामसिणा॥५४५॥अर्थः–एक बे हाथनुं पहोलुं बे त्रण त्रण हाथ पोहोलां, एक चार हाथ पोहोलुं अने ए चारे साडा त्रण त्रण हाथ लांबां होवा जोइये; अथवा चार चार हाथ लांबा दीठामां आवे छे. तेमांनो बे हाथना विस्तारवालो उपाश्रयनेविषे उपयोगमां आवे छे; एटले तेने मूकी प्रगट देह करी कदाचित् साध्वी होय नही. अने बे जे त्रण त्रण हाथना विस्तारवालां होय छे तेमांनुं एक भिक्षाने अर्थे

एटले वोरवा जतां ओढाय छे. अने बीजुं पछी सरिखो. वेष टालवा सारु उच्चारजूमि एटले स्थंमिलेजतां ओढाय छे. ए त्रण थया तथा अवसरणे एटले समवसरणनेविषे व्याख्यान शांजलवा जाय छे त्यारे चोथुं चार हाथ विस्तारवालुं उढाय छे. ते कन्नी छतां ढांकवाने अर्थे जाणवुं. केमके, साध्वीने त्यां बेशवानो अधिकार नथी; किंतु कन्नीज रहेवी जोये ने. ते कारण माटे खजाथी लईने पगसुधी शरीरने आच्छाद न कराय छे: अने पूर्वे पेरेलो वेष पण ढंकाय छे. ए वस्त्र श्लाघादीप्तिने अर्थे म सृण एटले कोमल कराय छे. ए चारे वस्त्रोनो जोपण जेलो परिजोग थतो नथी तो पण एउने गणना प्रकारे करी एकज रूपे जाणवुं. ॥ ५४५ ॥ हवे स्कंध करणी क हे छे:- मूलः- खंधगरणीउ चउ ह,छ विछडा वाय विहुय रक्खठा; खुज्जा कर णिओ कीरइ, रूववईणं कुडह हेक. ॥ ५४६ ॥ अर्थः- स्कंधकरणी चार हाथ पहोली अने चार हाथ लांबी होय छे. एटले समचोरस सरखी जाणवी ते प्राव रणने वात विधुतथी रक्षणने अर्थे चतुःपुटी एटले चोवडी करीने स्कंध ए टले खजाऊपर राख्यामां आवेछे. ते स्कंध करणी संयति रूपवान होय तेने कुव्ह एटले कुरूप (कुब) करवाने पण कह्यामां आवे छे. पाछलां जागनेविषे स्कंध देशनी नीचे संवर्त्तित पणे कोमल वस्त्र पट्टकेकरी उपकक्षिक ने वैकक्षिक जे बांधेला हो यछे तेउने विरूपता करवाने माटे रखाय छे॥ ५४६॥ ए बासठमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः- हवे 'जिणकप्पियाणं संखा उक्किठा एगवसहीएत्ति' एटले जिनकल्पीउनी संख्या उत्कृष्ट एक वस्तिमां केटली होय तेनो त्रेसठमो द्वार कहे छे:- मूलः- जिणकप्पियाय साहू, उक्कोसेणं तु एग वसहीए; सत्तय हवंति कह मवि, अहिया कइयावि नो हुंति. ॥ ५४७ ॥ अर्थः-अही विनयवान शिष्यना अ नुग्रहने अर्थे अने किंचित् अप्रसिद्ध पणो होवाने लीधे अने आगलपण बीजा य थालंदने कल्पे एनो प्रयोजन थासे ते माटे प्रथम जिनकल्पीना स्वरूपनुंज निरूपण करेछे तत्र जिनकल्पनी इच्छा करनाराए पाछलीरात्रे एवी चिंतवना करवी के विशुद्ध चारित्रना अनुष्ठाने करीने में आत्मानुं हित कीधुं; तेम शिष्यादिक कह्या तेथी परनो हित पण कर्यो ते शिष्यो मारा गच्छनुं पालन करवाने समर्थ थयाछे हवे विशेषेकरी आत्महितने अर्थे काई अनुष्ठान करवुं उचित छे एवो विचार करीने जो पोतेज जा ण होय तो बाकीनुं रहेलुं आयु पोतेज परि आलोचन करे; अने पोते जो अजा ण होय तो बीजा अतिशयवान आचार्यने पूछे ने जो पोतानुं आयु थोडुं होय तो जक्तपरिज्ञादिकमानुं कोईपण मरण अंगीकार करे जो दीर्घ आयु होय ने पोतानो

जंघाबल क्षीण होय तो वृद्धावास पडिवजी रहे अने जो पुष्ट शक्ति छतां जिनकल्प ने आदरे तो तेनी प्रतिपत्ति थवाने अर्थे प्रथम पांच तुलनाए करीने आत्माने तोल वुं तद्यथाः— तवेण सत्तेणसुत्तेण. एगत्तेण बलेणय; तुलणा पंचहा वुत्ता, जिणकप्पं पडिवज्जओ. ॥ तुलना जावना परिकर्म्म ए सर्वे एका अर्थिक छे. एना पडिवजण हार आचार्य, उपाध्याय, प्रवर्त्तक, स्थविर तथा गणावच्छेदक स्वरूप प्रायेकरी ए पांचज थाय छे. एओ पांच जावना ए करी जिन कल्पनी इच्छावाला छतां प्रथम आत्मानी जावना करे. अने अप्रशस्त कंदर्प देव किल्बिष अनियोगिक असुर सम्मोह स्वरूप अप्रशस्त पांच जावनाने सर्वथा परिहरतो, तत्र प्रथम तपेकरी आत्माने जाववुं; तेमां क्षुधानो पराजय एवी रीते करवो के, जो देवादिके करेला उपसर्गादिकने सहन करतां छ मास सुधी आहार मले नही तो पण कांई बाधाने पामवुं नही. बीजी सत्व जा वनाएकरी जय निड्रानो पराजय करवो. ते पांच जेदेछे जय निड्राना जयने अर्थे रात्रिए सुतेला सर्वे साधुओने विषे उपाश्रयमांज कायोत्सर्ग करवाथी प्रथम सत्व जावना थाय छे. अने द्वितीयादिक तो उपाश्रयथी बाह्यादि स्थानकोने विषे जा णवी. आहचः—" पढमा उवस्सवम्मी, बीया बाहिं तईय चउक्कम्मी; सुन्न घर म्मि चउत्थी, अह पंचमिया मसाणम्मी. " त्रीजी सूत्र जावनाए करी सूत्रोनो एवो तो दृढ परिचय करवो के, जेम पोतानुं नाम कोई समये पण जूलाय नही तेम कोइकाले पण सूत्र विस्मरण थाय नही. जेम के, दिवस अथवां रात्रे जे समये शरीरनी छायानो अजाव होय ते वखते पण सूत्रादिकना परावर्त्तनना अनुसारे स्तोक लव तथा मुहूर्त्तादिक प्रमाण सर्वे सम्यक् प्रकारे जाणी शके. चोथी एकत्व जावनाए करी आत्माने जावता छतां संघाटक साधु प्रमुखनी साथे पूर्वे प्रवृत्त आलाप सुख छुःख परस्पर पूछवुं तेनुं अथवा कथानो व्यतिकर करवुं इत्यादिक बाह्य ममत्वनो निराकरण ते मूल व्यवच्छेद करवो पछी देह तथा उपधि आदिक थी आत्माने जिन्न जाणीने सर्वथा तेथी पण रहित थाय छे. ते अंतर ममत्वनो निराकरण जाणवो. पांचमी बल जावना बे प्रकारनी छेः— एक शरीर बलने बीजुं मनोधृतिबल. तेमां शरीर बल जिनकल्पीओनुं बीजा जनोथी अधिक होय छे, तेने तप प्रमुख करवाथी शिथिलता थई जवाने लीधे यद्यपि शरीरबल तेवुं रहेतुं नथी तथापि धृतिबले करी आत्माने एवी रीते जाववुं के जेम मोटा मोटा परिसह उपसर्गोथी कांई पण बाधा थाय नही. ए पांच प्रकारनी जावनाए करी जेणे पो ताना आत्माने जाव्यो छे; एवो जिनकल्पी सरिखो थको गच्छनेविषे रहेतो उपधि तथा

आहार विषयक बे प्रकारनी परिकर्मणा करे; १ तेमां ते जो पाणिपात्रनी लब्धिवंत थाय तो ते प्रमाणेज परिकर्मणा करेछे; २ अने जो पाणिपात्रनी लब्धि न होय तो परिग्रह धारित्व परिकर्मणानेविषे यथायोग्य परिवर्त्तन करे, एटले यथायोग्य पात्राने धारण करे. वली आहार परिकर्मणा ते त्रीजी पौरसीये वाल अने चणादिक कगोर अंत प्रांत रुक्ष यथाः– "संसठ मसंसठा, उद्धड तह अप्पलेवडा चेव; उग्गहिया पग्गहिया, उश्चियधम्मो य सत्तमि य." ए सात पिंमेषणामध्ये प्रथमना बे ने मूकीने बाकीना पांचमांना गमे ते बे गृहण करे. तेमां पण एक नक्तनी ने बीजी पानकनी जाणवी. ते आगमोक्त विधिए करी गछमां रह्यो थको तुलना करी पछी जिनकल्पनो अंगीकार करतो छतो समग्र संघने एकठो करे तेना अनावे पोताना समवायने एकठा करी पछी तीर्थंकरनी समीपे तेना अनावे गणधरनी समीपे तेना अनावे चतुर्दश पूर्वधरनी सीमपे तेना असंनवथी दश पूर्वधरनी पाछो तेना पण अनावथी वट पीपल तथा अशोक आदिनी समीपे मोटी विनूतिए करी युक्त जिन कल्प अंगीकारकरे पछी पोताना पदे स्थापेला सूरि सहीत बाल वृद्ध, कुल गछ एउनी साथे विशेषे करीजे पूर्वेना विरोध होय ते क्षमावे. तद्यथाः– "जइ किंवि पमाएणं, न सुठु नेवहियं मए पुव्वं; तं खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाउ य. । १ । आणंद मंसु पायं, कुणमाणा तेविनूमि गय सीसा; खामंति तं जह रिहं, जहारिया खामिया तेण. ।२। त्यार पछी पोताना पदनेविषे स्थापेला सूरिने तथा बीजा संघने अने साधुउने आवी शीख दिये छे. यथाः– पालेज्ज सुगणमेयं, अप्पडिबद्धो य होज्ज सव्वछं; एसोज परंपरउ, तुमं पि अंते कुणसु एवं. ॥ १ ॥ पुव्वप्पवणं विणयं, साह्रु पमाणसु विणयजोगेसु; जो जेण पगारेणं, उववज्जइ तंच जाणेहिं. ॥ २ ॥

तथाः–ओमो समराइणिउ, अप्पतरसु ओय मायणं तुझ्झ; परिनवह एस तुम्हवि विसेसउ संपयं हुज्जा. १ इत्यादिक शिक्षा दई, गछथी नीकली जतां तेने साधुउ आनंदे करी जोता थका ज्यारे ते दृष्टीथी अगोचर थई जाय त्यारे हर्षित थका पाछा वले. ए रीते जिनकल्प पडिवजे पछी ते जिनकल्पी विचरतां कोई ग्रामादिकनेविषे ज्यां मासकल्प अथवा चतुर्मासादि करे त्यां छ नाग कल्पे. तेओमांना जे दिवसे एकविनागमां फरी गोचरी करी होय ते ठेकाणे फरी सातमे दिवसे आवे; निक्षाचर्या तथा ग्रामांतर गमन ए बन्ने त्रीजी पौरुषीएज करे चोथी पौरुषी तो ज्यां अवगाहे त्यां रहे. नियमथी नक्तपान जे छे ते पूर्वोक्त बे एषणाना अनिग्रहे

करी, ग्रहण करे; एषणा विषयेज बोले बीजा कोइनीसाथे जल्पे नही. उपसर्ग तथा परिसह उपना सहन करे; रोगनेविषे चिकित्सा करावे नही. तेनी वेदना बधी सहन करता छतां एकाकीज रहे. अनापाता संलोकादि दश गुणोपेत एवा स्थंमिलेज उच्चारादि करे; जीर्ण वस्त्रादिकनो पण त्यांज त्याग करे, प्रमार्जनादि परिकर्म विरहित वसतिनेविषे रहे. जो बेशवुं होय तो नियमथी उत्कट नूमिएज बेशे पण आसन ऊपर नबेशे; केमके, उपग्रहिक उपकरणोनो अनाव छे माटे. ए मास कल्पनोज विहार करे छे. मत्त मतंगज व्याघ्र सिंहादि सन्मुख आव्याथी उन्मार्गादि गमन करतां ईर्या समितिने मूके नही. एने श्रुत संपदा पण जघन्य थी नवमां पूर्वनो त्रीजो आचार वस्तु त्यां सम्यक् प्रकारे कालनुं परिज्ञान हो य छे. उत्कर्षेकरी संपूर्ण दश पूर्व जाणवा. एने प्रथम संघयण वज्रनी नीत समा न अवष्टंन होय छे. एने १ लोच तो नित्य करवो कह्यो छे; २ आवसही, ३ नैषेधिकी, ४ मिथ्या दुःकृत, तथा ५ गृहस्थविषयक पृछा उपसंपदा लक्षण पांच सामाचारी थाय छे. केटलाएक आचार्यो कहे छे के, आवश्यकी, नैषिधिकी तथा गृहस्थोपसंपदा ए त्रण समाचारीओज थाय छे; केमके, एओ आराम निवासी होय छे तेथी ओघेकरी पृछादिकनो अनाव छे; इत्यादि जिनकल्पीनी बीजी पण समाचारीउ कल्पग्रंथादिकथी जाणी लेवी. तथा जिनकल्पक स्थिति प्रतिपादनार्थे आगलपण काममां आवसे तेथी केटलाएक द्वारो देखाडीये छे. तद्यथा— १ 'क्षेत्र द्वारं, २ काल द्वारं, ३ चारित्रद्वारं, ४ पर्यायद्वारं, ५ तीर्थद्वारं, ६ आगमद्वारं, ७ वेद द्वा र, ८ कल्पद्वारं, ९ लिंगद्वारं, १० ध्यान द्वारं, ११ गणनाद्वारं, १२ प्रव्राजनद्वारं, १३ अ निग्रह द्वारं, १४ निःप्रतिकर्म द्वारं, १५ निक्षा द्वारं, १६ पंथ द्वारं चेति.' एओमांना तीर्थ, पर्याय, आगम, वेद, ध्यान, अनिग्रह, प्रव्रज्या, निःप्रतिकर्म, निक्षा, तथा पथ, ए द्वा रो ओगणोतेरमां परिहार विशुद्धिना द्वारमां जे प्रमाणे कहेवाशे; तेमज अंही जाणी लेवा अने क्षेत्र द्वारनेविषे जन्मना सद्भावेकरी पंदर कर्मनूमिनेविषे अने संहरणे करी अकर्म नूमिनेविषे पण थाय छे. काल द्वारे अवसर्पिणी तृतीय तथा चतुर्थ आरक मां जन्म थाय छे; व्रतस्थ तो पांचमां आरामां पण थाय छे. अवसर्पिणी नेविषे तो त्रीजा तथा चोथा आरामां व्रतस्थ थाय छे. जन्म आश्रयी तो बीजा आरामां पण देखाय छे. प्रतिनाग काल एटले दुःषम सुषमरूप कालनेविषे ज न्मना सद्भावे पण प्राप्त थायछे. केम के, महाविदेह क्षेत्रनेविषे सदा जिनकल्पी नो सद्भाव होय छे माटे. अने संहरणेकरी तो सर्व कालनेविषे थाय छे. चा

रित्र द्वारे प्रतिपद्यमान तो सामायक तथा छेदोपस्थापनीयज थाय तेमां मध्य
ना बावीश तीर्थंकरोने वारे तथा महाविदेहमां सामायकनेविषे, अने प्रथम त
था चरम जिनने तो छेदोपस्थापनीयनेविषे तेम पूर्व प्रतिपन्न सूक्ष्म संपराय तथा
यथाख्यात चारित्रनेविषे पण थायछे; परंतु ते उपशम श्रेणीमांज थाय पण क्ष
पक श्रेणीए न थाय. केम के, ' तज्जम्मे केवल पमिए हा जावाउ ' इति वचना
त्. एटले तेने केवल ज्ञाननी उत्पत्ति थती नथी. कल्प द्वारे करी तो स्थिति क
ल्पनेविषे तथा अस्थिति कल्पनेविषे पण थाय छे. लिंग द्वारे प्रतिपद्यमान बे प्र
कारे थाय छे, एक द्रव्य लिंग ने बीजुं जाव लिंग तेमां पूर्व प्रतिपन्न तो अवश्ये
करी जाव लिंगे थाय; अने द्रव्य लिंगे जजना ते रजोहरणादिक कोईएक समये
कोईये हरण कस्यो होय अथवा जीर्ण थयाथी पण तेनो अजाव थाय छे. गण
ना द्वारे प्रतिपद्यमान तो जघन्येकरी एकादि अने उत्कर्षे करी शत पृथक्त्व था
य. अने पूर्वप्रतिपन्न तो जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी पण सहस्र पृथक्त्वज थाय
छे ; परंतु उत्कृष्टथी जघन्य थोडा होय छे, इत्यादिक स्वरूप आगमथकी विस्तारयुक्त
जाणी लेवु. हवे ए विषेज सूत्रना अनुसारे कहे छेः– जन्म शब्दे गछथी बाहेर
नीकलेलो साधु विशेष; तेनो कल्प एटले समाचारी; तेणे करी जे विचरे तेने जि
नकल्पिक कहे छे. ते जिन कल्पि साधुउ उत्कर्षथी एक वसतीनेविषे सात थाय
छे; एथी अधिक आठ थता नथी अने कोई वसतिमां कोई समये न पण थाय.
यद्यपि एक वसतिनेविषे उत्कृष्टेकरी सात जिन कल्पीउ वसे छे, तथापि तेउ प
रस्पर जाषण करतां नथी. तेउ एक ठेकाणे मली गया छतां पण प्रत्येक एकाकी
प्रतिदिन अटन करे छे ; पण बीजानी साथे फरे अथवा रहे नही. उक्तंचः–
" एगाए वसहीए, उक्कोसेणं वसंति सत्त जिणा; अवरोप्पर संजासं, वयंति अन्नेते
न्न वाहिं च." ॥ ५४७ ॥ ए त्रेसठमो द्वार पूरो थयो.

अवतरणः– हवे ' छत्तीसं सूरि गुणत्ति ' एटले सूरिना छत्रिश गुणोनो चोस
ठमो द्वार कहे छेः– अछविहा गणिसंपइ, चउग्गुणा नवरि हुंति बत्तीसं; विण
ओय चउप्रेउ; छत्तीस गुणा इमे गुरुणो. ॥ ५४८ ॥ अर्थः– जेने गुणना समू
हनी प्राप्ति थई छे, अथवा साधुना समुदायनी प्राप्ति थइ छे, एवा अतिशय वाला
जे होय तेने गणी कहिये. तेज आचार्य तेनी जे संपत् एटले जावरूप समृद्धि ते
गणि संपत् कहेवाय छे, ते आचारादि जेदेकरी आठ जेद छे. ते वली एकेकना चार
चार जेद होवाथी बत्रीश थाय. तेमां चार प्रकारनो विनय नाखिये त्यारे गुरु जे

आचार्य तेना छत्रीश गुणो थाय. तेमां प्रथम आठ संपदा आ प्रमाणेछेः-॥५४८॥

मूलः- आयार सुय सरीरे, वयणे वायण मई पओगमई; एएसुसंपया खलु, अठमिया संगह परिन्ना. ॥ ५४९ ॥ अर्थः- १ आचार संपत्, २ श्रुत संपत्, ३ शरीर संपत्, ४ वचन संपत्, ५ वाचन संपत्, ६ मति संपत्, ७ प्रयोग मति संपत्, अने आठमी संग्रह परिज्ञा संपत्. तेमां प्रथम आचारनुं अनुष्ठान. तद्विषय जे संपत् ते आचार संपत्. अथवा संपत् एटले विभूति तद्विषय जाणवी. अथवा संपत् ते संपत्ति एटले प्राप्ति ते आचार संपत्. एवी आगल पण व्युत्पत्तिना अर्थनी भावना करवी. तेआचार संपत् चतुर्विध छे. मूलः- " चरणजुओ मयरहिओ, अनिययवित्ती अचंचलो चेव; जुग परिचय उस्सग्गी, उदत्त घोसाइ विन्नेया. ॥५५०॥ एनो भावः- चरण युत, मद रहित, अनियत वृत्ति अने अचंचल. तिहां चरण ते चारित्र कहिये; ते महा व्रत तथा श्रमण धर्म इत्यादि जाणवुं. ते सित्तेर स्थान स्वरूप छे. तेणे करी जे युक्त तेने चरण युत कहिये. बीजा वली 'संयम धुअजोग जुओ' एवो पाठ बोल छे. तेनो पण परमार्थ एज छे. केमके, संयम तेज चारित्र छे. तेने विषे ध्रुव योग समाधि तेणे करी जे युक्त पणो ते. तथा जाति, कुल, तप, तथा श्रुतादिकना उद्भवेकरी रहित तेने कहिये मद रहित. ग्रंथांतरें 'असंपग्रह' एवो पाठ छे. तेनो पण एज अर्थ जाणवो. केम के, सम्यक् प्रकारे प्रकर्षेकरी जाति, श्रुत, तप तथा रूपादि प्रकृष्ट लक्षण करी आत्मानुं ग्रहण एटले हुंज जातवंत छुं हुंज श्रुतवंत छुं इत्यादि रूपे करी अवधारण ते परिग्रह कहेवाय छे; जे प्रग्रह नही तेने कहीये अप्रग्रह. ते जाति प्रमुखने विषे उत्सुकता नही एवो अर्थ समजवो. अनियत वृत्ति एटले ग्रामादिकने विषे अनियत (अप्रतिबद्ध) विहार स्वरूप पणो जाणिये. तथा अचंचल एटले जेणे पोतानी इंद्रियो वश करेली छे. अन्यत्र 'वृद्धशीलता' एवो पाठ छे, तत्र वृद्ध शीलता एटले कामिनीना मनने मोहन करवाने वय तथा यौवनने विषे करि वर्त्तमान छतां पण निर्विकार स्वभावता एटले विकार उत्पन्न थाय नही. यतः " मनसिजरसाभिभूता जायंते यौवनेपि विद्वांसः ॥ मूढधियः पुनरितरे, भवंति वृद्धत्वभावेपि."

ए गाथाना पूर्वार्द्धनो अर्थ थयो. हवे गाथाना उत्तरार्द्ध वडे बीजी श्रुतसंपत्ना चार भेद कहे छेः- तेमां सूचना मात्र सूत्र जाणवुं. एन्याये युग एटले युगमांहे प्रधान जाणीये; आगम परिचित एटले तेमां क्रमोत्क्रम वाचनादिक वडे परिचयवंत स्थिर सूत्र थाय ते; उत्सर्गी एटले उत्सर्गापवादे स्वसमय तथा

परसमयने जाणवुं; उदात्त एटले घोषादि स्वरना प्रकार तेनी विशुद्धिनो कर नार; अन्यत्र ' बहु श्रुतता, परिचित सूत्रता, विचित्र, सूत्रता, तथा घोष विशु द्धि करता ' एवो पाठ टीकामां आवे छे, तेनो पण अर्थ एज छे. ॥ ५५० ॥

हवे त्रीजी शरीर संपदा चार प्रकारनी छे ते अर्द्ध गाथाये कहेछे:—मूलः—चउरंसो कुंटाइ, बहिरत्तण वज्जियो तवोसत्तो; ॥ अर्थः—तत्र १ चतुरस्र एटले आरोह परिणाह युक्त तथा लांबी पोहोलाई ए प्रमाण युक्त; शरीर. तथा २ अकुटाइ एटले संपूर्ण छे जेना हस्तादिक; तथा३ बधिरत्वादिथी वर्जित तेअविकल इंद्रियवालो; समस्त इंद्रियपूरण; तथा ४ दृढसंहनत्वे करी बाह्याऽभ्यंतर भेदे करी तपनेविषे आसक्त एटले समर्थ जाणवो. ए शरीर संपदाना चार भेद जाणवा. अन्यत्र तो ' १ अरोह परिणाह युक्तता, २ अनवत्राप्यता, ३ परिपूर्णेंद्रियता, ४ स्थिर संहननता ' एवो पाठ टी कामां आवे छे; एनो पण एज अर्थ थाय छे. जे केवल अवद्यमान ते अवत्राप, जेनुं अवत्रपण लज्जन होय तेने अनवत्राप्य कहिये, अथवा अवत्रापयित एटले लज्जित करवाने योग्य एटले शक्य अने अनवत्राप्य ते लज्जा करवा योग्य न होय तथा अवत्राप्य ते अहीन सर्वांगे एटले अलज्जाकर जाणवो. ॥

हवे चोथीवचन संपदानाचार भेद कहेछे मूलः—वाइ मुहुरत्त निस्सिय; फुडवयणो संपयावयणे. ॥५५१॥ अर्थः—वादी, मधुर वचन, अनिश्रित वचन, तथा स्फुट वच न ए प्रकारना वचनेकरी वचन संपत् जाणवी. तत्र १ वदनने वाद कहिये; एटले जेनुं प्रशस्त वादनुं बोलवुं छे. अथवा जे अतिशयवान छे ते वादी आदेय वच न वालो जाणवो. तथा २ प्रकृष्ट अर्थ प्रतिपादक कोमल सुस्वरता तथा गंभीर तादि गुणोपेत होवाथी श्रोता जनना मनने आनंद उत्पन्न करनार छे जेना वचन तेने मधुरवचन कहिये. ३ राग द्वेषादिकेकरी ने नीकलेला, एवां कलुषता सहित जेनां वचन न होय, तेने अनिश्रित वचन कहिये; ४ स्फुट एटलेजेना व चन सर्व जनने सुबोध करनारा होय सुलभ बोलवुं होय तेने स्फुट वचन कहिये. बीजा ठेकाणे तो आदेय वचनता, मधुर वचनता, अनिश्रित, वचनता, तथा अ संदिग्ध वचनता, एवो पाठ जणाय छे एनो अर्थ पूर्वनी परेज जाणी लेवो.॥५५१

हवे पांचमी वाचना संपत्ना चार भेद अर्द्ध गाथावडे कहेछे:—मूलः—जोग्गोपरिय ण वायण, निज्जविया वायणाय निव्वहणे. अर्थः— तत्र १ परिणामिक गुणोपेत शि ष्योने जाणीने जेने जे सूत्र योग्य होय, तेने ते आपी तेनो उद्देश तथा समुद्देश करावे तेने योग्यवाचक कहिये. केम के, अपरिणामिकने सूत्रार्थ दीधाथी जेम

काचा घडामां नाखेलुं पाणी विनाशने पामे छे तेम तेने पण दोषनो संनव थाय छे माटे. पूर्वे दीधेला आलापकोने शिष्य प्रत्ये सम्यक् प्रकारे परिणमाव्या पछी बीजां आलापकनी वाचना आपे; तेने बीजी परिणत वाचन कहिये. वाचना एटले व्याख्यान, तेनो निर्यापयित एटले निर्वाह करनार, शिष्यने उत्साह उपजावीने क तावलो ग्रंथ पूरो करावे; पण वचमां मूकी दिये नही तेने त्रीजी निर्यापयिता कहिये. तथा निर्वाहण एटले अर्थनो निर्वाहक जाणवो. एटले पूर्वापर संगतिए करी पोते जाण उतां बीजाने कथने करी सर्व अर्थ समजावी दिये तेने चोथी निर्वाहण कहिये. ग्रंथांतरने विषे आम दीगमांआवे छेः–विदित्वा देशनं (१) विदित्वा समुद्देशनं पारि णामिकादि शिष्यने जाणीने इत्यर्थः परिनिर्वाप्य वचन ते पूर्वे नदीधेला आलापकने अनधिगम शिष्यने पुनः सूत्रदान देवुं. इत्यर्थः अने अर्थ निर्यापणा ते अर्थनी पूर्वापर संगतिनी गमनिका जाणवी. इत्यर्थः । हवे उठी मति संपत् चतुर्धा कहे छेः– मूलः– उग्गह ईहा वाया, धारण मइ संपया चउरो. ॥ ५५१ ॥ अर्थः– अवग्रह, ईहा, आवाप, तथा धारणा. अवग्रहादिकनुं स्वरूप ब शोंने शोलमां द्वारमां विस्तारे कहे वाशे. तथा सातमी प्रयोग तेवादादि प्रयोजननी सिद्धिने माटे व्यापार जाणवो. ते प्र योगना प्रस्ताव समयनेविषे जे मति एटले वस्तुनुं विवेचन करवुं तेने प्रयोग मति कहिये. तेनी चार प्रकारनी संपत् छे. मूलः– सत्ती पुरिसं खेत्तं, वत्थुं नाउं पउं जए वायं. ॥ अर्थः– शक्ति, पुरुष, क्षेत्र, तथा वस्तुने जोईने वाद करे. तेमां प्रथम शक्ति ज्ञान एटले वादादि व्यापार कालने विषे आ वादी महा बोलणहार देखाय छे तेने जीतवा जेटली मारामां शक्ति छे के नही! एवी रीते पोतानी श क्तिनो आलोचन करवुं, बीजुं पुरुष ज्ञान एटले आ प्रतिवादी पुरुष सौगत सांख्य वैशेषिकादिक अथवा कोई बीजो छे इत्यादि ने विचारी जाणी लईने वाद करे. त्रीजुं क्षेत्रज्ञान एटले आ क्षेत्र मर्यादा वालुं छे अथवा कोई बीजा प्रकारनुंछे अ थवा कपटी छे किंवा निष्कपटी छे? तथा साधुनावित छे किंवा अनावित छे ? इत्यादिक सारी रीते विमाशे. चोथी वस्तु ज्ञान एटले आ राजा अमात्यादि सन्नासदादि वस्तु दारुण अदारुण अथवा नद्रक अनद्रक छे के केम ? इत्यादिक विचारीने ते प्रमाणे निरूपण करे. ए प्रयोगमतिना चार नेद कह्या हवे आठमी संग्रह एटले स्वीकरण ते अंगीकार. तेनी परिज्ञा एटले जाणपणुं तेने परिज्ञा संग्रह कहे छे. तेनी संपत् चार प्रकारनी छे ते कहेछेः–मूलः– " गण जोगं संसत्तं, सज्झाए सिरकगं जाणे. ॥ ५५३ ॥ अर्थः– तेमां प्रथम गण एटले गछ बाल, दुर्बल, ग्लान, गीतार्थ

यति समुदाय लक्षण तेने निर्वाह. योग्य क्षेत्रनुं ग्रहण करवुं ते गण योग्याप संग्रह संपत् प्रथमा जाणवी. बीजी जडकादि पुरुष ने योग्य देशनादि करवी ते संसक्त संपत् द्वितीया कहिये. ग्रंथांतरे तो निषद्यादि एटले संथारा प्रमुख उप करण मलिन नथाय तेने पीठ फलकोपादानात्मिका द्वितीया संपत् कहेल छे. पण ए पीठ फलकादिकनुं ग्रहण थतुं नथी, केम के, सिद्धांतने विषे अग्राह्नित छे माटे. तथा जीत कल्पनेविषेः–" पीठफलगाइ गहणे, नउ मइलिंती ति सज्ञा ई; वासासु विसेसेणं, अन्नं कालं तु गम्मए नउ. ॥ पाणा सीयल कुंथा, इयाय तो गहण वासासु " त्रीजी जेम समयने विषे कह्युं होय तेम सज्ञाय प्रत्युपेक्ष णा भिक्षाटनोपधि समुत्पादन लक्षण ते स्वाध्याय संपत् तृतीया कही छे. चोथी गुरु दीक्षाना आपनार तथा अध्यापक ते जणावनार रत्नत्रयाधिक प्रमुखनी उपधिनो वहेवुं, विश्रामणनु करवुं आव्यां थका उपाश्रयमां पेसतां मात्रानुं लेवुं इत्यादि शिष्यने सीखावे ते शिष्योपसंग्रह संपत् चतुर्थी जाणवी. एवी रीते सं ज्ञापरिज्ञा ए चार. प्रकारे जाणवी. एटले चार चार प्रकारे करी आठ प्रकारनी गणीनी संपदा वखाणी एटले ए बधा मली बत्रीस गुण थया ॥ ५५३ ॥

हवे चतुर्विध विनय कहेछेः–मूलः–आयारे सुय विणए, विक्खिवणे चेव होइबो धव्वा; दोसस्स परीघाए, विणए चउहे स पडिवत्ती. ॥५५४॥ अर्थः–आचार विन य, श्रुतविनय, विक्षेपण विनय तथा दोष परिघात विनय. एम विनयनेविषे चार प्रकारनी प्रतिपत्ति जाणवी. जेणेकरी कर्म निवर्त्तन थाय तेने विनय कहि ये. तत्र आचार एटले यतीनो समाचार. ते आचार विनय चार प्रकारनो छेः– एक संयम सामाचारी, बीजो तप सामाचारी त्रीजो गण सामाचारी चोथो एका कीविहार सामाचारी. तत्र संयम ते पोते आचरे अने बीजाने ग्रहण करावे; ते मां जे सीदाए तेने स्थिर करे; अने संयमनेविषे जे उद्यत होय तेनी उपबृंहणा करे, ए प्रथम संयम सामाचारी जाणवी. बीजी पाक्षिकादिकनेविषे पोते पण तप करे ने बीजाने पण करावे. भिक्षाचर्याने अर्थे पोते जाय अने बीजाने पण तेमां प्रव र्त्तावे; ए बीजी तप सामाचारी कहियें. त्रीजी गण सामाचारी ते पडिलेहणानेविषे बा लवृद्ध, तथा ग्लान प्रमुखनो वैयावृत्त्यादिकना कार्य प्रत्युपेक्षणानेविषे पोते उ द्यमपण करे अने बीजा अग्लान गणने तेम करवानी प्रेरणा करे तेने गण सामा चारी कहिये. चोथी एकाकि विहार प्रतिमाने पोते आदरे अने बीजाने ग्रहण क रावे. एने एकाकि विहार सामाचारी कहिये. ए पहेलुं आचार विनय कह्यो हवे

बीजो श्रुतविनय पण चार प्रकारनो छेः– तत्र सूत्रनी वाचना शिष्यादिकने देवी ए प्रथम; तेना अर्थनुं यथार्थ व्याख्यान करवुं ए बीजो; हितवाचना ए टले सूत्र अने सूत्रनो अर्थ तथा ए बन्ने पारिणामिक गुणोपेत शिष्यनी जा वना करीने जेने जे योग्य होय तेने ते आपे ए त्रीजो, तथा सूत्र अथवा अर्थ निःशेष परिसमाप्ति सुधी वांचे पण अनवस्थितपणे अंतराले मूकी न दिये ते चोथो जाणवो. त्रीजो जेथी विक्षेप थाय तेने विक्षेपण कहे छे. ते विक्षेपविनय चार प्रकारनो छेः– तत्र मिथ्यादृष्टिने मिथ्या मार्गथी कहाडीने सम्यक्त्व मार्गे ग्रहण करावे ते प्रथम. बीजी सम्यक्दृष्टि छतां गृहस्थ होय तेने ग्रहस्थ जावमांथी कहाडीने चारित्र लेवरावे ते द्वितीय. त्रीजी सम्यक्त्व थकी अथवा चारित्र थकी पडी गएलाने ते जावमांथी कहाडीने फरी पूर्व स्थाने परिस्थापे ते तृतीय. चोथी जेम चारित्र धर्मनी अभिवृद्धि थाय ते प्रमाणे पोते प्रवृत्ते; अनेषणीय परिजोगादिकनो त्याग करे अने एषणीय परिजोगने धारण क रे ए चतुर्थ. हवे क्रोधादिक जे दोष तेनो परिघात एटले विनाश तेज चोथो दोष परिघात विनय जाणवो. ए पण चार प्रकारनो छेः–क्रोधमां आवेला मनुष्यने देश नादिके करी शांत करवो अर्थात् तेनो क्रोधनो निर्घात एटले नाश करे, ते प्रथम. कषाय विषयादिके करी डुष्ट थयला ने तेवा जावथी निवर्त्तन करवुं ते द्वितीय. अने जक्तपान विषय अथवा पर समय विषय आकांक्षानुं निवर्त्तन करवुं ए तृतीय, तथा पोते क्रोध दोष आकांक्षा रहित छतां अत्महिते प्रवर्त्तवुं ते चतुर्थ. जाणवो. ए चार प्रकारना विनयने अंगीकार करे ए प्रमाणे ए सर्व मली छत्रीश गुणो गुरुना होय; अथवा ए छत्रीश गुणोवाला गुरु होय, ॥ ५५४ ॥

अथवा प्रकारांतरे बीजा छत्रीश गुण कहे छेः– मूलः– सम्मत्त नाण चरणे, पत्तेयं अठ अठ जेइन्ना; बारस जेयो य तवो, सूरि गुणा हुंति छत्तीसं. ॥ ५५५ ॥ अर्थः–सम्यक्त्व एटले दर्शनाचारना निःशंकितादिक, ज्ञान एटले ज्ञानाचारना काल विनयादिक अने चरण एटले चारित्राचारना ईर्यासमित्यादि ए प्रत्येकना आठ आठ जेद मलीने चोवीश जेद थाय. बाह्य अने अभ्यंतर ए बे प्रकारना तपना प्रत्येकना छ छ जेद होवाथी ते अनशनादिक बार जेद मलीने बीजा छत्रीश जेद थाय छे॥५५५॥

हवे जंग्यंतरे करीने पण गुरुना छत्रीश गुणो कहे छेः– मूलः– आयाराई अ ठठ, तह चेवय दसवि होइ वियकप्पो; बारस तव छावस्सग, सूरिगुणा हुंति छ त्तीसं. ॥ ५५६ ॥ अर्थः– आचार तथा श्रुतादिक पूर्वे कहेली आठ गणिनी संप

दा, तथा 'आचेलक्कुद्देसिय, सिज्झायर रायपिंम किइ कम्मे; वय जेठ पडिक्कमणे मासं पज्जोसवाण कप्पे.' एवीरीते वक्ष्यमाण स्वरूप दशविधस्थित कल्प; तथा बार प्रकारनो तप, अने पूर्वोक्त स्वरूप ठ अवश्यकादिक एटले सामायिक, चोवीशस्तव वंदनक, प्रतिक्रमणक, कायोत्सर्ग तथा प्रत्याख्यान लक्षण ठ आवश्यक जाणवा ए सर्व मलीने छत्रीश गुणो थाय छे. ए शिवाय बीजी पण गुरुना गुणनी छत्रीशी घणी छे. पण अति विस्तारना नयथी ते इहां कहता नथी. तोपण सोपयोगी प णाने लीधे तथा सुप्रतीत पणाथीआ कहिये छैये, 'देस कुल जाइ रूवे, संघयण धिई जुओ अणासंसी; अविकत्थणो अमाई, थिर परिवाडी गहिय वक्को. जिय प रिसो जिय निद्दो, मज्झत्थो देस काल जावन्नू; आसन्न लद्ध पइन्नो, ताणा विह दे स जासन्नू. पंच विहे अइआरे, जुत्तो सुत्तत्थ तडनय दिहिन्नू; आहरण हेउ कारण नय निउणोगाहणा कुसलो; ससमय परसमय विऊ, गंजीरो दित्तिमंसिवो सोमो; गुण सयल लिउ जुत्तो, पवयण सारं परिकहेउं. ए प्रमाणे चार गाथाउनेविषे कहेला सूरीना छत्रीश गुणो दीठामां आवे छे. तत्र युत शब्द प्रत्येकनी साथे लगाडवो; जेम के, देशयुत तथा कुलयुत इत्यादि तेमां १ साडी पचवीस आर्यदेश कहेवाय छे तेनेविषे जे उत्पन्न थयो होय ते देशयुत. तेना समीपे सर्व शिष्यो सुखेकरी अध्ययन करे तेथी देशनुं ग्रहण कर्युं. २ कुल ते पिता संबंधी जाणवुं; जेम के, लोक व्यवहारे करी आ इक्ष्वाक कुलनो छे एम कहेवाय छे तेणे करी युत होय ते पडिवज्या अर्थनो निर्वाह करे. ३ जाति ते माता संबंधी जाणवी. तेणे करी युक्त ते विनयादि गुणोपेत थाय छे. ४ रूप युत ते लोकमां बहुमान पामनारो होय छे; जेम के, 'यत्राकृतिस्तत्र गुणावसंतिति वादात्' एटले ज्यां आकृति हो य त्यां गुणो वसे छे एवी वदंता छे. केमके, कुरूपने अनादेय पणानो प्रसंग था य छे एटले तेणे क्यांय मान मलतुं नथी. ५ संहननेकरी विशिष्ट शरीरनी सामर्थ्य रूपे करी युक्त होय ते व्याख्या करता थाकी जाय नहीं. ६ धृति ते विशिष्ट म ननुं अवष्टंजन एटले धैर्य तेणे करी युक्त होय ते अति गहन अर्थनेविषे पण मु झाय नहीं. ७ अनाशंसी एटले जे श्रोताउनी पासेथी वस्त्रादिकनी आकांक्षा करे नहीं. ८ अविकत्थन एटले अतिबहु जाषी नहीं. जेम के, कोईए थोडोपण अप राध कर्यो छतां तेनु उत्कीर्तन एटले मुखथी वारंवार कही बतावबुं एवा विक त्थन रहित होय. ए अमायी एटले मूर्खताए करी रहित कपट रहित. १० स्थिर एटले अतीशये करी निरंतर अन्यासने लीधे जेने अनुयोगनी परिपाटी स्थिर थई

छे, ते स्थिर परिपाटी. तेनुं मन सूत्र अथवा अर्थनेविषे लगार पण स्खलीत थतुं नथी ११ ग्रहीत वाक्य ते उपादेय वचन एटले तेनुं स्वल्प वचन छतां पण महा अर्थनी पठे जासे १२ जित पर्षद ते मोटी पर्षदानेविषे पण क्षोजने पामे नही १३ जितनिद्रा एटले जेने निद्रा थोडी होय ते. रात्रे सूत्रार्थनी जावना करतो पण निद्रा ये पीमाये नही १४ मध्यस्थ एटले सर्व शिष्योनी ऊपर समान चित्त वालो; १५ देश १६ काल १७ जावज्ञः एटले जे देश काल तथा जावनो जाणनार होय ते सुखेकरी विहार करे अथवा शिष्योना अजिप्रायने जाणीने तेउने सुखेकरी वर्त्तावे (ए त्रण गुण सार्थं छे) १८ आसन्नलब्ध प्रतिजः तत्र आसन्न एटले तत्क्षणेज जेने कर्मना क्षयोपशमावरण विना प्रतिजा एटले परतीर्थी आदिकने उत्तर देवा नी शक्ति प्राप्त थई छे ते १९ नानाविध देशजाषज्ञः एटले जे नाना प्रकारना देशो नी जाषाउने जाणतो होय ते नाना देशोना शिष्योने सुखेकरी शास्त्रोनुं ग्रहण क रावे अने ते ते देशना जनोने ते ते जाषए करी धर्म मार्गनेविषे आणे. तथा ज्ञा नादिक पांच प्रकारना आचारे करी युक्त ते पोते आचारनेविषे अवस्थित छतां बीजाने आचारमां प्रवृत्ति करावबाने उद्युक्त करे पण जो पोते आलसू होय तो बीजानी प्रवृत्ति करावी शके नही ए पांच गुण मेलवंता चोवीस थयां २५ सूत्रा र्थ तडुनय विधिज्ञ ते आमः–सूतार्थ तथा तडुनयनी चतुर्नंगी ऊपजे तेमां प्रथम सूत्र पण अर्थ नही; बीजो अर्थ पण सूत्र नही; त्रीजो सूत्र तथा अर्थ बन्ने अने चोथो सूत्र पण नही ने अर्थपण नहीए चार जांगामांथी त्रीजा जांगना ग्रहणने अर्थें तडुनय ग्रहण कह्युं छे ते माटे सूत्रार्थ तडुनय विधिज्ञ जाणवो २६ आहरण हे तु तथा उपनयमां निपुण होय तेमां आहरण शब्दे दृष्टांत लेवुं अने हेतु ते बे प्रकारनो छेः– एक कारक ने बीजो ज्ञापक तेमां कारक ते जेम घटनो कर्त्ता कुंज कार होय छे तेम जाणवुं अने ज्ञापक ते जेम अंधकारनेविषे घटादिक पदार्थनो प्रकाश करनार दीपक होयछे तेम जाणवुं उपनय ते उपसंहार एटले जे दृष्टांते करी दीधेला अर्थ तेने सरिखा सुयोजन करवुं इति जाव; अने पाठे करी तो क्यांक उपनयने स्थानके कारण कहेछे ते कारण नो अर्थ नयनिमित्त जाणवु नैगमादि क नउनेविषे निपुण ते आहारण हेतु उपनय निपुण कहिये. तेज आचार्य श्रो तानी अपेक्षाए एटले तेनी प्रतिपत्तिना निरोधथी क्यांक दृष्टांतेकरी उपन्यास करे २७ क्यांक हेतु देखाडी समजावे अने २८ क्यांक उपनय एटले ते निपुण पणे सम्यक् अधिकृत अर्थनुं यथार्थ वर्णन करे. २९ नय निपुणपणे नयना कथनना

अवसरे सम्यक् सप्रपंच विवके करी नयने वापरे जे नय ज्यां लागतो होय तेने त्यां जोडे ३० ग्राहण कुशल एटले प्रतिपादन करवानी शक्तियें युक्त ३१ स्वसम य एटले पोताना शास्त्रनो जाण तेमज ३२ परसमय एटले परना शास्त्रनो जा ण तेने कोईएक परदर्शनीये आक्षेप कर्यो बते तेनो निरवाहकरे ३३ गं नीर एटले अतुछ स्वनाव. ३४ दीप्तिमान एटले जेनो परवादी तिरस्कार करी श के नही. ३५ शिव ते कोपथी रहित अथवा ज्यां ज्यां विहार करे त्यां त्यां कल्या णनो करनार. अने ३६ सौम्य एटले शांत दृष्टि ए प्रकारे बत्रीश गुणेकरी सहि त गुरु जाणवा. अने उपलक्षणथी ए कहेला गुणोथी बीजा पण गुणो जेवा के, औदार्य धैर्य स्थैर्य गांनीर्यादि के करी शशधरकर निकर कमनीयैरलंकृतः प्रवच नो पदेशक गुरु होय बे. तथा चाहः— गुण सयल लिउक्तो. पवयण सारं प रिकहेउंति. अथवा मूल गुणो तथा उत्तर गुणो जाणवा. एवा शेकडोगुणो एकरी कलित एटले युक्त, समीचीन ते प्रवचन एटले द्वादश अंगनो सार एटले अर्थ क थन करवा समर्थ. यडुक्तंः— गुणसुठिवस्स वयणं; घण परिसित्तोय पावउ नाई; गुण हीणस्स न सोहइ, नेह विहूणो जह पईवो.॥ ५५६ ॥ एचोसठमो द्वार थयो

अवतरणः— हवे ' विणउ बावन्ना नेय पमि निन्नोत्ति ' एटले बावन नेदे करी विनयनो पांसठमो द्वार कहे बेः— मूलः— तिब्रयर सिद्धकुल गण, संघ किरिय ध म्म नाण नाणीणं; आयरिय थेरु वज्ञा, य गणीणं तेरस पयाणि.॥५५७॥ अर्थः— तेमां तीर्थंकरादि स्वरूप तेर पद जाणवा. तत्र तीर्थंकर अने सिद्ध ए बे प्रसिद्ध बे, त्रीजुं कुलपद ते नागेंद्र कुलादिक जाणवुं; चोथु गण पद ते कोटिकादि कहि ये; पांचमुं पद संघ प्रसिद्ध बे; बठुं प्रतीत क्रिया ते अस्तिवाद रूप समजवी; सात मुं पद धर्म ते क्षमादि दशविध श्रमणधर्म कहेवुं; आठमुं पद ज्ञान ते मत्यादि कहेवाय बे; नवमुं पद ज्ञानी ते ज्ञानवान जाणवुं; दशमुं आचार्य पद ते पांच प्रकारनो आचार पालनार; अग्यारमुं स्थविर पद ते संयमनेविषे सीदायलाने स्थिर कर वानो हेतुवंत; बारमुं उपाध्याय पद प्रसिद्ध बे; अने तेरमुं गणी पद ते केटलाए क साधुना समुदायनो उपरि नूत जाणवो. ॥ ५५७ ॥ हवे ए प्रत्येक पदनो चा र चार प्रकारे विनय थाय बे ते कहे बेः—मूलः— अणसायणा य नत्ती, बहुमा णो तह य वस्र संजलणा; तिब्रयराई तेरस, चउग्गुणा हुंति नायवा (बावन्ना.) ॥ ५५८॥ अर्थः— प्रथम आशातना एटले जात्यादि हीलना, ने तेना अनावे अ नाशातना जाणवी; ते अनाशातना सदैव तीर्थंकरादिकोनी करवी. बीजो नक्ति

विनय ते उचित उपचार रूप अथवा प्रतिपत्तिरूप कहिये. त्रीजो बहुमान विन य ते तेने विषेज अंतरंग प्रतिबंध विशेष जाणवो. अने चोथो वर्णसंज्वलन वि नय तेमां वर्ण एटले कीर्त्ति अने संज्वलन एटले प्रकाशवुं; अर्थात् कीर्त्तिनुं प्रक टन करवुं ते जाणवो ए प्रकारे करी तीर्थंकरादिक प्रत्येक पदना अनाशातनादि चार चार विनय होवाथी तेरने चारथी गुणतां बावन विनय थाय॥५५७॥ एपांसठमो द्वार

अवतरणः— हवे 'चरणंति' एटले चरण सत्तरिनो छासठमो द्वार कहे छेः—

मूलः— वय समण धम्म संयम, वेयावच्चं च बंभगुत्तीउ; नाणाइतियं तव को,ह निग्गहा ईइ चरणमेयं. ॥५५९॥ अर्थः—प्राणातिपात तथा मृषावाद विरमणादि पांच व्रत जाणवां; श्रमण एटले साधु तेनो जे धर्म ते श्रमण धर्म क्षांति मार्दवा दिक दश प्रकारनो जाणवो. सं एटले एकी भावे करी यम एटले नियम अर्थात् उपरम ते सत्तर भेदे संयम जाणवो. जेनी कार्यादिकनेविषे योजना होय तेने कहिये. व्यावृत तेनो जे भाव तेने कहिये वैयावृत्य; ते आचार्यादि भेदे करी दश प्रकारनुं जाणवुं. ब्रह्मचर्यनी जे गुप्तीओ तेने ब्रह्मचर्य गुप्त कहिये ते वसति आ दिक नव प्रकारे छे. जेणे करी वस्तुनो स्वरूप जणाय तेने कहिये ज्ञान ते अभि निबोधिकादि जाणवुं ते छे जेने आदि ते ज्ञानादि शब्दे करी सम्यक् दर्शन चारि त्रनुं ग्रहण थाय छे. ज्ञानादिकनी जे त्रिक तेने ज्ञानादित्रिक कहिये. तप ते बा दश प्रकारे अनशनादि जाणवो. क्रोधादिचारनो जे निग्रह; बहु वचन जे छे ते मान माया तथा लोभना निग्रहने अर्थे जाणवुं. एटला प्रकारनुं चारित्र थायछे. 'कोह निग्गहाई चरणमिति' ए पाठे करी क्रोधनिग्रह छे जेनी आदमां एवा मा ननिग्रहादि कदंब ते क्रोध निग्रहादि तेनुं जे चरण एटले अवसेय जाणवुं. अ हीं कोई सहृदय एटले पोताने पंडित पणोमानतां एवुं बोले छेः—

आशंकाः— गुप्तिओ चोथा व्रतनी अंतर्गत होवाथी तेनाथी भिन्न कहेवाय नही. वली ब्रह्मचर्य व्रतनो परिकर गुप्तिउ जे कह्यो छे त्यारे प्राणातिपात तथा वि रमणादि एक एक व्रतने परिकर भूत भावना पण कह्ो; तथा ब्रह्मचर्यगुप्ति क होछो तो चोथो व्रत म कहो. वली ज्ञानादित्रिकनुं ग्रहण करवुं संभवतुं नथी. किंतु ज्ञान अने सम्यक् दर्शन ए बे नेज ग्रहणकरो पण चारित्रनुं ग्रहण तो व्रत ना ग्रहणथीज थयो तेमज श्रमण धर्मना ग्रहणथी संयमनुं ग्रहण अथवा त पनुं ग्रहण फोकट थाय माटे संयम तथा तपनो त्याग करीने श्रमण धर्मनो उ पन्यास करवो योग्य छे. वली तपनुं ग्रहण कस्वाथी वैयावृत्यनो ग्रहण निरर्थक

थशे, केमके, वैयावृत्य तो अंतर्गतज कह्युं छे. वळी क्षांत्यादि धर्मनुं ग्रहण क र्याथी क्रोधादिकना निग्रहनुं ग्रहण व्यर्थ थशे. एम परिभाव्यमान गाथा अत्यंत भिन्न तथा शुष्क आगी पाछी दीठामां आवे छे.

समाधानः– (चतुर चक्रवर्त्ति उत्तर कहे छे) व्रतनुं ग्रहण कर्याथी गुप्तिओ जुदी कहेवाशे नही एवुं जे ते कह्युं ते अयुक्त छे. केमके, चतुर्थ व्रतनुं निरपवा दपणुं दर्शाववाने अर्थे ब्रह्मचर्यव्रतनी गुप्तिओ जुदी कही छे. यदुक्तमागमेः– न व किंचि अणुन्नायं, परिसिद्धं वावि जिणवरिंदोहं; मुत्तं मेहुण भावं, न विणानं राग दोसेहिंति. अथवा प्रथम तीर्थंकर तथा चरम तीर्थंकरने परिग्रह व्रतथी भिन्न ए चोथो महाव्रत होय छे एम एनी ज्ञापनाने अर्थे जुदो करीने भेदनो उपन्यास कर्यो छे. वळी जे तें कह्युं के, व्रतना ग्रहणे ज्ञानादि त्रिकनुं ग्रहण न करवुं, किं तु ज्ञान ने दर्शननेज लेवां. केमके, चारित्र ते व्रत ग्रहणना अंतर्भूतज आवी जा यछे. तेपण अयुक्त छे. जे कारण माटे चारित्रव्रत जेछे ते एक अंशे सामायिक आदि प्रकारमांथी लीधु छे. बाकीना चार अंश हजी ग्रहण कर्या नथी. तेने अ र्थे ज्ञानादि त्रयनो उपन्यास कर्यो छे. वळी जे तें कह्युं के, श्रमण धर्मना ग्रहणने विषे संयम तथा तपनो अंतरभाव थाय छे, केमके, श्रमण धर्मनुं ग्रहण कर्या थीज तेनुं ग्रहण थाय छे. ए पण बोलवुं असंगत छे. जे कारण माटे संयम अने तप ए बे मोक्षनां प्रधान अंग छे. माटे एओनुं जुदुं उपादान कर्युं छे.

आशंकाः– संयम अने तप ए मोक्षना प्रधान अंग केम छे?

समाधानः– नवा कर्मना आश्रवनो जे संवर करवो तेनो हेतु संयम छे अने पूर्वोपार्जित कर्मना क्षयनो हेतु तप छे. ते कारण माटे एओनुं प्रधान पणुं छे. एथीज श्रमण धर्मनेविषे ग्रहण थता छतां पण प्रधानपणाने लीधे एओनो जुदो भेद उपन्यास करेलो छे. एविषे आवो न्याय दीठामां आवे छे के, 'ब्राह्म णो आव्या अने वसिष्ठ पण आव्यो' एटले वसिष्ठनो ब्राह्मणोमां समावेश छतां पण अन्य उपयोगने वास्ते जुदोज कह्यो छे. वळी तुं कहे छे के, तपना ग्रहण थी वैयावर्त्यनुं पण ग्रहण थाय छे माटे तेनुं भेदेकरी जुदुं उपादान करवुं योग्य नथी. ते पण तारुं कहेवुं सारुं नथी; केमके, पोते बीजाने उपकार करवो एणे करीवैयावर्त्यनुं प्रधान पणुं छे, ते रीते बाकीना अनशनादि तपना भेदनुं प्रधानपणुं नथी तेथी भेदे करी उपन्यास कर्युं छे. वळी तें कह्युं के, श्रमण धर्म ना ग्रहणथी क्रोधादिकनो निग्रह जुदो कहेवो नही; ए पण बोलवुं रुडुं नथी.

केमके क्रोधादिक जे चार छे ते बे प्रकारना छेः—एक उदीर्ण अने बीजा अनुदीर्ण. तेमांना उदीर्णोनो जे निग्रह ते क्रोधादि निग्रह जाणवो, अने अनुदीर्णोनो तो तेओना उदयनुं निरोधन जे क्षांत्यादिरूप ते जाणवाने अर्थे जुदुं उपादान कर्युं अथवा वस्तु त्रण प्रकारे ग्रहण करवी. तेमां एक ग्राह्य बीजी हेय ने त्रीजी उपादेय. तेमां क्षांत्यादिक उपादेय करवा योग्य छे अने क्रोधादिक त्याग करवा योग्य छे माटे ए निगृहीतव्य छे. एटला माटे ए उपन्यासकरेलो सर्व अनवद्य छे.॥५५॥

हवे एविषे पोते सूत्रकार अवयवेकरी कहेछेः— मूलः— पाणिवह मुसावाए, अदत्त मेहुण परिग्गहे चेव; एयाइ हुंति पंचउ, महव्वयाइं जईणं तु. ॥५६०॥ अर्थः— पदने देशेकरी पदना समुदायनो उपचार थाय छे. पाणिवहने ग्रहणे प्राणिवध विरति एम कहेवो एवी रीते मृषावादादिकनेविषे पण जाणवुं. तत्र प्राणीउं एटले त्रस तथा स्थावर जीवोनी १ अज्ञान, २ संशय, ३ विपर्यय, ४ राग, ५ द्वेष, ६ स्मृतिभ्रंश, ७ योगदुप्रणिधान तथा ८ धर्मानादर रूप अष्टविध प्रमादना योगेकरी वध एटले हिंसा करवी तेने कहिये प्राणिवध तेथकी विरति एटले सम्यक् ज्ञान श्रद्धान पूर्वक जे निवृत्ति ते प्रथम व्रत जाणवुं. बीजो मुसावाए एटले अलीक वचन अथवा जूठुं बोलवुं. ते प्रिय पथ्यने तथ्य वचन तेना परिहारे करी जे भाषण करवुं तेने कहिये मृषावाद तेथकी जे विरति ते बीजुं व्रत जाणवुं. तत्र प्रिय वचन एटले जे सांभळ्याथी चित्तनेहर्ष उपजावे पथ्य एटले आगामिक कालनेविषे जे हितकरनार थाय; तथ्य एटले सत्य ए तथ्य छता पण व्यवहारनी अपेक्षाएकरी अप्रिय बोलवुं नही जेम के, चोरने कहेवु के तुं चोर छे; अने कुटणीने कहेवुं के तुं कुटणी छे. एम कह्याथी तेने अप्रिय लागवाथी तथ्य न कहेवाय. अने बीजो तथ्य थको पण जे अहित छे जेम के वनमां जतां कोई पारधीए पूछ्युं के, अंहीथी कोई मृगलुं जतुं तमे जोयुं के, तेने जो तथ्यने अनुसरीने साचे साचुं कहिये के पणे जाय छे तो तेनो घात थयाथी पाप लागे. माटे एवा स्थले सत्य भाषण करवुं. ते पण तथ्य कहेवाय नही. त्रीजुं अदत्त एटले धणीए न आपेलानुं आदान एटले ग्रहण करवुं तेने कहिये अदत्तादान ते अदत्त स्वामी, जीव, तीर्थंकर, तथा गुरु ए चार प्रकारनो छे तेमां तृण, काष्ठ, तथा पाषाणप्रमुखना मालके न दीधां छतां जे लई लेवुं तेने स्वाम्यादत्त कहिये; बीजो स्वामीए दीधेलुं छतां जीवे न दीधुं होय जेम के पोते प्रव्रज्या लेवाना परिणाम रहित छतां तेनां माता पितादिके पुत्रादिकने गुरुने अर्पण कर्यो होय अथवा सचित्त पृथ्वी काया

दिक चीज तेना स्वामीए आपी छतां तेना अधिष्ठाता जीवनी दीधल कहेवाय न ही ते जीवादत्त कहेवाय. त्रीजो तीर्थंकरादिके करी निषेध करेला जे आधाकर्मी आदिक अन्न तेनुं ग्रहण करवुं ते तीर्थंकरादत्त कहेवाय छे. अने आधाकर्मी आदि दोषरहित पदार्थ तेना स्वामीए दीधेलो छतां पण गुरुनी अनुज्ञा विना जे गृ हण करवो तेने गुरु अदत्त कहेछे. तेथी जे विरमवुं ते त्रीजुं अदत्तविरमण व्रत जाणवुं. चोथो मैथुन एटले स्त्री तथा पुरुषनुं द्वंद्व एटले जोडुं तत्संबंधी जे क र्म तेने मैथुन कहेवुं. तेथी जे विरति ते चतुर्थ व्रत जाणवुं. पांचमो जेथी परिके० समस्तप्रकारे ग्रहणके० आदान थाय तेने परिग्रह कहिये अथवा परिग्रहणने परिग्रह कहिये. ते परिग्रह धन, धान्य, क्षेत्र. वास्तु, रूप्य, सुवर्ण, चतुष्पद, द्वि पद तथा कुप्य भेदेकरी नव प्रकारनो छे तेथी विरति एटले जे मूर्छानो परिहार जे निवृत्ति ते पांचमो व्रत 'मुछापरिग्गहोवुत्तो' इति वचनात्, इत्यादि छतां पण तृष्णा रहित मनने प्रशम सुख संप्राप्तिएकरी चित्तना विभ्रम पणानो अभाव छे. ए कारण माटे धर्मना उपकरणने धारण करनारा मुनिने पण शरीर तथा उपकर णोनेविषे ममत्व न होय तेथीज ते निर्ममत्व कहेवायछे एविषे तीर्थंकर गणधरादि के कह्युं छे के, वस्त्र पात्र उपकारि धर्म साधन निमित्ते पूर्वोक्त रीते धारण कर्या छतां देहनी पठे परिग्रहण करवुं नही. अने जो मने करी राख्या होय तो यती ने ए मूर्छा सहित थायछे. चैव शब्द एवकारनेअर्थे छे तेथी प्रथम तीर्थंकर अ ने चरम तीर्थंकरोने चार व्रतो नथी होता पण पांच पूरा होयछे एवुं जणाव्युं जे व्रतोनी वृद्धि करे अथवा नियमोनी प्रौढी करे तेने महाव्रत कहिये. एने सर्व जीवादि विषयपणे करी महाविषयपणुं छे. उक्तंचः– "पढमम्मि सव्वजीवा, बीए चरिमे.य सव्व दव्वाई; सेसा महव्वया खलु, तदेकदेसेण दव्वाणं." तेहोज द्रव्यने एक देशे छे माटे. ॥ ५६० ॥

हवे श्रमण धर्म कहेछेः– मूलः– खंतीय मद्दव ज्जव, मुत्ती तव संजमेय बो धव्वा; सच्चं सोयं आकिंचणं च बंभं च जइधम्मो ॥ ५६१ ॥ अर्थः– १ क्षांति एटले क्षमा. शक्तिमान वा अशक्तिमान छतां सहन परिणाम ते क्षमा. २सर्वथा क्रो धनो परिहार ते मृदु एटले अस्तब्ध तेनो जे भाव अथवा कर्म जे अनुद्धेकपणे नीचीवृत्तिए प्रवर्त्तवुं माननो परिहार तेने मार्दव कहिये. ३ ऋजु एटले अवक्रपणुं तेनो भाव अथवा कर्म, तेने आर्जव कहिये एटले मन वचन कायायेकरी वि क्रियानो जे अभाव ते माया रहितपणुं कहिये ४ मुक्ति एटले मोचन ते बाह्य अने

अन्यंतर वस्तुनेविषे तृष्णानो विछेद एटले लोजनो परित्याग जाणवो. ५ तप एटले जेणेकरी रसादि सात धातुओ अथवा ज्ञानावरणीयादि कर्म तापने पामे छे तेनेकहियें तप ते अनशनादि जेदोएकरी बार प्रकारे जाणी लेवुं. ६ संयम ते आश्रवनिविरति लक्षण जाणवुं. ७ सत्य ते ज्यां मृषावादथी विरमवुं तेने जाणवुं. ८ शोच ते संयमप्रते निरुपलेपता अथवा निरतिचारपणुं जाणवुं. ९ जेने किंचित द्रव्यादिक न होय तेने अकिंचन कहियें. तेनो जे जाव तेने कहियें आकिंचन्य, उपलक्षणथी ए जे शरीर तथा धर्मोपकरणादि छे तेओनेविषे निर्ममत्वने आकिंचन्य कहियें. १० नवविध ब्रह्मचर्यनी गुप्तिओ तेनेविषे पोताना पुरुषाकारनुं रुंधवुं ते ब्रह्मचर्य ए दश प्रकारनो यतिधर्म छे. ॥ ५६१ ॥

बीजा वली आवी रीते पाठ करे छेः— खंती मुत्ती अज्जव, मद्दव तह लाघवे तवे चेव; संयम वियाग किंचण, बोधव्वा बंजचेरे य. ॥ लाघव ते द्रव्यथीअल्प उपधिपणुं, अने जावथी गौरवतानो परिहार एटले त्याग. ते सर्व संगथी मुक्त थवुं. अथवा यतिओने वस्त्रादिकनुं देवुं बाकीनुं पूर्वनी पठे जाणी लेवुं. ॥ ५६१ ॥

हवे संयम धर्म सतर प्रकारें कहे छेः— मूलः— पंचासवाविरमणं, पंचिंदिय निग्गहो कसायजओ; दंमत्तयस्स विरई, सतरसहा संयमो होई. ॥ ५६२ ॥ अर्थः— आश्रुयतेके० जेणे करी कर्मोनुं उपार्जन थाय छे तेने कहियें आश्रव. ते नवां कर्मो बंधावाना हेतुओ ते १ प्राणातिपात, २ मृषावाद, ३ अदत्तादान, ४ मैथुन अने ५ परिग्रह ए पांच जेदे जाणवो. ए पांचेथकी जे विरमवुं एटले निवर्त्तन थवुं तेने पंचाश्रव विरमण कहियें. इंद्रियो ते स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, तथा श्रोत्र लक्षण पांच जाणवी. तेओनो निग्रह एटले नियममां राखवुं, अर्थात् स्पर्शादि विषयोनेविषे लंपटताना परिहारे करी वर्त्तवुं. तेने पंचेंद्रिनिग्रह कहियें कषाय ते क्रोध मान माया तथा लोज लक्षण चार जाणवा. तेओनो जय एटले जे उदय थया होय तेने विफल करवा अने जे अनुदित होय तेने अनुत्पादनेकरी रोकी राखवा. ते क्रोधादिचारनो त्याग जाणवो हवे दंम त्रणते चारित्ररूप ऐश्वर्यना अपहारे करी आत्माने दंमाववो अथवा असारपणे करिये. ते दुःप्रयुक्त मन वचन ने काय तेनी जे त्रिक ते दंमत्रय. तेनी जे विरति एटले अशुज प्रवृत्तिथी निरोध ते दंडत्रय विरति एवी रीते सत्तर प्रकारे करी संयम थाय छे. ॥ ५६२ ॥

अथवा बीजा प्रकारे संयमना सत्तर जेद थाय छे ते आ प्रमाणे मूलः—पुढविदग अगणि मारुय, वणसइ बि ति चउ पणिंदिया जीवा; पहुप्पेह पमज्जण, प

रितवण मणोवई काए' ॥ ५६३ ॥ अर्थः– पृथ्वी, उदक, अग्नि, मारुत, वनस्पति द्वींद्रिय, त्रींद्रिय, चतुरिंद्रिय, पंचेंद्रियने मनो वाक् कायाए करी करण करावण तथा अनुमतिए करी संरंभ समारंभ आरंभनुं वर्जवुं. ए नव प्रकारे जीव संयम जाणवो तत्रः–"संकप्पो संरंभो; परिताव करो भवे समारंभो; आरंभो उद्दवउ, सुद्ध नयाणं तु सव्वेसिं;" तथा दशमो अजीवरूप जे पुस्तकादिक छे, ते दुःषम कालना दोषे करी तथाविध प्रज्ञा, आयु, श्रद्धा, संवेग, उद्यम तथा बलादिकेकरीहीन आजना काले उपना जे शिष्यादिक तेना अनुग्रहने अर्थे प्रतिलेखन तथा प्रमार्जन पूर्वक यत्ने करी धारण करवाथी अजीव संयम थाय छे. इहां पिंडविशुद्धिनी म होटी वृत्तिमांहे संयमेणत्ति एटले संयमनुं वखाण करते अजीव संयम पुस्तक अप्रत्युपेक्ष्य दुःप्रत्युपेक्ष्य दूष्य तृण चर्म पंच मद्य हिरण्यादिकनो अग्रहणरूप इहां शिष्य पूछेछे एना अग्रहणे संयम किंवा ग्रहणे संयम थाय गुरु उत्तर कहेछे के, अपवादेतो ग्रहणेपण संयम थाय. यदुक्तं॥दुप्पडि लिहियदूसं, अद्धाणाइ विवित्तगिएहंति ॥ घिप्पइ पोछयपणगं, कालियनिज्जुत्ति कासठा ॥१॥ अर्थः– अद्धाण के० मार्गादिके विवक्त सागारि जेम ग्रहस्थ न देखे अने पुस्तकपांचते कालिक निर्युक्तिनीरक्षाने अर्थे छे. वली शिष्य पूछेछे के बीजानो विशेष केम नथी पण पुस्तक पांचे ज्ञाननो साधन छे तो उत्सर्गे केम न लेवुं तेनो उतरः–सत्वने उपघातना कारण ने लीधे आह्वचः– जे तेसिंजीवाणं, तछ गयाणंच सोणिअंहुज्जा ॥ पीलिज्जंते धणियं, गलिजंते अक्करे फुसिउं ॥ १ ॥ पीडीत थको लोही नीकले ते आखरमां जाय. ११ चक्षुए करी सारीपेठे जोइने बीज हरित जंतु संसक्त्यादि रहित स्थाननेविषे शयन आसन तथा चंक्रमणादि करावबुं तेने प्रेक्षा संयम कहेवो. १२ जे गृहस्थ पाप व्यापार करेछे तेनी उपेक्षणा करवी पण एम न कहेवुं के, तुं भलीपरे ग्राम ग्राम चिंताकर अथवा संयमनेविषे सीदनारा साधुउने जे प्रेरणा करवी अने पास्थादिक जे निर्द्धंधस पणे प्रवर्त्तताने उपेक्षानुं करवुं ते उपेक्षा संयम कहिये. १३ रुडीरीते प्रेक्षित स्थंडिलनेविषे पण रजोहरणादिके करी प्रमार्जिने, शयन, आसन, निक्षेप तथा आदान आदि करनार अथवा ग्रहस्थने देखतां कृष्णभूमि प्रदेश थकी श्वेत भूमि प्रदेशनेविषे प्रवेश करे त्यां सचित्त अचित्त मिश्र रजे करी खरडायला पादादिकनी रजदूर करवाने अर्थे रजोहरणे करी पुंजे प्रमार्जन करे त्यां पण अण पुंजता असंयम अने ग्रहस्थदृष्टिटाली पुंजताने प्रमार्जना संयम जाणवो. यदुक्तंः–पायाई सागरीए, अपमज्जित्तावि संयमो होइ, ते चेव पमज्जंते, सागरिए संयमो होई'

१४ जक्तपानादिक प्राणिसंसक्त, अविशुद्ध, अथवा काम न आवे ते अनुप कारक एवी वस्तुने जंतु रहित स्थाननेविषे सूत्रोक्त विधिएकरी परिष्ठापना करवा थी परिष्ठापना संयम कहेवाय. १५ हर्ष डोह रीस तथा अनिमानादिक थकी मनने निवृतावे अने धर्म ध्यानादिकनेविषे मननी प्रवृत्ति करे तेने मनः संयम कहिये. १६ हिंसक कठोरपणा थकी निवृत्ति अने मधुर निपुण थावो एवी शुन जाषानो बोलवो ते वचन संयम कहिये. १७ गमनागमनादिक जे अवश्यकरणीयछे तेने विषे जे उपयुक्त सावधान छतां कायानो व्यापार करवो तेने कायसंयम कहिये. एवी रीते ए सत्तर प्रकारे प्राणातिपात निवृत्तिरूप संयम थायछे. ॥ ५६३ ॥

हवे वैयावत्त्य कहे छेः— मूलः— आयरिय उवझाए, तवस्सि सेहे गिलाणसाहूसु; समणोन्न संग कुल गण, वेयावच्चं हवई दसहा. ॥ ५६४ ॥ अर्थः— १ आचार जे ज्ञानादिक पंचविध तेने जे आचरे छे एटले सेवे छे. तेने कहिये आचार्य २ उप समीपे आवीने जेथकी अध्ययन अथवा उपचय थाय छे तेने उपाध्याय कहिये. ३ जेनेविषे विकृष्ट तथा अविकृष्ट तप विद्यमान होय तेने तपस्वि कहिये. ४ नवतर दीक्षित शिक्षाने योग्य होय तेने शिष्य कहिये ५ ग्लान ते ज्वरादि रोगे करी आक्रांत साधुउ ६ साधु ७ स्थविर ते समनोज्ञ सामाचारिना करनार होय ८ संघ एटले श्रमण, श्रमणी, श्रमणोपासक, तथा श्रमणोपासिका एउनो समुदाय जाणवो. ९ कुल ते चांड़ादि गच्छ एक आचार्य प्रणेय साधु समूह जाणवो. १० गण ते कोटिकादिक जाणवो. ए आचार्यादिक दशने अन्न, पान, वस्त्र, पात्र वस्ति पीठफलक संस्तारक आदि धर्म साधनेकरी ग्रहणकरे शुश्रूषा, कांतार रोगना उपसर्गनेविषे जैषज क्रिया परिपालन इत्यादि वैयावर्त्य जाणवुं. ॥५६४॥

हवे नवविध ब्रह्मगुप्ति कहे छेः— मूलः— वसहि कह निसिज्जिंदिय, कुड्डंतर पुव्व कीलिय पणीए; अइमायाहार विनूं, सणा य नव बंभ गुत्तीओ. ॥ ५६५ ॥ अर्थः— १ ब्रह्मचारिए स्त्री पशु, पंमक एओ ए करी सहित उपाश्रयादि वसतिनुं सेवन करवुं नही. तेमां स्त्री ते देव तथा मनुष्यना जेदे बे प्रकारनी छे. ते वली सचित्त तथा अचित्त जीति प्रमुख उपर आलेखेली. पूतली एवा जेदे पण बे प्रकारनी छे. बीजो पशु एटले तिर्यग् योनिने विषे उत्पन्नथएल; गाई, जेंस, वडवा, घोमी, छाली, गामरी प्रमुख पण सजाव्यमान मैथुन पणाने लीधे त्याग करवा योग्य छे. त्रीजो पंमक ते नपुंसक रूप तृतीय वेदादिकने विषे वर्त्तनारा महा मोह कर्मवाला स्त्री तथा पुरुषनी सेवन करवानेविषे अनिरत अने तेनेविषे आ

शक्त तेना करेला विकारनां दर्शीने करी आत्माने काम विकारना संज्ञवथी ब्रह्मच र्य व्रतने बाधा उपजे माटे स्त्री पशु नपुंसकादिके रहित एवी जे वस्ति उपाश्रय होय तेनुं सेवन करवु. बीजो केवल एकाकी स्त्री होय तेने धर्मकथा ते धर्म देशना ल क्षण वाक्य प्रबंधरूप कथन करवा योग्य पण नथी. अथवा स्त्रीसंबंधिनी कथा क र्णाटी सुरतोपचार चतुरालाटी विदग्ध प्रिय इत्यादि रूप कर्त्तव्य नथी. केम के, ते रागानुबंधिनी छे. देश, जाति, कुल, नेपथ्य, नाषा, गति विज्रम, इंगित, हास्य, लीला, कटाक्ष, प्रणय, कलह शृंगाररस सहित कामिनीओनी कथा अवश्य पणे मुनिने पण मनने विकारीजूत करे छे. माटे ते न करवी त्रीजो निषद्या आस ननो शुं अर्थ छे? ते स्त्रीनीसाथे एक आसने बेशवुं नही. अने ते ऊठीगया पछी पण एक मुहूर्त्त सुधी त्यां बेशवुं नही. केम के, तेना उपजोगवाळुं आसन चि त्तना विकारनुं कारण थाय छे. यदाहः-"इत्थीय मिलिय सयणा, सणंमि तप्पा सदोसओ जइणो; दंसेइ मणं पाणो, कुंठं जह फास दोसेणं." ४ अविवेकी ज ननी अपेक्षाए करी इच्छा करवा योग्य स्त्रीनी नयन नासिकादिक इंद्रियो उप लक्षणथी स्तन तथा जघनादि अंग पण जाणवा. तेओने अपूर्व रसना अतिशय पणे नेत्रो ऊघामीने जोवां नही. कदाचित् अचानक दीठामां आवी गयां तो जोया पछी नेत्रोनुं लावण्य नासिकानुं सरलपणुं, तथा पयोधरोनुं मनोहरपणुं इत्यादिनी ए काग्र चित्तेकरी चिंतना करवी नही. केम के, तेनुं अवलोकन तथा चिंतवन मो हादिकनो हेतु छे. माटे तेम न करवो ५ कुड्यांतरे एटले जीत अथवा त्राटी प्रमुखने आडे दंपतिनो सुरतादि शब्द सांजल्यामां आवे एटले ते स्त्री पुरुष मा होमाहे संजोग समये तत्संबंधी रागविषे वार्त्ताओ करता होय ते सांजल्याथी पण चित्त विकारवंत थाय तेथी ते स्थाननो परित्याग साधुए करवो. ६ पूर्वे गृहस्था वस्थानेविषे स्त्रीसंजोगनी क्रीडा करेली तेनो अनुजव लक्षण तथा द्युत्यादि रमण लक्षणनुं स्मरण करवुं नही. केम के तेना संस्मरणे करी पण जेम इंधनना योगे अग्नि दीप्तिवान थाय छे तेम मतिनेविषे नवे सरथी विकार उत्पन्न थाय छे. ७ प्रणीत एटले अति स्निग्ध मधुरादि रस जक्तनुं जोजन करवुं नही. केम के, निरंतर पौष्टिक स्निग्ध रसे करी संतुष्ट थयाथी प्रधान धातुना परिपोषणथी वेदनो उदय थाय माटे न करवुं ८ जिक्षा मागी लावेलुं रूखुं अहार पण अति आहार करीने कंठ सुधी उदर जरवुं नही. केम के ते ब्रह्मचर्यनो नाश करनारो छे. तेमज शरीरने पण पीडा करनार छे. "९ विजूषण ते पोताना शरीरनी शोजाने

अर्थे संस्कार स्नान, विलेपन, धूपन, नख, दांत, तथा केशनुं समारवुं ते करव थी अब्रह्म सेववानी अनिलाषा थाय. माटे विनूषा करवी नही. अशुचि शरीरसं स्कार रहीत होय तेना मनमां जो विकार उपजे तो पण ते काञ्चायेकरी अकार्य न करे एटला ब्रह्मचर्य एटले अमैथुन व्रतनी गुप्तिओ राखवाना उपायो ले.॥५६५॥

हवे ज्ञानादि त्रिक कहे ले:– मूलः– बारस अंगाईयं, नाणं तत्तत्थ सद्दहाणं तु; दंसण मेयं चरणं, विरई देसे य सव्वेय. ॥ ५६६ ॥ अर्थः– ज्ञान शब्दे कर्मनो क्षय अथवा कर्मनो क्षयोपशम उतां तेथी उत्पन्न थयो जे अवबोध तेनो हेतु होवा थी द्वादशांगादि अने आदि शब्दथी उपांग प्रकीर्णकादिनुं परिग्रहण करवुं. ते ज्ञान. तथा तत्व ते जीवादि नवपदार्थ तेनो अर्थ एटले अनिध्येय तेनेविषे श्रद्धान करवुं. ते मज एज प्रत्यय रूप जे रुचि तेने दर्शन कहिये. तथा पाप व्यापार थकी विरमवुं ते ज्ञान श्रद्धान पूर्वक परिहारने चरण कहिये ते बे प्रकारनुं ले:– एक देशथी बीजुं सर्वथी तेमां देशथी श्रावकोने जाणवुं; अने सर्वथी साधुओने जाणवुं॥५६६॥

हवे द्वादश प्रकारनुं तप कहेले:– मूलः– अणसण मूणोयरिया, वित्ती संखेवणं रसच्चाउ; काय किलेसो संलीणया य बज्झो तवो होई. ॥५६७॥ पायच्छित्तं विणओ वेयावच्चं तहेव सज्झाओ; झाणं उवसग्गोविय, अप्निंतरओ तवो होई ॥ ॥ ५६८ ॥ अर्थः– ए बे गाथा अने एओनुं स्वरूप ते तपना अतिचारोनी व्याख्या मां पूर्वेज व्याख्यान करेलुं ले माटे फरी अही तेविषे वधारे लखता नथी॥५६८॥

हवे क्रोधनिग्रहादि कहेले:– मूलः– कोहो माणो माया, लोनो चउरो हवंति हु कसाया; ए एसिं निग्गहणं, चरणस्स हवंति मे नेया. ॥ ५६९ ॥ अर्थः–क्रोध मान माया तथा लोन ए चार कषाय जाणवा. जेनेविषे प्राणीओनी हिंसा थाय ले तेने कहिये कष, तद्रूप जे संसार तेनेविषे आय एटले प्राप्त थायले एटले जे णेकरी प्राणीने संसारनी प्राप्ति थायले तेने कषाय कहिये. तेओनुं निग्रहण एटले नियंत्रण जाणवुं. एवीरीते चरण एटले चारित्रना पूर्वोक्त सित्तेर संख्याये नेदो थायले. एटले व्रतना पांच नेद, श्रमण धर्मना दश नेद, संयम संबंधी सत्तर नेद वैयावृत्यना दश नेद, ब्रह्मगुप्ति नव; ज्ञानादि त्रिक, तपना बार; अने क्रोधनिग्रहादि चार ए बधा एकठा कखाथी सित्तेरनी संख्या थायले. ॥ ५६९॥ ए लासठमो द्वार.

अवतरणः– हवे 'करणंति' एटले करण सत्तरिनो सम्सठमो द्वार कहे ले:– मूलः– पिंमविसोही समई, नावण पमिमाय इंदिय निरोही; पडिलेहण गुत्तीउ अनिग्गहो चेव करणं तु.॥ ५७० ॥ अर्थः– जेनुं पिंमन थाय तेने कहिये पिंम

ते सजातिओ तथा विजातियोनुं अथवा कठिण द्रव्यनुं एकत्र समुदायनो संघात एटले मळवो तेने पिंम कहिये. वळी समुदायियकी समुदाय क्यारेक भिन्न होय एवी रीते घणा पदार्थों एकत्र मळेला पिंम शब्देकरी कहेवाय छे. तेनी विविध एटले अनेक प्रकारे आधाकर्मादिकने परिहारे करी शुद्धि एटले निर्दोषता तेने कहिये पिंमविशुद्धि तथा समिति ते सम्यक् एटले प्रशस्त अर्हत्प्रवचनानुसारें जे चेष्टा तेने समिति कहिये. ते ईर्यासमित्यादिक पांच जाणवी. तथा जे भाववी तेने कहिये भावना; ते अनित्यत्वादिकनुं चिंतववुं. तथा प्रतिमां एटले प्रतिज्ञा जे अभिग्रहनो प्रकार मासिक प्रमुख. तथा स्पर्शादिक इंद्रिय तेओनो जे निरोध एटले पोतपोतानेविषे इष्ट तथा अनिष्टने विषे रागद्वेषनो अभाव एम जाणवुं. तथा प्रतिलेखना ते आगमानुसारे करी प्रति प्रति निरीक्षण एटले चोलपट्टादि उपकरण प्रमुखने लेखन के० निरखवुं ते प्रतिलेखन कहियें. तथा गुप्ति जे गोपववुं, तेणेकरी यतिने पोतानी आत्मानुं राखवुं. अथवा मनादि योगनिग्रह ते गुप्ति कहिये. तथा जे अभिग्रहियें तेने कहिये अभिग्रह ते द्रव्यादिसंबंधी नियमविशेष अनेक प्रकारे जाणवा. चकार समुदायने अर्थे छे अने एवकार ते अनुक्रमे प्रतिपादनने अर्थें छे. अने ए करणतु के० जे कराय तेने करण कहेवुं: ते मोक्षार्थी साधुओ करे छे. एम जाणवुं तु शब्द विशेषणार्थेंछे तेथी एम कहेवुं के मूळ गुणने सद्भावेज करणपणुं छे ते एने अन्यथा न थाय अहीं कोई आशंका करे छे.

आशंकाः– समितिना ग्रहणथी पिंमविशुद्धिनुं ग्रहण थवाने लीधे पिंमविशुद्धिनुं जुदुं ग्रहण कर्त्तव्य नथी. जे कारण माटे एषणासमितिनेविषे सर्व एषणानुं ग्रहण थयुं छे. तो पिंमविशुद्धि पण एषणाज छे. तेनो भेदेकरी उपन्यास केम कर्यो?

समाधानः– पिंमथी व्यतिरेकपणे पण एषणा दीठामां आवेछे. ते वसति प्रमुखना पिंमप्रक्षेपणे एषणा थाय छे तेने एषणा समितिनुं ग्रहण अथवा पिंमविशुद्धिनो भेद कहेवो ते कारणे करी ग्रहण कर्त्तव्य छे परंतु कारण विना न करवुं एवो अर्थ जणाववाने अर्थे अथवा आहारविना पिंमविशुद्धि प्रमुख करी न शकाय ए माटे भेदेकरी उपन्यास कर्यो छे. माटे पिंम, शय्या, वस्त्र, अने पात्र ए अकल्पनीय लेवा नहीं अने जे कल्पनीय थाय ते साधु लिये ॥५७०॥

हवे जे दोषोएकरी रहित पिंमनी शुद्धि थाय छे ते दोषोने सामान्येकरी त्रण भेदे कहे छेः—मूळः—सोलस उग्गम दोसा; सोलस उप्पायणाय जो दोसा; दस एसणा य दोसा; बायालीसं इह हवंति. ॥५७१॥ अर्थः— प्रथम उग्गम शब्दे पिंमनी उत्पत्ति

तद्विषय जे आधाकर्मी आदि दोष ते उद्गम दोष सोळ जाणवा. बीजो उत्पादन ते उपजाववुं, ते शुद्ध पिंमने पण धात्रीत्वादि प्रकारेकरी दूषणनुं उपजाववुं तद्विषयक उत्पादन दोष ते पण शोळ जाणवा. तथा दश एषणाना दोष छे. एषणा एटले एषीये जोइये अनशनादि ग्रहण काळने विषे शंकितादिक प्रकारे करी जोवुं तेने कहिये एषणा तेना दोष ते ए त्रणे मळ्याथी बेताळीश दोष थाय छे. ॥ ५७१ ॥

हवे प्रथम उद्गम विषयक शोळ दोषोनां नाम कहे छेः— मूळः— आहाकम्मुद्देसिय, पूईकम्मे य मीसजाए य; ठवणा पाहुडिया ए, पाओयर कीय पामिच्चे. ॥ ५७२ ॥ परिअट्टिए अभिहडु, भिन्ने मालोहडे इय अछिज्जो; अणसिट्ठे अज्झोयर सोळसपिंडुंग्गमेदोसा ॥ ५७३ ॥ अर्थः— आधान एटले आ अमुक साधुने कारणे मने भक्तादिक पकाववुं छे, एवा मनेकरी साधुनिमित्ते जे अशनादिक ग्रहस्थ नीपजावे ते आधा कर्म एटले जे पाकादि क्रिया तेने कहिये आधाकर्म तेना योगेकरी ते भक्तादि पण आधाकर्मि जाणवां. अथवा आधाय एटले साधुना चित्तना आशयथी भक्तादि कराय छे तेने आधाकर्म कहिये. साधुने निमित्ते सचित्तने अचित्त करवुं अने अचित्तनो पाक करवो एम षट्विध जीवनिकायना वधथी जे थाय ते आधाकर्म दोष जाणवो.

२ जेनुं उद्देशन करवुं. तेने कहिये उद्देशक दोष, ते संकेत जाणवो. ते यावत् अर्थिकादिकनुं प्रणिधान, तेणेकरी निर्वृत्तवुं तेना प्रयोजनने उद्देशिक कहिये. ते बे प्रकारनो छेः— एक ओघे करीने बीजुं विभागे करी. तेमां ओघ ते सामान्यपणुं; अने विभाग ते पृथक्करण जाणवुं. अत्र आ भावना छेः— न दीधाथी कांई पण प्राप्त थतुं नथी ते माटे केटली एक भिक्षा देवी एम जाणीने केटलाक अधिक तंडुल नाख्याथी निर्वृत्त थयुं जे अशनादि तेने ओघ कहिये; ते सामान्ये करी पोताना अने बीजाना जुदा जुदा विभाग करवाना अभाव रूपे जाणवुं. एम ओघोद्देशिकनी व्युत्पत्ति जाणवी. तथा विवाह प्रकरणादिकनेविषे जे कांई वधेलुं होय, तेने जुदुं करीने दानने अर्थे कल्पना करवी ते विभागोद्देशिक कहेवुं. एटले विभागे करी पोतानी सत्ता टाळी भिन्न करवानो जे उद्देश तेने विभागोद्देशिक कहिये. ए बेमां प्रायेकरी ओघोद्देशिकज थाय छे. जेम कोई दुष्काळनी भूखने अनुभवीने सुभिक्ष पामेलो ग्रहस्थ मनमां चिंतन करे के, दुर्भिक्षनेविषे महा कष्टेकरी जीवेलो जे हुं ते हवे संप्राप्त वर्त्तनना प्रतिदिन अर्थी जन जे छे ते सर्वने तो भोजन दाननी शक्तिनो अभाव मारामां छे तथापि स्वशक्त्या

नुसारे देवा योग्य छे. केमके आ जन्मनेविषे न आप्युं होय तो उत्तर नवे स्वर्गादिक नोगनी प्राप्ति थती नथी. जो दानादि नथी करतो तो पुण्य विना स्वर्गगमन थतुं नथी. एवुं जाणीने आग्रह पूर्वक प्रति दिवस यावत् प्रमाणे करी नोजन रांधे; ते प्रमाणे नोजन रांधवानो आरंन कर्यो उतां तेवा समयमां कोई पापंमी वचमां आवी पडे तेने निक्षादानने अर्थे आटलुं पोताने अर्थे, एवा विनाग कर्या विना अधिक चावलो नाखी दिये ते ओघ उद्देशिक थाय छे. अने विनागोद्देशिक त्रण प्रकारनो छेः— तेमां पोतोने अर्थे निष्पन्न अशनादिक जे निक्षाचरोना दानथी जुदुं कल्पेलुं होय ते उद्दिष्ट जाणवुं. अने जे निक्षा दानने अर्थे जुदुं कहाडेलुं शालि ओदन करंबादि रूपपणे ते बीजुं; अने विवाह प्रकरणनेविषे जुदुं कहाडेलुं मोदक, तथा चूर्णादि रूप निक्षाचरोने दानने अर्थे कीधेलुं कार्य ते त्रीजुं. ए एकेक वली चार चार प्रकारे छेः—उद्देश, समुद्देश, देश अने समादेश. तेमां जे उद्देश करेलुं कर्म विनाग तेने उद्देशिक कहिये. जेम के, कोई पण निक्षाचरो पाषंमी अथवा गृहस्थ वगेरे गमे तेटला आवे ते बधाने देवा योग्य छे एवो ज्यारे संकल्प कर्यो होय त्यारे उद्देश संज्ञक कहेवाय छे ज्यारे एवी कल्पना करी होय के पाषंमीने न आपवुं त्यारे तेने समुद्देशाख्य कहेवुं. ज्यारे एवी चिंतवना करे के शाक्यादिकना श्रमणोने आपीश त्यारे देशानिध कहिये. अने ज्यारे एवो संकेत करे के, निग्रंथ जे अर्हत् यतिओ तेओनेज आपीश एवो परामर्श करे त्यारे समादेश नाम जाणवुं. यत उक्तः— 'जावंति य मुद्देशं, पासंमीणं नवे समुद्देसं; समणाणं आएसं, निग्गंथाणं समाएसं.' एवी रीते पूर्वे संख्याए करी उद्देशिक विनाग चार थया तेने पूर्वोक्त त्रणे गुणता बार प्रकारनो बीजो उद्दसिक दोष थाय छे.

आशंकाः— आधाकर्म अने उद्देशकर्म ए बन्नेमां परस्पर विशेषशुं छे?

समाधानः— प्रथमथीज साधुने अर्थे निष्पादित उतां फरी पण तेनी साथे बीजो पाक करवो तेने उद्देशिक कर्म कहे छे. ए विशेष छे.

३ उद्गमादि दोष रहितपणे स्वतः नक्तादिक पवित्र उतां अन्य अविशुद्ध कोटिक नक्तादि अवयवे करी सहित मेलव्याथी पूतिनूतनुं कर्म करवुं तेने त्रीजो पूतिकर्म दोष कहिये. तेना योगे करी ते नक्तादिक पण पूतिकर्म कहेवाय छे. एनो अर्थ आ छेः— जेम सौरन्य तथा मनोहरत्वादि गुणोए करी शाल्यादि नोजन द्रव्य विशिष्ट उतां पण दुर्गंधआदि द्रव्यना लवे करी युक्त थयाथी अपवित्र थाय छे. अने ते विशिष्ट जनने त्याग करवा योग्य थाय छे. तथा निरतिचार चारित्रना सातिचार पणाने

लीधे अपवित्र करणेकरी अविशोधि कोटिना अवयव मात्रेज संयुक्त बतां स्वरूपे करी शुद्ध आहार उपलभ्य मान जावे बतां पण पूतिना कारणथी पूति जाणिये तथा आधाकर्मीकादि अवयवना लेशेकरीने पण संसृष्ट थाली, वाटकुं तथा कटोरी आदिक पूति बतां परिहरण करवा योग्य बे. ए त्रीजो पूतिदोष कह्यो.

४ कुटुंब प्रणिधान तथा साधु प्रणिधान मीलनरूप मिश्रपणे करी एटले मलेला नावथी उत्पन्न थएलुं पाकादि ते नावने पामेलुं जे नक्तादि तेने मिश्रजात कहिये. ते त्रण प्रकारनुं बेः— एक यावदर्थिक, बीजुं पाखंडि मिश्र; ने त्रीजुं साधुमिश्र. तत्र दुर्भिक्ष कालादिकनेविषे घणा निक्षाचरो उपलभ्यमान होय तेओनी अनुकंपाएकरी जेवा के, गृहस्थ अगृहस्थ गमे ते निक्षाचरना आगमनथी तेने कुटुंबनीज बुद्धिएकरी सामान्य निक्षाचर योग्य एकत्र मेलवीने जे रांधे ते यावदर्थिक मिश्र कहेवाय अने जे केवल पाखंडि योग्य तथा पोताने योग्य एकठी रसोई करी होय तेनें पाखंडिमिश्र कहिये. अने जे केवल साधु योग्य तथा पोताने योग्य एकत्र रंधाय ते साधुमिश्र कहिये. श्रमण अने पाखंडीओनो अंतर्नाव विवक्षित बे माटे श्रमणमिश्र जुदापणे कह्युं बे. ए चोथो मिश्रजातिदोष जाणवो.

५ केटलो एक कालसुधी जे साधुना निमित्ते रखाय तेने स्थापनादोष कहे बे. अथवा आ साधुने देवुं बे एम जाणीने देवानी वस्तुने केटलोएक काल व्यवस्थापन कर्युं होय ते स्थापना जाणवी. तेना योगे करी देवायोग्य होय तेने पण स्थापना कहिये. एटले बब्बी तथा थाली प्रमुखमां घालीने सुस्थित कब्ब तथा बीकादिकनेविषे थोमो काल अथवा घणो कालसुधी साधुना निमित्ते करी धारण करेला अशनादिकनी स्थापना जाणवी. ए पांचमो स्थापना दोष कह्यो.

६ कोई इष्ट अथवा पूज्यने अर्थे बहुमान पुरस्सरी करीने जे अनीष्ट वस्तु देवाय बे तेने प्राभृत कहिये प्राभृतनी परें प्राभृत जाणवुं. साधुने देवायोग्य निक्षादिक वस्तु जे नेटनी परे होय तेने प्राभृति कहिये. अथवा प्र एटले प्रकर्षे करी आ एटले साधुदान लक्षण मर्यादा तेणेकरी भृता एटले निर्वृत्त थएली निक्षा ते प्राभृता जाणीये. केम के, स्वार्थे क प्रत्ययनो विधान बे माटे. ते प्राभृतिका बे प्रकारनी बे. एक बादर अने बीजी सूक्ष्म. तत्र बादर ते स्थूल आरंन विषयपणे जाणवी. अने स्वल्प आरंनना विषयपणे सूक्ष्म जाणवी. ए एकेकना पण बबे नेद बेः— एक उत्ष्वष्कणे करी ने बीजो अवष्वष्कणे करी जाणवो. तत्र स्वयोग प्रवृत्ति कालनी अवधिनेविषे ऊंचेथी आरंननुं करवुं तेने अवष्वष्क कहे बे. अही

आम समजवुंः—कोई श्रावक कोई नगरनेविषे पोताना अपत्यनो विवाह करवानो आरंभ करे. तेनुं लग्न पण ज्योतिषिए कढाडी दीधुं होय परंतु ते समये अन्यत्र विहार करी जावाने लीधे त्यां गुरुउ न होय त्यारे ते श्रावक मनमां एवी कल्पना करे के. आ विवाहनेविषे नानाप्रकारना मनोरम सूखमी तथा पक्वानो थशे. ते व्रतीउने कंईपण उपयोगमां आवशे नही. केमके, वखते तेउने आवता घणो काल लागी जाय माटे, हाल सांभल्यामां आवे ठे के, गुरुउ थोडा दाहाडामां विहार करीने अत्र आवनार ठे. माटे ते समयनेविषे मारे विवाह करवो, जेणेकरी साधुउने हुं अशनादि पुष्कल आपुं. केमके, तेज अशनादिक सफल कहेवाय के जेनो विनियोग सुपात्रनेविषे थाय! एथी महापुण्यनुं उपार्जन थशे. अने मोटा कल्याणनी प्राप्ति थशे. इत्यादिक चिंतवना करीने निश्चय करेला लग्नने आगल लेलीने गुरुना आववाना समये विवाह करे. एवीरीते विवाह दिननुं उत्ष्वष्करण करीने जे भक्तादि उपक्रिया करवी ते बादर उत्ष्वष्करण प्राभृतिका जाणवी. तथा कोई एक श्रावके पोताना पुत्रादिकना विवाहनुं दिवस निश्चय कर्युं तेटलामां त्यां साधुओ आवी पहोता. त्यारे ते मनमां आवीरीते परिभावना करे के. आ साधुओने विपुल तथा विशिष्ट एवुं भक्त पानादिक पुण्यने अर्थे देवुं जोइयेठे. ते प्राये करी विवाहादिकनेविषे मोटी विशाल पर्वणि थशे. अने मारा पुत्रनो विवाह थशे त्यां सुधी तो यतिओ बीजे ठेकाणे विहार करी जशे. एवो विचार करीने बीजुं पाशे लग्नकनो लग्न कढावे. एम विवाहना लग्ननो समय ठेराव्या ठतां तेनुं अवष्कष्करण करीने जे भक्तादि उपक्रिया करवी ते बादर अवष्वष्कर प्राभृतिका जाणवी. तथा कोई कुटुंबिनी स्त्री सूत्र कातवाना वेपारविषे लागेली होय तेनी पाशे बालक रोतो रोतो भोजन मागतो होय के, मा मने खावाने आप. ते प्रस्तावनेविषे पाशेना गृहोमां भिक्षा मागतां साधुउनुं संघाटक तेणे जोयुं. त्यारे सूत्र कातवाना लोभेकरी रोता अने धांधल करता बालकने कहे के, हे बालक तुं रोदन तथा प्रलापन नाकर, जो आ पेला साधु घेर घेर भिक्षा लेता अनुक्रमे ज्यारे आपणे घेर आवशे ते संघाटकने भिक्षा देवासारु हुं उठीश त्यारे तने पण भोजन आपीश. त्यार पठी क्रमे करी साधुओनुं संघाटक आव्याथी धर्मादिकने अर्थे उठीने, भिक्षा आपे त्यारे ते बालकने पण भोजन आपे. हवे जे क्षणनेविषे बालके भोजन मांग्युं हतुं ते समये तेने आपवा उचित ठतां भविष्य कालनेविषे साधुउने भिक्षा देवाना समये देवुं तेने उत्ष्वष्करण कहे ठे. तेनेविषे जे प्राभृतिका ते सूक्ष्मोत्ष्वष्करण प्राभृतिका

कहिये. तथा कोई गृहस्थनी स्त्री कातणुं करती बतां खावाने मागता बालकने कहे के, एक पूणी काती लकं पछी तने जोजन आपुं. एटलामां साधु आव्या त्यारे ऊठीने तेने जिक्षा आपे; अने बालकने पण खावाने दिये. हवे पूणी काती लीधा पछी छोकराने जोजन आपवानुं बतां वचमां साधु आवी लागाथी ते समये ज बालकने खावा आपवुं तेने अवष्कष्करण कहिये. ए प्राजृतिका साधुने सूक्ष्म अवष्कष्करण प्राजृतिका कहिये ए प्राजृतिका साधुने अर्थे ऊठी बतां बालकने जोजन दान देवा पछी हस्तधावनादिके करी षट्कायादि उपमर्दनो हेतु होवाथी अकल्पनीय छे. ए छठो प्राजृतिका दोष कह्यो.

७ साधुना निमित्ते अग्नि प्रदीप तथा मणि आदिकनी स्थापनाए करी अथवा जित्यादि अपनयने करी बाहार निकास्य धारणेकरी प्राडुःप्रकटत्वेकरी देवानी वस्तुनुं करण तेने प्राडुष्करण कहिये तेने योग्य जे जक्तादिक ते पण प्राडुष्करण कहिये अथवा प्राडुःकरण होय जेनुं तेने कहिये प्राडुष्करण ते बे प्रकारे छेः—एक प्रकाश करण, ने बीजुं प्रगट करण, कोई श्रावक साधुनी जक्तिएकरी जूषित मनवालो, निरंतर सत्पात्र दाने करी पवित्र करेला छे जेणे पोताना हाथो; पण मंद विवेकी छे तेथी अंधकार वाला गृहनेविषे पडेलुं साधुने देवायोग्य अशनादिक साधुने देवुं छे एवी परिजावना करीने तेना प्रकाशवाने अर्थे अजवालुं करवावाली मणिने त्यां स्थापन करे; अथवा अग्नि प्रदीप करे; वा गवाक्ष करावे; नानुं दरवाजुं होय तो मोटुं करावे अथवा जीतिप्रमुखमां काणुं पाडे; एवीरीते कोई ठेकाणे पडेली देवानी वस्तुने प्रकाशवुं तेने प्रकाश करण कहेछे. अने घरमांना चूलानी ऊपर पोताना गृहने अर्थे रांधेलु उदनादिक ते अंधकारमांथी कहाडीने बाहेरना चूलानी ऊपर अथवा घरना चूलाथी जिन्न कोई बीजा स्थानके अथवा कोई बीजाज प्रकाशवान प्रदेशनेविषे साधुने दानने अर्थे जे स्थापन करवुं तेने प्रकट करण कहिये ए बन्ने प्रकारनुं प्राडुष्करण छकाय जीवोनी हिंसा करवाना दोषना सद्भाव होवाथी साधुने ते वर्जन करवा योग्य छे ए प्राडुःकृत दोष.

८ साधुने अर्थे जे मूल दईने कांई वस्तु वेचाती लइये, तेने क्रीतदोष कहे छे. ते चार प्रकारे छेः—आत्म द्रव्य क्रीत, आत्म जावक्रीत, परद्रव्य क्रीत तथा पर जाव क्रीत. तत्र आत्माएकरी पोतेज द्रव्यथी उज्जयंतादि तीर्थ शेष परावर्त्तादि गुटिका सौजाग्यादि संपादक रक्षादि रूपेकरी प्रदान कस्यांथी परम अर्थनो त्याग करता बतां जे जक्तादिक ग्रहण करवुं तेने आत्म द्रव्य क्रीत कहिये. एनेविषे आटला दो

यो छेः–उज्जयंतादि तीर्थशेषगुटिका समपर्ण कस्या पछी थोडाकालेज दैवयोगे गृहस्थ ने अकस्मात ज्वरादिके मांदाई थई आवे त्यारे ते मनमां जल्पना करे के, हुं साजो ता जो छतां आ साधुए आपेली गुटिकाथी रोगी थयो; एवी बकवाथी शासननी मलि नता थाय अने एवी जो राजादिकने खबर पडे के अमुक जैननो साधु गुटिका आपीने माणसोने मांदा पाडेछे तेथी तेने पकडी मारकूटादि करे. अने ते शेषादि समर्पण कस्याथी दैवयोगे रोग मंद थई जाय तो लोकोमां ते साधुनो वहावा था य ते साधुने अयोग्य होवाथी शासननी हीलना थाय तथा तीर्थाटन करतां देव ने अर्पण करेली कांई वस्तु लई आवीने आप्याथी शरीर तथा व्यापारनी पुष्टी थयाथी छकायना जीवोनो घात थाय तेथी कर्मबंध थाय इत्यादि दोषो जाणवा बीजो आत्मभावक्रीत ते पोते भक्तादिकने अर्थे धर्म कथन करनार वादी, क्षपक तापक तथा कवि प्रमुखे करी धर्म कथा उपन्यासादि लक्षण भावेकरी कहेला ध र्म कथाना उपन्यास थकी जे अशनादिकनुं ग्रहण करवुं, ते आत्मभावक्रीत क हिये. एना दोष पोतानुं निर्मल अनुष्ठान निष्फल करवुं वगैरे जाणी लेवा. त्री जो परद्रव्यक्रीत एटले पर ते गृहस्थे साधु निमित्ते सचित्त अचित्त मिश्र द्रव्ये करी करेला अशनादिकनुं जे ग्रहण करवु तेने परद्रव्य क्रीत कहिये एना षट्कायविराधनादि. प्रसिद्ध दोषो छे ते जाणी लेवा. तथा परभाव क्रीत ते पर एटले यति आदिकनी भक्तिना वशेकरी साधुना निमित्त पोताना विज्ञान प्रद र्शनादिरूपे करी अथवा धर्मकथादिरूपे करी भावेकरी बीजाने पीगलावीने जे गृह ण करवुं तेने परभाव क्रीत कहेछे. एना त्रण दोषो छेः– एक क्रीत दोष, बीजो बीजाना गृहथी आण्याथी अभ्याहृत दोष अने त्रीजो लावी लावीने एकत्र साधुने अर्थे स्थापन करवुं ए आठमो क्रीत दोष कह्यो.

ए अप एटले हमणा मने अमुक चीज जोईए छे ते आप हुं तने पाछी आपीश एम कहीने साधुने अर्थे उछीनुं लेवुं तेने अपिमित्य अथवा प्रामित्यक कहेवो. अही जे अपमित्यनुं ग्रहण कर्युं ते पण उपचारथी कर्युं छे एम जाणी लेवुं. ते बे प्रकारनो छेः– एक लौकिकने बीजो लोकोत्तर तेमां लौकिक ते कोई ग्रहस्थ बी जानी पाशेथी उछीनुं लईने कोई व्रती एटले साधुने आपे ते जाणवो. एना दोष कहेछे ते उछीनो लेनारने तेना आधीन रहेवुं पडे, वचननुं बंधन थई पडे अने नियमथी ते करवुं जोये ए जाणवा. अने लोकोत्तर ते वस्त्रादिकनी परस्पर साधु ओनेविषे लेवड देवड जाणवी. ते वली बे प्रकारे छेः– तेमां प्रथम कोई साधु

कोईनी पाशेथी वस्त्रादि मांगी लिये ते एवी बोलीथी के केटलाएक दिवससुधी हुं वापरीने पछी पाछुं आपीश. अने बीजुं कोई एवी बोलीथी लिये के आटला दिवस पछी हुं तने आना जेवुंज वस्त्रादि आपीश. तेमां प्रथम प्रकारे लीधेलुं वस्त्रादि शरीरना मलादिकेकरी मलीन थयुं होय, फाटी गयुं होय, चोराई गयुं होय, अथवा कोई ठेकाणे रस्तामां पडी गयुं होय, तो तेने लीधे माहो मांहे कजीओ थाय; इत्यादिक दोष जाणवा. अने बीजा प्रकारे लीधेलुं वस्त्रादि फरी ज्यारे धणी मागे त्यारे बोली प्रमाणे तेथी पण विशेष आप्युं, छतां तेनुं मन मानवुं कठण थायछे तेथी पण कोई वखते कलहनी उत्पत्ति थाय ए नवमो प्रामित्य दोष जाणवो.

१० जे साधुने अर्थे परिवर्त्त एटले ताब्दलीक करी राख्युं होय तेने परावर्त्त कहेछे ते बे प्रकारनो छेः— एक लौकिक अने बीजो लोकोत्तर जाणवो. ते वली एकेक बे बे प्रकारनो छेः— तेमां एक तद्द्रव्यविषय अने बीजो अन्यत् द्रव्यविषय एम जाणवा. तेमां तद्द्रव्यविषय ते खराब घृत आपीने साधुने अर्थे सारुं सुगंध वालुं घृत लेवुं इत्यादि जाणवुं. अने अन्यत् द्रव्यविषय ते जेम कोद्रवकूर समर्पण करीने साधुने निमित्ते शाल्योदननुं ग्रहण करवुं इत्यादि जाणवुं. ए लौकिक जाणवो. एमज लोकोत्तर पण जे साधुओ पोतपोतामां वस्त्रादिकनुं लेवुं देवुं करे तद्रूप जाणवो. तेनी पण ते बे प्रकारे भावना करवी. एमां पण पूर्वनी पठे दोषजछे ए दसमो दोष.

११ अभि एटले साधुनी सन्मुख, हृत एटले कोई ग्रहस्थे बीजा कोईगृहस्थनी पाशेथी आणेलुं अभिहृत जाणवुं. ते बे प्रकारे छे. एक अनाचीर्ण ने बीजुं आचीर्ण. तेमां प्रथम अनाचीर्ण बे प्रकारनुं छेः—एक प्रछन्न ने बीजुं प्रकट. तेमां जे साधुए अभ्याहृतपणे जाण्युं होय तेने प्रगट कहिये. ते प्रत्येक बेबे प्रकारे छेः— स्वग्रामविषय तथा परग्रामविषय. जेमां साधुओ वास करी रह्या होय तेने स्वग्राम कहिये अने बाकीनाने परग्राम कहिये. तेमां कोई श्राविका भक्तियुक्त साधुने प्रतिलाभे करी अभ्याहृतनी शंकानी निवृत्ति करवाने अर्थे उत्साहने दिवसे कांई वांटवा नीकले छे तेनी पठे उपाश्रयमां आवीने पोतानी साथे मोदकादिक लावीने साधुने कहे के, हे भगवन्, मने भाई प्रमुख कोई सगाना गृहथी आ प्राप्त थएलु छे. ते ज्यारे हुं स्वजनोना घेर आ उत्साहनेविषे आपवानुं पोताना गृहथी आणीने आपवा गई त्यारे तेउए रोषादि कोई कारणने लीधे लीधुं नही. हमणा हुं मात्र वंदन करवाने आवेली छुं, तेथी आ भक्त जो तमारे लेवा योग्य होय तो एनुं ग्रहण करो एम कही ते जे आपे ते प्रछन्न स्वग्राम विषय अभ्याहृत जाणवुं. तथा कोई ग्रा

मनेविषे घणां श्रावको होय अने ते बधा एक कुटुंबवालां होय, कोईएक समयने विषे तेउना गृहनेविषे विवाहनो संभव थयो. तेमां जमण वगेरे थईगया पढी प्रचूर मोदकादिक अन्न वध्युं. त्यारे तेउ मनमां विचार करवा लागे के, आ अन्न जो साधुउने आप्युं होय तो आपणने महत्पुण्यनी प्राप्ति थाय. एवो संकेत करीने ते साधुउमांना केटलाएक दूर रहे ठे अने केटलाएक पासे वसे ठे पण अंतराले नदी वहे ठे. तेथी तेउ ठकाय जीवोनी विराधनाना भयथी आवता नथी. अने जो कदाचित् आवे तो पण प्रचूर मोदकादिकने जोईने जो आपणे कहीशुं के आ शुद्ध ठे तो पण आधाकर्मनी शंकाए करी गृहण करशे नही. माटे जे गाममां साधुओ वसे ठे त्यांज प्रछन्न लईने जवुं सारुं ठे. वली बीजो विचार एवो करे के, जो साधुउने त्यां जईने आपशुं त्यारे तेउ अशुद्धनी आशंका करीने गृहण नहीकरशे ते कारण माटे बीजी ज्ञातिवालाना हाथेज केटलुंएक तेउने अपाववुं कदाचित् तेम दीधाथी पण साधूउ कबूल करशे नही केम के ए अवस्थाए करी अशुद्धनी शंका थाय. तो ज्यां ज्यां उच्चारादि कार्यार्थे नीकलेला ठता साधुउ दीठामां आवे त्यां तेमने देवुं एवो विचार करीने कोईएक विजातीय मनुष्यना हाथे थोडुंक अन्न आपवानुं कह्युं; तदनंतर उच्चारादि कार्यने अर्थे केटलाएक नीकलेला साधुउ दीठामां आव्याथी तेउने कह्युं के, हे मुनिराज, आ अमारी पासे वधेलुं अन्न मोदकादि प्रचूर रहेल ठे ते जो तमारा कांई उपयोगमां आवे तो तेनुं ग्रहण करो, एम कह्याथी साधुउ तेने शुद्ध जाणीने ग्रहण करी लिये तेने प्रछन्न परग्रामविषय अभिहृत कहिये; एम परंपरा ज्ञानेकरी जेनी परिष्ठापना करवी ते जाणवुं. तथा कोई साधु कोईने घेर भिक्षा मागवा पेठो त्यां गौरवने योग्य स्वजनादिकने माटे भोजन करेलुं हतुं ते कारण माटे त्यां तो साधुउए भिक्षा देवानी प्रेरणा करी नही, तेथी कोई श्राविका पोताना गृहथी मोदकादिक लईने उपाश्रयमां आवी साधुने आपे तेने प्रगटस्वग्रामविषयअभिहृत कहिये; आचीर्ण बे प्रकारनुं ठेः—क्षेत्रविषय. तथा गृहविषय तेमां क्षेत्रविषय ते उत्कृष्ठ, मध्यम तथा जघन्यथी त्रण प्रकारनुं ठे. तत्र कोई मोटा ग्रहनेविषे घणा जमनारा जननी पंक्ति बेठी ठतां त्यां एक पर्यंत साधुनुं संघाटक आव्युं अने अशनादिक जे देवा योग्यठे ते तो बीजा घरमां पडयुं ठे त्यां साधु संघाटक छुप्ति भयादिके करी देवायोग्य अशनादिकने समीप जवा शक्तिमान न थाय ते माटे एकशो हाथथी आणेलुं ग्रहण करे तेने उत्कृष्ट क्षेत्रथी अपहृत आचीर्ण जाणवुं; अने एक शो हाथ थकी दूरथी आणेलुं तो प्रतिषेध

ज छे. तथा मध्यम क्षेत्रथी अभ्याहृत ते कर परिवर्त्तथी ऊपर यावत् एक शो हाथथी किंचित् न्यून थाय त्यां सुधी जाणवुं. अने करपरिवर्त्तनेविषे तो जघन्ये करी क्षेत्रा चीर्ण अभ्याहृत जाणवुं. कर परिवर्त्त एटले हाथनुं किंचित् चलन करवुं तेने जाण वुं. जेम के, कोई जोजन देनारी बाई ऊंचे ठेकाणे ऊजी होय अथवा पोतेज पो ताना हाथमां गृहण करेला मोदक तथा मंमकादिक प्रसारित बाहुवडे ऊजी होय; तेवी रीते स्थित छतां साधु संघाटकने जोईने हाथमां रहेला मोदकादिके करी तेने बोलावे त्यारे ते हाथने नीचे पात्रने धारण करे ते समये भुजानुं किं चित् पण चालन न करतां किंचित् मुष्टिने सिथिल करे तेथी मंमकादिक पात्रने विषे पडे ए क्षेत्रविषय आचीर्ण जाणवुं. अने गृहविषय अभ्याहृत आचीर्ण वली आ वी रीते जाणवुंः– एक हारमां त्रण गृह होय, त्यां ज्यारे साधुसंघाटक भिक्षा गृ हण करे त्यारे एक साधु एकज घेरनेविषे धर्मलाभ कह्याथी जे घेरमांथी भिक्षा लेवी होय तेज घेरनेविषे उपयोग करीने भिक्षा गृहण करेछे. अने पाछल रहेलुं बीजुं संघाटक तो धर्म लाभित गृहथी इतर बे गृह थकी आणेली भिक्षा उप योग दईने गृहण करे छे. एवी रीते त्रण घेरोमांथी आणेलुं आचरित अशनादिक जाणवुं; पण चोथा गृहथी आचरित न जाणवुं. ए इग्यारमो अभ्याहृत दोष कह्यो.

१२ उद्भिदनने उद्भिन्न कहेछे. साधुने अर्थे घृतादि दान निमित्ते कुंमली प्र मुख घृतनां वासणनां महोडानी उपर छाण प्रमुख स्थापन करेलुं होय तेने ऊ घाडवुं. ते बे प्रकारनुं छेः– पिहितोद्भिन्न तथा कपाटोद्भिन्न. तत्र जे घरनेविषे अग्नि ना तापवमे सचित्त पृथ्वीकाय प्रमुख जंतुउ तपायमान थईने नाशेलाउ श्लेष्म द्र व्येकरी आछादित थयलां द्वारनी, उपर जरायला छतां प्रतिदिन परिजोग खांम, गु म, घृतादिके करी जरेला घट, कुतुप तथा कुशूलादि साधुने दान निमित्ते उघामीने खांम प्रमुख अपायछे, ते जे आपवानुं खांम प्रमुख तेने पिहितोद्भिन्न कहि ये. ए व्युत्पत्ति जाणवी. अने जे खांम तथा गोल प्रमुखे करी सहित गमडांथी जरेलां कपाटादि होय, तेनुं द्वार दर रोज ऊगाडवुं पडतुं न होय; ते साधु ना दानने निमित्ते ऊघामीने तेमांथी कहाडेला खांम तथा गोल प्रमुख वस्तुउ साधुने आपवी. तेने कपाटोद्भिन्न कहिये, एमां छकायजीवोनी विराधना थाय ते आ प्रमाणेः– कुतुपादिना महोडामांथी साधुउने आपीने बाकीनानुं रक्षण करवाने अर्थे फरीथी कुतुपादिकनुं मुख सचित्त पृथ्वीकायने जलेकरी आर्द्रिभूत करीने ते नी ऊपर लीपे; तेथी पृथ्वीकायनी विराधना थायछे. पृथ्वीकायमध्ये मुजादिक तथा

कीटकादिकनो संजव थायछे, तेथी तेउनी पण विराधना थायछे. तथा कोई कुतु पादिकने उलखवाने अर्थे लाखने तपावीने ते कुतुपादिकना मुखनी ऊपर तेनी मुद्रा करे तेथी तेजस्कायनी विराधना थाय; अने ज्यां अग्नि त्यां वायुकायनी विराधना तो थायज छे. तथा कुतुपादिनी उपर लेपन करवाने अर्थे मृत्तिकादिकने सोधतां ते दाता ने कदाचित् दैवयोगे कोई वींछीनो कांटो वागवाथी पीडा थती दीगामां आवे त्या रे लोको कहे के, जुवो तो खरा आ यतिउने दान आपवानो केवो प्रजाव छे! दा न देतां वारज आवा फलनी प्राप्ति थई एवो उपहास करे, तथा प्रथमथीज कुतु पादिकना मुख साधुने अर्थे ऊगाडेलां छतां पुत्रादिकना मागवाथी तेमने घृतादि क आप्याथी तथा विक्रय व्यापारनेविषे प्रवृत्ति थई जवाथी तथा ते कुतुपादिक नां मुख बंध करतां जूली जवाथी तेमां मूखकादिक जीवो पडीने विनाशने पामे. तेम कपाटोद्भिन्ननेविषे पण एटलाज दोषो थाय छे जेम के, कपाटथकी पूर्वे कोई पण पृथ्वीकाय तथा अपकाय करच, कोचा, बीज पूरक मुक्त थई जाय त्यारे कपाटना ऊघाडवाथी तेओनी विराधना थायछे. जलकाय जीवो करकादिकनेवि षे आलोटता जलरूप प्रसारने पामीने पाडोना चूलामां जई पडे तेम थयाथी अग्निका यनी विराधना थाय. ज्यां अग्निकायनी विराधना थाय त्यां वायुकायनी विराधना अवश्य जाणी लेवी. वली तेमां जूमिका प्रविष्ठ छिद्रोनेविषें प्रवेश करनारा कीटक गृह गोधादिकनो विनाश थयाथी त्रसकायनी विराधना थाय. तेमज दान तथा क्रय विक्रय थकी अधिकरणनी प्रवृत्ति थायछे. ते कारणे बन्ने प्रकारनुं उद्भिन्न ग्रहण करवुं नही. पण ज्यारे कुतुपादिकनुं मुखबंध प्रति दिवसे बंधाय अने छूटे एम होय त्यारे लाखनी करेली मुद्राथकी रहित केवल वस्त्रनी गांठ दीधामां आवे वली ते नी ऊपर सचित्त पृथ्वीकायादिनो लेप पण करेल न होय एवुं ज्यारे साधुने अ र्थे उद्भिन्न दीधामां आवे त्यारे ते साधुए गृहण करवुं. तथा कपाटोद्भिन्न पण जे दररोज ऊघडातुं होय त्यां उद्घाटननेविषे पण कपाटाकिना अंदरना खाणामां राखेलुं अन्न साधुने कल्पे. ए बारमो उद्भिन्न दोष कह्यो.

१३ मालांतरनेविषे छीकादिकनी ऊपर राखेलुं अशनादिक साधुने अर्थे आ णीये तेने कहिये मालापहृत तेना चार जेद छेः— एक ऊर्ध्व मालापहृत, बीजो अधोमालापहृत, त्रीजो उजय मालापहृत तथा चोथो तिर्यग मालापहृत जाण वो. तेमां उर्ध्व मालापहृत. जघन्य उत्कृष्ट तथा मध्यम करी त्रण प्रकारेछे. तेमां ऊपर वलगेलुं छीकुं प्रमुख होय ते साधारण रीते ऊजा थका माणसना हाथमां

आवी शकतुं न होय तेनो समूल नाश कखाथी, पाछली पेनी ऊंची करी, पा दना अधोभागरूप आगलना फणो वमे भूमिन्यस्त दाता पोताना चक्षुए करी अदृष्ठ छतां जे अशनादिक गृहण करे ते पार्ष्णोत्पाटन मात्र स्तोक एटले थोडी क्रियाएकरी गृहीत होवाथी जघन्यथी ऊर्ध्वमालापहृत जाणवुं. अने जे निश्रे णी आदिनी ऊपर चडीने प्रासादना उपरना तलथी दाता गृहण करे ते निशर णी ऊपर चढवा प्रमुख गुरु क्रियाए करी गृहीत होवाथी उत्कृष्ठ मालपहृत् क हेवाय; अने बीजा मध्यवर्त्ति ते मध्यम जाणवुं. तथा साधुने अर्थे भूमि गृहादिक नेविषे प्रवेश करीने त्यां पडेलुं भक्तादिक लावीने आपे ते अधोवर्त्ति भूमिग्रहथ की अपहरण एम करी अधोमालापहृत जाणवुं, तथा माटीना पात्रमां, कलश मां तथा मंजूष काष्ठकादिकनेविषे स्थित किंचित् कष्ट सहित जे दाता आपे ते उभय एटले ऊर्ध्व तथा अधोगत व्यापारादि उष्ट्रिका तथा कुंभादिके करी हरण करेलुं होय तेने उभय मालापहृत कहिये. तथा अति मोटा कुंभ प्रमुख मध्ये पमेलुं देवानुं अशनादि होय तेना गृहणने अर्थे जे दाता पाछलो भाग ऊंचो करे तेणे करी ऊ र्ध्व व्यापारता थाय तथा जेणेकरी अधोमुख करी बाहुनो व्यापार करे छे ते अधोग त व्यापारता कहिये; ज्यारे फाडी भित्यादिकनेविषे खभाना जेटला ऊंचा प्रदेश प्राये गोखलुं प्रमुख लांबु होय, तेमां तिर्यग प्रसारेला हाथो नाखीने तेमांथी देवानुं गृहण थाय छे. ते प्राये करी जोई अथवा न जोईने दाता दिये छे. तेने ति र्यग मालापहृत् कहे छे. तिर्यग् माल ते भीति आदिकनेविषे स्थित गवाक्षादिरूप अपहरण एम करी जाणवुं.

आशंकाः—मालशब्दे करी ऊंचो प्रदेश होय तेज कहेवाय छे. तेम छतां भूमि गृहादिक एटले नीचे भूमिनेविषे स्थित तेने माल शब्दे करी केम कह्युं?

समाधानः— लोकनी रूढीथी ऊंचा प्रदेशनेज माल शब्दे करीज गृहण करेलो छे, पण समय प्रसिद्धिए करी समयनेविषे माल शब्दे भूमिनुं ग्रहण पण थाय छे. ए मालापहृतमां आटला दोष छेः—मांचीनी ऊपर मांचानी ऊपर अथवा ऊखलादि कनी ऊपर चढी पोताना शरीरनो पाछलो भाग ऊंचो करीने ऊपर वलगेला छीकादिक नेविषे स्थित मोदकादिकनुं ग्रहण करतां कोई दान देनारनुं नीचेथी पग लपसी जाय तेथी नीचे पमे त्यारे नीचेनी पृथ्वी ऊपरना पिपीलिकादि तथा पृथ्वीकाया दिक जीवोनो विनाश थाय. वली दाताना हस्तादिकनो पण वखते भंग थई जा य; अने कोई वधारे खराब ठेकाणुं होय तो प्राणनो पण घात थाय. तेथी प्रवचन

नी हीलना थाय; जेम के, आ दाता साधुने अर्थे अशनादि लेवाने ऊपर चढतां नीचे पडीने मरी गयो माटे ए साधुउ कल्याणकारी नथी एवा दोषनो आरोप करे; प ण दातानी ऊपर कोई दोष राखे नही. एवी रीते लोकमां मूर्खताथी अपवाद थाय. इत्यादिक दोषोना संजवथी साधुए मालापहृत ग्रहण करवा योग्य नथी. अने योग्य पगोठी आदिकनी ऊपर चढी सारी रीते पोताना शरीरनो जार तोलन करी तथा कोई प्रकारे पण पडी न जवाय तेवी रीते ऊजा रही दात्री ऊपर च डी अशनादिक आपे ते मालापहृत न कहेवाय माटे साधुए लेवुं. अने केवल साधु पण एषणानी शुद्धिना निमित्ते प्रासादादिकना दादरादिकनी ऊपर चढीने अपवादे करी जूमिए लावीने स्थापेलुं ग्रहण करे. ए तेरमो मालाहृत दोष कह्यो.

१४ चाकर अथवा पुत्रादिकनी इछा न बतां तेउनी पाशेथी फाटीने जे साधुने दान देवाने माटे ग्रहण करवुं तेने आछेद्य कहेछे. ते त्रण प्र कारनो छे:– स्वामिविषय, प्रजुविषय, तथा चोरविषय. तत्र जे ग्रामादिकनो धणी होय तेने स्वामि कहेये; तथा मात्र गृहनो जे नायक होय तेने प्रजु क हिये; अने जे चोरी करनार होय तेने चोर कहेछे. हवे ग्रामादिकनो स्वामी य तीउने देखीने पोताने कल्याणनी इछाथी कजीउ करीने अथवा बलात्कारे करी साधु ने अर्थे गाममां रहेनारा कटुंबीउनी पाशेथी अशनादिक ठीनवी लईने ते यतिओने जे आपे तेने स्वामीविषय आछेद्य कहेछे: तथा जे गाई प्रमुखनी रक्षा करनारां पु त्र, पुत्रिका, वधु तथा जार्यादिक सकाम जनोनी पाशेथी तेमनी इछा न ठतां ग्रहण करीने ते ग्रहनो नायक साधुउने दूध वगैरे आपे तेने प्रजुविषय आछेद्य कहिये. तथा केटलाएक चोरो पण संयतिउनुं सारुं करनारा होयछे. ते मार्गमां चालतां कोईएक समये केटला एक वाटमार्गी जोजन करतां बेठेला दीठामां आ व्यां तेटलामां त्यां जिक्षाने माटे फरतां तेउनी इछा पूरती गोचरी न मलतां के टलाएक यतीउ पण आवता दीठामां आव्या; तेउने निमित्ते तथा पोताने अर्थे पेला जमवा बेठेला ग्रहस्थोनी पाशेथी बलात्कारे मालमता ठीनवी लईने तेमांथी केटलुं एक साधुउने आपे तेने स्तेन विषय आछेद्य कहेछे. ए त्रणे प्रका रनो आछेद्य साधुउने कल्पे नही. केम के, एमां अप्रीति, कलह, आत्मघात, अंतराय तथा प्रद्वेष प्रमुख अनेक प्रकारना दोषोनो संजव छे. तेमां चोर विषय आछेद्यमां कांईक विशेष दर्शावे छे:– जे वाटमार्गीउ संबंधी जक्तादिक बलात्कारे ठीनवी लईने चोरो साधुउने आपे छे. ते सार्थिक लोको के, जेउने चोरोए

लूंटी लीधा छे ते एम कहे के अमेतो अवश्य चोरोना हाथे लूटाववाना हता, ते जो चोरो अमने लुंटीने तमने आपे छे, तो एथी अमने पण मोटो संतोष थाय छे. एवीरीते ते मालवालाने अनुज्ञात छतां आपेलुं अशनादि अवश्य साधु ग्रहण करे. पछी ज्यारे चोरो जता रहे त्यारे ते ग्रहण करेलुं द्रव्य फरीथी तेना मालेकोने समर्पण करे. अने कहे के, चोरोना जयथी अमे आ समये ग्रहण तो कर्युं पण हवे चोरो जता रह्या छे माटे आ तमारुं द्रव्य तमे पाछुं लेओ, एम कह्युं छतांपण जो ते सुज्ञ माणसो होय अने कहे के, ए तमने चोरे आप्युं नथी पण अमेज दीधुं छे माटे ए लेवामां तमने कांई दोष नथी त्यारे ते अवश्य लेवा योग्य छे. ए चउदमो आछेद्य दोष कह्यो.

१५ जे सर्व स्वामीओएकरी साधुने अर्थे अनुज्ञात होय तेने अनिसृष्ट कहे छे. ते त्रण प्रकारनुं छेः—साधारणानिसृष्ट, चोलकानिसृष्ट, तथा जडानिसृष्ट. तेमां घणा जनोने सामान्य होय तेने साधारण कहिये; तथा ग्रामादिकना धणीए पोताना पायदल लस्करने प्रसाद एटले इनाम आप्युं होय ते अथवा कोई कुटुंबना मालके क्षेत्रादिकनेविषे रहेला कामकरनाराने जे कांई दीधु होय ते. एने देशी जाषामां जक्त कहे छे. एने चोलक कहे छे. अने जम ते हस्ति समजवो. ए उएकरी निसृष्ट एटले अनुज्ञात साधुउने कल्पे नही. तत्र साधारण निसृष्ट एटले कोई हाट, गृह, तथा बीजा कोई ठेकाणे रहेली तिलकुट्टितैल, वस्त्र लरुक, दधि तथा अशनादिक वस्तुना जेदेकरी अनेक वस्तु विषय जेम के, घाणी आदि यंत्रने स्थले तिलकुट्टितैलादिक, दुकाननी उपर वस्त्रादिक तथा गृहने विषे अशनादिक घणा लोकोने साधारण अने ते गामना जेटला वारसो होय तेउना अनुमतथी जे कांई साधुने दीधामां आवेछे तेने साधारण अनिसृष्ट कहिये. तथा चोलक बे प्रकारनो छेः— छिन्न अने अछिन्न. तत्र कोई कुटुंबिक क्षेत्रमां रहेला काम करनाराउमांथी कोईने पाशे लईने तेने जोजन आपे ते ज्यारे एक एक हालीने योग्य जुदा जुदा गमछामां नाखे त्यारे ते चौलिक अने ते जोजननो सर्व हालिकोने योग्य एक मोटी थालीमां नाखीने मोकलावे त्यारे तेने छिन्न कहेछे. पछी ते चौलिक जेना निमित्ते जिन्नजिन्न करेलुं देवानुं होय तेने न दईने मूल स्वामि जे कुटुंबीक तेना न देखतां अथवा देखतां साधुने आपे ते छेदनेकरी तेनुं पोतानुं करेलुं होवाथी; तथा कौटुंबिक जे जे हालिकोने योग्य चौलिकने एकठुं जोजन आपे ते साधुने देवाने धणीने जाणतां, अजाणतां, तथा देखतां न देख

तां साधुने आपे ते साधुए लेवुं नही केम के, तेथी द्वेषांतराये करी परस्पर कल हनो संभव छे. तथा जडानिसृष्ट एटले हाथीने देवानुं भोजन राजा तथा हाथी थी छानुं लेवुं नही. केम के, हस्तिनुं जे भोजन ते राजा संबंधी छे तेथी कदाचि त् राजाने खबर पडेतो ते लेनारने पकडे अथवा पकडीने खेचे वा तेने दंडादि कनो संभव थाय. वली ते देनारे साधुने पिंड आप्युं तेथी कोपायमान थईने राजा कदाचित् तेने तेना अधिकार उपरथी कहाडी मूके तेथी ते बिचारानो निर्वाह बंध थई जाय अने लोकोमां एवुं कहेवाय के, पेला साधुने भोजन आ प्युं तेथी बचारा एनी चाकरी गई एवा दोष लागे; तथा राजाने अजाणे दीधाथी अदत्तादान दोष पण लागे; तथा हाथीने जोतां पण साधुए तेना भोजनमांथी ग्रहण करवुं नही. केम के, ते सचेतन होयछे. तेथी तेणे जोई लीधाथी एवुं मन मां आणे के, मारा कवलमांथी आ मूंडाए पिंड ग्रहण कर्योछे. तेथी ते कोपाय मान थईने कोई समये यथायोग्य मार्गमां परिभ्रमण करतां उपाश्रयनेविषे ते सा धुने देखी ते उपाश्रयने तोडी नाखे, अने जो ते साधु लागमां आवी जाय तो तेने मारी पण नाखे. ए पनरमो अनिसृष्ट दोष कह्यो.

१६ अधि एटले अधिकपणे करी जे अवपूरण तेने कहिये अध्यवपूरण. पो ताने अर्थे रांधवाने चूलानी उपर चडावेलुं छतां साधुउ आवेछे एम जाणीने तेउना योग्य भोजन तैयार करवाने अर्थे ते रंधाता भोजनमां बीजुं नाखवुं ते. अही क प्रत्यय स्वार्थे छे. तेना योगे करी अध्यवपूरक कहिये. ते त्रण प्रका रनो छेः– स्वगृहयावदर्थिकमिश्र; स्वगृह साधुमिश्र; अने स्वगृहपाषंडिमिश्र. त त्र स्वगृहयावदर्थिक मिश्रनेविषे स्वगृहसाधुमिश्र अने स्वगृह पाषंडिमिश्र एबन्ने नो अंतर्भाव थाय छे अने स्वगृह श्रमणमिश्रनो स्वगृह पाषंडिमिश्रमां अंतर्भा व छे. तत्र यावदर्थिकना आववानी पहेलांज चूलामां आग पेटवी, थालीमां पाणी नाखवी वगेरे पोताने अर्थे बधी रांधवानी तैयारि करी पाछलथी यथा संभ व त्रणेमांना यावदर्थिकादिकोने अर्थे तंडुलादिक वधारे नाखे तेने अध्यवपू रक कहे छे. जे कारण माटे ते एकठुं रंधाय छे ते कारणमाटे मिश्रपणे थएलुं कहेवाय छे. जे प्रथमथीज यावदर्थिकादि अने पोताने माटे भेलुं रंधाय ते मिश्र जाणवुं अने जे प्रथम पोताने अर्थे रांधवानुं शरु कर्युं होय अने पाछलथी पाषं डी अथवा साधु प्रमुखनुं आगमन थएलुं जाणीने तेओमां अधिकतर जल तथा तंडुलादि जे नखाय तेने अध्यवपूरक कहे छे. हवे ज्यां स्वगृह तथा यावदर्थिक

मिश्र अध्यवपूरक शुद्ध नक्त होय तो तेमांथी जे कणा तथा कांपिट एटले पापड प्रमुखने अर्थे जे पाळलथी नाखेलुं होय तेटलुं थालीमांथी जुडुं करीने अथवा कार्पटिका थकी जुडुं करीने आप्याथी बाकी रहेलुं जे अन्न ते साधुने कल्पे. ए कारण माटे एने विशोधि कोटि एटले शोधेलुं कहे छे. तथा स्वगृह पाषंमि मिश्र तथा स्वगृह साधु मिश्रनेविषे शुद्ध नक्तमांथी परूलुं जे होय तेज पाषंमिआदि थकी थालीमांथी जुडुं करी आपे ते लेवुं नही. केम के, ते बंधु नोजन पूतिदोषेकरी डुष्ट थाय छे. एसोलमो अध्यवपूरक दोष कह्यो ॥५७१॥५७२॥ एवी रीते शोल उज्ञम दोषो कह्या.

अवतरणः—हवे सोल उत्पादन दोष साधुथी थाय ते कहेछेः— मूलः—धाई दूइ निमित्तं, आजीव वणीमगे तिगिछा य; कोहे माणे माया, लोने य हवंति दस एए. ५७४ पुव्विं पछा संथव, विज्ञा मंते य चुन्न जोगेय; उप्पायणा य दोसा, सोलसए मूल कम्मेय॥५७५॥अर्थः— १ प्रथम धात्री दोष आ प्रमाणेः—तत्र जेने बालको धाय अथवा पिये तेने धात्री कहिये, अथवा बालकोने जे दूध पिवरावववाने अर्थे धारण करे तेने धात्री कहेछे. वली ए बालपालिका पण कहेवायछे. ते पांच प्रकारनी छेः— क्षीरधात्री, मज्जनधात्री, मंमनधात्री, क्रीमनधात्री, तथा उत्संगधात्री. अही धात्रीपणानुं जे करण एटले साधन अने कारण एटले हेतु होय ते धात्री शब्दे कहेवायलुं दीठामां आवे छे. तथा विवक्षणाए करी धात्रीनो पिंम धात्रीपणाना करण अने कारण वमे जे उत्पन्न थाय तेने धात्री पिंम कहिये. एवी रीते दूति आदिकनेविषे पण नावना करवी. कोई साधु निक्षाने अर्थे आगलना ओलखीता घरमां पेठो. त्यां रोता बालकने जोईने तेनी माताने कहेवा लागे के, आ बालके हजी सुधी स्तनपान करवानुं मूक्युं नथी तेथी क्षीरादिकने अर्थे रोदन करे छे माटे मने शीघ्र निक्षा आपो. पछी ए बालकने स्तनपान करावजो. अथवा पहेलां एने स्तनपान करावी लीओ त्यार पछी मने निक्षा देजो. अथवा मने निक्षा मली हमणा एम जाणीने आ बालकने स्तनपान करावो. अने बीजा घरमांथी निक्षा मागी लईने पछी फरीथी हुं अही आवीश, अथवा तुं निराकुल थईने बेशी रहे, हुंज क्यांथीक क्षीर लावीने एने आपीश. एवी रीते पोते धात्रीपणुं करे. तथा बालकने स्तनपान कराव्युं होय तोज मतिमान् रोग रहित तथा दीर्घायु थाय छे, अने जो स्तनपान सारी रीते न करावीए तो तेथी उलटुं थाय. तथा लोकनेविषे पुत्रनुं मुख जोवुं घणुं डुर्लन छे. ते कारण माटे बीजा बधा कर्मोने मूकीने आ बालकने स्तनपान करावो. एम कह्याथी घणा दोषो थाय छे. जेम के,

बालकनी माताने ते बोलवुं सारुं लागे तेथी बीजा बधा ठेकाणेथी मन खेंचीने आधाकर्मादिक करे. वली ते बालकने लागता वलगता तथा बीजा जनो ते बालकनी मातानी साथे जाषण करवानो साधुनो संबंध होवाथी खोटी संजावना करे; केम के, तेमने ते साधुनी साथे सहवासनुं कारण दीठमां आवे माटे. अथवा ते बालकनी माता दैवयोगे मरी जाय तो ते साधुनी साथे बधा द्वेष करे. अथवा वेदनीय कर्मना विपाकना वशथी ते बालकने जो ज्वरादिकनी मांदाई थाय, त्यारे ते बालकनी माता एम कहे के तें मारा पुत्रने पीडा करी छे इत्यादिक कहीने साधुनी साथे कलह कखाथी प्रवचननी मलीनता थाय. अथवा कोई गृहस्थना गृहनेविषे बालकने धवरावनारी धात्रीने पोतानी बुद्धिना प्रपंचेकरी त्यांथी कहडावीने बीजी धात्रीने रखाव्याथी धात्रीत्व लक्षण दोषने संपादन करे. जेम के, कोई एक साधु जिक्षाचर्याने अर्थे कोईना गृहनेविषे प्रवेश करतां ते गृहनी कोई एक स्त्रीने शोक सहित जोईने तेने पूछे के, केम बाई तुं आजे अधीरी देखाय छे? त्यारे ते कहे के, जे दुःखनेविषे सहायता करनारो होय तेनेज दुःख कहेवाय छे. ते सांजली तेने यति कहे के दुःखमां सहायता करनारो कोण कहेवाय छे? त्यारे ते बाई कहे के, जेनी पासे दुःख कहेतां ते दुःखनो निवारण करे ते दुःखमां सहाय करनार कहेवाय. फरी मुनि कहे के, मारा विना बीजो तेवो तमने कोण जासे छे? त्यारे ते बाई बोले के, सांजलोः– अमुकना घरमां हुं धात्री हती, त्यां बीजी धात्री आवी अने मने कहाडी मूकी तेथी ते मारुं धात्रीपणुं गयुं तेथी हुं खिन्न थई छुं; त्यारे साधु अभिमानमां आवीने कहे के, ज्यां सुधी हुं तने पाछी त्यां रखावुं नही त्यांसुधी माहरे तारा घेरथी जिक्षा लेवी नही. एम कहीने पछी तेनी प्रतिपक्षी धात्रीने ते घेरमांथी कहडाववाने अर्थे ते धात्रीने दीठेली नही छतां तथा तेनुं स्वरूपपण न जाणताछतां तेनी आसपास जईने पूछा करे. के, ते तरुणी छे? किंवा मध्यमा छे? अथवा वृद्धा छे? वली श्रेष्ठ स्तनोवाली छे? किंवा स्थूल स्तनोवाली छे? अथवा चपटा स्तनोवाली छे? फरी मांसवाली छे? अथवा कृश छे? तेमज काली छे? अथवा गोरी छे? इत्यादिक पूछीने ते गृहस्थना घरमां जई ते बालकने जोईने गृहना स्वामी प्रमुखनी समक्ष धात्रीना दोष कहेवा लागे के, वृद्ध धात्री तो बलहीन स्तनोवाली होयछे तेनां स्तन धाव्याथी बालक पण बल रहित थाय. कृश शरीरवाली धात्रीनां स्तन न्हानां होवाथी तेने धाव्याथी बालक पण परिपूर्ण स्तनना अजावथी अवश्य शीदाईने कृशज थाय. अने स्थूल स्तनवालीनुं दूध पीधाथी बालकनां अंग कोमल होवाने लीधे धात्रीना पयो

घरनी नीचे मुख अने नाक चंपायाथी तेनुं नाक चपटुं थई जाय. तेमज चपटा स्तन धाव्याथी बालक सर्वदा पोतानुं मुख लांबुं कर्याथी सूईना जेवुं लांबुं मुख थई जाय उक्तंचः–"स्थामास्थविरांधात्रीं, सूच्यास्यः कूर्परस्तनीं; चिपिटः स्थूलवक्षोजा, ध यन् तन्वी कृशोभवेत्.॥१॥जाड्यंभवति स्थूलाया, स्तनुक्यास्त्वबलं करं; तस्मान्मध्य बस्थायाः; स्तन्यं पुष्टिकरं स्मृतं."॥२॥तथा ए जे नवी राखेली धात्री छे ते वर्णेकरी कृष्ण, तथा शरीरे करी कृशादिक होवाथी सारी नथी; इत्यादिक तेनी वर्णादिके करी निंदा करे. यथाः–"कृष्णा भ्रंसयते वर्णं, गौरी तु बलवर्जिता; ततःश्यामा भवेत् धात्री, बलवर्णैः प्रशंसितेत्यादि." एवुं ते साधुनुं बोलवुं ते गृहनो स्वामी सांभलीने स्थविरत्वादि स्वरूपे वर्त्तमान धात्रीनी परिभावना करीने तेने कहाडी मूके, अने ते साधुना संमतथी बीजी धात्रीने राखे. पछी ते अति आनंदित थई थकी ते साधुने अति मनोज्ञ तथा विपुल भिक्षा आपे. एवी रीते साधु आहार ले ते धात्रीपिंड जाणवो. एनेविषे घणा दोष छे. ते आ प्रमाणेः–जेने कहाडी मूके ते अति प्रद्वेषताने पामे तेथी ते साधुनी उपर एवो आल चढाडावे के पेली नवी धात्रीनी साथे साधु स्वे छाए वर्त्ते छे एम कहे; अने अति द्वेषना आवेशथी कदाचित् ते साधुने विष दईने मारी पण नाखे. वली जे जूनी कहाडीने नवी राखेली धात्री ते पण कदाचित् मनमां एवुं चिंतवन करे के, जेम आ साधुए मारी आगलनी धात्रीने कढावीने मने रखावी तेम कदाचित् मने पण कढावीने बीजीने रखावे तेमां नवाई शी! त्यारे एम करवुं जोईये के, जेम ए साधुनोज अभाव थई जाय. एवो विचार करीने विषादिक प्रयोगवडे साधुने मारी नाखे. एवी रीते मज्जन धात्री पणुं, मंडन धात्री पणुं, क्रीडन धात्री पणुं, तथा उत्संग धात्रीपणुं ए प्रत्येक बीजानी पासेथी कराव्याथी अथवा पोते कर्याथी घणा दोषोनी परिभावना भणवा योग्य छे. ए प्रथम धात्री दोष जाणवो.

२ जे परस्पर संदेशाने कहेनारी होय तेने दूती कहे छे. एवुं परस्पर संदिष्टा र्थ कथनरूप दूतीत्व करवाथी जे पिंडनी उत्पत्ति थाय छे. ते यतिपणे दूतीपिंड कहेवाय छे. ते दूती बे प्रकारनी होय छेः– स्वग्रामविषे तथा परग्रामविषे. तत्र जे ग्राममां साधुओ रहेला होय ते ग्राममांज ज्यारे संदेशो कहे त्यारे स्वग्रामविषे दूती कहेवाय; अने ज्यारे परग्रामने विषे जईने संदेशो कहे त्यारे परग्रामविषे दूती कहेवाय छे. ते एक एक प्रगट अने प्रछिन्न. एवा बबे प्रकारे छे तेमां वली प्रछिन्न बे प्रकारे छेः–एक लोकोत्तर विषया अने बीजी संघाटिक साधुथीपण गुप्त विषया जाणवी. बीजी वली लोक तथा लोकोत्तर ए उभय विषया छेः–एटले पासे र

हेनारा संघाटिक साधुउ पण जाणी न शके ए नाव. तत्र कोई एक साधु निक्षाने अर्थे नीकळ्याथी पोताना विशेष लाजने अर्थे तेज ग्रामसंबंधी तथा बीजा ग्राम संबंधी कोई एक प्रांतमां अथवा तेनी माहिली कोरे मातादिकनो कहेलो संदेशो पुत्रिकादिकनी पाशे कहे; जेम के, तारी माता, तारो पिता, अथवा तारा भ्रातादिके कह्युं ठे के, तुं आजे अही आवजे एम मारी पाशे कहेवराव्युं ठे. एवी रीते स्वपक्ष तथा परपक्षना शांजलता निःशंकपणे कहेवाथी प्रगट स्वग्राम तथा परग्राम विषय द्वितीय जाणीये. तथा कोई एक यति कोई ठोकरीनी माता प्रत्ये स्वग्रामने विषे अथवा परग्रामनेविषे संदेशो कहेवाने माटे प्रेरित थयो थको ते संदेशाने लईने ते मातादिकनी पासे जई कहे के, आ दूतीपणुं साधुने निश्चयकरी निंदा करवा योग्य ठे. केम के, सावद्य ठे माटे. बीजा संघाटकना साधुओ मारो दूतीपणानो दोष न जाणे तो सारुं! ए अर्थ ग्रंथांतरे आम कहे ठेः– तारी पुत्री जे अति मुग्ध श्राविका ठे, तेणे सावद्य योग्य रहित एवा जे अमे, ते प्रत्ये कह्युं ठे के, मारा आववानुं आ प्रयोजन ठे. ते मारी मातानी पाशे तमारे जई कहेवुं. एम कह्याथी तेनी माता पण अति चतुराईथी तेनो अनिप्राय सारी रीते जाणी लई बीजा संघाटकना साधुने खबर न पडे माटे ते साधुने कहे के, तमारी पाशे फरीथी एवो संदेशो कोई दहाडे न आपे माटे हुं तेने वारीश. एवी रीते संघाटक साधुथी ठानुं राखे पण लोकनुं नय न राखे एम लोकोत्तर प्रछन्न स्वग्राम परग्रामविषय दूतीत्व जाणवुं. अने लोक तथा लोकोत्तर उनय प्रछन्न आवी रीते ठेः–कोई श्राविका साधुने कहे के, मारी माताने कहेजो के, आगल जे तारी प्रतीतनुं कार्य जेम तुं जाणे ठे तेमज सिद्ध थयुं ठे एमां साधुना संघाटकने तथा बीजा लोकने ए संदेशो जाण्यामां न आववाने लीधे एने उनयप्रछन्नत्व कहिये. एनेविषे दोषो सर्वत्र गृहस्थ व्यापारणादिके करी जीवोनुं उपमर्दन थाय इत्यादिक जाणवा. ए बीजो दूती दोष जाणवो.

३ अतीतादिक अर्थना परिज्ञाननो जे हेतु अथवा छानाछानादि चेष्टा अने उपचारथी तेना ज्ञाननो हेतुं पण निमित्त कहेवाय ठे. एवा निमित्तनुं साधन जे पिंम तेने निमित्त पिंम कहिये एनो अर्थ आम ठेः– कोई एक व्रती पिंमादिक लाजने निमित्ते गृहीनी पाशे निमित्तनुं कथन करे. जेम के, अतीत दिवशोनेविषे तने आवी रीते सुख तथा दुःख थयेलुं हतुं. तथा नावि कालनेविषे अमुक दिने तने राजादिकनी घणी महेरबानी थशे, अने हमणा आज काल तने आवी आवी रीते थशे; त्यारे ते गृहस्थ पण लाज, अलाज, सुख, दुःख जीवित तथा मर

णादि विषय निमित्त पूछेलुं अथवा न पूछेलुंछतां पेला धृष्ट साधुए जेम कह्युं तेम सांजली लईने मनने आवर्जी ते मुनिने मोदकादिकविशिष्ट विपुल निक्षा आपे तेने निमित्त पिंड कहिये. ते लेवुं यतीने योग्य नथी पोताना तथा परना विषये षट्काय वधादिक अनेक दोषोनो संजव छे ए त्रीजो निमित्त दोष जाणवो

४ जे सर्व प्रकारे जीवन करनार होय तेने कहिये आजीव अथवा आजीविका ते पांच प्रकारे छेः— जातिविषय, कुलविषय, गणविषय, कर्मविषय तथा शिल्पविषय ए प्रत्येक वली बबे प्रकारे छेः—सूचनाथी तथा असूचनाथी तत्र सूचनाथी ते वचनजंग विशेषेकरी कथन; अने असूचनाथी ते स्पष्ट वचने करी कथन एम जाणवुं. तत्र साधु पोतानी जाति प्रगट करवाथी आजीविका करे तेने जाति उपजीवन कहेछे. जेम के, कोई निक्षाने अर्थे विचरतां ब्राह्मणना गृहनेविषे जाय, त्यां ब्राह्मणना पुत्रो सम्यक् होमादि क्रिया करी रह्या छतां ते जोईने तेना पितानी पाशे स्वजाति प्रगट करवाने अर्थे बोले; यथा समिधि, मंत्र, आहुति, स्थान, याग, काल तथा घोषादि आश्रित सम्यक् अथवा असम्यक् क्रिया प्रमुख होय ते. तत्र पीपलादिकनी कांईक नीली शाखाउ प्रमुखना कटकाने समिधि कहिये; प्रणवादिक वर्णपद्धतिवाला मंत्र कहेवाय छे; अग्निनेविषे घृत नाखवुं तेने आहुति कहेछे. उत्कट आदिक स्थान होय छे; अश्वमेधादिक यज्ञ बोलायछे; प्रजातादिक काल जाणवो; अने उदात्त तथा अनुदात्तादिक घोष कहेवाय छे. ज्यां जे प्रमाणे योजना करवी जोये त्यां तेवी रीते करवी तेने सम्यक् क्रिया कहिये तेप्रमाणे आ तमारो पुत्र सम्यक् क्रिया करवाथी कोई श्रोत्रीयना पुत्रनी पठे जणायछे. यदिवा वेदादि शास्त्र पारग एवा कोई उपाध्यायनी पाशेथी ए सम्यक् नणेल छे. एवी रीते कह्याथी ते ब्राह्मण कहे के, हे साधु तुं अवश्य ब्राह्मण छे. जे माटे आ होमादिक सर्व जाणे छे. ते वखते साधु कांई न बोलतां चुप थई रहे. ए सूचनाएकरी स्वजातिनुं प्रगटन थयुं. अने असूचनायेकरी स्वजातिनुं जीवन तो कोईए पूछयाथी अथवा न पूछयाथी आहारादिकने अर्थे पोतानी जातीने प्रगट करीने आजीविका करे जेम के, हुं ब्राह्मण छुं इत्यादिक कहे. एनेविषे अनेक दोषो छेः—ते आप्रमाणे के, जो ते ब्राह्मण सारो होय तो पोतानी जातिना पक्षपातथी घणो आहारादिक तेने माटे पकावीने तेने आपे; त्यारे आधाकर्मी दोष लागे; अने जो नरशुं माणश होय तो आ पापात्मा ब्राह्मणपणाने मूकीने भ्रष्ट थयो छे एवुं चिंतवन करी पोताना गृहमांथी बाहार कहाडी मूके एवी रीते क्षत्रियादि जातिनेविषे पण जावना करवी. ए चोथो आजीविका दोष जाणवो.

५ वनु धातु याचना करवाने अर्थे छे. जेम के, वनुते एटले याचे छे. प्राये क
री दायकने अभिमत जे श्रमणादिक तेउनेविषे पोतानुं नक्तपणुं बतावीने जे पिं
मनी याचना करवी तेने वनीपक कहेछे. कोईएक निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, प
रिव्राजक, आजीविक, द्विज, प्राघूर्ण तथा श्वान, काक, अने शुक इत्यादिकनो
नक्त जे कोई गृही, तेना गृहनेविषे निक्षामाटे नमतो साधु पेगे, तेनी आगल अश
नादिकना लानना अर्थे निर्ग्रंथना गुण वर्णने करी पोते तेनो नक्त छे एम दर्शावे ते
आ प्रमाणेः—ते साधु कदाचित् निर्ग्रंथना उपाशकना घेरनेविषे प्रवेश करे, त्यारे निर्ग्रं
थोने आश्रीने बोले. जेम के, हे श्रावकतिलक, तारा आवा गुरुउ छेः— सातिशय
ज्ञाने करी नूषित, बहुश्रुत, शुद्ध क्रियानुष्ठान पालन परायण, जेउए चतुर धा
र्मिक जनोनां मन विशद सामाचारीना समाचरणे करी चमत्कार सहित करेलां छे;
जेउ शिवनगर मार्गना सार्थवाह छे इत्यादि. तथा जो शाक्यना उपाशकना गृहमां
प्रवेश करे, अने त्यां शाक्यो जमता बेठा होय त्यारे तेना उपाशकनी आगल ते
शाक्योनी प्रशंसा करे, ते आमः— अहो ! महानुनाव शाक्य शिष्यो जे छे तेउ
कहाडेला चित्रनी पठे निश्चल थया थका प्रशांत चित्तवृत्तिएकरी नोजन करेछे.
महात्माउने एवी रीतेज नोजन करवुं उचित् छे. तेमज दयालु तथा दानशील
इत्यादि कहे इत्यादि. एवी रीते तापस परिव्राजक, आजीवक तथा द्विजोने आश्रयेक
रीने तेना गुण तथा दान वगैरेनी प्रशंसा करवाथी वनीपकपणुं जाणवुं. तथा
अतिथिउना नक्तोनी आगल आम कहेः— आहो प्रायेकरीने लोको पोताना परि
चित, आश्रित अथवा उपकारीने दिये छे, पण रस्तामां चालतां थाकीने आवेला
अतिथिने जे पूजे तेज दान जगतमां प्रधान कह्युं छे. तेमज श्वानोना नक्त पुरुष
नी आगल कहे के, आ कांई कूतरा जाणवा नही, श्वाननी पठे देखाय छे खरा,
पण कैलाश पर्वतथी आवीने यक्षज श्वानरूपे करी पृथ्वीनेविषे विचरे छे; माटे एउनी
पूजा मोटा हितने अर्थे थाय छे. एवी रीते काकादिकना नक्तोनेविषे पण नावना
करी लेवी. ए प्रमाणे वनीपकपणुं करवाथी उत्पादन करेलुं जे पिंम तेने वनीपक
पिंम कहिये. एनेविषे घणा दोषो छे;— जे कारण माटे धार्मिक अथवा अधार्मिक
कोई पण पात्रने दीधेलुं दान निष्फल थतुं नथी. एम कहाथी अपात्रदानने पा
त्रदाननी बरोबरी करी प्रशंसा करवाथी सम्यक्त्वातिचार थाय. केमके, कुपात्र
जे शाक्यादिक तेउनी साक्षात्प्रशंसा थाय माटे. उक्तंचः— " दाणं न होइ अफ
लं, पत्तमपत्तेसु सन्निजुज्जंतं; इय नणिएविय दोसा, पसंसउ किंपुण अपत्ते "

एवी रीते शाक्यादिकनी प्रशंसा करवाथी लोकनेविषे मिथ्यात्वने स्थिर कर्युं एम थशे. ते आ प्रमाणेः—लोक कहेके साधुउ पण एउनी प्रशंसा करे छे, ते कारणथी एउनो ध र्मज सत्य छे इति. तथा जो ते शाक्यादिकोनो जक्त सारो होय तो ते साधुए करे ली प्रशंसाने जाणीने तेना योग्य आधाकर्मादिक समाचरे. वली तेनेविषे लुब्धप णे कदाचित् शाक्यादिक व्रतने धारी लिये; तथा लोकोनेविषे कहेवाय के एउए जन्मांतरनेविषे दान दीधुं नथी माटे आहारने अर्थे कूतरानीपठे लापटुआ करवाक रेछे एवो अवर्णवाद थाय. अने जो गृहीने सारो न लागे तो तेने घेरमांथी कहा डी मूके. तथा सर्व सावद्य निरतोनी प्रशंसा करवाथी मृषावाद तथा प्राणातिपा तादिक ने अनुमोदन करनारो थाय. ए पांचमो वनीपक दोष जाणवो.

६ जे चिकित्सवुं तेने कहिये चिकित्सा; ते रोग प्रतिकार एटले ते रोगनो प्रतिकार अथवा उपकार जाणवो. ते चिकित्सा बे प्रकारनी छेः— एक सूक्ष्म ने बीजी बाद र तत्र सूक्ष्म औषधविधि वैद्यना ज्ञापने करी जाणवी. अने बादर पोते चिकित्सा करवाथी समजवी. तत्र कोई ज्वरादिक रोगेकरी आक्रांत थएला गृहस्थना गृहने विषे साधु जिक्षाने अर्थे प्रवेश करे; तेने जोईने पेलो गृहस्थ पूछे हे जगवन्, आ मारी व्याधिनो प्रतिकार कांई जाणो छो? त्यारे ते साधु कहे के, हे श्रावक, जेवो तने रोग थयो छे. तेवो मने पण एक वखत थयो हतो ते अमुक औषधे करी मने उपशम थयो एवी रीते अज्ञानी रोगी गृहस्थने औषधना करवानो अ जिप्राय उत्पादन करीने औषधनी सूचना करे, अथवा रोगीए चिकित्सा पूछवा थी कहे के, शुं हुं वैद्य छुं के जेथी रोगनो प्रतिकार जाणुं! एवुं कहावाथी रोगी न जाणीनो होवाथी एविषे वैद्य पूछे तेने सूचना करे, तेने सूक्ष्म चिकित्सा कहि ये अने ज्यारे पोते वैद्य बनीने साक्षात वमन विरेचन, तथा क्वाथादिक करे अथवा बीजाना हाथे करावे तेने बादर चिकित्सा कहिये. एवी रीते उपकारी थ एलो गृहस्थ मने जिक्षा घणी देशे एवा हेतुथी यति बन्ने प्रकारनी चिकित्सा क रे अथवा करावे. ते तुच्छ पिंमने अर्थे एम यतिने करवुं उचित नथी. केम के, ए थी दोषोनो संजव थाय छे. जेम के, चिकित्सा करवाना समये कंदमूल फला दि जीवना वधेकरी क्वाथ कथनादि पाप व्यापार करवाथी असंयम थाय. तथा रोगरहित थएलो गृहस्थ लोढाना तापेला गोलानी पठे प्रगुणी थयाथी व्याघ्रनी पठे अनेक डुर्बलोना जीवनी घात करे. तथा जो दैवयोगे साधुए करेला चिकि त्सावाला रोगीनी व्याधि अधिक थाय तो तेना पुत्रादिक कोपायमान थईने तेने

राजकुलादिकनेविषे खेंचे त्यारे लोक कहे के आहारादिकना लालचु साधु आम आम वैद्यकादिककरेछे, एम प्रवचननुं मलिनपणुं थाय. ए छठो चिकित्सा दोष जाणवो.

७ क्रोध एटले कोप; तेनो हेतुक जे पिंम तेने क्रोधपिंम कहिये. ते आवी रीते कोईएक साधुसंबंधी उच्चाटन मारणादिक विद्या प्रनाव; शाप दानादिक तप प्रनाव; तथा सहस्र योद्धादिकनुं बल; राजकुलनेविषे वल्लनपणुं; जाणीने अथवा शापदाने करीने कोईने मारणादि अनर्थरूप क्रोधना फलने साक्षात् देखीने नय पामी गृहस्थ जे कांई तेने आपे तेने कहिये क्रोध पिंम. अथवा कोईए बीजा ब्राह्मणादिकोने आप्युं अने साधुए याचना करी छतां पण तेने न मल्याथी ते कोप करे, ते जोई साधुनो पोतानी ऊपर कोप थाय, ते सारुं न कहेवाय. एम जाणीने जे आपे तेने क्रोध पिंम कहिये. अही सर्व पिंमनुं, उत्पादन करवाने अर्थें कोपज मुख्य कारण दीगमां आवे छे, अने विद्या तथा तप प्रमुख तो तेना सहकारी कारणो छे आ लक्षण विद्यापिंमादिके करी सहित छतां तेने एकठुं समजवुं नही केमके, तेउनां लक्षणो जुदा होयछे, ए क्रोध पिंम दोष सातमो जाणवो.

८ मान एटले गर्व तेनो हेतु जे पिंम तेने केहिये मान पिंम. एनो अर्थ आ छेः– कोई एक यतिने केटलाएक साधुउ कहे के, तुं अमने लब्धिमान जाणामां आवेछे माटे आ अमुक अमुक अमने खावाने आप. इत्यादिक वचनेकरी तेने उत्तेजन आपीने वली कहे के, ताराथी शुं थवानुं छे! कांई पण सिद्धि थवानी नथी! एवुं अपमान थयाथी ते गर्वकरी आंधलो थईजाय; अथवा पोतानी लब्धि प्रशंसादिक अपार विख्यातीने पामेली शांनली जे जे ठेकाणे हुं जाउं ते ते ठेकाणे सर्व मने प्राप्त थाय छे; तेमज जन प्रशंसा पण करे छे. एवी रीते जेना मनमां अनिमाननी वृद्धि थई होय, एवो साधु कोईएक गृहीनी पाशे जईने ते गृहीने तेवां तेवां वचने करी दाननेविषे अनिमान दीपन करे के, शेष तेना कलत्रा दिकनी दान देवानी इछा न छतां पण अशनादिक आपे तेने आठमो मांनपिंम कहे छे.

९ माया ते परवंचनात्मिक बुद्धि जाणवी. तेणेकरी कोई साधु मंत्र योगादि उपायमां कुशल थईने पोताना रूपनुं परावर्त्तनादिक करीने जे मोदकादिने पेदा करे तेने मायापिंम कहिये. ए माया पिंम रूप नवमो दोष थयो.

१० लोनेकरी गृहस्थनी पाशेथी जे ग्रहण करवुं तेने लोन पिंम कहिये. अही आवी नावना करवीः– कोईएक साधु, आजे हुं अमुक सिंह केसर मोदकादिक ग्रहण करीश. एवी बुद्धिए करी बीजुं वाल तथा चणादिक मलतुं छतां पण ते

गृहण न करे, किंतु तेनीज इछा करे; तेने लोजपिंम कहिये. अथवा पूर्वे तेवी बुद्धिना अजावे पण यथा जावे मलेलुं घणुं लापशी आदिक जोजन सारुं ले एम करीने जे गृहण करे तेने लोज पिंम कहिये. यदिवा दूधादिक मल्युंठतां हवे जो क्यांक खांम तथा शाकर प्रमुख मले तो सारुं थाय एवो अध्यवसाय करीने फरतां जे खांमप्रमुख मली जाय तेने लोज पिंम कहेले. ए दशमो लोज दोष थयो.

११ संस्तव बे प्रकारनो ले:— वचन संस्तव तथा संबंधिसंस्तव तत्र वचन एटले श्लाघा तडूपपणे जे संस्तव तेने वचन संस्तव कहिये. अने संबंधी ते माविात्रादिक तथा ससरादिक तडूपपणे जे संस्तव तेने संबंधि संस्तवकहेले. ते एकेक विविध ले, पूर्वसंस्तव तथा पश्चातुसंस्तव, तत्र देवानुं प्राप्त न थयुं ठतां पूर्वेज दातारना गुणोनुं जे वर्णन करवुं ते पूर्व संस्तव कहेले; अने देवानुं प्राप्त थया पली जे दातारना गुणोनुं वर्णन करवुं तेने पश्चात् संस्तव कहेले. अही आवी जावना करवी:—कोईएक साधु जिक्षाने माटे अटन करतां कोईएक गृहनेविषे किंचित् ईश्वर दातारने जोईने दान लीधाथी पूर्वेज सत्य अथवा औदार्यादिक गुणोएकरी ते ग्रहस्थनो जे संस्तव करे जेम के, अहो दानपति, अमे जे प्रथम वात शांजली हती ते अमे प्रत्यक्ष आजे जोइये छैये. तथा अही तही विचरनारा जे अमे तेने एवा औदार्यादि गुणो बीजा कोईनेविषे पण दीगमां अथवा शांजल्यामां आव्या नथी. तथा तमे धन्य लो के, जेनां आवा गुणो सर्वत्र अस्खलित सर्व दिग्वलयमां व्यापी रह्या ठतां प्रसारने पामी रह्या ले. एवी रीते पूर्व संस्तव जाणवो. तथा जे गृहस्थे दान दीधा पली तेनी स्तुति करे. जेम के, तमारा दर्शने करी आजे अमारां लोचन तथा मन शीतल थयां ले; एमां कांई अजुतता नथी; केम के, दातार अथवा गुणवान दीगथी कोण आनंदवान न थाय! एने पश्चात् संस्तव कहे ले. ए बन्ने रूपवाला संस्तवोनेविषे माया, मृषावाद, असंयतानुमोदनादिक दोष उत्पन्न थायले. तथा मातापितादिरूप पण जे संस्तव एटले परिचय तेने पूर्वसंबंधी संस्तव कहिये. केम के, मातादिकनो पोताथी पूर्वकालनेविषे जाव होय ले माटे. अने जे सासू ससरादिरूपपणे संस्तव तेने पश्चात् संबंधि संस्तव कहेले. केम के, ससरादिकनो पोतानी पाछल जाव होय ले. तत्र कोई साधु जिक्षाने अर्थे कोई एक गृहनेविषे प्रवेश करे, अने आहारने माटे लंपट पणे पोतानुं वय तथा परनुं वय जाणीने तेनीसाथे तदनुरूप संबंधनी घटना करे, जेम के, जो ते स्त्री वयथी वृद्ध होय, अने पोते मध्यम वयवालो होय त्यारे ते महिलाने पोतानी मातानी

पठे जोईने मातृस्थानेकरी आंखमांथी थोडांएक आंशु पाडे. ते जोईने ते पूछवा ला गे के, महाराज, अधीरा केम देखाओ छो? त्यारे ते साधु कहे के, मारी माता आपना जेवीज हती. अने जो ते मध्यम वय वाली होय तो आवी मारी बेन हती; तेमज वयेकरी जो बाल होय तो आवी मारी छोकरी हती इत्यादिक नाषण करे. ए प्रमाणे पश्चात् संस्तवनेविषे नावना करवी. एनेविषे पण धणा दोषो छेः–जेम के, जो ते गृहस्थ सारो होय तो साधु प्रतिबंध सहित थाय, प्रतिबंध थयाथी आधा कर्मादिक करीने तेने आहार आपे. अने जो ते गृहस्थ खराब होय तो आ अमने पोतानां कपटि प्राये जननिआदिक कल्पना करी ठगवानी युक्ति करे छे. एवुं चिंतवन करीने पोताना गृहमांथी बहार कहाडी मूकवा प्रमुख अपमान करे; तथा अधीरो थईने आंखोमांथी आंशु कहाडयाथी आ मायावी छे, माटे एवी रीते अमने दया आणवा सारुं चालाओ करे छे. एम तेनी निंदा थाय. तथा मारी आवी माता ह ती एम कह्याथी ते बाईनो पुत्र पूर्वेज अचानक मरण पामेलो होय तेनी स्मृति थई ते साधुनी ऊपर एवो नाव उत्पन्न थाय के, मारा मुवेला पुत्रना स्थाने आ नेज हुं पुत्र मानी लईश, एवी बुद्धिएकरी तेनी शुश्रूषा तथा दान करे. अने तमा रा जेवी मारी सासू हती एम कह्याथी ते जो खराब होय तो पोतानी विधवा अ थवा कुरंमा छोकरी दैवयोगे वेठेली छतां तेने आपे इत्यादिक दोषो छे, माटे सं स्तव पिंम यतिए कल्पवो नही. ए अग्यारमो संस्तव दोष जाणवो.

१२–१३ हवे विद्या ने मंत्र ए बे दोषो साथे कहेछेः– तत्र विद्या ते प्रज्ञप्ति आदि स्त्री रूप देवता अधिष्ठित तथा जप ने होमेकरी साध्य अथवा अक्षरपद्ध ति पुरुषरूप देवता धिष्ठित पाठ मात्र सिद्धि जाणवी; अने अक्षरविशेष पद्ध ति ते मंत्र जाणिये. एउना व्यापारेकरी जे पिंम नुं उपार्जन करवुं तेने विद्यापिं म अने मंत्रपिंम कहिये. एना दोष आ प्रमाणे छेः– जे विद्याएकरि अनिमंत्रित थयो थको दान दिये तेने कोई बीजो विद्यावालो जुवे तेने महाद्वेष उत्पन्न थाय अथ वा कोई बीजो पोतानो पक्षपाती तेवी विद्यावालो होय ते द्वेषमां आवीने प्रतिविद्या येकरी स्तंनन, उच्चाटन, तथा मारणादि करे. तथा विद्यादिकेकरी बीजानो द्रोह करवारूपे पोतानुं जीवन करनारा आ मूर्खो छे एवी लोकोमां निंदा थाय तथा एउ जादूकरा छे एम जाणीने राजकुलनेविषे गृहण, आकर्षण, वेष परित्याजन कदर्थन तथा मारणादिक करे. एम विद्या तथा मंत्र ए बे दोषो साथे जाणी लेवा.

१४–१५ हवे चूर्ण अने योग ए बे दोषो साथे कहे छेः–तत्र नयननेविषे अंज

नादिक चूर्ण अने तेनुं अंतर्धानादिक फळ जाणवुं. अने पाद प्रलेपनादि योग ते सौजाग तथा दौर्जाग्य करनारो जाणवो. एउनना व्यापारे करी जे पिंमनुं उपार्जन करवुं, तेने चूर्ण पिंम तथा योगपिंम कहिये. एना पूर्वनी पठेज दोशो जाणी लेवा.

आशंकाः– चूर्ण अने योग ए बन्ने क्षोद एटले नूकारूपे होवाथी तेउनो पर स्पर विशेष शुं ठे के जेथकी एउने जुदा कह्या.

समाधानः– ए तारुं बोलवुं यद्यपि साचुं ठे, तथापि कायनो बहिर उपयोगी चूर्ण ठे, अने बहिर तथा अंतर उपयोगी योग ठे. ते वली अन्यवहार्य तथा आहार्य ए नेदेकरी बे प्रकार थाय ठे. तत्र जल पानादिके करी अन्यवहार्य तथा पादलेपादिके करी आहार्थ जाणवो ते माटे ए निन्न ठे ए विशेष जाणवो.

१६ ए पाशेज कही आव्या जे दोषो तेउमांनो शोलमो दोष मूलकर्म ठे. ते अति गहन नवरूप वननुं मूल कारण ठे. प्ररोहनो हेतु कर्म ते सावद्य क्रिया जाणवी. तेनो मूल तेनो जे कर्म तेने मूलकर्म कहिये. तत्रगर्नस्तंनन, गर्नाधान, गर्नपात, कृतयोनित्व करण, तथा अकृत योनित्व करण, प्रमुखवडे उपार्जन करेलो जे पिंम तेने मूल कर्मपिंम कहिये. ए साधुने योग्य नथी केम के, एथी प्रद्वेष, प्रवचननी मलिनता, तथा जीव विघातादिक अनेक दोषोनो संनव ठे. जेम के, गर्ननुं स्तंनन अने शातन साधुए कर्याथी प्रद्वेषनी उत्पत्ति थाय तेथी शरीरनो पण विनाश थाय ठे. गर्नाधान तथा कृतयोनित्व करण थकी यावत् मैथुन प्रवृत्ति गर्नाधान थकी प्राये विपुत्रनी उत्पत्ति थएली दीठामां आवे ठे अने कृतयोनित्व करणेकरी नोगांतरायादिक थाय. ए शोलमो मूल कर्म दोष कह्यो. ए प्रमाणेः– शोल उत्पादन दोषो साधु थकी थाय ते कह्या.

अवतरणः–एषणाना दस दोषो कहेठेः–मूलः–संकिय मक्खिय निक्खित्त पिहिय साहरिय दायगुंमिस्से; अपरिणय लित्त ठड्डिय, एसण दोसा दस हवंति ॥

अर्थः–संकित एटले आधाकर्मादि दोषे करी संनावित जाणवुं. इहां चतुर्नंगी ठे ग्रहण शंकित तथा नोजन शंकित ए प्रथम नंग; ग्रहण शंकित तथा नोजन अशंकित ए बीजो नंग; नोजननेविषे शंकित तथा ग्रहणनेविषे अशंकित; ए त्रीजो नंग तथा ग्रहणे पण अशंकित अने नोजने पण अशंकित ए चोथो नंग जाणवो. तेमांना आद्यना त्रण नांगानेविषे शोल उज्ञमना दोषो अने नव एषणाना दोष रूप पचीश दोषोमध्ये जे दोषे करी शंकित थाय ते दोषोने प्राप्त थायठे. ते आ प्रमाणेः– ज्यारे आधाकर्मपणे शंकित गृहण करे अथवा खाए त्यारे आधाकर्म दोषेकरी बंधा

य; अने ज्यारे औद्देशिक पणे शंकित ग्रहण करे अथवा खाए त्यारे औद्देशिक दोषे करी बंधाय इत्यादि; तथा चतुर्थ भंगनेविषे जे वर्त्तमान ते शुद्ध समजवुं तेनो कोई पण दोषेकरी संबंध थाय नही. इत्यर्थः एउनो आवीरीते संभव छे. जेम के, कोई साधु स्वभावेकरी लज्जामान होय ते कोईना गृहनेविषे भिक्षाने अर्थे प्रवेश कस्यो छतां तेने प्रचुर भिक्षानी प्राप्ति थई, त्यारे पोताना मनमां शंका आणे पण लज्जावडे तेने पूछवाने शक्तिमान थाय नही. पछी तेमज शंकित छतां गृहण करी अने संकित छतांज खाए तेने प्रथम भंगवर्त्ति कहिये. तथा कोई साधु भिक्षाने अर्थे गयो छतां कोई गृहमांथी पूर्वनी पठे शंकित मनेकरी प्रचुर भिक्षाने लेईने पोतानी वसतिमां आवे अने भोजनना समये तेनुं मन मोलायमान थाय तेने कोई बीजो साधु होय के, जेणे ते साधुए जे घेरमांथी भिक्षा लीधी हती ते सारी रीते जाणेली हती ते तेनो अभिप्राय जाणीने तेने कहे के, हे साधु जे ठेकाणे तने विपुल भिक्षा मली तेना गृहनेविषे आजे महा प्रकरण वर्त्ते छे; अथवा तेने घेर क्यांकथी मोटुं लाभनक आव्युं छे. एवी रीते तेना वचन सांभलीने ए शुद्ध अन्न छे एवो निश्चय करीने शंका थकी रहित थयो थको भोजन करे तेने द्वितीय भंगवर्त्ति कहिये. तथा कोई साधु कोई गृहस्थना घेरमांथी निःशंकित प्रचुर भिक्षा गृहण करीने वसतिमां आव्यो, ते समये बीजो कोई साधु पोताना जेवी भिक्षा मागी लावीने गुरुनी आगल आलोवणा लेतां सांभलीने तेने शंका उत्पन्न थाय तेथी चिंतवन करे के, जेवी मने प्रचुर भिक्षानी प्राप्ति थई छे, तेवीज आ बीजा संघाटकना साधुउने मली छे, माटे ए निश्चेकरी आधाकर्मादि दोष दुष्ट छे एम जाण्या छतां खाए तेने तृतीय भंगवर्त्ती जाणवो. ए प्रथम शंकित दोष कह्यो.

२ म्रक्षित एटले पृथ्व्यादिकेकरी गुंमालेलुं जाणवुं. ते बे प्रकारे छेः– एक सचित्त म्रक्षित, तथा बीजुं अचित्त म्रक्षित. तेमां सचित्त म्रक्षित त्रण प्रकारनुं छेः– पृथ्वीकाय म्रक्षित, अपकाय म्रक्षित, तथा वनस्पतिकाय म्रक्षित. तत्र शुष्क अथवा आर्द्र सचित्त पृथ्वीकायेकरी देवानुं भाजन अथवा हस्त जो म्रक्षित थयुं होय त्यारे सचित्त पृथ्वीकाय म्रक्षित जाणवुं. बीजुं अपकाय म्रक्षित ते चार प्रकारनुं छेः– पुराकर्म, पश्चात्कर्म, सस्निग्ध तथा उदकार्द्र. तत्र भक्तादिकना दाननी पूर्वे जे साधुने अर्थे कर्म एटले हस्त तथा मात्रादिकने पाणीवडे धोवानी जे क्रिया तेने पुराकर्म कहिये; जे भक्तादिकना दानथी पाछल कराय छे ते पश्चात् कर्मकहिये; थोडाएक लक्षणवाला जलेकरी खरडायला हस्तादिक ते सस्निग्ध; अने स्पष्ट उपलभ्यमान जे जलनो

संसर्गी, ते उदकाई; ए चार प्रकारे अपकाय म्रक्षित जाणवुं. ते प्रमाणेज फलादिक ना अति जलदीज करेला घणाज सूक्ष्म कटकाउएकरी खरडायला जे हस्तादिक तेने वनस्पतिकाय म्रक्षित कहिये. बाकीना तेजस्काय, वायुकाय, तथा त्रसकाये क री म्रक्षित थतुं नथी. केम के, तेजस्कायादिकना संसर्गेकरी पण लोकनेविषे म्र क्षित शब्दे प्रवृत्तिनुं अदर्शन छे माटे. हवे अचित्त म्रक्षित पण बे प्रकारनुं छेः-गर्हि त तथा इतरत्. तेमां गर्हित ते रक्तादिकेकरि लिप्त अने इतरत् एटले घृतादिकेकरी लिप्त जाणवुं. एमां सचित्त म्रक्षित सर्वथा साधुने कल्पवायोग्य नथी, ने अचित म्रक्षितने विषे पण लोकेकरि अनिंदित घृतादिके करी म्रक्षित होय ते कल्पवुं; अने लोकमां निंदित जे वशादिके करी म्रक्षित ते तो अकल्पनीयज छे. ए बीजो म्रक्षित दोष थयो.

३ निक्षिप्त एटले जे सचित्तनी उपर राखेलुं होय ते पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति तथा त्रस निक्षिप्त भेदेकरी छ प्रकारे छे. ते एकेक वली बबे प्रकारे छे. अनंतर अने परंपर. अनंतर एटले व्यवधान रहित. तत्र सचित्त मृत्तिकादिकनेविषे जे पक्वान मंम्कादिक अंतरविना व्यवस्थापित होय तेने पृथ्वी अनंतर निक्षिप्त क हिये; अने सचित्त मृत्तिकादिकनी उपर राखेला रूमालादिकनेविषे निक्षिप्त जे प क्वानादिक तेने पृथ्वीपरंपर निक्षिप्त कहेछे. तथा नवनीतनुं कीधेलुं घृतादिक सचित्त उदकनेविषे निक्षिप्त होय तेने जल अनंतर निक्षिप्त कहिये. अने तेज प क्वानादिके करी मेलवेलुं जलमां रहेला वाहाणनेविषे राख्युं होय तेने जल परंपर निक्षिप्त कहिये. तथा अग्निनेविषे जे पापड प्रमुख राखिये तेने अग्नि अनंतर नि क्षिप्त कहिये; अने जे अग्निनी उपर राखेली थाली प्रमुखनेविषे राख्युं होय ते अग्नि परंपर निक्षिप्त कहिये. तथा पवनेकरी वासी थयलुं भात तथा पापड प्रमु ख ते पवन अनंतर निक्षिप्त कहियें, जेनुं जेणे करी बगाड थाय तेने तेणेकरी निक्षिप्त कहेवाय छे. एवी विवक्षा छे. ने पवनेकरी भरेली धमण प्रमुखनी उपर राखेलुं मंम्कादिक ते पवन परंपरा निक्षिप्त जाणवुं. तथा सचित्त व्रीहिक फला दिकनेविषे स्थित पूडी तथा मंम्कादिक ते वनस्पतिअनंतर निक्षिप्त जाणवुं; तथा हरितादिकनी एटले नीलाघास प्रमुखवाली जमीन उपर राखेली थाली प्रमुखनेविषे राखेलुं पूडी प्रमुख तेने वनस्पती परंपरा निक्षिप्त कहिये. तथा बेल प्रमुखनी पीठ उपर जे मालपूडा तथा मोदकादिक राखेलां होय तेने त्रस अनं तर निक्षिप्त कहिये; अने बेल प्रमुखनी पीठनी उपर रहेला दबडी प्रमुखनेविषे रहेला मोदक प्रमुख ते त्रस परंपर निक्षिप्त कहेवाय छे. अत्र पृथिव्यादिक सर्व

नेविषे निरंतर निक्षिप्त देवानी वस्तु यतिने कल्पवा योग्य नथी अने सचित्त पृथ्वी कायादिकनी ऊपर राख्याथी संघट्टादि दोषोनो संभव थाय छे माटे परंपर निक्षिप्त पण संघट्टादि दोषोनो परिहार करीने यत्नवडे ग्रहण करवा योग्य छे. केवल तेजस्कायनेविषे परंपरनिक्षिप्तना गृहणने आश्रीने कांईक विशेष प्रतिपादन करे छे. जेम के, शेरडीना रसने पकाववाने ठेकाणे अग्निनी ऊपर राखेली कडाई प्रमुख होय, ते कडाईना सर्व पाशा जो मृत्तिकावडे लीपेला होय, अने देवाना इक्षुरसमां जो परिशाटिका उत्पन्न न थाय; अने ते कडाई प्रमुखनुं महोडुं मोटुं होय, तेम ते इक्षुनो रस पण नाख्याने थोडीवार थई होय एटले घणो ऊनो थई गयो न होय, त्यारे ते देवा योग्य इक्षुनो रस साधुने कल्पवा योग्य छे. केमके ते देवा योग्य इक्षुना रसनो बिंदु कोईक बाहार पडे तो ते लीपेली माटीनी ऊपरज रहीजाय पण चूलामां रहेला तेजस्कायमां पडे नही. तेथी माटीथी लीपेली कडाई कही. तथा कडाईनुं मोटुं मुख होय ते कहाडवाना ढांकणाना कांठा ऊपर लागे नही तेथी ते ढांकणुं भांगी न पडे; एम तेजस्कायनी विराधना न थाय माटे मोटुं महोडुं कह्युं छे. अने अति ऊनो शेरडीनो रस दीधाथी जे गामडामां ते अति ऊनो रस लिये ते गामडुं तरत तापी गयाथी ते साधु हाथमां झालतां बले तेथी आत्मविराधना थाय. अने जे गामडामां ते देनारी दिये ते पण तापी गयाथी तेना हाथ पण बले. अने अति ऊष्ण इक्षुरसादिक अति कष्टेकरी देनारी दई शके. अने कष्टेकरीने दीधाथी ते साधुना गामडामांथी कांई बहार पडे तो ते देवाना इक्षुरसादिकनी हाणी थाय. वली ते साधुनुं भाजन वसतिमां आणतां वचमां फूटी जाय तो अमुक दात्रीए वोरावतां आ ढांकणुं चिन्हरहित थईगयुं छे; एम लोक कहे अने ऊनो थईगयाथी भूमि ऊपर नाखी दीधाथी भांगी पडे तेथी षट्काय जीवनी विराधनाथाय तेथी संयमनी विराधना थाय माटे अति ऊनो रस लेवो नही ए त्रीजो निक्षिप्त दोष थयो.

४ पिहित एटले सचित्तेकरी ढांकेलुं ते पण पृथ्वीकायादिक पिहित भेदेकरी प्रथमनी पठे छ प्रकारे जाणवुं. ते वली प्रत्येक बबे प्रकारे छेः– अनंतर तथा परंपर. तत्र सचित्त पृथ्वीकाये करी आवृत मंडकादिक ते सचित्त पृथ्वीकायानंतर पिहित छे अने सचित्त पृथ्वीकायने विषे रहेली थाली प्रमुखेकरी जे ढांकेलुं होय ते सचित्त पृथ्वीकाय परंपर पिहित जाणवुं. तथा हिमादिकेकरी आछादित थएलुं मंडकादिक सचित्त अप्काय अनंतर पिहित; अने हिमादिकना गर्भनेविषे थाली प्रमुख वडे ढांकेलुं तेने सचित्त अपकाय परंपर पिहित कहिये. तथा स्था

त्यादिकमां नाखेला संस्वेदिम आदिकनेविषे अंगारने नाखीने जे हिंग प्रमुखनो वास दीधामां आवे छे, त्यारे ते अंगाराएकरी कोईएक संस्वेदिमादिकने संस्पर्श थाय छे; तेने तेजस्काय अनंतर पिहित कहिये; एम चणकादिकने पण सुमेराक्षिप्त अग्नी अनंतर पिहित जाणवुं. अने अंगारेकरी भरेला सरावादिके करी ढांकेली थाली प्रमुखने अग्निपरंपर पिहित कहिये अथवा अंगारेकरी ढांकेला सरावादिके करी ढांकेला जे थाली प्रमुख ते परंपर पिहित जाणवो तथा त्यांज अंगार धूपितादिनेविषे अव्यवहित अनंतर पिहित जाणी लेवुं. तथा ज्यां अग्नि त्यां वायु एवुं वचन छे. वायुथी भरेली वस्तुए करी जे ढांकेलुं होय तेने परंपरा पिहित कहिये तथा बीजा कोई ढांकणाविना मात्र फलादिके करी जे ढांकेलुं होय तेने वनस्पत्यनंतर पिहित कहे छे; अने फलथी भरेली छाबडी प्रमुखेकरी जे ढांकेलुं होय तेने वनस्पति परंपर पिहित कहिये. तथा मंडक अने मोदकादिकनी ऊपर कीडी प्रमुख चडेलीनी अपेक्षाथी तेने त्रसानंतर पिहित कहिये; अने कीटकादिकेकरी आछादित सरावलादिके करी ढांकेलाने त्रस परंपरा पिहित कहेछे. तत्र पृथ्वीकायादिवडे अनंतर पिहित साधुने कल्पवा योग्य नथी केम के, एनेविषे संघट्टादि दोषो छे माटे. अने परंपर पण यत्नेकरी ग्रहण करवा योग्य छे. तथा अचित्तेकरी पण अचित्त देवायोग्य वस्तु पिहितनेविषे चतुर्भंगी छेः– गुरुक गुरुकेकरी पिहित; गुरुक लघुकेकरी पिहित; लघुकगुरुकेकरी पिहित तथा लघुक लघुकेकरी पिहित एम जाणवुं तेमां प्रथम अने तृतीय भंग ग्रहण करवा योग्य नथी केम के, गुरु द्रव्य भांगी ने ते कोई पाद प्रमुखनी ऊपर पडे तो तेथी ते अंगना भंगनो संभव थाय माटे. अने द्वितीय तथा चतुर्थ भंग ग्रहण करवा योग्य छे. केम के, तेमां दोषनो अभाव छे माटे. जेम के, देवायोग्य जे वस्तु तेनो आधार भूत जे थाली प्रमुख ते मोटो होय तो पण तेमांथी कटोरादिकेकरी दाननो संभव छे माटे. ए चोथो पिहित दोषथयो.

५ संहृत एटले अन्यत्र प्रक्षिप्त. तत्र जे कटोरा प्रमुख वडे भक्तादिक देवानी इछा होय ते कटोरामां न देवानुं पड्युं होय; अने जे देवानुं कांई पण सचित्त वा मिश्र होय ते कोई बीजे ठेकाणे पड्युं होय त्यारे ते न देवानुंबीजाठेकाणे नाखीने जे देवानुं होय ते ते कटोराए करी दिये तेने संहृत कहे छे. ते न देवा योग्य पदार्थ कदाचित् सचित्त पृथ्व्यादिकनेविषे नाखे; कदाचित् अचित्तनेविषे अने कदाचित् मिश्रनेविषे नाखी दिये. मिश्रनो सचित्तनेविषे अंतर्भाव छे. अही सचित्त अचित्त पदेकरी चतुर्भंगी छेः– सचित्तनेविषे सचित् संहृत; अचित्तनेविषे सचि

त्त संहृत, सचित्तनेविषे अचित्त संहृत तथा अचितनेविषे अचित्त संहृत तेमां प्रथ
मना त्रण जांगानेविषे सचित्तसंघट्टादि दोषोनो संजव होवाथी कल्पवुं नही. अने
चोथा जांगानेविषे तेवा दोषोनो अजाव होवाथी कल्पवुं पण खरुं. अत्रे पण अ
नंतर तथा परंपर प्ररूपणा पूर्वनी पठे कहेवा योग्य ठे. जेम के, ज्यारे सचित्तपृ
थ्वीकायमां संहरण करे त्यारे अनंतर सचित्त पृथ्वीकाय संहृत जाणवुं; अनेज्या
रे सचित्त पृथ्वीकायनी ऊपर स्थित पिठर एटले थाली प्रमुखनेविषे संहरण करे
त्यारे परंपर सचित्त पृथ्वीकाय संहृत कहिये; एवी रीते अपकायादिकनेविषे पण
जावना करवी. तेमां अनंतर संहृतेकरी गृहण योग्य ठे; अने परंपर संहृते तो सचित्त
पृथ्वीकायादि असंघट्टनेकरी गृहण करवा योग्य ठे. ए पांचमो संहृत दोष कह्यो.

६ दायक दोष दुष्ट, ते दायक अनेक प्रकारनां ठेः– ते आ प्रमाणे.– वृद्ध,
अप्रजु, नपुंसक, कंपायमान शरीरवालो, तापवालो, अंध, बाल, मत्त, उन्मत्त, ठि
न्नकर, ठिन्नचरण, गलकुष्ट, बद्ध, पाडुकारूढ, जे खरूज करता होय ते, तथा जे
पिशती होय ते, जे बलेली होय ते, जे रोती होय ते, जे आलोटती होय ते, जे
चिकुवती होय ते, जे पींजती होय ते, जे दलती होय ते, विरोलवाली, जुंजाना
आपन्नसत्वा, बालवत्सा, षट्कायनोसंघट्ट करती होय ते, तथा तेउनो विनाश क
रती होय ते; अने सप्रत्यपाया. इत्यादि स्वरूपवालो दातार जे दिये तेलेवुं साधुने न क
ल्पे तत्र स्थविर शित्तेर वर्षनो जाणवो; अने मतांतरनी अपेक्षाए करी साठ वर्ष
नो समजवो. अने एथी वधारे वयवालो तो प्राये गलत् लालोवालो होय ठे. ते
थी ते जे वस्तु दिये ते मह्योडामांथी पडती लालोथी जराई गयाथी ते जोईने लो
को ग्लानी करे, तथा तेना हाथ पण कंपायमान थता होय ठे. ते हस्तकंपनना
वशेकरी देवानी वस्तु जूमिनी ऊपर पडी जाय. तेथी षट्काय जीवनिकायनी विरा
धना थाय. तथा ते पोते स्थविर देवानुं देतो ठतां पडी जाय तो तेने पोताने पी
डा थाय अने षट्जीवनिकायनी विराधना थाय. अने स्थविर प्रायेकरी गृहनो प्र
जु एटले मालक होतो नथी. तेथी एने देवानो शुं अधिकार ठे एवो विचार करी
ने गृहना स्वामी पणेकरी रहेला पुरुषनो द्वेष थाय . तथा कदाचित् ते वृद्ध मा
लक होय ने पोते कंपायमान ठतां तेनां बीजा सहायक होय; अथवा पोते स्व
रूपेकरी शरीरे दृढ होय तो तेना हाथे साधुए जिक्षा गृहण करवी. तथा नपुंस
क पाशेथी पुनः पुनः जिक्षा गृहण करवाने लीधे अति परिचय होवाथी ते नपुं
सकने अथवा साधुने वेदोदय थाय; त्यारे ते नपुंसकनुं आलिंगनादिके करी सा

धु सेवन करे तो बन्नेने कर्मबंध थाय. तथा अहो आ साधुउ अति निकृष्ट नपुंसको पासेथी पण भिक्षा लिये छे एवी लोको निंदा करे. अने जो अपवादेकरी ते वर्द्धित कच्चपित होय, मंत्रे करीहत थएलो होय, कोईए तेने प्रीयना तथा देवादिकना सोगंध दीधा होय के तने वेदादिकनुं सेवन करवुं नही. एवो नपुंसक दिये तो भिक्षा गृहण करवी. तथा कंपायमान कायवालो पण भिक्षादान समयनेविषे जे देवानुं होय तेमांनु केटलुंएक नाखिदिये तथा साधुने आपतां ढोलाई जाय अथवा ते देवानुं पात्रक पडीजाय तो फूटि पडे. अने ते भिक्षानुं भाजन जो दृढ होय तथा पुत्रादिके तेने झाल्यो होय, ते भिक्षा आपे तो गृहण करे. एम ज्वरवडे पीडाताना हाथे भिक्षा गृहण कर्याथी पण दोषोनी संभावना करवी. केमके तेना पाशेथी भिक्षा गृहण कर्याथी कदाचित् साधुने पण ज्वर संक्रमण थाय. त्यारे लोकोमां वात फेलाय के, अहो आ आहार लंपट साधुउ आवा ज्वरेकरी पीडाता गृहस्थनी पाशेथी पण भिक्षा लिये छे. अने ज्यारे तेने ताप उतरी गयुं होय त्यारे यत्नेकरीने कदाचित् भिक्षा गृहण पण करवी. तथा अंधना हाथे भिक्षा गृहण कर्याथी एवी वात फेलाय के, आ पेटना भीखारीउ जे भिक्षा दई शके नही एवा आंधला पाशेथी पण भिक्षा लीधाविना मूकता नथी. तथा अंध होयते जोई न शकवाने लीधे चालतां पगवडेभूमि आश्रित षट्विधजीव निकायनी घात थाय. तेनो कोई स्थले पग लपसी जाय अने भूमि उपर पडी जाय तो तेम थयाथी भिक्षा दानने अर्थे लीधेली हाथमांनी थाली प्रमुख पडी गयाथी ते फूटी जाय; अथवा साधुना पात्रकथी बहार पडे त्यारे परिशाटि थाय एवा आंधलाने पण जो तेना पुत्रादिके हाथे करी पकड्यो होय, ने ते आपे त्यारे ते भिक्षा ग्रहण करवी. तेम ज बाल ते जन्मथी आठ वर्षनी अंदर वयवालो कहेवाय छे. तेथी तेने प्रमाणनी खबर होती नथी तेथी तेनी माता प्रमुख बेगा छतां पण अतिप्रचूर भिक्षा आपे; तेथी तेना मावित्रो तथा बीजा जनोमां एवी वात फेलाय के, आ लुंटारा साधुउ बालकोनेज ठगी खाय छे. तेथी ते मातादिकनो ते व्रतीनी उपर द्वेष उत्पन्न थाय. पण जो ते बालक कहे के, मारी माता प्रमुख कोई कार्यने लीधे बाहार गयां छे अने मने कही गयां छे के, जो कोई व्रती वोरवा आवे तो तेने आपजे ते पण जो ते बालकने प्रथमथी देवानो साधारण स्वभाव होय तेथी योग्य रीते आपतो होय तो तेनुं दीधेलुं गृहण करे केम के, तेथी तेनी मातादिकना कलहनो अभाव होय छे माटे. तथा जेणे मदिरादिक पीधुं होय ते

ने मत्त कहेछे. ते तेवा आवेशे भिक्षा देतां कदाचित् उन्मत्त पणे साधुने आवीने वलगी पडे तो ते भोजन बधुं वीखराई जाय, अने कदाचित् सारी रीते भिक्षा आपे ने ते साधु लईलिये तेने बीजा जन जुवेतो वंचना करे के, आ साधुउ पीधे लानी पाशेथी भिक्षा लिये छे ते जरूर तेनी लाल वगैरे वडे खरडायली होवी जोईये तेथी ए अशुचि छे. तथा मदोन्मत्त वगैरनी भिक्षा लेता पण चूकता नथी ए शुं ए उने योग्य छे! अथवा कोई मत्त पुरुष मदनीविव्हलताएकरी सामे आवी कहे के हे मुंमा; तुं केम अहीं आव्यो छे? एम कहीने तेने मारे अथवा तेनो घात पण करी नाखे. तथा उन्मत्तनी पाशेथी भिक्षा लीधाथी तेना आप्त वगेरे बीजा गृही होय ते तेनी निर्भर्त्सना वगैरे करे इत्यादिक दोषोनी भावना करवी. ते पण जो मत्त पुरुष भद्रक होय अने मद्य प्राशन कर्युं छतां तेना निशानुं तेने लक्ष पण न होय अने ते गाममां बीजो कोई सागारिक एटले श्रावक न होय तो तेनी पाशेथी भिक्षा लेवी. अन्यथा न लेवी. वली उन्मत्त पण जो भद्रक तथा शुचि होय तो कल्पवा योग्य छे. तथा जे छिन्नकर एटले जेना हाथ न होय ते मूत्र तथा उत्सर्गादिक कर्या पछी जल शौचादि बराबर करी शके नहीं, तेणे भिक्षा दीधाथी लोको निंदा करे जे हस्तना अभावे भिक्षा दिये तेमांनी केटलीएक कदाचित् नीचे पडी जाय त्यारे षट्जीवनी विराधना थाय. तथा छिन्नचरण एटले जेनां पग न होय तेणे भिक्षा दीधाथी पण एटलाज दोषो जाणवा. केमके पादना अभावे ते जेम तेम चालता पडी जाय तो भूमिनेविषे आश्रित पिपीलिका वगैरे प्राणीउनी घात थाय तेमां छिन्न कर पण जो बीजा सागारिकना अभावे भिक्षा आपे तो यत्ने करी लेवी अने छिन्नचरण वालो पण जो लाकडी प्रमुख ना आधारे हलवे हलवे चाली आवे ते पण बीजो कोई सागारी देनार न होय तो तेनी पाशेथी लेवुं तथा गलकुष्ठ ए एले जेनुं कोढे करी शरीर गली गयुं होय, ते भिक्षा आपतां तेनो श्वास तथा त्वक्ना संस्पर्शे करी तथा तेना आंगमांथी श्रवता रोग तथा रुधिरादिके करी साधुने पण कदाचित् कोढनो संभव थाय, ते पण जो मंमलप्रसूतिरूप कुष्ठाकीर्ण काय होय अने त्यां बीजा श्रावकनो अभाव होय तो तेनी पाशेथी भिक्षा लेवी पण बीजा कुष्टीनी पाशेथी भिक्षा लेवी नहीं शेष कुष्टि जो सागारिक होय तो पण तेनी शामे जोवुं नहीं. अने मंमल एटले वृत्ताकार खराब न लागे एवी उत्पन्न थएली होय छे माटे तेने करीने नखेकरी विदारण कर्या छतां पण चेतनाने संवेदन थाय नहीं. तथा हाथमां नाखवानी बीडिरूप बंधनेकरी हस्त बंधायला छतां तथा पगमां ना

खवानी लोढानी बेडी वमे पग बंधाएला बतां दातरी निक्षा आपे तो तेने देतां अति कष्ट थायबे. तथा मूत्र अने उत्सर्गादिकनेविषे तेउनाथी शौच थाय नही मा टे तेनी पाशेथी निक्षा ग्रहण कस्वाथी लोकोमां जुगुप्सा एटले निंदा थाय. जे म के, आ साधुउ पोते पण अशुचि बे माटेज आवा अशुचि बंधीवान माणस नी पाशेथी पण निक्षा लीधावना चूकता नथी. अने पगेकरी बंधायलो बतां ते अही तही पीडा वगर फरी शकतो होय, तो तेना पाशेथी निक्षा लेवी योग्य बे अने बीजो जे अही तही फरी न शकतो होय, ते बेठेलो बतां निक्षा दिये तेनी पाशेथी पण जो बीजो कोई सागारिक त्यां विद्यमान न होय तो निक्षा लेवी अने जे ना हाथ बंधायला होय ते तो निक्षा आपीज न शके तेथी ते तो निषेधज बे तथा पाडुका एटले काष्ट मय उपानह् तेना उपर आरूढ बतां निक्षा देवाने आवतां क दाचित् पग खसी जाय तो ते पडी जाय. माटे न लेवी तो पण पाडुका ऊपर चढेलो बतां अचलपणे स्थित होय तो तेना पाशेथी निक्षा लेवी तथा ऊखरीमां चोखा खांमती होय तो तेनी पाशेथी निक्षा लेवी नही. केम के, ऊखरीमां नाखेला शाल्यादिक बीजोनो संघट्टादि करे बे ते निक्षा दान आपवानी पूर्वे अथवा पबी पाणीएकरी हाथ धोवा वगैरे पोतानी सांमे कस्वाथी दोष थाय. इत्यादिक बीजा पण दोष लागे अत्रे पण खांमनारीए खांमवाने अर्थे उत्पाटित मूशलने कोई पण धान्यनुं बीज लाग्यु न होय, एटलामां साधु त्यां आवे त्यारे जो ते यत्ने करी बीजा अर्थ रहित मुशल गृहना खुणा प्रमुखनेविषे राखीने निक्षा दिये तो ते साधुए लेवी तथा शिलाएकरी तिल तथा आमलकादिक पीशनारी ते पी शतां ज्यारे निक्षा देवाने माटे ऊठे त्यारे पीसवाना तिलादि सक्त केटलाएक स चित्त हाथना नखोमां वलगी रहेवानो संनव बे. ते निक्षा देवाने माटे हस्तादिक बांटवाथी निक्षा दिधाथी तेना संबंधे करी जीव विराधना थाय ते निक्षाना अवयवेक री खरडायला हस्तोने जलेकरी धोए त्यारे अपकायनी विराधना थाय ते पीशवानुं बंध करी ते पीशनारी प्रासुक वस्तु आपे त्यारे साधुए लेवा योग्य बे. तथा चूलानी ऊपर कमाई प्रमुखमां ज्ञुंजाता चणा प्रमुखने हलावती होय ते जो निक्षा देवा ऊ ठे त्यारे ते कडाईमां नाखेला गोधूम तथा चणा वगैरे बहार उडता तेना कपडा मां लागे तेथी ते बले तो प्रद्वेषादि दोष थाय. अही पण जे सचित्त गोधूमादिक कडाईमां नाखेला तेमांथी बाहार कहाडी लीधां होय, अने ते टाढा थई गया होय ते एवा के, हाथमां लीधाथी हाथ बले नही; एवा समयमां निक्षा करतां

साधु आवे त्यारे ऊठी करीने ते आपे ते साधुयें लेवुं. तथा जे कातनारी होय एटले रूनी पोणीमां सूत्र करती होय ते; तथा जे रूतनी चरखीमांथी रूतमांथी कपासीयानी कहाडनारी होय; तथा जे मूंझायला रूतने हाथोवडे वीखीने बूटुं बूटुं करती होय; तथा जे पीजणेकरी रूतने पीजती होय एटले अति बूटुं अथ वा कोमल करती होय; एटलीउंनी पाशेथी भिक्षा लेवी नही केम के, एउंना हा थो रजेकरी खरडायला होवाथी पाणीथी धुए तेथी अपकायनी विराधना थाय इत्यादिक दोषोनो संभव छे माटे. तेमज कपासीया प्रमुखना सचित्तना संघाट्टनो सं भव छे माटे. पण सूत्र काततां सूत्रने अतिशय श्वेततां लाववांने माटे शंखनुं चूर्ण लगाडवाथी पण हस्त खरडायला न होय तो तेनी दीधेली भिक्षा लेवी तेमज क पास वीखेरनारी तथा पींजनारी पश्चात् हस्त धोवनादि क्रिया न करे तो तेउंनी पाशेथी भिक्षा लेवी तथा दलनारी एटले जे घरंटीए करी गोधूमादिकने पीशी लो ट करती होय, ते भिक्षा देवाने ऊठीने हाथ धुवे तेथी अपकायनी विराधना था य माटे तेनो पाशेथी भिक्षा न लेवी. पण सचित्त मुझादिक दलाववाना सुधां ते द लनारी गरंटीने मूकीने छूटी थाय एटलामां साधु भिक्षा मांगवा आवे अथवा अ चेतन मुझादिक दलती होय अने भिक्षा आपे तो साधुए लेवुं. तथा विलोवनारी ते द धिप्रमुख मथनारी, ज्यारे ते दधि प्रमुख वमे खरडायली छतां मथती होय, त्यारे ते वलगेलो दधि प्रमुखथी हाथ भेदायला छतां भिक्षा दिये तेथी त्रसजीवोनी विराधना थाय अत्रे पण वेदथी संसक्त दधि प्रमुख मथती होय त्यारे तेना हाथे भिक्षा साधु न कल्पे. तथा जमवा बेठेली दात्री दानने अर्थे आचमन करे एटले पाणी पिये तेम करवाथी उदकनी विराधना थाय; अने जो आचमन न करे तो लोको मां जुगुप्सा थाय. उक्तंचः—'छकाय दयावंतो, विसंजउ दुल्लहं कुणइ बोहिं; आहारे नीहारे डुगंछिए पिंम गहणाय' तथा आपन्नसत्वा एटले गर्भवाली स्त्रीनी पाशेथी भिक्षा लेवी नही. केम के, ते भिक्षादानार्थे ऊंची थईने भिक्षा आपी ने पाछी आ सन ऊपर आवे त्यां सुधी गर्भने बाधा थवानो संभव छे. अही स्थविर कल्पि कने यावत् आठ माससुधी कल्पे छे; अने पूरा मासे नथी कल्पता. वली पूरामा से पण जो ऊंचा भवनादिकनेविषे सम्यक् प्रकारे स्वभावे स्थित छतां त्यांथी दिये तो गृहण करवुं. तथा बालवत्सा एटले बालकोनी माता होय ते बालकने भू मि ऊपर अथवा मांचि प्रमुखनी ऊपर नाखीने जो दिये तो ते बालकने मार्जार तथा सारमेयादिक शशलाना बालकनी पठे मांसना कटका करी नाखे तो ते नाश

ने पामे तथा आहार करी खरडायला हाथो सूकाई गयाथी कर्कश थाय छे, ते माटे भिक्षा दईने दात्री तेवाज हाथे बालकने गृहण करे तेनुं कोमल शरीर होवाथी तेने पीडा थाय पण जे बालक आहारनाहाथो लागाथी अथवा भूमि ऊपर मूक्याथी रडे नही, तेनी माताना हाथथी भिक्षा कल्पवा योग्य छे. अने तेनाहाथे स्थविर कल्पिक आहार गृहण करे छे ते प्राये ते बालक शरीरे मोटो होय, तेथी तेने मार्जार प्रमुख करडी खावानो संभव न होय माटे. अने जे भगवंत जिनकल्पी छे तेतो निरपवादने माटे सूत्रना बलेकरी गर्भादानादि जाणी प्रथमथीज आपन्नसत्वा बालवत्साने सर्वथा भोजनने अर्थे परिहरे. तथा जेथी षट्कायनो संघट्ट थाय. एटले हस्तपादादि शरीरना अवयवोने फरशे. तेथी सजीव लवण, उदक, अग्नि, वायु, पूरित वस्ति बीज पूर फलादि मत्स्यादि हस्त स्थाने होय; स्थिद्धार्थक, दूर्वा, पल्लवमल्लिका, शतपत्रिका प्रमुख पुष्प जेने शिरस्थाने होय; मालती मालादिक उरस्थाने होय जपा कुसुमादिक आभरण कर्णस्थाने होय, पहेरेला वस्त्रोना अंतरनेविषे धारण करेला सरसवृत तांबूल पत्रादिक कटिस्थाननेविषे, सचित्त जलकणादिक पगमां वलगेला होय; इत्यादिक धारण करीने जो दात्री दिये तो ते भिक्षा यतिने न कल्पे केम के, संघट्टादिक दोषोनो संभव थाय. तथा तेज षट्काय जीवो विनाशने पामे छे. तत्र कुश्यादिकेकरी भूमि खोदतो थको पृथ्वी कायनी विराधना, जे कांई मज्जन करतो, वस्त्र धोतो तथा वृक्षने पाणी पावा प्रमुखे करी सेवन करतो थको अपकायनी विराधना; जे अग्निना कणनुं मीलन करतो थको अग्निकायनी विराधना; जे चूलामां अग्निने फूकवाथी सचित्त वायुवडे भरायली धमण प्रमुख अही तही फेकवाथी वायुकायनी विराधना; अने वेली प्रमुख छेदनेकरी वनस्पतिकायनी विराधना; अने मांचा प्रमुखमांथी मांकण प्रमुखने कहाडी नाखता त्रसकायनी जे विराधना करतो होय तेनी पाशेथी यतिये भिक्षा लेवी नही तथा ज्यां सप्रत्यपाय संभाव्यमान अपाय एटले अहित फल थवानी कारण भूत उपाधिनो योग होय ते स्थले भिक्षा लेवी नही ते अपाय त्रण प्रकारनो छेः—तिर्यक्, ऊर्द्ध, तथा अध. तेमां तिर्यक् गाई प्रमुख वडे जाणवो; ऊर्ध्वं उत्तरंग ते कापेला काष्टादिकवडे; तथा अध ते सर्पने कंटकादिके करी जाणिये. ए त्रण प्रकारना अपाय अने एथी जे जुदा बीजा अपाय होय तेउनी बुद्धिनेविषे संभावना करीने पछी भिक्षा ग्रहण करवी. अही विशेषे एम समजवुं के, ज्यां षट्कायनो संघट्ट थतो होय, तेउनो विनाश थतो होय, अने सप्रत्यापायनो अपवाद न होय त्यां सर्वथा भिक्षा न

कल्पवी. बीजा अपवादो जे देखाडेला छे ते जाणवा. एवा बीजा पण देनारना दोषो शास्त्रांतरनेविषे परिजावना करीने परिहरवा ए छगो दायक दोष जाणवो.

७ उन्मिश्र एटले सचित्तनी साथे जे मलेलुं होय ते. कोईएक गृहस्थने घर यति वोरवा आव्यो छतां तेनी पाशे आहार तो एकज वस्तु होय ते पण थोडी होय ते केम अपाय एवी लज्जा थाय अने बीजी देवानी वस्तु लेवा जतां वार लागे. देवानी तो घणी उत्सुकता होय, त्यारे एक पाशेनी बीजी सचित्त वस्तु जोईने धारे के आ चीज जो आमां मेलवीयें तो सारी मीठी थशे एम जक्तिएकरी मेलवीने सचित्त जक्षणरूप जांगो करे. एम प्रत्यनीकपणे अथवा अनाजोगे करी साधु उचित थशे एवो विचार करीने मेलववानी वस्तु प्रमुख अकल्पनीयपणे मुनिने अनुचित थायछे; जेम के, करमर्दक, दाडिम, कुलिकादिके करी मेलवीने जे दिये तेने उन्मिश्र कहिये. अही कल्पनीय तथा अकल्पनीय ए बन्ने वस्तुओने एकठीओ करीने जे आपे तेने उन्मिश्र कहिये. हवे संहरण अने उन्मिश्रनेविषे आटलो विशेष छेः— जे जाजननेविषे न देवानी वस्तु तेथी कोई बीजा स्थगनिकादिक प्रमुखमांथी हरणकरीने दिये तेने संहरण करीने दियेछे, तेम आ ठेकाणे नथी एटलो जेद छे. ए सातमो उन्मिश्र दोष जाणवो.

८ अपरिणत दोष एटले अप्राशुकी जूत अर्थात् परिणामने न पामेलुं आहार जाणवुं. ते सामान्यपणे बे प्रकारे छेः— ड्रव्यथी तथा जावथी ते वली एकेएक बे बे प्रकारे छेः— दातृविषय तथा गृहितृविषय तत्र परिणामने न पामेला जे पृथ्वीकायादिक ड्रव्य तेस्वरूपे सजीव छे. अने जे जीवेकरी विप्रमुक्त एटले रहित थयुं छे तेने परिणमित जाणवुं. ते ज्यारे दातानी सत्तामां वर्त्ते छे त्यारे दातृविषय कहेवाय; अने ज्यारे गहितृनी सत्तानेविषे वर्त्ते त्यारे गृहितृविषये; जाणिये तथा कोई बे अथवा बहु जनोने साधारण देवा योग्य वस्तु होय, तेनेविषे तेओमांना कोईने एवो जाव थाय के, हुं आ वस्तु आपुं, तेने जावपरिणत कहे छे. बाकीनाने न जाणवुं. माटे ए जावथी दातृविषय परिणत जाणवुं. एमां अने साधारण अनिसृष्टमां आटलो जेद छेः— दायकना परोक्षपणे दातृजाव परिणत वस्तुने साधारण अनिसृष्ट जाणीये, अने दायकनी समक्ष दातृजाव परिणतने जावथी दातृविषय परिणत कहेछे. तथा एक संघाटकरूप कोई बे साधुओ जिक्षाने अर्थे कोई गृहीना गृहमां गयां. तेणे जिक्षा देवा मांमी त्यारें तेमांना एक साधुए जाण्युं के आ मलेलुं अशनादि शुद्ध छे, एवुं मनमां परिणाम कर्युं अने बीजाना मनमां तेवी परिण

ति थई नही तेने गृहितृविषय नावपरिणत कहिये. ए साधुए कल्पवुं नही. केमके शंकित वे माटे. तेथी कलहादि दोषनो संनव थाय. ए आवमो अपरिणत दोष कह्यो.

ए हस्त तथा मात्रकादिक लेपकारीपणाथी लिप्त कहेवायवे. ते दधि, दूध तथा तेमन एटले एततसंबंधी आर्द्रनूतादिकेकरी जाणवुं. ते उत्सर्गे करीने साधुने ग्रहण करवा योग्य नथी. केमके एथी रसना नोजननेविषे लंपटतानी वृद्धिनो प्रसंग थाय अने दधि प्रमुखेकरी खरडायला हाथोने धोवादिरूप पश्चात् कर्मादि अनेक दोषोनो संनव थाय माटे. किंतु अलेप करेला वाल अने चणा प्रमुखनुं ओदनादिक लेवुं; तेवा नक्तादिकना अनावे निरंतर स्वाध्याय अध्ययनादिक कोई पण स्पष्ट कारण आश्रीने लेपकरेलुं नोजन पण लेवुं; तत्र लेपवाला ग्रहण करवामां देनाराना हाथमां वलगेलुं, अथवा न वलगेलुं होय एम वतां निक्षा दिये; तेपण मात्रक तथा करोटिकादिक मिश्र अने अमिश्र देवानुं ड्व्य, सावशेष अथवा निरवशेष होय, ए त्रण पदोना संसृष्ट हस्त तथा संसृष्ट मात्र साविशेष ड्व्यरूपना प्रतिपक्षरूप परस्पर संयोगथी आव नेद थायवे. ते नांगा आ प्रमाणेः–१ संसृष्ट हस्त संसृष्टमात्र सावशेष ड्व्य; २ संसृष्ट हस्त संसृष्ट मात्र निरवशेष ड्व्य; ३ संसृष्ट हस्त असंसृष्ट मात्र सावशेषड्व्य; ४ संसृष्ट हस्त असंसृष्ट मात्र निरवशेषड्व्य; ५ असंसृष्ट हस्त संसृष्ट मात्र साविशेष ड्व्य; ६ असंसृष्ट हस्त संसृष्टमात्र निरविशेष ड्व्य. ७ असंसृष्टहस्त असंसृष्टमात्र सावशेष ड्व्य; ८ अने असंसृष्ट हस्त असंसृष्ट मात्र निरवशेष ड्व्य. ए आव नांगानेविषे प्रथम, तृतीय, पंचम, तथा सप्तमनेविषे गृहण कर्त्तव्यवे. पण जे द्वितीय, चतुर्थ, षष्ट तथा अष्टम रूप वे तेनेविषे न कल्पवुं. अही आवी नावना करवीः–हस्त, तथा मात्र अथवा बन्ने करी, स्वयोगे करी संसृष्ट थएला अथवा असंसृष्ट थएला होय तेना वशेकरी पश्चात् कर्मनो संनव थाय वे. अही कोई पूवे के त्यारे ड्व्यना वशेकरी? किंवा पात्रना वशेकरी थायवे तेने कहेवेः– ज्यां ड्व्य सावशेष होय, त्यां ते ते ड्व्य साधुने अर्थे खरडायलुं वतां पण दात्री हाथ धोए नही. केम के, तेनुं फरीथी नोजन करवानो संनव थायवे माटे. अने ज्यां निरवशेष ड्व्य होय, त्यां साधुदाननी पवी नियमथी ते ड्व्यना आधारनूत जे थाली, हस्त, तथा मात्रक धोवा पडेवे. ते कारणथी द्वितीय प्रमुख नांगानेविषे निरवशेष ड्व्य होवाथी पश्चात् कर्मनो संनव थायवे; माटे ते साधुए कल्पवुं नही. अने प्रथम नांगादिकनेविषे तो पश्चात कर्मनो असंनव होवाथी कल्पवुं योग्य वे. ए नवमो लेपकृत दोष थयो.

१० छर्दित, मुक्षित तथा त्यक्त ए पर्याय शब्दो छे. ते छर्दित त्रण प्रकारनुं छेः– सचित्त, अचित्त तथा मिश्र. ते पण कोई समये सचित्तमां, कोई समये अचित्तमां अने कोई समये मिश्रमां. तत्र बन्ने ठेकाणे मिश्रनो सचित्तनेविषे अंतर्भाव छे. ते ते छर्दननेविषे सचित्त तथा अचित्त ए बन्ने द्रव्योना आधारभूत तथा आध्येयभूतना संयोगे करी चतुर्भंगी थाय छे. ते आ प्रमाणेः– १ सचित्तनेविषे सचित्त; २ अचित्तनेविषे सचित्त ३ सचित्तनेविषे अचित्त ४ तथा अचित्तनेविषे अचित्त एमांना आदिना त्रण भांगानेविषे सचित्तसंघट्टादि दोषोना सद्भावने लीधे लेवुं अयोग्य छे; वली एथी परिसाटी प्रमुख महान् दोषो थाय छे जेम के, कोईवखते ऊना द्रव्यनुं वमन भिक्षादेनारो करे तेथी भूमी आश्रित पृथ्विकाय प्रमुख बले; अने वमन करेलुं जो शीत द्रव्य होय तो तेथी पण भूमि आश्रित पृथ्वीकायादिकनी विराधना थाय. माटे वमन करनारना हाथे न ग्रहण करवुंः ए दशमो छर्दित दोष थयो. ए दश एषणाना दोषो थाय छे. एटले ए श्रावक तथा साधु बनेथी थाय ए सर्वमली संक्षेपे करी बेतालीश दोषो थया; एनो विस्तार पिंडनिर्युक्तिनेविषे जोई लेवो. ॥ ५७६ ॥

हवे पिंड विशुद्धिनो सर्वसंग्रह कहे छेः– मूलः–पिंडेसणाय सव्वा, संखित्ता यरइ नवसु कम्मेसु; न हणइ न किणइ पइका, राचरणं अणुमईहिं च. ॥५७७॥ अर्थः– पिंडेषणा एटले पिंडविशुद्धि; सर्वे संक्षेपे करी कहेवाने अवतरण करे छे. ते नव कोटी एटले विभागे करी कहे छेः– तत्र पोते हणे नही; वेचातुं लिये नही अने रांधे नही, ए त्रण, एम कारणानुमतिए करी पण यथा बीजाना हाथे घात करावे नही, वेचातुं लेवरावे नही अने रंधावे नही: तथा बीजाए करी हणाववानी वेचातुं लेवानी तथा रंधाववानी अनुमोदना न करे. ए मलीने नव कोटीउ थाय छे ए नव पदेकरी पिंडविशुद्धिनो सर्व संग्रह थाय छे. ए भावार्थ जाणवो. ॥५७७॥

अवतरणः– अही पूर्वे कहेला शोल प्रकारना उद्गम दोषो ते सामान्ये करी बे प्रकारे छे, ते आ प्रमाणेः– विशोधि कोटिरूप तथा अविशोधि कोटिरूप. तत्र जे दोषेकरी दुष्ट होय ते बधुं त्याग कर्युं छतां बाकीनुं कल्पवुं; ते दोषविशोधि कोटि जाणवी! अने बाकी बधी अविशोधि कोटिमां समजवुं.

तेमां जे अविशोधि कोटिरूप तथा विशोधिकोटिरूप दोष छे ते कहे छेः–मूलः–कम्मुदेसियचरिमे 'ति पूइयंमी सचरिमया दुक्मिया ; अज्झोयर अविसोही, विसोहि कोमी भवेसेसा. ॥५७८॥ अर्थः–मूलमां कम्म मात्र कह्युं छतां ते वडे १ आधाकर्म भेद सहित जाणवुं ; ४ औद्देशिक तथा विभागोद्देशिकना छेला त्रण एटले कर्मना भेद मिश्र

होवाथी बेला त्रण कह्या छे. ५ पूतिकर्म जक्तपानरूप आखुं ७ मिश्रजात ते पा षंडिमिश्र तथा साधुमिश्र; ते अंतना बे बादर जेद जाणवा. ८ प्राजृतिका आखी १० अध्यवपूरकना स्वगृह पाषंडिमिश्र तथा स्वगृह साधुमिश्र अंतना बे जेद जा णवा. एटला उजम दोषो अविशोधि कोटिमां जाणवा; आ अविशोधि कोटिना अवयवे करी शुष्क सिक्थादिके करी तथा तक्रादिकना लेपेकरी ने वल्ल चणकादिक ना अलोपेकरी मलेलुं जे शुद्ध जक्त ते मूकी दईने पण जे अकृत कल्पत्रय पात्रमां अशुद्ध जक्त जे पछी गृहण थाय छे. ते पूतितर जाणी लेवी. अने शेष उघोद्देशिक नव प्रकारे छे तो पण विजागोद्दिसिक जे छे ते उपकरण पूतिमिश्रना आदि जेदनी स्थापना, सूक्ष्म प्राजृतिका, प्राडुःकरण, क्रीत, प्रामित्यक, परिवर्त्तित, अज्याहृत, उद्भि न्न, मालापहृत, आछेद्य, अनिसृष्ट अने अध्यवपूरकना जेद एवारूपे अविशोधि कोटि जाणवी. जेनेविषे कह्याडी लीधेलुं शेष जक्त शुद्ध थाय छे; अथवा जेनेवि षे कह्याडी लीधाथी कल्पत्रय रहित पात्र पण शुद्ध थाय छे, तेनी विशोधि एवी जे कोटीतेने कहिये विशोधिकोटि. उक्तंचः- उद्देसियंमि नवगं, उवगरणे जंच पूइयं होई; जावंतियमी सगयं, अज्झोयर एय पढम पयं.॥१॥परियट्टिए अनिहडे, उब्भिन्ने, मालो हडे इय अछिज्जे; आणिसिठे पाउयरकी य पासुवो सुहुमाया डुडिया॥२॥विय ठवियग पिंमोय जो जाव डुविहो सव्ववि एस रासी विसोहि कोडी मुणेयव्वो" अ ही जिक्षाने अर्थे अटन करवा वालाए पूर्वे पात्रनेविषे शुद्ध जक्त गृहण कर्युं हो य; अने पछी तेज पात्रनेविषे कोई अनाजोगादिक कारणना वशे करी विशोधि कोटिरूप दोषे करी डुष्ट जक्तनुं गृहणथयुं, त्यार पछी तेना जाणवामां आव्युं के, आ में विशोधिकोटिरूप दोषे करी डुष्ट जक्तनुं गृहण कर्युं अने जो ते विना नजी शके तो ते सर्व विधिये करी परिष्ठापन करे; अने जो न नजे तो जेटलुं विशोधि को टिरूप दोषे करी डुष्ट होय तेटलुंज सम्यक् प्रकारे जाणी करीने तेनो त्याग करे. अने जो वर्ण गंधादिकेकरी तुल्य होवाथी जुडुं लखाई न आववाथी न जाणी श कवाने लीधे मिश्रित थई जाय अथवा इव्येकरी तक्रादि होय तो तेनो सर्वने वि वेक होय छे. तेथी तेनेविषे सर्व प्रकारे विचार करीने एवुं जाणे के कोई सूक्ष्म अवयवो आमां मली गया हशे तो पण ते पात्रमां नही लीधेलानेविषे ग्रहण क रवावालो साधु जक्तने मूकीदीये केमके ते अविशोधि कोटि थाय छे माटे.॥५७८॥

हवे पांच समिति कहे छेः- मूलः- इरिया जासा एसण, आयाणाईसु तहय परिठवणा; सम्मंजू उपवित्ता सा समई पंचहा एवं ॥ ५७९ ॥ अर्थः- जे ईरण

ते ईर्या एटले गति जाणवी. नाषण ते नाषा; एषण ते एषणा; आदीयते एट लेगृह्ण कराय, ते आदान जाणवुं जेनी आदिनेविषे निक्षेपादि क्रिया विशेष छे तेने आदानादिक कहेवुं. एटले ईर्या, नाषा, एषणा तथा आदानादिक जाणवी. तथापरिष्ठापन एटले त्याग करवुं. सम्यक् आगमानुसारे जे प्रवृत्ति एटले चेष्टा तेने समिति कहे छे. ए पांच चेष्टाउनी तांत्रिक एटले पारिनाषिक संज्ञा छे. ते माटे ई र्या १ समिति. २ नाषा समिति ३ एषणा समिति ४ आदान समिति अने (५) परि ष्ठापना समिति एवी रीते उक्त न्याये करी पांच प्रकारनी समिति जाणवी. तत्र त्रस तथा स्थावररूप जे जीव जात छे तेउने अनयदाननी दीक्षा लीधी छे जेणे एवो जे यति, ते आवश्य प्रयोजने करी लोकना गमनथी अत्यंत खिन्न थयो होय सूर्यनी किरणोए करी तपेलो होय, प्रासुकविविक्त एवा मार्गनेविषे चालनारो सा धु जंतुउनी रक्षाने निमित्ते तथा पोताना शरीरनी रक्षाने निमित्ते पोताना पगना अग्रनागथी लईने फूसरी प्रमाण क्षेत्र निरखीने साधु चाले तेने ईर्या एटले-गति, तेनी जे समिति तेने ईर्या समिति कहिये. यडुक्तः– पुरउ जुग मायाए, पेहमाणो महिंचरो वज्जिं, तोवीयहरीयाइं, पाणेइ दग मट्टियं, ॥ १ ॥ उवायं विसमं खा णुं, विज्जलं परिपज्जइ; संकमेण न गछेज्जा, विज्जमाणे परक्कमे "॥२॥ एवी रीते उ पयोगे करी चालतां यति थकी कोई पण प्राणिनो वध थई जाय तो तेने पाप लागे नही. यदाहुः– "उच्चालयम्मि पाए, इरिया समियस्स संकमठाए; वा वज्जिकु लिंगी, मरिज्ज तंजोग मासज्ज; नहु तस्स तन्निमित्ते, बंधो सुहुमो विदेसिउ सम ये; अणवज्जो उपउगे, ण सव्व नावेणसो जम्हा." तथाः– "जिय इवमर इव जीवो, अजयादरस्स निच्छउ; हिंसा पयदस्स नत्थि बंधो, हिंसा मित्तेण समिदस्स"

२ वाक्यनी शुद्धिना अध्ययनने प्रतिपादन करनाराए सावद्य नाषाएटले धूतारा, कामुक एटले कामी, क्रव्याद एटले राक्षस, चोर तथा चार्वाकादि नास्तिक प्रमुखना जेवुं बोलवानो निर्दंन पणे त्याग करीने सर्व जनोने सहेज सम ज्यामां आवे अने सर्वने अनिमत एवुं नाषण करवो ते पण स्वल्प एटले थोडुं नाषण कर्या छतां तेघणा प्रयोजनने साधी शके. अने असंदिग्ध एटले जेमां सं देह उत्पन्न न थाय एवुं जे बोलवुं तेने नाषासमिति कहे छे.

३ गवेषण ग्रहण ग्रासेषणा ते दोषे करी अदूषित अन्नपानादिक रजोहरण त था मुखवस्त्रिकादिक उंघिक उपधि तथा शय्या, पीठफलक वस्त्र, पात्र, दंमादिक औ पग्रहिक उपधिने शुद्ध रीतेजोईने तेनी जे गवेषणा करवी तेने एषणा समिति कहिये.

४ आसन, संस्तारक, पीठफलक, वस्त्र, पात्र तथा दंमकादिक चक्षुए करी निरखी तथा प्रतिलेखना करीने सम्यक्उपयोग पूर्वक रजोहरणादि वमे पुंजीने जे ग्रहण करवुं अने जे निरखेली तथा प्रतिलेखन करेली भूमिनेविषे राखे तेने आदाननिक्षेप समिति कहिये. अनुपयुक्तनी प्रतिलेखना तो पूर्वे पण आदान तथा निक्षेपने विषे शुद्ध समिति न थाय. यदवाचिः- "पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणइ जणवय कहंवा; दोइय पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पमिछइवा. ॥ १ ॥ पुढवी आउक्काए, तेऊवाऊ वणस्सइ तसाणं; पडिलेहणा पमत्तो. उण्हंपि विराहिउ भणिउ. ॥ २ ॥

५ पुरीष एटले मल, प्रस्रवण एटले मूत्र, निष्ठीवन एटले मुखमांथी पडती लाल अथवा थूक, श्लेष्म एटले नाकमांथी नीकलतो सेढो अथवा लीट अने शरीर उपरनो मल तथा अनुपयोगी वसन एटले वस्त्र, अन्न तथा पानादिकनो जे जंतु रहित स्थंमिलनेविषे उपयोग पूर्वक परित्याग करवुं तेने परिष्ठापना समिति कहिये ए पांच समिति थई. ॥ ५७९ ॥

अवतरणः- हवे बार भावनाउनुं प्रतिपादन करे छेः- मूलः- पढम मणिच्च मसरणं, संसारो एगयाय अन्नत्तं; असुइत्तं आसव संवरोय तह निज्जरा नवमी ॥१॥ लोग सहावो बोहिय, दुल्लह धम्मस्स साहगा अरिहा, एयाइ हुंति बारस जहक्कमं भावणीयाउ ॥ ५८० ॥ अर्थः- प्रथमा अनित्य भावना, द्वितीया अशरण भावना; तृतीया संसारभावना; चतुर्थी एकत्व भावना; पंचमी अन्यत्व भावना; षष्ठी अशुचित्वभावना; सप्तमी आश्रव भावना; अष्टमी संवर भावना; नवमी निर्जराभावना; दशमी लोकस्वभावभावना; एकादशी बोधि दुर्लभत्व भावना; अने बारमी धर्मकथकोऽर्हत्भावना. ए बार भावना तेयथाक्रमे एटलेरात्र दिवस भावनीय एटले अभ्यास करवा योग्य छे. एउनुं किंचित् स्वरूप निरूपण करुंछुं.

तत्र प्रथम अनित्य भावना स्वरूपंः- अनुष्टुब्वृत्तम्:- ग्रस्यंते वज्रसारंगास्तेप्यनित्यत्वरक्षसा; किंपुनः कदलीगर्भनिःसारान्नैहि देहिनः ॥ १ ॥ अर्यावृत्तम्:- विषयसुखं दुग्धमिव स्वादयति जनो बिडाल इव मुदितः । नोत्पाटितलकुटमिवोत्पश्यति यममहह किं कुर्मः ॥ २ ॥ अनुष्टुब्वृत्तंः- धराधरधुनीनीरपूरपारिप्लवं वपुः। जंतूनां जीवितं वातधूतध्वजपटोपमं ॥ ३ ॥ लावण्यं ललनालोकलोचनांचलचंचलं। यौवनं मत्तमातंगकर्णतालचलाचलं. ॥ ४ ॥ स्वाम्यं स्वप्नावलीसाम्यं, चपलाचपलाः श्रियः ॥ प्रेमद्वित्रिक्षणक्षेमस्थिरत्वं विमुखं सुखं ॥ ५ ॥ सर्वेषामपि भावानां, भावयन्नित्यनित्यतां; प्राणप्रियेपि पुत्रादौ, विपन्नेऽपि न शोच

ति ॥६॥ सर्ववस्तुषु नित्यत्वग्रहग्रस्तस्तु मूढधीः । जीर्णतार्णकुटीरेपि, नष्टे रोदित्य हर्निशं. ॥ ७ ॥ ततस्तृष्णाविनाशेन, निर्ममत्वविधायिनीं । शुद्धधीर्जावयन्नित्यमि त्यनित्यत्वजावनां. ॥ ८ ॥ इति प्रथमा अनित्यत्व जावना.

अथ द्वितीया अशरणजावनाः– शिखरिणी वृत्तम्ः– पितुर्मातुर्ज्रातुस्तनयदयि तादेश्च पुरतः प्रजूताधिव्याधिव्रजनिगडिताः कर्मचरटैः ॥ रटंतः क्षिप्यंते यममुख गृहांतस्तनुजृतो हहा कष्टं लोकः शरणरहितः स्थास्यति कथं ॥ १ ॥ शार्दूल विक्रीडितं वृत्तम्ः– ये जानंति विचित्रशास्त्रविसरं ये मंत्रतंत्रक्रियाप्रावीण्यं प्रथयं ति येच दधति ज्योतिःकलाकौशलं । तेपि प्रेतपतेरमुष्य सकलत्रैलोक्यविध्वंसनव्यग्र स्यप्रतिकारकर्मणि नहि प्रागल्म्यमाबिभ्रति॥ २॥नानाशास्त्रपरिश्रमोद्भटजटैरावेष्टिताः शत्रवो गत्युद्दाममदांधसिंधुरशतैः केनाप्यगम्याः क्वचित् । शक्रःश्रीपतिचक्रिणोपि सहसा कीनाशदासैर्बलादाकृष्टा यमवेश्म यांति हह हा निस्त्राणता प्राणिनां ॥३॥ उद्दंडं ननु दंडसात्सुरगिरिं पृथ्वीं पृथुच्छत्रसाद्ये कर्तुं प्रजविष्णवः कृशमपि क्लेशं विना नात्मनः॥ निःसामान्यबलप्रपंचचतुरास्तीर्थंकरास्तेप्यहो नैवाशेषजनौघघस्मर मपाकर्तुं कृतांतः क्षमः ॥४॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः– कलत्रमित्रपुत्रादिस्नेहग्रहनिवृत्तये । प्रतिशुद्धमतिः कुर्यादशरण्यत्वजावनां ॥ ५ ॥ इत्यशरणजावना ॥

अथ संसारजावनाः– वृत्तम्ः– सुमतिरमतिः श्रीमानश्रीः सुखी सुखव र्जितः सुतनुरतनुः स्वाम्यस्वामीप्रियः स्फुटमप्रियः ॥ नृपतिरनृपः स्वर्गीतिर्यङ्नरोपि च नारकस्तदिति बहुधा नृत्यत्यस्मिन् जवी जवनाटके ॥ १ ॥ शार्दूलविक्रीडितंवृत्त म् ॥– बध्वा पापमनेककल्मषमहारंजादिजिः कारणैर्गत्वा नारकजूमिषूद्भटतमःसंघ ट्टनष्टाध्वसु । अंगछेदनजेदनप्रहणनक्लेशादिडुःखं महज्जीवो यल्लजते तदत्र गदितुं ब्रह्मापि जिह्मानन: ॥ २ ॥ मायात्त्यार्दिनिबंधनैर्बहुविधैः प्राप्तस्तिरश्चां गतिं सिंह व्याघ्रमतंगजैणवृषजछागादिरूपस्पृशां । क्षुत्तृभावधबंधताडनरुजावाहादिडुःखं सदा यज्जीवः सहते न तत्कथयितुं केनाप्यहो शक्यते! ॥ ३ ॥ खाद्याखाद्यविवेकशून्य मनसोनिस्त्रीकृतालिंगिताः, सेव्यासेव्यविधौ समीकृतधियोनिःशूकतावछ्नाः । तत्रा नार्यनरानिरंतरमहारंजादिजिर्डुःसहं, क्लेशं संकलयंति कर्म च महाडुःखप्रदं चिन्वते ॥ ४ ॥ मर्त्त्याःक्षत्रियवाडवप्रजृतयो येप्यार्यदेशोद्भवा स्तेप्यज्ञानदरिद्रताव्यसनितादौ र्जाग्यरोगादिजिः । अन्यप्रेषणमानजंजनजनावज्ञादिजिश्चानिशं, डुःखं तद्विषहंति यत्कथयितुं शक्यं न कल्पैरपि ॥ ५ ॥ रंजागर्जसमः सुखी शिखिशिखावर्णैर्निरुच्चै रयः, सूचीजिः प्रतिरोमजेदितवपुस्तारुण्यपुण्यः पुमान् । यद्दुःखं लजते तदष्टगुणित

स्त्रीकुक्षिमध्यस्थितौ संपद्येत तदप्यनंतगुणितं जन्मक्षणे प्राणिनां ॥ ६ ॥ बाल्ये मूत्रपुरीषधूलिलुठनाज्ञानादिभिर्निंदिता; तारुण्ये विभवार्जनेष्टविरहानिष्टागमादिव्य था । वृद्धत्वे तनुकंपदृष्टयपटुता श्वासाद्यतुल्यात्मता, तत्का नाम दशास्ति सा सुख मिह प्राप्नोति यस्यां जनः ॥ ७ ॥ सम्यग्दर्शनपालनादिभिरपि प्राप्ते भवे त्रैदशे, जीवाः शोकविषादमत्सरतपस्वल्पर्द्धिकत्वादिभिः । ईर्ष्याकाममदक्षुधाप्रभृतिभिश्चा त्यंतपीडार्दिताः, क्लेशेन क्षपयंति दीनमनसोदीर्घं निजं जीवितं ॥ ८ ॥ अनुष्टुब्वृ त्तम्ः— इत्थं शिवफलाधायि; भववैराग्यवीरुधः । सुधावृष्टिं सुधीःकुर्यादेनां संसार भावनां. ॥ ए ॥ इति संसारभावना ॥

अथ चतुर्थ्येकत्वभावनाः— उपजातिवृत्तम्ः— उत्पद्यते जंतुरिहैकएव, वि पद्यते चैककएव दुःखी, कर्मार्जयत्येककएव चित्र मासेवते तत्फलमेकएव ॥ १ ॥ शार्दूलविक्रीडितम्ः— यज्जीवेन धनं स्वयं बहुविधैः कष्टैरिहोपार्ज्यते, तत्संभूय कलत्रमित्रतनयभ्रात्रादिभिर्भुज्यते । तत्तत्कर्मवशाच्च नारकनरस्ववासितिर्यग्भवेष्वे कः सैष सुदुःस्सहानि सहते दुःखान्यसंख्यान्यहो ॥ २ ॥ जीवो यस्य कृते भ्रमत्यनु दिशं दैन्यं समालंबते, धर्माद्भ्रश्यति वंचयत्यतिहितान्यायादपक्रामति; देहःसो पि सहात्मना न पदमप्येकं परस्मिन् भवे गच्छत्यस्य ततः कथं वदत भोः साहाय्यमाधास्यते ॥ ३ ॥ इंद्रवज्रावृत्तम्ः— स्वार्थैकनिष्ठस्वजनं स्वदेहमुख्यं त तः सर्वमचिंत्य सम्यक्; सर्वत्र कल्याणनिमित्तमेकं, धर्मं सहायं विदधीत धीमान् ॥ ४ ॥ इत्येकत्वभावना ॥

अथ पंचमी अन्यत्वभावनाः— शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम्ः— जीवः कायमपि व्यपा स्य यदहो लोकांतरं याति तद्भिन्नोऽसौ वपुषोपि कैवहि कथा द्रव्यादिवस्तुव्रजे ॥ त स्माच्छिपति यस्तनुं मलयजैर्योहंति दंभादिभिर्यं पुष्णाति धनादिभिश्च हरते तत्रापि साम्यं श्रयेत् ॥ १ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः— अन्यत्वभावनामेवं, यः करोति महामतिः । तस्य सर्वस्वनाशेपि न शोकांशोपि जायते ॥ २ ॥ इत्यन्यत्वभावना ॥

अथ षष्ठ्यशुचित्वभावनाः— आर्यावृत्तम्ः— लवणाकारपदार्थाः पतिता लव णं यथा भवंतीह । काये तथा मलाः स्यु स्तदसावशुचिः सदा कायः ॥ १ ॥ शार्दू लविक्रीमितं वृत्तम्ः— कायः शोणितशुक्रमीलनभवो गर्भे जरावेष्टितो; मात्रास्वादित खाद्यपेयरसकैर्वृद्धिं क्रमात्प्रापितः । क्लिद्यद्धातुसमाकुलः कृमिरुजागंडूपदाद्यास्प दं कैर्मन्येत सुबुद्धिभिः शुचितया सर्वैर्मलैः कश्मलः ॥ २ ॥ सुस्वादं शुभगंधिमो दकदधिक्षीरेक्षुशाल्योदनद्राक्षापर्पटिकामृताघृतपुरस्वर्गच्युताम्रादिकं । भुक्तं यत्सह

सैव यत्र मलसात्संपद्यते सर्वतस्तं कायं सकलाशुचिं शुचिमहो मोहांधिता मन्व ते ॥ ३ ॥ अंजः कुंजशतैर्वपुर्ननुबहिर्मुग्धाः शुचित्वं कियत् कालं लंज यथोत्तमं परिमलं कस्तूरिकाद्यैस्तथा ॥ विष्ठाकोष्टकमेतदंगकमहोमध्ये तु शौचं कथंका रं नेष्यथ सूत्रयिष्यत कथंकारं च तत्सौरजं ॥ ४ ॥ दिव्यामोदसमृद्धिवासित दिशः श्रीखंमकस्तूरिकाकर्पूरागरुकुंकुमप्रजृतयोजावा यदाश्लेषतः । दौर्गंध्यं दधति क्षणेन मलतां चाबिज्रते सोप्यहो देहः कैश्चन मन्यते शुचितया वैधेयतां प श्यत ॥ ५ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः– इत्याशौचं शरीरस्य, विजाव्य परमार्थतः । सुमति र्ममतां तत्र, न कुर्वीत कदाचन. ॥ ६ ॥ इत्यशुचित्वजावना ॥

अथ सप्तम्याश्रवजावनाः– अनुष्टुब्वृत्तम्ः– मनोवचोवपुर्योगाः, कर्म येन शुजाऽशुजं ॥ जविनामाश्रवंत्येते, प्रोक्तास्तेनाश्रवा जिनैः ॥ १ ॥ मैत्र्या सर्वेषु स त्वेषु, प्रमोदेन गुणाधिकः । मध्यस्थेनाविनीतेषु, कृपया दुःखितेषु च ॥ २ ॥ सततं वासितं स्वांतं कस्यचित् पुण्यशालिनः । वितनोति शुजं कर्म द्विचत्वारिंशदात्मकं ॥ ३ ॥ रौद्रार्त्तध्यानमिथ्यात्वकषायविषयैर्मनः । आक्रांतमशुजं कर्म, विदधाति ह्यशीति धा ॥ ४ ॥ सर्वज्ञगुरुसिद्धांतसंघसद्गुणवर्णकम् । कृतं हितं च वचनं, कर्म संचि नुते शुजं ॥ ५ ॥ श्रीसंघगुरुसर्वज्ञधर्मधार्मिकदूषकं । उन्मार्गदेशिवचनमशुजं कर्म पुष्यति ॥६॥ देवार्चनगुरूपास्तिसाधुविश्रामणादिकं । वितन्वति सुगुप्ता च, तनु र्वितनुते शुजं ॥ ७ ॥ मांसाशनसुरापानजंतुघातनचौरिकाः । परदारादिकुर्वाणम शुजं कुरुते वपुः ॥८॥ शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम्ः–एतामाश्रवजावनामविरतं योजावये ज्ञावत स्तस्यानर्थपरंपरैकजनकादुष्टाश्रवौघान्मनः।व्यावृत्त्या खिलदुःखदावजलदे निः शेषशर्मावलीनिर्माणश्रमणे शुजाश्रवगणे नित्यं रतिं पुष्यति॥९॥इतिआश्रव जावना

अथ अष्टमी संवरजावनाः–अनुष्टुब्वृत्तम्ः–आश्रवाणां निरोधो यः, संवरः सप्र कीर्त्तितः । सर्वतोदेशतश्चेति, द्विधा सतु विजिद्यते ॥ १ ॥ अयोगिकेवलिष्वेव, सर्वतः संवरोमतः । देशतः पुनरेकद्विप्रज़ृत्याश्रवरोधिषु ॥ २ ॥ प्रत्येकमपि सद्वेधा द्र व्यजावविजेदतः । यत्कर्म पुजलादानमात्मन्याश्रवतोजवेत् ॥ ३ ॥ एतस्य सर्व देशान्यां, छेदनं द्रव्यसंवरः । जवहेतुक्रियायास्तु त्यागोसौ जावसंवरः ॥ ४ ॥ मि थ्यात्वकषायादीनामाश्रवाणां मनीषिजिः । निरोधाय प्रयोक्तव्या उपायाः प्रतिपं थिनः ॥ ५ ॥ यथाः– मिथ्यात्वमार्त्तरौद्राख्यकुध्याने च सुधीर्जयेत् । दर्शनेनाकलं केन शुजध्यानेन च क्रमात् ॥ ६ ॥ क्षांत्या क्रोधं मृडुत्वेन मानं मायां मृडुत्वतः । सं तोषेण तथा लोजं; निरुंधीत महामतिः ॥ ७ ॥ शब्दादिविषयानिष्टानिष्टांश्च वि

षोपमान् । रागद्वेषप्रहाणेन, निराकुर्वीत कोविदः ॥ ८ ॥ यएतद्भावनाजंगीसौनाग्यं नजते नरः । एति स्वर्गापवर्गश्रीरवश्यं तस्य वश्यतां ॥ ए ॥ इति संवरजावना॥

अथ नवमी निर्जराजावनाः– अनुष्टुब्वृत्तम्ः– संसारहेतुंनूताया, यः क्षयः कर्मसंततेः । निर्जरा सा पुनर्द्वेधा, सकामाकामनेदतः ॥ १ ॥ श्रमणेषु सकामा स्यादकामा शेषजंतुषु । पाकः स्वतउपायाच्च कर्मणां स्याद्यथाम्रवत् ॥ २ ॥ कर्मणां न क्षयोनूयादित्याशयवतां सतां । वितन्वतां तपस्यादि सकामा शमिनां मता ॥ ३ ॥ एकेंड्रियादिजंतूनां संज्ञानरहितात्मनां । शीतोष्णवृष्टिदहनछेदनेदादिनिः सदा ॥ ४ ॥ कष्टं वेदयमानानां, यः शाटो कर्मणां नवेत् । अकामनिर्जरामेनामामनंति मनीषिणः ॥ ५ ॥ तपः प्रनृतिनिर्वृद्धिं, व्रजंती निर्जरा यतः । ममत्वं कर्मसंसारं, हन्यात्तां नावयेत्ततः ॥ ६ ॥ इति निर्जराजावना ॥

अथ दशमी लोकस्वनावजावनाः–आर्यावृत्तम्ः–वैशाखस्थानस्थित कटिस्थकरयुगनराकृतिर्लोकः । नवति ड्व्यैः पूर्णस्थित्युत्पत्तिर्व्ययाक्रांतिः ॥ १ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः– ऊर्ध्वतिर्यगधोनेदैः, सा त्रिधा जगदे जिनैः । रुचकादष्टप्रदेशा मेरुमध्यव्यवस्थितात् ॥ २ ॥ नवयोजनशत्यूर्ध्वेअधोनागेपि सा तथा । एतत्प्रमाणकस्तिर्यक् लोकश्चित्रपदार्थनृत् ॥ ३ ॥ ऊर्ध्वलोकस्तडपरि सप्तरज्जुप्रमाणकः । एतत्प्रमाणसंयुक्तश्चाधोलोकः प्रकीर्त्तितः ॥ ४ ॥ रत्नप्रजा प्रनृतयः, पृथिव्यः सप्त वेष्टिताः । घनोदधिघनवाततनुवातै स्तमोघनाः ॥ ५ ॥ तृष्णाक्षुधावताघातनेदनछेदनादिनिः । ड्ःखानि नारकास्तत्र, वेदयंति निरंतरं ॥ ६ ॥ प्रथमः पृथवीपिंमो योजनानां सहस्रकः । अशीतिर्लक्षमेकं च, तत्रोपरि सहस्रकं ॥ ७ ॥ अधश्च मुक्त्वा पिंमस्य, शेषस्याभ्यंतरे पुनः । नवनाधिपदेवानां, नवनानि जगुर्जिनाः ॥ ८ ॥ असुरा नागास्तमितः सुपर्णा अग्नयोनिलः । स्तनिताब्धि द्वीपदिशकुमारांतादशेति ते॥ ए ॥ व्यवस्थिताः पुनः सर्वे दक्षिणोत्तरयोर्दिशोः । तत्रासुराणां च मेरोर्दक्षिणावासिनां विज्ञः ॥ १० ॥ उदीच्यानां बलिर्नागकुमारादेर्यथाक्रमं । धरणो नूतानंदश्च, हरिहरिसहस्तथा ॥ ११ ॥ वेणुदेवो वेणुदाली चाग्निशिखाग्निमाणवौ । वेलंबप्रनंजनश्च सुघोषमहाघोषकौ ॥ १२ ॥ जलकांतोजलप्रनस्ततः पूर्णोवशिष्टकः । अमितोमितवाहन इंड्रा ज्ञेया ड्योर्दिशोः ॥ १३ ॥ आर्यावृत्तम्ः– अस्याएव पृथिव्या उपरितने मुक्तयोजनसहस्रे । योजनशतमधउपरि च, मुक्त्वाष्टसु योजनशतेषु ॥ १४ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः– पिशाचाद्यष्टनेदानां व्यंतराणां तरस्विनां । नगराणि नवंत्यत्र दक्षिणोत्तरयोर्दिशोः ॥ १५॥ पिशाचानूतयक्षाश्च, राक्षसाः किन्नरास्तथा । किंपुरुषा महो

रगा गंधर्वा इति चाष्टधा ॥ १६ ॥ दक्षिणोत्तरभागेन, तेषामपि च तस्थुषां। द्वौ द्वा विंद्रौ समाम्नातौ, यथासंख्यं सुबुद्धिभिः ॥ १७ ॥ कालस्ततोमहाकालः सुरूपप्रति रूपकः । पूर्णभद्रो माणिभद्रो, भीमो भीमो महादिकः ॥ १८ ॥ आर्यावृत्तम्ः—कि न्नरकिंपुरुषौसत्पुरुषमहापुरुषनामकौ तदनु । अतिकायमहाकायौ, गीतरतिश्चै व गीतयशाः ॥ १९ ॥ अस्याएव पृथिव्या, उपरि च योजनशतं हि यन्मुक्तं । त न्मध्यादधउपरि च योजनदशकं परित्यज्य॥ २० ॥ मध्ये शीताविह योजनेषु तिष्ठं ति वनचरनिकायाः ॥ अप्रज्ञप्तिकमुख्याअष्टावल्पार्द्धिकाः किंचित् ॥ २१ ॥ अनु ष्टुब्वृत्तम्ः— अत्र प्रतिनिकायं च, द्वौ द्वाविंद्रौ महाद्युती । दक्षिणोत्तरभागेन, वि ज्ञातव्यौ मनीषिभिः ॥ २२ ॥ आर्यावृत्तम्ः— योजन लक्षोन्नतिना, स्थितेन मध्ये सुवर्णमयवपुषा । मेरुगिरिणावशिष्टे, जंबु द्वीपे भवंत्यत्र ॥ २३ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम् वर्षाणि भारतादीनि, सप्तवर्षधरास्तथा । पर्वताहिमवन्मुख्याः षट्शाश्वतजिना लयाः ॥ २४ ॥ आर्यावृत्तम्ः— योजनलक्षप्रमिता जंबु द्वीपात्परो द्विगुणमानः । ल वणसमुद्रः परतस्तद्विगुणद्विगुणविस्तारः ॥ २५ ॥ अनुष्टुब्वृत्तम्ः— बोद्धव्या धा तुकीखंमकालोदध्या असंख्यकाः। स्वयंभूरमणांताश्च, द्वीपवारिधयः क्रमात् ॥ २६ ॥ प्रत्येकरससंपूर्णा श्चत्वारस्तोयराशयः । त्रयोजलरसा अन्ये सर्वेपीक्षुरसाः स्मृ ताः ॥ २७ ॥ सुजातपरमद्रव्य, हृद्यमद्यसमोदकः । वारुणीवरवार्द्धिः स्यात्, क्षीरोदजलधिः पुनः ॥ २८ ॥ सम्यक्क्थितखंमादि सुग्धदुग्धसमोदकः । घृतव रः सुतार्पितनव्यगव्यघृतोदकः ॥ २९ ॥ लवणाब्धिस्तु लवणास्वादपानीयपूरितः कालोदः पुष्करवरः स्वयंभूरमणस्तथा ॥ ३० ॥ मेघोदकरसाः किंतु कालोदजल धिर्जलं । कालं गुरुपरिणामं, पुष्करोदजलं पुनः ॥ ३१ ॥ हितं लघुपरिणामं, स्वच्छस्फटिकनिर्मलं; स्वयंभूरमणस्यापि, जलधेर्जलमीदृशं ॥ ३२ ॥ त्रिभागाव र्तसुचतुर्जातकेक्षुरसोपमं । शेषासंख्यसमुद्राणां, नीरं निगदितंजिनैः ॥ ३३ ॥ स मभूमितलादूर्ध्वं, योजने शतसप्तके । गते नवतिसंयुक्ते, ज्योतिषां स्यादतिस्थलं ॥ ॥ ३४ ॥ तस्योपरि च दशसु योजनेषु दिवाकरः। तद्युपर्यशीतिसंख्ययोजनेषु निशाक रः ॥ ३५ ॥ तस्योपरि च विंशत्यां योजनेषु ग्रहादयः । स्यादेव योजनशतं ज्यो तिर्लोको दशोत्तरं ॥ ३६ ॥ जंबु द्वीपे भ्रमंतौ च, द्वौ चंद्रौ द्वौ च भास्करौ; चत्वारो लवणांभोधौ चंद्राः सूर्याश्च कीर्त्तिताः॥ ३७ ॥ धातकीखंमके चंद्राः सूर्याश्च द्वा दशैव हि । कालोदे द्विचत्वारिंशच्चंद्राः सूर्याश्च कीर्त्तिताः ॥ ३८ ॥ पुष्करार्द्धे द्विस प्ततिश्चंद्राः सूर्याश्च मानुषे । क्षेत्रे द्वात्रिंशमिंदूनां, सूर्याणां च शतं भवेत् ॥ ३९ ॥

मानुषोत्तरतः पंचाशद्योजनसहस्त्रकैः। चंद्रैरंतरिताः सूर्याः सूर्यैरंतरिताश्च तौ ॥४०॥ मानुषोत्तरचंद्रार्कप्रमाणार्द्धप्रमाणकाः । तत्क्षेत्रे परिधिर्वृद्ध्या वृद्धिमंतश्च संख्य या ॥ ४१ ॥ स्वयंभूरमणं व्याप्य, घंटाकारा असंख्यकाः । शुभलेश्या मंदलेश्या स्तिष्ठंति सततं स्थिराः ॥ ४२ ॥ समभूमितलादूर्ध्वं, सार्द्धरज्जौ व्यवस्थितौ । क ल्पावनल्पसंपन्नौ, सौधर्मैशानमानकौ ॥ ४३ ॥ सार्द्धरज्जुद्वये स्यातां, समानौ द क्षिणोत्तरौ । सनत्कुमारमाहेंद्रौ, देवलोकौ मनोहरौ ॥ ४४ ॥ ऊर्ध्वलोकस्य म ध्ये च, ब्रह्मलोकः प्रकीर्त्तितः । तदूर्ध्वलांतकः कल्पो महाशुक्रस्ततः परं ॥ ४५ ॥ देवलोकः सहस्रारोयाष्टमोरज्जुपंचके । एकेंद्रौ चंद्रवद्वृत्तावानतप्रणतौततः ॥ ॥ ४६ ॥ रज्जुषष्ठे ततः स्यातामेकेंद्रावरुणाच्युतौ । चंद्रवद्वर्तुलाश्चैवं, कल्पाद्वा दश कीर्त्तिताः ॥ ४७ ॥ ग्रैवेयकास्ततोध्वस्ता स्त्रयोमध्यमकास्तथा। त्रयस्योपरित नाः स्युरितिग्रैवेयकानव ॥ ४८ ॥ अनुत्तरविमानानि, तदूर्ध्वं पंच तत्र च। प्रा च्यां विजयमप्राच्यां वैजयंती प्रचक्ष्यते ॥ ४९ ॥ प्रतीच्यां तु जयंताख्यमुदीच्या मपराजितम् । सर्वार्थसिद्धं तन्मध्ये सर्वोत्तममुदीरितम् ॥ ५० ॥ स्थितिप्र भावलेश्याभिर्विशुद्ध्यवधिदीप्तिभिः। सुखादिभिश्च सौधर्माद्यावत् सर्वार्थसिद्धकं ॥ ५१ ॥ पूर्वपूर्वस्त्रिदेशेभ्यस्ते धिकाउत्तरोत्तरे । हीनहीनतरा देहगतिसर्वपरिग्रहैः ॥ ५२ ॥ घनोदधिप्रतिष्ठाना विमानाकल्पयोर्द्वयोः । त्रिषु वायुप्रतिष्ठानास्त्रिषु वा युदधिस्थिताः ॥ ५३ ॥ ते व्योमविहितस्थानाः, सर्वेप्युपरिवर्त्तिनः । इत्यूर्ध्वलोकवि मानप्रतिष्ठानविधिः स्मृतः ॥ ५४ ॥सर्वार्थसिद्धा द्वादशयोजनेषु हिमोज्वलाः। योज नपंचचत्वारिंशल्लक्षायामविस्तराः ॥ ५५॥ मध्येष्टयोजनपिंडा शुद्धस्फटिकनिर्मला। सिद्धशिलेषत्प्राग्भारा, प्रसिद्धा जिनशासने॥५६॥तस्या उपरिगव्यूतत्रितयेतिगते सति । तुर्यगव्यूतिषड्भागे, स्थिता सिद्धानिरामयाः ॥ ५७ ॥ अनंतसुखविज्ञानवीर्यस दर्शनाः सदा; लोकांतस्पर्शिनोन्योन्याविगाढाःशाश्वताश्च ते ॥ ५८ ॥शार्दूलविक्रीडितं वृत्तम्ः— एवं भव्यजनस्य लोकविषयामभ्यस्यतोभावनां, संसारैकनिबंधनेन विषयग्रा मे मनो धावति । किंत्वन्योन्यपदार्थभावनसमुन्मीलत्प्रबोधोकुरं धर्मध्यानविधाविह स्थिरतरं तज्जायते संततं ॥ ५९ ॥ इति लोक स्वभाव भावना.

अथैकादशमी बोधिदुर्लभभावनाः— शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम्ः—पृथ्वीनीरहुताशवा युतरुषु क्लिष्टो निजैः कर्मभिर्भ्राम्यन्भीमभवेत्र पुद्गलपरावर्त्ताननंतानहो। जीवः काममका मनिर्जरतया संप्राप्य पुण्यं शुभं प्राप्नोति त्रसरूपतां कथमपिद्वित्रींद्रियाद्यामिह ॥१॥ आर्यक्षेत्रसजातिसत्कुलवपुर्नीरोगतासंपदो राज्यं प्राप्य सुखं च कर्मलघुताहेतोरवाप्नो

त्ययं तत्वातत्वविवेचनैककुशलां बोधिं न तु प्राप्तवान् कुत्राप्यक्षयमोक्षसौख्यजननीं श्री सर्वविद्देशितां॥ २॥ अनुष्टुब्वृत्तम्:—बोधिर्लब्धा यदि नवेदेकदाप्यत्र जंतुभिः । इयत्का लं न तेषां तद्भवे पर्यटनं नवेत् ॥ ३ ॥ इव्यचारित्रमप्येतैर्बहुशःसमवाप्यते । संज्ञान कारिणी क्वापि न तु बोधिः कदाचन ॥४॥ ये सिद्धा ये च सिध्यंति ये सेत्स्यंति च केच न । ते सर्वे बोधिमाहात्म्यात्तस्माद्बोधिरुपास्यतां ॥ ५ ॥ इति बोधिदुर्लभनावना.

अथ द्वादशमी धर्मकथकोऽर्हन्निति नावनाः— अर्हंतः केवलालोकालोकितालोक लोकिकाः । यथार्थं धर्ममाख्यातुं परिष्ठानपुनःपरे. ॥ १ ॥ वीतरागाहि सर्वत्र पदार्थे करणोद्यताः । न कुत्राप्यनृतं ब्रूयुस्ततस्तद्धर्मसत्यता॥ २॥ क्षांत्यादिनेदैर्धर्मं च दशधा ज गङ्जिनाः। यं कुर्वन् विधिनाजंतुर्नवाब्धौ न निमज्जति ॥३॥ पूर्वापरविरुद्धानि हिंसा देः कारणानि च । वचांसि चित्ररूपाणि, व्याकुर्वद्भिर्निजेह्नया. ॥४॥ कुतीर्थिकैः प्रणी तस्य सजतिः प्रतिपंथिनः । धर्मस्य सकलस्यापि कथं स्वाख्याततां नवेत् ॥५॥ यच्च य त्समये क्वापि दयासत्यादिपोषणं ॥ दृश्यते तद्वचोमात्रं बुधैर्ज्ञेयं न तत्वतः ॥ ६ ॥ शा र्दूलविक्रीडितंवृत्तः—यत्प्रोद्दाममदांधसिंधुरघटं साम्राज्यमासाद्यते यन्निःशेषजनप्रमो दजनकं संपद्यते वैनवं । यत्पूर्णेंदुसमद्युतिर्गुणगणः संप्राप्यते यत्परं सौनाग्यं च विजृं नते तदखिलं धर्मस्य लालायितं॥ ७॥यन्नाप्लावयति क्षितिं जलनिधिःकल्लोलमालाकु लो यत्पृथ्वीमखिलां धिनोति सलिलासारेण धाराधरः॥यच्चंद्रोष्णरुची जगत्युदयतः सर्वांधकारिह्निदौतन्निःशेषमपि ध्रुवं विजयते धर्मस्य विस्फूर्जितं ॥८॥ शिखरिणीवृत्त म्:— अबंधूनां बंधुः सुहृदसुहृदां सम्यगगदोगदार्तिक्रांतानां धनमधननावार्त्तमनसां॥ अनाथानां नाथोगुणविरहितानां गुणनिधिर्जयत्येकोधर्मः परमिह हितव्रातजन कः ॥ ए॥ अनुष्टुब्वृत्तं.— अर्हता कथितोधर्मः सत्योयमिति नावयेत् ॥ सर्वसंपत् करे धर्मे धीमान् दृढतरो नवेत् ॥ १० ॥ इति धर्मकथकोर्हन्निति नावना.

शार्दूलविक्रीडितंवृत्तम्:— एकामप्यमलामिमां सुसततं योनावयेद्भावनां नव्यः सोपि निर्दंत्यशेषकलुषं दत्वा सुखं देहिनां ॥ यस्त्वन्यस्तसमस्तजैनसमयस्ता द्वादशा प्यादरादभ्यस्येल्लनते ससौख्यमतुलं किं तत्र कौतूहलं ॥ १॥ अर्थः— ए बार नाव नामांनीकोईएक अमल नावना जे नव्य निरंतर नावे ते पण ते देहीने सुख द ईने अशेष कलुष एटले वधा पापोनो नाश करे तो जे समस्त जैनसिद्धांतोनो अ न्यास कस्यो बतां अति आदरेकरी वारे नावनाओनो अभ्यास करे ते अतुल सौ ख्यने पामे तेमां आश्चर्य शुं!॥ १ ॥ इति द्वादशनावनाः समाप्ताः ॥ ५८१ ॥

अवतरणः— हवे प्रतिमानुं प्रतिपादन करेछेः— मूलः— मासाई सत्तंता पढमा

बिइय तइय सत्तराइ दिणा । अहराइ एगराई, भिक्खु, प्पडिमाण बारसगं ॥५७२॥ अर्थः- एक मास प्रमुख आदि दईने सात मासनी सातमी प्रतिमा थाए छे जेनुं एक मासनुं परिमाण होय तेने मासिकी प्रथमा प्रतिमा कहेछे. एम द्विमासिकी द्वितीया, त्रिमासिक तृतीया ते यावत् सप्तमासिकी सप्तमी जाणवी. पढमा बिइय तईय सत्तराइदिणत्ति एटले ते सात प्रतिमाओनी ऊपर प्रथमा एटले आठमी, द्वितीया एटले नवमी अने तृतीया एटले दशमी ए त्रण प्रतिमाओ सातसात रात्रि दिवसनी थायछे. अहराइति- जेनुं अहोरात्रनुं परिमाण होय तेने अहोरात्रिकी कहियें. एवी एकादशमी प्रतिमा जाणवी. एगराइत्ति-जेनुं एक रात्रिनुं परिमाण होय तेने एक रात्रिकी कहियें. एवी द्वादशमी प्रतिमा जाणवी. एवीरीते साधुनीप्रतिज्ञाविशेष ते भिक्षुप्रतिमा बार थाय छे. ॥ ५७२ ॥

अवतरणः- हवे ए प्रतिमाओनो पडिवज्जणहार कहेछेः- मूलः- पडिवज्जइ एआओ, संघयणधिई जुओ महासत्तो; पडिमाउ भाविअप्पा, सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ ५७३॥ गच्छेच्चिय निम्माउ, जा पुव्वादसभवे असंपुन्ना; नवमस्स तइयवत्थुं, होइ जहन्नो सुयाभिगमो ॥ ५७४ ॥ वोसट्ठचत्त देहो, उवसग्गा सहो जहेव जिणकप्पी; एसण अभिग्गहिया, भत्तं च अलेवडं तस्स ॥ ५७५ ॥ अर्थः- कहेली प्रतिमाओनो अंगीकार करनार ते वज्रऋषभ नाराच संघयण युक्त होय तेथी अत्यंत परिसह सहन करवाने समर्थ थाय. वली धृति एटले चित्तनी स्वस्थता युक्त थकोहोय तेथी रति अरति प्रमुखवडे पीडाने पामे नही. त्रीजुं महासत्व एटले घणो साहासिक होय ते निश्चेकरी अनुकूल तथा प्रतिकूल जे उपसर्गो तेनेविषे हर्ष तथा विषादने पामे नही.चोथुं भाविअप्पा के० भावितात्मा एटले सद्भावनाए करी भावित अंतःकरणवालो अथवा प्रतिमानुष्ठाने करी भावितात्मा जाणवो. ते भावना पांच तुलनाएकरी थायछे. तद्यथाः-' तवेण सुत्तेण सत्तेण एगत्तेण बलेणय. तुलणा पंचहा वुत्ता, पडिमं पडिवज्जओ॥१॥ एवी व्याख्या पूर्वे कही आवेला छैये ते प्रमाणे जाणवी. तथा सम्मंके० सम्यक् यथागमजे गुरुणाके० गुरुतेनी अणुन्नाउके० अनुमत लइने ॥ ५७३ ॥ गुरुनाअभावे स्थापनाचार्य अथवा गच्छना अनुमतेकरीने निम्माओ के० निश्चेयकी गच्छ जे साधुसमुदाय तेनेविषे रहीने आहारादिकनेविषे प्रतिमा कल्प परिकर्मणाएकरी परिनिष्ठित थाय. आहचः-' पडिमा कप्पिय तुल्लो, गच्छेच्चिय कुणइ डुविह परिकम्मं; आहारो वहिमाइसु, तहेव पडिवज्जईकप्पं' आहारादि प्रतिकर्म आगलनी गाथामां कहेशे. परिकर्मभुंजे परि

माण. ते मासिकादिक सातनेविषे यावत् परिमाण प्रतिमाओ छे ते प्रतिमानुं ते परिकर्म समजवुं. तथा वर्षाऋतुनेविषे ए प्रतिमाओनो अंगीकार थतो नथी. माटे तेनो परिकर्मकरे नही. तथा आदिनी बे प्रतिमाते एक वर्षमां, त्रीजी अने चोथी प्रतिमां एक एक वर्षमां अने बाकीनी त्रण प्रतिमाओ अन्यत्र वर्षनेविषे परिकर्म प्रतिपत्ति जाणवी. एरीते सात प्रतिमाओ नववर्षे पूरण थायछे, हवे तेने केटलो श्रुताभिगम थायछेः– ते कहेछे यावत्दश पूर्व, असंपूर्ण एटले कांईक उणा समजवा. संपूर्ण दश पूर्वधर जे होय ते तो अमोघ वचनने लीधे धर्मदेशनादिकेकरी भव्यने उपकार कारित्वने लीधे तीर्थनी वृद्धि करवानेअर्थे प्रतिमा कल्प न पडिवज्जे. एम उत्कृष्ट श्रुताधिगम जाणवो. अने जघन्य तो नवमां पूर्वना तृतीय आचार वस्तु सुधी श्रुताधिगम जाणवो. एवा श्रुतथी रहित होय तो निरतिशय ज्ञानपणाने लीधे ते कालादिकने जाणे नही. ॥ ५७४ ॥ तथा संस्कारना अभावने लीधे शरीरनी ममता जेणे त्यागी दीधी छे. तथा देव मनुष अने तिर्यग्ना उपसर्ग जिनकल्पीने पठे सहन करनारो होय. तथा एषणापिंड ग्रहणनो प्रकार सात प्रकारे होय ते कहेछे उक्तंच संसठ्ठम संसठ्ठा, उद्धड तह अप्पलेवडाचेव; उग्गहिया पग्गहिया, उज्झिय धम्मा य सत्तमिया. एनो अर्थः– ए वक्ष्यमाणस्वरूपे आम गृहण कर्युं छे; जे गृहण करनारा छे ते आम गृहण करे. ते सात एषणा मध्ये आद्यनी बेनुं गृहण करवुं नही, अने पछीनी पांचनुं गृहण करवुं. तेमां वली विवक्षित दिवसे अंतनी ते पांचमां बेनुं ग्रहण करवुं. एक भक्तनेविषे अने एक पाननेविषे. तथा भक्त ते अन्न जाणवुं. ते अलेपकृत एटले अलेपकारक वल्ल तथा चणकादिकजाणवुं ते प्रतिमानी प्राप्तिनी इच्छानो परिकर्म करवावालो; च शब्दे एने उपधि पण बे एषणानी होय अने तेना अभावे यावत् उचित करेलानी प्राप्ति थाय. त्यारपछी ते कारण सिद्ध थाय तो तेने मूकी दिये. उक्तंचः– उवगरणं सुद्धेसण, माणजुअं जमुचिअं सकप्पस्स; तं गिण्हइ तय भावे, अहागडं जाव उचियंतु. ॥ जांए उचिएथितयं, वोसिरइ अहागडं विहाणेण; इय आणानिरयस्सिह, विन्नेयं तंपि तेणसमं. ॥ कल्पनेविषे उचित उपधिने, ते पोतानी बे एषणाए करी ग्रहण करेछे. ए एषणा चार ते अंतनी समजवी ते आप्रमाणेः– प्रथम कपासिकनुं वस्त्र गृहण करेलुं बीजुं मूकी दीधेलुं, त्रीजुं ओढवा प्रमुखथी परिभोगेलुं होय ते; अने चोथुं ते मूकी देवाना जेवो होय ते. एवीरीते कृतपरिकर्म जे करे छे तेज कहेछे. ॥ ५७५ ॥

मूलः– गच्छाविणिरक मित्ता, पडिवज्जइ मासियं महा पडिमं; दत्तेग भोयणस्स

पाणस्स तह एग नवे. ॥ ५७६ ॥ जह्नहमेइसूरो, नतउंगणा पयंपि संचिलई; नोएग राइवासी, एगंच डुगंच अन्नाए ॥५७७॥ डुठाए हत्थिमाइए, नोनएणं प यंपि उसरइ, इय माईनियम सेवि, विहरइजा खंमिओमासो ॥ ५७८ ॥ अर्थः– पठी ते गह्नने मूकी दिये. तत्र जो ते पोतेआचार्यादि होय तो जेने प्रतिमानी प्राप्ति थई होय एवा बीजा कोई साधुने पोताना पदनेविषे थोडा कालसुधी स्थापे अने पठी शुन इव्यादिक शरत्कालादिकनेविषे सकल साधुउने आमंत्रण करी क्षामण पूर्वक उक्तंचः– खामेई तउ संघं, सबालवुड्ढं जहो चियं एवं, अच्चंतसंविग्गो; पुव्वविरुद्धे विसेसेणं. । जं किंचि पमाएणं, न सुठ्ठुने वट्टियं मएपुविं; तंने खामेमि अहं, निस्सल्लो निक्कसाउत्ति. । एम गह्नमांथी नीकलीने मासिकी एटले एक मास प्रमाणनी महाप्रतिमा एटले मोटी प्रतिज्ञा अंगीकार करे तत्र एक अविछिन्न दानरूप जे एकज जातनो नोजन होय तेवो अन्नलिये ते पण अज्ञात एटले न जाणेलुं होय वली वीणेलुं होय ते. तथा उद्वृत्ता एटले वधेलो होय तेपण पाठली पांच एषणायेकरी सहित होय अने अलेपकारी, होय कृपणपण जेनी इह्ना नकरे वली जेनो एकज धणी होय अने दातृगर्नवंती होय, बालकोनी माता होय, तथा पीयमान स्तनवाली होय तो ते एक पदमांहे मूकीने बीजु बाहार राखी दीये तेपण एक जणी आपनार होय तो लिये तथा पान पदार्थनुं अहार पण एकज आपनार होय तो लीये तत्र मासिक प्रतिमा एक दाती थाय. जल, स्थल तथा पर्वतादिकनेविषे ज्यां सुधीसूर्य होय त्यां सुधीचाले॥५७६॥ पठी जह्नहमेईसूरेके० ज्यांसूर्यअस्त थाय त्यांथी एक पग मात्र पण आघो न चाले तथा जो आ प्रतिमापन्न ठे एवी रीते लोकोने जाण्यामां आवी गयुं होय, तो त्यां ते एग राइवासिके० एक अहोरात्र वास करे पण एथी वधारे काल सुधी रहे नही. तथा अन्नाएके० बीजा जे ग्रामादिक ज्यां एवी खबर न होय के आ प्रतिमा प्रतिपन्न ठे; त्यां एक दिवस एक रात्र अथवा बे दिवस बे रात्रि सुधी रहे वधारे वास करे नही.॥५७७॥तथा डुठाणहत्थि माईएके० डुष्ट हस्ति सिंह अने व्याघ्रादिक मारणहाराजे पशुउतेनाथी नयएणं पयंपिउसरईके० मरणनी नीतिएकरी एक पग पण आगल न उसरे केम के जो तेनानयथी साधु आगल नयेकरी दोडे तेथी, तथा तेनी पाठल ते डुष्ट जनावर दोडे तेथी हरितादिक जीवोनी विराधना थाय अने जो अडुष्ट पशु दीगमां आवे तो साधु पोताने मार्गे चाल्यो जाय. तेथी हरितादिकनी विराधना थाय नही इयमायनियमसेविके० इत्यादिक नियमनो सेवनारो थयो थको आदि शब्दे करी तडकाथी ठायडामां

न जाय अने गायडामांथी तडकामां न आवे इत्यादिक अभिग्रहवान थयो थको विहरईके० ज्यां सुधी महीनो पुरो न थाय त्यां सुधी ग्रामानु ग्रामे विहार करे जा अखंमियंमासोके० ते यावत् अखंमित परिपूर्ण मास थाय त्यां सुधी जाणवुं. आदि शब्दथी बीजा पण घणा नियमो जाणवा. जेम के, संस्तारक उपाश्रय मा गवाने अर्थे, संशय उत्पन्न थयाथी सूत्रार्थ पूछवाने अर्थे, गृहादि पूछवाने अर्थे तृण काष्ठादिनी अनुज्ञा मागवाने अर्थे पूछेलो जे सूत्रार्थ तेनो जवाब ते आचा र्य अथवा बीजाने कहेवा सारु एक अथवा बे वखत प्रतिमा प्रतिपन्न दिये अन्य था नाषांतर करे नही. तथा आगंतुक आगार, विवृत गृह तथा वृक्षमूल लक्ष ण ए त्रण ठेकाणे वसति करे. अन्यत्र वास करे नही. तेमां आगंतुकागार एटले कार्पटिक लोक आवीने वसे, विवृत गृह एटले नीचे कुटीनो अनाव होय अने उ पर आछादननो अनाव होय ते अनावृत जाणवुं. अने वृक्षमूल एटले ज्यां सा धुने त्याग करवा योग्य दोषो प्राप्त न थाय एवा करीरादिकना वृक्षना थंडमां जाणवुं. उक्तंचः— जायण पुछाणुंन्नवण पुडवागरण नासगो चेव; आगमण विय ड गिह रुरकमूलगा वासयतिगोत्ति. तथा अग्नि थकी नयपामे नही उपाश्रयादिक मां आग प्रदित थयाथी त्यांथी नाशी जाय नही कदाचित् ते गृहादिकमांथी को ई खेंचीने कहाडे तो ते जाय पण खरो अने पगमां लागेलुं कांटुं तथा रेती प्रमु ख कहाडी नाखे नही. आंखमां पडेली रेणु तृण तथा मलादिक कहाडे नही. तथा हाथ पग अने मुखादिक अंग प्रासुक जलेकरी धोए नही. बीजा साधुउ पु ष्टालंबने धोए तो नले; पण पोते धोए नही. ॥ ५८७ ॥

मूलः— पछा गछ मुवेई, एव डुमासी तिमासि जा सत्त; णवरं दत्ती वड्डइ, जा सत्त उसत्त मासीए. ॥ ५८८ ॥ अर्थः—पछाके० ते मास पूरो थया पछी गछमुवेई के० गछ एटले साधुनो समूह तेना स्थाननी पाशेना ग्राममां आवे त्यां आचार्या दिकने वात प्रगट करे, ते आचार्य राजाने जणावे, के प्रतिमानुं जेणे पालन क र्युं छे एवो अमुक साधु अही आव्योछे. त्यार पछी नृपादिक लोक अथवा श्रमण संघेकरी अनिवंद्यमान थयो थको ते गछमां प्रवेश करे. ते तपना बहुमानने अ र्थे तथा बीजाने श्रद्धानी वृद्धि थवाने अर्थे, तथा प्रवचननी प्रनाववाने अर्थे जाणवुं. एम प्रथमा प्रतिमा कही हवे बाकीनी छ प्रतिमाउ कहेछेः—एव डुमासी तिमासिके० एवी रीते एज क्रमे करी द्विमासिकी तथा त्रिमासिकी प्रमुख जासत्त के० ज्यां सुंधी सात मासिकी प्रतिमा थाय त्यां सुंधी जाणवो तेमां णवरंके० एट

लो विशेषछे जे प्रथम मासिकनी जे प्रतिमा छे तेना करतां द्विमासिकी प्रमुख प्रतिमांउमा 'दत्तयस्तासु वर्द्धते एटले दात्तिनी वृद्धि थाय छे द्विमासिकीनेविषे बे दात्ति, त्रिमासिकीनेविषे त्रण एम जासत्तउसत्तमासिएके० यावत् सात दत्तिउ पाणीनी अने नोजननी ते सात मासिकी प्रतिमामां होय एम जाणवुं.॥५७ए॥

अवतरणः– हवे अष्टमी प्रतिमा कहेछेः– मूलः– तत्तोय अठमीए नवई इहपढम सत्त राइंदि, तीए चउछ चउछेण पाणएणं अह विसेसा ॥ ५ए० ॥ उत्ताणग पासल्ली, नेसज्जि वावि ठाण ठाइत्ता; सहउवसग्गे घोरे, दिव्वाई तछ अविकंपो॥५ए१॥अर्थः–त्यार पछी सप्तमी अनंतर अष्टमी प्रतिमा ते सप्त अहो रात्रिनी थाय छे. ए प्रतिमानेविषे चतुर्थ नक्त ते एकांतरे एकांतरे पाणएण के०पाणी रहित चउविहार करे. हवे पूर्वे कही आवेली प्रतिमाउथी अहविसेसाके०एटलो विशेष नेद छे अही पारणे आंबिल करवुं; दत्तिनो नियम नथी.॥५ए०॥तथा उत्ताणगके० ऊंचे मुखे सूर्य सन्मुख काउसग्गादि करे अने पासल्ली एटले पूठ वाली नूमिये अणफरसतोरहे अने गरुमासन अथवा वीरासन वाली बेसे वावि ठाणठाइत्ताके० अथवा ऊनोजरहे. गामथी बाहार रह्यो थको, सहउवसग्गे घोरेके० उपसर्ग उपद्रव घोर रौद्र देवादि संबंधी सहनकरे. दिव्वाई तछ अविकंपोके० द्रव्य क्षेत्र काल नाव आश्रित मन तथा कायाये करी निःप्रकंप थको रहे. ॥ ५ए१ ॥

अवतरणः– हवे नवमी प्रतिमा कहेछेः– मूलः–दोच्चा विएरि सच्चिय, बहिया गामाइयाण नवरं तु; उक्कड लगंडसाई, दंमायय उच्च ठाइत्ता ॥ ५ए२ ॥ अर्थः– बीजी एटले नवमी प्रतिमा ते पण सात अहो रात्रीनी अने एवीज रीते तप अने पारणाएकरी सरखी जाणवी अने बहिर्वृत्तियें पण सरखा पणेज कही छे बाहिर ते ग्रामादिक अने संनिवेश विशेषे जाणवुं एमां नवरंतु के०केवल आटलुं विशेष छे जे उक्कड के०ऊकडुं बेशे लगंम शब्दे वांका पडेला लाकडानी पठे सूवे एवो जे होय तेने लगंडशायी कहिये एटले मस्तक अने पगनी पेनीयें अथवा पीठ वडे पाउला देशने नूमिना नागने स्पर्शी करी सूवे दंमवत् एटले लाकडीनी पठे लांबो थई पग पसारी नूमिनी उपर नाखेलुं शरीर तेने दंमायत कहिये. ए रीते लांबो थई सूवे इहां वा शब्द विकल्पार्थे छे. ते वाके० अथवा एवी स्थितिए करी रहेतो थको देवादिकना करेला उपसर्गोने सहन करे. ॥ ५ए२ ॥

अवतरणः– हवे दशमी प्रतिमा कहेछेः– मूलः– तच्चाविएरि सिच्चिय नवरं ठाणं तु तस्स गो दोही; वीरासण महवावी, ठाइज्जा अंब खुज्जोवा ॥ ५ए३ ॥

अर्थः—सातमी थकी त्रीजी एटले दशमी प्रतिमा पण सप्तरात्रि दिवसनी कहेला स्वरू पनी पठेज जाणवी. पण नवरंके० एटलो विशेषजे केवल शरीरनो ठाणातुके० स्थान एटले राखवो ते जेवीरीते गोदोहीके० गाईने दोहवा बेसिये एटले पगनी पेनी ऊपाडी आगला तलीये बेसी जेम गोवालीउ गाई दोहवा बेशे तेम शरीरने स्थिर करे वीरासन एटले दृढ संघयणी पुरुषोनुं जे आसन तेने वीरासन कहिये. जेम सिंहासननी उपर बेठेलो ठतां तेना पगनीचे पृथ्वीने वलगेला होय तेनी नीचेथी सिंहासन कहाडी लीधुं ठतां पण तेनो आसन भगे नही पग त्यांज स्थित होय ए वी रीते बेसे अहवाविके० अथवा भावी जांघनीऊपर जमणुं पग करे अथवा भाबा हाथनी हथालीनी ऊपर जमणा हाथनी हथाली करे. अने ते नालीने लगाडी राखे एम प्रतिमानीपरे बेसे तेने वीरासन कहिये. अथवा ए वा शब्द प्रकारांतरने प्रगट करवाने अर्थे ठे. अपि शब्द समुच्चय अर्थे ठे. ठाइज्जा एटले एवी रीते बेशवुं. अथवा अंबखुज्जोवाके० आम्रकुब्ज एटले आंबाना फलनी पठे वक्राकारे स्थित थाय- एवी रीते ए त्रणे प्रतिमाउसातसात अहोरात्रीनीकरता एकवीशदिवसे पुरी थायठे ॥५०३

अवतरणः— हवे इग्यारमी प्रतिमा कहे ठेः— मूलः— एमेव अहोराई, ठठं भ त्तं अपाणगं नवरं; गाम नगराण बहिया, वग्घारिय पाणिए ठाणं. ॥५०४॥ अर्थः एमेव के० एमज कही आवेली रीति प्रमाणे अहो रात्रिकी प्रतिमा इग्यारमी था य ठे. नवरं के० एटलो विशेष जे केवल ठठ भक्त जे उपवास द्वयरूप तेनेविषे चारे आहारनो त्याग करे. माटे अपाणगं के० पानक आहारथी पण रहित कहि ठे ए नो आरंभ एकाशने करी थाय ठे. नवरं के० एटलोविशेष ठे जे गाम नगराण बहि या के० ग्राम ने नगरथी बाहारे वग्घारिय पाणिए के० विस्तारित पाणि एटले भुजादंभ लांबीकरीने एरीते ठाणं के० स्थान एटले काउसग्ग ध्याने रहे ठे. ए अहो रात्रिकी प्रतिमा त्रण दिवसे थाय ठे. अहोरात्रना अंते ठठ भक्त करवामां आवेठे तेमाटे. यदाः— 'अहो राई यांतिहि, पढा ठठं करे इत्ति' ॥ ५०४ ॥

अवतरणः— हवे बारमी प्रतिमा कहे ठेः— मूलः— एमेव एगराई, अठम भत्ते ण ठाण बाहिरउ; ईसी पप्भार गउ अणमिसनयणेग दिठीए ॥५०५॥ साहट्टुदोवि पाए, वाघारिय पाणि ठायए ठाणं; वाघारि लंबिअ भुउ, अंते समयाइ लद्धिति. ॥५०६॥ अर्थः— एमेव एटले अहोरात्रिकी प्रतिमानी पठे एगराई एटले एक रा त्रिकी प्रतिमा थाय ठे. एमां विशेष ठे ते आ प्रमाणेः—अठम भत्तेण एटले पान क आहार रहित उपवास त्रण करवा अने ठाणके० ग्रामादिकथी बाहिरउ के० बा

हार स्थानके रही लगारेक नमी कूबडो थयो थको अथवा नदी प्रमुखना तटनी ऊपर नेत्रोने मेषोन्मेष अण करतो छतां एक पुज्ञल ऊपर दृष्टि राखीने सर्व इंद्रि उं गोपवीने रहे. ॥ ५९५ ॥ साहट्टुदोवि पाए के० बे पग चेला करीने, जिन मुद्रानी पठे राखे. वाघारित पाणीनो अर्थ सूत्रकारेज व्याख्यान कर्युं छे. एटले पोताना भुजदंम प्रलंब पणे कर्या छे एवो थको काउसग्ग करे. एम करतां सम्यक् प्रकारे जे थाय ते कहे छेः- अंते एटले छेडे यतिने आ एक रात्रीक प्रतिमानो लाज विशेष अवश्य थाय. ते कहेछेः- एग राईणंतिभिरकु पडिमं सम्मं, अणुपाले माणस्स, इमेतउगणा हि,याउ नवंति तंजहा, उहिनाणे वासमुवज्जेज्जा मणपज्जवनाणे वासमुपज्जेज्जा केवल नाणे वासमुप्पन्न पुवे समुप्पजेज्जा विराधने पुनः उम्मायं चालनेज्जादीह कालियंवा रोगायं कंपाउणेज्जा केवलि पन्नत्ताउ धम्माउ नंसिज्जाः इति शब्द समाप्तिनेविषे. ए प्रतिमा रात्रिथी अनंतर अष्टम कर्याथी चार रात्रि दिवस मानवाली थाय छे. यदाहः- 'एग राइआ चउहि पच्छा अठमं करेइत्तिः अही साहट्टु दोवि पाए, वाघारिय पाणिगाय ए गाणं; वाघारिलं बिय भुउ,अंतेय इमीयलद्धित्ति. ॥ आ गाथा कोई पुस्तकनेविषे दीठामां आवतीनथी. ए प्रतिमां एक रात्रीनीछतापछी अष्टम चउविहार करिये तेथी चारदिवस रात्री प्रमाण ए प्रतिमां थाय. ॥ ५९६ ॥

अवतरणः- हवे इंद्रिय निरोध कहे छेः- फासणं रसणं घाणं, चक्कू सोअंति इंदियाणेसिं; फास रस गंध वन्ना, सद्दा विसयाविणिदिठा ॥ ५९७ ॥ अर्थः-स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, तथा श्रोत्र. ए पांच इंद्रियो जाणवी. अने स्पर्श, रस, गंध, वर्ण तथा शब्द ए पांच पूर्वोक्त इंद्रिउना यथानुक्रमे विषयो जाणवा. अही गाथानेविषे यद्यपि इंद्रियनो निरोध प्रस्तुत छे तेथी एउना विषयोनेविषे पणआसक्ति त्याग करवी एम अर्थथी जाणवुं. केम के नियममां न राखेली इंद्रिउ पगले पगले क्लेशरूप समुद्रमां नाखी दिये छे. जेम रसनानेविषयें मच्छ विनाश पामे छे, गंधनेविषये सर्प विनाशपामेछे चक्षुना विषयथी पतंगनो विनाश थाय छे, श्रोतेंद्रिनाविषयथी हरिणविनाशने पामे छे, स्पर्शेंद्रियना विषयथी हस्तिविनाश पामे छे एम एकेक इंद्रियना आसक्त थकी ए विनाश पामे छे केमके, ते जंतुउने परमार्थनी खबर नथी. तो एक प्राणी जे पांच विषयोमां आसक्त छे ते मूढ नस्म थाय तेमां शुं कहेवुं ? अश्वनी पठे अति चपल इंद्रियो आकर्षण करीने जीवोने तमोघनरूप उन्मार्गनेविषे लई जायछे माटे इंद्रियोने जीती सुबुद्धि जने तेउने नियममां राखवी.॥ ५९७ ॥

अवतरणः— हवे पचीस प्रतिलेखना कहे छेः— मूलः— पडिलेहणाए गोसा, वरण्ह उग्घाड पोरिसी सु तिगं; तछ पहाए अणुगय, सूरे पडिकमण करणाउ॥ ५९८॥ अर्थः— प्रत्येक दिवसे साधु जनने प्रतिलेखना त्रिक एटले त्रण प्रति लेखना कर्तव्य होयछे. एक गोस के० प्रजातमां, अवरण्ह के० बीजी पाछला पहोरे; अने त्रीजी उग्घाडके० प्रहरना अंतनेविषे जाणवी. ए त्रीजी प्रति लेखना 'उद्घाट पोरसीनेविषे सिद्धांतनी जाषाए पोणा पहोरे जाणवी. ए प्रतिलेखनानो त्रिक थाय ए त्रणमां प्रथम प्रतिलेखना ते सूरेपडिकमणकरणाउ के० प्रजातमां प्रतिक्रमण कस्या पछी सूर्य उदय थयो न होय तेनी पहेलां आ दश स्थानोनी प्रतिलेखना थाय छे.

ते दश स्थान कहेछेः— मूलः— मुहपोत्ति चोलपट्टो, कप्पतिगं दोतिसिज्जा रयहरणं; संथारुत्तरपट्टो, दस पेहा उग्गए सूरे ॥ ५९९॥ अर्थः— १ मुखपोत्तिका, २ चोलपट्ट ५ कल्पत्रिक, एक ऊननुं ने बे सूत्रनां ७ रजोहरणना बे निषद्य एक सूत्रमय अभ्यंतर ने बीजी बाह्य पाद लूछवारूप; ८ रजोहरण ओघो, ९ संस्तारक तथा १० उत्तरपट. ए दशनी प्रतिलेखना ते उग्गएसूरेके० सूर्यना उदयसमी करवी. अनेइग्यारमां दांमानी पण प्रतिलेषणा कहिछे. यडुक्तंनिशीथ चूर्णौः—'अन्नेजणंति एक्कारसमो दंमउत्ति' कल्पचूर्णावप्युक्तंः—'दंमउ एक्कारसमोत्ति' एटले अग्यारमां दांमानी प्रतिलेषना पण सूर्य उगतां करवी ए जाव. बाकी वसति प्रमुखनी सूर्यनो उदय थयाथी प्रत्युपक्षेणा करवी. आ सूत्रनेविषे प्रत्युपक्षेणा करवा योग्य स्थानोनोज प्रमाण कह्यो. प्रतिलेखनानो क्रम कह्यो नथी. केम के, आगममां बीजी रीतेज विधान कर्युं छे माटे. यडुक्तंनिशीथ चूर्णौः—उवहिम्मिय पच्चूसे, पुव्वं मुहपोत्ति तउ रयहरणं; तउ अंतो निसिज्जा तउ बाहिर निसिज्जा चोलपट्टो कप्प उत्तरपट्ट संथारपट्ट दंमगो य एस कमो अन्नहा उक्कमो पुरिसेसु पुव्वं आयरियस्स पच्छा परिन्नीतउ गिलाण सेहाइयाण अन्नहा उक्कमोत्ति 'अत्र परितित्ति, अनशनिनो उपधि आचार्योपधिनी प्रतिलेखनानंतर प्रत्युपेक्षित छे. बाकीनो अर्थसुगम छे. ए प्रजात प्रतिलेखना कही. ॥ ५९९ ॥

अवतरणः— हवे द्वितीय तथा तृतीय प्रतिलेखना कहे छेः— मूलः—उवगरण चउद्दसगं, पडिलेहिज्जइ दिणस्स पहर तिगे, उग्घाड पोरिसीए उपत्तनिज्जोग पडिलेहा, ॥ ६०० ॥ अर्थः— दिवसना त्रण प्रहर व्यतीत थाय त्यारे स्थविरकल्पिक सत्कौघिक स्वरूप चौद उपकरणनी प्रत्युपेक्षणा करे तेमां प्रथम मुखवस्त्रिका, पछी चोलपट्ट, पछी गोछक, पछी पात्र, पछी पात्रबंध; पछी पटलाउ; पछी रजस्त्राण, पछी पात्रस्थापन पछी मात्रक, पछी पतग्रह, पछी रजोहरण, अने त्या

रपछी कल्पत्रिक जाणवा. एना उपलक्षणथी उपग्रहिक उपधि प्रत्युपेक्षणा करवा योग्य छे. तथा उग्घाट पौरुषिनेविषे सात प्रकारे पात्र निर्योगनी प्रत्युपेक्षणा करवी तत्र आसनेबेसीने प्रथम मुखवस्त्रिकानी प्रत्युपेक्षणा करीने पछी गोछकनी प्रत्युपेक्षणा करवी पछी पटलाउ, त्यारपछी पात्रकेसरिका, त्यारपछी पात्रबंध; त्यारपछी रजस्त्राण त्यारपछी पात्रस्थापन. ए प्रत्युपेक्षणांनी विधि विस्तारना नयथी लखी नथी. विस्तारे उघ निर्युक्ति तथा पंच वस्तुकादिक ग्रंथोथी जाणी लेवी.॥६००॥

अवतरणः– अही वस्तिप्रमार्जननो विशेष कहे छेः– मूलः– पडिलेहिऊण उवहिं, गोसंमि पमज्जणाउ वसहीए; अवरण्हे पुण पढमं, पमज्जणा तयणु पडिलेहा ॥ ६०१ ॥ अर्थः– गोसे एटले प्रभात समये मुखवस्त्रिकादि लक्षण पूर्वोक्त उवहिके० उपधिनी पडिलेहिऊणके० प्रतिलेखणा करीने त्यारपछी यतियें वसही के० निवासरूप जे वसति छे, तेनी उपयुक्तेकरी पमज्जणाके० प्रमार्जना करवी अपराण्हके० बीजी पाछला पहोरे फरी प्रथम वसतिनुं प्रमार्जन करवुं, अने तयणु के० तेवार पछी उपधीनी प्रतिलेषना करवी. ॥ ६०१ ॥

अवतरणः–शेषकाल अने वर्षाकाले उपाश्रय प्रमार्जननो विशेष कहेछे मूलः– दोन्निउपमज्जणाउ, उउम्मि वासासु तइय मज्झण्हे; वसहि बहुसो पमज्जइ अइसंघट्टंअन्नहिंगच्छे.॥६०२॥अर्थः–ज्यां वसतिनेविषे जीवोनो संसक्ति एटले मेलावडो न थतो होय, त्यां पण ऋतुबद्ध कालमां एटले आठ मासमां दोन्निउके० बे प्रमार्जन कहेला छे. एक सवारनीअनेबीजीपाछला पहोरनीएबे वार वसतिनुंअवश्य प्रमार्जन कर्तव्य छे, अने वासासुके० वर्षा कालनेविषे जीवोनो मेला वडो घणो थाय छे माटे वसतिनी त्रीजी प्रमार्जना थाय छे. तेमां बे पहेला कही ते अने तइयके० त्रीजी मज्झण्हे के० मध्यान्ह कालनेविषे थायछे. तथा ऋतुबद्ध काले अथवा वर्षा काले कुंथुआदिक प्राणीउएकरी वसहिके० वस्ति संसक्त थयाथी बहुसो के० घणी वार पण वसतिनी पमज्जइके० प्रमार्जना करवी. ईहां वा शब्द विकल्प प्रदर्शनार्थे छे. ते विकल्प आ छेः– जो पूर्वोक्त प्रमार्जना प्रमाणेज जीव संसक्त टली जाय तो घणा वखत प्रमार्जन न करवुं अने जो जीव संसक्त न टले तो घणी प्रमार्जना पण करवी. अने जो घणी वार पूंजता पण जीव संसक्त टले नही अने वधारे संसक्त देखाय अने ऊलटो प्राणिउंनो संघट्ट थाय. त्यारे ते वस्ति मूकी बीजी वसतिमां अथवा बीजा ग्राममां जावुं. ॥ ६०२ ॥

अवतरणः–हवे त्रण गुप्ति कहेछे.–मण गुत्ति माइयाउ, गुत्तीउ तिन्निहुंति नाय

वा, अकुसल निविचित्तिरूवा, कुसलपविती सरूवा य.॥६०३॥ अर्थः-मनोगुप्त्यादिक एटले मनोगुप्ति वचन गुप्ति तथा काय गुप्ति लक्षण त्रण गुप्तिउ जाणवी. एउनुं स्वरूप आ प्रमाणे ठेः- अकुशल एटले अशुन मन वचन तथा कायनी निवृत्तिरूप ते अकुशल मन वचन, कायाना निरोध रूप जाणवी. अने कुशल एटले शुन मनो वचन कायनी प्रवृत्ति रूप जाणवी. एनो अनिप्राय आ ठेः- मनोगुप्ति त्रण प्रकारे ठेः- तेमां प्रथम आर्त्त रौद्र ध्यानानुबंधि कल्पना समुदायना वियोग रूप जाणवी. बीजी शास्त्रानुसारणी परलोकनी साधक धर्मध्यानानुबंधिनी मध्यस्थ परिणतिवाली परिणामविशेषे जाणवी ते कुशल तथा अकुशल मनोवृत्तिना निराधेकरी समता परिणामरूप थायठे. त्रीजी योग निरोधावस्थानेविषे जे आत्मा आत्म स्वरूपे थाय ते स्वात्माराम तृतीया जाणवी. ए मनोगुप्ति थई. हवे वचन गुप्तिना बे नेद कहेठेः- एक मुख नयन नृकुटिना विकारो तथा चपटीनो वजाडवो प्रमुख जाणवी. तेमां नेत्रने विकाशी, मुखथी हुंकारो करे नृकुटीने ऊचीनीची करे एवी सूचना करवानी जे चेष्टा तथा ऊनोथावो, खुकारो करवो, हुंकारोकरवो ढेखाल प्रमुखनो नाखवो इत्यादिक अर्थनी जणावनारी जे चेष्टाउ होय ठे तेउनो परिहार करीने आजे मारे आ न करवुं. एवो अनिग्रह कस्याथी पहेली वाक्गुप्ति जाणवी; एटले चेष्टाविशेपेकरी पोताना प्रयोजनोनी सूचना करतो ठतां मौन धारण करवानो अनिग्रह लेवो निष्फल ठे. तथा वांचवुं, पूठवुं, तथा बीजो कोई पोताने व्याकरणादि पूठे तेने लोक तथा आगमथी अविरुद्ध मुखपोत्तिकाथी ढांकेला मुखकमलथी बोले एम वचन वृत्तिने नियममां राखवी एवां नेदेकरी वांचननो जे निरोध ते सम्यक नाषण रूप प्रतिपादिक जाणवी. इहां नाषा समितिनेविषे सम्यक् वचननी प्रवृत्ति होयठे अने गुप्तिमां सम्यक् वचननो पण निरोध ठे एटलो नाषा समिति अने वचन गुप्तिमां नेद ठे. यदाहुः- 'समिउ नियमा गुत्तो, गुत्तो समियत्तणंमि नयणिज्जो कुसल वय मुदीरंतो, जंचइ गुत्तोवि सम्मिउवि. ॥ हवे त्रीजी काय गुप्ति पण बे प्रकारे ठेः- तेमां एक चेष्टा निवृत्ति लक्षण अने बीजी यथागमानुसारे चेष्टा नियम लक्षण जाणवी. तत्र जे देव संबंधी तथा मनुष्य संबंधी उपसर्गो ठतां तथा क्षुधा पिपासा प्रमुख परिसहादिक थता ठतां पण कायोत्सर्ग करवा प्रमुखवमे कायाने निश्चल करवी तथा सर्व योग निरोधावस्थानेविषे सर्वथा काय चेष्टानो निरोध करवो ते प्रथमा कायगुप्ति जाणवी. तथा गुरुने पूठतां शरीर संस्तारक, नूमिकादि प्रतिलेखना प्रमार्जनादि आगममां कह्या प्रमाणे क्रि

या कलाप सहित शयनादिक यतिने करवो ए रीते शयन असन तथा निक्षेपादि नेविषे स्वछंद चेष्टानो त्याग करवो. अने नियमे करीने काय चेष्टा करवी ते त्री जी कायगुप्ति जाणवी. ॥ ६०३ ॥

अवतरणः- हवे चार अभिग्रह कहे ठेः- मूलः- दव्वे खेत्ते काले, नावेय अ भिग्गहा विणिद्दिष्ठा; ते पुण अणेग नेया, करणस्स इमं सरूवंतु. ॥ ६०४ ॥ अर्थः- इव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी, नावथी ए चार प्रकारना अभिग्रहो जिनेश्वरे कह्या ठे. ते वली सर्वे अनेक नेदे ठे. ते त्रैलोक्य स्वामी श्रीमहावीरे छद्मस्थाव स्थाने विषे विचरतां कौशांबी नगरीमां ग्रहण कर्या ठे. तेमां इव्याभिग्रह ते हुं कुल्माष बकुल सूपना एक कोणामां तलपीश; तथा क्षेत्रानिग्रह ते देनारीना पग बन्नेयंत्रथी आवरी लीधेला होय एक उंबरामां होय ने बीजुं पग बाहार ए वी ठतां मने आपे तो लउं. तथा कालाभिग्रह ते जो दिवसे बीजो पोर थईगया पढी दात्री देशे तो लईश. तथा नावानिग्रह ते जो माथुं मूंमेलुं ठतां रोती थकी देशे तो हुं भिक्षा लईश अन्यथा मारे गृहण करवी नही ए विधिना अभिग्रहे करी नगवते ठमासने पांच दिवस अन्न पाणी लीधुं नही पढी चंदन बालाने हाथे पा रणो कर्यो ए इव्यादिक चार अभिग्रहो जाणवा. एवी रीते उक्त प्रकारे करी करणसित्त रिनुं स्वरूप जाणवुं. ए करणना सित्तेर नेदो गुरुउए कहेला ठे. ते आ प्रमाणेः- बेतालीश आधाकर्मादिक दोषो; पिंम, ते १ आहार २ सय्या तेवस्ति, ३ वस्त्र ने ४ पात्र ते विशुद्ध दोष रहित लियें ए लक्षण वस्तु चतुष्टय पणे करी चार पिंमादिक गण्याठे. तथा पांच समितिउ; मली नव, द्वादश नावना मली एकवीश; द्वादश प्रतिमा उ मली तेत्रीश, पांच इंद्रिय निरोध मली अमत्रीश पचीश प्रतिलेखना मली त्रेस ठ; गुप्तिउ त्रण मली ठासठ अने अभिग्रहो चार मली सित्तेर नेदो थाय.॥६०४॥

आशंकाः- चरण तथा करणनेविषे विशेषता शुं ठे?

समाधानः- जेनुं नित्य अनुष्ठान होय तेने चरण कहिये; अने जे प्रयोजन प्राप्त थये कर्यामां आवे तेने करण कहिये. यथा व्रतादि सर्वे काल पाल्यामां आ वे ठे, पण कोईकाल व्रतथकी शून्य होतो नथी अने पिंम विशुध्यादिक तो प्रयो जननी प्राप्ति थयाथी कर्यामां आवे ठे एम जाणवुं. ए सडसठमो द्वार पूरोथयो

अवतरणः-हवे 'जंघा विज्जाचारणगमणसत्तित्ति' एटले जंघाचारण अने विद्या चारणोनी गमन विषयक शक्तिनो अडसठमो द्वार कहे ठेः- मूलः- अइसय च रण समत्था, जंघा विज्जाहि चारणा मुणउ; जंघाहिजाइपढमो, निस्संकाउंरवि करेवि

॥६०५॥ एगुप्पाएण गउ, रुयगवरं मिय तउ पडिनियत्तो; बीएणं नंदीसर, मि एइ तइएण समयेणं. ॥६०६॥ पढमेण पंमगवणं, बीउ प्पाएण नंदणं एई; तइउ प्पाएण तउ, इह जंघा चारणो एई; ॥ ६०७ ॥ पढमेण माणुसोत्तर, मगंसु नंदी सरंतु बीएणं, एइ तउ तइएणं, कयचेइय वंदणो समणो. ॥६०८॥ पढमेण नंदण वणं, बीउप्पाएण पंमगवणम्मि; एइ इहंतइएणं,; जो विज्ञा चारणो होइ.॥६०९॥ अर्थः— चरण एटले गमन ते जेमां विद्यमान छे तेने चारण कहिये. तत्र बीजा मुनिउने पण गमन तो होय छे. पण इहां तो विशेषे करी गमन आगमननुं ग्रहण करवुं जेम आ कन्यारूप वतीछे . एम कह्याथी रूपवाला विशेषणे करी सहित होय तेनी पठे ए पण जाणवुं. तेम इहां अतिशय चारित्रनी समर्थाइये करी अ तिशय गमनागमननी लब्धियेंकरी जे संपन्न होय तेने चारण कहिये ते बे प्रकार ना छे. एक जंघाचारण ने बीजा विद्याचारण तेमां जेने चारित्र अने तपना विशेष प्रनावथी उत्पन्न थयली गमना गमन विषयकलब्धि तेणे करी जे संपन्न होय तेने कहिये जंघाचारण अने जे विद्याना वशे करी उत्पन्न थएली गमनाग मन लब्धिए करी युक्त होय तेने विद्याचारण कहिये. तेमां प्रथम जंघाचारण प हेला सूर्यना किरण निश्रा करी अवलंबिने एकज उत्पाते उपडी चारित्रना अ धिकपणा थकी यावत् तेरमां रुचकवर द्वीपसुधी तिर्छो जवाने समर्थ थाय छे. त्यांना चैत्य वांदेछे. अने विद्याचारण नंदीश्वर द्वीप सुधी जई शके छे. तत्र जंघा चारण जे ठेकाणे जवानी इछा करे त्यांसूर्यना किरणोनुं अवलंबन करीने जाय छे. विद्या चारणो विषे पण एमज जाणी लेवुं.॥६०५॥तेमां जंघाचारण रुचकवर द्वीप प्रत्येजता छतां एकज उत्पाते करी जाय छे. अने पाछा फरतां एक उत्पाते नंदी श्वर नामा आठमा द्वीप प्रत्ये आवे छे; त्यां विसामो लेई अने बीजा उत्पाते पोताना स्थानके पाछा इहां आवे छे. ए तीर्छिगतीना एवी रीते त्रण उत्पातो जाणवा॥६०६॥ अने ज्यारे उर्ध्वगतियें जाय त्यारेप्रथम मेरुनी शिखर उपर जवा नीकले त्यारे ए कज उत्पाते करी पंमकवनपर जई चढे अने पाछो फरतां एक उत्पाते नंदन व नप्रत्ये आवेछे अने बीजा उत्पाते पोताना स्थाने आवेछे जंघाचारणने चारित्रा तिशयना प्रनावेकरी लब्धीना उपजीवननेविषे उत्सुक्यना नावथी प्रमादनो संन व थायछे. तेथी चारित्रातिशयनु बंधन थईने तेनी लब्धिनी कांईक हीनता थाय छे. तेथी त्यांथी पाछा फरतां बे उत्पादे करी पोताना स्थानके आवे छे. ॥६०७॥

विद्याचारणो तिर्छिगतियें प्रथम उत्पाते करीनेज मनुष्योत्तर पर्वतप्रत्ये जायछे.

तथा बीजे उत्पाते नंदीश्वर द्वीपें जायछे. त्यां जईने चैत्य वंदन करेछे. त्यांथी पाछा फरता एकज उत्पाते करी पोताना स्थानप्रत्ये आवेछे.॥६०७॥तथा उर्ध्वगतियें ते मेरु नी ऊपर जता पण प्रथम उत्पातेज नंदनवन प्रत्ये जायछे. अने बीजा उत्पाते पंम्कवन प्रत्ये जायछे. त्यां चैत्योने वंदना करीने त्यांथी पाछा फरता एकज उत्पा तेकरी पोताना स्थाने आवेछे. कारणके विद्याचारणो विद्याना वशथी थाय छे. ते माटे ते विद्यानो वारंवार सेवन करिये तो अत्यंत चोखी थायछे. ते माटे ईहां थी जतां एकवीसामो लियेछे पण पाछा फरतां शक्तिना अतिशय पणाना संन्नवथी एकज उत्पातेकरी पोताना स्थाने आवेछे. पण क्यांवीसामो लेतानथी ॥६०ए॥ए बे चारणोना नेद सूत्रकारे कह्या पण उपलक्षणथी बीजा पण घणा प्रकारना चारणो थायछे. ते आ प्रमाणेः—

आकाशमां फरनारा, पर्यंक आसने बेठा थका जाय कायोत्सर्गे स्थित थया थका ऊंडी जाय पग ऊपाड्याविना आकाशमां जता रहे ए व्योमचारण जाणवा.

बीजा वली वाव्य, नदी, तथा कूप समुद्रादिकनेविषे अपकायजीवनी विराधना क स्या विना जलनेविषे नूमिकानी पठे पग उपाडे ते जलचारण होय छे.

बीजा वली पृथ्वीनी ऊपर चार आंगल आकाशमां जंघा ऊंची करवाने निपु ण होय तेने जंघाचारण कहिये.

नाना प्रकारना वृक्ष वेलीउ तथा पुष्पादिकनुं ग्रहण करीनेतेना सूक्ष्म जीवोने न विराधतां कुसुमनी पांखडीना समुदायने अवलंबी रहेछे, तेनेपुष्प चारणो कहिये.

बीजा चार शें योजन ऊंचो निषेध तथा नीलवंत पर्वत छे तेना टुंक ऊपर सम श्रेणीयें आववा जवाने निपुण होय तेने श्रेणिचारण कहिये.

बीजा अग्निशिखाने आश्रयीने तेजकाय जीवोने न विराधतां अने पोते पण न बलतां पगे करी गमन करवाने निपुण होय तेने अग्निशिखाचारण कहिये.

बीजा धूमवर्त्ति ते तिर्यक अथवा ऊर्ध्व गमन करवाने अग्नीनी परेधुम्रनो आ लंबन करीने जे अस्खलित गमन करे तेने धूमचारण कहिये.

बीजा वांकाचूका वृक्षोना अंतरायमांना अवकाशमां जे कुब्जवृक्ष संबंधी कोलि आडानातंतुने आलंबन करी गमन करवाने जे समर्थ तेनेमर्कट तंतुचारण कहिये.

बीजा चंद्र, सूर्य, ग्रह नक्षत्र तारादिकनी तथा बीजी कोई पण ज्योतिना किरणो नो आश्रयकरी गमनागमना करे तेने चक्रमण ज्योतिरश्मि चारण कहिये.

जे सामो अथवा ऊपरांठो जे दिशाउनेविषे वायरोजतो होय ते दिसिये तेज आ काश प्रदेशनी श्रेणीने आश्रय करीने तेनी साथेज चाले तेने वायु चारण कहिये.

जे जाकलनुं अवलंबन करीने अप्कायिक जीवने अणविराधता थका तेनीज साथे गति करे तेने नीहार चारण कहिये. इत्यादिक बीजा पण जलद एटले मेघ चारण; उस चारण तथा फलचारणादिक जाणवा ए अडसठमो द्वार थयो.

अवतरणः– हवे 'परिहारविसुद्धि तवोत्ति' एटले परिहार विशुद्धितपनो ओ गणोतरमो द्वार कहेछेः– परिहारियाणउतवो, जहन्न मज्झो तहेव उक्कोसो; सी उण्ह वास काले, नणिओ धीरेहिं पत्तेयं ॥ ६१० ॥ अर्थः– जे परिहरिये तेने प रिहार कहिये. ते तपविशेष जाणवो. तेणेकरी जे विचरे तेने परिहारिको कहिये ते बे प्रकारे छेः– एक निर्विशमानक अने बीजा निर्विष्टकायिक. तेमां विवक्षि त तपविशेषने सेवनार होय ते निर्विशमानक कहिये. अने जेणे विवक्षित तप विशेषनुं सेवन कर्युं न होय ते निर्विष्ट कायिक कहिये. अही नव साधुओनो गण एटले गछ जाणवो. तेमां चार निर्विशमानक, एटले विवक्षित तपविशेषना करनार होय; अने चार अनुचारी एटले वेयावच्चगर होय तथा एक कल्पस्थित वाचनाचार्य करेलो होय. यद्यपि ए सर्व साधुओ श्रुतातिशय संपन्न होयछे तथा पि कल्प होवाथी तें नवमांनो कोई पण एक वाचनाचार्य स्थापवामां आवेछे. निर्विशमानक तथा निर्विष्टकायिक ए बन्नेनो तप त्रण प्रकारनो होयछेः– जघन्य मध्यम तथा उत्कृष्ट ए त्रण प्रकारे परिहार विशुद्धियानो तप जाणवो ते शीतकाल, उष्णकाल तथा वर्षाकाल ए प्रत्येकनेविषे त्रण प्रकारनो जाणी लेवुं. एवुं धीर जे तीर्थंकर तेओए कह्युं छे. ॥६१०॥ ते जूदोजूदो देखाडेछे.

अवतरणः– तेमां ग्रीष्म कालनेविषे करवानो तप कहेछेः– मूलः– तछ जह न्नो गिम्हे, चउछ छठं तु होइ मज्झिमओ; अठम मिह मुक्कोसो, एत्तो सिसिरे प वरकामि. ॥ ६११ ॥ अर्थः– ते त्रण कालोमां ग्रीष्म काल अतिरुक्ष होवाथी तेमां जघन्यथी तप चतुर्थ ते एक उपवासरूप जाणवो; मध्यम तप षष्ठ ते बे उप वासरूप जाणवो; अने उत्कृष्ट तप अष्टम ते त्रण उपवासरूप होयछे. तप श ब्द नपुंसक लिंगे छतां प्राकृत नाषाने लीधे सूत्रमां पुल्लिंगे राख्यामां आव्यो छे.

अवतरणः– एनी पछी शिशिरऋतु एटले शीतकालनेविषे करवाना तपविषे कहे छेः– मूलः– सिसिरे उ जहन्न तवो, छठाई दसम चरिम गो होई; वासासु अठ माई, बारस पजंत गो नेउ ॥ ६१२ ॥ अर्थः– शिशिर एटले शीतकाल ते ग्री

ष्मकालथी किंचित् साधारण छे. तेनेविषे जे तप थाय छे. ते आ प्रमाणे छेः- जघन्यथी षष्टम, मध्यमथी अष्टम अने उत्कृष्टथी दशम ते चार उपवासरूप जाणवुं. तथा वासासुके० वर्षा कालते साधारण कालछे तेनेविषे जघन्यथी अष्टम, मध्यमे दशम, तथा उत्कृष्टथी द्वादशम ते पांच उपवासरूप जाणवुं. ॥ ६१२ ॥

मूलः- पारणगे आयामं, पंचसु गहो डुसु निग्गहो निरके; कप्पठियावि पइदिण, करंति एमेव आयामं. ॥ ६१३ ॥ अर्थः- ए त्रणे कालनेविषे आंबिले पारणुं थाय छे. यथा संसृष्टादिक सात भिक्षा थायछे. तेमांनी छेली पांचनुं ग्रहण करवुं, अने आगली बे संसृष्ट अने असंसृष्ट एउनो त्याग करवो. एटले उद्धतादि पांचज गृहण करवायोग्य छे एम जाणवुं; तेमां वली विविक्षित दिवसे ऊपर कहेली छेली पांचमांनी आज मारे बेज विवक्षित भिक्षा गृहण करवी. एचार परिहारिकोनो तप जाणवो . अने बीजा जे ते कल्पस्थितादिक पांच छे, तेमां एक वाचनाचार्य तथा चार अनुचारिउ छे ए सर्वे पूर्वोक्त भिक्षाना अनिग्रहयुक्त थया छतां नीक्षाले प्रति दिवसे आंबिल करे. ॥ ६१३ ॥

मूलः- एवं छम्मास तवं, चरियं परिहारिया अणुचरंति; अणुचरगे परिहारिय, पयहिए जाव छम्मासा. ॥६१४॥ अर्थः-एम छमास सीम तप करी पछी परिहार विशुध्दि तपवाला जे चार होय ते अनुचरो थाय अने जे पहेला अनुचरो होय ते परिहारिकना तपनेविषे समस्त प्रकारे स्थितथाय. ते पण छ मास सुधीजाणवुं ६१४

मूलः- कप्पठिउवि एवं, छम्मास तवं करेइ सेसाउ; अणुपरिहारिय जावं, चयंति कप्पठियतवं च. ॥ ६१५ ॥ अर्थः- एम बार मास वीत्या पछी कल्पस्थित जे वाचनाचार्य ते पण पूर्वोक्त न्याये करी छमास यावत् परिहारिक तप करे. अने बाकीना आठ अनुपरिहारिक नाव, ते वैयावृत्यकरपणुं, तथा वाचनाचार्य पणाने कल्पस्थित पणे रहीने ग्रहण करे छे. एटले सात वैयावृत्यकर थाय अने एक वाचनाचार्य थाय एम जाणवुं. ॥ ६१५ ॥

मूलः- एवं सो अठारस, मास पमाणो य वन्निउ कप्पो; संखेवउ विसेसो विसेस सुत्ताउ नायव्वो ॥ ६१६ ॥ अर्थः- ए प्रमाणे कल्प जे आचार विशेष ते अढार मास प्रमाणवालो कह्यो. ते संक्षेपे जाणवो. अत्र जे सविशेष छे ते कल्पादिक विशेष सूत्रोथी जाणवुं. ॥ ६१६ ॥

अवतरणः- हवे कल्पनी समाप्तिनेविषे जे कर्त्तव्य छे ते कहेछेः- मूलः- कप्प सम्मत्ती इसयं, जिणवाउं वितिगछंवा ॥ इत्यादि गाथाना पूर्वार्द्ध, कल्प एट

ले पारिहारिकानुष्ठानरूपनी समाप्ति थयापठी फरी तेज पारिहारिक कल्पने पडिव जे अथवा जिनकल्प पडिवजे अथवा गछमांहे आवे ते परिहारिक विशुद्धिका बे प्रकारे ठेः– इत्वर ने यावत् कथिक. तेमां जे परिहारविशुद्धि कल्पनी समाप्तिअ नंतर परिहार विशुद्धि कल्पने अंगीकार करे अथवा गछनेविषे जाय तेने इत्वर कहिये. अने जे परिहारविशुद्धि कल्पनी समाप्ति थया पठी अवधाने करी जिनक ल्पने अंगीकार करे तेने यावत् कथिक कहिये उक्तंचः– 'इत्तिरिय थेरकप्पे, आ वकहियति' एम जाणवुं अही इत्वरोने देव मनुष्य तथा तिर्यंचें करेला उपसर्गो जेवा के, तत्काल घात करे, एवा तथा जे अत्यंत दुःखेकरी पण सहन न थाय एवी वेदना उत्पन्न न थाय अने यावत्कथिकोने तो ए बधी वेदनाउनो संनव ठे उक्तंचः–' इत्तिरियाणुवसग्गा आयंका चेयणाय न हवंति; आवकहियाण नइयाइति'

अवतरणः– आ कल्प जेनी समीपे अंगीकार कराय ठे ते दोढ गाथाये करी कहेठेः– पडिवज्जमाणगा पुण, जिण सग्गासे पवज्जंति. ॥ ६१७ ॥ तित्थयरसमीवा, सेवगस्सा पासेवनोवअन्नस्स, ए एसिंजंचरणं, परिहारविसुद्धिगंतंतु ॥ ६१८ ॥ अर्थः– परिहारविशुद्धिकल्पने पडिवजणहार जिन सकासे एटले तीर्थंकरनी पासे अंगीकार करे अथवा तीर्थंकरनी समीपे जेणे आसेव्यो ठे तेनी पासे अंगीकार करे ए बेने मूकीने बीजानीपाशे प्रतिपत्ति थाय नही एओनुं जे चरण एटले चा रित्र ते परिहारविशुद्धि कहेवाय ठे. परिहार जे तपोविशेष तेणेकरी विशुद्धि एटले निर्मलता जे चारित्रमां थाय एवी एनी व्युत्पत्ति जाणवी.॥६१७॥६१८॥अहिं ए परिहा र विशुद्धिका कया क्षेत्र अथवा कया कालनेविषे संनवेठे तेना निरूपणने अर्थे श्री पन्नवणा उपांगना पहेला पदे एना वीस द्वारोनी परुपणा करीठे ते कहिये ठइये.

१ तेमां क्षेत्र द्वारनेविषे बे प्रकारनी मार्गणा ठेः– एक जन्मथी ने बीजी सद् नावथी तेमां जे क्षेत्रमां जन्म थयो होय त्यां जन्मथी मार्गणा जाणवी. अने ज्यां कल्पनो अंगीकार थायठे त्यां सद्भावथी मार्गणा जाणवी. हवे जन्म अने सद्भाव आश्री पांच नरत तथा पांच ऐरवतमां प्राप्त थायठे, पण महाविदेहनेविषे नथाय. जेणे करी जिनकल्पिकोनी पठे संहरणथी सर्व कर्मनूमिनेविषे अथवा अकर्म नूमिनेविषे प्राप्त नथाय उक्तंच.– खेत्ते नरहे रवए, सुहुंति संहरण वज्जिया नियमा';

२ काल द्वारनेविषे अवसर्प्पिणीना तृतीय अथवा चतुर्थ आरकमां जन्म जा णवो अने सद्भाव तो पांचमा आरामां पण जाणवो. अने उत्सर्प्पिणीना द्विती य, तृतीय, अथवा चतुर्थ आरामां जन्म जाणवो अने त्रीजे तथा चोथे आरे

सद्भाव जाणवो. उक्तंचः— उस्सप्पिणीउ दोसु. जम्मणउ तीसु संति नावे य;' उ सप्पिणी विवरीउ, जम्मणउ संति नावे य' उत्सर्पिणी अवसर्पिणीरूप चतुर्थ आरकप्रति नागकालनेविषे जन्मनो संनव न थाय. केमके महाविदेह क्षेत्रनेविषे तेउनो असंनव ले माटे.

३ चारित्र द्वारे संयम स्थानने द्वारे करी मार्गणा करवी त्यां सामायक चारित्र अने लेदोपस्थापनीय चारित्रनाजे जघन्य संयम स्थानक ले ते समान परिणाम पणाये करीने माहोमांहे तुल्य ले ते माटे असंख्यात लोकाकाश प्रदेशप्रमाण जे संयमस्थान तेने उल्लंघीने उंचाजे संयम स्थानक ते परिहार विशुद्धिकने योग्य अने तेपण केवलीनी दृष्टीयें चिंतवंता असंख्येय लोकाकाश प्रदेशप्रमाण थाय अने धुरला बे चारित्र तेने अविरुधि पणे करीने तेनो ईहां संनव थाय ले. वली ते थकी उपरलाजे संयमस्थानकते सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात चारित्रने योग्य होय त्यां हवे जेने पडिहार विशुद्धिनामा कल्पनो पडिवजवोले ते पोतानी मेलेज तेटलाज संयम स्थाननेविषेज थाय अने शेषस्थाननेविषे नजथाय अने जेवारे अतीतनय अधिकरी जोईये तेवारे पूर्वप्रतिपन्ननी विवक्षा करिये तेम विवक्षा करतां शेषसंयम स्थानकनेविषे पण होय जे कारणे परिहार विशुद्धिकल्पनी समाप्ति होय तेवारे अनेरा चारित्रनो पण संनव हायले एम अनेरा चारित्रनेविषे वर्त्तमान अने अतीत नयनी अपेक्षायें पूर्वप्रतिपन्ननो अविरोध होय.

४ पर्याय द्वारनेविषे, पर्याय बे प्रकारे लेः— गृहस्थ पर्याय तथा यतिपर्याय ए प्रत्येक वली ब बे प्रकारे लेः— ते जघन्यथी तथा उत्कृष्टथी ले तत्र गहस्थ पर्याय जघन्यथी उंगणत्रीश वर्ष अने यतिपर्याय जघन्यथी वीश वर्ष अने बने उत्कृष्टथी देशऊणा पूर्वकोटि प्रमाण उक्तंच पंच वस्तुकेः— एयस्स एसनेउ, गिहि परियाउ जहन्न ईगु तीसा; जइ परियाउ वीसा, दोसवि उक्कोस देसूणा' इति. वली जे सूत्रनेविषेः— जम्मेण तीस वरिसो, परियाए णिगुणवीस वरिसो य; परिहार पठ्ठवीउं, कप्पइ मणुउद्धुएरिसहो ॥ १ ॥ इत्युक्तं

५ तीर्थ द्वारे निश्चेथकी तीर्थप्रवृत्ततामां होय परंतु तीर्थने अणप्रवर्त्ते तथा तीर्थनेविछेदे परिहार विशुद्धिक थाय नही तीर्थने अनावेतो जाति स्मरणादिक थाय. उक्तंचः— 'तिछेति नियमउछि होइ,सतिछमिनउणतह नावेवि,गएणुपत्तेवाजाईसरणाइएहिं,तु'

६ आगम द्वारमां ते पुरुष अपूर्व आगमनो अध्ययन करतो नथी केमके परिहार विशुधिकनो कल्प अधिकरीने आदस्योले जे तप तेना आराधवेकरी तेकल्य कृ

त्यघाय अने पूर्वाधित श्रुतने निरंतर मन स्थिर राखवाने अर्थे एकाग्रचित्ते स्मरणकरेछे यडुक्तं अपुव्वं नाहि जइ आगममेसो पडुच्चतं कप्पं; जमुचिय पगहियजोगाराहणउ ए सकयकिच्चो ॥१॥ पुव्वाहीयं तु तयं पायं अणुसरइ निच्चमेवेसो; एगग्गमणोसम्मं विस्सोयसिगाय खयहेउं. ॥२॥

७ वेद द्वारें प्रवृत्तिकालें मात्र पुरुषवेद अने नपुंसकवेद ने परिहार विशुद्धिपणो संजवेछे पण स्त्रीवेदने संजवतो नथी अने अतीत नयने अधिकरीने जो पूर्व प्रतिपन्ननो चिंतन करियें तो सवेदि अने अवेदिपण होय तेमां श्रेणीप्रति पत्तिना अजावे सवेदी अने उपशम श्रेणी अथवा क्षपकश्रेणी प्रतिपत्तिने स्थानके अवेदि उक्तंच वेदोपवत्तिकाले इत्थी वज्जो उहोइ एगयरो ॥ पुव्वपडिवन्नगो पुण, होइ सवेदो अवेदोवा ॥ १ ॥

८ कल्पद्वारमां स्थितकल्पमां होय परंतु अस्थित कल्पमां न होय ठियकप्पंमियनियमा इतिवचनात् तेमां आचेलिकादिक दशस्थानननेविषे रहेलाजे मुनि तेने स्थित कल्पि कहियें अने जे शय्यातर पिंमादिक चारकल्पोमां रहेनारा अथवा चेलकादिक बाकीना ठ कल्पोमां रहेनारा होय तेउना कल्पने अस्थित कल्प कहेछे.

९ लिंगद्वारमां नियमेकरीने द्रव्यलिंग अने जावलिंग ए बन्ने लिंग जाणवा परंतु एके लिंग विना पण विवक्षित कल्पने पडिवजवानो अधिकार नथी.

१० लेश्याद्वारे तेजोलेश्यादिक त्रणलेश्याये पडिवजे अने पूर्वप्रतिपन्न सर्व लेश्यायें पडिवजे ते कोईकने थाय त्यां अत्यंत अशुद्ध लेश्याये प्रवर्त्तेनही किंतु थोडीसीवेलारही आपणा वीर्यनाबले पाठो वले परंतु कर्मने वसे प्रवर्त्ते नही.

११ ध्यानद्वारमां प्रवर्द्धमान धर्मध्यानेकरी परिहारविशुद्धिक कल्पने पडिवजे अने पूर्वप्रतिपन्न आर्त्त रौद्र ध्यान पण थाय छे परंतु त्यां घणो रहे नही.

१२ गणनाद्वारमां जघन्यत्वे करी त्रण पडिवज्जे अने उत्कर्षे करीने एकसो गण पडिवजे अने पूर्वप्रतिपन्न जघन्य अने उत्कर्षेकरी सो गण पडिवजे पुरुष गणनायें जघन्य सतावीस पडिवजे उत्कृष्टेकरी एक हजार पडिवजे तथा पूर्व प्रतिपन्न जघन्यथी अने उत्कर्षेकरी एकसो पृथक्त्व अथवा एक हजार. आहच गणउ तिन्नेवगणा; जहन्नपडिवत्ति सयस उक्कोस; उक्कोस जहन्नेणय, सयसोच्चिय पुव्वपडिवन्ना ॥ १ ॥ सत्तावीसजहन्ना, सहस्समुक्कोसउअपडिवत्ति ॥ सयसो सहस्ससोवा, पुव्वपडिवन्न जहन्न उक्कोसा ॥ २ ॥ ज्यारे पूर्वप्रतिपन्न कल्पमांथी एक निकलेछे अने बीजो प्रवेश करे छे त्यारे नाना प्रक्षेपने विषे प्रतिपद्यमान कोईवारे एक थायछे अ

थवा पृथकत्व एटले जुदाजुदा पण थायछे अने पूर्वप्रतिपन्न पण एमज कोईएक वारे एकज थायछे अथवा जुदाजुदा पण प्राप्त थायछे. उक्तंच. पडिवज्जमाण ज यणा, एहोज्ज एकोविकउण परकेव॥ पुव्वपडिवन्न आविय, जईया एक्को पुहत्तंवा॥१॥

१३ अभिग्रह द्वारमां द्रव्यादिक चारे अभिग्रह ग्रहण थता नथी केमके आ कल्पज यथोक्त स्वरूपे महा अभिग्रह रूपछे. उक्तंच. दव्वाईय अभिग्गह,वि वित्त रूवान हुंति पुणकेई॥ एअस्स जावकप्पो, कप्पोच्चि यभिग्गहो जेण॥ १ ॥ एयम्मि गोय राई, नियमानियमेण निरववादाय॥ तप्पालणं वियपरं, एअस्स विसुद्धिठाणंतु॥२॥

१४ प्रव्रज्या द्वारमां ए परिहार विशुद्धिक कोईने दीक्षाआपे नही पण यथा शक्तियें उपदेश आपे. उक्तंच॥ पव्वावेइनएसो, अन्नंकप्पठियएत्ति काऊण॥१॥इति.

१५ मुंमापना द्वारे ए कोईने मुंमन करे नही ईहां कोई पूछे जे प्रव्रज्याने अनंतर नियमे मुंमन थाय माटे प्रव्रज्या ने ग्रहणे एनो पण ग्रहण थयो तेम छता जु दो द्वार केम कह्यो तेनो उत्तरजे प्रवर्ज्या द्वारमां नियमे मुंमननो असंजव छे के मके अयोग्यने कोईके प्रवर्ज्या दीधाछता पण पछी योग्यताने जाणपणे मुंमननो अयोग्य पणोछे तेमाटे जुदो द्वार कह्यो.

१६ प्रायश्चित द्वारमां सूक्ष्म अतिचार ऊपनाछता पण निश्चेथी चारेगुरुनो प्रा यश्चित थाय केमके ए कल्प एकाग्रतायें थायछे तेमाटे तेना जंगथी गुरुदोष लागे

१७ कारण द्वारें कारण शब्दे आलंबन कहिये ते रुडीपरे जे शुद्धज्ञानादिक वंतहोयतेने आलंबन नहोय केमके जेना आश्रयथी अपवाद पदनो सेवनार था य एवो कांई ते अंगीकार करेज नही एणेतो निरापेक्षपणे जे कर्म क्षय निमित्ते तप ने प्रारंज्योछे तेहिज यथोक्त विधियेकरीने पूरणकरे.

१८ निःप्रतिकर्म द्वारमां शरीर आश्रयीतो आखमां पडेलो मेल मात्र पण का ढेनही कारण तेनो शरीर निःप्रतिकर्मछे माटे अने प्राणांत उपसर्ग आवे तोपण अपवाद सेवेनही. उक्तंच निप्पडिकम्म सरीरो, अछिमलाइविना वणेइसया, पाणं तिएवियमहा, वसणंमि नवट्टए वीए॥१॥ अप्पबहुत्ता लोयण, विसया इ उ उ होइ एसत्ति, अहवा सुहजावाउ, बहुगंपेय चिय ईमस्स. ॥ २ ॥

१९ भिक्षा द्वारमां परिहार विशुद्धिक भिक्षा अने विहार ए बेहु त्रीजा प होरने विषे करे तथा बाकीना पहोरनेविषे कायोत्सर्गकरे निद्रातो स्वल्प जणाय छे अने जो कोईपण कारणे एनु जंघाबल क्षीण थयुं होय तेथी विहार न थाय तथापि ते महाजाग्यवान अपवादने सेवन करे नही किंतु यथा योग्यपणे पो

तानो आचार पूरो करे. उक्तंच तइयाए पोरिसिए, निरकाकालो विहारकालोय, सेसा सुय उस्सग्गो, पायं आप्पाय निद्दत्ति ॥ १ ॥ जंघाबलंमि खीणे, अविहरमा णो वि नवर नावज्जे, तत्थेव अहाकप्पं, कुणइ उजोगं महाजागो ॥ २ ॥

२० बंध द्वारे ए परिहार विशुद्धिक बे प्रकारेछे तेमांजे कल्प समाप्ते तेहिज कल्प पडिवजे अथवा गछमां आवे ते इत्वर अने बीजा जे आंतरा रहित जिनकल्प पडिव जे ते यावत् कथिक जाणवो वली एटलो विशेष जे इत्वरने एकल्पना प्रनावथकी देव मनुष्यकृत उपसर्ग तथा तत्कालमरणने आपे एवा रोगादिक तथा सहन क रवाने दोहिली ऐवी वेदना पण नथाय अने यावत् कथिकने एवी वेदनाउनो सं नव छे ए वीसमो बंध द्वार थयो विस्तारे शास्त्रांतरथकी जाणवो एवीरीते ए परिहार विशुद्धिकनो उंगणोतेरमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः—अहालंदति एटले यथा लंदिसाधुनो सीतेरमो द्वार कहियेछे. मूलः— लंदंतुहोइकालो, सोपुण उक्कोस मज्जिम जहन्नो ॥ उदउल्ल करो जाविह, सुक्क इसोहोइ उजहन्नो ॥ ६१ए ॥ अर्थः— सिद्धांतनी परिनाषाये लंदशब्दे कालनो उच्चारण थायछे माटे लंद शब्दे काल समजवो ते काल उत्कृष्ट मध्यम अने ज घन्य एम त्रण प्रकारेछे तेमां उदउल्ल करोके० पाणीयेकरी नीजेलो हाथ जेटला कालमां सुकाईजाय तेने जघन्य काल कहेछे आटला कालने जघन्य जे कह्योछे ते मात्र प्रत्याख्यानना नियमविशेषने लीधे जाणवो अन्यथा सिद्धांतमांतो काल नो जघन्यपणो समयादि लक्षण अतिसूक्ष्मतरने कह्योछे ॥ ६१ए ॥

अवतरणः— हवे उत्कृष्ट अने मध्यम कालनो परिमाण कहेछे. मूलः— उक्को सपुव्वकोडी, मज्झे पुण हुंति णेगठाणाइं ॥ इह्वपुण पंचरत्तं, उक्कोसं होइ अहलंदं ॥ ६२० ॥ अर्थः—उत्कृष्ट कालमानतो पूर्वकोटी संख्याप्रमाणछे ते पण चारित्रना कालमान आश्रयेंकरीने उत्कृष्ट कहेलोछे अन्यथा पल्योपमादिरूप एवोपण उत्कृष्ट कालनो संनवछे. पुणके० वली मज्झेके० मध्यमकालना वरसप्रमुख नेदेकरी णे गठाणाइके० अनेक स्थानक हुंतिके० छे. ॥ ६२० ॥

अवतरणः— ईहां पांच रात्री प्रमाण उत्कृष्टो लंद होय तेज देखाडेछे. मूलः— जम्हाउ पंचरत्तं, चरंति तम्हाउ हुंति अहलंदी ॥ पंचेव होइ गछे, तेसिंउक्कोस प रिमाणं ॥ ६२१ ॥ अर्थः— जम्हाउके० जे माटे पंचरत्तंके० पांच अहोरात्रलगे पेटाई एटले पेटादि वीथीयें ग्रामादिकनेविषे निक्षाने अर्थे देह निर्वाह करवा सारुं चरंतिके० विचरे तम्हाउके० ते कारण पणा माटे हुंतिके० थाय छे अहलं

दीके० यथालंदी अने जेनो पंचेवह्योइगछेके० जे पांचनो समुदाय तेने गछ कहेछे एटले लंदिकाना पंचक ए नामना गण एवा कल्पने प्राप्तथाय ए प्रमाणे एकेक गणनायें ए पुरुष परिमाण उत्कृष्ट छे एम समजवुं. ॥ ६२१ ॥

अवतरणः–हवे एमाना सर्व प्रकारनो कथन करतां ग्रंथगौरव थाय तेना भयने लीधे नथी करतां पण यथा लंदिनो जिनकल्पनी साथे समपणो अने विशेषपणो कहियेंछे. मूलः–जाचेविय जिणकप्पे, मेरासाचेव लंदियाणं तु,नाणत्तंपुणसुत्ते भिरकाय रिमासकप्पेय ॥६२२॥अर्थः–जाचेवके०जे जिणकप्पेके० जिनकल्पिकने माटे पांच प्रकारनी तुलनादिरूप मेराके० मर्यादाकहेलीछे साचेवके० तेज मर्यादा लंदियाणंतुके० यथालंदिने माटे पण घणु करीने कहेलीछे अने नाणत्तके०नानात्वभेद ते जिनकल्पि उ अने यथालंदीने घणुकरी सरखाजछे पुणके०वली सुत्तेके० सूत्रनेविषे भिक्षाचर्यानेविषे मासकल्पनेविषे अने चकार शब्दे प्रमाण विषयिनेविषे भेद पण थायछे.

अवतरणः– हवे विधानपूर्वक थोडु कहीने प्रथम मासकल्पनो भेद कही देखाडेछे, मूलः– अहलंदियाणगछे, अप्पडिबध्धाण जहजिणाणं तु ॥ नवरं कालविसेसो, उउवासे पणगचउमासो ॥ ६२३ ॥ अर्थः–तेमां प्रथम यथालंदिक बे प्रकारनाछे एकगछनेविषे प्रतिबध्ध अने बीजा अप्रतिबध्ध एवा बे भेद छे, तेमां यथालंदिकने गछनेविषे प्रतिबंध ते कारणपरत्वे कांई न सांभलेलो जे अर्थ तेने सांभलवाने माटे छे एवुं मानवुं त्यारपछी यथालंदिकने गछनेविषे अप्रतिबंधोनुं उपलक्षण छे अने प्रतिबंधोनी तवेण सत्तेणे इत्यादिक भावनारूप संपूर्ण पण सामाचारी छे ते जेवी जिनकल्पिकोनेविषे पूर्वे कहेली तेवीज जाणवी, हवे नवरंके० ए बे प्रकारना यथालंदीकोने जिनकल्पिकोथी कालनेविषे एटलो विशेष भेद जाणवो. जे उउवासे पणगचउमासेति एटले रुतुबंधकालमां यथालंदीक साधुउ जो विस्तीर्ण ग्रामादिक होय तो ते गामनी छ प्रकारनी गृहपंक्तिरूप शेरी करीने एक एक सेरीमां पांच पांच दिवस भिक्षाटन करेछे. ते भिक्षा घृतादिक पांच माहेलीजुदीजुदी भिक्षा लिये जे एक दिवशे लीधी ते बीजे दिवशे लिये नही अने तेज विधिये वास पण करेछे ए प्रकारे छ वीथीयें करीने एक गाममां मास पूर्ण करेछे हवे जो तेवुं मोटुं गाम न होय तो तेनी पासेना नाना नाना गाममां पांच पांच दिवस रहेछे अने वर्षाकालना चारमास एक गाममां रहे. उक्तंच कल्पभाष्ये. एक्केक्कं पंच दिणे,पण पणउ निछिउमासो; एतच्चुर्णिश्च. जइ एगोचिव मासो, सवियारोत्ति विछिन्नोतोछवी हीउकाउं एक्केक्की ए पंच पंच दिवसाणि हिंडंति बिश्याए वि

पंच दिवसे जाव ठवीए. वि पंच दिवसा एवं एग गामे मासो नवइ अहनछि एगो गामो सवियारो तोहवं तहालंदीया ए ठग्गाम खित्तस्स परिपेरं तेणं तेसिं एक्केक्क पंचदिवसाणि अछंति एवं मासो विनिक्कमाणो पण पण निहित्त होइत्ति ॥६१३॥

अवतरणः— हवे गछ प्रतिबंध तथा अप्रतिबद्ध यथा लंदिकोना परस्पर नेद कहेछेः— मूलः— गछे पडि बद्धाणं, अहलंदीणं तु अह पुण विसेसो, उग्गह जो ते सिंतु, सो आय रियाण आनवइ ॥ ६१४ ॥ अर्थः— अर्थादिकना कारणे गछ संघाते प्रतिबद्ध छे जेने एवा यथालंदिकोने गछ अप्रतिबद्ध यथालंदिक साथे पुणके० वली अहके० एटलो विशेष नेद छे. ते कहे छे. गछ प्रतिबद्ध यथालंदिकएठना जे क्रोश पंचक लक्षण क्षेत्रावगृह कहेलो छे ते तेवाज आचार्यना निश्राये करीने विहार करें छे तेज आचार्यना पणते क्षेत्रावगृह थाय छे. ए तात्पर्य. हवे गछमां अप्रतिबद्ध जे छे तेने जिन कल्पीनी जेम क्षेत्रावगृह नथी ए नेद छे॥६१४॥

अवतरणः— बे प्रकारना यथालंदिकाना पण निक्षाटनना नाना प्रकार कहे छेः— मूलः— एगवसहि ए पणगं ठवीही उय गामिकुवंति, दिवसे दिवसे अन्नं अमंति वीही सुनियमेण ॥ ६१५ ॥ अर्थः— ऋतुबद्ध काळनेविषे एटले सीतऋतु तथा ग्रीष्मादि आठमासमां एक उपाश्रयमा मात्र पांच दिवसपर्यंत रहेछे; अने वर्षाऋतुमां चार महिना रहे छे. गाममां ठवीथीउ एटले शेरीउ करीने रहेछे. हवे एमां एवो अर्थ छे के यथा लंदिक जे ते गृहपंक्तिरूप छ शेरीए गामने विषे कल्पना करे छे. अने एक एक शेरीने विषे पांच पांच दिवस निक्षापर्यटन करेछे. तथा त्यांज वास करे छे. उक्तंच पंच कल्प चूर्णौ. ठप्पागे गामो कीरइ एगेगो पंच दिवसंहिं मिति तछेव वसंति वासासुएगछ चउम्मासोत्ति" ते शेरीमां दिवसे दिवसे नियमे करीने परस्पर निक्षा पर्यटन करे छे. उद्धतादि निक्षापंचक मांथी जे एक दिवसे करे छे तेज फरी बीजे दिवसे करे नही. एटले दररोज जुदी जुदी निक्षा करे छे. ए नाव छे. आ प्रमाणे अमे कहेलुं छे ते उत्तम प्रकारनी बुद्धिवाला पुरुषो ए समयाविरोधे करी बीजा प्रकारनुंपण व्याख्यान करवुं एवो अमारो आशयछे.

अवतरणः— हवे सूत्रना नाना प्रकारनो कथन करतां प्रथम यथालंदिकना नेद कहे छेः—मूलः— पमिबद्धा इयरे विहु, एक्किका ते जिणाय थेराय॥ अछस्सउदेसंमिय, असमत्तेतेसि पडिबंधो ॥६१६॥ अर्थः—यथालंदिक बे प्रकारना छे. एक गछ प्रतिबद्ध अने इत्वरके० बीजा गछ अप्रतिबद्ध. ते बंने वली दरेक बेबे प्रकारना छे. एक जिन कल्पिक अने बीजा स्थविर कल्पिक. तेमां जे यथालंदिक कल्प

समाप्ति करी पछी जे जिन कल्पने पडिवजसे ते जिन कल्पिक जाणवो. अने जे पछी स्थविर कल्पिने पडिवजे ते स्थविर कल्पिक जाणवो. हवे जे गछनेविषे जे प्रतिबद्ध थाय छे ते अनेक प्रकारे करी थाय छे. तेना कारण कहे छे. अछस्सउ के० अर्थनोजे देश कहिये शेष तेने अर्थे एटले गुरुने सन्मुख जे सूत्रनो ग्रहण करवामांमंडयुं तेनी समाप्ति थइनथी हजी असमत्त के० पुरो कर्यो नथी केटलोक बाकी रह्युंछे. ते पूरो करवाने अर्थे यथालंदिकने गछमां प्रतिबद्ध थाय छे.॥६२६॥

अवतरणः– इहां कोइपूछेजे त्यारे सूत्रार्थ पूरण करीने पछी यथालंदिपणो केम पडिवजतो नथी तेने उत्तर कहे छे. मूलः–लग्गाइसु त्तरंते, तोपडिवज्जित्तु खेत्तबाहिंठिआ ॥ गिण्हंति जं अगहियं, तछय गंतूण आयरिउ ॥ ६२७ ॥ अर्थः– लग्गाइसुके० शुभलग्न आदिशब्दथकी शुभयोग अने चंद्रबलादिक तुरतनो आव्यो जाणी अने बीजो मुहूर्त्त हजीघणो दूर होय तेवारे गुरु समीपे प्रारंभ करेलो अर्थ पूरण कर्याविनाज ते शुभमुहूर्त्ते पडिवजे पछी ते गछमांथी निकलीने गुरुजे क्षेत्रमां अथवा ग्राममां अथवा नगरमां रह्याहोय ते नगरथी बाहिर केटलेक दूर क्षेत्रे जइ रहे त्यां ते अत्यंत विशिष्ट कठोर एवा समस्त अनुष्ठान ग्रहण करे अने त्यां जंअगहिअं के० गुरुपासे जे नथी अध्ययन करेलो अर्थ, ते तेने गुरु पोते दयावंत छतो तेना स्थानके जईने ते यथालंदिने विशेष अर्थसमजाविआपे.

आशंकाः– ते यथालंदि पोतेज गुरुने सन्मुख आवी विशेष अर्थ केम समजी जतो नथी तत्रोत्तरं. मूलः– तेसिंतयं पयछइ, खेत्तं इताण तेसिमे दोसा, वंदंतमवंदंते, लोगंमि होइ परिवाउ. ॥ ६२८ ॥ अर्थः– ज्यां गुरुहोय ते क्षेत्रमां जो ते यथालंदिक आवे तो तेने अनेक दोष प्राप्तथाय ते दोष कहेछेः– जो यथालंदिक त्यां गुरुपासे आवे तो गछमां रहेनारा साधुउ तेने वंदना करे तेछेकारणे फरी यथालंदि तेने वांदेनही केमके ए यथालंदिक कल्पनो एवोज आचार छे के पोताना गुरु आचार्यादिक सीवाई बीजा कोइ साधुने वंदन करे नही तेवारे बीजा गछवासी साधुउए वांद्याछतां जो यथालंदि न वांदे तो लोक निंदाकरे के आ यथालंदिक साधु डुष्टशील अने निर्गुण छे केमके बीजा साधु मुनिराज एने वंदन करतां छतां ए तेमनीसाथे ज्ञाषण पण करतो नथी अने वंदन पण करतो नथी एवी निंदानी शंकाछे वली ते गछमां रहेला साधुने पण लोको एम कहे के ए पण अवश्य भ्रष्टछे डुष्टशील छे निर्गुणछे माटे एने वांदे छे पण उत्तम होयते वांदेनही अथवा ए गछवासीयोने एमां काइ स्वार्थहसे माटे अणवांदताने वांदेछे

इत्यादि अपवाद थाय माटे आचार्य ते यथालंदिने सन्मुखजईनेज अर्थआपे.

मूलः— नतरेज्जजईगंतुं, आयरिउंताहि एइसोचेव ॥ अंतर पल्लिपडिवस, नगा मवसहिय वसहिंवा ॥ ६२७॥ तिएइअपरिभोगे, तेवंदंते नवंदइसोउ, तंपेत्तुम पडि वच्छा, ताहिजहिछाइ विहरंति ॥६२८॥ अर्थः—कदाचित ते आचार्यनो जंघाबल क्षी णहोय तेथीते सामो जई शके नही तो पोताना मूल क्षेत्रथी अढीगव्यूत उपरनो भि क्षाचर्या संवधी ग्रामविशेष तेने अंतरपल्ली कहिये त्यां जाय अथवा मूलक्षेत्रथी बा हिर अथवा मूलक्षेत्रेज बीजी वस्तिमां आवे वाशब्द थकी अथवामूलगी वस्तियेआवे.

ईहां ए भाव के जे आचार्य यथालंदिने समीपे जई शके नही तो ते यथालं दिमांहे जे धारणा कुशल होय ते अंतर पल्लीये आवे त्यां आचार्य तेने जईने अर्थ कहे इहां वली संघाडीआ साधु ते मूल क्षेत्रथी अशन पान लेईने आचार्यने आपे पछी ते गुरु भोजन करी संध्यासमये पोतानी मूलगी वस्तियें आवे.

हवे ते गुरु जो अंतर पल्लीयें पण आववाने असमर्थ होयतो अंतरपल्ली अने प्रतिवृषभग्रामने विचाले जई अर्थ कथनकरे त्यांपण जावाने असमर्थ होयतो प्रतिवृक्षभग्रामेजाय त्यां जई न शके तो प्रतिवृषभग्राम अने मूलक्षेत्रविचालेजाय त्यां जइ न शके तो मूल क्षेत्रथी बाहेर ज्यां कोई लोक नहोय एवा एकांत प्रदेशे जाय त्यांपण जइ नशके तो मूलक्षेत्रमांज बीजे स्थानके जाय त्यांपण जइ नश के तो मूलक्षेत्रनी वस्तिमांहेज गुप्तस्थानके ज्यां बीजा लोक न होय त्यां आचार्य तेने अर्थ आपे एम त्यां गया थका तेने गछवासी साधुवांदे पण ते यथालंदि त्यां गछ वासीया साधुने वांदेनही पछी ते अर्थ शेष अप्रतिबद्ध छतां लेइकरीने पछी ज्यां पोतानी इछामां आवे त्यां विहारकरे उक्तंच कल्पचूर्णौ आयरिएसुत्तपोरसिं अछ पोरिसिंच गछेनियाणदाउं अहालंदियाणं सगासंगंतुं अछंसारेइ अहनतर इदोवि पोरिसीउ दाउंगंतुं तोसुत्तपोरिसिंदाउंवञ्चइ ॥ अछपोरिसिंसोसेणदवावेइ अछसुछ पोरिसिंपिदाउं गतुंनतरइतो दोविपोरिसीउ सीसेणवायावेइ अप्पणाअहालंदिएवाएइ जइनसक्केइआरिउंखेत्तवहिं अथालंदियसगासंगंतुं ताहेजोतेसिं अहालंदियाणं धार णाकुसलो अंतरपल्लि आसन्ने खेत्तवसहिंएति आयरियातस्सगंतुं अछंकहति एछपुण संघाडो भत्तपाणंगहाय आयरियस्स नेइगुरू वेयालियंपडिएइति एवंपिअसमछे गुरु अं तरपल्लियाएपडिवसभगामस्सय अंतरावा एइत्ति असतिपडिवसभे वाइए असतिपडिव भस्सवसगामस्स य अंतरावाएत्ति असतिवसभगामस्सवहियाएवाएति अंतरंते संगामे अन्नाएवसहीए अंतरंते एगवसहीएचेव अपरिभोगउवासेवाएति इत्यादि ६२७॥६२८

अवतरणः—हवे जिनकल्पिक यथालंदिक अने स्थवरकल्पिक यथालंदिकनो माहो माहेजे विशेष ज्ञेदछे ते कहेछे मूलः—जिणकप्पियायतहियं, किंचित्तिगछंपितेनकारिंति, निप्पडिकम्मसरीरा॥अवि अछिमलंपिनवणिंति ॥६३०॥ अर्थः—तेमां जिनकल्पिक यथालंदिक तो पोताना कल्पमां स्थित समये मरणांत रोगादिक उत्पन्न थया उतां तेना नाशने अर्थे कांइपण चिकित्सा करतां नथी केमके तेनो निःप्रतिकर्म शरीर एटले पोताना शरीरे प्रतिक्रिया रहित छे मांटे ते ज्ञगवंत पोताना नेत्रसंबंधी मेल मात्रनेपण काढतानथी ते कल्पस्थितनो एवुंज लक्षण छे.॥ ६३० ॥

अवतरणः— हवे स्थविर कल्पिक यथालंदिक कहे छेः— मूलः— थेराणं नाणत्तं, अतरत्तं अप्पिणंति गछस्स, तेवि असे फासुएणं, करिंति सवंपि परिकम्मं ॥ ६३१ ॥ अर्थः— स्थविर कल्पिक यथालंदिक ते वली नानात्व एटले अनेक प्रकारे थाय छे ते आवीरीतेः— अतरत्तं के० पोताना समुदायनो साधुहोय तेना शरीरे उत्पन्न थयेलुं रोग सहन करी नशके तो ते यथालंदि पाछो गछमां जाय अने ते गणपंचक पूरो करवाने अर्थे ते गछमां रहेनार उत्तम ज्ञानवंत अने धृति प्रमुखे करी युक्त एवा बीजा मुनिने पोताना कल्पमां प्रवेश करावे पछी ते गछमां गयला रोगी साधुने बीजा गछवासी साधुउ प्रासुक अन्न पान औषधादिके करी समस्त परिकर्म घणा प्रकारे करे. ॥ ६३१ ॥

हवे कोने वस्त्रपात्र थाय अने कोने नथाय ते कहे छेः— मूलः—एक्केक्क परिग्गहगा, सप्पाउरणा हवंति थेराउ ॥ जे पुणसिंजिणकप्पे, ज्ञयए सिं वछपायाइं ॥ ६३२ ॥ अर्थः— स्थविरकल्पक यथालंदिक पांचे प्रत्येक एकेक पतद्ग्रह धारण करे छे. अने सप्पाउरणाके० प्रावरण एटले वस्त्रेकरी सहीत होय अने जे यथालंदिकोमांथी पछी जिनकल्पमां जसे एटले जिनकल्पिक यथालंदिक होय तेउने प्रत्येक वस्त्र, पात्र, पततद्ग्रह, ए सर्वेनी ज्ञयएके० ज्ञजना छे एटले केटलाएकोने वस्त्र, पात्र, इत्यादिक साधन होय; अने केटलाकने ते साधन न होय एवा अवांतर ज्ञेद छे. ॥ ६३२ ॥

अवतरणः— हवे सामान्ये करीने यथालंदिक साधुना प्रमाण कथन करे छे गणमाणउजहन्ना, तिन्नि गण सयग्गसोय उक्कोसा ॥ पुरिसपमाणे पनरस, सहस्स सोचेव उक्कोसा ॥ ६३३ ॥ अर्थः— गणमाणउ के० गछना प्रमाण थकी जहन्नाके० जघन्ये करी तिन्निगणके० त्रणगण थाय अने उक्कोसाके० उत्कृष्टत्वे करी सयग्गके० शतपृथक्त्व गण थाय तेमज पुरिसपमाणे

के० पुरुष प्रमाण करियें तो जघन्य पनर पुरुष थाय छे केमके ए कल्पमां प्रत्ये क पांच पुरुष होय छे ते पांचने जघन्य त्रण गणेकरी गुणियें तेवारे पन्नर पुरुष थाय छे अने उत्कृष्ट पुरुष प्रमाणतो सहस्स सोचेवके० एक सहस्र पृथक्त्वथाय

हवे सहस्र पृथक्त्व पुरुष प्रमाणनाज आश्रयेकरीने फरी विशेष कहे छे:- मूलः- पडिवज्जमाण गावा, इक्का इहवेज्जऊण पक्खेवि ॥ होंति जहन्ना एए, सय ग्ग सोचेव उक्कोसा ॥ ६३४ ॥ अर्थः- प्रतिपद्यमान यथालंदिकोनो निश्चेंकरीने पां च मुनिनो एक गछथाय छे तेमां ज्यारे ग्लानत्वादिक कारणने वशे एकादि ऊण थाय अथवा पक्खेवि के० प्रक्षेप एटले प्रवेश करावावाना योगेकरी पंचक गछ थाय छे ए परमाणे जघन्य प्रतिपद्यमानक गण पण समजवा अने उत्कृष्ट प्रतिपद्य मानक पण शतक पृथक्त्व समजवा ॥ ६३४ ॥

मूलः- पुव्वपडिवन्नगाणवि । उक्कोस जहन्न सोपरीमाणं ॥ कोडिपहुत्तं नणियं । होइ अहालंदियाणंतु ॥ ६३५ ॥ अर्थः- पूर्वेप्राप्त थयेला यथालंदिपण जघन्ये करीने अने उत्कृष्टताए करीने कोटि पृथक्त्व संख्यादिक थाय छे. तेमां जघन्यपरि माणनुं प्रमाण न्यून संख्याए समजवुं. आप्रमाण पूर्वे जेणे यथालंदिपणो आदर्यो छे एवा पडिवजणहार यथालंदिक साधुओनुंकह्यो. उक्तंच कल्पचूर्णौ पडिवज्जमा णगाजहन्नेणं तिन्निगणा उक्कोसेणं सयपुहत्तं गण णपुरिसप्पमाणेणं पडिवज्जमाण गाजहन्नेणं पन्नरस पुरिसाउक्कोसेणं सहस्सपुहत्तं पुव्वपडिवन्नगाणं जहन्नेणं कोडि पुहत्तं उक्कोसेणवि कोडिपुहत्तमित्ति ॥६३५॥ इति यथालंदिक साधुनो द्वार समाप्त.

अवतरणः- निज्जामयाणं अडयालत्ति एटले निर्यामक जे ग्लाननी परिचर्या करे तेवा साधुना अडतालीस भेदोनो एकोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः- उव्वत्त दार संथार कहग वाईय अग्गदारंमि॥नत्ते पाणे वियारे, कहगदिसाजे समच्छाय॥६३६॥ एएसिं तु पयाणं । चउक्कगेणं गुणिज्जमाणेणं । निज्जामयाणसंखा । होइ जहा समयणिद्दिठ्ठा ॥ ६३७ ॥ अर्थः- हवे निर्यामक एटले अशक्त थयेला सा धुओनी शुश्रुषा करनार ते साधुओनीपासें रहेछे. आ योगे करीने तेओ ने पराधीनपणु एवा दोषेकरी दुष्ट होवाथी ते अगीतार्थ छे एवुं समजवुं नही, कारण कोइ कालप्रसंगे शुश्रूषा करनारपण गीतार्थादि गुणयुक्त अने वर्णनकरवाने योग्य थायछे, अने तेनामां बहुसारा गुणो होइने ते विशेषे करी साधुओनी शु श्रूषा करवामाटे उद्युक्त थायछे. ते शुश्रूषा करनार उत्कृष्टेकरी अडतालीस प्रका रना छे. तेनुं वर्णन करेछे उव्वत्त एटले उद्वर्तनादिए करीने साधुना शरीरनी शुश्रू

षा करनार चार जण होय बीजा दार एटले साधुना अभ्यंतर अंदरने बारणे लोकनो समर्दन टालवाने अर्थे रहेनारा चार होय त्रीजा संथार एटले संथारोकरी आपनार चार होय चोथा कहग एटले अनशन वृत्तिवाला साधुपासे रहीने धर्म कथन करनारा चार होय पांचमां वाईय एटले वाद करनारा चार होय छठा अ ग्गदारंमि एटले अग्रद्वारनी पासे रहेनारा चार होय सातमां भत्ते एटले साधुने अ न्न परिवेषण करनार चार होय आठमां पाणे एटले पाणी आणवाने योग्य चार होय नवमां वियरे एटले उच्चार परिस्थापक चार होय अने दशमां प्रस्रवण परिस्थापक चार होय इग्यारमां कहग एटले बाहार धर्म कथन करनारा चार, बा रमां दिसा जे समबाय एटले पूर्व, दक्षिण, पश्चिम अने उत्तर एचारे दिशानेविषे जे रहीने हजारो वीरपुंरुषोसामे युद्ध करवाने समर्थ होय ए पूर्वे कहेला बार प्रकारना निर्य्यामक ते प्रत्येक साधुना चारचार भेद छे. ए प्रकारे सर्व निर्य्यामकोनीसंख्या अ डतालीशनी थायछे. ए प्रमाणे सिद्धांतनेविषे अडतालीस कहेलाछे. ६३६॥६३७

अवतरणः– हवेसूत्रकर्ता पोतेज अडतालीश लक्षणनुं विवरण करेछे. मूल.– उव्वत्तंति परावत्तयंति पडिवन्न अणसणं चउरो ॥ तह चउरो अप्भिंतर दुवार मू लंमि चिठंति ॥ ६३८ ॥ संथारय संथरआ, चउरो चउरो कहंति धम्मंसे ॥ चउरो यवायिणोसे अग्गदारे मुणिचउक्कं ॥ ६३९ ॥ चउरो भत्तं चउरो य पाणियं तड चियं निहालिंती ॥ चउरो उच्चारं पुरि ठवंति चउरोय पासवणं ॥ ६४० ॥ चउरो बोहिं धम्मं कहिंति चउरो वि चउसु विदिसासु ॥ चिठंति उवहवर, स्क्रिया सहसजो हिणो मुणिणो ॥ ६४१ ॥ अर्थः– अहिया सामान्य विधिए घणुकरीने अनशन व्रत करनारा साधुए पोतेज उद्वर्तनादिक करवुं; परंतु ते करवाविषे ते साधु अ समर्थ होय तो तेनी शुश्रूषाविषे योजना करेला चार साधुओ उद्वर्तन करेछे. उ द्वर्तन शब्द साधरण छे, ए माटे तेज चार साधुओ उद्वर्त्तना परावर्त्तना एटले उथलवो पाथलवो एना उपलक्षणथी उठाडवो, बेसाडवो, बाहार लेईजवो अंद र लाववो उपधिनो पडिवजवो इत्यादिक शुश्रूषाकर्म ए चार करेछे. तेमज अभ्यं तर द्वारनी पासे जे चार साधु रहेछे ते त्यां आवनारा लोकोनी भीड न थाय ते सारु ते अनशनी पासे रहेछे. केमके ते त्यां न रहेतो ते द्वारनी पासे लोको नी भीड थाय तेथी अनशनव्रत करनारानी समाधिमां विघ्न उत्पन्न थाय॥६३८॥ तेमज बीजा चार साधु ते अनशनीने अनुकूल समाधिनी वृद्धि थवा सारु सं स्थारक बिछावणहार थायछे ते न करे तो तेने समाधिनी वृद्धिथाय नही ते

मज ते अनशनी पोते तत्व गीतार्थ छे तेम छतापण बीजा चारसाधु विदितते नी पासे उत्तम प्रकारनी विशिष्ट देशनाथी धर्म कथन करे छे. जो पण ते सर्व रीते शास्त्रार्थमां निपुण होय तो पण अनशनादिके करीने तेने उद्वेग प्राप्त थाय छे ते दूर थवा सारु धर्म कथन करेछे. तेमज बीजा चार साधु, वादी अनशनव्रत करनाराना प्रजावथी विस्तार पामेली स्तुति श्रावक लोकोए करी देखीने कोईक दुरात्मा दुष्टबुद्धिवंत पुरुष ते स्तुतिने न सहन करी वीतरागना मतनी निंदाकरवा आवे तेनुं निराकरण करवा सारुं वाद करनारा अतिशय वक्ता अने प्रमाणनेविषे निपुण एवा चार लब्धिसंपन्न साधु ते दुष्टोनो पराजव करी ते अनशनीनी शुश्रूषाकरेछे तेमज बाहेरने दरवाजे चार साधुउ सामर्थ्यवान रहेछे तेउ अन्य जनोनो प्रवेश निवारवाने अर्थे त्यां रहेछे ॥ ६३९ ॥ तेमज बीजा चार साधु ते तेणे अनशनीयें आहारनो त्याग कर्यो छतां कदाचित् क्षुधायेपीडीत तेने आहारनी अपेक्षा थाय तो ते आहारनी याचना करेछे ते कोई देवता संचारथी आहारनी याचना करेछे किंवा ग्लानता प्राप्त थवाथी याचना करे छे तेनी परीक्षा करवा सारु ते चार साधु प्रथम तेने प्रश्न करे छे के तमे गीतार्थ छो किंवा अगीतार्थ छो अथवा तमने अनशनव्रत करेलानुं स्मरण छे के नथी. तेवारे ते प्रस्तुत कहे के मने व्रतनुं स्मरण छे एवुं केतां पण आ समये दिवस छे के रात्रीछे. इत्यादिक प्रश्न पुछी खातरी करे ने जाणे के ए देवता अधीष्ठित नथी किंतु परीसह पीडीतछे तेवारे तेने समाधी संपादान करवाने अर्थे किंचित आहार समर्पण करेछे पछी ते आहार स्विकारीने ग्लानत्वनो पराजव करीने समाधिनी वृद्धि करेछे हवे जो कदाचित् वेदनार्दित आहार न करे तो ते आर्त्तध्यानेकरी जवनपतिव्यंतरादिक प्रत्यनिक देव थईने पछी कदाचित् यतिने उपद्रव करे तेमज बीजा चार साधुउ तेना देहने दाहादिक प्राप्त थाय तेनी शान्ती करवा सारु पाणीनी गवेषणा करेछे. तेमज बीजा चार साधुउ एकांतस्थलमां उच्चार ते वडिनीति परठवे तेमज बीजा चार साधुउ मूत्रोत्सर्गने दूर परठवे ॥ ६४० ॥ तेमज बीजा चार साधुउ उपाश्रयनी बाहार रहीने लोकोनी समीपे मनने आनंद करनारा धर्म कथन करे छे. तेमज बीजाचार साधुपूर्व, दक्षिण, पश्चिम, अने उत्तर ए चारे दिशाने विषे रहिने तुच्छ उपद्रवथी रक्षण करेछे ते चारे सहस्त्रयोधि महामल्ल जेवा जाणवा.॥ ६४१ ॥

अवतरणः— हवे ए अडतालीश साधुउ जो प्राप्त नथाय तो केटलाये चलाववुं ते कहे छे. मूलः— ते सवाजावे ता कुज्जा एक्केकगेणऊणा जा तप्पासठिई ए

गो जलाइ अन्नेसउ बीउ ॥ ६४१ अर्थः— ते निर्यामक सर्वे अमतालीश प्राप्त न थाय तो ते प्रत्येक चारमांथी एक एक कमी करवो तेनाअनावे बे बे कमी करवा. एवा प्रकारे करीने जघन्य माने करी यावत् बे निर्य्यामक अवश्य होवाजोइए ते बेमां एक अनशनी साधुनीपासे निरंतर रहेछे. बीजो पाणी विगेरेनी गवेषणा कर नारो होइने अन्नपानादिक आणवा सारु पर्यटन करे. मूलतो उत्सर्गे अनशनी पोतेज सर्व करे अने तेम जो न करे तो अडतालीसमांथी उंगा करतां यथा योग बे जोइये पण एक निर्यामके अनशनव्रत करनारानी शुश्रुषा नकरवी. यडु क्तं एगोजइ निज्जवगो अप्पावत्तो परोप वयणंच, सेसाण समनावे वि, हुती बीउ वस्स कायव्वोत्ति ॥६४१॥ ए अडतालीस निर्य्यामिकोनो एकोतेरमो द्वार समाप्त थउ.

अवतरणः— पणवीस नावणाउ सुहाउत्ति एटले पचीस नावना जे शुन ठे तेनो बहोतेरमुं द्वार कहे ठेः— मूलः— इरिया समिए सयाजए, उवेह, नुंजेज्जव पाण नोयणं ॥ आयाण निरकेव डुगंठ संजए समाहिए संजयए मणोवई ॥६४३॥ अर्थः— प्राणातिपात निवृत्ति प्रमुख पांचमहाव्रतोनुं दृढत्व संपादन करवासारुं जे नाविये, अन्यसीयें तेने नावना कहे ठे. तेमां प्रथम नावना शब्दनो अर्थ कहेछे. जेना योगेकरीने सन्मार्गनो अन्यास थायठे तेने नावना कहेछे. जेम अन्यास वि ना विद्यामलीन थाय ठे तेम नावनाना अन्यासविना व्रत मलीन थायठे. ए प्रत्येक महाव्रतनी पांच पांच नावनाउ ठे. तेमांना प्रथम महाव्रतनी पांच नावना कहेछे. प्रथम इरियासमिति एटले समता राखवी केमके, समता रहित थ को अ समता वंत प्राणी जीवनी हिंसाकरे माटे ए प्रथम नावना नाववी.

हवे सयाके० समस्तकालें उपयुक्त थको उत्तम प्रकारे एकाग्रचित्ते थई अवलोकन करीनेनोजन करे. वा शब्दकरीने जलप्राशन पण करे ठे. एमां एवो अर्थ ठे के पो ताना पात्रमां पडेली निक्षा पोताना नेत्रेकरी अवलोकन करे अने ते निक्षाने प्राप्त थएला मक्षिकादिकोनुं वारंवार निवारण करी प्रत्येक निक्षाने वखते अन्ननो अवलोकन करे; अने पोताने स्थानके आवी प्रकाशयुक्त जग्यामां बेसीने प्रति ग्रासमां जोतो जोतो नोजन करे, तेमज अवलोकन करी जलप्राशन करे ए प्र माणे न अवलोकन करतो नोजन करे किंवा जलप्राशन करे तो तेथी प्राणीउनी हिंसानो संनव थाय ठे. ए प्रमाणे बीजी नावना कही.

तेमज प्रात्रादिकनुं ग्रहण करवुं अथवा ग्रहण करेलुं पात्र फरी नीचे. मूकवुं तेमां जुगुप्सा नकरे एटले जे स्थलथी पात्रादिक ग्रहण कर्युं ते स्थल अथवा ते पात्रादि

क जंतुउंना उपसर्गे पीमित छे के नही तेनो विचार करी ते पात्रादिक क्षालन पूर्वे क ग्रहण करे अने ते प्रमाणेज सारे स्थले मूके एवुं न करेतो प्राणीनो घात करनार थाय छे. ए त्रीजी नावना थई.

तेमज साधु संयम समाधिये युक्त थको कोइपण कर्मनेविषे प्रवर्त्त थाय त्यारे स्वस्थ अने शांत तथा अडुष्ट चित्ते ते कार्य करे एवुं जो न करे अने डुष्ट चित्ते करे तो तेनो कायसंलीनतादिक उद्योगपण सर्व कर्मबंधनोकारण थायछे. इहां प्रसन्न चंड्नो दृष्टांत जाणवो. श्रूयतेहि प्रसन्नचंड्रो राजर्षिर्मनोगुप्त्या नावितोऽहिंसाव्रताहिंसामकुर्वन्नपि सप्तमनरकपृथ्वीयोग्यंकर्म निर्मितवान्॥आ प्रकारनी चोथी नावना छे.

ए प्रकारेज मिथ्यावाणी उच्चार करे नही. केमके मिथ्यानाषण करनार प्राणीनो घात करेछे एम वचननो अडुष्ट पणो प्रवर्त्ताववो ए पांचमी नावना. तत्वार्थ ग्रंथमां आ पांचमी नावनाना स्थाने एषणा अने समिति लक्षण ए नावना कहेली छे. ॥ ६४३ ॥ एवा प्रकारनी प्रथमव्रत नी पांच नावना कही.

हवे बीजा महाव्रतनी पांच नावना कहेछेः— मूलः— अहस्ससच्चे अणुवीअ नासए जे कोह लोहनय मेव वज्जए॥ सदीहरायं समुपेहियासिया मुणी हु मोसं परिवज्जए सया ॥६४४॥ अर्थः—हवे हास्य न करतां सत्यनाषण बोलवुं केमके हसीने बोलनारो कदाचित मिथ्यानापण पण करे, ते नथाय तेने प्रथमनावना जाणवी.

तेमज सम्यक् प्रकारे ज्ञान पूर्वक विचार करी नाषण करे केमके विचार कर्याविना जो बोले तो कदाचित् मिथ्या नाषण पण बोलाय तेथी तेने वैर पीडा अने सत्वोपघातादिकनो संनव थायछे. ए बीजी नावना जाणवी.

तेमज जे क्रोधनो, त्याग करे एवो जे साधु तेनो स्वनाव मोहनुं अवलोकन करनारो छे ते एवो थईने निरंतर निश्चयथी मिथ्यानाषणनुं वर्जन करे छे अने क्रोधने स्वाधीन थनारो वक्ता पोतानी अथवा बीजानी अपेक्षा न करतां जेम तेम बोलतो थको कांईपण मिथ्यानाषण करे एटला माटे क्रोधनी निवृत्ति करवी तेज श्रेष्ठछे ए त्रीजी नावना जाणवी.

तेमज लोन्ने परानव करेलुंछे चित्त जेनुं ते प्राणी अत्यंत ड्व्यनी इछाए जूठी साक्षी विगेरे देईने मिथ्यानाषण करनारो थायछे. माटे सत्यव्रत पालणकरनारा साधु ए लोननो त्याग करवो ए चोथी नावना जाणवी.

तेमज नयपीमित जे होय ते पण पोताना प्राणादिकना रक्षण सारु कपट

थी बोलेछे माटे निर्जयपणु स्थापन करवुं. ए पांचमी जावना जाणवी एवी ए बीजा महाव्रतनी पांच जावना कही. ॥ ६४४ ॥

हवे त्रीजा महाव्रतनी जावना कहेछेः— मूलः— सयमेव अउग्गहजायणे घडे मइमं निसंम सइजिकु उग्गहं॥अणुन्न विय जुंजियपाणजोयणं जाइत्तासाहम्मि याणउग्गहं ॥ ६४५ अर्थः— जे साधु जनछे ते सयमेवके० पोतेज पोताने मुखे करीने जिक्षादि पदार्थ सम्यक रीतिए जाणीने गृहपति अथवा गृहपतिये जेने आज्ञा दीधी होय एवा लोकोनी पासे याचना करेछे पण परमुखे याचना करे न ही ए रीते देवेंडादिक अवग्रहनी याचनाये प्रवर्त्तवो केमके घरना मालेकसिवाय बीजानी पासे याचना करें किंवा बीजाना मुखे याचना करावे तो माहोमाहे विरोध निर्ध्टनादिक अने अदत्त परिजोगादिक दोष प्राप्त थायछे, ए प्रथम जावना जाणवी.

तेहिज मागी लीधेला अवग्रहनेविषे तृणादिक लेवा सारु पण बुद्धिमान सा धु उद्यम करेछे ते केवी रीतेके अवग्रहना देनारनो अनुज्ञा वचन सांजलीने तृ णादिक लियें परंतु तेना वचन सांजल्याविना जो तृणादिकलिये तो ते अदत्त स्वी कार कर्या सरखुं थायछे ते न करे एबीजी जावना जाणवी.

तेमज सयके० सदासर्वकाल जिक्षुके स्पष्ट मर्यादा ए अवग्रहनी याचना क रवी. एमां एवो अर्थछे के एकवार स्वामिए अवग्रह दीधो होय तो वारंवार अव ग्रहनी याचना करवी. पूर्वे अवग्रह मांग्यो छतां त्यां ग्लानादिक आवस्थायें मूत्र, पुरीषोत्सर्ग परछवतां पात्र कर अने चरण प्रक्षालन करतां स्थानाजिदायकनी पीडानो परिहार करवा सारु याचना करवीजजोईयें एवी त्रीजी जावना जाणवी.

तेमज अणुन्नवियके० गुरुनी अथवा अनेरा साधुनी आज्ञा लेईने पोते जो जन करे किंवा जल प्राशन करे एमां एवो अर्थ छे के सूत्रोक्तविधिये लीधो जे प्राशुक एषणीय ते आलोयण पूर्वक गुरुने जणावी गुरुनी अनुज्ञालेई मंमलीमां अथवा एकलो जोजन करे एना उपलक्षणथी ऊधिक उपग्रहिक जेदजिन्नजे धर्म साधनना उपकरणो छे ते सर्वे गुरुनी अनुज्ञायेंज सेवन करे. अन्यथा अदत्त सेवन कर्या प्रमाणे थाय छे. ए चोथी जावना जाणवी.

तेमज जे सरखे धर्मे चाले तेने साधर्मिक कहियें एटले जे एक शासन प्रतिप न्न संविज्ञ साधु प्रथम कोई क्षेत्रे माशादिक कालनो शंक्रोश योजन क्षेत्रावग्रह मागीने रह्योछे तो तेनी अनुज्ञा लीधाविना जो बीजोसाधु त्यां रहे तो ते चोरी क र्यो सरखुं थाय. ए पांचमी जावना जाणवी, ए त्रीजा महाव्रतनी पांच जावना कही.

हवे चोथा महाव्रतनी पांच जावना कहेछे. मूलः—आहारगुत्ते अविजूसियप्पा इत्थिंन निझाइ न संथवेज्जा॥ बुद्धे मुणी खुद्दकहं न कुज्जा धम्माणु पेहीसंधइ बंज चेरे ॥६४६॥ अर्थः— जे आहारनेविषे गुप्त थाय पण अति स्निग्ध अने मात्राधिक जे आहार होय ते आरोगे नही केमके अति शबलस्निग्ध मधुर रस युक्तआहारनो प्रीति पूर्वक जोजन कस्याथी धातुपुष्टी थाय तेथी वेदोदय थवाने लीधे अब्रह्म सेवा करे अने जो केवल अतिमात्रा जोजन करे तो ते थकी पूर्वोक्त दोष न थाय किंतु काय क्लेश तो अनुजवे माटे परिमित आहार करवो ए प्रथम जावना जाणवी.

हवे विजूषारहित देह एटले स्नान विलेपनादि नाना प्रकारनी विजूषा धारण करवाविषे आसक्त चित्त थयुं तो ब्रह्मव्रतने बाधा उपजे ए बीजी जावना जाणवी.

तेमज स्त्रीने अवलोकन करवी नही. अर्थात् स्त्रीना अवयव जे मुख, स्तना दिक ते इच्छापूर्वक न जोवा. तेम चिंतववा पण नही जो चिंतविये तोब्रह्मव्रतना अतिचारनो संजव थाय ए त्रीजी जावना जाणवी.

तेमज स्त्रीनी सार्थे परिचय करवो नही केमके तेनो संस्तव, वस्ति तथा तेणे उपयुक्त शयन, आशन इत्यादिक विषय तेनुं सेवन करतां छतां ब्रह्मव्रतनो जंग थाय छे. ए चोथी जावना जाणवी.

तेमज बुद्धके० जेने तत्वज्ञान प्राप्त थयेलुं छे, एवो साधु तेणे क्षुद्र के० प्रशंसा करवाने अयोग्य एवी स्त्रीविषयक कथा वर्णन करवो नही. ते वर्णन करवाना आसक्त पणाथी मनने उन्माद प्राप्त थायछे. ए पांचमी जावना जाणवी. ए पांच जावनाए करीने जावित जेनुं अंःतकरण छे ते धम्माणुपेही के० धर्मनु सेवन करवामां तत्पर थईने संधइ के० सम्यक् प्रकारे ब्रह्मचर्यनी वृद्धिने पामे छे ए पांचमी जावना जाणवी एवी चोथा व्रतनी पांच जावनाकही छे. ॥ ६४६ ॥

अवतरणः— हवे पांचमा महाव्रतनी जावना कहेछेः— मूलः—जे सद्द रूव रस गंध मागए, फासेय, संसप्पमणुस्स पावए ॥ गहिं पउसं न करेज्ज पंमिए, सेहो इ दंते विरए अकिंचणे ॥ ६४७ ॥ अर्थः— तेमां जे साधु तेणे शब्द, रूप, रस, गंध, ए चार विषयो मकार ए अलाक्षणिकछे तेथी आगत आव्यो जे स्पर्श तेने पण पामीतेनेविषे आसक्त थईने सेवन करवुं नही. एक मनोहर अने बीजा पापकारक ते अमनोहर एटले इष्ट अने अनिष्ट, तेने विषे रागद्वेष करे नही ए विषयो सेवन समये बहु मनोहर लागे छे परंतु एनुं परिणाम दुःखद छे. माटे पंमित अने तत्वज्ञान जाणनार वली दांत के० जितेंद्रिय पुरुष तेणे एउना उपर वि

रक्त थइ सर्व विषयोनो परित्याग करीने बाह्याभ्यंतर परिग्रह रहित थई अकिंचनी थवुं. अने ए शब्दादिक पांचना अण करवा थकीए पांचमां महाव्रतनी पांच जाव नाउं थाय अने जो एम न थाय तो शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ए पांच वि षयोनेविषे आसक्त थई. पांच प्रकारे करी व्रतनो जंग थाय. ते माटे ए पांचे विष योनो परित्याग करवो आ एकंदर पचीश जावनाउं पांच महाव्रतोने विषे क हेलीउं ले. ॥ ६४७ ॥ ए शुज जावनानो बहुतेरमो द्वार संपूर्ण थयो.

अवतरणः– असुहाउं पणवीसंति एटले अशुज पचीश जावनानो तोतेरमुं द्वार कहेले. मूलः– कंदप्प देवकिव्बिस अजिउंगा आसुरीय संमोहा ॥ एसाहुअप्प सत्रा पंचविहा जावणा तब ॥ ६४८॥ अर्थः– तेमां कांदर्पि देवकल्बिषी, आ जियोगी, आसुरी, अने संमोहा ए पांच प्रकारनी अप्रशस्त जावनाउं ले. तेमां प्रथम कंदर्प एटले काम तेणे करी प्रधान हास्य प्रमुख तेनेविषे निरंतपणे करी ने विटसमान एटले जार पुरुष जेवा जे देवविशेष ते कंदर्प कहिये तेनी जे जा वना ते कांदर्पि जावना जाणवी. एमज देवोमां अस्पृश्यादि एटले जेने अडकीये नही एवा पापिष्ट जे किलब्बिषिक देवविशेष तेनी जे जावना ते देवकिल्बिषी जावना तेमज आसमंतात् प्रकारे अजियुंज्यतेके० मुखत्वे करीने दूतकर्मनेविषे व्यापार क रेले ते आजियोगिक एटले किंकरस्थानीय देवविशेष तेनी जे जावना ते आजियो गी जावना तेमज असुर एटले जुवनपति देवविशेष तेनी जे जावना ते आसु री जावना तेमज संमुह्यति एटले सम्यक प्रकारे जे मुफाय ते अत्यंत मोहने पा मेला देवविशेष तेनी जे जावना ते संमोहा जावना. आ पांच जावना अप्रशस्त अ ने संक्लेशकारक नाना प्रकारना स्वजावनी कहेलीउं ले तेमां जे साधु तत्पर थईने जे जावनानेविषे प्रवर्त्तेले ते साधु शुज जावनाना मंद पणा थकी अशुज जावना युक्त थयो थको चारित्रना लेश पणा थकी तेज कंदर्पादिक देव विशेष तेउनी गतिने पामेले. उक्तंच. जो संजउ विएयासु अप्पसत्रा सुवहइ कहिंविसो, तव्वेहेसु गन्नइ सुरेसु जइ उ चरणहीणो, तेमज सर्वथा प्रकारे जे चारित्ररहित होय तेनी तो जजना जाण वी ते तो कदाचित् पूर्वोक्त देवविशेषनी गतिमां जाय अने कदाचित् नरकमां किंवा तिर्यगयोनिमां किंवा मनुष्ययोनिमां पण उत्पन्न थाय ले. ॥ ६४८ ॥

अवतरणः– आ पांच जावना प्रत्येक पांच पांच प्रकारनी ले तेमां पेहेली पां च प्रकारनी कांदर्पी जावना कहेले. मूलः– कंदप्पे कुक्कुईए दोसीजत्तेय हासकरणे य ॥ परविम्हय जणऐविय कंदप्पो ऐगहातहय ॥ ६४९ अर्थः– कंदर्प, कौकुच्च.

दुःशीलत्व, हास्यकरण, परविस्मयजनन तेमां कंदर्प अनेक प्रकारनो छे ते कहे छे कह कहाट्टकरी मोटा उंचा शब्दे करीने हास्य करवुं. परस्पर हास्य मस्करी करवी पोताना गुरुप्रमुखनी साथे निष्ठुर वक्रोक्ती ए यथेच्छ नाषण करवुं कामशास्त्रनी कथा कहेवी तुं आवीरीते कर एवुं कहीने कामोपदेश करवो. कामविषयक प्रशंशा करवी. इत्यादिक ए छ प्रकारे कंदर्प नावना करे. यडुक्तं कहक हकह स्सहसणं कंदप्पो अणिहु पापसंलावा कंदप्पकहा कहणं कंदप्पुवएस संसाय ॥

तेमज कुकुच एटले नांमनी चेष्टा तेनो जे नाव ते कौकुच्च कहिये ते बे प्रकारनो छे.एक काय कौकुच बीजो वचन कौकुच तेमां जे पोते हास्य न करता नृकुटी नेत्रादिक देहावयवे करीने हास्य कारक चेष्टा करीने बीजाने हसावे ते काय कौकुच कहिये तेमज पोतेपण हसीने बीजाने पण हसाववो पोते हास्य करतो विविध प्रकारना जीवोनी नाषाना शब्दो पोताना मुखथी उच्चार करे वाजित्र प्रमुख मुखथी वजावे तेथी बीजाने हसवुं आवे ते बीजो वचन कौकुच. यडुक्तं नुमनयण वयण दसणछएहि करचरण कन्नमाईहिं ॥ १ ॥ तंतं करेइ जहहस्सइ परोउत्तणा अहस्संवा

तेमज दुष्ट स्वनावनो जे नाव ते दुःशीलत्व त्यां संभ्रमावेशे करीने बीजाने अवलोकन न करतां जे अणविमास्यो उतावलो उतावलो बोलेछे, अने जे शरद कालनेविषे एटले अश्विन तथा कार्तिकमासनेविषे दर्पे करीने गोधासमान शीघ्र शीघ्र गमन करे छे, अने जे सर्व ठेकाणे कोईपण विचार न करतां कोईपण कार्य उतावलो उतावलो करेछे अने तीव्रदर्पे करी महाअनिमान युक्त थको निरंतर स्फुटन पाम्यो सरखो रहेछे. ते सर्व दुःशीलत्व जाणवुं. यडुक्तं नासइ दुयं दुयं गच्छएय दरिउव्वगोविसो सरए ॥ सव्वदुयदुयकारी फुट्टइ ठविउ विदप्पेणं.

तेमज जे नांमनीपरे बीजाना नाषादिक विषईया विरूपवेषना छिद्रोने निरंतर गवेषण करतो रहे अने तेवाज विचित्रवेष अनेविचित्र नापणे करीने जोनारा लोकोने तथा पोताने हास्य उत्पन्न करावे ते हास्य करण कहिये. यडुक्तं. वेसवयणेहिं हासं जणयंतो अप्पणो परेसिंच॥ अहहासणोत्ति नन्नइ घयणोव्वछले नियछंतो.

तेमज गारूडी विद्यावगैरे इंद्रजालप्रमुख कौतुहले करी अने प्रहेलिका कुहेटकादिकोए करीने तेवा तेवा जे ग्रामना नानाप्रकारना लोकोने पोते हास्य न करतां विस्मय उत्पन्न करे एम अज्ञानी लोकोने फसवे छे ते परविस्मयजनन जाणवो. यडुक्तं. सुरजालमाइएहिं तु विम्हयं कुणइ तव्विह जणस्स ॥ तेसुन विम्हयइ सयं आहट्टकुहेमएहिंच. ॥१॥ ए पांच प्रकारे कांदाप्प नावना कही ॥ ६४९ ॥

अवतरणः– देवकिल्बिषी नावना पांच प्रकारनी बे ते कहेबे. मूलः– सुयनाण केवलीणं धम्मायरियाण संघ साहूणं, माई अवसुवाई किव्बिसियं नावणं कुणइ ॥ ६५० ॥ अर्थः– एक द्वादशांगीरूप श्रुतज्ञान बीजो केवल ज्ञानवान त्रीजो धर्माचार्य एटले धर्मनो उपदेश करनार चोथो चतुर्विध संघ पांचमां साधु एटले यति ए सर्वनो अवर्णवाद बोले अने मायी एटले पोतानी शक्ति गुप्त करनार ते मायावी. अवर्णवादि एटले अश्लाघारूप सुज्ञानादिकना सारा गुण बतां तेनी निंदा करीने तेमां अबता दोष काढवा. तेमां श्रुतज्ञाननो अवर्णवाद आवी रीते बोले जे पृथ्वी आदिक ब प्रकारना जीवनिकाय ते बजीवणिया अध्ययनमांहे वर्णवि वली शस्त्र परिज्ञा अध्ययनेवर्णव्या तेमज प्राणातिपातादिक व्रत पण फरी फरी त्यांज कह्या बे तेमज प्रमाद ते मद्यादि जे अप्रमादना विपक्षी नूत बे ते पण पुनरोक्तिये ठेकाणे ठेकाणे कह्याबे त्यां पण तेटलुंज कथन कर्युं बे. पण अधिकता क्यायें नथी तेवारे एम वली वली कहेता सुज्ञने पुनरुक्ति दूषण पण थाय बे तथा तमारें जो मोक्षनीज वांबा बे तो सूर्य प्रज्ञप्ति प्रमुख ज्योतिष शास्त्रनो शोप्रयोजन बे केमके ए ग्रंथोतो संसारना हेतु बे माटे निरुपयोगी बे एवीरीति ए सुज्ञनी निंदा करी अवर्णवाद बोलेबे. उक्तंच. कायावयाय तेच्चिय ते चेव पमाय अप्पमायाय ॥ मोरकाहिगारियाणं जोइस जोणीहिं किं कर्ज्जं. ॥ १ ॥

हवे केवलज्ञाननो अवर्णवाद कहेबे. ते एवी रीते के केवलीने ज्ञान दर्शनोपयोग ए बे अनुक्रमे करीने थाय बे. किंवा समकालेज प्राप्त थाय बे. तेमां जो क्रमेकरी प्राप्त थायबे एवुं कहेसो तो ज्ञानकालमां दर्शनो अनाव अने दर्शन कालमां ज्ञाननो अनाव थशे ए प्रकारे परस्परनुं आवरणत्व प्राप्त थसे. हवे युगपत् एटले समकाले प्राप्त थायबे एम कहेसो त्यारे ज्ञान अने दर्शननुं एकत्व थशे निन्नत्व रहेशे नही. एरीते केवल ज्ञानीनो अवरणवाद बोले बे. उक्तंच. एगतर समुप्पाए अन्नोन्ना वरणया डुवेण्ह पि॥केवल दंसण नाणाणमेगकालेय एगत्तं.॥१॥

हवे धर्माचार्योनो अवर्णवाद कहे बे. ए धर्माचार्यनी जाति सारी नथी एलोकव्यवहारमां कुशल नथी, ए उचित अनुचित जाणतो नथी, इत्यादिक नाना प्रकारनां नाषण गुरुप्रत्ये बोले अने गुरुना विनयमां प्रवर्त्ते नही, तेमज गुरुना छिद्रोने गवेषण करतो बतो सर्व सजानी समक्ष गुरुना अबतादोष बोले गुरुसाथे प्रतिकूल पणो आचरण करे. उक्तंच. जच्चाईहि अवन्नं नसेइ वट्टइ नयावि उववाए ॥ अहिर्ड छिद्दप्पेही पगा सवाइ अणणुकूलो ॥ १ ॥

हवे संघनो अवर्णवाद कहे छे. जेम शृगालादिक घणा पशुनो समुदाय तेवोज आ पण समुदाय छे. तेमां क्या समुदायनुं तुं सेवन करीस? इत्यादिनाषण करे.

हवे साधुनो अवर्णवाद कहेछे ते एवो के आ साधु एक बीजानो उत्कृष्ट सहन करता नथी. माहोमाहे कोइकोइनो सहन करे नही तेथीज परस्पर स्पर्धा करतां देशांतरमां भ्रमण करे छे. पण एकस्थले मलीने एकठा रहेता नथी. तेमज ए महाकपटी, मायावी होइने निरंतर लोकोने रींजववा सारुं नीची दृष्टीकरी हलवे हलवे चालेछे. जोतां तो सारा साधु देखाय छे परंतु स्वभावे तो बहुनिष्ठूर छे. जेवारे क्रोधायमान थाय छे, तेवारे कोइ वस्तु दीधाथी ततकाल संतोष पामे छे. तेमज गृहस्थलोकोने नानाप्रकारनां चाटुक वचनो कहीने गृहस्थने पोता उपर रुची करावे छे. उक्तंच. अविसहणा तुरियगई अणाणुवत्ती य अविगुरूणंपि ॥ खणमित्त पीइरोसा गिहिवछलगाइस्सं वइगा ॥ अन्यैरप्युक्तं ॥ अनित्यताशब्दमुदाहरंति नग्नां च तुंबीं परिशोचयंति ॥ यथा तथान्यंच विकल्पयंति हरीतकीं नैव परित्यजंति ॥ एरीते साधुनी निंदा करे. क्यांक सव्वसाहूणं एवो पाठ देखाय छे तेवारे ए मायी ए पद जुदो करी पांच नावना कहियें तेमां मायीनो स्वरूप एवीरीते छे जे पोतानो स्वभाव गोपवतो बीजाना छताग़ुण गोपवे चोरनीपरे सघलाढुंतीसांके एवो गूढाचारीतेमायी जाणवो. यथा. गूहइआयसहावं छायइ य गुणे परस्स संतेवि. चोरोव्वसव्वसंकी गूढायारोहवइमाई ॥ ६५० ॥

अवतरणः— अनियोगी ए नामनी पांच प्रकारनी त्रीजी नावना कहे छेः— मूलः— कोउय नूईकम्मे पसिणेहिं तहय पसिण पसिणेण ॥ तहय निमित्तेणंचिय, पंचवि अप्पा नवे साय ॥ ६५१ ॥ अर्थः— अनियोगी नावना कौतके करीने नूतिकर्मे करीने प्रश्नकरीने प्रश्नाप्रश्न करीने अने निमित्ते करीने एम पांच प्रकारनी छे. तेमां बालक विगेरना रक्षण, पोषणादि निमित्त स्नान, हस्तभ्रमण, अनिमंत्रण, घुघु करण, सुहणा प्रमुखनो कहेवो हाथ फेरववो धूप मंत्री आपवुं इत्यादिक जे करेछे ते कौतुक. उक्तंच. विन्नवण होम सिर परिया य खार डहणाइं धूवेय ॥ असरिस वेसग्गहणं अवतास ए उबुनण बंधो. ॥

तेमज घर, शरीर, क्रियाणादिक एउना रक्षणने सारुं जे नस्मादिक प्रमुख सूत्रना दोराथी परिवेष्टन करी आपे ते नूतिकर्म ॥ २ ॥ उक्तंच. नूईए मट्टिए एवसुत्तेण य होइ नूइकम्मं तु, वसही सरीर नंमय रस्का अनिउगमाईया ॥ २ ॥

तेमज बीजानी पासे लान किंवा अलान थशे एविषे प्रश्न करे, अथवा पोते

स्वप्न अंगुष्ट, खड्ग, दर्पण, उदक प्रमुखने अवतारी जाणे ते प्रश्न. उक्तंच ॥ प एहेय होइ पसिणं जं पासइ वा सयंतु तं पसिणं ॥

तेमज पोतानुं शुनाशुन जीवित मरणादिक ते पोते विद्याए करी कह्यो किंवा घांटिकादिक अवतारी जे देवता तेणे कहेलो जे शुनाशुन जीवित मरणादि ते बी जाने कहे ते प्रश्नाप्रश्न. उक्तंच ॥ पसिणापसिणं सुमिणे विज्जासिठं कहेइ अन्नस्स॥ अहवा आइं खणिया घंटियसिठं परिकहेइ ॥ तथा अतीत अनागत अने वर्त्तमान वस्तुना जाणपणानो कारण जे ज्ञाननो विशेष तेने निमित्त कहियें. ॥ ६५१ ॥

ए कौतुकादिक जे ले ते पोताना गौरवादिकने अर्थे जो साधु करे तो अनि योगिक बांधे अने अपवाद पदे अतिशय ज्ञानवंत गौरव रहित निस्पृह थको कां इ एककरे तो आराधक केवाय अने उच्चैर्गोत्रपण बांधे.

अवतरणः- चोथी आसुरी नावना कहे लेः- मूलः- सय विग्गहसीलत्तं संसत्ततवो निमित्तकहणंच ॥ निक्किवियावियअवरा, पंचमगं निरणुकंपत्तं ॥ ६५२॥ अर्थः- पहेली सय के० सदासर्वकालनेविषे विग्गह के० वढवाडनो करवो ते हिज सीलत्तंके० स्वनाव ले जेनो तेने विग्रहशील कहिये इहां ए नाव जे प्रथम वढवाडकरीने पली जो सामोधणी खमावे तोपण तेना उपरथी क्रोध निवारण करे नही विरोधानु बंधेज दोडे तेमज. बीजी संसक्ततप ते आहार उपधि अने स श्यादिकनेविषे प्रतिबद्ध तेनाज नावे करी अनशनादिक करे तेने संसक्ततप कहिये. एमज त्रीजी त्रिकालविषयी जीवितव्य मरण लानालान सुखडुःखादिकना निमि त्त अनिमाने करी प्रकाश करवा ते त्रिविध निमित्त त्रीजी नावना जाणवी. चो थी निर्दयपणे स्थावरादि जीव अजीवने समान गणतो थको करुणारहित कार्यां तर उपर आसक्तनादिक करी पली तेनो अनुतापन एटले पश्चात्ताप पण न करे. कोइ कहे तोपण ते निर्दय नाव प्रगट करे. ए निःकृपता नामे चोथी नावना जा णवी. पांचमी. जे कोई कृपापात्रने कोइएक कारणे कांपतो जोइ तेना उपर दया नकरे ते निरनुकंप नामे पांचमी नावना जाणवी. ॥ ६५२ ॥

अवतरणः-संमोह नावनाना पांच प्रकार ले ते कहे लेः-मूलः- उमग्ग देसणा मग्ग दूसणं मग्गवि पडिवत्तीय॥ मोहोय मोहजणणं एवं सा हवइ पंचविहा॥६५३॥ अर्थः- उमग्ग केहेतां उन्मार्ग देशनादि प्रकारे करी संमोह नावना करे, त्यां पेहेली जे ज्ञानादिने दूहवतो थको. विपरित धर्ममार्ग उपदेशे ते उन्मार्गदेश ना नामे पेहेली नावना जाणवी. बीजी जे परमार्थिक ज्ञान, दर्शन चारित्र लद

ए नावमार्गे तेह्नेविषे प्रतिपन्न जे साधुउ तेउंनी प्रत्ये पोतानी बुद्धिथी रचेलो जात्यादि दोष तेणेकरी डुखवे ते मार्ग दूषण नामे बीजी नावना. त्रीजी ज्ञानादि मार्ग अणछतां दूषणे डुःखवी पछी जमालिनी पेठे एकेदेशे उन्मार्गे पडिवज्जे ते उमग्ग पडिवत्तिनामे त्रीजी नावना. चोथीः— अतिघणो मूढबुद्धिवालो छतां अति गह्नज्ञानादिकना विचारे मनमां मुजाइजाय अने परतीर्थिनी नाना प्रकारनी समृद्धि जोइ तेनेविषे मोह् पामे ते मोह्नामे चोथी नावना. पांचमी. मोह् उपजाववाना स्वनावे करी, अथवा कपटे करीने अनेराने अन्य दर्शन उपर मोह् उपजावे. ते मोह्जनन नामे पांचमी नावना जाणवी. ए पचीश नावना अशुनछे एमां साधु जे जे नावे वर्त्ते तेवीगतिमां उपजे. ॥६५३॥ए तोत्तेरमो द्वार समाप्त थयो.॥६५३॥

अवतरणः— संखा मह्व्वयाणंति एटले मह्व्रतनी संख्यानुं चुमोतेरमु द्वार कहेछे. मूलः— पंचवउ खलु धम्मो पुरिमस्सय पच्छिमस्सय जिणस्स ॥ मज्जिमयाण जिणाणं चउव्वउ होइ विन्नेउ ॥ ६५४ ॥ अर्थः—प्राणातिपात विरमणादिक पांचमहाव्रत ते प्रथम जिनने चरम जिनना वारानासाधु तेमने थाय. अने मध्यम बावीश जिनना वाराना साधु तेमने चार महाव्रत थाय. अहीयां कालना स्वनावे करीने ते जीव रुजुजड, ने वक्र जड थाय छे तेमां रुजु एटले शठ पणारहित अने जड एटले यथार्थ अर्थनुं जे जाणपणुं तेना अनावथी कहेलो जे अर्थ मात्र तेनोज ग्रहण करनार ते रुजु जम अहिंयां प्रथम जिनना वाराना साधु ते नटावलोकक साधुने दृष्टांते छे तेउ एवा मुग्धछे के गुरुए नट जोवानो निषेध कर्यो होय तो मात्र नट जोवा न जाय पण रागना कारणथी नटना निषेधविशेषे नटवी जोवानो पण निषेध आवी गयो एम न जाणे अने चरम एटले श्री वर्द्धमान जिनना वाराना जीव ते वक्र जड एटले वांका अने मूर्ख ते एवी रीते के नटनो निषेध गुरुये कर्यो होय अने एवामां नटवी नाचती दीठी तो तेने जुए. अने गुरुपुछे त्यारे वक्रपणे जवाब आपे. उदरपीडादि अणछतां पण पुछेला प्रश्ननो उत्तर बहु आग्रहे आपे. वली नटवीनो गुरुए निषेधकर्यो होय ने नटने जोवा गयो होय त्यारे गुरु पुछे ते समये ते मूर्खपणाथी कहेके नटवीनो तमे निषेध कर्यो छे. परंतु नट जोवानो निषेध कर्यो नथी. एप्रमाणे वक्रपणानो आचरण करे ते वक्रजड हवे बावीस जिनवाराना जनो रुजुप्राज्ञ छे, रुजु एटले सरल अने प्राज्ञ एटले प्रज्ञावंत (बुद्धिशाली) ते साधुउ नटना निषेधेकरी प्रज्ञावंत पणाथी रागना कारणे पोतानी मेले स्त्रीनो पण निषेध करे. वली रुजुपणाथी जे प्रमाणे कह्युं छे ते प्रमाणे पाले. अने प्राज्ञपणाथी उ

पदेश मात्रेकरी हेय जाणी ढांमे ते कारणे सदा स्त्री अपरिगृहीत नोग्य नथाय एम जाणी परिग्रह विरमणथी मैथुन विरति पणो पण पडिवज्जे ते सारु तेने पांच व्रतनो धर्म ते चार व्रतोने अंगीकारे थाय. ते माटे चतुर्याम धर्म जाणवो अने प्रथम जिननावाराना साधुने रुजु जड पणाथी घणा उपदेशे समस्त हेय अर्थना जाणपणानो ज्ञान थाय. वली चरम जिनना यति वक्र जम पणाथी कप टे करी हेय पदार्थना आसेववाथी परिग्रह विरमणव्रतथीज मैथुनविरमण व्रत अंगीकार करे नही ते माटे एउने पंचयाम धर्म कह्यो. इति गाथार्थ ए महाव्र तोनी संख्यानो चुमोतेरमो द्वार समाप्त थयो. ॥ ६५४ ॥

अवतरणः—कियकम्माणय दिणे संखत्ति एटले कृतकर्म वांदणानी संख्यानुं पंचोते मोर द्वार कहेछे. मूलः—चत्तारि पमिक्कमणे कियकम्मातिन्नि हुंति सज्काए॥पुव्वाह्ने अव राह्ने कियकम्मा चउद्दस हवंति ॥६५५॥अर्थः—पमिकमणानेविषे चारप्रकारनी वंद ना थायछे एक आलोचन वंदन बीजी क्षमणक वंदन त्रीजी आश्रयणा वंदन अने चोथी प्रत्याख्यान वंदन वली स्वाध्यायनेविषे त्रण वंदन थाय छे. एक स्वाध्याय तेमां एक स्वाध्याय प्रस्थापने बीजी स्वाध्याय प्रवेदने त्रीजी स्वाध्यायानंतरे एम प्रत्येक दिवसमां प्रनातःकाले ए सात वंदनथाय तेमज अपराह्नकाल एटले पाछले चोथे पहो रे पण एमज सात वंदना थाय तेमां एक उद्देश बीजी समुद्देश अने त्रीजी अनुज्ञा ए त्रण वंदणा स्वाध्यायनेविषे संनवे अने चार वंदणा संध्याकाले पडिकमणानेवि षे संनवे. ए प्रमाणे कृतकर्म वंदणा चौद थाय इति गाथार्थ॥६५५॥पंचोतेरमो द्वार.

अवतरणः— खित्ते चारित्ताणं संखत्ति एटले कीया क्षेत्रमां केटला चारित्र प्रा प्त थाय तेनी संख्यानो छोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः— तिन्नियचारित्ताइं बावीस जि णाण एरवइ नरहे ॥ तह पंच विदेहेसु बीअं तईयं च नविहोइ ॥ ६५६ ॥ अर्थः— सामायिक सूक्ष्मसंपराय अने यथाख्यात ए त्रण चारित्रो पंचनरतोमां अने पांच ऐरवतोमां मध्यम बावीस जिनना वारा तथा पांच महाविदेहोनेविषे सदाकाले प्राप्त थायछे. अने छेदोपस्थापनीय तथा परिहारविशुद्धिक ए बे चारित्र कदीपण प्राप्त थता नथी तथा प्रथमना अने छेला तीर्थंकरोने वखते नरत अने ऐरवतने विषे पांचे चारित्र प्राप्त थाय छे एम जाणवुं. ॥ ६५६ ॥ ए छोतेरमो द्वार थयो.

अवतरणः— विइकप्पोत्ति एटले स्थिति कल्पनुं सीतोतेरमु द्वार कहेछे. सिज्जा यर पिंमंमिय चाउज्जामेय पुरिसजेठेय ॥ कियकम्मस्सयकरणे विइकप्पो मज्झिमा णं तु ॥ ६५७ ॥ अर्थः—कल्पेशब्दे करीने साधुनो आचार ते सामान्यपणे आचेलु

कादिक दश प्रकारनो छे त्यां प्रथम अने चरम तीर्थंकरोना साधुउने ए दशेकल्प स वंदा सेववा पडेछे माटे तेनो अवस्थित कल्प छे. अने मध्यम बावीस जिनना साधु उने तो चार स्थानकोनुं सेवन करवुं पडेछे बाकी छ स्थानकोनेविषे अस्थितकल्प पणुं छे तेणेकरी दश स्थानकनी अपेक्षाये अनवस्थित कल्पछे. तथा वली म ध्यम जिनना साधुने चार स्थानोमां सदाय रहेवुं पडेछे. अने छ स्थाननेविषे कि वारेक रहेवुं पडे छे तेणे करीने स्थित अने अस्थित कल्प बेहु प्रकारे संभवे छे. त्यां प्रथम स्थित कल्प कहेछे. तेमां प्रथम शय्यातर पिंम एनुं सरूप आगल कह्युं अने चार महाव्रत पुरुष जेष्ठ कृतकर्म वांदणानुं करवुं तेमां जे तत्पर रहेछे ते स्थित कल्प ईहां ए भावजे बावीश जिनना साधुने तथा तु शब्दथी महाविदेहने विषे जे साधुउछे तेउने प्रथम अने चरम जिनना साधुनीपेरे शय्यात्तर पिंम न ले वो. १ तेम परिग्रह विरमणव्रतमां चोथा महाव्रतनो अंतर्भाव थाय छे तेथी ते नि रंतर चतुर्याम धर्म माने छे. २ अने प्रथम तथा चरम जिनना साधुने महा व्रतना आरोप लक्षणथी थई जे उपस्थापना ते वडे ज्येष्ठपणुं जाणवुं ३ तेम अभ्युत्थान लक्षण अने द्वादशावर्तादिरूप ए बे प्रकारनुं कृतकर्मवांदणो ते साधुउ पोताथी जे पर्य्याय वृद्ध साधुहोय तेने वंदन करे अने साध्वीउ पर्याय जेष्ठ छता पण आजनां दीक्षितयतिने पुरुष जेष्ठ धर्मपणाथकी वांदे. ४ ए चारे स्थानक सर्वने निरंतर थाय ते माटे स्थिति कल्प जाणवो.॥ इति गाथार्थ॥६५७॥

अवतरणः— अठिय कप्पोत्ति एटले अस्थितिकल्पिनुं ईग्योतेरमु द्वार कहेछे. आचेलुक्कु देशिय, पमिक्कमणे रायपिंममासेसु॥ पज्जुसणाकप्पंमिय, अठियकप्पोमु णेयव्वो ॥ ६५८ ॥ अर्थः—आचेलक, उद्देसिक, प्रतिक्रमण, राजपिंम, मासकल्प, पर्युषणाकल्प, एटलास्थानकनुं जे निरंतर सेवन करता नथी पण केवारेक एके स्थान कनो सेवन करे छे ते मध्यम बावीश जिनना साधुउनो अस्थित कल्प जाणवो. कारण के ते मध्यम जिन साधु आचेलक्यादिनुं कोईक समयेज सेवन करेछे.॥६५८॥

तेमां प्रथम आचेलक्यनुं सरूप कहेछे. मूलः— आचेलुक्को धम्मो पुरिमस्सय पछिमस्स य जिणस्स॥ मज्झिमगाण जिणाणं होइसचेलो अचेलोवा ॥६५९॥ अ र्थः— तुछछेचेलजेनुं ते अचेलक कहिये तेना योगथी धर्मपण चारित्र लक्षण आचे लक्यछे ते प्रथम तीर्थंकर अने छेला तीर्थंकरना साधुउनो होय छे. ईहां ए भाव ना छे के आचेलक बे प्रकारना छे एक अविद्यमान वस्त्र अने बीजा विद्यमान वस्त्र तेमां प्रथम जेवारे श्री तीर्थंकर दीक्षाग्रहण करे तेवारे इंद्रदेव दूष्य आपे ते

गया पछी वस्त्र रहितपणाने लीधे अविद्यमान वस्त्र जाणवो अने शेष प्रथम त था चरम जनना वाराना साधुउने विद्यमान वस्त्र छता श्वेत अने स्वल्प मूलवा ला खंमित वस्त्र होवाने लीधे ते अचेलज कहेवाय छे. कारणके लोकमां पण न ला वस्त्रने अन्नावे वस्त्र छते पण अचेलक कहेवायछे जेम कोईक दोसी पोतानो शाढलो पुराणो थयो तेवारे शाळीवालाने कहे के हुं नागी फरुछुं माटे साडीआप ए दृष्टांते जाणवो अने मध्यम बावीस जनना साधुउं ते सचेल पण थाय ने अचेल पण थाय एमने बहुमूला पांच वरणना वस्त्रोनी पण अनुज्ञा छे ते माटे.॥६५ए॥

अवतरणः—उद्देसियत्तिए कहेछे. मूलः—मज्जिमगाणं तुश्मं, कम्मं ज मुद्दिस्स तस्स चेवत्ति, नोकप्पइ सेसाणउ. कप्पइ तं एस मेरत्ति ॥६६०॥ अर्थः—उद्देश एटले साधु ना संकल्पेकरी जे कीधुं ते औद्देशिक आधाकर्म जाणवो ते मज्जिमके० मध्यम बा वीस जिनना साधुनो ए स्वरूपछे के अशनादिक जेना आश्रयीकीधो होय तेनेन ज कल्पे पण सेसाणंके० शेष बीजाओने कल्पे एवी मेरत्तिके० मर्यादाछे.॥६६०॥

अवतरणः— पडिक्कमणेत्ति ए वखाणेछे. मूलः—सपडिक्कमणो धम्मो, पुरिमस्सय पच्छिमस्सय जिणस्स, मज्जिमगाणजिणाणं, कारणजाए पडिक्कमणं॥६६१॥ अर्थः— जे पडिकमणासहित तेने सप्रतिक्रमण धर्मःकहियें ते प्रथम अने पश्चिमके०छेला जिनेश्वरनेवारे पापलागे किंवा नलागे तोपण एने पडिकमणो अवस्य करवो अने मज्झिमके० वचमाना बावीस जिनना साधु ते तो कांई अतिचार लागो जाणे तोज पडिकमणोकरे अन्यथा करे नही. ॥ ६६१ ॥

अवतरणः— रायपिंमत्ति ए वखाणेछे. मूलः— असणाइ चउक्कंवछ पत्त कंबल यपायपुंछणयं, निविपिंमंमि नकप्पं,ति पुरिमअंतिमजिणजईणं ॥ ६६२ ॥ अर्थः— प्रथम अने चरम जिनना यतिने राजा चक्रवर्त्तादि संबंधी पिंमते असनादि चार अने पांचमुं वस्त्र छगो पात्र सातमो कंबल आठमो पादप्रोंछनक ए आठ प्रकारनो पिं मलेता अनेक दोषनो संन्नव छे. ते आवीरीतेः— राजकुलमां निक्षाने अर्थे जातां यतिने घणालोकना पेसवा निसरवाथी घणो संमर्द थाय, कोई अजाण पुरुष अमंगलबुद्धिए पात्रन्नंग अथवा देहघातादि करे वली चोर. हेरु घायकादिनी संन्नावनाए राजा रीसाय तो तेथी ते कुल, गण तथा संघने उपघात करे तेथी बहुनिंदा थाय. माटे ए महापापी राजप्रतिग्रहपणाने मुकवुं. वली राजपिंमतिर स्कार करवा योग्यछे एवुं स्मृतिमां पण कह्युंछे. राजप्रतिग्रहदग्धानां, ब्राह्मणानां युधिष्टिर ॥ स्विन्नानामिव बीजानां, पुनर्जन्म नविद्यते, इत्यादि दोष जाणी राजपिंम

लेवो नही. एरीते पुरिमके० प्रथम अने अंतिम जिनेश्वरे अकल्पनीय कह्योछे.॥६६२
अवतरणः—मासंति कहेछे. मूलः—पुरिमेयरतित्थगराण मासकप्पो ठिउ विणिद्दि ठो, मज्झिमगाणजिणाणं, अठियउ एस विन्नेउ ॥६६३॥ अर्थः— प्रथम अने चरम तीर्थंकरना साधुने मासकल्पे विहार करवो ए स्थितिकल्प भगवंते कह्योछे एम न करे तो अनेक दोषनो संभव थायछे. यदुक्तं. पडिबंधो लहुअत्तं, न जणुवयारोन देसविन्नाणं, नाणाराहणमेए, दोसा अहारपरकंमि ॥ १ ॥ जो कदाचित् दुर्भिक्षादिकने योगे संयमयोग क्षेत्रना अभावथकी ग्लानपणे योग्यभक्तादिकने अभावें बाह्यवृते मासकल्पनकरीशके तोपण भावथकी संस्तारकादिक परावर्त्तने अवश्ये करवोज जोईयें अने मध्यम बावीसजिननेवारे तो अठियउके० अस्थिति कल्प कहिये अने अनवस्थित तो ए मासकल्प जाणवो तेहने ऋजु सरलपणा थकीने अधिक रहेतां पण पूर्वोक्त दोषनो असंभवछे उक्तंच दोमासइमज्झिमगा, अछंतिउ जाव पुव्वकोडीवि, विहरंतीवासासुवि, अकद्दमे पाणरहिएय ॥१॥ भिन्नंपि मासकप्पं, करंति तणुयंपि कारणं पप्प, जिणकप्पियावि एवं, एमेव महाविदेहम्मि॥ २॥६६३॥
अवतरणः—पज्जोसवणाकप्पोत्ति ए वखाणेछे. मूलः— पज्जोसवणाकप्पो, चेवं पुरिमे वरायभेएणं, उक्कोसेयरभेउ, सो णवरं होइ विन्नेउ ॥६६४॥ अर्थः— ईहां पज्जोसवणा शब्दनो अर्थ करेछे परिके० समस्त प्रकारे उषणाके० एकक्षेत्रे वासकरवो ते पर्युषणा तेने मळतो जे कल्प एटले उणोदरीनो करवो अने विगईनो त्याग करवो पीठफलक संस्तारक उच्चारादिकना मात्रा प्रमुखनो संग्रह करवो लोचनो कराववो नवा शिष्यनो अदिक्षवो वळी प्रथम जे भस्म डगलादिक लीधेला होय तेनो त्याग करी नवानो ग्रहण करवो द्विगुणोवर्षा संबंधी उपकरणनो धारण करवो नवा उपकरण नलेवा सक्रोश योजन क्षेत्रावग्रहथकी दूर नजवुं इत्यादिक वर्षाकाल संबंधी समाचारछे. अनिवस्थितहुए पण केवल मासकल्पेज अनवस्थित नथाय. ईहां चकार पद पूर्वीने अर्थे छे. एवके० ए उक्तप्रकारे तेहिज देखाडेछे पुरिमेवरायके० पूर्वोत्तरादिभेदेकरीने अने आदि, अंतिम अने मध्यम जिनना साधु तेहने विशेषे ईहां ए भावजे पहेला अने छेला ए बे जिनना वारे पर्युषणा कल्प अवस्थितछे अने बावीस जिनना साधुने अनवस्थितछे ईहांवळी विशेष देखाडेछे. उक्कोसके० उत्कृष्टेतर जघन्य एटले उत्कृष्ट अने जघन्यने भेदे सके० तेपर्युषणाकल्प नवरके० केवल थायछे ते विन्नेउके० जाणवो. ॥ ६६४ ॥
अवतरणः— पूर्वोक्त बे भेद देखाडेछे. मूलः— चाउ म्मासुक्कोसो, सत्तरि राइंदि

उं जहन्नोउं, थेराणजिणाणं पुण, नियमा उक्कोसउं चेव ॥ ६६५ ॥ अर्थः– चा उम्मासके० चारमहिनानो उत्कृष्ट पर्यूषणाकल्प जाणवो अने सत्तरिके० सीतेर रात्री अने दीवसनो जघन्य पर्युषणा कल्प थायछे. एमां प्रथम अने चरम जिनना स्थविर कल्पिकने ए बे पर्युषणा कल्प थायछे तेमज ए बन्ने तीर्थंकरोना जिनकल्पिक साधुओने निश्चेथकी उत्कृष्टेज पर्युषणा कल्प थायछे. कारणके ते निर अपवादना सेवनाराछे तेमाटे तेने उत्कृष्टेज थायछे. ए अगोतेरमो द्वार समाप्त थयुं.

अवतरणः– चेइयत्ते एटले पांच चैत्यनी संख्यानो ओगणएसीमो द्वार कहेछे. मूलः– नत्ती मंगल चेइय, निस्सकडे अणिस्स चेइएवावि. सासय चेइय पंचम, मुवईठं जिनवरिंदेहिं ॥६६६ ॥ अर्थः– ईहां चैत्य शब्द सर्वपदोनी साथे जोडवो तेवारे एक नक्ति चैत्य बीजो मंगलचैत्य त्रीजो निश्राकृतचैत्य चोथो अनिश्राकृतचैत्य पांचमो शास्वतचैत्य एरीते श्री जिनवरे उपदिष्ट एटले कह्याछे. ॥६६६॥

अवतरणः– पूर्वोक्त पांच चैत्य सूत्रकारज वखाणेछे. मूलः–गिहजिण पडिमाए नत्तिचेइयं उत्तरंगघडियंमि, जिणबिंबे मंगल चेईयंति समयन्नुणोबिंति ॥६६७॥ अर्थः– गृहसंबंधिनी प्रतिमा यथोक्त लक्षण सहित त्रिकालपूजावंदनादिकने अर्थे करावियेछे तेने नक्तिचैत्य कहियें. तेमज बीजो उत्तरंगशब्दे घरना द्वार उपरजे तिर्छो काष्ट तेने उत्तरंग कहेछे त्यां श्री वीतरागनी प्रतिमां होय तेने मंगलचैत्य कहियें. एवी संज्ञा सिद्धांतना जाणनारे कहिछे. जेम मथुरानगरियें घर कीधा छता मंगल निमित्ते उत्तरंगे श्री पार्श्वनाथनी प्रतिमाकरे अन्यथा ते घर पडिजाय वली ए शास्त्रनी करेली स्तवनमांहे एम कह्यो छे.–जम्मि सिरिपासपडिमं, संतिकए करेइपडिगिहडुवारे, अज्झावि जणोपुरितं, महुरमधन्नानपेछंति. ॥६६७॥

मूलः–निस्सकर्म जंगछस्स संतियं तदियरं अनिस्सकर्म, सिद्धाययणं चइमं, चेइयपणगंविणिदिट्ठं॥६६८॥ अर्थः–त्रीजो निश्राकृत चैत्य तेने कहियें जे कोईक गछ संबंधी चैत्य ते जेना प्रतिष्ठादि प्रयोजने तेहिज गछना जनो अधिकारी थाय परंतु बीजो कोई प्रतिष्ठादिक करवा पामेनही. चोथो ए थकी इतरते अनिश्राकृत चैत्य जाणवो. ज्यां सर्वकोई प्रतिष्ठा दीक्षा मालारोपणादिक कार्यकरे' पांचमो सिद्धायतन ते शाश्वतजिननी प्रतिमां जाणवी. इमंके० ए चैत्यनो पंचक विशेषेकरी कह्योछे.

अवतरणः– एज प्रकारांतरे कहेछे. मूलः– नीयाईसुरलोए, नत्तिकयाइं च नरहमाईहिं, निस्सानिस्सकयाई, मंगलकय मुत्तरंगंमि ॥ ६६९ ॥ अर्थः– नियाईके० नित्य शाश्वतिप्रतिमा जे देवलोकनेविषे उपलक्षणथी मेरुनीशिखर कूट तथा नं

द्वीश्वर रुचकादिक द्वीपोनेविषे छे ते शाश्वत चैत्य जाणवा अने नरतादिके जे क राव्या ते नक्ति चैत्य जाणवा अने निश्राकृत तथा अनिश्राकृत पूर्वोक्त रीतेज जा णवा अने मंगल चैत्य ते उत्तरंगनेविषे करेला जाणवा. ॥ ६६ए ॥

मूलः– वारत्तयस्स पुत्तो, पमिमंकासीयचेईएरम्मे, तबयघलीअहेसी, साहम्मिय चेइयंतंतु ॥६७०॥ अर्थः–वारतकमुनिनापुत्रे स्नेहे करीने पोताना पितानी मूर्त्ति मुहपति तथा उंघा प्रमुख सर्वपरिग्रह सहित रम्यचैत्यनेविषे करावी त्यां दान शा लाथई ते थलीशब्दे साधर्मिक स्थली सिद्धांत नाषायें कहिये ते साधर्म्मिक चैत्य जाणवो ए कथा एज ग्रंथनी टीकामां कहीछे ए उंगणएसीमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः–पोबयपंचगंति एटले पांच प्रकारना पुस्तकनो एसीमो द्वार कहेछे. मूलः–गंमी कबविमुठी संपुमफलए तहा छिवाडीअ, एयंपोबयपणगं, वरकाणमिणंनवे तस्स॥६७१॥अर्थः–गंमी पुस्तक,कबपी पुस्तक,मुष्टी पुस्तक, संपुटफलग पुस्तक, छेदपा टी पुस्तक ए पांच पुस्तक कह्या ॥६७१॥ एहिज पुस्तक पंचकनो वखाण करेछे.

मूलः–बाहिल्ल पुबएहिं, गंमीपोबोउतुल्लगो दीहो, कबविअंते तणुउ, मझे पिहुलो मुणेयवो ॥ ६७२ अर्थः– बाहुल्यपणे, पहोलपणे, अने जाडपणे सरिखो तुल्य होय ते गंमी पुस्तक जाणवो दीहोके० दीर्घपणे पण तुल्य जाणवो बीजोकबपी पुस्तकते अंते एटले छेहडे पातलो अने वचाले पहोलो जाणवो. ॥६७२॥

मूलः– चउरंगुलदीहोवा, वट्टागिइमुठिपुबगोअहवा, चउरंगुलदीहोचिय, चउरं सो होइ विन्नेउ ॥६७३॥ अर्थः–त्रीजो चार अंगुल लांबो अने वाटलें आकारें ते मुष्टीपुस्तक जाणवो अथवा चार अंगुल लांबोज थाय अने चउरंस थाय ॥६७३॥

मूलः– सपुंमगो डुगमाई, फलयावोछंछिवाडिमित्ताहि, तणुपत्तूसियरूवो, होइ छिवाडी बुहा विंति ॥६७४॥ अर्थः–चोथो संपुटफलग पुस्तक ते बे प्रमुख फलक जोडेथके थाय हवे पांचमो छिवाडिके० छेदपाटी पुस्तक कहेछे तनुके० जेना थो डा पाना होय तोपण तेटलें पाने करी ते उंचो देखाय तेने छेदपाटीनामा पुस्तक बुहाविंतिके० बुद्ध पंमितो कहेछे. ॥ ६७४ ॥

मूलः– दीहोव हस्सोवा, जो पिहुलो होइ अप्पबाहल्लो, तम्मुणिय समयसार, छिवाडिपोबं नणंतीह ॥ ६७५ ॥ अर्थः–दीर्घ अथवा र्हस्व पहोलो होय अने जेह नो बाहुल्यपणो अल्प होय ते जेणे सिद्धांतनो सार जाण्योछे एवा पुरुषो एने छिवाडी पुस्तक कहेछे. इति गाथापंचकार्थ ए एसीमो द्वार समाप्त थयुं. ॥ ६७५ ॥

अवतरणः– दंमपंचगंति एटले पांचदांमानो एक्यासीमो द्वार कहेछे मूलः–

लट्ठी तह्वा विलट्ठी, दंमोय विदंमउय नालीय, जणियं दंमयपणगं, वक्काणमिणंजवेत स्स ॥ ६७६ ॥ अर्थः— एकलट्ठी, बीजोविलट्ठी, त्रीजोदंम चोथोविदंम पांचमो नाली. ए पांच दांमाकह्याछे ॥६७६॥ तेनो वक्काण आवीरीते थाय छे.

मूलः— लट्ठीआयपमाणा, विलट्ठिचउरंगुलेण परिह्वीणे, दंमो बाहुपमाणो, विदंमउ कक्कमेत्ताउ ॥ ६७७ ॥ अर्थः— लट्ठीपोताना शरीर प्रमाणे साढात्रणहाथ नी थाय छे अने लट्ठी थकी बीजी विलट्ठी ते चार आंगुल परिह्वीण के० उंछी थाय छे. दंमते बाहु प्रमाण स्कंध प्रदेश प्रमाण थाय विदंमते काखमात्र प्रमाणवाली.

मूलः— लट्ठीए चउरंगुल, समूसीया दंमपंचगे नाली, नइपमुह जलुत्तारे, तीए थग्गिज्जए सलिलं ॥ ६७८ ॥ अर्थः—लट्ठीथकी चारअंगुल समुछ्रित के० अधकीना ली थाय एटले त्रण हाथने शोल अंगुलनी थाय छे ते पांचदांमा मांहेली कहियें तेणेकरीने सलिलंके० नदी प्रमुख उतरता तेना पाणीनो उंमपणो जोवायछे.॥६७८॥

मूलः— बज्झइलट्ठीए जवणि याविलट्ठिए कब्बइडुवारं, घट्टिज्जंए उवस्सय, त यणं तेणाइ रक्कट्ठा ॥ ६७९ ॥ अर्थः— जोजननी वेलाये सागारी प्रमुखना राख वाने अर्थे लाठीयेकरी तिरस करिणी एटले पडदो बांधीये अने विलठीयेकरी क बइ के० क्यांक प्रत्यंत ग्रामादिकनेविषे जोजन वखते उपाश्रयनो डुवार ते चोर कुतराप्रमुखनो अटकाव करवाने अर्थे घटिज्जं के० बंध करीयें अमकावियें.॥६७९॥

मूलः— उउबद्धंम्मिउ दंमो, विदंमउघिप्पएव वरिसयाले, जंसोलहुउनिज्जइ, क प्पं तरियउ जलजएण ॥ ६८० ॥ अर्थः— उउबद्धं के० ऋतुबद्धकाल एटले चो मासाविना आठमास कालमां जीक्षावेलाये द्विपद मनुष्यादि जे प्रद्वेषी होय ते अने चतुष्पद गाय घोडादिक तथा बहुपद शरजादिक तेना निवारणने अर्थें त था विहारकरतां अटवीमां व्याघ्र चोरादिकनो जय निवारणने अर्थे दांमो हथी यारछे माटे दांमोलेवो अने वरिस के०वर्षाऋतुमां चारमास कालसुधी विदंमक ली जे केमके ते न्हानोहोय तेथी वस्त्रमांहे जलके० अप्पकाय फरसे नही. ॥६८०॥

हवे ए थकी थता गुण अवगुण देखाडे छे. मूलः— विसमाइ वद्धमाइ, दसय पवाइ एगवन्नाइ, दंमेसुअपोल्लाइ, सुहाइ सेसाइ असुहाइ ॥ ६८१ ॥ अर्थः— वि षमतो एक त्रण पांच सात ने नव कातली सीम वद्धमाइ के० उपरा उपर वृद्धि ने पामतोथको मह्योटो दस पवाइके० दश पर्व एटले दश गांठसुधी एकीनो जोइयें अने दशथी उपरांत तो एकी पण संपदा करे अने बेकीपण संपदा करे ते कातली एकवर्णनी जली जाणवी. दांमानेविषे पह्योलपणो न थाय पण जह्यो निघ्घांट जोइयें

ते शुनकारणी जाणवो अने ए थकी विपरीत लक्षण ते अशुन दायक थाय इहां उघनिर्युक्तनी गाथा कहे ठेः– एगपव्वं पसंसंति, डुपवाकलहकारिका, तिपवा लाभ संपन्ना, चउपवा मारणंतिया ॥१॥ पंचपव्वाउजालठी, पंथेकलहनिवारणी, ठपवा एय आयंको, सत्तपवा निरामया ॥ २ ॥ अठपवाअसंपत्ती, नवपवा जसकारिया, दस पवाउजालठी, तहियं सव्वसंपया ॥३॥ इति गाथाषट्कार्थः एक्यासीमो द्वारसमाप्त

अवतरणः– तणपणगंति एटले पांच तृणनो ब्यासीमो द्वार कहे ठेः–मूलः– तणपणगं पुण नणियं, जिणेहि जियराग दोसमोहेहिं, सालीवीहियकोद्दव, रालय रन्नेतणाइंच ॥ ६७२ ॥ अर्थः– राग, द्वेष, अने मोह जेणे जीत्या ठे एवा जिनेश्वरे तृणनुं पंचक आवीरीते कह्युं ठे ते कहेठे. एक साली कलमसाली प्रमुख बीजी व्रीहिसाली प्रमुख चावलादिकनी त्रीजी कोद्रव ते धाननोविशेष कोद्रवानो पलाल चोथी रालक ते कांगुविशेष ते रालधाननो पलाल जाणवो. पांचमी रन्ने के० अरण्यना श्यामाक प्रमुख तृणविशेष कह्याठे ए ब्यासीमो द्वार समाप्त.॥६७२॥

अवतरणः– चम्मपंचगंति एटले चर्म पांचनो त्र्यासीमो द्वार कहे ठे. मूलः– अय एल गावि महिसी, मिगाणमजिण च पंचमं होइ, तलिगा खल्लग बद्धे, कोसग कित्तीअ बीयंतु ॥ ६७३ ॥ अर्थः– ठालीनो चर्म, गाडरनोचर्म, गायनो चर्म, नेंसनो चर्म, हरिणनो चर्म, ए पांचना अजिन के० चामडो होइके० थायठे. अथवा बीजा आदेशेकरी चर्म पंचक प्रयोजनसहित कहेठे एना जे तलिगाके० तली या ते एक तलियो अने तेना अनावे बेहुतलानापण लीजे ते जेवारे रात्रे मार्ग न देखाय अथवा सथवारो मेली जाय तेवारे उजाडे जातां चोर श्वापदादिकना नयथी उतावला जतां कांटादिकथी पोतानो रक्षण करवाने अर्थे पगमां पहेरिये अथवा कोइ कोमल पगवालो होय ते चालवाने असमर्थ होय तो तेपण लीये बीजो खलग ते खासडा ते पगे व्याउथाय एटले वायुथी पग फाटी गया होय तो मार्गे जता तृणादिक डुलर्न थाय वली अतिसुकुमाल पुरुषने सीयाले डुर्लन होय तो पहेरवाने अर्थे राखे त्रीजा बधेके० बाधरी ते चामडो त्रूटेला खाशडा प्रमुखने सांधवालणी कामआवे चोथो कोसग ए चर्ममय उपकरण विशेष ठे ते कोइकना नख अथवा पगने कांइ लागवाथी फाटी जाय तोते कोस आगलें अंगु ठेबांधिये अथवा नख प्रमुख राखवाने अर्थे दाबवाने काम आवे पांचमो कित्तीय लत्ति ते कोईक मार्गमां दावानलना नय थकी आडोकरवाने अर्थे धारणकराय ठे अथवा पृथ्वी कायादिक सचित्तघणो थाय तेनी यतनाने अर्थे मार्गमां पाथ

रीने बेसीयें अथवा मार्गेमां चोर लोकोये वस्त्र लेइ लीधा होय तो पहेरवामां प ण काम आवे एने कोइक कूति कहे छे ने कोइक नत्ति कहे छे एवा बे नाम छे. ए यतिजनयोग्य चर्मपंचक कह्युं.॥६७३॥ए त्र्यासीमो चर्मपंचकनुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरणः– दूसपंचगंति एटले वस्त्र पंचकनुं चोराशीमुं द्वार कहे छेः– मूलः– अप्पमिलेहिय दूसे, तूली उवहाणगं च नायव्वं ॥ गंडुवहाणा लिंगिणि मसूरए चेव पोत्तमए ॥ ६७४ ॥ अर्थः– दूष्यवस्त्र बे प्रकारनां छे. एक अप्रत्युपेक्ष्य अने बीजा दुःप्रत्युपेक्ष्य तेमां अप्रत्युपेक्ष्य एटले जेने मूलथी पडीलेइ शकीयेज नही ते अने दुःप्र त्युपेक्ष्य एटले जे कष्टे पडीलेइ शकीये ते जाणवा तेमां अप्रत्युपेक्ष्य वस्त्र पांच प्रकारना श छे. प्रथम रुथी जरेली तथा अर्कतूलादिके जरेली बिछाववा सारुं तलाइ अर्थात यनीयनो विशेष १ उपधानक एटले हंसरोमादिके करी जरेलुं उसीकुं २ गंमोप धानिका एटले उसीका उपर राखवानुं गालमसूरियुं ३ आलिंगिणी एटले गोमा अने कोणीने नीचे देवा सारुं होय ४ लुगमानुं अथवा चामडानुं होय ने तेमां चीथरां जरीमोडु सीवेलुं होय ते एवुं गोल आसन जेने चाकलो कहे छे ते. ५ ए पांच घणुं करीने वस्त्रमां थाय छे. ॥ ६७४ ॥

हवे बीजो दुःप्रत्युपेक्ष्य वस्त्र तेना पांच प्रकार छे ते कहेछेः– मूलः– पल्हवि कोयवि पावार नवयए तहय दाढिगालीय ॥ दुप्पमिलेहिय दूसे एयं बीयं जवे प णगं ॥ ६७५ ॥ अर्थः– पल्हवि १ कोयवि, २ प्रावारक, ३ नवतक, ४ अने द ढगाली ए दुःप्रत्युपेक्ष्यना पांच प्रकारछे. ॥ ६७५ ॥

अवतरणः–ए समस्त बोल पल्हवि प्रमुख सूत्रकार वखाणे छे. मूलः–पल्हवि हत्थुत्थरणं, कोयवउरूय पूरिउं पडिउं ॥ दढगालि धोय पोत्ती सेस पसिद्धा नवेजेया ॥६७६॥ अर्थः–पल्हवी शब्देकरीने हाथीनी पीठ उपर नाखवानो आथर जेने खरड वटी कहे छे. वली एना उपलक्षणथी थोडा रोमे जरेलो तथा बहु रोमे जरेलो हो य ते तथा उंटनो आथर पण ए पल्हवीमांज गणाय. १ कोयवी ए शब्दे क रीने रुए जरेलुं वस्त्र जेने बूरटी कहे छे. वली तेमां शालजोडी तथा कृमिथी उ त्पन्न थएलां वस्त्र पीतांबर विगेरे ते सौ बूरटीमां गणवां २ दढगाली शब्दे करी ने दशीउ सहित ब्राह्मणने पेहेरवा योग्य वस्त्र ३ प्रावारक ४ अने नवतक ५ ए प्रसिद्ध छे तेमां प्रावारक एटले माणकी प्रमुख सलोम वस्त्र बीजा ग्रंथकारो एने मोटो कांबलो तथा परिछि एवुं कहेछे. अने नवतक एटले जीर्ण ५ ॥ ६७६ ॥

ए विषेनुंज्ञान थवा सारुं सूत्रकार तेनो पर्याय कहे छे. मूलः–खरमो तह बोरछी स

लोम पमत्तत्तहा हवइ जीएं ॥ सदसं वन्नं पल्हवि पमुहाण मिमेव पज्जाया ॥ ६७३ ॥ आ गाथानो पूर्व गाथामां अर्थ कहेलो छे. ॥ ६७३ ॥

अवतरणः– पंच अवग्गह भेयत्ति एटले पांच अवग्रहना भेदनुं पंचासीमुं द्वार कहेछे. मूलः– देविंद राय गिहवइ । सागरि साहम्मि उग्गहे पंच । अणु जाणा विय साहूण कप्पए सव्वया वसिउं ॥ ६७७ ॥ अर्थः– देवेंद्र, राजा, गृहपति, सागरिक, अने साधर्मिक, ए पांच संबंधे पांच अवग्रह छे. ए मा टे ए पांचेनी अणुजाणावियके० आज्ञा लेइने साधुए सदावास करवो. ॥६७७॥

अवतरणः–एनो स्पष्ट अर्थ सूत्रकारज कहेछे. मूलः–अणुजाणावेयव्वो जईहिं दाहिणदिसाहि वो इंदो॥नरहंमि नरहराया जं सो छक्कंममहिनाहो. ॥६७९॥ अर्थः– दक्षिण दिशानो धणी सौधर्मेंद्र तेनी नरत क्षेत्रना यतिए आज्ञा लेवी ने पछी त्यां वास करवो. तेम ऐरवत क्षेत्रना यतिए ईशानेंद्रनी आज्ञा लेवी. वली नरत क्षेत्रनो धणी चक्रवर्ती छखंमनो नायक नरत राजा तेनो अवग्रह लेवो.॥६७९॥

अवतरणः–गहवाइ इत्यादि वखाणेछे. मूलः–तह गहवई विदेसस्स नायगो साग रायत्ति सेज्जवई॥साहम्मिउअ सूरी जंमि पुरे विहियवरिसालो ॥६८०॥ तप्पडिबद्धं तं जाव दोहि मासे अउ जईण सया॥अणणुंन्नाए पंचहिवि उग्गहे कप्पइ न ग उं ॥ ६८१ ॥ अर्थः– गृहपति एटले देशमंमलनो नायक तेना अवग्रहनेविषे व सनारा साधुए तेनी आज्ञा लेवी. सागारी एटले शय्या वस्तिदान इतर ते स य्यातर घरनो धणी तेना घरनेविषे रहेवासारु पण यतिए आज्ञा. मागवी साध र्म्मिक एटले सूरि आचार्य तेओना उपलक्षणथी उपाध्यायादिक ते जे नगरमां व र्षाकुलुमां चतुर्मास वास करे ते नगरनी पासे पांच कोशपर्यंत ते आचार्यादिकनो प्रतिबद्ध छता ते क्षेत्रनो तेणे पहेलो अवग्रह लीधोछे तोत्यां तेनो अवग्रह लेवो. ए प्रमाणे यतिने सदा आज्ञा माग्याविना पांचे अवग्रहनेविषे रहेवुं कल्पे न ही. इहां पेहेलो पेहेलो अवग्रह बाधित जाणवो. जेम राजावग्रहे करीने देवेंद्रा वग्रह बाधित थायछे कारणके राजावग्रहमांराजानी आज्ञाज प्राधान्यछे. ए प्रमाणे आगलनावना करवी ॥ ६८० ॥ ६८१ ॥ ए पंचासीमुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरणः– परीसहत्ति एटले बावीस परिसहनुं छासीमुं द्वार कहेछे. मूलः– खुहा पिवासा सीउण्हं दंसा चेला रइ त्थिउ॥चरिया निसीहिआ सेज्जा अक्कोस वह जायणा ॥ ६८२ ॥ अर्थः– परि एटले समस्त प्रकारे जिन मार्ग नहि मूकवा सारु अने निर्जरासारु जे सहन करवुं पडे ते परिसह कहिये. तेमां एक दर्शन परि

सह् अने बीजी प्रज्ञा परिसह्. ए बे मार्गे नमूकवाने अर्थेछे अने निर्जरार्थे वीस प रिसह् छे. तेना नाम क्षुधा १ पिपासा २ शीत ३ उष्ण ४ दंसा ५ अचेला ६ रति ७ स्त्री ८ चर्या ए नैषेधकी १० शय्या ११ आक्रोश १२ वध १३ याचना १४ अ लाभ १५ रोग १६ तृणस्पर्श १७ मल १८ सत्कार १९ प्रज्ञा २० अज्ञान २१ अने सम्यक्त २२ ए बावीस परिसह्नो यथाक्रमे संक्षेप अर्थ कहेछे.

१ तेमां क्षुधाथी उत्पन्न थनारी वेदना जे समस्त वेदनाथी अधिक आंतरमां अने पेटनी बालनार तेने आगमोक्तप्रमाणे सह्न करतां अनेषणीयने परिहारे उपशमावतां क्षुधा परीसह्. जीत्यो जायछे पण अन्यथा जीताय नही ए क्षुधा स मस्त परीसहोमां सह्न करवो बहुदोह्लो छे माटे सहुथी श्रेष्ट गणीने प्रथम कह्योछे.

२ क्षुधापीडा मटाववा सारुं उंचानीचा घरोनेविषे विहार करवाना श्रमे तरस उत्पन्न थाय. माटे बीजो पीपासापरीसह् ते तरसे करी अति आकुलित थयो छतो पण शीत ल जलादिनी प्रार्थना नही करतां तृष्णा सह्न करे ते पिपासा परिसह् जाणवो. ए परिसह् बहु कठण छे इहां जे यतिएषणीयने अनावे समग्रअनेषणीय परिहरता प्रा णिमात्र उपर चित्तमां दया आणीने तृषा सह्न करे तेणे पिपासापरिसह् जीत्यो.

३ एम क्षुधा तथा तृषापीडितने शीतपणु थाय माटे त्रीजो शीतपरीसह् ते एमः—शीतकालनेविषे सबल टाढ पडे ते समय गृहादिकेरहित अल्प जीर्णवस्त्र धारण करनारा यतिए आगमोक्त विधिए पोताना कल्पनीज गवेषणा करवी. अतिशी ते पीडित थाय तो पण अग्नि प्रदीप्त करी तेणे तापवुं नही तेमज बीजा ए प्रदीप्त करे ला अग्नीनुं पण सेवन करवुं नही एवी रीतिए रहेवाथी शीतपरिसह्नो जय कर्यो.

४ उष्णपरिसह् एटले उष्णऋतु ए शीतऋतुनो विपक्षीछे तेमाटे चोथो उष्णपरीसह् ते एम उष्णकालनेविषे तप्तशिलाये सूर्यनुंप्रतिबिंब माथे आवे एवा मध्यान्ह समये बेसी आतपना थयेथके पण छत्रीनी के लुगडानी छाया वांछे न ही. वींजणाप्रमुखना वायुने अणवांछतो अने स्नानविलेपनादिवर्जतो थको उष्ण परिसह् सहे ते उष्णपरिसह्नो जय जाणवो.

५ उष्ण पछी वर्षाकाल आवे ते समये डांस मसा मछरादिक थाय ते सारू उष्ण प छी डंश परिसह् पांचमो ते डंशादि जुं माकण शूल हलादि क्षुद्र जंतु तेओ जेम श त्रुओ संग्राममां बाणनो प्रहार करे तेवो डंक मारे परंतु एवा तेओना उपद्रवथी ते गाम तजीने जाय नही अथवा तेना परिहारने सारु धूम्र तथा वीजणा प्रमु

खनी वांछना करे नही ते मांसादिक जंतुउ पोतानुं लोही पीये तो पण तेनाउपर प्रद्वेष करे नही तेनुं निवारण करे नही. एरीते मंस परिसहनो जय थाय.

६ मांते परानव पाम्योथको पण वस्त्र वांछे नही. तेथी छती चेल एटले वस्त्र तेनो अनाव ते अचेल. जिनकल्पी तथा स्थविरकल्पी ए बंनेने अचेल कहेछे. फाटेलुं, अल्पमूलनुं अने जुनुं ते पण अचेल. ए अचेलनो परीसह ते अचेल परीसह ते एम के पोतानुं फाटेलुं वस्त्र जोइ एम न जाणे के आ वस्त्र फाटेलुंछे तेथी आज ने काले कोइ नवा वस्त्रनो आपनार सुजतो नथी तो हवे केम करशुं, एवीरीते अतिदीन नाव मनमां न आणे अथवा आ वस्त्र उतारीने बीजा नवां वस्त्र पेहेरीशुं एवीरीते नचिंतवे ते अचेल परीसहनो जय जाणवो.

७ अचेल ते अप्रतिबद्ध विहारी छतां तेने शीतादिकना संनवे करी अरति उपजे ते अरति परिसह. जे रमण करवुं ते रति. अने संयमनेविषे जे धृति तेनाथी विपरीत ते अरति तेनो परिसह ते अरतिपरिसह. विहार करतां यतिने मनमां अरति उपजे तो धर्मनेविषेज रत थवुं. क्षांत्यादिक धर्मध्यावvुं एरीते अरतिपरीसहने सहन करे ते अरतिपरिसह जय जाणवो.

८ संयममां अरति उत्पन्न थाय एटले स्त्री निमंत्रि ते तेनी अनिलाषा करे ते सारु हवे स्त्रीपरीसह कहेछे ते एम के स्त्री दीठी थकी तेने रागनो हेतु जाणी, तेनी गति, इंगित, आकार, विलोक इत्यादिक पण रागना निबंध जाणी अंग, प्रत्यंग थान, हसित ललित, विभ्रम विलासादि अणचिंतवतो अने ते स्त्री दीठी छतां काम बुद्धिए तेनी नणी दृष्टि साथे दृष्टी मेलवे नही ए स्त्रीपरीसहनो जय जाणवो.

९ एकस्थले रेहेतां मंदसत्वने स्त्रीउपर अनुराग थाय ते सारु एक गामे न रहे ते माटे स्त्री परीसह पछी चर्यापरीसह एटले चालियें ते एमके. आलस रहित थइने ग्राम, नगर कुलादिकोनेविषे विहारनो करवो ते द्रव्यथी चर्या अने जो एकगामे रहेता पण अप्रतिबद्ध ममतारहितपणो आदरवो ते नावथी चर्या एवो प्रतिमास कल्पे विहार करे ते चर्यापरीसह जय जाणवो.

१० जेम ग्रामादिकनेविषे अप्रतिबद्ध चर्या करवी तेम देहादिकने विषे अप्रतिबद्ध स्वाध्याय सारु नैषिधिकी करवी तेमाटे चर्या पछी नैषिधिकीनो परीसह. जे निषेधियें तेनेनिषेध कहियें ते एक पापकर्मनो बीजो गमनागमननो तेहिज छे प्रयोजन जेनो तेने निषेधकी कहियें. इहां निषेधकी शब्दे शून्य घर श्मसानादिक स्वाध्याय नूमिका तेनो परिसह ते निषेधकी परीसह. कोइ ठेकाणे निषद्या परीसह

एवुं कहेलुं छे. निषीदंति ते निषिद्यास्थानक जे स्त्री पशु, अने पंडक विवर्जित छे. त्यां रहेतां थका, इष्ट अनिष्ट जे उपसर्ग उपजे ते सर्व उद्वेगरहितपणे सम्यक्त री तिए सहन करे तेने नैषिधिकी अथवा निषद्या परिसह कहेछे.

११ निषेधकीये सज्झाय करी सज्झाने आवे ते सारुं हवे अगीयारमो शय्या प रिसह कहे छे. ते एम के जेनेविषे शयन करे छे ते शय्या एटले उपाश्रय अथ वा संस्तारक तेनो जे परीसह ते शय्यापरीसह ते एम के उंचीनीची जूमीये, घणी धूल, घणी टाढ तथा घणी उष्णता अने कठण तथा सुकोमल अने सुहा लो संथारो पामी तेने सारो नठारो कहेनही, उद्वेग करे नही पण एम विचारे के उपाश्रये एक गृहस्थ रत्नमय घरमां रहे छे, एकने घेरलीपणो पण थतु नथी, एक पल्यंक उपर तलाइपाथरी सुए छे ने एक जोंये सुए छे, मांचो पण मलतो न थी. तो माहारे शुं करवा शोच करवो जोइए? आज अहींयां छेए अने वहाणे बीजे स्थले जइशुं एवीरीते बेहुने विषे राग द्वेष वर्जे ते शय्या परीसह जय जाणवो.

१२ सभायें रहेलाने सभांतर अथवा अन्यकोइ आक्रोश करे तेथी हवे बा रमो आक्रोश परिसह कहे छे ते आवीरीते के यतिने कोइ अनिष्ट वचन बोले क्रोध करे तेवारे जाणे के ए महारो उपकारी छे तेथी मने शीखामण आपे छे. केमके कदाच ए बोल हुं करत पण हवे नही करुं अथवा ए जे कहेछे ते तो हुं करतोज नथी तो ए मने एम कहेछे तो तेमां महारे सावास्ते क्रोध करवोपडे; एम विचारी क्रोध नकरे जो क्रोध करे तो साधुपणो छतां चंडाल समान थाय.

१३ आक्रोशनो करनार जे होय ते वध पण करे तेथी हवे वधपरिसह क हेछे. वधते हनन ताडन संबंधी जे परिसह तेने वध कहिये, ते आवीरीते कोईक पापिष्ट माणस यतिने ढीक पाटू चापट कशादिकना प्रहार करे तोपण तेना उपर ते यति क्रोध करे नही पण अकलुषित चित्तवंत थको एवी चिंतवना करेके ए शरी रते पुद्गलरूप जुदोछे अने महारो आत्मा एथी जुदोजछे माटे आत्मानेतो कोई विध्वंस करी शकेज नही अने ए जे मने ताडन प्रमुख करेछे ते महारा कृतकर्म उदय आव्याछे तेनो ए फलछे एम जाणी ते सहनकरे.

१४ परथी हणाणाने औषधादिकनी याचना करवानो प्रयोजन थाय माटे याच ना परिसह कहेछे. जे अनेरा पाशेथी याचिये ते याचना कहियें ते आवीरीते के य तिने वस्त्र पात्र अन्न पान उपाश्रय विगेरे कोईपण चीज एटले एक शली जेट ली चीज पण माग्याविना लेवीनही. यद्यपि पोतानी शोभा राखवाने अर्थे मागे न

ही तथापि पोताने प्रयोजन थये दाक्षियार लाज ठांमीने याचना करे पण एवो चिंतवे नही जे नाई रांधेला धानने अर्थे नला माणशने घेरजइ याचना करवी तो ते करता गृहस्थावासज नलो के ज्यां आपणा नुजादंमना पराक्रमथी उपजाव्यो जे अन्न ते दीन हीनादिकने आपी पठी जमीये एवी विचारणा करे नही. अथवा याचना करवाथी कोई आपे किंवा न आपे माटे हुं आ गृहस्थने घेरजई लाखनो मर्मगमावीने सीरीते याचना करु इत्यादिक चिंतवना नकरतां याचना करे ते याचना परिसह.

अवतरणः– पन्नरमी अलानादि परिसह कहेछे मूलः– अन्नान रोग तण फास मलसकार परीसहा ॥ पन्ना अन्नाण सम्मत्तं ईइ बावीस परीसहा ॥६९३॥ अर्थः– (१५) याचना कस्याछता पण लान्नांतरायना उदयथी कोईवारे माग्या छता मलेनही ते माटे याचना पछी अलान परिसह जाणवो ते जे लाननो अना व तेहिजपरीसह ते अलान परिसह कहिये. ते आवीरीते के यतिये कोईपासे याचनाकरी अने त्यांथी ते पदार्थ मल्यो तेवारे आवुं चिंतवे. बहुं परघरे अछि, विव हंखाइमसाइमं, नतछ पंमिठकुप्पइ, इछादिक्क परोनवा ॥ १ ॥ एम चिंतवतो मुखराग फेरवेनही अथवा पिंमने आलानें एवो चिंतवे के आज नही मलेतो काले अथवा परमदिवशे अथवा चोथेदिवशे लहीसुं एम विचारणा करवाथी अलान परीसह ने बाधा न थाय ते अलाननो जय कस्यो.

१६ अलान थकी आंतप्रांत नोजनेकरी रोगोत्पति थाय माटे हवे रोगपरिसह कहेछे. ते जेवारे काश श्वास ज्वर अतीसारादिक उपजे तेवारे जिनकल्पी साधुतो तेनी चिकित्सा अणकरावतो पोताना कर्मनो विपाक चिंतवे अने स्थविरकल्पिक तो आगमोक्त विधिये करी निरवद्य चिकित्सा करावतो मनमांहे कर्मविपाक चिंतवतो हाय वोय करेनही, ए रोगपरिसहनो जय जाणवो.

१७ रोगीने सय्यायें सुताथका तृणस्पर्श थाय तेथी हवे तृणस्पर्श परीसह तेहिज देखाडेछे. यतिजेछे ते पोलो तृणटालीने तृणनोज नोग गछ निर्गतने अनुमत अने गछवासी यतिने सापेक्ष संयमथाय तेथी वस्त्रपण लिये परंतु जेवारे नूमिका नीनी होय अथवा वस्त्र पुराणो थयो होय किंवा चोरे लीधो होय तेवारे जेने अनुज्ञाछे ते सुयें एम केवल तृणनो अढो हाथप्रमाण संथारोछते पण तृणना अग्रनाग तीखा होय तेथी जे पीडा उत्पन्न थाय ते सहनकरे.

१८ तृणेकरी प्रसेवाने संयोगे मलउपजे माटे तृणपरिसह पछी मलपरिसह कहेछे. प्रसेवाने जले करी कठीन पणे थई होय एवी रज जे मल तेनो परिसह ते मलपरि

सह कहियें. मल शरीरे घणो होय ते उष्णकालना तापने संयोगें प्रसेवाथी नी जाईने तेमल दुर्गंधे गंधाय ते दुर्गंध दूर करवा सारु स्नान वांछेनही वली ए थकी क्यारे छूटीस एम पण चिंतवे नही ते मलपरीसह जय जाणवो.

१९ मलव्याप्त पुरुष अनेरा कोइ पवित्रनो सत्कार थतो देखी पोतेपण कोइ क सत्कारादिकनी वांछाकरें तेमाटे मलपरीसहनी पछी सत्कार परीसह कहे छे. ते आवीरीते छे. अनेरा कोइये स्तवन नमन चरणस्पर्शन सामोउनो थावो आसन दान महोटा राजादिके निमंत्रणादिकनो करवो एवो सत्कार पोताने थतो देखी मनमां उत्कर्ष आणे नही अने सत्कार न करवाथी द्वेष पण आणे नही ते सत्कार परीसह जाणवो.

२० क्षुधापरीसहना जयथी प्रज्ञाने बहुल्यपणे गर्व नकरवो तेमज प्रज्ञाने अ नावे खेदपण न करवो तेथी ते प्रज्ञापरीसह ते आवीरीते छे. जेणे करी वस्तुनो तत्व प्रकर्षे करी जाणीये ते प्रज्ञा तेनो जे परीसह ते प्रज्ञापरीसह प्रज्ञावंत पुरु ष घणाश्रुतनो जाणछता में नवांतरने विषे रुडीरीते ज्ञान आराधन कर्यो छे तेथी हुं मनुष्य छतापण समस्त जाणुंछुं सर्वना पूछेलां प्रश्नोनो उत्तर आपुछुं एवो गर्व नकरे अने प्रज्ञाने अनावें मनमां उद्वेगपण नकरे हुं मूर्खछुं कांइज जाणतो नथी ते थी सहुकोइ मने पराजव करे छे पूछ्या थका जीवादिक द्रव्यना नाम पण जाणुं नही अर्थात् मने काइज आवडतुं नथी इत्यादिक चिंतवना करे नही परंतु पूर्वक तकर्मनो स्वरूपज चिंतवे तो परीसह पीडे नही ते प्रज्ञापरीसह जाणवो.

२१ प्रज्ञानीपरे अज्ञानपण सहन करवो माटे प्रज्ञानी पछी अज्ञानपरीसह जाणवो. वस्तुनो तत्व ते श्रुतज्ञाने जणाय छे तेनो अनाव ते अज्ञानपरिसह जाणवो ते आवीरीते छे. ते यति मनमां एम न जाणे के में सर्व अविरतपणो त्यागीने व्रतिपणो अंगीकार कर्यो छे तोपण कांइ जाणतो नथी तेमज में नइ महानद्रादिक तप पम्मिवज्या तथा उपधान जे सिद्धांतादिकमां कहेला आंबिलप्रमुख मासिकादिक प्रतिमांकरी एवीरीते क्रियायें हुं चालुछुं तो पण सारो नगरो कांइ जा णुनही अने आगममां तो एम कह्युं छे के एगंजाणइ सोसव्वंजाणइ एवा वचनथ की पूरो नजाणु अने फोकट ज्ञान गर्वकरुंछुं इत्यादिक चिंतवेनही. इहां प्रज्ञा अने अज्ञाननो ए विशेषछे के प्रज्ञा परीसह अनेरो पूछे तेवारे थाय अने अज्ञा न तो मत्यादिक ज्ञान महारामां पूरणनथी एम विचारे अथवा प्रज्ञा ते शास्त्रनो स्फुरवो अने अज्ञान ते त्रिकाल विषयिक वस्तुना अजाणपणाने कहेछे.

२२ अज्ञान थकी दर्शननेविषे शंकाथाय तेथी हवे बावीसमो सम्यकत्व परीसह कहेछे तेनो स्वरूप आवुंछे के सम्यकत्व ते सम्यक् दर्शनो पुरुष क्रियावादी प्रमुखना विचित्र मतिउने सांजलवेंकरी किंचित्मात्र चूकेनही अने उत्तराध्ययनमां कह्युंछे के. नछिनूणंपरेलोए, इढीवाचित्तवस्सिणो, आडुवा वंचिउमित्ति, ईईन्निकुनचिंतए ॥ १ ॥ व्याख्याः– जवांतरनेअर्थे तेनही अथवा तपश्वीनी आमोसही प्रमुख रुधी तेमज पगना रजेकरी रोगनो एकक्षणेकमां उपशम करवो तथा तृणने खेचवेकरी कामित वस्तुनुदेवुं तेमज शाढाबार क्रोम धननी वृष्टी थवाने अर्थे तथा क्रोध उपने पाषाणनी वृष्टी करवाने अर्थे पणनही अथवा लोच उपवासादिक कष्टेकरी वंचूछुं एवो निक्षुचिंतवे नही. वली अनूजिणा अछजिणा, अडुवाविनविस्सई, मुसंते एव माहंसु, ईईन्निकुनचिंतए ॥ २ ॥ एवी चिंतवणाकरीने दूषण नलगाडे एरीते ए बावीस परीसहनो जयकरे इति गाथार्थ. ॥ ६७३ ॥

अवतरणः– कयोपरीसह कयाकर्मनी प्रकृतिथी उत्पन्न थायछे ते त्रण गाथायेकरी कहेछे. मूलः– दंसणमोहेदंसण, परीसहोपन्ननाणपढमंमि, चरमे लान्नपरीसह सत्तेव चरित्तमोहंमि ॥६७४ ॥ अक्कोस अरईइच्छी, निसीयाचेल जायणा चेव, सक्कारपुरक्कारे, एक्कारसवेयणिज्जंमि ॥६७५॥ पंचेव आणुपुव्वी, चरिया सेज्जा तहेव जल्लेय, वह रोग तणफासा, सेसेसु नछिअवियारो ॥६७६ ॥ अर्थः– मोहनीयनाबे नेदछे एक दर्शन मोहनी बीजो चारित्र मोहनी त्यां दर्शन मोहनीय मिथ्यात्वादिक त्रिकना उदयथकी सम्यकत्व परीसहनो सन्नाव थायछे तेमज प्रज्ञापरीसह अने अज्ञानपरीसह ते प्रथम ज्ञानावरणीयना उदयथीथाय अने चरमके० छेलो लान्नांतराय तेना उदयथी अलान परीसहथाय. हवे सात परीसह चारित्रमोहनीयना उदयथी थायछे ते आवीरीते. प्रथम क्रोधना उदयथी आक्रोश परीसह थायछे .बीजो अरति मोहनीयना उदयथी अरतिपरिसह थायछे त्रीजो पुरुषवेदना उदयथी स्त्रीपरीसह थायछे चोथो नयमोहनीयना उदयथी निषिधिकीपरिसह थायछे पांचमो जुगुप्साना उदयथी अचेलकपरीसह थायछे छठो मानना उदयथी याचनापरिसह थाय छे सातमो लोन मोहनीयना उदयथी सत्कार पुरस्कार परीसह थायछे. हवे इग्यार परीसह वेदनीय कर्मना उदयथी थायछे ते कहेछे तेमां अनुक्रमे क्षुधादिक पांच तथा चर्या सय्या अने वली आठमो मल नवमो वध दशमो राग ईग्यारमो तृणस्पर्श ए इग्यारपरीसह वेदनीयना उदयथी कह्या शेषकर्मनेविषे परिसहनो अवतार नथी॥६७४॥६७५॥६७६॥

अवतरणः– गुणगणानेविषे परीसहोने समवतारी देखाडेछेः– मूलः– बावी संबायरसं, पराय चउदसय सुहुमरायंमि, छउमछ वीयरागे, चउदस इक्कारस जिणंमि ॥६९७॥ अर्थः–ए क्षुधादिक बावीसे परीसह जे छे ते यावत् बादरसंपराय नामा नवमां गुणगणाने विषे थाय छे चउदपरीसह सूक्ष्मसंपराय नामा दशमां गुणगणाने विषे संजवे तेमां पांचतो क्षुधादिक जाणवी अने छठी चर्या, सातमी सय्या, आठमी वध, नवमी अलाज दशमी राग, इग्यारमी तृणस्पर्श, बारमी मल, तेरमी प्रज्ञा, अने चउदमी अज्ञान ए चउद थाय एटले चारित्र मोहनीयनो क्षय अथवा उपशम तेना प्रतिबद्धथी सात अने एक दर्शन मोहनीयें प्रतिबद्ध ए आठ न थाय बाकीनी चउद थाय. अने इग्यारमां छद्मस्थ गुणगणे तथा बारमां वीतराग गुणगणाने विषे पण पूर्वोक्त चउदज थाय छे. हवे तेरमो सयोगी तथा चउदमो अयोगी ए बे गुणगणाने विषे अनुक्रमे क्षुधादिक पांच, छठी चर्या, सातमी वध, आठमी, मल, नवमी सय्या, दशमी रोग, अने इग्यारमी तृणस्पर्श ए इग्यार परीसह वेदनीयने प्रतिबद्धे थायछे. ॥ ६९७ ॥

अवतरणः–उत्कृष्टे तथा जघन्ये एक प्राणीनेविषे समकाले केटली परिसह पामीयें ते कहे छेः– मूलः– वीसं उक्कोसपए, वट्टंति जहन्नउय एक्कोय, सीउसिण चरियनिसीहि, याय जुगवं न वट्टंति ॥६९८॥ अर्थः–उत्कृष्टथीतो वीसनो उदय थाय अने जघन्यथी तो एकज होय एटले एक शीत ने उष्ण तथा चर्या ने निषिधिकी ए जुगवं के० बंने एकठा समकाले वर्त्तेनही. माटे उत्कृष्टथी वीस थाय केमके ज्यां शीत होय त्यांउष्ण नहोय अने चर्या होय त्यांनिषेधकी नहोय इत्यादि ॥६९८॥

अवतरणः– मंमली सत्तगंति एटले सात मांमलिनो सत्यासीमो द्वार कहे छे. मूलः– सुत्ते अछे जोयण, काले आवस्सएय सज्झाए, संथारे चेव तहा, सत्तविहा मंमलीजइणो ॥६९९॥ अर्थः– एकसूत्र बीजो सूत्रनो अर्थ त्रीजो जोजन चोथो कालग्रहे पांचमो आवश्यक छठो सद्याय सातमो संथारो ए सात मांमलीने विषे एकेक आंबिलने करवे करी प्रवेशथाय छे अन्यथा न कल्पे. ए सत्यासीमो द्वार समाप्त.

अवतरणः– दसगणवुच्छेति एटले दस स्थानकना विछेदनो अठ्यासीमो द्वार कहे छेः–मूलः–मण परिमोहि पुलाहे, आहारग खवग्ग उवसमेकप्पे, संजमतिअ केवल सिज्झणाय जंबुम्मि वोछिन्ना ॥ ७०० ॥ अर्थः– एक मनपर्यवज्ञान बीजो परम प्रकृष्ट जे अवधि ज्ञान जेना उपजवाथी अवश्य केवल ज्ञान उपजे ज एवी परमावधि, त्रीजी पुलाकलब्धि, चोथी आहारक लब्धि, पांचमी क्षपक श्रे

णी, छठी उपशमश्रेणी, सातमो जिनकल्प, आठमो परिहारविशुद्धि. सूक्ष्मसंपराय. ने यथाख्यात ए संयमत्रिक, नवमुं केवल ज्ञान, अने दशमो सिझणाय के० सी जवो (सिद्धथवो). इहां केवली तथा सीजवो ए बे जुदा कह्यां तेनो कारण ए छे के केवलीतो नियमे सीजे अने जे सिद्ध थाय ते केवलज्ञान पामिने सीजे एवो ज णाववाने अर्थे कह्या. ए दश स्थानक जंबुस्वामि थकी विछेद गयां तथा प्रथम संघयण, प्रथम संस्थान अने अंतरमुहूर्त्ते चउद पूर्वनो उपयोग ए त्रण अर्थ ते श्री थूलभद्र स्वामिना वखतथी विछेद गया. उक्तंच. संघयणं संठाणं, पढमं सं जोयपुव्व अणुउंगो, एए तिन्निवि यत्ता, वोछिन्ना थूलभद्दंमि ॥१॥इति॥७००॥

अवतरणः—खवगसेढित्ति एटले क्षपक श्रेणीनो नेव्यासीमो द्वार कहेछेः—मूलः— अणमिछमीस सम्मं, अठ नपुंसित्थी वेयछक्कं च, पुंवेयंच खवेई, कोहाईएय संजल णे ॥ ७०१ ॥ अर्थः— इहां क्षपकश्रेणीनो पडिवजणहार पुरुष आठवरसथी उपरनी उमरनो वर्त्तमान छता वज्र रूषभ नाराच संघयणनो धणी शुद्ध ध्यानवंत अ विरत, देशविरत, प्रमत्त, अप्रमत्त संयति माहेलो अनेरो कोई पडिवजे पण इहां ए टलो विशेष जे केवल अप्रमत्त संयतिहोय तो पूर्वनो जाण शुक्लध्यानोपगत होय अने बीजा सर्व धर्मध्यानोपगत होय. त्यां पहेली अनंतानुबंधियानी विसंयोजना कहेछे.

इहां श्रेणीना अपमिवजणहार पण अविरत चतुर्गतिक छतां क्षायोपशमिक स म्यक्दृष्टि देशविरत तिर्यंच तथा मनुष्य अथवा सर्वविरत मनुष्य जे समस्त प र्याप्ति पर्याप्ता यथा संभवपणे विशुद्धि परिणाम्याछतां अनंतानुबंधीनी क्षपणाने अर्थे यथाप्रवृत्तिकरण, अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण ए त्रण करण करे ए कर णनी वक्तव्यता सर्व कर्मप्रकृति थकी जाणवी.

अनिवृत्ति करणे पहोतो छतो उद्वलना संक्रमणे करीने अनंतानुबंधीनी स्थि ति आवलिकामात्र मूकीने बाकीना उपरला अनंतानुबंधिया सर्वनो विनाश करे अने आवलिकामात्र ते स्तिबुकसंक्रमणे करीने वेद्यमान प्रकृतिने विषे संक्रमावे एरी ते अनंतानुंबंधिचतुष्क खपावीने दर्शन मोहनीय क्षपाववाने अर्थे यथाप्रवृत्त्यादिक त्रण करण करे अने अनिवृत्तिकरणाद्धाविषे वर्त्तमान थको दर्शनत्रिक संबंधीनी कर्म स्थिति उद्वलना संक्रमणे करी उद्वले ते जांसीम पल्योपमना असंख्यातमां भा गमात्र प्रमाणे रहे. तेवारपछी मिथ्यात्वना दलिक तेसम्यक्त्व अने मिश्रमां प्रक्षेपे.

ते पहेले समये स्तोक बीजे समये तेथी असंख्यातगुण अधिक एम त्यांसुधी ज्यांसु धी अंतरमुहूर्त्तना चरम समयनेविषे आवलिकागत मूकीने शेष द्विचरम समय संक्र

मित दलिक थकी असंख्यात गुणो संक्रमावे अने आवलिकागत तो स्तिबुक संक्रमेक री सम्यक्त्वने विषे प्रक्षेपे एरीते मिथ्यात्व खपाव्या पछी अंतरमुहूर्तेकरी सम्यक् मिथ्यात्व ते एवाज अनुक्रमे सम्यक्त्वने विषे प्रक्षेपे तेवार पछी सम्यक्मिथ्यात्व पण खपावे. हवे वली सम्यक्त्व अपवर्तवा एवीरीते लागो के जेवीरीतें अंतरमुहूर्त्तं तद प्यंत मुहुर्त्तमात्र स्थितिक थयो ते हवे अनुक्रमे वेदतो थको समय अधिक एक आवली शेष थयो तेवार पछी अनंतर समये तेनी उदीरणानो छेद थयो ज्यांसुधी चरम समय त्यांसुधी केवल विपाकानुभवे वेदीए.

पछी अनंतर समये क्षायिकसम्यकदृष्टी थाय. जो बद्धायुष्क क्षपकश्रेणी करवा मांडे तो अनंतानुबंधीना क्षय, पछी मरणने संभवे पाछो पडीवजे तो कदाचित् मिथ्यात्वना उदयथकी वली अनंतानुबंधियाने पुष्टीपणे पमाडे. कारणके अनंता नु बंधियानो बीजभूत मिथ्यात्व हजी विणस्योनथी तेमाटे.

अने जे क्षीण मिथ्यादर्शनी ते पुष्टीपणे अनंतानुबंधीने मिथ्यात्वबीजना अभावथ की करेनही अने क्षीणसप्तक ते अप्रतिपतित परिणामे देवताने विषे अवश्य उपजे अने प्रतिपतित परिणामि ते तो जेवो परिणामि तेवा परिणामने अनुसारे ना नाप्रकारनी गतिमांहे उपजे. तथा बद्धायुषपण जे तेवारेंज काल न करे तो पण सप्तकक्षीण थयोथको निश्चेथीरहे पण चारित्र मोहनीय क्षपाववाने अर्थे यत्नकरे.

इहां शिष्य प्रश्न करेछे के गत्यंतरने विषे जातो क्षीणसप्तक केटलेभवे मोक्ष जाय तेनेगुरु उत्तर कहेछे के त्रीजे अथवा चोथे भवे मोक्ष जाय तेमां जो देव अथवा नरकगतियें जाय तो ते देव अथवा नारकीनो भव विचालेकरी त्रीजे भ वेज मोक्ष जाय अने जे तिर्यंच अथवा मनुष्यमां उपजे ते तो अवश्य असंख्या त वर्षआयुष्यवालामां उपजे पण संख्यातावर्ष आयुष्य वालामां न उपजे. पछी त्यांथी देवगतिपामि फरी मनुष्यमां आवी मोक्ष जाय एरीते चारभव पणथायछे.

हवे सप्तक क्षयवालो पूर्वबद्धायुष्क एवोजे होय ते तेवारेज कालकरी मरण पामिने वैमानिकनेविषे उपजे जे बद्धायुष्क ते चारित्र मोहनीय उपशमाववाने अर्थे उद्यमकरे पण शेष भवने विषे बद्धायुष्क होय तो नकरे.

इहां वली शिष्यपुछेछे के दर्शन त्रिक क्षयगयो तो ए सम्यक दृष्टी किंवा अस म्यकदृष्टी जाणवो तेवारे गुरु कहेछे के सम्यकदृष्टीतो तहारा केवाथी सम्यकदर्श नने अभावेपण सम्यकदृष्टी पणो थयो एम न कहेवो ईहांतो.जेहनो मईणो क ढयो होय एवा कोद्रवा ते समान गयोछे जेनाथकी मिथ्यात्वनोभाव एवा मिथ्या

त्वना पुजलरूप जेछे ते इहां सम्यकदर्शन क्षयेपणे गयाछे परंतु जे आत्माना परिणाम स्वनाव तत्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यकदर्शन ते गयोनथी अने ते तो अतिशुद्ध थायछे अभ्रपटलने अनावे मनुष्यदृष्टी तेनीपरें महाशुद्धतर स्वरूप थाय.

हवे जे अबद्धायुष्क क्षपकश्रेणी आरंने तो सप्तक क्षयकीधेछते निश्चेथकी अनुपरत परिणामिथको चारित्रमोहनीय खपाववाजणी उद्यमकरे अने ते चारित्र मोहनीय खपववाने अर्थे यथाप्रवृत्यादि त्रण करण करे ते आवीरीते के यथा प्रवृत्तकरण अप्रमत्तगुणठाणे तथा अपूर्वकरण अपूर्वकरण गुणठाणे अने अनिवृत्तिकरण ते अनिवृत्तिबादर संपराय गुणठाणे करे त्यां अपूर्वकरणनेविषे स्थितिघातादिके करीने अप्रत्याख्याना वरणचतुष्क अने प्रत्याख्यानावरण चतुष्क ए आठ तेकेवीरीते खपावेछे जेम अनीवृत्तिकरण कालना प्रथम समयेज ते कषायाष्टक पल्योपमासंख्येय नाग मात्र स्थितिकथयो वली एज अनीवृत्तिकरण कालनो असंख्यातमो नाग गयेछते थीणधीनो त्रिक, नरकगति, नरकानुपूर्वी, तिर्यग्गति, तिर्यगानुपूर्वि एकेंद्रिय, बेंद्रिय, तेंद्रिय, अने चउरिंद्रियनी जाति स्थावर, आतप, उद्योत, सूक्ष्म, साधारण, ए सोलप्रकृतिनी उद्वलना संक्रमेकरी उद्वलतांथकां पल्योपमासंख्येय नाग मात्र स्थितिथई तेवारपछी बध्यमान प्रकृतिमांहे ते सोलप्रकृति गुण संक्रमे ते समय समय घालतीछति समस्तप्रकारें क्षीणथाय.

ईहां सूत्रकारनो ए अनिप्रायछे के कषायनो अष्टक प्रथम खपाववा मांम्योछे तेपण हजीसुधी क्षीण थयो नथी अने विचाले पूर्वोक्त सोलप्रकृतिखपावी पछी ते पण आठकषाय अंतरमुहूर्त्ते खपावे. अने बीजा आचार्य एम कहेछे के सोल प्रकृतिज प्रथम खपाववामांमे अने विचाले आठकषाय खपावी पछी सोलप्रकृति खपावे तेवारपछी अंतरमुहूर्त्ते नवनोकषाय अने चार संज्वलननो अंतरकरणकरे ते अंतर करण करीने नपुंसकवेदना दलिक उपरली स्थितिगत उद्वलना विधेकरी खपाववामांमे तेपण अंतरमुहूर्त्ते पल्योपमासंख्येयनागमात्र थया तेवार पछी बध्यमान प्रकृतिने विषे गुण संक्रमे ते दलिक प्रक्षेपे एम प्रक्षेपतां अंतरमुहूर्त्ते समस्त नीचली स्थितिना दलिक क्षीण थया.

जे नपुंसकवेदे क्षपकश्रेणी करवामांमे तो अनुनवतो ते क्षपावे अन्यथा प्रकार आवलिका मात्र ते थाय ते लेई वली वेद्यमान प्रकृतिमांहे स्तिबुकसंक्रमें संक्रमावे एटले करी नपुंसकवेद खपावे पछी एवाज अनुक्रमे स्त्रीवेद खपावे तेवारपछी छ नोकषाय समकाले खपाववामांमे अने तेवारपछी तेनी उपरली स्थितिगत

जेदलिकछे ते पुरुषवेदमांहे संक्रमावे नही किंतु संज्वलन क्रोधने विषेज संक्रमा वे एम ए सर्व पूर्वोक्त विधेकरी खपावताथका अंतरमुहूर्त्ते सर्वथा प्रकारे क्षीण थ या हवे तेहिज समये वेदनो बंध उदय उदीरणानो विच्छेद अने समयोन बे आवलिकानेविषे एटलो बद्ध मूकी शेषनो पण क्षय थयो तेवारे ए अवेदकथयो क्रोध वेदतांथकाने एना त्रणविभाग होय तेनानाम अश्वकर्णकरणाद्धा, किट्टिकर णाद्धा, किट्टिवेदनाद्धा तेना स्वरूप ईहां शास्त्रांतरोक्त भावे देखाडीयेछे.

घोडाना कर्णनीपरे जे न्हाना न्हाना कर्मनापुद्गल तेहना न्हाना न्हाना खंड करे जे थकी कालविशेषने विषे ते अश्वकर्ण करणाद्धा कहिये ते कर्मना दलिक रससहित कूटी कूटीने किट्टीनीपरें अति न्हानाकरे तेने किट्टिकरणाद्धा कहिये. पछी किट्टीकरी तेने वेदे ते किट्टीवेदनाद्धा कहियें.

त्यां अश्वकर्ण करणाद्धायें वर्त्तमानछतो समय समयनेविषे चार संज्वलन क षायना अंतरकरण थकी उपरली स्थितिनेविषे अनंता अपूर्व स्पर्द्धककरे ते स्पर्द्ध क कोने कहिये ते कहेछे. इहां जे अनंतानंत परमाणुयें नीपनाछे एवाजे स्कंध ते जीव कर्मपणे ग्रहण करे त्यांजे एकेका स्कंधनेविषे सर्व जघन्य रस परमाणुआछे तेनो रसपण केवलीनी बुद्धियें सर्वजीवने अनंतगुण रस भाग आपे अनेरोते र सभाग एकेअधिक अनेरोवली बेहुए अधिक एम एकोत्तरवृद्धे त्यांसुधी जाणवो ज्यांसुधि अनेरो परमाणुउ अभव्यथकी अनंतगुणा अने सिद्ध थकी पण अनंतमें भा गें अधिक रसभागछे त्यां जघन्यरसे जेकोई परमाणुआछे तेनो समुदाय समान जातियपणा लगीने एक वर्गणायेंज कहिये एम अनेराजे एकाधिक रसभाग सहि त तेनो समुदाय तेनी बीजी वर्गणा जाणवी अनेरा वली द्व्यधिक रस भाग युक्त तेनो समुदाय तेनी त्रीजी वर्गणा एम एरीते एकोत्तर रसभागवृद्धि परमाणुआनो समुदायरूप जे वर्गणा ते सिद्धथकी अनंतमाभाग समान अभव्यथकी अनंत गुणी कहेवी अने एनो समुदाय ते स्पर्द्धक कहियें एटले माहोमाहे स्पर्द्धाकरे ते माटे स्पर्द्धक कहेवायछे एम उत्तरोत्तर वृद्धेकरी परमाणुआनी वर्गणा जाणवी. इहां स्प र्द्धक एटला वास्ते छे के एथकी एकोत्तरें अधिकि निरंतर वृद्धे वधतो रस न लाभे किंतु सर्व जीवथकी अनंतगुण जे रसभाग तेथकी तेहिज अनुक्रमे बीजो स्पर्द्धक मांभीयें एमज त्रीजो स्पर्द्धक एम ज्यांसुधी अनंता स्पर्द्धक थाय त्यांसुधी.

हवे एनाथकीज पहेली वर्गणा आदेदेईने विशुद्धिना जे प्रकर्ष तेना वशथकी अनंतगुण हीन रसकरीने पहेला नीपरे स्पर्द्धककरे एवा स्पर्द्धक पहेला कोईवारे

कोइये कस्यानथी तेथी तेने अपूर्व कहिये एणे अश्वकरण करणाद्धा पुरीकीधी करणाद्धानेविषे वर्त्तमान थको पुरुषवेद समयोन आवलिकाद्वयें क्रोधनेविषे गुण संक्रमेकरी संक्रमावतो चरम समये जीव संक्रमेकरी सर्व संक्रमावे ते वारे पुरुषवेद क्षीण थाय. एरीते अश्वकरणकरणाद्धा संपूर्ण थइ. अने किट्टीकरणाद्धाये वर्त्तमान थको चारसंज्वलननी कषायना उपरली स्थितिना जे दलिक तेनी किट्टीकरे किट्टीनोस्वरूप कहेछे. जे पूर्वस्पर्द्धक अने अपूर्वस्पर्द्धक थकी प्रथमादि वर्गणालेइ विशुद्धिप्रकर्षना वशथकी अत्यंत हीनरस करीने तेने एकोत्तरवृद्धि त्यागें घणे अंतराले करीने स्थापवो तेआवीरीते ज्यां ते वर्गणाना असत्कल्पनायें रसना जे अनुभाग तेहनो शत एकोत्तरादिक जे हतो तेहीज वर्गणानी विशुद्धिना वशथकी रसना अनुभाग दशक अथवा पनर तेनो जे स्थापन करवो तेने किट्टी कहिये. अने ए किट्टी परमार्थे अनंति छतापण स्थूलजाति भेदआश्री बारनी कल्पना करियें ते एकेक कषायनी पहेली बीजी ने त्रीजी एम त्रण त्रण किटी करे एम जे क्रोधे क्षपकश्रेणी पडीवजे तेने जाणवो.

जेवारे माने पडिवजे तेवारे उद्वलन विधि करीने क्रोधे खपावे छते शेष त्रण कषायछे तेनी पूर्वक्रमे नवकिट्टीकरे अने जो मायायें पडीवजे तो क्रोध मान ए बेहुनी उद्वलनाविधे क्षपणाकीधीछति शेष बे कषायनी पूर्वअनुक्रमे छ किट्टीकरे अने जे लोभे पडिवजे ते उद्वलनाविधे क्रोधादिक त्रण कषाय खपावे छते एक लोभनी त्रण किट्टीकरे ए किट्टी करवानी विधिकही.

हवे किट्टीकरणाद्धा त्रणे पूरणथइछते क्रोधे श्रेणी पडिवज्योथको क्रोधना पहेली किट्टी संबंधी जे दलिक बीजी स्थितिगतछे ते आकर्षिने प्रथम स्थितियेंकरे अने वेदेपण त्यांसुधी के ज्यांसुधि समये अधिक आवलिका मात्र शेषरहे त्यांसीमवेदे तेवारपछी बीजा समयनेविषे बीजी किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षिने प्रथम स्थितियेंकरे अने वेदे पण तांसीम जांसीम समय अधिक आवलिका मात्र शेषरहे तांसीमवेदे तेवारपछी त्रीजी किट्टीना दलिक द्वितीयस्थितिगत आकर्षिने प्रथम स्थितियेंकरे अने वेदेपण त्यांसुधी ज्यांसुधी समयाधिक आवलिकामात्रशेष.

शेष त्रण किट्टी वेदना अद्धानेविषे उपरली स्थितिगत दलिक गुणसंक्रम पणे समय समयने विषे असंख्येय गुण वृद्धिलक्षणे संज्वलन मान मांहे प्रक्षेपे अने त्रीजीकिट्टी वेदनाद्धा तेना चरम समयनेविषे संज्वलनना क्रोधनो बंध उद

य उदीरणाने समकाले विछेदे अने सत्तापण एक समयोन आवलिकाद्विके क री बद्ध एवो मूकी तेने अनेरोनही सर्व माननेविषे प्रक्षेप्यो.

तेवारपछी माननी प्रथम किट्टी तेना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितियें करे अने वेदेपण तांसीम जांसीम अंतरमुहूर्त एम क्रोधनोपण बंधादिक व्यवछिन्न थयेथके तेना दलिक समयोन बे आवलिकाये माननेविषे गुण संक्रमे संक्रमावतो थको चरम समय सर्व संक्रमावी माननीपण पहेली किट्टीनादलिक पहेली स्थितिनेविषे कीधाछे तेवेदता समयाधिक आवलिका शेषथाय तेवारपछी माननी बीजी किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत आकार्षि प्रथम स्थितियेंकरी वेदे ते जांसीम समयाधिक आवलिकामात्र शेषरहे त्यांसुधिवेदे पछी त्रीजीकिट्टीना द लिक बीजी स्थितिगत आकार्षि प्रथम स्थितिगत करी वेदे समयाधिक आवलिका मात्र शेषरहे त्यांसुधीवेदे अने तेहिज समये मानना बंधउदय उदीरणानो समकाले विछेदथाय अने सत्कर्मपणे तेने समयोन आवलिका द्विकबंधेज. शेषतेक्रोधनीपरे जाणबो. जेम त्यां क्रोध माननेविषे प्रक्षेपी तेमईहां मानते मायानेविषे प्रक्षेपीये.

तेवारपछी मायाना प्रथम किट्टीदलिक द्वितीय स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थि तेंकरी अंतर मुहूर्त्तमात्र लगे वेदे संज्वलन मानसंबंधी बंधादिकनो विछेदथयेथके संज्वलन मानना दलिक समयोन आवलिकाद्विके गुणसंक्रमणेकरी मायानेविषे प्रक्षेपे मायानापण प्रथम किट्टीदलिक बीजी स्थितिगतकरी पहेली स्थितियेकरी वेद तोथको समयाधिक अवलिका शेष थाय तेवारपछी मायाना द्वितीय किट्टीसंबंधी दलिक द्वितीयस्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थितेकरी समयाधिक अवलिकामात्र शे षलगे वेदे तेवारपछी त्रीजी किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षि प्रथम स्थि तेंकरी समयाधिक आवलिकामात्र शेषलगें वेदे तेहिज समयनेविषे मायानो बंध उदय उदीरणा पण समकालें विछेदथाय अने मायानो सत्ताकर्मपण समयोन आ वलिका द्विक बंधमात्रेज शेषरहे जेणेकारणे गुण संक्रमे लोभनेविषे प्रक्षेप्यो.

पछी लोभनी पहेली किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत आकर्षि पहेली स्थिते करी वेदे ते ज्यांलगें अंतर मुहूर्त्त एटले संज्वलन मायाने बंधादिके व्यवछिन्न थयेथके मायाना दलिक समयोन बिहुं आवलियें गुण संक्रमें समस्त लोभनेविषे संक्रमावे संज्वलन लोभनी प्रथम किट्टीना दलिक प्रथमस्थितेकरी वेदतोथको समयाधिक आवलिका शेषथयो तेवारपछी लोभनी बीजी किट्टीना दलिक बीजी स्थितिगत

आकर्षि प्रथम स्थितियेंकरी वेदे ते जांसीम बीजी किट्टीना दलिक प्रथम स्थिति गत कीधाछे ते आवलिकामात्र शेष जाणवी.

अने तेहीज समयें संज्वलन लोजना बंधनो व्यवछेद थाय बादर कषाय संबंधी उदय उदीरणानो व्यवछेद थाय अने अनिवृत्तिबादर संपराय गुणठाणानो काल ए सर्व समकाले व्यवछेद थाय तेवारपछी सूक्ष्म किट्टीदलिक द्वितीय स्थितिंगत आकर्षि पहेली स्थितियें करी वेदे तेवारे एने सूक्ष्मसंपराय कहियें.

हवे त्रीजी किट्टीगत आवलिका शेष छे ते सर्व विद्यमान आगली प्रकृतिनेविषे स्तिबुकसंक्रमे संक्रमावे अने प्रथम द्वितीय किट्टीगत जेवीरीतेछे तेवीरीतेज बीजी त्रीजी किट्टीगत मध्ये वेदे अने सूक्ष्मसंपराय लोजनी सुक्ष्म किट्टी वेदतो थको सूक्ष्मकिट्टीना दलिक जे समयोन बे आवलिकाये बद्ध छे ते समय समयनेविषे स्थितिघातादिकेकरी त्यां खपावे ज्यां सूक्ष्मसंपरायनी अद्धाना संख्यात नाग गया होय एक थाकतो रहे ते एक संख्यातमो नाग जे थाकतो रहे ते नागने विषे संज्वलननो लोज सर्व अपवर्त्तनायें अपवर्त्ति सूक्ष्मसंपरायनी अद्धा समानकरे ते सूक्ष्मसंपरायनी अद्धा हजीसुधी अंतरमुहूर्त्त प्रमाण छे ते आरंजी पछी मोहनीयना स्थितिघातादिक निवर्त्ते शेषकर्मना स्थितिघातादिक प्रवर्त्ते अने लोजनी अप्रवर्त्तित स्थिति उदय उदीरणाये करी वेतो थको त्यांसुधीगयो के ज्यां सुधि समयाधिक आवलिका मात्र शेष त्यां उदिरणा रहीछे.

तेवारपछी ते स्थिति केवल उदयेकरी वेदे ज्यांसुधि चरमसमय. अने ते चरमसमयनेविषे ज्ञानावरणियादिक पांच, दर्शनावरणीय चार, यशकीर्त्ति, उच्चैर्गोत्र, पांच अंतराय ए सोलप्रकृतिना बंधनो विछेद थाय तेम वली मोहनीयना उदय अने सत्तानो विछेद थाय तेवारे ए क्षीण कषायी थयो.

वली तेहने शेषकर्मनी स्थितिघातादिक ए पूर्ववत प्रवर्त्ते जांसीम क्षीणकषाय अद्धाना संख्येयनाग गयांहोय अने एक नाग रहे ते नागने विषे ज्ञानावरणादिक पांच, अंतराय पांच, चार दर्शनावरण बे निद्रा ए सोल प्रकृतिनी स्थिति ने सत्ता ए सर्व अपवर्त्तनायें अपवर्त्ते ते अपवर्त्तिने क्षीणकषायअद्धासमान करे केवल निद्राद्विकनी आपणा आपणा रूपनी अपेक्षायें एक समयऊणी सामान्यपणे अने कर्मरूपपणे सरखी ते क्षीणकषायअद्धापण अंतरमुहूर्त्त मान छे.

तेवारपछी ते आरंजीने तेना स्थितिघातादिक रह्या शेष थाकतानी थाय ते सोल कर्मप्रकृति निद्राद्विके हीन तेने उदय उदीरणा वेतो थको त्यांसुधी गयो

ज्यांसीम समय अधिक आवलिका मात्र शेष रहे. तेवारपछी उदीरणा निवर्त्ती पछी आवलिका सीम केवलउदये करी ते वेदे ते ज्यांसुधी क्षीणकषाय अद्धानो छेलो समय ते थकी उरलो समय ते द्विचरम समयने विषे निद्राद्विक आपणेरूपे सत्ता नी अपेक्षायें क्षीण थयो अने चउद प्रकृतिनो चरमसमय क्षय थयो तेवारपछी अनंतर समये केवली थाय. ॥३०१॥

अवतरणः— एगाथा सूत्रकार सर्वपदे जूदी जूदी वखाणनार छतो कहे छे. मूलः—कोहो माणो माया, लोहोणंताणुबंधिणो नणिया, खविऊण खवइ संढो, मिछं मीसंच सम्मत्तं ॥ ३०२ ॥ अर्थः—क्रोध, मान, माया, अने लोन ए चार अ नंतानुबंधिया कषाय समकालें खपावीने संढके० नपुंसक जे श्रेणीनो पडिवजण हार ते मिथ्यात्व, मिश्र, अने सम्यक्त्व ए त्रण प्रकृति अनुक्रमें अंतरमुहूर्त्तें खपा वे. सर्वनो पण क्षपणकाल अंतरमुहूर्त्तमान अने श्रेणी परिसमाप्ति काल पण अं तरमुहूर्त्त मात्रज जाणवो. केमके अंतरमुहूर्त्तना असंख्याता नेद छे माटे.॥३०२॥

मूलः— अपचक्खाणे चउरो, पच्चक्खाणेय सममवि खवेइ, तयणु नपुंसग इ त्थि, वेयडुगं खवय खवइ समं ॥ ३०३ ॥ अर्थः—अप्रत्याख्यानिया क्रोधादिकचार अने प्रत्याख्यानिया चार ए आठे एकठा खपावे तेवारपछी नपुंसकवेद ने स्त्रीवेद ए बेहु समकालेज खपावे एम स्त्रीवेद तथा नपुंसकवेदना क्षय थकी समकालेज पुरुषवेदना बंधनो व्यवछेद करे ते खपावीने समकाले वक्ष्माण प्रकृतिखपावे. ॥ ३०३ ॥ तेहिज देखाडेछे.

मूलः—हास रइ अरइ पुंवेय सोअ नयजुय डुगछ सत्तइमां॥तह संजलणं कोहं, माणं मायंच लोनंच॥३०४॥अर्थः—हास्यादिक छ तथा पुंवेद ए सात प्रकृति खपावी पछी संज्वलनना चार कषाय खपावे॥३०४॥त्यां लोनने विषे एटलो विशेष छे ते कहेछे.

मूलः—तो किट्टीकय असंख, लोह खंमाइं खविय मोहखया॥ पावइ लोयालोय,प्प यासयं केवलं नाणं॥३०५॥अर्थः—तेवारपछीमायाक्षपणानंतर लोनना खंमनी असं ख्याती किट्टीकरे तेने खपावे एम सर्व मोहना क्षय थकी लोकालोकनो प्रकाशक एवुं केवल ज्ञान पामे. इहां एटलो विशेषके एजे लोननी किट्टीनो करण ते लोने श्रेणी प्रपन्ने जाणवो अने जेवारे क्रोधे श्रेणी पडिवजे तेवारे क्रोधादिक चारनी किट्टीकरे वली माने पडिवजे तेवारे मानादिक त्रणनी किट्टीकरे अने मायायें पडिवजे ते वारे माया अने लोननी किट्टीकरे. आ सूत्रमां जे क्षपणानो क्रम कह्यो ते नपुंस क क्षपक आश्रीने कह्यो. ॥ ३०५ ॥

मूलः— नवरं इत्थी खवगा, नपुंसगं खविय खवइ थीवेयं ॥ हासाइछगं खविउं, खवइ सवेयं नरो खवगो ॥ ७०६ ॥ अर्थः— नवरंके० एटलो विशेषछे के जेवारे स्त्री क्षपकश्रेणी प्रारंभे तेवारे पहेलुं नपुंसकवेद खपावी पछी स्त्रीवेद अने स्त्रीवेद ना क्षयथयाथी समकालेज पुरुषवेदना बंधनो व्यवछेदथाय तेवारे अवेदक पहे लीजे पुरुषवेद तथा हास्यादिक छ ए सात प्रकृति हती ते समकाले खपावे शेष तेमज जेवारे पुरुष पडिवजे तेवारे पहेलुं नपुंसकवेद पछी स्त्रीवेद पछी हास्यादि क खपावीने पछी पुरुषवेद खपावे शेष पहेलानी परे जाणवो. ए क्षपकश्रेणीना स्वरूपनो नेव्यासीमो द्वार समाप्त थयो. ॥ ७०६ ॥

अवतरणः— उवसमसेढित्ति एटले उपशमश्रेणीनो नेवुमो द्वार कहेछे. मूलः—अणदंस नपुंस इत्थी, वेयछक्कंच पुरिसवेयंच ॥ दोदो एगंतरिए, सरिसे सरिसं उवसमेई, ॥७०७॥अर्थः—उपशमश्रेणीनो पडिवजणहार अप्रमत्त संयत गुणठाणेज होय अने प्रमत्त, अप्रमत्त, देशविरति, अविरते ए मांहे मेली आवे ते होय अ ने अनेरा एम कहेछे के अविरत देशविरत प्रमत्त अप्रमत्त माहेलो मेलि आवे ते अनंतानुबंधी उपशमावे अने दर्शनत्रिकादि संयमनेविषे वर्त्तमान छता ज त्यां पहेली अनंतानुबंधीनी उपशमना देखाडेछे.

अविरत्यादिक माहेलो मनोयोगादिकयोगे वर्त्तमान तेजोलेश्यादिक त्रण शु भलेश्या माहेली कोईक लेश्या मांहे वर्त्ततो साकारोपयोगयुक्त प्रत्येक कर्मनी ए क कोडाकोडी सागरोपममांहे स्थिति. करणकाल थकी पहेलो पण अंतर मुहूर्त्तसुधि विशुद्धमान चित्तथको एम रहेतो आगलें शुभप्रकृतिबांधे परंतु अशुभ प्रकृतिनबांधे अने समय समयनेविषेअशुभ प्रकृतिनो अनुभाग अनंतगुण हाणी करतो शुभप्र कृतिनो रस अनंतगुण वृद्धि करे अने स्थितिबंधेपण पुरेहुए छते पूर्वस्थिति संबं धीनी अपेक्षायें पल्योपमने असंख्यातमे भागे हीन स्थिति बंध करे अने अंत रमुहूर्त्त पूरण थये छते अनुक्रमे यथाप्रवृत्तकरण अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण ए त्रणेकरणनी प्रत्येके अंतरमुहूर्त्त प्रमाण जेनी स्थिति एवाकरे चोथी ते उपशां ताद्धा अनिवृत्तिकरणाद्धाना संख्याताभाग गयेछते एक भाग रहेथके अनंतानुबंधी नी नीची अवलिकामात्र मूकीने अंतरमुहूर्त्तप्रमाण अंतरकरण अंतर मुहूर्त्तेकरे अं तरकरणना दलिक उखेलीने बध्यमान प्रकृतिमां प्रक्षेपे अने प्रथमस्थितिना आ वलिकागत दलिक स्तिबुकसंक्रमणे वेद्यमान प्रकृतिमांहे प्रक्षेपे.

अने अंतरकरण कीधेछते बीजा समयनेविषे अनंतानुबंधीनी उपरली स्थिति

संबंधी दलिक उपशमाववा मांडे ते प्रथम समये स्तोक बीजे समये त्रीजे समये अनुक्रमे असंख्येयगुण वृद्धि ते तांसीम जांसीम अंतरमुहूर्त्ते समस्त प्रकारे अनंता नुबंधी उपशमाव्या. उपशमित तेने कहिये जेम धूलने पाणीथी सींची उपर धूंस डासाथे कूटी थकी महानिचित थाय तेम कर्मरूप धूली निर्मल अध्यवसायरूप पाणीयें सींची सीचीने अनिवृत्तिकरणरूप धुसडायेकरी कूटतो थको पछी संक्रमण उदय उदिरणा निधत्त निकाचनादि करणने अयोग्यथाय एक अनंतानुबंधीनी उपशमना न मानवी किंतुविसंयोजना क्षपणा ते पहेली कही.

हवे सांप्रत दर्शनत्रिकनी उपशमना कहेछे. ईहां क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टी संय मनेविषे वर्त्तमान अंतरमुहूर्त्ते दर्शनत्रिक उपशमावतो पूर्वोक्त त्रणकरणने करवे विशुद्धियें वर्द्धमान अनिवृत्तिकरणनी अद्धाने संख्यातभागे गयेछते अंतरकरण करे ते करतो सम्यकत्वनी पहेली स्थिति अंतरमुहूर्त्तमान स्थापे. मिथ्यात्व अने मिश्र ए बे हुना दलिक आवलिकामात्र उत्किरताथका सम्यकत्वनी पहेली स्थितिमां प्रक्षेपे ने मिथ्यात्व मिश्रनी पहेली स्थितिना दलिक सम्यकत्वनी पहेली स्थितिना दलिक मांहे स्तिबुकसंक्रमणे संक्रमावे अने सम्यकत्वनी जे पहेली स्थितिछे तेने विपा कानुभवहुंति क्रमेक्षयथईथकी उपशम सम्यकदृष्टी थाय अने मिथ्यात्वादि त्रिकनी उपरली स्थितिना दलिकछे तेनी उपशमना अनंतानुबंधीनी उपरली स्थिति ना दलिकनीपरे जाणवी.

एम उपशांत दर्शन त्रिक छतो प्रमत्त अने अप्रमत्तना जे परावर्त्तन ते शक्क मा ने गांनेकरी चारित्र मोहनीय उपशमावणहार थको वली यथा प्रवृत्यादिक त्र ण करण करे पण इहां यथाप्रवृत्तकरण अप्रमत्त गुणठाणे अने अपूर्व करण अपूर्वगुणठाणे करे अने अपूर्वकरणे रह्यो छतो स्थितिघातादिकेकरी निर्मल थइ पछी अनंतर समयें अनिवृत्तिकरणे प्रवेश करे अने अनिवृत्तिकरणाद्धाने संख्येयभागे गयेछते दर्शन सप्तके रहित शेष एकवीस मोहनीयनी प्रकृतिनो अंत रकरण करे अने तेणे प्रस्तावें जे वेदनोतथा जे संज्वलनकषायनो उदयछे ते बेहु नी पोताना उदय कालमान पहेली स्थितिकरे अने शेष इग्यार कषाय अने आठनो कषायनी अवलिकामात्र स्थितिकरे इहां त्रणवेद अने संज्वलन चारनो उदयकालमा न अंतरकरणगत दलिकना प्रक्षेपवानुं स्वरूप ग्रंथविस्तारना भयथी लख्युं नथी.

हवे अंतरकरण करीने नपुंसकवेद अंतरमुहुर्ते उपशमावे ते प्रथम समय स्तोक तेवारपछी द्वितीयादि समयें असंख्येयगुणवृद्धें त्यांलगें उपशमावे ज्यांलगें

चरमसमय आगली प्रकृतिनेविषे समय समयनेविषे उपशमाव्याछे जे दलि क तेनी अपेक्षायें त्यांलगें असंख्येयगुण प्रक्षेपे जांसीम द्विचरम समय अने चर म समयनेविषे उपशमावतो आगली प्रकृतिनेविषे संक्रमावियेछे जे दलिक तेनी अपेक्षायें असंख्येय गुण जाणवो.

एम नपुंसकवेदे उपशमावे छते पूर्वोक्तविधियें करीने अंतरमुहूर्त्ते स्त्रीवेद उपश मावे तेवार पछी अंतरमुहूर्त्ते हास्यादिक छ ते छ ए उपशमावे छते तेहिज सम यें पुरुषवेदना बंध उदय उदीरणानो व्यवछेद थाय तेवारपछी एकसमयऊणि बे आवलियें समस्त पुरुषवेद उपशमावतो समकालें अंतरमुहूर्त्तमात्रे प्रत्याख्यान अप्रत्याख्यानावरण क्रोध उपशम्या अने तेहिज समयें संज्वलनना क्रोधनो बंध उदय उदीरणानो विछेद थयो.

तेवारपछी समयऊण बे आवलियें संज्वलननो क्रोध उपशमावे ते उपशमाव्या पछी समकालें अंतरमुहूर्त्ते अप्रत्याख्यान ने प्रत्याख्यानावरण मान समकाले उप शमावी तेहिज समयें संज्वलनना माननां बंधादि त्रणनो विछेद थाय.

पछी समयोन बिहुं आवलियें संज्वलन मान उपशमावी पछी अंतरमुहूर्त्ते अ प्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण माया समकाले उपशमावे ते उपशमावीने तेहिज समये संज्वलननी मायानाबंधादिक त्रणनो विछेद थाय.

ए कस्या पछी केवल लोभनो वेदक थको लोभवेदनाद्धाना त्रण विभाग करे. एक अश्वकर्णकरणाद्धा बीजो किट्टिकरणाद्धा त्रीजो किट्टिवेदनाद्धा त्यां बेहुने आद्यना बिहुंभागे वर्त्तमान थको संज्वलनना लोभनी बीजीस्थिति थकी दलिक खेचीने पहेली स्थितियें करे अने वेदे पण.

अने अश्वकर्ण करणाद्धायें वर्त्तमान पहेले समयेज अप्रत्याख्यान प्रत्याख्या नावरण अने संज्वलनरूप ए त्रण लोभ समकालें उपशमाववालागो विशुद्धें वध तो अपूर्व स्पर्द्धक पूर्वोक्त शब्दार्थ करे संज्वलनमायानो बंधादिक विछेद गए छतें समयोन बिहुंआवलिकायें संज्वलनी माया उपशमावे.

एम अश्वकर्णकरणाद्धायें गयाछतां किट्टिकरणाद्धायें प्रवेश करे त्यां पूर्व स्पर्द्धक थकी बीजीस्थितिगत दलिक लेइने समय समय अनंतर किट्टिकरेकिट्टिकरणाद्धाने चर मसमये समकालें अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण लोभ उपशमावे तेहिज समये प छी संज्वलनना लोभना बंधनो विछेद बादर संज्वलनना लोभना उदय उदीरणा नोप

ण विछेद थयो. ए सूक्ष्मसंपराय थाय तेवारें उपरली स्थिति थकी केटलीएक किट्टी आकर्षि प्रथम स्थिति सूक्ष्मसंपरायनी अद्धा समानकरे वेदेपण

सूक्ष्मसंपरायनी अद्धा अंतरमुहूर्त्तमान शेषसूक्ष्म किट्टीपणे कीधेला दलिक स मयोन बिहुं आवलियें बद्ध ते उपशमावे सूक्ष्मसंपरायनी अद्धाना चरमसमयें संज्वलननो लोन उपशम्यो तेवार पछी अनंतर समयें उपशांतमोह थयो ते ज घन्ये एकसमय उत्कृष्टो अंतरमुहूर्त्तलगेलाजे पछी निश्चेसुं पडिवजे

अने प्रतिपात बिहुंप्रकारे एक नवक्षय एकअद्धाक्षये तेमांजे मरे तेने नवक्षयें अने उपशांताद्धा पूरणथई थकी अद्धाक्षय थाय परंतुअद्धाक्षयनो एविशेषछे. जे अद्धा क्षयें जेमपडिवजे तेम पडिवजे जेजे स्थानके पडिवजताने बंधादिकनो विछेदथयो वली त्यांत्यांज बंधादिकनो आरंनथाय पडिवजतो प्रमत्तसंयतगुणगणासीम कोइ एक नीचे आवतो सास्वादननाजावेपण आवे अने नवक्षयवालो तो अनुत्तरदेवमां हे उपजे त्यां उपने पहेले समयेज सघला बंधनादि करण प्रवर्त्ते ए विशेषछे

उत्कृष्टे एकनवनेविषे बे वखत उपशमश्रेणी पडिवजे पण बे वखतवालाने ते हिजनवें क्षपकश्रेणीनो अनावलाणवो अने एकवार उपशमश्रेणी पडिवजणहार ने क्षपकश्रेणीथाय पण अने नपणथाय ए कर्मग्रंथिकनो अनिप्राय छे अने सि द्धांतानिप्रायेंतो एकनवमां एक श्रेणीपडिवजे. ईहां चालना घणीछे ते विस्तारना नयथी लखीनथी.

हवे गाथानो अक्षरार्थलिखियेंछे. अणशब्दे अनंतानुबंधीचार कषाय उपशमावे पछी दसके० दर्शनना मिथ्यात्व मिश्रने सम्यकत्वरूप त्रण पुंज पछी नपुंस कवेद स्त्रीवेद पछी हास्यादिक छ पछी पुरुषवेद खपावी बेबे क्रोधादिक एकांतरि त संज्वलनक्रोधादिकें अंतरित सरिखा क्रोधादिकने तुल्य समकालपणे ए नाव अप्रत्याख्यान प्रत्याख्यानावरण ए बेहु क्रोधादिक समकालें उपशमावे पछी संज्व लनक्रोध एरीते उपशमावे. ॥ ७०७ ॥

अवतरणः— ए गाथा सूत्रकार वखाणेछे मूलः—कोहंमाणंमाया, लोहमणंता णुबंध सुवसमई ॥ मिछत्तमिस्ससमम्त्त रूवपुंज तयंतयणुं ॥ ७०८ ॥ इछिनपुंसग वेए, तत्तोहासाइछक्कमेयंतु ॥ हासोरईय अरईय, सोगोनयं डुगंछाय ॥७०९॥ अर्थः— सुगम नवरं दर्शन त्रिक उपशमाव्या पछी नपुंसकवेद स्त्रीवेद समकाले उपशमा वे ए नपुंसकवेदे श्रेणी पडिवज्यानुं अनुक्रम कह्योछे. इहां ए संप्रदाय छे जे स्त्रीवेदे अथवा पुरुषवेदे उपश्रमश्रेणी पडिवजे ते ज्यां नपुंसकवेद उपशमावे तेवारें सम

काल स्त्रीवेद उपशमाववालागो त्यांगयो ज्यांसीम नपुंसकवेदोदयनी अद्धानो द्वि चरम समय अने ते समयें स्त्रीवेद उपशम्यो अने नपुंसकवेदनी एक समयमात्र उदय स्थितिछे, शेष सघलो नपुंसकवेद उपशम्यो. हवे समयमात्रनी हुंतिजे उद यस्थिति नपुंसकवेदनी तेऐपण अतिक्रमिछतीयें अवेदकथाय तेवारपछी पुरुषवे दोदय सातप्रकृति उपशमाववा मांमे शेष पूर्वपरे जाणवुं.

हवे स्त्रीवेदे श्रेणीपमिवजे ते पहेला नपुंसकवेद उपशमावे पछी स्त्रीवेद उप शमावतो त्यांसीम ज्यांसीम आपणा उदयनो द्विचरम समय अने तेने समयें ए क चरममात्र उदयस्थितिमूकी शेष सघलो स्त्रीवेदसंबंधी दलिक उपशम्यो तेवा रपछी चरम समयें गयेथके अवेदकछती पुरुषवेद अने हास्यादिषट्क ए सातप्रकृ ति समकाले उपशमावे शेष तेमज जाणवो. ॥ ३०८ ॥ ३०९ ॥

हवेपुरुषवेदे श्रेणीपडिवजे तेहनो स्वरूप पहेली गाथाये कह्यो. मूलः— तो पुंवेयंतत्तो, अपच्चरकाणपच्चरवाणाण ॥ आवरण कोहजुअलं, पसमइ संजलणकोहंपि॥३१०॥ अर्थ सुगम छे. एयक्कमेण तिसुवि, माणेमाया उलोहतियगंपि ॥ नवरंसंजलणा निह, लोहतिभागे इय विसेसो ॥ ३११ ॥ अर्थः— ए क्रोधादिकने उपशमाववा ने क्रमे त्रणे अप्रत्याख्यानावरणादि मान माया अने लोभ उपशमावे नवरं संज्व लन लोभ किट्टि वेदना नाम त्रीजे भागें एवो वक्ष्माण विशेष तेदेखाडे छे॥३११॥

मूलः— संखेयाइंकिट्टी,कयाइ खंमाइं पसमसकमेण ॥ पुणरवि चरमं खंमे, असंख खंमाइकाऊणं ॥ ३१२ ॥ अर्थः— असंख्याता जे जे संज्वलन लोभनाखंम ते कि ट्टीके० सूक्ष्मपणे कीधा ते अनुक्रमे समय समयप्रते उपशमावतो चरमखंमना वली असंख्याता खंमकरीने समय समयप्रते एकेक उपशमावे. ॥ ३१२ ॥

अवतरणः— जे प्रकृति उपशमावतो जे गुणगणे वर्त्ते ते कहेछे. मूलः— अणु समयं एकेक्कं, उपसमइइहहि सत्तगोवसमो ॥ होइ अपुव्वो तत्तो, अनीअट्टिहोइ नपु माइ ॥ ३१३ ॥ पसमंतो जा संखेय लोहखंमाइ चरमखंमस्स ॥ संखाई ए खं मे, पसमंतो सुहम रागोसो ॥ ३१४ ॥ इय मोहोवसमम्मि, कयम्मि उवसंतमोह गुणगणं ॥ सवट्ठसिद्धिनामं,हेऊ संजाय वीयरायाणं ॥३१५॥ ए त्रण गाथानो अ र्थ कहेछे. इहां श्रेणीनो पडिवजणहार सप्तकनो उपशम करेथके अपूर्वकरण गु णगणे वर्त्ते तेवारपछी नपुंसकवेदादिक प्रकृति उपशमावतो जांसीम संख्याताबाद र लोभना खंम उपशमावे तांसीम अनिवृत्ति बादर थाय तेवारपछी सूक्ष्मकिट्टीप णे कर्या. चरमखंमना असंख्याता खंम उपशमावतो सूक्ष्मसंपराय गुणगणोथा

य एम मोहनीयने उपशमे उपशांतमोह गुणगणो होय ते सर्वार्थसिद्धिनो कार ण होय पण कोइ अप्रतिपतित परिणामि वीतरागछे तेहने एवो बाहरथकी लेवो. इतिश्रेणीद्वयस्वरूपं वाचंयमपद्ममंदिरेणेदं वृत्तरनुसारादिह लिलिखेश्रेणिद्वयापा क ॥ १ ॥ इतिगाथानवकार्थः॥७१५॥उपशमश्रेणीना स्वरूपनो नेवुमुं द्वार समाप्तथयुं.

अवतरणः– थंमिलाण चउवीस सहस्सोत्ति एटले एक सहस्रने चोवीस स्थं मिला संबंधी एकाणुमो द्वार कहेछे मूलः– अणावायमसंलोए, परस्सणुवघा यए ॥ समे अज्झु सिरेयावि, अचिरकाल कयंमिया ॥ ७१६ ॥ विछिन्ने दूरमोगाढे, नासन्ने बिलवज्जिए ॥ तसपाण बीयरहिए, उच्चाराईणवोसिरे ॥ ७१७ ॥ अर्थः– अनापात असंलोके परस्य १ अमोप घातिकं २ समं ३ अशुषिरं ४ अचिर का लकृतं ५ विस्तीर्णं ६ दुरमवगाढं ७ अनासन्नं ८ बिलवर्जितं ए अने त्रसप्राण बीजवर्जितं १० एवां जे दशप्रकारनां स्थंमिल्ल छे त्यां पुरीष प्रश्रवणादिक नाख वां. तेमां अनापात असंलोके परस्य आ पदनो बंनेपद साथे संबंध छे. आपात एटले अन्यागम जे स्थंमिलने विषे एक आपात एटले आववुं ते स्वपक्ष तथा परपक्ष संबंधि परनुं जिहां आववुं छे ते आपात जाणवो अने ते आपातवंत ए टले आववुं जिहां नथी ते अनापात. बीजो वृक्षादिकना अन्नावथकी संलोकके॰ देखवोछे जिहां ते संलोकवंत अने एथकी विपरीत तेअसंलोकवंत. इहां चतुर्भंगी थाय ते देखाडेछे. एक अनापात असंलोक बीजो अनापात संलोक, त्रीजो आ पातवंत असंलोक, चोथो आपातवंत संलोकवंत.

ए चतुर्भंगीमां पहेला भंगानी अनुज्ञाछे शेष भंगनो निषेधछे. इहां चोथा भं गाने वखाणवाथी बीजा बाकीना त्रण विधिनिषेधरूप सहेज जाणवामां आवशे माटे छेवटनी भंगीनुं स्वरूप निरुपण करेछे. तेथी आपातवंतने संलोकवंत ए चो थो भंगोछे त्यां आपात स्थंमिल ते बे प्रकारना एक स्वपक्षपातवत् बीजो परपक्ष पा तवत् तेमां स्वपक्षना बे भेद एक स्वपक्ष संयत आपातवंत, बीजो स्वपक्ष संय ति आपातवंत तेमां वली स्वपक्ष संयत बे प्रकारनोछे. एक संविज्ञजे उद्यत वि हारी तेनो आपात, बीजो असंविज्ञजे पासथादिक तेनो आपात तेमांवली संविज्ञ ना बे भेदछे एक सांभोगीक बीजो असांभोगिक, तेमांवली असंविज्ञपण बे प्रका रेछे एक संविज्ञपाक्षीक एटले पोताना अनुष्ठाननी निंदाकरनारा यथोक्त साधु स माचार प्ररुपक बीजो असंविज्ञ पाक्षीक ते पोते ग्रहण करेला मार्गनी स्थापन क रनारा अने सुसाधुनी निंदाकरनाराए अर्थनी गाथा कहेछे. तबावायं डुविहं, सपरक

परपक्खउंयनायव्वं ॥ डुविहं होइ सपक्खे, संजयतह संजईणंच ॥ १ ॥ संविग्ग मसं विग्गा, संविग्गमणुन्नएयराचेव ॥ असंविग्गाविडुविहा, तप्पक्खिय एयराचेव ॥ २ ॥

हवे परपक्ष आपातवंत स्थंमिल तेपण बेप्रकारनाछे. यडुक्तं परपक्खे वियडुविहं, माणुस तिरिञ्चगंचनायव्वं इति एटले एक मनुष्य अने बीजो तिर्यंचना नेदे करी बे प्रकारनो छे ते वली एकेको त्रण त्रण नेदेछे ते आवीरीते के पुरुष स्त्रीने नपुंसक ए त्रण नेद मनुष्यनाछे तेथीएक पुरुषापातवंत बीजो स्त्रीआपातवत ने त्रीजो नपुंसका पातवंत ए त्रण नेदछे. पुरिसिञ्चि नपुंसगाचेव इति तेमज तिर्यंचपण पुरुष स्त्रीने नपुं सक ए त्रण नेदेज जाणवा. हवे मनुष्य पुरुषापातवत पण त्रण नेदछे. एक दंमी क बीजा कौटुंबिक त्रीजा प्राकृत तेमां दंमिकते राजकुलागत जाणवो कौटुंबीकते शे ष महोटा ऋध्धिवंत जाणवा अने प्राकृत्य ते सामान्य लोक जाणवा.

ए त्रणमानां एकेकना वली बे बे नेदछे. एक शौचवादी ने बीजा अशौचवादी राजादिक जाणवा एम स्त्री नपुंसकना त्रण त्रण नेदकरी बे बेनेद करियें. यडुक्तं पुरिसावायं तिविहं दंमिअकोडुंबिएय पागइए ॥ ते सोयसोयवाई, एमेवनपुंसइञ्चीसु

हवे तिर्यंच आपातवंतना बे नेद एक तिर्यंच दर्पवंत बीजा तिर्यंच शांतवंत तेमां वली एकेकना जघन्य मध्यम ने उत्कृष्ट एवा त्रण त्रण नेद थायछे तेमां जघन्य गामरी प्रमुख उत्कृष्ट हाथी प्रमुख मध्यम नेंसप्रमुख एरीते पुरुष कह्या. तेप्रमाणे स्त्री अने नपुंसकपण जाणवा. पूर्वोक्त बे ने त्रणे गुणता छ नेद थया. तेवली मनुष्य स्त्री ने नपुंसके एकेको गणता अढार नेद थया तेवली गर्द न प्रमुख जुगुप्सित अने बीजा अजुगुप्सित ए रीते बे नेदे करता छत्रीस नेद था य. उक्तंच दित्तम दित्तातिरिया, जहन्न उक्कोस मज्झिमा तिविहा ॥ ए मेव ञ्चि नपुं सा, डुगुञ्छि अडुगुञ्छियानवरं ॥ १ ॥ ए आपातवंत स्थंडिल वखाण्यो.

हवे संलोकवंत ते मनुष्यने विषेजछे ते सुगम पणाथकी गाथायें देखाडेछे. उक्तं च. आलोगोमणुएसुं, पुरिसिञ्चिनपुंसगाए बोधव्वो ॥ पागय कुंडुंबिदंमिअ, असोअ तह सोयवाईणं ॥ १ ॥ ते मनुष्य पुरुष स्त्री तथा नपुंसक ए त्रण प्रकारे जाण वा. ते वली एकेक प्राकृत कौटुंबिक अने दंमिक एवा त्रण त्रण नेदेछे. तेवली एकेक शौचवादीने अशौचवादी एवा बे प्रकारे छेएम आपात अने संलोक ए बेहु चोथे नंगे बीजे नंगेछे. आपात त्रीजे नंगे संलोक एकहेला नेद प्रनेद युक्त देखाडी.

हवे एवे स्थंमिले गमननेविषे दूषण देखाडेछे. प्राप्त थयो छतां त्यां स्वपक्ष संयत, संविज्ञने अमनोज्ञने आपाते नजावुं त्यां जतां अधिकरण दोषथाय ते आवी

रीते आचार्योंनी माहोमांहे सामाचारी विभिन्नथाय छे तेथी अमनोज्ञने सामाचारी विपरीत आचरणने देखवे जे शिष्यछे तेने आपणी सामाचारीने पक्षेकरवे ए सामाचारी नथाय ईसेके० मांहोमांहे कलहहोय अने असंविज्ञ जे पासबादिक तेने आपाते पण न जावो केमके ते घणापाणीथी शौचकरे एवो तेनो प्रक्षालनादिक देखी शिष्य जे शौचवादी मध्यम होय ते एवोकहे के ए पण प्रवर्जित छे माटे ए नलोछे एवुं अनुकूलपणु मनमां आणीने समिपेपण जाय मनोज्ञने जे एक सामाचारी तेने आपाते न जवुं अने संयतिनो आपात ज्यांथाय ते समस्तप्रकारे वर्जवो एटले स्वपक्षापातना दोष कह्या.

हवे परपक्षापाते जे पुरुषापाते स्थंडिले जाय तो घणु निर्मल जल लेइजाय अने थोडके लुखपाणीयें अथवा पाणीने अजावे जे जाय तो ते आवनाराने देखीने कहे के ए अशुचीछे एवो अवर्णवादकरे. वली एने कोई अन्नपानादिक आपशो मां एवो भिक्षानो निषेध पण करे अथवा अभिनव श्रावक कोई थयोहोय तो तेने विपरिणाम थाय अने स्त्री नपुंसकापातवंते स्वपर तडुभयनेविषे हास्य आशंकादिक दोष उपजे त्यां आपनेविषे साधुनी उपर शंकारोप करे के ए आपणने फसाववा ढोंग करेछे के सुं परंतु स्त्रीने के नपुंसकनेदेखी कोईक शंकाकरे के ए पापकर्मि साधुप्रत्ये कामनो अभिलाष करेछे अने उनयनी शंका एटजे मांहोमाहे ए मैथुनने अर्थे आव्याछे. वली स्त्री अने नपुंसकापाते आत्म पर अने तडुभय घात थाय एनाथी उपने दूषणेकरी तेमनीज संघाते अनाचारसेवे अने तेवुं अकार्य देखी कोइ गृहस्थ राजकुलादिकने विषे लइजाय अने तेथी प्रवचननो उड्डाहथाय अने दर्पवंत तिर्यंचने आपाते पाडवुं थाय श्रृंगादिके ताडन थाय अने वली मारणादिक दोष संभवे गर्हित एटले निंदवा योग्य स्त्री नपुंसक तेने आपाते वली लोकोने मैथुन शंका थाय छे अने केवारेक प्रतिसेवापण करे एटले आपात दोष कह्या.

एम संलोकेपण तिर्यंच वर्जित मनुष्य विषयिक जाणवा केमके तिर्यंचनो संलोक न थाय अने मनुष्यने तथा स्त्री पुरुष नपुंसकने संलोके जे आपात विषयिक दोष कह्या छे तेज दोष प्राप्त थाय.

हवे जो कदाच आत्म, पर अने उभयथी उत्पन्नथयेलुं मैथुन दूषण न थाय तो पण एवी संभावना थाय एटले कोइ एवुं कहे के जे दिशाभणी अमारी भार्याप्रमुख उच्चारादिकने अर्थे जायछे तेज दिशाभणी ए साधु पण जायछे. ते माटे निश्चयथकी ए साधु कोइक स्त्रीनी वांछा करे छे, तथा एने संकेत दीधोछे ते दिवसे ए अहींयाज आवेछे.

तेम वली नपुंसक अथवा स्त्री, स्वनावे करीने किंवा वायुना दोषे विकारवंत पुरुषाकार देखी तेनेविषयानिलाप थाय तेणे करी मूर्छापामी तेउ साधुने उपसर्ग करे ते माटे ए त्रणे संलोक तजवा. तेथी चोथे नंगे आपात अने संलोक ए बने दोष छे, अने त्रीजे नंगे एक आपात दोष छे तथा बीजे नंगे एक संलोक दोष छे ए त्रणे नंगानो संलोक वर्जवो अने पहेले नंगे आपात तथा संलोक ए दूषण माहेलो कोइ दूषण न थाय. ते माटे त्यां जवुं. उक्तंच. आवास दोस तइए, बिइए संलोगउ नवे दोसा, ते दोवि नत्थि पढमे, तहिं गमणं नणिय विहिणाउ. ॥१॥

हवे परस्सणुवघाइनो अर्थ करेछे. उपघात उड्डाहादिप्रयोजन जेनाथी थाय तेऔपघातिक अने ते ज्यां नथी तेने अनौपघातिक कहिये. औपघातिकना त्रण प्रकार छे. एक आत्मोपघातिक. बीजो प्रवचनोपघातिक. अने त्रीजो संयमोपघातिक. तेमां प्रथम आरामादिक वाग प्रमुखनेविषे संज्ञा करतां ते आरामनो धणी मारे ते आत्मोपघातिक जाणवो. अने बीजो जे विष्टानुं स्थानक अशुचिपणाए करी जुगुप्सित होय अने ते स्थले उच्चारादिक करवा जाय त्यारे लोको कहे के ए तो एवोज छे, इत्यादिक प्रवचनोपघातिक जाणवो त्रीजो अंगारादिक पाडवाने ठेकाणे जेवां के नीनाडो नही प्रमुख करवाने स्थानके संज्ञा वोसिरावे अथवा बीजे ठेकाणे संज्ञा वोसिरावी जे ठेकाणे अग्नि आरंन थवानो होय ते ठेकाणे नाखे ते संयमोपघातिक थाय. ते माटे अनौपघात स्थंमिलनेविषे संज्ञावोसिराववी एप्रमाणे बीजे ठेकाणेपण जाणवुं.

हवे सम कहेछे. समशब्दे अविषम स्थंमिल जाणवुं अने तेथी विपरीतते विषम स्थंमिल ते विषमगामे संज्ञा कारणे बेसतां कदाचित् पोते पडिजाय ने तेथी ते विष्टानो पोताने शरीरे मर्दन थाय तेथी संयमने विराधना थाय.

अझुपिर एटले जे तृणादिकेकरी ढांक्युं न होय ते अने ढांक्युं होय ते सुपिर त्यां सुपिरे बेसवाथी सर्प वृश्चिकादिकना मंखवाथी आत्मोपघात थाय अने पुरिष प्रस्रवण त्यागे करी त्यां रहेनारा त्रस तथा स्थावरजीवोना घातेकरीने संयमने विराधना थाय माटे अझुपिरस्थले संज्ञानो त्याग करवो जोईये.

अचिरकालकृत एटले जे स्थंमिल जे कृतुनेविषे अग्नि प्रज्वालनादिक कारणे करीने तैयार कीधुं ते कृतुमां ते स्थंमिल अचिरकालकृत जाणवुं. जेम हेमंत कृतुमां करेलुं ते हेमंतकृतुमांज अचिरकालकृत. बीजी कृतुमां करेलुं ते चिरकाल कृत अने ते ते कृतुने आंतरे अथवा सचित्तमिश्रपणाने नंगे थाय ते अचिर

कालकृत जाणवो. ज्यां सबल वरसाद थयो होय अथवा सबल गाम वस्यो होय तो त्यां बारवर्ष स्थंमिल थाय. पछी अस्थंमिल जाणवो.

विस्तीर्ण एटले महोटो ते त्रण प्रकारनो छे. एक जघन्य, बीजो मध्यम अने त्रीजो उत्कृष्ट तेमां जघन्य एटले आयाम विष्कंने करीने हस्तप्रमाण अने उत्कृष्ट एटले बार योजन प्रमाण ते एमके चक्रवर्ति स्कंधाचारनिवेश कहेतां राजानी सेनाने रहेवानी जग्या अने शेष ते मध्यम जाणवो.

दूरमोगाढेनो अर्थ कहेछे अवगाढ एटले गंनीर: ते ज्यां चार आंगल मध्यम अग्नि तापादिके करी नीचे नूमिका अचेत थई छे ते पेहेलोजघन्य दूर अवगाढ अने ज्यां पांच आंगल प्रमुख थाय ते बीजो उत्कृष्ट दूर अवगाढ. अहींया वृद्ध संप्रदाए चार आंगल अवगाढे वडिनित वोसराविए कायिकी न वोसरीजे.

अन्नासन्न एटले जे आरामादिकनी पासे ढूंकडु नथी तेथी विपरत बे प्रकारे छे. एक द्रव्यासन्न अने बीजो नावासन्न तेमां द्रव्यासन्न एटले देव, कुल, घर, आराम, क्षेत्र अने मार्गादिकनी नजीक होय ते. त्यां बे दोष थायछे. एक संयमोपघात अने बीजो आत्मोपघात. तेमां संयमोपघात एटले ते सारी रीतिये त्याग करेलुं पुरिषादिक कोइएक कर्मकारे करीने अन्यत्र नखावे पछी त्यां प्रदेशनुं जे विलेपन अने सचेत पाणीए हाथ धोवे एरीते संयमोपघात थाय. अने आत्मोपघात एटले ते घरनो धणी त्यां आवीने रीसाईने कदाचित् ताडनादिक करावे अथवा पोते मारे त्यारे आत्मविराधना थाय तथा बीजो नावासन्नता रहे ज्यां सबलआबाधा होय त्यारें बीहीने त्वराथी आगल दोमता छतां कोईधूर्त्त जाणे के ए त्वराथी जायछे तेनी नावसन्नताने जोईने कपटे करी अर्धमार्गमां झाल्यो थको आवी धर्मप्रछनादि करे छतां एम पुरीष वेगने धारण करनारने आत्मविराधना एटले मरण किंवा ग्लानत्व अवश्य थाय. तेथी आत्मविराधना अने पुरीष वेगने सहन करी नशकेतो अथंमिले संज्ञा व्युत्सर्ग करे किंवा जंघादि लेपनथयुं होय तो तेथी प्रवचनविराधना अने संयमोपघात पण थाय. अने त्यांज अप्रत्युपेक्षित स्थंमिलने ठेकाणे व्युत्सर्ग थाय. तेथी संयमोपघात थाय माटे ए आसन्न द्रव्यथकी अने नावथकी ए बने प्रकारनो वर्जवो.

बिलवर्जित एटले बिलेकरी रहित जगा जोईये बिलवाला स्थंमिले संज्ञा त्याग करवा बेसतां थकां बिल (दरमां) वडीनिति तथा लघुनीति जाय तेणेकरी

कीडिप्रमुख जीवोनो नाश थाय तेथी संयमविराधना दोष थाय· वली बिल (दर) मांथी सर्पप्रमुख निकलीने डंख मारे तो आत्मविराधना दोष थाय.

त्रसप्राण बीजरहितं; एटले स्थावर जंगमजंतुना समुदाये करीने वर्जित जगा जोईये पण तेणे करी सहित स्थंडिले संज्ञाव्युत्सर्ग करनारा साधुने बे दोष प्राप्त थाय छे. एक संयमविराधना अने बीजी आत्मविराधना तेमां संयमविराधना एटले स्थावर जंगम प्राणीउ किंवा बीजनेविषे संज्ञाव्युत्सर्ग कर्यो होय तो प्राणी उनाघाते करी संयमविराधना दोष थायछे· अने स्थावर जंगम सर्पप्रमुख प्राणीउथी डंखविगेरे उपद्रव्य थाय तो आत्मविराधना थाय तथा तीक्ष्ण गोखरुं कांटादिक बीज पगमां घोचायाथी पग फाटीने पडी जायतो आत्मविराधना थाय. ए अनापातादिक दश प्रकारना स्थंडिले उच्चारादि वोसिरावे ७१७ ॥

अवतरणः– ए क्रमे करी कहेला दशपदनो एक बे, आदेदेई दश संघाते संयोग करतां एक हजार चोवीस भंग थाय. भंगना आणवा सारुं आ करण गाथा कहे छे· क्या क्या संयोगमां केटला केटला भंग थाय? तेनी करण गाथा कहेछे. उभय मुहं रासिडुगं, हेठिल्लाणंतरे भयं पढमं ॥ लद्धं रासि विभत्ते, तस्सुवरि गुणित्तु संजोगा ॥ १ ॥ अर्थः– अहीयां दशपदोना बे इत्यादि संयोगभंग आणवाना छे. ते माटे तेटला प्रमाणनी बे राशी उभयमुख (बंने भणी जेनां मुख) ते स्थापन करेछे एमां तात्पर्य एवोके एकथी दशसुधी अंक एक बे एम पूर्वानुक्रमे करीने स्थापन करी तेनी नीचे उलटानुक्रमे करीने एकादिथी दशसुधी अंक मांडवा स्थापना

१	१०	४५	१२०	२१०	२५२	२१०	१२०	४५	१०
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१

अहीयां नीचेनी राशीमां मांडेला एक अंकना उपर मांडेला दशछे ते एक एक संयोगे दश भंग थाय छे. (अर्थात् एकने दशे गुणीएतो दश थायछे) तेमां कांई गाथानो कर्ण नथी अने बे इत्यादिक संयोगे भंग आणवा सारु गाथा नी प्रवृत्ति छे. पछी नीचेना कोठानी छेवट एकना आंकडानी पाछल लखेलो जे बेनो आंकडो तेणे उपरना कोठामां मांडेलो छेवटनो दशनो आंकडो तेने बेहुए भाग देतां थकां पांच आवे छे ते पांचने पेहेला कोठाना बेनो उपरना नवे गुणी

ए तो पिसतालीश थाय छे. ते संयोग भंग जाणवा. सारांश द्विक संयोगमां भंग पीसतालीसछे पछी वली नीचेना कोठाना त्रीजा संयोग भंग आणवा सारुं आ प्रमाणे करवुं. जेम नीचेना कोठामांना त्रणने आंकडे उपरना आठना आंक डानी अपेक्षाए पूर्वे सिद्ध थयेला पीसतालीशना आंकडाने त्रणे भागतां पंदर आवे ते पंदरने आठे गुणतां एकसो वीस आवेछे. ए त्रिक संयोगमां भंग जाणवा. वली नीचेना कोठमां मांहेली त्रणनी पाछलनो चोथो आंक तेना उपरना सात अंकना संयोग भंग संख्यानी अपेक्षाए पूर्वे सिद्ध थएला एकसो वीसने चारे भागतां त्रीस आवे. तेने सातना आंकडाथी गुणतां संयोग भंग अंक बशे ने दशनो जाणवो. ए प्रमाणे वली नीचेना कोठाना चारनी पाछलना पांच वि गेरेना अंकना उपरना कोठाना छ छे ते बशे दशने पांचे भागदेतां बेतालीस आवे तेने छ ना आंकथी गुणतां बशेने बावन थाय ए अंकनो संयोग भंग जाणवो. अनु क्रमे प्रकार एक संयोगमां दश भंग, द्विसंयोगमां पीसतालीश, त्रिसंयोगमां एक सोने वीस, चतुष्कसंयोगमां बसें दश, पंचकसंयोगमां बसे बावन. छठा संयोग मां बसे दश, सातमा संयोगमां एकसोवीस, आठमा संयोगमां पीसतालीस,नवमा संयोगमां दश ने दशमा संयोगमां एक. आ सर्व भंगनी एकंदर संख्या एक हजार ने त्रेवीश ए सौ अशुद्ध भंग अने एक हजार चोवीसमो शुद्ध भंग छे. ते कर्णमां प्राप्त थतो नथी तथापि ते भंगसंख्यामां तेनो प्रक्षेपकरी संख्या पूर्ण करवी. कार ण सर्व भंगोनो प्रसार कर्यो छतां शुद्धभंगनी प्राप्ति थायछे. उक्तंच. दस पणयाल विसुत्तर, सयचं दोसयदसुत्तरादाय, बावन्ना दोदसुत्तर. दसुत्तरं पंचवन्नाय ॥ १ ॥ दसएक्को यकमेणं भंगा एगा दिवारण एसुं, सुद्धेण सममिलिया भंगसहस्सं चउ व्वीसं. ॥ ७१७ ॥ ए प्रमाणे स्थंमिलोनो एकाणुमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः— पुव्वाणंनामाइं पयसंखासंजुआइंति एटले चउद पूर्वनानाम पद नी संख्याये संयुक्त एनो बाणुमो द्वार कहेछे. मूलः— उप्पायं पढमंपुण, एकारस कोडि पयपमाणेणं ॥ बीयं अग्गाणीयं, छन्नउई लरकपयसंखं ॥ ७१८ ॥ अर्थः—ज्यां समस्त द्रव्य पर्यायना उत्पाद आश्री परूपणा कीधीछे ते पहेलो उत्पादनामा पूर्व जाणवो. ते इग्यार कोडी पद जे अर्थनी समाप्ति तेना प्रमाणे जाणवो. इमज बीजो समस्त द्रव्यपर्याय जीवविशेषना अग्रके० परिमाण ते ज्यां प्ररुपिये ते बीजो अग्राणीय नामापूर्व जेनेविषे छन्नु लाख पदनी संख्याछे. ॥ ७१८ ॥

मूलः— विरियप्पवायपुव्वं, सत्तरिपयलरक लरिकयं तइयं ॥ अत्थियनत्थिपवायं, स

डीलरकाय चउक्कंतु ॥ ३१ए ॥ अर्थः—ज्यां सकर्म अकर्मक जीव अने अजीवना वी र्यना प्रवादनी प्ररूपणा करवी ते तइयंके० त्रीजो वीर्यप्रवादनामा पूर्व जाणवो. अने सत्तरिपयलरक लक्खियंके० सीतेरलाखपदे करी जे लक्षित एटले सहितछे. तथा वली अस्ति एटले छतीवस्तु धर्मास्तिकायादिक छ द्रव्य. अने नास्ति एटले अछति वस्तु जे गर्दनना सींगडा प्रमुख. अथवा स्याद्वादने अभिप्रायें आपणेरूपे समस्त वस्तु अस्ति पणेछे. अने पररूपे समस्त वस्तु नास्तिपणेले. ए आस्तिनास्ति ज्यांकह्यिें ते अस्ति नास्ति प्रवाद नामा चोथोपूर्व साठ लाख पदनो जाणवो. ॥ ३१ए ॥

मूलः— नाणप्पवायपुव्वं, एयं एगूण कोडिपयसंखं ॥ सच्चप्पवायपुव्वं, छप्पय अ हियएगकोडीए ॥३२०॥ अर्थः—ज्यां मत्यादिक पांचज्ञानना स्वरूपनो कथन करी तेना भेद प्रभेद कह्यिये ते ज्ञानप्रवादनामे पूर्व एकेउणी पदनीकोडीप्रमाण पांचमोजा णवो. अने छठो सच्च एटले सत्यशब्दे संयम अथवा सत्यवचन ते जेमां समस्त भेद सहित अने प्रतिपक्ष संघाते प्ररूपियें ते सत्यप्रवादनामा पूर्व छठोजाणवो. एमां छ पदे अधिक एककोडी पदनी संख्या जाणवी. ॥ ३२० ॥

मूलः— आयपवायपुव्वं, पयाण कोमीउहुंतिछत्तीसं ॥ समयप्पवायमवरं, असीइ लरकाइ पय कोमी ॥ ३२१ ॥ अर्थः— आत्म शब्दे जीव ते अनेक नयेकरी जिहां परूपियें ते आत्मप्रवाद नामा सातमो पूर्व जाणवो. एमां पदनी कोडी छत्रीस थाय. तथा आठमो समयशब्दे सिद्धांत तेनो जे अर्थ ते इहां कर्मरूप लह्यिें छइयें तेमाटे एनुं नाम समयप्रवाद अने अपर एटले बीजुं नाम कर्मप्रवाद पण कह्यिें. एनो अर्थ एम छे के ज्ञानावरणीयादिक आठकर्म तेने स्थिति अनुभागादिक उत्तर भे देकरी सहित जिहां कह्यिें ते कर्मप्रवाद एने विषे एसीलाख अधिक एक कोमी पदनी संख्या जाणवी ए आठमो पूर्व कह्यो ॥ ३२१ ॥

मूलः— नवमंपच्चरकाणं, लरकाचुलसी पयाण परिमाणं ॥ विज्जणुपवाय पन्नर स, सहस्स एक्कारसउकोमी ॥३२२॥ अर्थः— नवमो प्रत्याख्याननो स्वरूप समस्त प्रभेदेकरी वखाणियें ते प्रत्याख्यान प्रवादनामा पूर्व कह्यिें. एनेविषे चौरासी लाख पदनो प्रमाण छे. तथा जेनेविषे विद्यानो अतिशय साधुना अनुकूलपणे सिद्धिने प्र कर्षे वर्णवियें प्ररूपणा करियें ते दशमो विद्यानुप्रवाद नामापूर्व, एनेविषे पन्नर ह जार अधिक इग्यारकोमी पदनी संख्या जाणवी. ॥ ३२२ ॥

मूलः— छवीसं कोमीउ, पयाण पुव्वे यवञ्झणामंमि ॥ छप्पस लरक अहिया, पयाण कोमीउ पाणेउ ॥ ३२३ ॥ अर्थः— जेमां छवीस कोमीपदनी अवंध्य सफले

ज ज्ञानक्रिया तप प्रमुख सफलपणे वर्णविये अने वली जेमां अप्रशस्त प्रमादादिक एटले अशुनफल पण वर्णविये ते अवंध्यनाम पूर्वनेविषे अथवा एनो बीजो कल्याण एवो नाम पण कहे छे. ए बेहुनो अर्थ एकज छे ए इग्यारमो पूर्व जाणवो. तथा छप्पन्न लाखें अधिक एक कोमी पदनी संख्यावालो जेमां जीवना इंद्रियादिक दश प्रकारना प्राण अनेक प्रकारें वर्णव्या छे ते प्राण विशेष नामा बारमो पूर्व जाणवो.

मूलः— किरियाविसालपुव्वं, णव कोडीउपयाण तेरसमं ॥ अद्धतेरसकोडी, चउदसमेबिंदुसारम्मि ॥ ७२४ ॥ अर्थः— क्रिया जे कायिकीप्रमुख तेने नेदेकरीने विसालके० विस्तीर्णपणे जिहां कहियें ते तेरमो क्रियाविशाल नामा पूर्व नवकोडीपदनी संख्यावालो जाणवो. तथा जेनेविषे अद्धतेरसकोडीके० साडातेर कोडी पदनी संख्याछे ते चउदमो लोकबिंदुसार नामापूर्व जाणवो. यद्यपि गाथामां बिंदुसार एवुंनाम छे तथापि लोक बिंदुसार एवो शब्दछे तेमांथी गाथामां लोक शब्दनो लोप थयो छे पण बिंदुसार शब्देकरी लोकबिंदुसार अर्थमां लेवो. अक्षर उपरें बिंदुनीपरे सार प्रधान सर्वोत्तम सर्व अक्षरना सन्निपातनी लब्धिनो करनार ते लोक बिंदुसार कहिये ते तेहनेविषेछे. ईहां समवायांगनी टीकामांहे पदपरमाणनो एनीसाथे नेदछे तेनो तत्व केवलीजाणे. ॥ ७२४ ॥

पूर्व तेने कहिये के जे तीर्थंकर तीर्थ प्रवर्त्तावे तेवारे गणधरने सर्व सूत्रने साधारण पणाथकी पहेला पूर्वगत सूत्रार्थकहे एवी कोई वातनथी के जे पूर्वमां नहोय तोपण जगतमां विचित्र प्रकारना प्राणीछे तेमां जे मंदबुद्धिनाधणी पूर्वना अतिगंनीरार्थ जाणी न शके तो तेना अनुग्रहने अर्थे गणधर रचना करतां थकां प्रथम आचारांगनी रचनाकरेछे तेथी सूत्रकार आचारांगनी निर्युक्तिना वचनथकी कहेछे.

मूलः— पढमं आयारंगं अघारसपय सहस्स परिमाणं ॥ एवं सेसंगाणवि, डुगुणा डुगुणप्पमाणाई ॥ ७२५ ॥ व्याख्याः— प्रथम आचारांग अढार हजार पद प्रमाण एम शेष सुयगडांगादिक अंग तेनो पण डुगुणो डुगुणो पदनो परिमाण करतां जवुं एटले बीजो सुयगडांग छत्रीस हजार पदनोछे एवी नावना सर्वत्र इग्यारे अंगमां करवी. पूर्वशब्देकरी पूर्वना सूरिउए बतावलो एने पूर्व कहिये. एक आचार्य कहेछे के जेम तीर्थंकर प्रथम ए पूर्व कहेछे तेम गणधरपण रचना एनी करे.

अवतरणः— निगंथत्ति एटले पांच निर्ग्रंथनो त्र्याणुमो द्वार कहेछे. मूलः— पंच नियंठा नणिया, पुलाय बकुसा कुसील निग्गंथा ॥ होइ सिणाउयतहा, एकेको सो नवेडविहो ॥ ७२६ ॥ अर्थः— एक धर्मोपकरण टालीने शेष जे धनादिक ग्रं

थडे तेथकी निर्गत एटले जे रहितछे ते निर्ग्रंथ पांच प्रकारना श्री तीर्थंकरदेवे क ह्याछे. एक पुलाक बीजो बकुश त्रीजो कुशील चोथो निर्ग्रंथ पांचमो स्नातक ते एकेक बे बे प्रकारे छे. ॥ ७२६ ॥

हवे निर्ग्रंथ शब्दनो अर्थ सूत्रकार कहेछे मूलः—गंथो मिछत्त धणाइउ मउ जे य निग्गयातत्तो ॥ ते निग्गंथावुत्ता, तेसिं पुलाउ नवे पढमो ॥७२७॥ अर्थः— ग्रंथ शब्दे मिथ्यात्वादिक अभ्यंतर अथवा धनादिक बाह्य कह्योछे तेथकी जे मुक्त थया ते निर्ग्रंथ जाणवा. तेमां पढमोके० प्रथम पुलाकनिर्ग्रंथ थाय. ॥ ७२७ ॥

हवे अभ्यंतर परिग्रह देखाडेछे. मूलः—मिछत्तं वेयतियं, हासाईछक्कगं च नायव्वं॥ कोहाईण चउक्कं, चउदस्स अभिंतरा गंथा ॥७२८॥ अर्थः— विपरीत बोध मिथ्या त्व पुरुषवेदादिक वेदत्रण हास्यादिषट्क ते आवी रीतेछे. जे विस्मय उपने नेत्र प्रमुखनो विकश्वर करवो ते हास्य, बीजो रतिजे असंयमनेविषे प्रीति, त्रीजी अर ति जे संयमनेविषे अप्रीति, चोथो भय ते इहलोकादिकसातप्रकारनो जाणवो. पांचमो शोक ते इष्टवियोगादिकथकी मननुं दुःख, छठो जुगुप्सा ते मल मलीन मनुष्यादिक दे खी तेनीहीलनानो करवो. ए छ प्रकार कह्या. तथा क्रोधादिक चार ते प्रसिद्धछे. एरीते ए क मिथ्यात्व त्रणवेद हास्यादिक छ ने क्रोधादिक चार ए चउद अभ्यंतर ग्रंथीछे.

हवे बाह्य ग्रंथी कहेछे. मूलः—खेत्तंवत्थुधणधस्स संचउ मित्तनाइसंजोगो ॥ जाण सयणासणाणिय, दासादासीउ कुवियंच॥७२९॥अर्थः—खेत्र ते सेतुकेतुप्रमुख, वास्तु खातादिक त्रणप्रकारे जाणवो, धनते हिरण्यादिक जाणवुं, धान्य ते चोवीस प्रकारनुं जाणवुं, तेनो संचय, संघाते वध्यासमान वयते मित्र, न्यातिते स्वजनादिक तेनी सा थे संयोग संबंध, यान ते घोडा हाथी पालखी इत्यादिक जाणवा, शयनते पल्यं कादिक आसन सिंहासन बाजोटादिक, अने दासदासी प्रसिद्ध छे. कुप्यते थाली वाटका प्रमुख घरवखरी जाणवी. ए सर्व बाह्य परिग्रह जाणवो. ॥ ७२९ ॥

हवे पुलाकनुं स्वरूप प्रथम देखाडेछे. मूलः—धन्नमसारं भन्नइ,पुलायसद्देण तेण ज स्स समं, चरणं सोहु पुलाउ,लद्धीसेवाहिसोय दुहा ॥७३०॥ धान्यजे चोखा प्रमुख क णेरहित एवा असार केवल पलंजिकारूप जे धान्य ते समान भन्नइके० कहियें. पुलाक शब्देकरीने तेना सरखो जेहनो असार. चरणंके० चारित्र होय तेने पुला क कहियें. ते एक लब्धी अने बीजो आसेवनाना भेदेकरी बे प्रकारे जाणवो. तेमां जे इंद्रसमान ऋद्धिनोधणी तेने लब्धिपुलाक कहियें. अने ज्ञानादिक अति चारना आसेववाथकी आसेवना पुलाककहियें. ते ज्ञानादिकना विराधवाथकी पांच

प्रकारेछे ज्ञानपुलाक दर्शनपुलाक चारित्रपुलाक लिंगपुलाक तथा यथासूक्ष्मपुलाक.

हवे बकुशनुं लक्षण कहेछे. मूलः- उवगरणं सरीरेसु, बउसो डुविहो डुहावि पंचविहो ॥ आजोग अणाजोगे, संवुम्ह अस्संवुम्हे सुहुमे ॥७२१॥ अर्थः- एक उपकरण ने बीजो शरीरना जेदथकी बकुश बे प्रकारनोछे एटले एक उपकरण बकुश बीजो शरीरबकुश तेमां उपकरण बकुश जे होय ते अकाले वस्त्र धोइ पात्र दांमा घृष्ट मृष्टकरे घणा उपकरणनी वांछा करे. अने शरीरबकुश ते कर चरण तथा वदनादिकनी विजूषा कारणविना करे पगने घणो फांमडा सं घाते घसे, नीमाला कतरावे चोपडे घणा शिष्य तथा घणा श्राविकादिक ए बेहु पामवानी ऋद्धिवांछे ए देश. सर्वछेद चारित्रयुक्त छता पण मोहनीयना क्षयने अर्थें सदा सावधान रहेछे. एरीते डुहाके० बेहुप्रकारनो बकुश कावरा चारित्रनोधणी पांच प्रकारें थाय ते कहेछेः- जे जाणीने दूषण करे ते आजोगबकुश, जे अणजाण्यो दूषण करे ते अनाजोग बकुश, मूलगुण तथा उत्तरगुणना दूषण बीजा लोकना समक्ष न लगाडे ते संवृतबकुश, एथकी विपरीत ते असंवृतबकुश, अने लिगारेक आंख तथा मुखघोयताने यथा सूक्ष्मबकुश कहियें. एपांच प्रकारे होय.

हवे कुशीलना लक्षण कहे छे. मूलः- आसेवणा कसाए, डुहा कुसीलो डुहा वि पंचविहो ॥ नाणे दंसण चरणे, तवेय अह सुहमए चेव ॥ ॥७२२॥ अर्थः- कुत्सितछे शील के० चारित्र जेने ते कुशील कहियें. ते एक आसेवणाकुशील ने बीजो कषायकुशील एरीतें बे प्रकारेछे. वली ए बेहुना पांच जेद थाय. तेमां जेज्ञानदर्शन चारित्र अने तपेकरी उपजीवना क्रोधादिक सहित थको करे ते ज्ञानकुशील जाणवो एम दर्शनादिकेपण कहेवो. अने चोथो तपने ठामे अनेरा लिंग कुशील कहेछे अने पांचमो यथा सूक्ष्मते मने करी क्रोधादिकनो सेवनार थाय.॥७२२॥

हवे निर्ग्रंथ कहेछेः- मूलः-उवसामगोय खवगो, डुहा नियंठो डुहावि पंचविहो ॥ पढम समउ अपढमो, चरमा चरमो अहा सुहुमो ॥ ७२३ ॥ अर्थः-मोह रूप ग्रंथ थकी जे निर्गत एटले निकल्यो ते निर्ग्रंथ बेप्रकारे छे. एक उपशामिकने बीजो क्षपक ते वली बन्ने मली पांच प्रकारेंछे. अंतरमुहूर्त्तप्रमाण निर्ग्रंथनी अद्धा तेना पेहेला समयें जे थयो ते प्रथम समय निर्ग्रंथ जाणवो अने एमज पूर्वानुपूर्वी द्वितीयादि समयें जे थयो ते अपढम समय निर्ग्रंथ जाणवो. तेमज निर्ग्रंथनी अद्धाने चरम समय जे थयो ते चरम समय निर्ग्रंथ जाणवो. वली अनेरा शेष समयनेविषे पश्चानुपूर्वीयें जे थयो ते चोथो अचरम समय निर्ग्रंथ जाणवो. अने सा

मान्यपणे प्रथमादि समय विवक्षायें सर्व समयमां वर्त्तमान थयो ते पांचमो यथासूक्ष्म समय निर्ग्रंथ जाणवो. ए पांच प्रकार निर्ग्रंथना जाणवा. ॥ ७३३ ॥

हवे निर्ग्रंथ उत्कृष्ट जघन्ये. जेटला पामियें ते कहे छे. मूलः—पाविज्जंअ छसयं, खवगाणुव सामगाण चउपन्ना॥ उक्कोसउ जहन्ने, एक्को व दुगंव तिग महवा ॥७३४॥ अर्थः—क्षपकश्रेणीना पडिवजणहार एकसमयने विषे एकसोने आठ पामियें अने उपशम श्रेणीना पडिवजणहार एक समयनेविषे चोपन्न पामिये. ए उत्कृष्टनी वात कही अने सामान्य थकी नाना समयें तो शत पृथक्त्व लाभे तथा जघन्यथी एक बे अथवा त्रण एक समयें लाभे. वली क्षपकश्रेणीनो विरह उत्कृष्टो छ मास पर्यंत पडे एटला कालमां कोइ न लाभे अने उपशम श्रेणीनो विरह उत्कृष्टे वर्ष पृथक्त्वछे तेना सद्भाव थकी केवारे एकपण न थाय. ॥ ७३४ ॥

हवे स्नातक कहेछे. मूलः— सुहझाण जल विसुद्धो, कम्ममलावेक्खया सिणा उत्ति ॥ दुविहोयसो सजोगी, तहा अजोगी विणिद्दिट्ठो ॥ ७३५ ॥ अर्थः— शुक्लध्यानरूप पाणिये करी विशुद्ध एटले निर्मल थयलो एटले जे घातिकर्मरूप मल तेना विनाशथी निर्मल तेनी अपेक्षायें स्नातक कहियें. ते बे प्रकारेछे. एक सयोगी अने तेमज बीजो अयोगी एरीते विनिर्दिष्टो एटले तीर्थंकरे कह्योछे. ॥ ७३५ ॥

हवे ए पांच निर्ग्रंथोमां कोन. विराधनानो करनार अने कोन विराधनानो करनार नथी एवो देखाडे छे.— मूलः— मूलुत्तरगुणविसया, पडिसेवा सेवए पुलाए य ॥ उत्तरगुणेसु बकुसो, सेसा पडिसेवणा रहिया ॥ ७३६ ॥ अर्थः— मूलगुण ते प्राणातिपात विरमणादिक अने उत्तरगुण ते पिंडविशुध्यादिक एवा मूलगुण ने उत्तरगुणविषयिकनी जेनाथी प्रतिसेवा एटले विराधना थाय ए सेवएके० प्रतिसेवना ते कुशीलने विषे थाय अने पुलाएके० पुलाकनेविषे थाय पण एतावता ए बेहुविराधक होय इहां तत्वार्थना भाष्यमां पांच महाव्रत ने छहो रात्रिभोजन ते पराभियोगें बलात्कार थकी ए माहेलो कोइपण व्रत विराधेतो पुलाक थाय एक. वली एम कहे छे के मैथुननेज सेववाथी पुलाक थाय अने प्रतिसेवा कुशील तो मूलगुण अविराधतो उत्तरगुणनी कांइक विराधना करे ए तत्वार्थना भाष्यकारनो भाव जणाव्यो अने बकुश उत्तरगुणनोज विराधक थाय छे परंतु मूलगुणनो विराधक न थाय. सेसाके० शेष कषायकुशील निर्ग्रंथ स्नातक ए प्रतिसेवानी विराधना रहित होय केमके ए मूलगुण अने उत्तरगुणनी विराधना नकरे. ॥ ७३६ ॥

हवे कयाकयानिर्ग्रंथनो विछेदथयो ने कयाकया छे तेकहेछे. मूलः— निग्गंथ

सिणायाणं, पुलायसहियाण तिण्हि वोछेउ ॥ समणा बउसकुसीला, तातिछं ताव होहोति ॥३३७॥ अर्थः–निर्ग्रंथ स्नातक पुलाके सहित ए त्रणेनो विछेद थयोछे. अने बकुश ने कुशील ए बे जातना श्रमण ते ज्यांलगें तीर्थप्रवर्त्तसे त्यांलगे रहसे ॥ ३३७ ॥ इतिगाथा दशकार्थ. ए त्र्याणुमो पांच निर्ग्रंथनो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः– समणत्ति एटले श्रमणनो चोराणूमो द्वार कहे छे. मूलः– निग्गंथ सक्क तावस,गेरुअआजीव पंचहा समणा॥ तम्मियनिग्गंथाते,जे जिणसासणन वा मुणिणो ॥ ३३८॥ अर्थः–एकनिर्ग्रंथ, बीजा शक्य, त्रीजा तापस, चोथा गेरूक, पांचमां आजीव ए पांचे प्रकारे श्रमण कहियें. हवे ए पांचमां,निर्ग्रंथते तेने कहियें के जे श्रीजिनशासनने विषे नवके०थया एवाजे मुणिणोके०साधुतेजाणवा.

हवे शाक्यप्रमुख वखाणेछे. मूलः– सक्काय सुगय सिसा, जे जमिला ते उ तावसागीया ॥ जोधाउरत्तपडा, तिदंमिणो गेरुआ तेउ ॥३३९॥ जे गोसालगमयमणु, सरंति नन्नंति तेउ आजीवा ॥ समणत्तेणं नुवणे, पंचविपत्ता पसिद्धिमिमे ॥३४०॥ अर्थः– शाक्यते सौगतना शिष्य बौद्ध एवे नामे प्रसिद्ध छे अने जे जटिल एटले जटा मस्तकनेविषे धरे वनमां वास करे पाखंमी होय तेने तापस गीतके० कह्याछे अने जे धाउके० धातुशब्दे धावणी (धाही) गेरु प्रमुख तेणेकरी रक्त छे वस्त्र जेना ते धातुरक्त वस्त्र वली त्रिदंमिक परिव्राजक नां जे उपकरण तेना धरनार छे तेनेगेरुआ कहियें. परिव्राजक तेने कहियें के जे गोसालग के० गोसालानामत ने अनुसरे अने सरंतिके० तेना आश्रितपणे थाय तेने नन्नंतिके० कहिये आजीविका श्रमण एरीते नुवण के० लोकमांहे पंचवि पत्ता के० पांचे प्रसिद्धपणे छे. ॥ ३३९ ॥ ३४० ॥

अवतरणः– गासेसणाण पणगंति एटले ग्रासजे जमवो तेनी एषणानो पंचक तेसंबंधी पंचाणूमो द्वार कहेछे. मूलः– संजोयणा पमाणे, इंगाले धूम कारणे चेव ॥ उवगरण नत्तपाणे, सबाहिरप्भंतरा पढमा ॥ ३४१ ॥ अर्थः– संके० सम्यकप्रकारे रसगृधिने अर्थे जोडिये ते संयोजना जाणवी जेम घृतनी प्राप्ति थवा थी खांमनी वांछानो करवो ते साथें मेलववुं ते संयोजना कहियें. ते एक उपकरण विषया अने बीजी नक्त पानविषया अने ते एकेकना वली बाह्य अभ्यंतर एवा बेबे नेदछे तेमां प्रथम नोजनविषया ते पात्र, मुख, अने केवलना नेद थकी त्रण प्रकारे छे. बीजो पमाणेके० प्रमाण त्रीजो इंगालनाम दोष चोथो धूम्रदोष पांचमो कारणदोष ए पांच प्रकारनी एषणा शुद्धा शुद्धनो विचारवो. तेमां पहेली संयोजना ते उपकरणसंबंधीनी जेम कोइक साधु पोतानी वस्तिबाहेर कोइ गृहस्थपासेथी

चोलपटो प्रमुख पामीने फरी अन्यस्थानके विभूषाने अर्थे पछेडी प्रमुख लेइने वापरे ते बाह्य, अने पोताना उपाश्रयमां निर्मल चोलपटादिक वस्त्र पहेरी वली विभूषाने निमित्त निर्मल मृडु प्रमुख वस्त्र पेहेरे ते अंभ्यंतर जाणवी तेमज भक्त पान संबंधी नी आवीरीते के एक उपाश्रय ने बाहेरे वोहोरवा गयेथके त्यांजे क्षीरादिक द्रव्य अने घृतशर्करादिकनो जोडवो ते बाह्य, अने अभ्यंतर ते उपाश्रयमां आवी जम ए वेलायें करे ते जाणवी. ए पढमके० पहेली एषणा कही.

हवे उत्सर्गेयतिये संयोजना करवी अने अपवादे साधुने संघाडे घणा घृतादिकनी प्राप्तियें कांइक वधे तो ते वधेलो घृत उपाडवाने अर्थे खांम प्रमुखनो जोडवो तेमज घृतने मांमासाथे एकलो पण तृप्ति थया पछी खवायनही अने परठवंतापण पछी कीमी प्रमुखना आववा थकी असंयमनी वृध्धि थाय तेमाटे संयोजना करे.

तेम ग्लानने सारो करवाने अर्थे वली राज पुत्र प्रमुखें चारित्र लीधे थके प्रधान रस लालित्य सुखोचित्त ते साधुने योग्य अने अरस विरसादिक अहारना अणभा ववाथकी रसगृध्धें संयोजना करवी ते दोष भणी थाय नही. ॥ ७४१ ॥

हवे प्रमाण प्रमुख दोष वखाणेछे. मूलः—कुक्कुडिअंमयमेत्ता, कवला बत्तीस भोयण पमाणे ॥ राएणा सायंतो, संगारं करइ सचरित्तं ॥ ७४२ ॥ अर्थः— कुकुमी पक्षी विशेष तेनो अंमके० इंमो ते मात्रा प्रमाणे जे कवल तेवा बत्रीस कवल अथवा जे कवलेकरी जेनो मुख भराय तेने कवल कहेछे अथवा जेनो जेटलो आहार ते नो बत्रीसमो भाग ते कवल जाणवो तेवा बत्रीस कवल भोजननो प्रमाण जा णवो पण तेथकी अधिक लेतां थका दूषण प्राप्त थाय अने उंछोलेता गुणथाय ए बीजो प्रमाण दोष कह्यो.

वली राएणके० रागेकरी तिहां राग ते अन्न एटले भोजननी उपर अथवा देनाराना उपर सुकमत्ति सुपकत्ति सुछिने सुहडेमडे इत्यादिक रूपने कहेवे करी भोजन अरोग्यनो छतो पोतानो चारित्र बालीने अंगारा समान करी नाखे ए त्री जो इंगालदोष कह्यो. ॥ ७४२ ॥

मूलः— भुंजंतो अमणुस्रं, दोसेण सधूमगं कुणे चरणं ॥ वेयणआयंकपमुह, कारणा छच्च पत्तेयं ॥७४३॥ अर्थः— भोजन करतो छतो अमनोज्ञ दोषेकरी एटले आ अन्न अलूणोछे अथवा एमां लूण घणो नाख्योछे तथा वघारसारो दीधो न थी तेमज आ रोटली काचीछे खीचडी काची छे इत्यादिक दूषण कहेतो थको भो जन करे तो धूमके० धुमाडानीपरे पोतानो चारित्र कालोकरे ए चोथो धूम्र दोष कह्यो.

पांचमो जोजन करवा संबंधीकारण ठ ठे तेजप्रत्येके देखाडेठे. मूलः- वेयण वेयावच्चे, इरियठाएय संयमठाए ॥ तह पाणवत्तियाए, ठठं पुण धम्म चिंताए ॥ ७४४ ॥ अर्थः- वेदनीयना प्रबलपणा थकी क्षुधा सहनकरी नशके तो ते उपशमाववाने अर्थे आहारनो ग्रहण करे ए पहेलो कारण जाणवो. बीजो वेयावच्च जे करवो ते पण आहारना ग्रहणविना करायनही माटे वेयावच्चना कारणे पण आहार ग्रहण करवुं ए बीजो कारण जाणवो. त्रीजो इरिया शब्दे इरिया समिति तेने अर्थे आहारलेवो एटले आहारना ग्रहण कस्याविना इरियासमिति पण सोधायनही ए त्रीजो कारण तेमज सत्तरप्रकारनो संयमपण आहार लीधा विना पलेनही माटे संयम पालवाने अर्थे आहारलेवो ए चोथोकारण. तहके० तेमज प्राण जे इंद्रियादिक दशप्रकारनाठे तेनी वृत्ति पालवी तेने अर्थे अथवा प्राण प्रत्येक जीवतव्य ने अर्थे एटले जीववाने अर्थे आहार लेवो ए पांचमो कारण जाणवो. ठठो वली धर्मध्याननो चिंतवन करवानें अर्थं अथवा श्रुतधर्मनो चिंतन करवाने अर्थे तेमज वांचनादिकपण जोजन कस्याविना थाय नही माटे ए कारणथी पण जोजन लेवो ए ठठोकारण जाणवो. ए उक्त प्रकारे ठकारणे जोजन करतांथका दूषणनथी अने शरीरपुष्टयादिकने निमित्ते जो जोजन करियें तो दूषण प्राप्त थाय

हवे जोजन नकरवा संबंधी ठ कारणठे ते कहेठेः-आयंके उवसग्गें, तितिरकया बंजचेर गुत्तीसु ॥ पाणिदया तव हेऊ, सरीरवोठेयणठाए ॥ ७४५ ॥ अर्थः- एक अंतक ज्वरादिक रोगठतां जमवोनही कोइ उपसर्गकरे तेवारे ते सहन करवानी वांठाये जमवोनही एमज माता पिता व्रत मूकावे तेवारे नजिमेतो तेथी सहुकोइ कहेके एने व्रत मूकावोठो ए घरे आव्यो पण नहीजिमे एवो लोकोनो अपवाद सांजली ते पोतानीमेले उपसर्ग करता रहिजाय तेमाटे जिमवोनही त्रीजो ब्रह्मचर्यनी गुप्तिराखवाने अर्थे नजिमिये तो तेथी सुखे ब्रह्मचर्य व्रत पले चोथो प्राणीमात्रनी दयाने अर्थे उपवास करी बेसिये क्यांयें जवुं न होय एम जलीपरे जीवदया कीधी होय तेथी जिमवोनही पांचमो चतुर्थादिक तपने निमित्ते जिमवोनही ठठो मरणना अंतसमयें शरीर मूकवाने अर्थे अनशनलेई आहारनो त्यागकरे तेवारे जिमवोनही ए ठ कारणे जिमवुंनही जो जिमिये तो दूषणलागे इति गाथा पंचकार्थ ॥ ७४५ ॥ पंचाणुमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः- पिंमेपाणे एसणा सत्तगंति एटले पिंमपाननी एषणानो सप्तक तेनो ठन्नुमो द्वार वखाणेठे. मूलः- संसठमसंसठा, उद्धड तह अप्प लेवडा चेव

उग्गहिया पग्गहिया. उज्झिय धम्माय सत्तमिया ॥ ७४६ ॥ अर्थः-इहां सिद्धांतनी गाथाये पिंड शब्दे भोजन कहियें तेनी एषणा एटले जे लेवानो प्रकार तेने पिंडेषणा कहियें. ते सात प्रकारेछे ते असंसृष्ट संसृष्ट इत्यादि क्रमेकरी छे. इहां जे आगल आगलछे तेविशुद्ध जाणवी एमांथी प्रथम गमे तेनुं व्याख्यान कर्युं होय तो पण चाली शके. परंतु सूत्रमांहे पहेला संसृष्टनो ग्रहण कर्यो ते गाथाना बांधवाने अर्थे जाणवो. हवे साधु बे प्रकारनाछे. एक गच्छवासी बीजा गच्छनिर्गत तेमां जे गच्छवासीछे तेने सातेपिंडषणा लेवानी अनुज्ञाछे अने गच्छनिर्गतने प्रथमनी बे पिंडेषणा नो अग्रहणछे. ए सातना नाम कहेछे. असंसृष्टा, संसृष्टा, उद्धता, अल्पलेपिका, अवगृहीता, प्रगृहीता, उज्झितधर्मा. ॥ ७४६ ॥

हवे ए साते पिंडेषणा सूत्रकार वखाणेछे. मूलः- तम्मियसंसठ्ठ हत्थमत्तए इमा पढमभिरका ॥ तव्विवरीया बीया, भिरकागिण्हिं तयस्स भवे ॥ ७४७ ॥ अर्थः-ते सातप्रकारनी भिक्षामांहे संसृष्टते तक्र तीमण प्रमुखेकरी संसृष्ट एटले खरडायला हाथे लेता अने वाटली प्रमुख मत्तके० मात्रक पण खरडायला होय तेणेलेतां संसृष्ट भिक्षा ते पढमाके० प्रथम जाणवी अने तेथकी विपरीत एटले ज्यां मात्रक अने हस्त ए बंने खरडायला न होय तेवा हाथे अने मात्रके लेता असंसृष्ट बीजी भिक्षा थाय.

मूलः-निअ जोएणं भोयण, जायमुद्धरिय मुद्धडाभिरका ॥ साअप्पलेवियाजा, निल्लेवावल्लचणगाई ॥ ७४८ ॥ अर्थः- निअके० निज (पोताने) जोयणंके० योग्यव्यापारें परिसवा प्रमुखने अर्थे भोयणजायंके० भोजन जात एटले एक गामडामांथी काढीने बीजा गामडामां नाखेछे एवा प्रस्तावे महात्माये जईने धर्मलाभ दीधो तेवारे तेमाहात्माने वोहोरावे तो ते त्रीजी उधृत भिक्षा जाणवी.अल्पलेपिका जे भिक्षानेविषे अल्प शब्दे अभाववाची तेथी नथी लेपरूप पश्चातकर्म जिहां अथवा अल्प पश्चातकर्म छे जिहां ते अल्पलेपिका अथवा निर्लेपिका कहिये. तेवा वालचणाप्रमुख आदिशब्दथकी पंवा ए पण लीजे ते अल्पलेपिका चोथी भिक्षा.॥७४८॥

मूलः- भोयण कालेनिहया, सरावपमुहेसु होइ उग्गहिया ॥ पग्गहिया जं दाक, भुत्तुं य करेण असणाई ॥७४९॥ अर्थः-भोजनकाले जिमवानी वेलाये पीरसेली थालीछे सरावला प्रमुख मांहे ते लेतां साधुने पांचमी उद्गृहीत भिक्षा थाय छे. छठी पग्गहिया एटले अवगृहिता ते जिमवानी वेलाये जिमनारने परिसवाने अर्थें दोहेले प्रमुखेकरी उपाड्यो जे आहार ते हजी जिमनार माणसें लीधोनथी

एवा प्रस्तावे साधु आव्यो अथवा जिमनारे जिमवाने कवल उपाड्योछे तें यति ने देतां थका प्रगृहीतनामे छठी भिक्षाथाय. ॥ ७४९ ॥

मूलः— भोयणजायं जंछड्डु, णारियंनेहयंति डुपयाई ॥ अन्नचत्तं वासा, उझिय धम्मा भवे भिरका ॥ ७५० ॥ अर्थः—भोजन जातिजे अशनादिक नो ते प्रकार छांम वाने नाखी देवाने योग्य असनोज्ञ पणाथकी जेनें द्विपद ब्राह्मण श्रमणादिक कोइ लेवाने वांछा करे नही अथवा त्यजवाने योग्यछे ते दूर छांम्योछे ते सा धुयें लेताथकाने सातमी उझितधम्मांनामेभिक्षा थाय. ॥ ७५० ॥

हवे पानेषणा एटले पाणीनी एषणा कहेछे. मूलः—पाणेसणाविएवं, नवरं च उत्थीए होइ नाणत्तं ॥ सोवीरायामाई, जमलेवाडंति समयुत्ती ॥ ७५१ ॥ अर्थः—पा नक संबंधीनी जे एषणाछे तेपण एमज जाणवी पण नवरंके० एटलो विशेषछे जे चोथी ने विषे होइनाणत्तंके० भेद होय एटले चोथी अल्पलेपिका तिहां पान क ते सोवीर कांजी आयाम उसामण आदि शब्दथकी उन्होपाणी तंडुलनोपाणी ए सर्वे अलेपकृत जाणवा ए समयुत्तिके० सिद्धांतनी युक्ति सिद्धांतनो भाषित अ ने शेष इक्षुरस द्राक्षवाणी आंबिलवाणी प्रमुख जे लीधोछता यतिने कर्मरूप ले पकरे ते लेपकृत जाणवी इति ॥ ७५१ ॥ ए छनुमो द्वार समाप्त थयो.

अवतरणः— भिरकायरियाविहीण अट्ठगंति एटले भिक्षा चर्यानी आठवीथीनो सत्ताणुमो द्वार कहेछे. मूलः— उज्जूगंतुंपच्चा, गईय गोमुत्तिया पहंगविहि ॥ पेडाय अद्धपेडा, अप्भिंतरबाहिसंबुक्का ॥ ७५२ ॥ अर्थः— भिक्षाचर्य्यानी वीथी एटले श्रेणीनो प्रकार ते तिहां पहेली ऋजुगति, बीजी प्रत्यागति, त्रीजी गोमूत्रिका, चोथी पत्तंगवीथी. पांचमी पेटा, छठी अर्द्धपेटा, सातमी अभ्यंतर संबुका, आठमी बाह्यसंबुका.

हवे एना नाम सूत्रकार वखाणेछे. मूलः— गणा उज्जुगईए, भिरकंतो जोइ वलइ अनभंतो ॥ पढमाए बीयाए, पविसिय निस्सरइ भिरकंतो ॥ ७५३॥ अर्थः— पोताना स्थानक थकी निकली ऋजुके० सरलगतियेंज विहरतो जाय वलतो पाछो फरे तेवा रे अण विहरतो एटले विहरे नही ए पहेली ऋजुगति जाणवी. बीजी प्रत्यागत वीथीने विषे जातो आवतो बेहु वारे विहरे. ॥ ७५३ ॥

मूलः— वामाउ दाइणगिहे, भिरिकज्जदाहिणाउ वामंमि ॥ जीए सा गोमुत्ती, अड्ड वियड्डा पयंगविही ॥ ७५४ ॥ अर्थः— वाम एटले डावा पसवाडाना घरथ की जिमणा पसवाडाना घेरे वोहोरे तेमज वली जिमणा पसवाडा थकी डावापा साना घेरनेविषे वहोरे एवीरीतें जे भिक्षा मागियें ते गोमुत्रिकानामे त्रीजी वीथी

जाणवी. वळी जिहां अर्द्धवितर्द्द के० आघोपाछो अनियतपणे वोह्योरियें एटले पं तग तीड प्रमुखनीपरे अनाश्रित क्रम जिहां करवो ते चोथी पतंग वीथी जाणवी.

मूलः– चउदिसि सेणीगमणे, मझे मुक्कंमि नन्नए पेडा ॥ दिसि डुग संबद्धस्से णी गिखणे अद्धपेमिति ॥ ७५५ ॥ अर्थः– चारेदिसिनेविषे श्रेणीविहरे अने विचमां राखे एने पेटानामा पांचमी वीथी नन्नए के० कहियें. जेम वस्त्रादिक घा लवानो स्थानक वंशमय प्रसिद्ध तेनीपरे ग्रामक्षेत्रादिक ने चउरंसपणे वेंचे ते पे टावीथी जाणवी. अने जे दिसिडुगके० बिहुदिशिने विषे श्रेणीयें विहरे अने बेदि शि मूकी आपे ते अर्द्धपेटानामा छठी वीथी जाणवी.॥ ७५५ ॥

मूलः– अप्भिंतर संबुक्का, जीए गमिरो बहिं विणस्सरई॥बहिसंबुक्कागन्नइ, एयं वि वरीय निरकाए ॥७५६॥ अर्थः– शंबूककेहेता शंख तेना प्रकारे जिहां गमवुं ते शंबूका नामा वीथी जाणवी. ते बाह्य अने अभ्यंतरना नेदेकरी बे प्रकारनी छे. ते मांजे विहरतो शंखनीपरे बाहर निकले ते सातमी अभ्यंतर शंबूका अने जिहां विहरतो बाहेर थकी अंदरआवे ते पूर्वोक्त थकी विपरीतथाय ते आठमी बाह्य संबुका वीथी जाणवी. पंचाशकनी वृत्तिमांहे शंखवृत्तगमन प्रदक्षण ने अप्रदक्षण ना नेदेकरी बे प्रकारे कह्योछे माटे ए नामांतरछे. एम शास्त्रांतरने विषे छ वीथी कहिछे. तेएम एक रुजुगति बीजी प्रत्यागति ते शंबूका ए एकनी विवक्षा करिये तेवारे छ थाय इतिगाथा पंचकार्थ ॥७५६॥ आठ वीथीनो सताणुमो द्वार समाप्त.

अवतरणः– दसपायछित्ताईति एटले दशप्रकारना प्रायश्चित्तनो अठाणुंमो द्वार कहेछे. मूलः–आलोयण पडिकमणे, मीस विवेगे तहावि उस्सग्गे ॥ तवछेयमूलअ णवछि,याय पारंचिए चेव ॥ ७५७ ॥ अर्थः– आ एवो शब्द, मर्यादाने अर्थेछे ते आवीरीतेः–जह बालो जं पत्तो, कज्जमकज्जं च उज्जुअंनणइ ॥ तं तह आलोइज्जा, मायामयविप्पमुक्कोय ॥ १ ॥ ए मर्यादायेंकरी लोचियें एटले प्रगटपणे करिये अर्था त वचनेकरी प्रकाशिये. ते आलोचना कहिये. आलोचनमात्रें जे सूजे ते आलोच नानेविषे जे श्रेष्टतापणा लगीने कारण कार्यनो उपचार कहिये एवा न्यायथ की ए प्रायश्चित्त पण आलोचना छे. एमबीजा प्रतिक्रमण विगेरे जे गाथामां नाम कह्या छे ते सर्व जाणवा. हवे एनी व्याख्या गाथाये करी देखाडेछे. ॥ ७५७ ॥

मूलः–आलोइज्जइ गुरुणो, पुरउ कज्जेण हत्थसयगमणं॥ समिइपमुहाणमिक्षा करणे किरइ पडिक्कमणं ॥ ७५८ ॥ अर्थः– गुरुने पूछी अनुज्ञालेइ पोताने योग्य निक्षा वस्त्र पात्र सज्जा संस्तारक पादप्रोछन प्रमुख लेवाने अर्थें अथवा आचार्य

उपाध्याय स्थविर बाल ग्लान शिष्य क्षपक समर्थने प्रायोग्य वस्त्र पात्र जक्त पान औषध प्रमुख लइ आव्यो छतो तथा उच्चारादिक करीआव्यो अने चैत्यवंदना करी आव्यो तथा गृहीत पीठ फलकादिक पाछा गृहस्थने देइ आव्यो तथा बहुश्रुत अपूर्व संविझने संशय पुछवा गयो थको तेपूछीआव्यो इत्यादिक एक शो हाथ थकी उपरांत दूर अथवा नजीक जइ आव्यो छतो गुरु समक्ष आलोचना करे. ए आलोचना यतिने अवश्य कर्त्तव्यछे.

तिहां उपयुक्त अडुष्टपणे निरतिचार चारित्रनो धणी छद्मस्थ अप्रमत्त यती तेने आलोचनाथाय अने सातिचार चारित्रने उपरना प्रायश्चित्तनो संजव जाणवो. तथा जे केवलज्ञानना धरनारछे ते तो कृत्य कृत्य पणा थकी निरतिचारेज वर्त्तेछे माटे तेने आलोचनानो अजावछे.

इहां कोइ पूछे जे अप्रमत्त साधुतो नित्यकर्म्मे गमनागमनादिक त्यां उपयुक्त अने डुष्टजावपणाथकी पण निरतिचार छे तो तेने आलोचना शावास्ते लेवी जोइये केमके तेउ तो आलोचना विनाज सूत्रोक्त विधियें प्रवर्त्ततो शुद्धजछे.

एनो उत्तर कहेछे. केवल चेष्टानिमित्ते अथवा सूक्ष्मप्रवादनिमित्ते जे सूक्ष्म आश्रव क्रिया लागे ते अलोचना मात्रे शुद्ध थाय माटे तेनी शुद्धिने अर्थे आलोचना छे ए प्रथम आलोचना प्रायश्चित्त कह्यो.

बीजी समिईके० समिति प्रमुखने मिथ्याकरणे विपरीत पणाने आचरवे अने प्रमुखना ग्रहण थकी गुप्तिनो पण ग्रहण करवो. इहां ए जावजे सहसात्कारें अथवा अनाजोगथकी ईर्यासिमितिये मार्गे वात करतो जाय अने जाषासमितियें गृहस्थनी जाषायें बोले तेमज आकरे ढढर स्वरे शब्दकरे तथा एषणासमितियें जक्त पान गवेषणानी वेलायें सावधान नहोय तेमज चोथी तथा पांचमी समितिमां जांम मात्रा उपकरणना आदाने निक्षेपे पण अनुपयुक्त होय अने अप्रत्युपेक्षितादिक स्थंमिले उच्चारादिकने वोसिरावताथकां जो हिंसादिक दोष न लागे तेमज जो मने करी डुश्चिंतितअनेवचने करी डुर्जाषित तथा कायाये करीडुश्चेष्टित तेमज वली कंदर्पनो उपहास स्त्रीप्रमुख नी जे चार विकथाछे तेने करवेकरी एमज क्रोधादिक चार ने करवेकरी शब्दादिकनेविषे राग करवाथी तथा अनाजोगे सहसात्कार थकी कोइक आचार्य प्रमुखना उपर मनेकरी प्रद्वेष ने करवेकरीने अने वचने अंतर जाषाने करवे करीने कायायेकरी पुरोगमनादौ करवेकरीने तथा इच्छा मिथ्यादिक सामाचारीने अण करवेकरी इत्यादिके बीजो प्रतिक्रमण मिथ्याडुःकृत प्रायश्चित्त करिये.

मूलः— सद्दाई ए सुरागाइविरयणं साहिउं गुरूण पुरा ॥ दिज्जइ मिच्छा दुक्कड, मेयं मीसंतु पच्छित्तं ॥ ७५ए ॥ अर्थः— शब्दादिक इष्टानिष्टविषयोनेविषे रागादिक नो विरचन करवो. इहां ए नावजे अनेक प्रकारना शब्दादिक विषय पामे थके कोइ एम जाणे जे हुं शब्दादिकने विषे प्रवर्त्त्यो किंवा न प्रवर्त्त्यो एवो संशय उतां मिश्रप्रायश्चित्त जाणवुं. ते प्रथम गुरु आगल साहिउंके० कहिये. पछी आलोचना करवी. पछी गुरुना आदेशथी मिछा दुक्कड देवो. ए त्रीजुंप्रायश्चित्त जाणवुं ॥ ७५ए॥

अने ज्यां एवो निश्चयज थाय के अमुक शब्दादिकनेविषे राग अथवा द्वेष उपनोछे तो त्यां तपयोग्य प्रायश्चित्त आवे. अने जे कोइ शब्दादिक उपर राग द्वेष थयो नथी एवो निश्चयथाय तो त्यां ते शुद्धज छे तो त्यां प्रायश्चित्त आवे नही.

मूलः— कज्जो अणे सणिज्जे, गहिए असणाइए परिच्चाउ ॥ कीरइ काउस्सग्गो, दिछे दुस्सविणए पमुहंमि ॥ ७६०॥ अर्थः— अशुद्ध अशनादिक एटले अशन,पान, खादिम, स्वादिमरूप चार लीधेछते अने औघिकोपग्रहिक उपकरण अशुद्ध लीधेछ ते तेनोत्याग करवो. इहां ए नाव जे सम्यक् उपयुक्त कोइकसाधुए नक्तपानादिग्रहण कर्युं अने पछी ते अप्राशुक किंवा अनेषणीय जाण्युं त्यारे ते ग्रहण करेलानो त्याग करवो तेहिज प्रायश्चित्त कहियें. एना उपलक्षणथकी पर्वत, राहु, मेघ, हिम, तथा रजेकरी सूर्यनुं आवरण थयुं छतां अशठनावेकरी सूर्यउदय पाम्यो एवी बुद्धिए अशनादिक लीधुं होय अथवा अस्त थयो नथी एवी बुद्धिए ग्रहण करेलुं अशनादिक होय तेमज जे अशनादिक पेहेला पहोरमां ग्रहण करी चोथा पहोर सुधी राख्युं होय तथा अर्द्ध जोजन अतिक्रमें शठनावे अथवा अशठनावे त्यांथकी आणेलो अथवा लेई गयलो ते परठववो ते विवेक प्रायश्चित्त जाणवुं. शठ अने अशठनुं ए लक्षण के जे इंद्रिय विकथा, माया तथा क्रीमाये करीने पूर्वोक्त बोल करें ते शठ जाणवो. अने ग्लान, सागारी, अस्थंमिल, तथा नयादिक कारण थकी करे ते अशठ जाणवो. ए विवेक प्रायश्चित्त चोथुं जाणवुं.

तेमज दुःस्वप्नादिक जोयां छतां तेनुं विशोधन जे करे छे ते कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त पांचमुं जाणवुं. इहां ए नावजे सावद्य बहुल प्राणातिपातादिकनुं करवुं वली प्रमुखना ग्रहणथी गमनागमन अने होडीमां बेशी नदी पार उतरवी. इत्यादि प्रमुखे एवी रीते दुःस्वप्न थाय तो तेनी शुद्धिने सारु कायोत्सर्ग प्रायश्चित्त करवुं उक्तंच. गमणागमण वियारे सुत्तेवा सुमिण दंसणेराउ ॥ नावानइसंतारे, पायच्छितंविउस्सग्गो ॥ १ ॥ हवे सुत्तेवा ए बोलनो अर्थ करेछेः— सूत्रनेविषे उद्दे

श, समुद्देश, अनुज्ञा, प्रस्थापना, प्रतिक्रमण श्रुतस्कंधनुं परावर्त्तन अने अंगपरि वर्त्तनादिक प्रमुख अविधिये कस्या होय तो ते अविधि समाचरण परिहारने सा रु अथवा तेहनी शुद्धिने अर्थें कार्योत्सर्ग करवो ए पांचमुं प्रायश्चित्त कह्युं.॥७६०॥

मूलः–निव्विगइयाइ, दिज्जइ, पुढवाइघट्टणे तवविसेसो, तवडुद्दमस्स मुणिणो, किज्जइ पज्जायवोच्छेउ ॥ ७६१ ॥ अर्थः– पृथ्वी आदिकनुं संघट थवानी निवी छ मास पर्यंत तपविशेष करे. ए छेदग्रंथने अनुसारे अने जीतकल्पने अनुसारे तपोलक्ष ण छतुं प्रायश्चित्त छे ते करवुं. हवे तप दुर्दम ते कहीएके जे छ मास क्षपण अनेरुजे विकृष्ट तप तेनुं करवुं. ते करवा समर्थ तेणेकरी तपगर्वित थाय ने कहे के मारा आ मोहोटा तपे करीने शुं विशेष करवुं छे. अथवा जे ए तप करवा सारु असमर्थ, एवा ग्लान, बाल अने वृद्ध असहादिक तेवा तपनी श्रद्धाए करी रहित, अथवा जे कारणविना अपवाद सेववानी रुचि करे तेने व्रतकाल थकी दिन पंचकने अनुक्रमें श्रमण पर्याय छेदिये. ए सातमुं छेद प्रायश्चित्त करवुं.॥७६१॥

मूलः– पाणाइवायपमुहे, पुण वयारो वणं विहेयव्वं ॥ ठविज्जइ नवएसुं कराइ घायप्पडुरमणो ॥७६२॥ अर्थः–आकुट्टेकरी प्राणातिपात प्रमुख प्राणी वध कीधे अने आदिशब्द थकी अनेरा मृषावाद, अपराध संकल्पपूर्वक कस्या होय तो पुन र्व्रतारोपण एटले फरी पण व्रतस्थापन करवां. इहां ए नावार्थ छे जे आकु टिए पंचेंद्रिय जीवनो वध कीधे, दर्पे करीने मैथुन सेवा करी होय एम मृषावाद, अदत्तादान, परिग्रह एनुं उत्कृष्ट आकुट्टीये सेवन कस्युं छतां किंवा वारंवार सेवन क स्युं छतां पुनःके० फरी नवा व्रतनो उच्चार कराविये ए पुनर्व्रतस्थापन प्रायश्चित्त करवुं. ए मूलनामनुं आठमुं प्रायश्चित्त जाणवुं.

ठविज्जइके० स्थापिये नही. जे व्रतने विषे हाथ प्रमुख लाकडी मुष्टी प्रमुख नि रापेक्ष थको घोर परिणाम छतो पोताने तथा परने घात प्रहारादिक करे तेणेकरीजेनुं अति प्रदुष्ट मन होय. ए रीते जेने संक्लिष्ट चित्तनो परिणाम थाय, एवाने एवुं उ चित तपनुं प्रायश्चित्त अपाय के ते ज्यां लगें पोतानी मेले उठी तथा बेसी शके नही. जेवारे उठवा बेसवानुं प्रयोजन पडे तेवारे बीजा कोइने कहे के हे आर्य मने उठा ड किंवा बेशाडः एवुं कहे त्यारे ते बीजो जे होय तेपण तेनीसाथे अण बोलतोथको तेनुं कार्य करे. एटलो उचित तपनुं प्रायश्चित्त तेने देवायछे. एटलुं तप कीधे छते पछी तेने उपस्थापना करवी. ए अनवस्थापना नामा नवमुं प्रायश्चित्त जाणवुं॥७६२

मूलः– पारंचियमा वज्जइ, सलिंगनिवजारियाइ सेवाहिं ॥ अवत्तलिंगधरणे वा

रस वरिसाइ सूरीणं ॥७६३॥ अर्थः—मूल प्रायश्चित्त ते जे सलिंग संयति तेणेसाधवी अथवा नृपनार्या एटले राजानीराणी, तेनी साथे सेवा कीधी होय. आदिशब्दथकी लिंगिघात राजादिकना वधनुं ग्रहण करवुं ए पारंचितनामा दशमुं प्रायश्चित्त. पण ते अव्यक्त लिंगना धरनार, जिनकल्पिनी तुलना करनार, क्षेत्रादिकथकी बाहिर रह्याथका विपुल तपना करनार, अने महासत्व आचार्य तेनेपण ए थाय ते जघन्य तो छमासनो अने उत्कृष्टो बारवर्ष सीम थाय तेवारपछी वली तेने नवी दीक्षा आपिये. ॥७६३॥

इहांज वली विशेषे कहेछे. मूलः— नवरं दसमावत्ती नवममुज्झावयाण पछित्तं छम्मासे जावतयं, जहन्नमुक्कोसउवरिसं ॥ ७६४ ॥ अर्थः—एमां नवरंके० एटलुं विशेषछे के ए दशम प्रायश्चित्त योग्य अपराध कीधे तेनी प्राप्ति थाय, तथा नवमुं अनवस्थाप नामा प्रायश्चित्त कीधे थके तेनी प्राप्ति थाय ए बे प्रायश्चित ते अज्झावयाणके० उपाध्याय ने थाय. इहां ए अर्थछे के जेजे अपराध सेववा थकी पारंचित आवे तेते अपराध घणा वखत सेववा छतां उपाध्यायने पण अनवस्थाप्येज आवे केमके उपाध्यायने अनवस्थाप्य पर्यंतज प्रायश्चित्त कह्युंछे.

एमज सामान्य साधुने अनवस्थाप्य पारंचित अपराधे छते मूल पर्यंतज प्रायश्चित्त आवे. ते अनवस्थाप्य जघन्यथी छ महीनानुं अने उत्कृष्टथी एकवर्ष जाणवुं. आशातना अनवस्थाप्य जे तीर्थंकर गणधर अने प्रवचनादिकनी निंदा करे आशातनाकरे. तेने आश्री ए कह्योछे अने जे हस्त ताडनानो करनार साधर्मि तथा अन्यधर्मिनी चोरी करे ते प्रतिसेवा अनवस्थाप्य ते आश्रयी कहिये तेवारे जघन्यथी एकवर्ष अने उत्कृष्टथी बारवर्ष जाणवां. ॥ ७६४ ॥

हवे ए दश प्रायश्चित्त ते ज्यां लगे तीर्थहोय त्यांलगे होय किंवा न होय ते कहेछे. मूलः— दस ता अणुसंज्जंती, जाव चउदस पुव्वि पढम संघयणी ॥ तेण परं मूलंतं, डुप्पसहो जाव चारित्ती ॥ ७६५ ॥ अर्थः— ए दशे प्रायश्चित्त त्यांलगे प्रवर्त्ते, ज्यांलगे चउदपूर्वेना धरनार होय, वज्रऋषभनाराच नामा प्रथम संघयणना धणीहोय त्यांलगे जाणवा. तेणके० ते वार पछी नवमुं अनवस्थाप्य अने दशमु पारांचित ए बेनोविछेद थया नंतर आलोचनादिक अष्टविध प्रायश्चित्त ते त्यां सुधी वर्त्तमान जाणवां. ज्यांसुधी डुःप्रसह नामा सूरि थसे त्यांसुधि जाणवा. ते समाधिस्थ थया पछी तीर्थे चारित्रनो विवछेद थशे. ए अगणुमुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरणः— जहम्मि पयविभागंमि सामायारि डुगंति एटले उघ सामाचारिनुं नवाणुमु द्वार अने बीजी पदविभाग सामाचारीनुं शोमुं द्वार ए बे द्वार

साथे कहेछे. ॥ मूलः— सामायारीउहंमि उहनिज्जुत्ति जं पियं सवं ॥ सापय वि जाग सामा, यारी जा छेयगंथुत्ति ॥ ७६६ ॥ अर्थः— इहां उघसामाचारीनेविषे जे उघनिर्युक्तिमां कह्योछे ते सर्व उघ सामाचारी जाणवी. ए नवाणुमु द्वार. अने जे जितकल्प तथा निशीथादिक छेदग्रंथोमां जला साधुनुं आचरण करेलुं जे क्रियाकलापनो विशेष देखाडयोछे,ते पदविजाग सामाचारी जाणवी. एशोमु द्वार थयुं.

इहां सांप्रतकालना जे श्रमण तेने तथाविध श्रुत परिज्ञानशक्तिरहित अने आयुषप्रमुखनीपण हाणी छे ते आश्रयी उघसमाचारी नवमां पूर्वथकी त्रीजो वस्तु आचार एवे नामे ते थकी तिहां पण वली वीसमो प्राजृत ते थकी वली उ घप्राजृति थकी उद्धारकरी एम पदविजाग सामाचारी ते पण नवमां पूर्व थकीज उद्धारकरीछे ए शोमुं द्वार समाप्तथयुं. ॥ ७६६ ॥

अवतरणः— दसहासामायरित्ति एटले दशप्रकारनी चक्रवाल सामाचारीनो ए कशोने एकमुं द्वार कहेछे. मूलः— इच्छामिच्छा. तह, कारो आवस्सया निसी हिया ॥ आपुंछणा पमिपुछा, छंदणाय निमंतणा ॥ ७६७ ॥ उवसंपयाय काले, सामायारी जवे दसविहाउ ॥ एएसिं तु पयाणं,पत्तेयपरूवणं वोछं ॥७६८॥ अर्थः— एक इछाकार, बीजी मिथ्याकार, त्रीजी तथाकार, चोथीआवश्यकी, पांचमी नैषधिकी, छठी आप्रछना, सातमी प्रतिप्रछा,आठमी छंदणा,नवमी निमंत्रणा,अने दशमी उपसंपदा, एकालविषयिकसामाचारीदशप्रकारनीछे एदशेपदनी पृथक प्ररूपणकरेछे.

ए दश प्रकार प्रत्येक अर्थसहित वखाणनार छतो पहेलो इछाकारी कहेछे ते देखाडेछे. मूलः— जइ अप्पछिक्कपरं, कारण जाए करेज्जसेकोइ ॥ तछय इछा कारो, न कप्पइ बलाजिउ गाउ ॥७६९॥ अर्थः— इछाकार ए एटला वास्ते कहेछे के एषीये वांछिये ते इछा जाणवी, अने जे करिये ते कार जाणवो. इहां कार श ब्द जे छे ते प्रत्येके जोडिये एटले इछाकार, मिथ्याकार,तथाकार, तिहां इछाये करीने तुं महारुं ए कार्य कर पण बलाजियोगें न कहेवो के ए कार्य तुंहिज कर. एम न कहेवुं ए सूत्रकारनुं वचन छे, जे कदापि कोइ कारणे साधु बीजा प्रते अप्पछिक्के० अन्यर्थना करे. कारणविना यतीने अन्यर्थना तो करवीज नही, एवो नियम छे, पण ग्लानादिक कारण उपने थके अनेराने प्रार्थनाकरे तो ते अन्यर्थनाना करनार साधुये आगला साधुने इछाकार कहीने अन्यर्थना करवी, के तुं अमुक आ एक महारुं काम कर, अथवा अन्यर्थना कर्याविनाज कोइ अनेरो वली ते काम करनार होय तोतेपण करेज्जके०कामकरे तो तेणेपण सामो इछाकार करवो. इहां

सूत्रमांहे कोइ एवो शब्द आव्यो ते एवो जणाववाने अर्थे आव्योछे जे कीधाविना ज पारका कामना करनार होय ते तो विरलाज जाणवा. यतः विरला जाणंति गुणा विरला पालंति निद्धणेनेहं ॥ विरलापरकज्जकरा, परडुक्खे डुक्खिया विरला ॥ १ ॥

हवे इछाकार जे करिये ते शाने अर्थे करिये ते कहेछे. न कप्पइ बलाभिउगाउ एटले बलानियोगे करी साधुने न कल्पे तेमाटे इछाकार करवो. अने गाथाने छेडे तु शब्द आव्योछे ते किहांएक बलानियोग पण कल्पे एवो जाणवाने अर्थेछे.॥७६ए॥

हवे मिथ्याकारना विषय देखाडे छे. मूलः- संजम जोए अब्भुट्ठियस्स जं किंपि वि तह मायरियं ॥ मिछाएयंतिवियाणि ऊण मिछत्त कायवं ॥७७०॥ अर्थः- मिथ्या, वितथ, अनृत एवा पर्याय जाणवा. मिथ्या फोक ए क्रिया शब्दनो एम अर्थछे. संयम योग जे समिति गुप्त्यादि रूपछे तेनेविषे जे अभ्युत्थितके० सावधान छे तेणे जो कांइ समित्यादिकने विषे विपरीतपणे आचरण कर्युं पछी जाण्यामां आव्युंके मे अमुक अन्यथा कीधुं तो तेने मिथ्याजाणी मिथ्याकार करियें. परंतु जे उद्देसीने कार्य करियें अने वली वली कार्यने करवे, मिथ्याकार न करियें तथा करियें, तेने तथाकार जाणवो. ते सूत्रादिकना प्रश्नने विषे जेम तुमे कह्युं ते तेमजछे.

हवे जेने ए आपिये ते कहेछे. मूलः- कप्पा कप्पे परिनिट्ठियस्स ठाणेसु पंचसु ठियस्स ॥ संजमतवड्डगस्सउ ॥ अविकप्पेणं तहक्कारो ॥ ७७१ ॥ अर्थः- कल्प शब्दे विधि आचार अने तेथकी विपरीत ते अकल्प जाणवो. अथवा कल्प ते जिनकल्प, स्थविर कल्पादिक जाणवो अने अकल्पते चरक प्रमुखनी दीक्षा तेनेविषे जे परिके० समस्त प्रकारे निट्ठियस्सके० निष्ठित जे रह्योछे, ज्ञाननी निष्ठानेविषे जे पहोच्योछे, एटले ज्ञानसंपदा जाणवी. वली ठाणेसुके० जेनेविषे साधु रहे तेटलामाटे ए स्थान ते प्राणातिपात विरमणादिक पांच महाव्रत तेनेविषे स्थित आश्रितछे. एटले ए मूलगुणनी संपदा जणावी. वली संयम सत्तरप्रकारनो तेणे अने बार भेदनुं तप तेणेकरी आढ्यके० संपन्नछे. ए उत्तर गुणनी संपदा जाणवी. एवांने अविकल्पे तेना वचननेविषे वितथपणानी शंका न करतां तथाकार करवो. एतावता एवा गुरुने वांचना पृछनादिक पछी सामाचारीना शीखाडवा. अनंतर शिष्ये कहेवुं के जेम तमे कहोछो ते तेमज छे. एवा अभिप्रायें त्रीजो तथाकार जाणवो.॥७७१

हवे अवश्यकी अने निषेधकी ए बेहु कहेछे. मूलः-आवस्सिया विहेया, अवस्सगंत वकारणे मुणिणो ॥ तम्मि निसीहियाय जछ सिज्जाठाणाइआयरइ ॥७७२॥ अर्थः- अवश्य कर्त्तव्यनी जे क्रिया ते आवश्यकी एवी आवश्यकी जे क्रिया ते विहेयाके०

करवी एटले अवश्य करवो जोइयें जे ज्ञानादिक निक्षा परिभ्रमणादिकजे कारण तिहां उपाश्रयथकी निकलतांथकां यतियें आवस्सहि करवी. अने कारणे एवुं कहेवा थ की कारणविना जवुं निषेध्युं, तथा तम्मित्ति एटले बाहिरथकी पाछो वल्यो छतो तम्मिके० ते स्थानकनेविषे निस्सिहि करे एरीते जछके० ज्यांसेज्जाके० सज्जा उपा श्रयनेविषे प्रस्थान एटलें प्रवेशलक्षण त्यां अवस्थान आयरके०आचरे. आदिशब्द थकी चैत्यमां प्रवेश करतां पण करे. ए आवश्यकी निषेधकीमली पांच सामाचारी थई.

मूलः– आपुछणाउ कज्जे, पुव्वनिसिद्धेण होइ पमिपुवा ॥ पुव्वगहिएण छंदण, निमंतणा होइ अगहिएण ॥ ७७३ ॥ अर्थः– आ एटले समस्त प्रकारे गुरुने पूछी ये ते आपृछना ए किहां करवी ते कहेछे कज्जेके० वांछित कार्यनेविषे प्रवर्त्तमान छते करवी जे हे जगवन् हुं अमुक एक विहार गमनादिक कार्य करुं ए छठी सामा चारी जाणवी. एमज पडिपुवाके० फरी पूछीये ते प्रतिपृछा तेनो विषय कहेछे. पु व्वनिसिद्धेणके०पहेलां निषेध कस्योछे के हे वत्स आ अमुक कार्य करीश नही तेम छतां तेज कार्य करवानुं प्रयोजन उपनेथके ते कार्यना करनार शिष्ये पूछवुं जे हुं ए कार्य करुं. अथवा गुरुये प्रथम कहेलुंछे के हे वत्स अमुकदिवसे अमुक वे लाये अमुक कार्य करजे, अने तेदिवस तेज वेला आवेथके गुरुने जइ कहेके तमे कह्युं हतुं ते प्रस्तावछे माटे तमे कहो तो हुं ते काम करुं. तेवारे पुव्वनिउत्तेण एवो पाठछे तेनो अर्थ जे पहेलो नियुक्त एटले प्रेस्योछे एम पूछवाथी गुरु कार्यांतर क हे अथवा ए कार्यथी सस्यो एमज कहे ते माटे प्रतिपृछा करवी ते सातमी सामाचारी.

पुव्विगहिएण छंदणा शब्दे निमंत्रणा कहिये ते आवीरीते प्रथम लीधुंछे जे अशनादिक. तिहां शेष बीजा साधुउने छंदनाके० निमंत्रणा करवी के में अशना दिक आण्युंछे ते जो कोइने उपयोग आवेतो इछाकार ल्यो. ए आठमी सामाचारी तथा निमंत्रिये ते निमंत्रणा कहिये ते आवीरीते छे. अशनादिक लाव्याविना अनेरा साधुउ प्रत्ये कहेवुं के हुं तमारे प्रायोग्य अशनादिक लेइ आवुं ते नवमी सामाचारी.

हवे उपसंपदा वखाणेछे. मूलः–उवसंपयाय तिविहा, नाणे तह दंसणे चरि त्तेयं ॥ एसाहुदसपयारा, सामाचारी तहन्नाय ॥ ७७४ ॥ अर्थः– उपसंपदनके० जावुं ते विशिष्ट श्रुतादिकने कारणे कोइ अधिक गुणी जाणीने तेनी समीपे जावुं जोइये ते उपसंपदा ज्ञानादिक त्रणना जेदथकी त्रणप्रकारे जाणवी. तिहां वली ज्ञान दर्शननी, तेना त्रण त्रण जेद छे ते आवीरीते, एक वर्त्तना, बीजी संधना अने त्री जी ग्रहण. ए त्रणे ज्ञान आश्री कहेछे. तेमां प्रथम ग्रहण कस्योछे जे सूत्रादिक ते

अस्थिरजाणी तेनो गुणवो ते वर्त्तना जाणवी. अने तेहिज श्रुतादिकनुं कोइ एकदेश विस्मरण थयुं तेने ग्रहण करियें ते संधना जाणवी. एना घटना अने योजना ए बे पर्यायछे. अने ग्रहण ते नवाज सूत्रनुं ग्रहण करवुं तेने ग्रहण कहियें. ए त्रणे एकसूत्र बीजो अर्थ त्रीजो तदुभयविषयिक एकेक जाणवा. तेने पूर्वोक्त त्रणे गुणतां नवभेद ज्ञानने विषे थायछे.

हवे दर्शनने विषे जे सम्मत्यादिक शास्त्र दर्शन प्रभावक तेनेविषे पण एहिज नवभेद थाय. अने चारित्रनेविषे उपसंपदा बे प्रकारनीछे. एक वेयावच्च विषयिक अने बीजी क्षपण विषयिक. इहां एवो अभिप्रायछे जे कोईक चारित्रने अर्थे अनेरा गच्छनो आचार्य तेसारु वेयावच्चगरपणुं पडिवजे ते कालथकी कोइ इत्वर काल अने कोइ जाव जीव लगे पडिवजे. इहां कोइ पूछे के एवो जे उपसंपदाने अर्थे बीजा गच्छमांहे जाय तेवारे पोतानाज गच्छमां रह्योथको चारित्रने अर्थे वेयावच्च केम नकरे? तेनो उत्तर कहेछे के जे पोताना गच्छनेविषे तथाविध वेयावच्च करावनाने समर्थ सामग्रीने अभावे परगछनी उपसंपदा ग्रहण करे.

हवे क्षपणा विषये कहेछे ते आवी रीतेः— कोइक क्षपणने अर्थे अनेरा गच्छनी उपसंपदा ग्रहण करे. ते बे प्रकारेछे. एक यावत्कथिक ने बीजी इत्वर. तेमां जे गच्छांतरमां जइ अनशन करशे ते यावत्कथिक अने इत्वरक्षपक तेमां एक तो अष्टम दशमादिकना करनार ते विकृष्टक्षपक अने बीजा छठ प्रमुख तपना करनार ते अविकृष्टक्षपक जाणवा. ए प्रगटपणे दश प्रकारनी सामाचारी कही तथा तेमज वली अन्नाय एटले बीजी पण वक्ष्माण दशप्रकारनी सामाचारीछे ते देखाडेछे.

मूलः— पडिलेहणा पमज्जण, भिक्खिरियालोय भुंजणाचेव ॥ पत्तग धुयण वियारा, थंडिल आवस्सया ईया ॥ ७७५ ॥ अर्थः— एक पडिलेहणते पेहेले पहोरे अने पाछले पहोरे वस्त्र पात्रादिकनुं पडिलेहण करवुं बीजी प्रमार्जन ते उभय कालनेविषे उपाश्रयनुं पूंजवुं. त्रीजी भिक्षा, ते कायिकादिक व्यापार कीधापछी पात्रालेइ आवस्सहिकरी उपाश्रयथकी निकलीने अहारादिकनेविषे मूर्छानो त्यागकरी पिंडेसणा पानेसणानी उपयुक्तता धारण करीने बेतालीस दोष विशुद्ध अहार लें तेभिक्षा कहियें. चोथी इरिया, ते आवीरीते के पूर्वोक्त भिक्षा लीधा पछी निस्सहि पूर्वक उपाश्रयमांहे प्रवेशकरी नमोखमासमणाणं गोयमाइणं एवो वाचिक नमस्कार मुखथी प्रकाशकरी योग्य देश प्रथम चक्षु साथे जोइने रजोहरण साथे पूंजी इरियावहि पडिकमवी.

पांचमी आलोय एटले काउसग्गमांहे उपाश्रयथकी निकल्या पछी भिक्षाने अर्थे नमतां जे अतिचार लाग्याछे. ते गुरुने जणाववाने अर्थे प्रथम काउस्सग्गमांहे चिंतवे पछी काउसग्ग पाली चउविसलोकही जेवीरीते अशनादिक कटोरी प्रमुखे करी स्त्री अथवा पुरुषे दीधुं लीधुंहोय ते सर्व गुरुनी आगल गुरुनी सम्मत जे वीरीतिये दीधुं लीधुंहोय तेवीज रीतिये आगमोक्त विधिये आलोवे तेविधि श्रीदशवैकालिक सूत्रमां आवीरीते कहीछे. उक्कुप्पन्नो अणुविगो, अवक्खित्तेण चेयसा, आलोए गुरुसगासे, जं जागहियंनवे एवीरीते अलोचीने पछी डुरालोचित भक्तपानने अर्थे अथवा एषणीय अनेषणीयने अर्थे काउस्सगकरे, त्यां नमस्कार चिंतवी पछी वीसमंतो एवीरीते चिंतवे के हियमछन्नाजमहिउ जइमे अणुग्गहं कुज्जा ॥ साहू हुज्जामितारिउ इत्यादिक चिंतवी फरी परिश्रमना नाशने अर्थे मुहूर्त्तमात्र बेसीने सद्याय करे ए पांचमी अलोयणा सामाचारी कही.

छठी भुंजणा सामाचारी कहेछे. पूर्वोक्त विधिकरी तेवारपछी निःसागारिक प्रदेशे बेसी राग द्वेष रहितछतो नवकारगुणीने संदिसतपारयाम एवुं कहीने गुरुनी अनुज्ञाये भोजन करे. सातमी पत्तगधुअण एटले पात्रानुं धोवुं ते भोजन कर्यापछी आछापाणी साथे पात्रनेविषे समयप्रसिद्ध त्रण काप आपीने पात्राने धोईनाखवुं. ते सिद्धांत भाषाये त्रेप जाणवो. आठमी वियारा एटले पछी यद्यपि प्रथम एकासणादिक पच्चखाण कीधोछे तोपण अप्रमादने अर्थे सागारिआगारेणं इत्यादिक आगार रुंधवाने अर्थे पच्चखाण करवो ते कर्यापछी वियार संज्ञा परिहरवाने अर्थे वाहिर थंडिले जावुं. नवमी थंडिल एटले परने अनुपरोधि एवुं जे प्राशुक भूमिभाग लक्षण ते स्थंडिल तिरछो जघन्य एकहाथ मात्र पडिलहे. त्यां सत्यावीस स्थंडिला. ते आवीरीते तेमां कायिकायोगे वस्तिमां छ स्थंडिला. बाहिरना भागमां पण छ मलीने बार कायिकिना तेमज उच्चार योग्यपण बार अने त्रण काल ग्रहणना ए सर्व मली सत्यावीसथया. दशमी आवस्सय एटले आवश्यक सामाचारी ते पडिकमणोकरे. आदि शब्दथकी कालग्रहणादिक पण लेवा. एरीते एदश सामाचारी इहां संक्षेपेकही. विस्तारे पंचवस्तुना बीजा द्वार थकी जाणवी. ॥ ७७५ ॥ इतिगाथा नवकार्थ. ए दश सामाचारीनुं एकशोने एकमुं द्वार समाप्तथयुं.

॥ इति श्री प्रवचनसारोद्धार नामके ग्रंथे एकोत्तर शततमं द्वारं समाप्तम् ॥

अवतरणः– निग्गंथत्तं जीवस्स पंचवाराउ नववासेत्ति एटले संसारमां वसतां थकां निर्ग्रंथपणुं जीवने पांचवार आवे तेनुं एकशो बीजुं द्वार कहेछे. मूलः– उवसमसेणिचउक्कं, जायइ जीवस्स आजवं नूणं ॥ ता पुण दोएगजवे, खवग्गसेणी पुणो एगा ॥ ७७६ ॥ अर्थः– उपशमश्रेणीनो चतुष्क एटले जीवने उपशमश्रेणी चारवखत, आजवंके० जव जे संसार तेमां नानाजव आश्रयी उत्कृष्टथी उपशमश्रेणी चारवखत आवे. आ शब्द मर्यादापणे करी जाणवो, एनो ए अर्थ जे संसारमांहे वसतांथकां नूनंइति निश्चय थकी जीवने उपशमश्रेणी चारवखत प्राप्तथाय, अने उत्कृष्टथी एकज जवमां बेवार थाय, अने क्षपकश्रेणी वली एकज थाय, इहां ए नाव जेउपशांतमोह क्षीणमोह गुणगणे निर्ग्रंथपणुंहोय त्यां चार उपशमश्रेणी ने एक क्षपकश्रेणी थाय. तेथी पांचवार थाय इति॥७७६॥द्वार समाप्तः

अवतरणः– साहुविहारसरूवंति एटले साधुना विहारनुं जे स्वरूप तेनुं एकशो ने त्रीजुं द्वार कहेछे. मूलः– गीयछोय विहारो, बीउ गीयछमीसिउ जणिउ ॥ इत्तो तइय विहारो, नाणुन्नाउ जिणवरेहिं ॥ ७७७ ॥ अर्थः– गीत शब्दे जाण्योछे जेणे कृत अकृत लक्षण अर्थ, तेने गीतार्थ बहुश्रुत कहियें. तेमां एक गीतार्थनो विहार ते एकला गीतार्थनोज विहार अने बीजो गीतार्थ मिश्रित विहार ते केटलाक गीतार्थ ने केटलाक अगीतार्थनो विहार जाणवो. इत्तोके० एथकी तइय वियारोके० त्रीजो जे विहार ते नाणुन्नाउके० श्रीतीर्थंकर देवे अनुज्ञातपणे कीधो नथी.

ए विहार इव्यादिकना नेद थकी चार प्रकारे छे ते कहेछे मूलः– दवउ चखुसापेहे, जुगमेत्तं तु खेत्तउ ॥ कालउ जावरीएज्जा, उवउत्तोय नावउ ॥७७८॥ अर्थः– चक्षुयेंकरी नूमिका सारी रीते जोवी ते इव्यथकी विहार जाणवो. पछी ते जोइ करीने जुगमात्र नूमि आगे जोईने पगजरतो चाले ते क्षेत्रथकी विहार जाणवो. अने घडी पहोर प्रमुख ज्यांलगे जइ आववुं ते कालथकी विहार जाणवो. अने जे उपयुक्तपणु समस्त इव्यादिकने विषे सावधानपणु ते नावथकी विहार जाणवो. इव्यथकी विहार न करे पण नावथकी विहार करतो थको आराधक कहेवाय. उक्तंच वाससयंपि वसंता, मुणिणो आराहगा जणिया ॥ इति गाथा द्वयार्थः द्वार समाप्त.

अवतरणः– अपडिबद्धविहारोत्ति एटले अप्रतिबद्ध ते जे रागादिके रहित एवो विहार तेना स्वरूपनुं एकशो चारमु द्वार कहेछे. मूलः– अपडिबद्धोय सया, गुरूवएसेण सवनावेसु ॥ मासाइ विहारेणं, विहरेज्जहोच्चियं नियमा॥७७९॥ अर्थः– अप्रतिबंधविहार ते गुरुना उपदेशथकी सदागुरुनी अनुज्ञा लेइने इव्यादि

कनो प्रतिबन्ध वर्जिने मासकल्प करे ते सफल जाणवो. पण अन्यथा एवो विचार करे के अमुक स्थानके अमुक नगरे जाउं, त्यां नला मर्हर्द्धिक श्रावको छे ते उपार्जिने आपणा करुं जेम ते श्रावको मने त्यागी ने बीजाना नक्त नथाय. एरीते प्रथम द्रव्यने प्रतिबन्धे विहार कस्योथको कार्य साधक थाय नही. तेमज क्षेत्र आश्री कोइ उपाश्रयमां रहेतांथकां अहीया वायरो सारो आवतो नथी तेथी अहीया रहेतां थकां रति थती नथी. पण अमुक क्षेत्रे नली वस्तिछे माटे त्यां जइये. एम जाणीने विहार करेतो बीजो क्षेत्र प्रतिबन्ध थाय. ए पण फोकट नटकवा जेवुं समजवुं पण चारितार्थे न समजवुं. तथा घणा सालीप्रमुख नीपजवाथी हालमां मार्गे सारा थयाछे अने शरद ऋतुछे तेपण विहार करवाने घणी सारीछे एम विचारी विहार करे तो त्रीजोकाल प्रतिबन्ध थाय. एथी पण अर्थ साधक नथाय. तथा अमुकक्षेत्रे गयाथी मने स्निग्ध मधुरादिक आहारना लाभे करी महारा शरीरने पुष्ट्यादिक सुख थशे आ क्षेत्रमां तो लोकोनो प्रेम सारो नथी अथवा उद्यत विहारे विहार करतां ए उद्यत विहारी छे एवुं मने लोक कहेशे. अने बीजा अनेरा साधुउने शिथल विहारी कहेशे इत्यादिक नावनायें विहार करता थकां चोथुं नावप्रतिबन्ध पणुं थाय. ए विहारपण निरर्थक छे ए द्रव्यादिक चारे प्रतिबन्ध रहित जे होय तेनो सफल विहार छे. एरीते यथोचित्तपणे संघयणादिक ने अनुमाने नियमाके० निश्चयेथी. मासाइके० मासकल्पादिक विहारें करी यति विहार करे ॥ ७७९ ॥

हवेपरनो अनिप्राय आशंकी तेनो आ गाथायें करी उत्तर कहे छे मूलः— मोत्तूण मासकप्पं, अन्नो सुत्तंमि नित्थ विहारो ॥ ताकहमाइ ग्गहणं, कज्जं कणाइ नावेणं॥७८०॥ अर्थः—ए मास कल्प मूकीने अन्नोके० अनेरो बीजो जे सूत्रमां कह्यो नथी एवो विहार करे ताके० तो मासाइ एटले इहां आदिशब्दनुं ग्रहण कहके० केम आप्युं. कज्जे के० कार्यकरवो इहां ए नाव जे साधु चारित्रवंतें मुख्यपणे मासकल्पे विहार करवो. अने कारण योगे कदाचित् मासकल्पथी उंछे दिवसे पण विहार करवो. तेमज क्यारेक मास थकी उपरांत पण रहेवुं नाव थकी एवुं जणाववाने अर्थे आदिशब्दनुं ग्रहण कस्युंछे. ॥ ७८० ॥

वली एज वात प्रगट करतो कहे छे. मूलः— कालाइ दोस वज्जइ, न दव्वउ एस कीरए नियमा ॥ नावेण तहवि कीरइ, संथारग वच्चया ईहिं ॥ ७८१ ॥ अर्थः— कालादि दोष थकी एटले कालदोष ते दुर्निक्षादिक थकी तथा क्षेत्रदोष ते संयम योग क्षेत्रना अनावे. वली द्रव्यदोषते नक्तादिक शरीरने योग्य न होय. अने ना

व दोष ते शरीरें ग्लान थयो होय, अथवा ज्ञानादिकनी हाणी प्रमुख कारणोथी जो कदाचित बाह्यवृत्ते मासकल्प नकराय तो पण नियमा एटले निश्चेयकी नावे करी तो एक स्थानके रहेते थके पण मासकल्प करिये ते करवानी रीत कहेछे.

जे सूवानी भूमिका होय तेने संथारो कहिये. ते संथाराना परावर्त्तन प्रमुखे करी मासकल्प करवोज, वली आदिशब्द थकी उपाश्रयनुं अथवा पाडानुं पण परावर्त्तन करवुं. अहीयां ए नावछे केजे स्थानके संथारो कर्यो होय त्यां मासकल्प पूरण, थयाथी अन्य स्थानके संथारो करवो. तेमज जे वस्तिमां रह्या होइये तेथकी बीजी वस्तिये रहेवुं, तथा जे पाडामां निक्षालीधी होय तेथकी बीजापाडामां निक्षा लेवी पण तेज पाडानी निक्षा लेवी नही. एवी रीते आचरण करतां थकां मासकल्पने अनावे पण यतिपणानी विराधना थाय नही. यदवाचि. पंचसमियातिगुत्ता इत्यादि.

हवे एक क्षेत्रे उत्कृष्टे रहेवानो कालमान कहेछे. मूलः– काउण मास कप्पं तछेव ठियाण तीस मग्गसिरे॥ सालंबणाण जेट्ठु, ग्गहोय छम्मासिउं होइ॥७७१॥ अर्थः– ज्यां आषाढ संबंधी मासकल्प कर्यो, पछी क्षेत्रना अनाव थकी ते मास कल्प करीने चउमास पण त्यांज कर्यो अने तेचारमास पूरा थया छता पण जो वरसाद बंध न थाय तो मागसर महीनाना दश दिवश सुधी वाट जोवी तेटला मां पण वरसाद बंध न थाय तो वलीपण बीजा दश दिवस वाट जोवी. एम वाट जोतां जोतां संपूर्ण मागशर मास वीतीजाय. एरीते सालंबन पुष्टकारणना सेवनार यतिने ज्येष्ठ के० उत्कृष्टो छ मासनो अवग्रह थाय.॥ ७७१ ॥

हवे मागशर मास पूरण थये थके वरसाद बंध थवाथी अने रस्तामांनो कादव सुकाइ गयाथी यतिये शुं करवुं ते कहे छे. मूलः– अह अछ पयवियारो, चउपाडि वयंमि होय निग्गमणं॥ अहवावि अनिंतस्स, आरोयण सुत्तनिद्दिठ्ठा॥ ॥७७२॥ अर्थः– अथ के० हवे अछिके० छे जेने पयवियारो के० जावानुं अनुकूलपणु छे. ते चोथा कार्त्तिक मासना पडवाना दीवश पछी अने मागसर मासना पडवानी अगाउ निग्गमणं के० निर्गम न थायज. अहवावि के० अथवा अनिंतस्स के० अणनिकलताने एटले जे विहार न करे तो तेने आलोयण देवानी जे प्रमाणे सिद्धांतमां कहीछे ते प्रमाणे आलोयणा आवे. इहां कोइ कहेशे के एक क्षेत्रे रहेतां थकां पण घणो यत्नापरछे तोपण कुलप्रतिबन्धादिक दोष अवश्य उपजे तेमाटे एक स्थाने वास करवो युक्त नथी. ॥ ७७२ ॥

ते उपरज कहेछे. मूलः– एग खित्तनिवासी, कालाइक्कंतचारिणो जइवि ॥ त

हवि हु विसुद्धचरणा, विसुद्ध आलंबणा जेण ॥ ७७४ ॥ अर्थः- एक क्षेत्रे जे वास करे ते एक क्षेत्रनिवासी एवा जे कालातिक्रांतचारी एटले कालने अतिक्रमिने अर्थात् चतुर्मासादिक कालनुं उल्लंघन करीने कदाचित रह्या. तोपण जे विशुद्ध निर्मल चारित्रना धरनार छे ते विशुद्ध छता शठभावना अभावे करी अदूषित होय. तेथी तेने एवो आलंबनआव्यो जे वृद्धावस्था थइ किंवा जंघाबल परिक्षीण थयो अथवा तथाविध क्षेत्रनो अभाव होय एवा आलंबन जे कारणे थाय. तो एकत्र स्थानके रहे.

हवे आलंबन क्यां जोवुं ते कहे छे. मूलः- सालंबणो पडंतो, अप्पाणं दुग्ग मेवि धारेइ ॥ इय सालंबण सेवी, धारेइ जई असढभावं ॥७७५॥ अर्थः- पडतां थकां जेने आलंबिये आश्रय करिये तेने आलंबन कहिये, ते द्रव्य अने भावना भेदेकरी बे प्रकारे छे. ते वली एकेको पुष्ट अने अपुष्टना भेदेकरी बे प्रकारे छे. तेमां सबल वेली प्रमुख ते पुष्ट द्रव्यालंबन कहिये. अने जेना थकी पडतां थकां घणुं आलंबन न होय एवा भाजना छोडा सरखुं होय ते अपुष्ट द्रव्यालंबन जाणवुं. अने पुष्ट भावालंबन जे तीर्थ अव्यवछेदादिक ते आगल अनंतर गाथा नेविषे कहेशे. तेमज अपुष्टभावालंबन ते जे पोतानी मतिमात्रे करीने उपेक्षा करिये.

हवे गाथार्थ कहे छे सालंबण के० सबल आलंबन जेणे लीधुं छे एवो प्राणी पोतापासे दुग्गमेवि के० खाडा प्रमुख मांहे पडतो थको ते सबल आलंबन ने धारणकरे. तेम सालंबन सेवानो करनार यति ते अशठ मायाये रहित भाव थको आत्माने धरीराखे एटले आत्माने दुर्गतिमां पडतां वारीराखे एअभिप्रायछे.

हवे पुष्ट भावालंबन देखाडे छे. मूलः-काहं अछित्तं अडुवा अहिस्सं, तवोविहाणे सुयउज्जमिस्सं ॥ गणंच नीए सुयसारइस्सं, सालंबसेवी समुवेइ मुक्खं ॥ ७७६ ॥ अर्थः- हुं इहां रह्योछतो जिन शासन संबंधी अछित्तं के० अव्यवछेद करीश, वली इहां रह्यांथकां अमुक एक राजादिकने प्रतिबोध आपी जैनशासनने विषे प्रवर्त्तावीश, अथवा अमुक शास्त्र मूल सूत्र तथा तेनो अर्थ दर्शननी प्रभावना नो करनार छे ते अहिस्सं के० पठन करीश, अथवा तपोलब्धि युक्तपणा थकी, नाना प्रकारना तपने विषे उज्जमस्सं के० उद्यम करीस. वाके० अथवा गणजे गछ ते हुं सूत्रोक्त न्यायेकरीने सारइस्संके० सारिश. इत्यादिक अनंतरोक्त आलंबनेकरी यत्ने कोइएक नित्यवासादिक सेवतो श्रीभगवंतनी आज्ञा ने न उल्लंघतो थको मोक्षपद समुवेइ के० पामे ते कारण माटे तीर्थ अव्यवछेदादिकेज अथवा ज्ञानादिकनी वृद्धि करवी मांहेलुं कोइपण कारण होय तेज आलंबन

लेवुं पण अन्य आलंबन लेवुं नही. अन्यथा तो आवीरीतेछे आलंबणाण नत्थि, लोउजीवस्स अजउ कामस्स ॥ जंजं पेच्छइलोए, तंतं आलंबणं कुणइ.॥१॥७८६॥

अवतरणः—जायाजायकप्पत्ति एटले जातअने अजात कल्पनुं एकसोने पांचमुं द्वार कहेछे. मूलः—जाउ यअजाउ य, डुविहो कप्पोय होइ नायवो ॥ एकेक्कोवि य डुविहो, समत्तकप्पो य असमत्तो ॥७८७॥ अर्थः— जेनें जातके० होय श्रुतनी संपदानो लब्धात्म एटले लाभ तेना अव्यतिरेकपणाथकी कल्प जाणवो. ते कल्पने जात कल्प कहिये. अने एनाथीजे विपरीत होय तेनें अजातकल्प कहिये. एरीते बे प्रकारे कल्प थायछे. ते वली एकेकना बे बेभेदछे. एक जातसमाप्त कल्प अने बीजो अजातसमाप्तकल्प. तेमज जात असमाप्त कल्प अने अजात असमाप्त कल्प॥७८७॥

हवे जात कल्प अजातकल्प समाप्त कल्पादिकनुं स्वरूप कहेछे मूलः— गीयछजायकप्पो, अग्गियउ खलुभवे अजाउय ॥ पणगं समत्तकप्पो, तदूणगो होइ असमत्तो ॥७८८॥ अर्थः—गीतार्थ पूर्वोक्त अर्थ तेनोजे आचार तेने जातकल्प कहिये. एमज अगीतार्थनो आचार ते अजात कल्प कहिये. ते पांच जण एकठा थाय तेवारें ते समाप्तकल्प कहेवाय, अने पांचथकी ओछा होयं तेअसमाप्त कल्प जाणवो ॥७८८॥

मूलः— उउबद्धेवासासुं सत्तसमत्तो तदूणगो इयरो ॥ असमत्ताजायाणं, उहेण नाकिंचि आहवं ॥ ७८९ ॥ अर्थः— ए पांचनी संख्या कही ते उउबद्धेके० चोमासुं टालीने आठ महिनानेविषे जाणवी. अने वासासुंके० चोमासाने विषे तो एटलुं विशेषछे जे नवानुं आववुं नथाय. ग्लानादिक भावना संभवथकी सातेजणाये करी कल्प समाप्त थाय अने तेथकी न्यूनहोय तो असमाप्त कल्प जाणवो. असमाप्त कल्प अने अजातकल्प साधु तेनेकारणे उहेणके० उत्सर्गें कोइक्षेत्र ते क्षेत्रगत शिष्य भक्त पान वस्त्र पात्रादिक आगम प्रसिद्ध किंचि आहवंके० कांइ छे नही.॥

अवतरणः—परिठवणुच्चार करण दिसत्ति एटले अचित्त साधुने परिठववानुं अने उच्चार करवानी दिशिनुं एकशो ने छठुं द्वार कहेछे. मूलः—दिसा अवर दक्खिणाय, दक्खिणाय अवराय दक्खिणा पुवा अवरुत्तराय पुवा, उत्तर पुवोत्तराचेव, ॥७९०॥ अर्थः—एक नैरुतकोण, बीजी दक्षिणदिशि, त्रीजी पश्चिमदिशि चोथी अग्निकोण, पांचमी वायव्यकोण, छठी पूर्वदिशि, सातमी उत्तरदिशि, अने आठमी ईशानकोण.

मूलः— पउरन्न पाण पढमा, बीया ए भत्तपाण नलहंति ॥ तइयाए उवहिमाइ, नत्थिचउत्थीअसज्झाउ ॥ ७९१ ॥ अर्थः— जे क्षेत्रे मास कल्प वास कस्यो होय, अथवा चउमास कल्प वास साधुये कस्यो होय तेणे मृतक साधु परठववा

ने अर्थे महा स्थंमिल आसन दूर मध्य लक्षण त्रण जोवां. तेनुं प्रयोजन आवी रीतेछे, जो कदाचित पहेले स्थंमिले खाडो पाणीथी नस्यो होय तिहां हरित काय उपने थके ते स्थंमिल कीडीप्रमुखे संसक्त थयो होय अथवा त्यां कोइ गाम आवी वस्युं होय, किंवा साथरह्यो होय, तेथी व्याघात थयो तो बीजे स्थंमिले जइ परठवणा करवी. त्यां पण ए पूर्वोक्त अथवा बीजो कोइ व्याघात थयो होय तो त्रीजे स्थंमिले परठविये. तिहां दिशिनो विभाग आवीरीते छे पउरसके० प्रचुर घणा अन्न पान वस्त्र पात्रनो पहेलिदिशिये लाभथाय. ए पउरसपाण पढमा ए गाथाने अनुक्रमे कहेछे. बीयाके० बीजी दक्षिणदिशि तथा नैरुतकोण प्रमुखे परठवतां जे थाय ते कहेछे. बीजी दक्षिणदिशिये परठवता भक्त पाननो पाछला साधुउने लाभ न थाय. तइयाके० त्रीजी पश्चिम दिशे परठवता उपधि प्रमुखनी प्राप्ति नथाय. चोथी दिशि दक्षिण पूर्वनीव चमां अग्निकोणे परठवता पछवाडे सज्झायनो अभाव जाणवो. ॥ ७ए१ ॥

मूलः— पंचमियाइ असंखडि, छठिए गणस्स भेयणं जाण ॥ सत्तमियागेलन्नं, मरणं पुण अठमे बिंति ॥ ७ए२ ॥ अर्थः— पांचमी दिशि वायुकोणे परठववाथी मांहोमांहे असंखडिके० कलहथाय. छठी पूर्वदिशाये परठवतां गणस्सके०गछमां परस्पर भेदथाय. सातमी उत्तरदिशाये, परठवतां ग्लानपणुं अने रोगनी उत्पत्ति पछवाडेना साधुउने थाय. आठमी दिशी ईशानकोणछे त्यां मृतक साधु परठवतां बीजो कोइ साधु मरण पामे. एवुं शास्त्रना जाण पुरुषो कहेछे. अहीयां पूर्व पूर्व दिशिने अभावे उत्तरोत्तर दिशा जे पूर्व दिशा तेनेविषे परठववानुं कह्युं ते पउरन्नके पाण लाभे जाणवुं अने जो पूर्वदिशिना सद्भावे ते दिशिमां परठवानुं मूकी बीजी जे जे दिशिमां परठवे तो ते ते दिशाना पाछलनाने दोष कह्या ते दोष थाय ए त्रण गाथायें परठवणानी दिशिकही. ॥ ७ए२ ॥

हवे उच्चार करवानी दिशि वखाणेछे. मूलः— दिसि पवण गाम सूरिय, छायाए पमक्षयाण तिस्कुत्तो ॥ जस्सोग्गहोत्ति काउण, वोसिरे आयमेक्षावा.॥७ए३॥ अर्थः— एमां पहेली विधितो आमछे के मार्गे जतां बे जणा जोडा जोड साथे न जाय तथा उतावला न जाय मांहोमांहे वात करता न जाय. अने विकथा रहित त्यांजइ बेसी पछी निर्लेपनाने अर्थे पुरीष त्यागनेने माटे माटीनो दगडो प्रमुखलियें अने जो तेना उपर कीडी प्रमुख होय तो ते माटीना दगडा प्रमुखने राखवाने अर्थे प्रस्फोटना करे त्यांथकी उठी निर्दोष थंमिले जइ त्यां पण उंचो वृक्ष पर्वतादिक उपर कोइ माणस होय, तथा नीचुं खाडा गुफादिकमां कोइहोय, अने ती

वें वृक्षादिकने नीचे आरामने अर्थें कोइ रह्यो होय एम उंचो नीचुं अने तीर्छु सर्व जोइने गृहस्थ प्रमुखनी दृष्टीने अनावे प्रेक्षित प्रमार्जित स्थंण्डिलें जइ अणु जणाह् जस्सावगाहोत्ति एवो उच्चार करी बेसतो थको संडासा ए पूंजीने दिशि प्रमुख जोइने वडीनित वोसिरावे.

हवे गाथानो अर्थ करेछेः—दिशि पूर्वादिक आगल कहेशे अने पवन ग्राम सूर्य एट लाने पुठ करवी नही, छाहेडी वालियें अथवा बेसताथका पोतानी छाहेडी ते मल उपर आवे पछी पमज्जियएके० त्रणवार पूंजी उपलक्षणथी स्थंण्डिलो जोइ ने अणुजा णह् जस्सावग्गहोत्ति एम कहीने संज्ञा वोसिरावे सुचिने निमित्ते आचमन लिये.

हवे प्रमुख दिशि जणाववाने अर्थें गाथा कहेछे. मूलः—उत्तरपुव्वापुज्जा, जम्माए निसायराअहिवडंति ॥ घाणारिसाय पवणे, सूरियगामे अवस्सोउ ॥७९४॥ अर्थः— उत्तर अने पूर्व ए वेहु दिशि लोकमांहे पूज्यछे तेथी तेने पुठ देतांथकां लोकमांहे अवर्णवाद थाय. जम्माएके० दक्षिण दिशि थकी निशाचरके० पिशाचादिक देवता अहिवडंतिके० उत्तरदिशाये आवे ते सामा आवतांने पूठदेता तेमने क्रोध उत्प न्न थाय, तेथी जीवतव्यनो विनाशकरे. तेमाटे रात्रे दक्षिण दिशा ने पुठ आपवानुं वर्जन करिये. उक्तंच. यतः उच्चे मूत्रपुरिषेच, दिवा कुर्यादुदङ्मुखः॥रात्रौ दक्षिणतश्चै व तथा चायुर्न हीयते ॥ १ ॥ इति. घाणाके० वायुने पुठ देतांथकां अशुचगंध न सिकामांहे प्रवेशकरे. तेथकी हरसनो रोग उत्पन्न थाय अने लोकोपण दूषवे,अने कहेके ए एवाने योग्य जे तेथी वायुने पुठ देइ वेसेछे. वली सूर्य अने ग्राम. जिहां पोते मासकल्पादि रह्याछे, तेने पुठ करतां थकां लोकमांहे एवो अवर्णवाद थाय के ए कांइ जाणतोज नथी, केमके लोकमां उद्योतनो करनार एवो सूर्यछे तेने पुठ करी वेसेछे एम लोकोकहे तथा जे ग्राममां वास करिये ते गामने पुंठकरी केम वेसीये? इत्यादिक लोकाचार मात्र पण ए जाणतो नथी. ॥ ७९४ ॥

हवे छाया वखाणेछे. मूलः—संसत्त गाहणी पुण, छायाए निग्गयाए वोसिरइ॥छाया सइ उण्हंमिवि, वोसिरिय मुहुत्तयं चिठे ॥ ७९५ ॥ अर्थः— संसक्त शब्दे बेइंद्रिय जीवेकरी सहितछे ग्रहणी एटले कुक्षीजेनी, ते राखवाने अर्थें फूल फलना न आ पनारां वृक्षोनी छाया निकलीहोय त्यां बेसे अने छायडी हजी न निकली होय ने मध्यान्हे संज्ञा बाधाहोय तो उष्णतामां पण पोताना शरीरनी छाया पुरीषनी उ पर करी संज्ञा वोसिरावे ते संज्ञा वोसिरी पछी मुहूर्त्तमात्र त्यां छांयडोकरी बेसी

रहिये. केमके तेटलो काल वीत्यापछी ते मलना जीवो पोताने योगेज परिणत थाय. अन्यथा उष्णताना योगेकरी ते जीवोने घणीज बाधा थाय. ॥ ७९५ ॥

हवे ते वखत पोतानां उपकरण केवीरीते धरवा ते कहेछे. मूलः— उवगरणं वामजाणु, गंमी मत्तोय दाहिणेहत्थे ॥ तत्थण्णवपुछेतिहि आयमणं अदूरंमि ॥ ॥७९६ अर्थः—उपकरणमां झांझो, ढंगो ए डावी साथल उपर राखे, अने मात्रक पाणीनो गामडो ते जमणा हाथनेविषे राखे,डावे हाथे माटीनुं दगडु लुछवाने अर्थे राखे तेनाथी त्यांलुंछणुकरी सुचीकरे तिहां लुंछणुकरी पछी त्रणवार शौंचने अर्थे आचमनकरे ते अदूरके० ढुंकडुज आचमनकरे परंतु अलगुं आचमन नकरे. जो करे तो उड्डाह थाय. कोइ जाणेके ए शौच करतोनथी इति गाथा चतुष्टयार्थ

अवतरणः— अठारस पुरिसेसुत्ति एटले अढार पुरुषो दीक्षाने अयोग तेनुं एकशो ने सातमुं द्वार कहेछे. मूलः— बाले बुड्ढे नपुंसेय, कीवे जड्डेय वाहिए ॥ तेणेरायावगारीय, उमत्तेय अदंसणे ॥ ७९७ ॥ अर्थः— प्रथम जन्मथकी मांडीने आठवर्ष पर्यंतनी उमर वालाने बालक कहिये. तेने दीक्षा आपवीनही. क्यांएक वली गर्भमां रह्यो ते दिवसथी आठवर्ष गण्यांछे, एम श्री निसीथ चूर्णि प्रमुखमां कह्योछे. अने श्रीवयरस्वामि छ मासना हता तेवारे चारित्रनो परिणाम थयो. तेवी वात क्वचितज बनेछे माटे एथी व्यभिचार जाणवो नही.

बीजो बुढेके० वृद्धते सित्तेर वर्षनी उमर पछी नो जाणवो. इहां इंद्रियादिकनी न्यूनता कोइएकने वेलासर थायछे. तेथी कोइक साठ वर्ष पछी वृद्ध कहेछे. एवा वृद्धने चारित्र संबंधी समाधानादिक करतां दुर्लभ थाय. यदुक्तंः— उच्चासणं समीहइ, विणयं नकरेइ गवमुव्वहइ ॥ बुड्ढो नि दिक्खियव्वो, जइजाउ वासुदेवेण॥१॥ अन्यथा शो वर्षना आयुष्यथी उपरांत जेवारे आयुष्य थाय तेवारे ते आयुष्यना वर्षनी संख्याना दश भाग करिये तेमां आठमा नवमा अने दसमा, भागनेविषे वर्त्तमान थको वृद्ध कहेवाय.

त्रीजो नपुंसक ते पुरुष ने स्त्री बन्नेना उपर अभिलाषनो करनार. तेमां पुरुषने आकारे पुरुष नपुंसक अने स्त्री निमित्रणा मात्रे जाणवी, अथवा असंवृत स्त्रीना अंगोपांग देखीने तेना शब्दादिक सांभली कामाभिलाष उत्पन्न थयाथी रही शकेनही तेवाथकी घणा दोषोनो संभव थाय. माटे एवाने दीक्षा न आपवी.

चोथो पुरुषाकृति पुरुष क्लीब तेने वेदनो उदय घणो थाय, अथवा पुरुषवेदना उदयथी बलात्कारे स्त्रीने आलिंगनादिक करे तेवो क्लीब पण उड्डाहकरे.

पांचमो जड तेत्रणप्रकारेछे. एक नाषाजड,बीजो शरीरजड, अने त्रीजो करणजड. तेमां वली नाषाजडना त्रणनेदछे. एक जलमूक, बीजो मन्मनमूक. त्रीजो एलमूक, तेमां जे पाणीमां बुडतानीपरे बुडबुडाटकरतो थको बोले ते जलमूक जाणवो. अने जे वचन बोलतो थको खंचाय ते मन्मनमूक, अने जे एलके॰बोकडानीपरे अव्यक्त मूकपणा थकी शब्दमात्र बोले ते एलमूक. ए प्रमाणे नाषाजड त्रण प्रकारे कह्यो. हवे शरीरजड ते जे विचरतां तथा वांदणा प्रमुख क्रिया कलाप करतां अति स्थूलपणा थ की असक्त थाय तेने शरीरजड कहिये. अने जेने शिखामण आपतां छतां जडपणा ने योगे शिखामण लागे नही तेने करणजड कहिये. ए त्रण जातीना जडमां नाषा जड जे छे ते ज्ञान लेवाने असमर्थ, माटे एने दीक्षा न आपवी. अने शरीरजड तो मार्गे गमन करतां तथा नक्त पानादिक लेइ आववाने असमर्थ थाय, माटे एने दीक्षा आपवी नही. वली ते जाडो होय माटे जाडाने काख प्रमुख मांहे कोह्यो परसेवो होय ते धोतांथकां कीडी प्रमुखना विनाश थकी संयम विराधना थाय, वली लोक पणं निंदाकरे के ए घणा अन्ननो नक्षण करनारोछे. जो वधारे अन्न न खातो होय तो आवुं पुष्ट शरीर केम होय? एनुं गलुं फुली गयुं छे ते कांइ कंठमालाथी फूल्युं नथी एवुं लोक बोले. वली तेने श्वास घणो चडतो होय तेथी सर्प, जल, अने अग्निप्रमुख ढुंकडां आव्याथी दूर जइ शके नही. अने जे करण जड होय तेने समिति गुप्त्यादिक शिखवाडिये तो शिखे नही तेथी एने दीक्षा न देवी.

छठो वाहियके॰नगंदर,अतिसार,कोढ,फेफरु,अने हरस,ज्वर प्रमुखरोगसहित होय तेनी चिकित्साकरतां संयम विराधना थाय, स्वाध्याय पलिमथादिक दोषनो संनव थाय.

सातमो तेण शब्दे चोर जे खातरनो पाडनार अने वटेमार्गुने लुंटनार होय, एवाने दीक्षा आपवाथी गछने वध बंधन ताडनादिक कदर्थना थाय माटे दीक्षा न आपवी.

आठमो रायावगारी एटले राजाना नंमार अंतःपुर, शरीर, तथा राजाना कुंवर प्रमुखना डोहनो करनार जे होय ते राजापकारी कहेवाय. तेने दीक्षा आपवा थ की राजा देशथी बाहेर काढी मूके अथवा राजा रीशाणोथको मार पण अपावे. इत्यादिक दोषोनो संनव थाय.

नवमो उन्मत्त, गांमो ते जे यक्षादिकने वशथयेलो होय अथवा प्रबल मोह ना उदयथी परवश थयो होय, तेवा उन्मत्तने दीक्षा आपवे करी यक्षादिक थकी कष्टनो संनव थाय तेथी सद्या ध्यान संयमादिकनी हाणी थाय.

दशमो अदर्शन, एटले जेने दर्शन दृष्टि नथी तेने अदर्शन आंधलो कहिये, अ

ने इहां स्त्यानर्द्धि निद्रावालो पण सम्यक्त्व दर्शनना अभावथकी एहज व्युत्पत्ति. तिहां ए पण लेवो एमां दूषण कहेछे ते मंदाक्षीने दृष्टी रहित पणा लगीने तिहां तिहां संचार करतो जीवविराधना करे तेथी संयम विराधना थाय. तेमज विषम कील कंटकादिक उपरपडताथकाने आत्मविराधना थाय. वली थीणधी निद्रायुक्त जे होय ते श्रावकादिकना उपर रीसायो थको मारणादिक पण करे तेथकी घणा दोष उपजे.

मूलः— दासे डुठेय मूढेय, अणत्ते जुंगिएइय ॥ उब्बद्धएय नयए, सेहनिप्फ डियाइय ॥ ७९७ ॥ अर्थः— अग्यारमो दासेके० बीजानी दासीनो उपनो अथवा डुकाल प्रमुखे वेचातो लीधेलो अथवा लेणामां आव्यो होय अने ते लेणदार ना घरमां रहेतो होय ते दीक्षा आपवाने योग्य नही. केमके दासने दीक्षा आपतां ते नो धणी लेइजाय. वढवाड थाय, तेथी माठी केवल थाय.

बारमो डुष्ट, ते बे प्रकारनाछे, एक कषाय डुष्ट, अने बीजो विषय डुष्ट. तेमां जेम गुरुये लीधीजे सर्षवनी भाजी तेना व्यतिकर थकी रीसाएला साधुनी परे उत्कृष्ट कषाय जेमां होय ते कषाय डुष्ट. तेमज जे परस्त्री उपर अति गृध होय ते विष य डुष्ट. ए बेहु संक्लिष्ट अध्यवसायथकी दीक्षाने अयोग्यछे.

तेरमो, जे मूढ होय ते स्नेहादिके करी परवश चित्त थको यथावस्थित वस्तु तत्वनो अजाण होय, अने भगवंतनी दीक्षा तो विवेकनुं मूलछे, तेमाटे अज्ञानी कृत्याकृत्यादिक विवेक विकलपणाने योगे न जाणे; माटे ए कार्य साधक न थाय.

चउदमो, अण त्ते, राजा किंवा शाहुकारना सोना प्रमुखनो धारनार ते ऋणा र्त्त कहिये. तेने दीक्षा आपवाथकी राजादिकोए करेलुं ग्रहण अने आकर्षणादि कदर्थना, इत्यादिक दोष जाणवा.

पन्नरमो जुंगिए, एटले जाति, कर्म, अने शरीर तेणे करी दूषित होय ते जुंगित त्रण प्रकारे जाणवो, तेमां जे कोली सूजी मोची धोबी प्रमुख अछेप कुलना ते जाति जुंगित, अने जे अकार्य माठाकामना करनारा कसाइ प्रमुख ते कर्मजुंगित जाणवा. एमज जे कर, चरण, करण, नासिकादिके रहित, तेमज वली कूबडा, वामणा, पां गला, ढूंठा, ए सर्व शरीरजुंगित जाणवा. ए त्रणे जुंगित ने दीक्षा आपवा थकी लोकमां अवर्णवादनो संभव थाय; माटे दीक्षा न आपवी.

सोलमो, अर्थग्रहणपूर्वक विद्यादिक ग्रहण निमित्ते अथवा एटला अमुक दिवस सुधी हुं तमारो थइ रहीश एवीरीते जे पराधीन थायछे तेने अवबद्ध जा णवो. तेने दीक्षा देतां थकां कलहादिक दोष थाय.

सत्तरमो, जयएति ते जे महीनो ठेरावी कोइक धनवंतना घरनेविषे आटला दिवस हुं ताहरी चाकरी करीश; एवी बोलीकरीने दिवसोनी संख्या बांधी रह्योछे-. अने ते धनवंतना हुकममां प्रवर्त्तेछे तेने नृतक कहिये. तेवांने दीक्षा देतांथकां ते जेनो पगार खायछे ते महीनो आपनार शाहुकार साधु उपर अत्यंत अप्रीति धारणकरे. इत्यादिक दोषनो संनव थाय.

अढारमो सेहनिप्फेडिया एटले जे दीक्षा लेवाने इछेछे ते शिष्य तेहनी निप्फेडिया एटले चोरी. इहां ए नावजे मातपिताना मोकल्याविना दीक्षा आपिये तो तेनां मात पिताने कर्म बंधनो संनव थाय, अने साधुने अदत्तादानादिक दोषनो संनव थाय. एरीते ए अढारे पुरुपाकार छतां पण दीक्षाने अयोग्यछे इति गाथार्थ

अवतरणः– वीसंइत्रीसुंति एटले वीस स्त्रीने विषे पण दीक्षाने अयोग्य छे तेनुं एकशो आठमुं द्वार कहेछे. मूलः– जे अघारस नेया, पुरिसस्स तह् ञिया ए तेचेव ॥ गुव्विणिसबालवछा, डुन्निवि इमे हुंति अन्नेवि॥७एए॥अर्थः–जे अढार नेद पुरुषना कह्या तेवीजरीते स्त्रीना आकारनी धरनार स्त्रीना पण तेह्ज अढार नेद जाणवा. अने तेमां वीजा वे अधिक करिये. ते कहेछे. एक गुर्विणी, एटले गर्नवती अने बीजी सबालवछा एटले न्हाना बालके सहित होय. तेना दोष लोकोपवादादिक अने स थाय व्याघातादिक प्रसिद्धछे. एरीते डुन्निविके० ए वे नेद मेलवतां वीश थायछे.

अवतरणः– दसनपुंसेसुत्ति एटले दश नपुंसक दीक्षाने अयोग्य तेनुं एकसो नवमुं द्वार कहेछे. मूलः–पंमए वाइए कीवे, कुंनी ईसालुयत्तिय ॥ सौणी तक्कम्म सेवीय, पक्खिया पक्खिएइय ॥७००॥ सोगंधिएय आसत्ते, दस एए नपुंसगा ॥ संकिलिठित्ति साहूणं पव्वावेउं अकप्पिया ॥७०१॥ अर्थः–एक पंमक, बीजो वातिक, त्रीजो क्लीब, चोथो कुंनी, पाचमो ईर्षालुं, छठो शकुनी, सातमो तत्कर्मसेवी, आठमो पक्खिकापक्खिक, नवमो सौगंधिक अने दशमो आसक्त. ए दश नपुंसकना मनना परिणाम माठा होयछे माटे एमने दीक्षा आपवी साधुने कल्पे नही.

हवे पंमक एटले नपुंसकनां लक्षण कहेछे. उक्तंच. महिलासहावो सरवन्न नेउ, मेढं महंतं मउयाइ वाणी ॥ ससद्दगं सुत्तमफेणगंच, एयाणि छप्पंमग लक्खणाणि ॥ १ ॥ अर्थः– यद्यपि पुरुपाकारछे तोपण महिलाके० स्त्रीनो स्वनावछे. ते आवीरीते के तेनी गति मंद थाय, मार्गमां जातो थको शंकापणे पुठे जोतो जाय. तेनुं शरीर अतिसुकुमाल अने शीतल थाय. तथा स्त्रीनीपरे गलह्बो देइ पेट उपर तरछो मावो हाथ राखी ऊपर जमणा हाथनी कुणी देइ जम

एा हाथे गाल देइ अथवा घणो हाथ उलालतो थको वातकरे. केम्म उपर हाथ राखे अने प्रावरणने अजावे स्त्रीनीपरे बांहे करी रुदय ढांके. बोलतोथको सवि ज्रमणपणे पांपण हलावे. केशबंधन तथा वस्त्र प्रमुखनुं पहेरवुं प्रमुख ते स्त्री नी परे करे. स्त्रीनां आजरण प्रमुख पहेरवानो घणो हर्ष करे. स्नानादिकनुं एकां ते आचरण करे. पुरुषोनी सजामां जयसहित शंका पामतो संचार करे. स्त्रीउ मांहे निशंकपणे तेमनु जे रांधवुं, खांमवुं, दलवुं प्रमुख कार्यछे ते करे. इत्यादिक महिलाने सजावे पंमकनुं लक्षण कह्युं. ए प्रथम लक्षण. बीजुं स्वर अने वर्णमां जेद. तेमां स्वर ते साद अने वर्णते शरीर संबंधी, एना उपलक्षणथकी गंध रस स्पर्श ते पण स्त्री पुरुषनी अपेक्षाये विपरीतथाय. त्रीजुं मेढंमहंतं एटले जेनो मेंढथ शब्दे पुरुषाकार ते महंत शब्दे महोटो थाय. चोथो स्त्रीनीपरे मृडु जेनी सुकुमाल वाणीथाय. पांचमो सद्दगं एटले जेनो शब्देकरी सहित स्त्रीनीपरे मूत्र प्रस्रवण थाय. छठो वली फेनके० फीणरहित मूत्रथाय ए ब पंमकनां लक्षण कह्यां.

बीजो वाइये जेने वात होय ते वातिक जाणवो. इहां ए जाव के जेने पोतानी मे ले अथवा वायुयेकरी पुरुषाकार स्तब्ध होय ते स्त्री सेवाकस्याविना वेद धरी शके नही.

त्रीजो, क्लीब जे असमर्थ ते चार प्रकारेछे. दृष्टिक्लीब शब्दक्लीब, आलिंगन क्लीब, अने निमंत्रण क्लीब. तेमां जे विवस्त्र स्त्री देखी क्षोज पामे ते दृष्टिक्लीब. स्त्री नो शब्द सांजली क्षोज पामे ते शब्दक्लीब, स्त्रीने आलिंगन कर्युं तथा निमंत्रण कर्युं बतां व्रत धरी शके नही ते अनुक्रमे आलिंगनक्लीब. तथा निमंत्रणक्लीब.

चोथो कुंजी एटले जेहना मोहोत्कटपणाए करीने सागारिक अने वृषण ए कुंज एटले घडानी परें स्तब्ध थाय तेने कुंजी कहेछे.

पांचमो ईर्षालु ते प्रतिसेवन करेली स्त्री देखी घणी रीस करे अथवा जेने रीस उपजे ते ईर्षालु जाणवो.

छठो सोणी के० शकुनि ते चडकला पक्षी विशेषनी परे उत्कृष्ट वेदपणा थकी निरंतर स्त्री सेवानेविषे प्रसक्त होय.

सातमो तक्कम्मसेवी एटले जे मैथुन सेवा करी पछी वीर्य निशरवाथी वटोत्क टपणा ने लीधे कुतरानी परें ते वीर्यने चाटे इत्यादिक निंद्य कर्मोथकीज पोताने सुख मानी लिये ते तत्कर्मसेवी जाणवो.

आठमो पक्केके० चांदणे पखवाडे जेने मैथुन नो अधिक अजिलाष थाय, तेमज अपक्के एटले अंधारे पखवाडे मैथुननो अल्पअजिलाष थाय, ते पक्षापक्षीक.

नवमो पोताना लिंगमां सुगंध मानतो तेनी गंध लिये ते सोगंधिक.

दशमो आसक्त, एटले जे वीर्य पड्यापछी पण स्त्रीने विशेपे आलिंगन आपी तेनी कक्षा प्रमुखमां प्रवेशकरे ते दशमो आशक्त कहिये.

एनुं जाणपणुं मित्रादिकना कथन थकी थाय. संकिछके० एने नगर दाह समान काम होय. अध्यवसायपणा थकी ने स्त्री पुरुष सेवा आश्रयथी एनुं अ त्यंत मलिन चित्त होय छे. तेमाटे ए साधुने दीक्षा देवासारु अकल्पनीयछे. एमां जे पुरुपने आकारे नपुंसक ते पुरुषमांहे गण्या अने स्त्रीने आकारे नपुंसक ते स्त्रीमां गण्या. इहां जे नपुंसकने आकारे होय ते नपुंसक जाणवा. एटलुं विशेषछे

हवे ए नपुंसकना सोल नेदछे तेमां दश नेद दीक्षा आपवाने अयोग्य. छे ते कह्या. हवे छ नेद दीक्षा आपवाने योग्य छे ते कहेछे. उक्तंच. वद्धिए चिप्पिए चेव, मंतउ सहिउवहे ॥ इसिसत्ते देवसत्ते, पद्यविक्कनपुंसए ॥ १ ॥ अर्थः– जेनां राजाये अंतः पुरनी रखवाली करावववाने अर्थे बाल्यावस्थामां वृषण गलाव्याहोय ते वद्धिक. बी जो चिप्पिएके० जे जन्मतांज अंगुठा अंगुलीए वृषणनुं संमर्दन करी नही सरखा करे ते चिप्पित कहिये. एरीते कस्या थकीएने नपुंसक वेदनो उदय थाय. तेमज त्रीजो तथा चोथो कोइकने मंत्रनी शक्तिये अने उसहके० औषधने प्रनावे पुरुषवेद अथवा स्त्री वेदे उवहेके० हणायो छतो तेने नपुंसक वेदनो उदयथाय. पांचमो इसिसत्तेके० इसिजे रुषि प्रमुख ते रीशाणो थको कोइकने शाप दीधो होय के महारा तपना प्रनावथी अमुक नपुंसक थाजो. इत्यादिक शाप नपुंसकपणुं जाणवुं. छठो एवी री ते वली कोइ देव नवनपत्यादिकना शापे करी त्रीजा वेदनो उदय थाय. एवा न पुंसकने निपेध संबंधी लक्षणनो असंनव छे तेथी दीक्षा आपवी योग्यछे. ॥ ८०१ ॥

अवतरणः– विगलंगंति एटले विकलेंद्रिनुं एकशोने दशमु द्वार वखाणेछे. मूलः– हछे पाए कन्ने, नासाउठेविवज्जिए चेव॥ वामणग वडनखुज्जा, पंगुल कुंटा य काणाय ॥ ८०२ ॥ अर्थः– जे हाथ, पग, कान, नासिका, होठ, एणेकरी व र्जित होय तथा वामणगके० जे हाथ पगादिक अवयवहीन होय तेने वामणो कहिये, वली जेने आगल अथवा पाछल खुंध निकली दोय तेने वडन कहिये अने जे एकपासे हीन होय तेने कुबडो कहिये. जे पगे चाली शके नही तेने पांगलो कहिये. जे ना हाथ न्यून होय तेने टूंगो कहिये. एक आंख जेने होय तेने कांणो कहिये. एवा ने दीक्षा आप्या थकी प्रवचननी निंदा रूप दोष थाय माटे एवाने दीक्षा आपवी नही

हवे जो कोइ व्रत ग्रहण कस्यापछी विकलांग थाय ते संबंधी कथन करे छे.

मूलः—पव्वावि होंति वियला, आयरियत्तं न कप्पए तेसिं॥सीसो ठावेयव्वो, काणग म हिसोव नन्नंमि ॥ ७०३ ॥अर्थः— पव्वाविके० जे दीक्षालीधापछी विकलके० हीनां ग थाय तो तेने शिष्यपणामांज राखवो पण तेने आचार्यपणु कल्पे नही. अने जो कदाच कर्मनी विचित्रगतिपणाना योगे आचार्यपद पाम्यो अने पछी विकलांग थाय तो ते पोताना पाटे गुणोपेत शिष्यने स्थापीने पोते जेम काणगके० चोरेलो महिष (पाडो) एनो एवो अर्थ के जेवो चोरेला पाडाने कोइ न देखे ते सारु गुफानी अंदर किंवा नगरनी बहार एकांत स्थलमां किंवा वनमां गुप्त स्थले राखे छे ते म एने पण प्रवचन हीलना जिन आज्ञाभंगादिक दोषना प्रसंगथकी एकांतेज रहेवुं. परंतु ए आचार्यनुं जे कार्यछे ते सर्व स्थविर करे इति गाथा द्वयार्थ. ॥ ७०३ ॥

अवतरणः— जंमोल्लंजइकप्पंवत्थंति एटले जेटला मूल्यनुं वस्त्र यतिने कल्पनी य होय तेनुं एकशो ने अग्यारमुं द्वार कहेछे. मूलः—मुल्लजुअं पुण तिविहं, जहन्नयं मज्झिमं च उक्कोसं ॥ जहन्नेणट्ठारसगं, सयसहस्सं च उक्कोसं ॥ ७०४ ॥ अर्थः— मो ल्यकरीने युक्त जे वस्त्र ते त्रण प्रकारेछे. ते जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्ट ना भेदथ की जाणवां. तेमां जघन्य ते अढार रूपक अने उत्कृष्ट ते एक लक्ष प्रमाणरूपक ना मूलनुं अने तेनी वचमांनुं ते मध्यम जाणवुं. एमां जघन्य, उत्कृष्ट अने म ध्यम ए त्रणे प्रकारना वस्त्र साधुने कल्पे नही. परंतु ए त्रणमां जघन्य करतां प ण थोडा मूल्यनुं वस्त्र साधुने कल्पे. ॥ ७०४ ॥

हवे कोनो केटला रूपकनो मान होय ते कहेछे. मूलः— दोसाभरगादीविच्चगाउ सोउत्तरा वहो एक्को ॥ दोउत्तरावगा पुण, पाडलिपुत्तो हवइइको॥ ७०५ ॥अर्थः— द्वीपते जे इहां सौराष्ट्रदेशमांहे दक्षिणदिशिये योजनमात्र समुद्र अवगाहीने रह्योछे ते द्वीप संबंधी जाणवो. ते बिहुं साभरका एटले बे रुपकनुं नाणुं होय तेज उत्तरार्द्धनो एक रूपक थाय अने ते उत्तरपथसंबंधी बिहुं रूपक स हित थाय तेवारे पाडलीपुरनो एक रूपक साभरक नाणुं थाय.

हवे प्रकारांतरे रुआनो मान कहेछे. मूलः—दोदक्खिणावहोवा, कंचीए नेलउ सड गुणाउ ॥ एक्को कुसुमनगरउ, तेण पमाणं इमं होइ॥ ७०६ ॥ अर्थः—अथवा प्रकारांत रे दक्षण पथ संबंधी बे रूपके कांची नगर संबंधी नेलउके० रूपक एकनाणुं थाय ते रूपक डुगुणके० बमणो करिये तेवारे एक कुसुमनगर पाडलीपुरनो रूपक ते नाणुं थाय, ते रूपकने प्रमाणे इहां वस्त्रनुं प्रमाण जाणवुं. ॥७०६॥

अवतरणः— सेज्जायरपिंडोत्ति एटले सिद्धांतरना पिंडनुं एकसो ने बारमुं

द्वार कहेछे. मूलः– सेज्जायरो पहूवा, पहुसंदिठाय होइ कायव्वो ॥ एगअणेगेयपहूप हुसंदिठोवि एमेव ॥७०७॥ अर्थः–सज्जा शब्दे साधुने आप्युं जे उपाश्रय तेणेकरीने तरे तेने सज्जातर कहिये. ते घरनो धणी अथवा घरधणीये बीजा कोइने प्रमाण करी आप्युं होय तेणे त्यां सज्जातर कीधुं होय, ते एकने आप्युं होय अथवा घणाने आप्युं होय तो तेना प्रजुपणे एक होय, अथवा अनेक पण होय. संदिष्ट पणे एक अनेक होय. एज अर्थ विशेषे कहेछे. ॥ ७०७ ॥

मूलः– सागारियसंदिठो, एगमणेगे चउक्कजयणाउं ॥ एगमणेगावज्जा, णेगेसुय ठावए एगं ॥ ७०८ ॥ अर्थः– सागारिक शब्दे उपाश्रयनो स्वामि तथा बीजो तेध णीये संदिष्ट. ए बेहु एकने अनेक थाय. इहां चतुर्भंगनी जजनाछे ते आवी रीते. १ एकप्रजु एकप्रजुसंदिष्ट २ एक प्रजु अनेक प्रजुये संदिष्ट ३ अनेकप्रजु एकप्रजुए सं दिष्ट ४ अनेकप्रजु अनेकप्रजुसंदिष्ट. इहां एक पण अने अनेक पण वर्जवोज इहां अपवाद कहेछे. जो णेगेसुयके० अनेक सज्यातर थाय एटले संघ समुदाय मलि उपाश्रय कराव्यो होय, ते इहां अपवादपदे एगेके० कोइ एक ते मांहेला वडे राने सद्यातर स्थापेछे. अने अनेराथाकताने घरेजिक्षा लियेछे ए जावना प्रसिद्धछे.

हवे सिद्यातरक देखाडे ते कहेछे मूलः– अन्नछवसेऊणं, आवस्सगचरिममसु हिंतुकरे ॥ दोसुवितराजवंती, सछाइसु अन्नहा जयणा ॥ ७०९ ॥ अर्थः– अनेरे गामे अथवा साथमांहे वसेऊणंके० सुइने आवस्सगके० पाछली रात्रनुं पडिक मणुं अनेरेस्थाने करे तो बे सद्यातर थाय. एटले एकतो जे स्थानके रात्रेसूता ते अने बीजो जिहां पाछली रात्रनुं पडिकमणुं कर्युं ए बेउ सद्यातर थाय. आ दि शब्दथकी चोर धाडना जयनो परिग्रह थायछे. अन्नहाके० अन्यथा प्रकारे ज जना सद्यातरनी जाणवी. सद्यातरनी विकल्पना ते जे घरमां रह्यो ते अथवा अनेरो सद्यातर थाय तेहज जजना आगली गाथाये कहेशे. ॥ ७०९ ॥

मूलः–जइजग्गंति सुविहिया,करंति आवस्सयंतु अन्नछ ॥ सेज्जायरोनहोई, सुत्तेवक एव सोहोई ॥७१०॥ अर्थः– सुष्टुके० जलुंछे जेनुं विहितके० अनुष्ठान तेने सुवि हित कहिये. ते रात्रीना चार पहोर जागरण करे अने जागीने अन्यस्थानके प्रजा तनुं पडिकमणुंकरे तो जिहां जाग्यो ते सद्यातर न होय. अने जिहां सुतो होय अथवा प्रजाततनुं पडिकमणुं करे ते सद्यातर थाय. अने जो उपाश्रय न्हानो होय अने साधुउ बे त्रण स्थानके रहेला होय तो तेमां जे स्थले आचार्यादिक वडेरो रहे तेज सद्यातर होय पण बीजा सद्यातर न होय. ॥ ७१० ॥

परदेशे गयेलो उपाश्रयनो स्वामि सद्यातर थाय किंवा नथाय ते कहेछे. मूलः- दाऊण गेहंतु सपुत्तदारो, वाणिज्जमाईहिउ कारणेहिं ॥ तंचेव अन्नंच वइज्जदेसं सेज्जायरो तत्र सएव होइ॥८११॥अर्थः-दाऊण गेहंके०साधुने पोतानुं घर देइने पछी ते गृहस्थ पुत्र कलत्र ने पोतानी साथे लेइ तेज देशमां अथवा अन्य देशांतरे जतो रहे, तोपण तेज सद्यातर थाय, परंतु दूरदेश जणी सद्यातर पणुं नज थाय एम न जाणवुं.

हवे कयोकयो सद्यातर वर्जवो ते दृष्टांते करी कहेछे. मूलः- लिंगत्रस्स विव ज्जासेतं, परिहरउवन्नुंजउवावि॥ जुत्तस्स अजुत्तस्स, विरसावणो तत्र दिठंतो॥८१२॥ अर्थः-लिंगमात्रने विषे जे रह्योछे केवल वेष मात्रनो धरनार पण ते साधुने गुणेकरी रहितछे तो तेनो पण सय्यातर वर्जवो. तो लिंगधारीना सय्यातरनो पिंम परहरेवो ज. वाके० अथवा नुंजउके०जागववो नोजन करवो ते साधुजनने अवश्य वर्जवोज.

इहां शिष्य पुछेछे के जो ते साधुने गुणे रहितछे तो तेनो सद्यातर शावास्ते परिहरिये? तेनो उत्तर दृष्टांते करी कहेछे. मद्यकरीने सहित होय किंवा रहित हो य परंतु मदिरानुं हाटतो खरुं. तेनुं दृष्टांत ते आमछेः-जे माहाराष्ट्र देशने विषे समस्त मदिराने हाटे ध्वजा बंधायछे, मदिरा हो अथवा न हो पण ते ध्वजा देखी जिक्षाचर पोतानी मेलेज ते वर्जेछे. तेम इहां पण वेषदेखी वर्जवुं ॥ ८१२ ॥

सज्जातर पिंमना बार जेद कहेछे. असणाईया चउरो, पाउंछणवत्र पत्तकंबलयं सूइछुरकन्नरोहण, नहरणिय सागारिय पिंमो ॥ १ ॥तृण मगलादिक अपिंमछे. यदुक्तं. तणमगलछारमल्लग, सेज्जासंथार पेढलेवाइ ॥ सज्जायर पिंमोसो, नहोइ से होय सोवहिउ ॥ २ ॥ ए बे गाथा परकृत छे ते सुगमपणाने लीधे वखाणी नथी.

हवे सय्यातर पिंमने ग्रहणेदूषण देखाडेछे. मूलः- तित्रयर पमिकुछो, अन्नायं उग्ग गोवियन सुझे ॥ अविमुत्तिअलाघवया, दूलह सेज्जाउ वोछेउ ॥ ८१३ ॥ अर्थः- तित्रयरके० समस्त तीर्थंकरे सय्यातर पिंमने पडिकुछोके० निषेध्योछे. ए सय्यात रपिंम लेवाथकी जगवंतनी आज्ञानो जंग थायछे. माटे अन्नायंके० जे यतिहोय तेणे अज्ञात पिंम लेवो. जिहां कोइ जाणे नही उलखे नही एवो पिंम लेवो, अ ने सद्यातर पिंम लेतां तो ते पिंमनो आपनार उलखे जे ए साधु अमारा घरमां रहेछे. वली सज्जातर पिंम लेतां थकां उद्गम दोष पण लागे. केमके पिंमनो आप नार जे सज्जातर ते रागवंत छतो दही डुध प्रमुख संनिग्ध अहार आपे, ते लेतां अविमुक्ति एटले मूकी न शके. केमके रसगृद्धि मूकतां डुर्लजछे. तेथी तेनो अजाव नहोय. वली अलाघवयाके० उपधी तथा शरीरनो बहुलपणो थाय सज्जातर पिं

म लेता हता ते सय्यातर रागी हतो वस्त्रादिक माग्यांथकां तरतज आपे. तेथी उप धिनी वृद्धिथाय. वली ते पिंम लेतां थकां गाममां फरवा थकी छुटे. तेथी शरीर जाडुंथाय. वली दुर्लन सद्यातेआवीरीते के जे गृहस्थ साधुने उपाश्रय आपे ते णे उपधि आहारादिक पण आपवां जोइये, एवा विचार थकी सद्या जे उपाश्रय तेपण कोइ विरलोज आपे. तेथी सद्या मलवी पण दुर्लन थाय वली वुछेउके० विनाश थाय. एटले दानना नयथकी सद्यातरे सद्यानो विछेद थाय ते उपाश्रय ना अनावथकी नक्त पान शिष्यादिकनो पण विछेद थाय.॥ ८१३ ॥

एवा ए सद्यातरना दोष देखामी हवे तीर्थंकरना उद्देसे एनुं अग्रहण देखाडे छे. मूलः— पुरपछिमवज्जेहिं, अविकम्मं जिणवरेहिं लेसेणं॥ जुत्तं विदेह एहिय, नय सागारियस्स पिंमोउ ॥८१४॥ अर्थः—पहेला अने छहेला तीर्थंकर वर्जी वचमांना बावीश तीर्थंकरना वाराना साधु तेणे अविकम्मं एटले अपि एवो शब्द संनावना ये लेवो, श्री जिनवरेंद्र जुक्तके०नोगव्यो लेसेणंके०लेशमात्र एकदेशे ते आवीरीते के, जेने अर्थे आहारादिक कीधा होय ते तो मात्र तेनेज न कल्पे पण शेष यतिने तो कल्पे. एवी रीते महाविदेह वासी साधुउनी पण एज मर्यादाछे, परंतु नयके० सागारी उपाश्रयदाता सद्यातर तेनो पिंम तो लेवोज नही. ए संनावनाछे.॥८१४

हवे अपवादे ग्लानादिक कारण उपने थके सद्यातर पिंम लेवो कल्पे एम जे कारणे कह्युंछे ते देखाडेछे. उक्तंच. दुविहे गेलन्नंमी, निमंतणे दव्वदुल्लहे असिवे ॥ उमोयरीयपउसे, नयए गहणं अणुन्नायं ॥ १ ॥ अर्थः— एक आगाढ ने बीजा अ नागाढ ए बे प्रकारना ग्लानपणाने विषे, तेमां अनागाढ ग्लानने अर्थे त्रणवार नि क्षाने अर्थे जावुं. त्यां ग्लान योग्य निक्षा न मले तो सय्यातरनो पिंम लिये. अने अगाढ ग्लानने अर्थे तो तत्काल सय्यातरनो पिंम लेवो. अथवा निमंतणे एटले वली जो घणो आग्रह करीने तेडे तोपण एकवारज लेवो. पछी प्रसंगे निवारवो. एमज द्रव्यने दुर्लनपणे आचार्यादिकने योग्य खीरादिक जो अन्य स्थानकथी न मले तो सद्यातरने घेर जइ वोहोरी आवे तथा अशिव एटले दुष्ट व्यंतरादिके जो उपद्रव कस्यो होय तोपण लेवो. वली अवमौदर्ये एटले दुर्निक्षने योगे क्यांये निक्षा न मले तोपण सद्यातर लेवो तथा राजाये प्रद्वेषेकरी सर्वत्र निक्षानुं नि वारण कर्युं होय तो प्रछन्नपणे सद्यातरनी निक्षा लेवी. वली नयए एटले चोर प्रमुखना नयथकी पण ए लेवानी अनुज्ञाछे. इत्यादिक कारणे सद्यातरनो पिंम लेवो. ए गाथा ग्रंथकारनी नथी पण अन्य शास्त्रनी वखाणीछे.

हवे उद्गमादिक दोष केवीरीते लागे ते कहेछे. मूलः—बाहुल्लागच्छस्सउ, पढमा लियपाणगाइ कज्जेसु ॥ सज्झायकरण आउट्टिआ करे उग्गमेगयरं ॥ ७१५ ॥ अर्थः गच्छना बाहुल्लपणाथकी प्रथमालिका शिष्यने सिरामणी अथवा ग्लानने अर्थे पाणगाइके० जलपाणी प्रमुख कार्ये वली वली जातां सघातर आवर्ज्यो होय, स ज्झाय करतां देखी अने घणे परिचये सघातरीपणे आवर्जित चित्तपणाथकी उद्ग मादिक मांहेलो अन्यतर दोष करे ॥ ७१५ ॥ इतिगाथा दशकार्थे द्वारसमाप्त.

अवतरणः— जत्तिअसुत्ते सम्मंति एटले जेटला सूत्रे सम्यकत्व होय एवुं एकशोने तेरमुं द्वार कहेछे. मूलः— चउदस दसयअभिन्ने, नियमासम्मंतु सेसए नयणा ॥ मइउहिविवज्जासे, होइ हुमिच्छं न सेसेसु ॥७१६॥ अर्थः— चउदपूर्व अने दशपूर्व जे ने विषे श्रुत होय तेने निश्चेथकी सम्यक्त्व होय, अने शेष श्रुत जेने विषे होय तेने विषे सम्यक्त्वनी नजना जाणवी. एटले सम्यक्त्व होय किंवा न पण होय. एवो विकल्पछे. अने मतिज्ञान अवधिज्ञान तेना विपर्यासे विपरीत पणे थये थके मतिअज्ञान ने विभंगज्ञान ए बे छतां मिथ्यात्व पण निश्चे थकी थाय. ॥ ७१६ ॥

अवतरणः— जहनिग्गंथावि चउगइयत्ति. एटले जेम निर्ग्रंथपण चतुर्गतिक था य तेनुं एकशो ने चउदमुं द्वार कहेछे. मूलः— चउदस उही आहारगावि मण नाणि वीयरागावि ॥ हुंति पमायपरवसा तयणंतरमेव चउगइया ॥७१७॥ अर्थः— चउदपूर्वधर, अवधिज्ञानी, आहारक लब्धिवंत, इहां चउद पूर्वधर ते आहार कलब्धिवंत होय किंवा न पण होय. तेथी बेहुनुं जूडुंजूडुं ग्रहण कीधुं छे. तथा त्रीजो मनपर्यवज्ञानी, उपशांत वीतरागादिक, एवा पण प्रमाद विषय कषायादि केकरी कलुषित चित्तथका तदनंतर तत्काल चतुर्गतिना नोगीथाय. ॥ ७१७ ॥

अवतरणः— खेत्रातीत, मार्गातीत, कालातीत, अने प्रमाणातीत एवा चार वा नाना एकशो पन्नर, एकशो सोल, एकशो सतर, अने एकशोने अढार, एवा चार द्वार साथे वखाणेछे. मूलः— जमणुग्ग एरविम्मि अतावखेत्तंमि गहिय मसणा इ ॥ कप्पइ न तमव नोत्तुं खेताईयंति समउत्ती ॥ ७१८ ॥ अर्थः— जे सूर्य उदय थयाविना अतापखेत्रेके० रात्रे लीधुं जे अशनादिक चार ते मांहेलुं कोइपण अश नादिक साधुने नोगववुं कल्पे नही. अने जो नोगवे तो खेत्रातीत कहेवाय. एवी सिद्धांतनी युक्तिये आगमनुं नाषितछे. ए एकशो पन्नरमुं द्वार थयुं. ॥ ७१८ ॥

मूलः— असणाईयं कप्पइ, कोसडुगप्नंतराउ आणेउं ॥ परउ आणिज्जंतं, मग्गाइयंतीतमकप्पं ॥ ७१९ ॥ अर्थः— बे कोशथकी आणेलुं अशनादिक

मांहेलुं कोइपण अशनादिक यतिने कल्पनीयछे. पण बे कोशथी उपरांतनुं आणेलुं अशनादिक ते मार्गातीत अकल्पनीयछे माटे लेवुं नही. ए एकशो शोलमुं द्वार.

मूलः–पढमप्पहराणीयं, असणाइ जईणकप्पए नोत्तुं॥जावतिजामेउट्ठं, तमकप्पं कालइक्कत्तं ॥ ७२० ॥ अर्थः– पहेला पहोरनुं लावेलुं अशनादिक यतिने जम वुं कल्पे, ते जिहांसुधी त्रीजो पहोर तिहांसुधी जाणवुं. उपरांत चोथा पहोरमां ते अकल्पनीय थाय. पडिलेहण कस्या पछी ते कालातिक्रांत पणाने लीधे जमवुं नहीं. ए एकशो सत्तरमुं द्वार समाप्त थयुं. ॥ ७२० ॥

मूलः–कुक्कुडिअंमयमाणा, कवला बत्तीस साहुआहारो॥अहवा नियआहारो, की रइ बत्तीस नाएहिं॥७२१॥अर्थः–कूकुडी ते पक्षी विशेष, तेना इंमाने प्रमाणे बत्रीश कवल प्रमाण साधुनो आहार जाणवो. अथवा निजके० पोतानो आहार एटले जेटला आहारथी जेनुं पेट नराय, तेनो बत्रीशमो नाग करिये ए पण कवल प्रमाणछे.

मूलः–होइ पमाणाईयं, तदहियकवलाण नोयणे जइणो ॥एगकवलायकणे, कणो यरिया तवोतंमि ॥ ७२२ ॥ अर्थः–ते बत्रीश कवल थकी अधिक कवलनुं नोजन कस्याथी यतिने प्रमाणातीत थाय. अने बत्रीश थकी एकादिक कवल उंगे लीधा थकी उणोदरता नामे तप ते साधुनेविषे थाय. ॥७२२॥ इति गाथा पंचकार्थ.

अवतरणः– सुख सद्यानुं एकशो उंगणीसमुं द्वार तथा डुःख सद्यानुं एक शो वीसमुं द्वार ए बे द्वार साथे कहेछे. मूलः– पवयण असदहाणं, परलानेहा य कामआसंसा ॥ एहाहाइ पत्नणं इय, चत्तारिवि डुःख सेज्जाउ ॥ ७२३॥ अर्थः जेनेविषे शयन करिये तेने सद्या कहिये. तेमां डुःखनी देवावाली सद्या ते डुःख सद्या. ते ड्व्य अने नावना नेद थकी बे प्रकारनीछे. तेमां ड्व्यडुःख सद्या ते अमनोहर ख ट्वादिरूपजाणवी. नावे डुस्थित चित्तपणे करी डुश्रमणपणु करे. ते इहां नाव थ की ते चार प्रकारे छे. तेमां प्रथम प्रवचन जिनशासननो असदहवो. बीजी अनेरा के० बीजाने वस्त्रादिकना अलानननी प्रार्थनानुं करवुं. इहां चकार समुच्च य ने अर्थे छे. त्रीजी तेमज काम मनोहर शब्दादिकनी आशंसा अनिलाषानुं कर वुं. चोथी स्नानादिके करी शरीर प्रमुखनुं मर्दन करवुं. धोवा विछलवानी प्रार्थना करवी. ए रीते चत्तारिविके० ए चारे नावडुःखसद्या जाणवी. एने विषे वर्त्तमान छतो ते प्राणी कोइरीते पण सुख पामे नही. ॥ ७२३ ॥

ए जेम डुःखसद्याये डुःख. तेम इहां सुख सद्याते पण ड्व्य नावना नेदे करी पूर्वोक्त रीते कहेवी. मूलः– सुहसेज्जाइ वि चउरो, जइणो धम्माणु राय रत्तस्स ॥

विवरीयायरणाउ, सुहसेज्जा उत्तिनसुंति ॥ ७२४ ॥ अर्थः—जेम पूर्वोक्त डुःखसद्या चार कही तेमज जइणो के० यतिने सुखसद्या पण चार थाय. ते पूर्वोक्तथी विपरीत जाणवी. इहां यतिने गाढतर धर्मनो अनुराग जे अनिलाष रूप तिहां रक्तके० आसक्तछे चित्त जेनुं, एवाने प्रथम जे प्रवचन असद्दहणा प्रमुख बोल कह्या ते थी विपरीत प्रवचननी सद्दहणा जाणवी. तेमज बीजी परलानुनी वांछानुं करवुं. त्रीजी मनोज्ञ शब्दादिकनी आशंसानो अनाव. चोथी स्नानादिकनुं अप्रार्थवुं. एम विपरीत आचरण करवाथी सुखसद्या थाय. एमां वर्त्ततो थको साधु सदा काल सुखी थाय. ए बे द्वार साथे वखाण्या. ॥ ७२४ ॥

अवतरणः— तेरसकिरियाठाणोइंति एटले तेर क्रियाना स्थानकनुं एकशोने एकवीसमुं द्वार वखाणेछे. मूलः— अट्ठाणट्ठा हिंसा, कम्मादिठ्ठीय मोसदिन्नेय; अप्रज्ञमाणमित्ते, मायालोनेरियावहिया ॥ ७२५ ॥ अर्थः— जे करिये ते क्रिया. कर्मबंधनुं कारण चेष्टारूप तेना स्थानक जे नेद ते तेर छे. एक अर्थक्रिया, बीजी अनर्थक्रिया, एम क्रिया शब्द सर्वत्र जोडवो. त्रीजी हिंसा, चोथी अकस्मात्, पांच मि दृष्टिविपर्यास, छठी मोसमृषाप्रत्यय, सातमी अदत्तवृत्ति, आठमी अध्यात्म की, नवमी मानवृत्ति, दशमी मित्त, अग्यारमी माया, बारमी लोन, तेरमी ईर्या पथिकी, ए तेरक्रियानां नाममात्र कह्यां. ॥ ७२५ ॥

हवे सूत्रकार गाथाये करी वखाणेछे. मूलः— तसथावर नूएहिं, जोदंमं निसरई उ कज्जेण ॥ आयपरस्सवअट्ठा, तमट्ठदंमं तयंबिंति ॥ ७२६ ॥ अर्थः—त्रस, थाव र रूप नूतके० प्राणी तेहने जो दंम निसरईउके० दंमकरवो. पोताना आत्माना धर्मरूप धनने अपहारे ते दंम कहिये. दंम शब्दे हिंसा जे कोइकरे ते कज्जेणके० कोइ कार्यने करवे करीने, ते पोताना शरीरने कार्ये अथवा पर जे बांधवादिक ते ने कार्ये जे करे तेने अर्थी दंम एटले अर्थक्रिया श्री तीर्थंकर देव कहेछे. ॥ ७२६ ॥

मूलः— जोपुण सरडाईयं, थावरकायं चवणलयाईयं ॥ मारेउंछिंदिऊणं, छड्डे ईसो अणट्ठाए ॥७२७॥ अर्थः— जे शरड शब्दे काकीडो, आदिशब्दथकी उंदर प्र मुख त्रसकाय, अने स्थावर काय जे वनस्पति ते वेली. सूरादिकने जे मारे एमज त्रस जीवो मारे तथा वन लता छेदी छांमीने नाखे. अर्थात् ते छेदीने नाखी दिये तेने अणट्ठाएके० बीजी अनर्थ क्रिया कहिये. ॥ ७२७ ॥

मूलः— अहिमाइ वइरियस्स वहिंसी सेहीसईवहिंसेही ॥ जोदंमं आरन्नई, हिं सादंमो हवइएसो ॥७२८ ॥ अर्थः— सर्प प्रमुख अथवा एवयरीए अमारूं अशु

क कांइकदहणुंछे, ए अमने पूर्वे मारतो हतो अथवा सांप्रतके० हमणा मारशे, अथवा आवती कालेमारशे. एमजाणीतेने दंम पीडाकरे तो हिंसादंमक्रियालागे.॥ ८२८

मूलः– अन्नठाए निसिरइ, कंमाई अंन माहणे जोउ ॥ जोवनियंतो सस्सं, छंदिज्जा सालिमाईयं ॥ ८२ए ॥ अर्थः– एकने मारतां बीजाने मारे. अनेरा मृग, पक्षी, काकीमाने अर्थे निसिरई के० नाखे कंम शब्दे बाण नाखे आदिथकी पत्थर प्रमुखथकी. अनेरा गमे ते प्राणीप्रत्ये जे कोइ मारे अथवा जे कोइ शाली मांहे अनेरा तृण प्रमुख छेदतो थको ते शाली प्रमुखने छेदे. ॥ ८२ए ॥

मूलः– एसअकम्हादंमो, दिठिविज्जासउ इमो होइ ॥ जोमित्त ममित्तंतिय ॥ काउंघाएज्ज अहवावि ॥ ८३० ॥ अर्थः–ए चोथी अकस्मातुदंम क्रिया जाणवी. हवे पांचमी दृष्टि विपर्यास क्रिया एवीरीते थाय के जे कोइ मित्रने अमित्र काउंके० करीने घाएज के० विनाश करे अहवावि के० अथवा. ॥ ८३० ॥

मूलः– गामाईघाएज्जव, अतेणतेण त्तिवावि घाइज्जा ।। दिठिविवज्जा सेसे, किरिया ठाणं तुपंचमयं ।। ८३१ ।। अर्थः– गाममां रहेनारा कोइएक पुरुषे कांइ एक अपराध कर्यो छतां तेनायोगे जे संपूर्ण गामने मारे छे, आ वागदृष्टि विपर्यास दंम. अथवा वली चोर न होय तेने चोर कही मार आपे ए पांचमुं दृष्टि विपर्यास नामे क्रियानुं स्थान कहिये. ॥ ८३१ ॥

मूलः– अत्तठनायमाईण वावि अठाइ जो मुसं वयइ ।। सो मोसप्पच्चइउ दंमो छठो हवइ एसो ॥ ८३२ ॥ अर्थः–अत्तठके० पोताने अर्थे अथवा ज्ञाति वडेरा प्रमुखने अर्थे जे कोइ असत्य बोले ते मृषा प्रत्ययिक नामे दंम छठो थाय. ॥८३२॥

मूलः– एमेव आयनायग, अठा जो गिण्हई अदिन्नंतु ।। एसोअदिन्नवित्ती, अन्नछीउ इमो होइ ।। ८३३ ॥ अर्थः– ए पूर्वोक्त मृषावादनी पेरेज जे पोतानो नायक एटले स्वामि तेना अर्थे जे गिण्हइ के० ग्रहण करे तथा स्वजन प्रमुख ए पाठ थकी एवो अर्थ थायछे के स्वजन ने अर्थे जे कोइ अदत्तादान लिये ते अदत्तादानवत्तिकी नामे सातमी क्रिया जाणवी. अने आठमी अध्यात्मकी क्रिया आवीरीते थाय ते आगलि गाथाये देखाडे छे. ॥ ८३३ ॥

मूलः–नवि कोइकिंचिनणई, तह वि हु हियएण डुम्मणो किंचि ॥ तस्स अछी सीसइ, चउरोगणा इमे तस्स ॥ ८३४ ॥ अर्थः– जेने कोइये कांइपण न कह्युं छतां पण पोताना हृदयमां डुर्मन आमणो दुमणो थाय तेने आठमी अध्यात्मकी क्रिया सीसइके० कहिये. एना चार गण छे ते आगली गाथाये देखाडे छे.॥ ८३४ ॥

मूलः—कोहो माणो माया,लोहो अन्नबिकिरियए चेसा॥ जोपुण जाइमयाई, अठ विहेणंतु माणेणं॥८३५॥अर्थः—क्रोध, मान, माया, ने लोभ ए अध्यात्मकी क्रियानां कारण छे. पुणके० वली जात्यादिक आठ प्रकारना मानके० अभिमाने करीने.

मूलः— मत्तो हीलेइ परं, खिंसइ परिभवइ माणवत्तेसा॥ माई पियनायगाइण जो पुणअप्पेवि अवराहे ८३६ ॥ अर्थ.— मत्तोके० मदोन्मत्तथको परंके० बीजा ने हीलेइके० हीलना करे. परने ठगे, परनी निंदा करे, खिंशाकरे, कदर्थनादिके करी पराभव करे ते नवमी मानप्रत्ययकी क्रिया जाणवी. माईके० माता पिता ज्ञाती, नाति स्वजन, सगां प्रमुख तेमने थोडे अवराहेके० अपराधे पण जे पुरुष ते मातादिकने शुं करे? ते आगली गाथाये कहेछे. ॥ ८३६ ॥

मूलः— तिव्वं दंडं कुणई, दहणंकणबंध ताडणाईयं ॥ तम्मित्तदोसवित्ती, किरियाठाणं भवेदसमं ॥ ८३७ ॥ अर्थः— तीव्र एटले महोटी दंड पीडा करे. दहन एटले डांम देइ चिन्ह करे. बंध एटले दोरडेकरी बांधे. ताडना प्रमुख करे. ते मित्रद्वेष वृत्तिनामे दशमुं क्रिया स्थान जाणवुं. ॥ ८३७ ॥

मूलः—एगारसमं माया, अन्नं हिययंम्मि अन्नवायाए ॥ अन्नं आयरईवा, सकम्मणा गूढसामत्थो ॥ ८३८ ॥ अर्थः— अग्यारमी माया क्रिया तेपोताना मनमां एक चिंतवणा करीहोयअने मुखथी बीजुं बोले. वली आचरण त्रीजुंज करे.एम सथाके०सदाकाल डुष्ट चित्तवंत थकोआपणे कर्मेकरीशक्ति गुप्त राखे परने नजणावे. ८३८

मूलः— मायावत्ती एसा, इत्तोपुण लोहवत्तिया इणमो ॥ सावज्जारंभ परिग्गहे सुसत्तो महंतेसु ॥ ८३९ ॥ अर्थः— ए अग्यारमी मायावृत्ति क्रिया जाणवी. इहां थकी आगल हवे वली लोभ प्रत्ययकी क्रिया बारमी कहेछे, ते आवीरीते छे. सावद्य जे सपाप आरंभ करे तो तेमां घणा जीवोनुं उपमर्दन थाय ते महंतके० परिग्रह धन धान्य रूप तेने विषे आसक्त थयो थको घणो सपाप आरंभ करे. ॥८३९

मूलः— तह इत्थी कामेसुं, गिद्धो अप्पाणयं च रक्खंतो ॥ अन्नेसिं सत्ताणं वह बंधं मारणे कुणइ ॥ ८४० ॥ अर्थः— तह के० तेमज स्त्रीना कामुक मनोहर शब्दादिकने विषे पोतानुं चित्त गृद्ध आसक्तवंत राखतो थको ते कारणने लीधे अन्य प्राणीउने पण वध, बंधन, मरणांत उपसर्ग करे. ॥ ८४० ॥

मूलः— एसेह लोहवत्ती, इरियावहियं अउ पचक्खामि ॥ इहखलु अणगारस्सा, समिई गुत्तीसु गुत्तस्स ॥ ८४१ ॥ अर्थः— एसा के० ए इहांजिनशासनने विषे लोभवृत्ति नामे बारमी क्रिया जाणवी. तेरमी इरियाविहिनामे क्रिया ते अउ

के० इहां एनी व्युत्पत्ति एवीछे के ईरण के० गमन तेणेकरी जे सहित विशेष जे मार्ग ते इरिया पथ. तिहां थइ जे क्रिया ते इरियापथिकी कहिये. ए शब्दनो अर्थ कह्यो. हवे गाथानो अर्थ कहेछे. इहां खलु इति निश्चे अणगार जे साधु ते इरिया समिति प्रमुख पांच समिति अने मनोगुप्त्यादिकत्रण गुप्ति तेणे करी सहितहोय एवा.

मूलः— सययं तु अप्पमत्तस्स नगवर्ज जाव चक्कु पम्हंमि ॥ निवयइ ता सुहु माहू, इरिया वहिआ किरियएस्सा ॥ ७४१ ॥ अर्थः— सततं के० निरंतरपणे अप्रमत्त साधुने विषे तथा वली उपशांत मोह क्षीणमोह, अने सयोगी लक्षण ए त्रण गुणठाणाने विषे वर्त्तता एवा साधु नगवंत ते शरीर संबंधी बीजी समस्त क्रियानुं ज्यां लगी रुंधन करे. चक्कु के० नेत्र तेनो पक्ष्ममात्र मेषोन्मेष करे, एक सामायिक सात बंधलक्षण अतिअल्प क्रिया थाय छे. एवाने प्रगटपणे इरिया पथिकी क्रिया तेरमी होय ॥ ७४१ ॥ इति गाथा अष्टादशकार्थ.

अवतरणः— आगरिसा सामइए चउव्विहेविवि एगनवेत्ति जे आकर्षिये ते आकर्ष प्रथम लेवुं, अथवा प्रथम लेइने मूक्युं होय तेनुंज फरीथी जे ग्रहण करवुं ते आकर्ष कहिये. ते चारप्रकारना सामायक तेनेविषे एक नवमां केटला आकर्ष थाय? तेनुं एकशोने बावीसमुं द्वार कहे छे. मूलः—सामाईयं चउहा, सुयदंसण देस सव्वनेएहिं॥ ताणइमे आगरिसा, एगनवं पप्प नणियव्वा॥७४३॥ अर्थः— एक श्रुतसामायक, बीजो, सम्यक्त्वसामायक त्रीजो देशविरति सामायक, चोथो सर्वविरति सामायक, ए चार प्रकारना सामायक छे. ए चारे सामायकना आकर्ष पूर्वोक्त शब्दार्थ एक नव पामीने एकनव आश्रीने आकर्ष नणियव्वा के० कहेवा तेज देखाडेछे. मूलः—तिण्हं सहसपुहत्तं, सयं पुहत्तंच होइ विरईए॥ एगनवे आगरिसा, एवइया हांति नायव्वा ॥ ७४४ ॥ अर्थः—प्रथमना त्रण सामायक तेने सहस्र पृथक्त्व एटले बेहजारथी मांमीने नवहजार सुधी एकनवमां आकर्ष थाय. इहां पहेलोज सामायक पडिवजे, अथवा प्रथम लीधोछे ते मूक्यो अने फरी लेवो ते आकर्ष कहिये. अने विरईएके० सर्व विरतिनो आकर्ष तो शतपृथक्त्व एटले बसेंथी मांमीने नव सें सुधि एक नवमां थाय. ॥ ७४४ ॥

हवे नाना नव आश्री कहेछे. मूलः— तिण्हमसंखसहस्सा, सहसपुहुत्तंच होइ विरईए ॥ नाणानव आगरिसा, एवइया हुंति नायव्वा ॥ ७४५ ॥ अर्थः— प्रथमना त्रण सामायकना आकर्ष असंख्याता सहस्र जाणवा. केमके ए त्रणे सामायकना आकर्ष एक नवमां सहस्र पृथक्त्व होय ते गुणाकार करवाथी असंख्या

त सहस्र थाय. इहां ए क्षेत्र पल्योपमने असंख्यातमें नागे जेटला आकाश प्रदेश होय तेटला नव जाणवा. सर्व विरतिना एक नवे शत पृथक्त्व अने उत्कृष्ट आठ नवे साधिक गुणाकार कीधे सहस्र पृथक्त्व होय. एरीते नानाजवने विषे आकर्ष जीवना अध्यवसाय रूप एटलाज होय ते जाणवा. हवे ए चार सामायक नुं स्वरूप कहेछे. तेमां प्रथम सम्यक्त्व सामायक ते सद्दहणारूप, बीजुं श्रुतसामायक ते समस्त सिद्धांतनुं पठनकरवुं तत्व ज्ञान लक्षण जाणवुं. त्रीजुं देशविरति सामायक ते श्रावकना बारव्रतरूप जाणवुं. चोथुं सर्वविरति सामायक ते सावद्य योग विरमण यतिधर्म रूप जाणवुं इति गाथा त्रयार्थ ॥ ८४५ ॥ ए एकशो बावीसमुं द्वार समाप्त.

अवतरणः– सीलंगाणठारस सहस्सत्ति एटले सीलांग ना अढार सहस्रनुं एकशो ने त्रेवीसमुं द्वार कहेछेः– मूलः– सीलंगाण सहस्सा, अठारस एव हुंति निअमेणं ॥ नावेणं समणाणं, अखंम चारित्त जुत्ताणं ॥ ८४६ ॥ अर्थः– शील एटले चारित्रना अंश अथवा चारित्रना कारण तेना अढार हजार नेद ते एछके० इहां यतिधर्मे अथवा जिनशासनने विषे नियमके० निश्चे संघाते नावेणंके० विशुद्ध परिणामे थाय. बाह्य वृत्ते वली प्रतिसेवाये करी कांइक न्यून पण थाय, एवा अढार सहस्र ते श्रमणने थाय पण श्रावक ने न थाय, केमके सर्व विरतिने विषेज एनो संनव छे. अथवा जे नावथी श्रमण छे तेनेज ए होय. पण इव्य श्रमणने न होय. किंतु जे अखंम चारित्र युक्त संपूर्ण चारित्रे सहितछे तेने होय.॥८४६॥

इहां शिष्य चालना करेछे के जे अखंम चारित्रना धरनार तेनेज सर्वविरति कहिये. पण जे किंचित मात्र खंमाय ते तो असर्वविरति केवाय. पडिवज्ज अइक्कमेपंच एवा आगमना वचन थकी ते पांचे महाव्रत पमिवजे, पण तेमां एक व्रतने अतिक्रमे तो पांचनो अतिक्रम कह्यो. माटे सर्वविरतिने देशथी खंमना नथाय इति.

हवे गुरु उत्तर कहेछे. हे शिष्य तें नलो प्रश्न पुछयो, परंतु जेवारे पडिवजे तेवारे सर्वविरतिपणु पालवा आश्री अन्यथा पण होय केमके संज्वलनना उदयथकी अतिचारनो संनव थाय. यडुक्तं. सवेविय अइयारा, संजलणाणं तु उदयउ हुंति. इति अतिचार ते चारित्रनी देशथी खंमना जाणवी. तेम एक व्रतने अतिक्रमे सर्व व्रतने अतिक्रमाय. तेमां पण विवक्षाछे ते आवीरीते.

छेयस्स जावदाणं, ताव अइक्कमइ नेव एगंपि ॥ एगं अइक्कमंतो, अइक्कमइ पंच मूलेण ॥ १ ॥ एनो ए नावार्थ छे के छेदनो ज्यांसुधी दान छेदे तेवारे

सर्वनो अतिक्रम थाय. मूलगुण आश्री एक अतिक्रमे तो पांचेनो अतिक्रम थाय. ए कारणथी दश प्रायश्चित्त सफल थाय. व्यवहार नय मत आश्री चारित्रियाने अति चारनो संभव छे,अने निश्चे नयमतो भंगेज. यडुक्तं.एछइमंविन्नेयं,अइदं पज्जंतु बुद्धिमं तेहिं॥एक्कंपि सुपरिसुद्धं, सीलंगं सेससप्भावे ॥ एनो अर्थ करे छे ईहां शीलांगना अधिकारने विषे अइदंपर्य केंण रहस्य बुद्धिमंते जाणवुं. जे कारण माटे एक सुपरिसुद्ध शीलांग समस्तने सद्भावे होय,पण श्रावकनी परे हायावे. तेथी भंगे वर्त्ततो श्रावक कहिये, तेम ए न समजवुं. जो समस्त भंगे सहित होय तो सर्व विरति कहिये, पण एकादि भंगे वर्त्ततो सर्वविरति न कहेवाय. तेमाटे शीलांगना भांगा श्रावकने न थाय. मननी स्थिरता राखवाने अर्थे श्रावक गुणे तो भले गुणो.

मूलः— जोए करणे सन्ना, इंदिय भोमाइ समणधम्माय ॥ सीलंगसहस्साणं, अट्ठारसगस्स निप्पत्ती ॥ ८४७ ॥ अर्थः—योगत्रण, करणत्रण, संज्ञाचार, इंद्रियपांच, भोमाइकें० पृथ्वीकायादिकदश, श्रमणधर्मदश, एरीते शीलांगना जे अढार हजार भेद तेनुं निःपत्तीकें० निपजवुं थाय. तेज कहेछे. ॥८४७॥

हवे विशेषे एनी संख्या देखाडेछे. मूलः— करणाइ तिन्निजोगा, मणमाईणी हवंति करणाइं ॥ आहाराईसन्ना, चउ सोयाइंदिया पंच ॥ ८४८ ॥ अर्थः—इहां प्रथम योग पछी सूत्रना बंध सारु बीजा वखाणियेछे. योग त्रण, ते मनोयोगादिक जाणवा. इहां गाथाने धुरे करणाइ एटले करवुं जेनी आदिमांछे एवा त्रण करण तथा आहारादिक चार संज्ञा जाणवी. अने सोयाकें० श्रोत्रादिक पांचइंद्रिउ जाणवी.

मूलः— भोमाई नव जीवा, अजीवकाउय समण धम्मोय ॥ खंताइ दस पयारो, एवं ठिई भावणा एसा ॥ ८४९ ॥ अर्थः—भोमाइकें० पृथवीकायादिक नव जीव अने अजीव साथे दश थाय. श्रमण धर्म ते खांत्यादिक दश प्रकारे एवंकें० एरीते ठिइकें० यंत्र पटादिक उपर लखवो. भावनाते एसाकें० आगल कहेशे.॥८४९॥

तेहिज देखाडेछे. मूलः—न करइ मणेण आहार सन्नविप्पजढगोउनिअमेण ॥सोइंदिअ संवरणे, पुढविजिए खंति संजुत्तो॥८५०॥इअ मद्दवा इजोगा, पुढवीकाए हवंति दसभेआ ॥ आउक्कायाईसुवि,इअ एए पिंमिअं तु सयं॥८५१॥सोइंदिएण एवं, सेसेहिं वि जइमं तउ पंच ॥ आहारसन्नजोगा, इअ सेसाहिं सहस्सडुगं ॥८५२॥ एवंमणेण वयसाइएसु एवं तुछ सहस्साइं ॥ नकरे सेसेहिं पिअ, एए सव्वेवि अट्ठारा ॥ ८५३ ॥ अर्थः— इहां नकरइकें० करण लक्षण प्रथमयोग स्विकार्यो छे, ते मनसा ए प्रथम करणछे. आहारसन्न विप्पजढ गोउत्तिकें० आहारसंज्ञा विरहित थतांज प्रथम

संज्ञाः तथा आवश्यताए करी निरोधन कस्योछे रागादिक गुण जेनो, एवी श्रोत्रेंद्रियनी प्रवृत्ति तेथी प्रथमेंद्रिय कहेली छे. एवीरीतीए शुं न करे? ते कहेछे. पृथ्वीकाय जीवारंभ करे नही एवुं तात्पर्यछे. एणे प्रथम जीवस्थान क्षमायुक्तके० क्षांतिसंपन्न एणेकरी प्रथम श्रमण धर्मभेद जाणवो. ए प्रकारे करी एक शीलांग आविर्भावित छे. एटले मने करी आहार संज्ञा रहित थको श्रोत्रेंद्रियनो संवर करी क्षमायुक्त पृथ्वीकाय जीवारंभ करे नही. ए शीलनुं प्रथम अंग आविर्भावित एटले प्रगटछे. हवे शेष छे ते पण अतिदेशे करी देखाडेछे. ॥ ८५० ॥

एज प्रकारना पूर्वोक्त अभिलाषे करी मार्दवादियोगात्के० मार्दव आर्जवादि दश पद संयोगेकरी, एटले जेम पूर्वे क्षमायुक्त एक भेद थयो तेम मार्दवने संयोग बीजो भेद, तेमज आर्यवने संयोगे त्रीजो भेद, एरीते पृथ्वी कायनो आश्रयकरी एटले पृथ्वी कायारंभ एवा अभिलाषे करी, दश यतिधर्मेकरी, दश भेद ते दश शीलविकल्प थायछे. ते वली अप्पकायादि नव स्थाननेविषे पण अपि शब्दे करी दशमा स्थाननीपेरे आक्रमण करीए, तेवारे सर्व भेद प्राकृतपणेकरी एकत्र कस्याथीए कशो संख्या थायछे ॥८५१॥ ते मात्र श्रोत्रेंद्रियने सो भेद थाय छे. तेमज बाकीनी चक्षुरादिक इंद्रिउना पण ए पूर्वोक्त रीतिये शो शो भेद थायछे. ए एम सर्व संख्या एकठी करिये तेवारे पांचशें थायछे. केमके इंद्रियोना पांच प्रकार छे. माटे पांचशें थाय. ते मात्र एक आहार संज्ञा योगेकरी आ भेद थयाछे. हवे शेष भय संज्ञादिक त्रणेना पण पांचशें पांचशें भेद ए पूर्वोक्त रीतेज थाय. एम सर्वना मलीने बे हजार भेद थायछे.॥८५२॥ एबे हजार तेमात्र मनोयोगने प्राप्त थएला छे. तेमज वचन अने काय एना पण बबे हजार भेद थाय छे. एम एकंदर संख्या छ हजार थायछे. ए छ हजार मात्र न करोति ए मर्यादाये प्राप्त थया. तेमज शेष न करावे तेनापण छ हजार. अने अनुमति न आपे एना पण छ हजार भेद छे. ए सर्व मेलविये त्यारे शीलना भेद एकत्रकर्यां छतां अढार हजार थायछे ॥ ८५३ ॥ एक योगेकरी अढार हजारज थायछे एम कांइ नथी; पण बे इत्यादिक संयोगजन्य भंग जो आ स्थले लीधा होय तो एना घणाज भेद थायछे. एटले एक बे इत्यादिक संयोगेकरी संयोगनेविषे सातविकल्प थायछे. एवाज करणने विषे, संज्ञाने विषे; इंद्रियोने विषे, पृथ्वीकायादि विगेरेनेविषे एक हजार तेवीस भंग थाय. ए प्रमाणे क्षमादिकने विषे पण आ राशीनो परस्पर गुणाकार कर्यो होयतो त्रेवीश अबज चोराशी करोड एकावन लाख त्रेसठ हजार बेशेने पांसठ २३८४५१६३२६५

नेद थाय छे. तो पछी अढार हजारज केम कह्या? एवुं कोइ पुछे तेने उत्तर कहे छे के जो श्रावक धर्मनी पेठे बीजा नंग करी सर्व विरतिनी प्रतिपत्ति थाय तो ते गणना योग्यछे. एक पण सीलांगना नंगना शेष सन्नाव छे एटले नेद थता नथी एवुं नजाणवुं. कारण अन्यथा सर्व विरतीज थनार नही. एना यंत्रनीस्थापना करियेछे

जेनोकरंति ६०००	जेनोकरावंति ६०००	जेनाणुभयंत्ति ६०००							
मणसा २०००	वयसा २०००	तणुणा २०००							
निज्जिआ हारसन्ना ५००	निज्जिअभय सन्ना ५००	निज्जिअपरि ग्रह सन्ना ५००	निज्जिअमेहु नसन्ना ५००						
श्रोत्रेंद्री १००	चक्षुरिंद्री १००	घ्राणेंद्री १००	जीव्हाइंद्री १००	स्पर्शेंद्री १००					
पुढवीका यारंभ १०	आपकाया रंभ १०	तेउकाया रंभ १०	वायुका यारंभ १०	वनस्पति कायारंभ १०	बेंद्रिया रंभ १०	तेंद्रिया रंभ १०	चौरिंद्रि यारंभ १०	पंचेंद्रि यारंभ १०	अजीवा रंभ १०
खंतिजुआ तेमुणी वंदे. १	समद्दवाते मुणीवंदे. २	सज्जअवा तेमुणीवंदे. ३	मुत्तिजुआ तेमुणीवंदे ४	तवजुआते मुणीवंदे. ५	ससंमाते मुणीवंदे. ६	सच्चजुआ तेमुणीवंदे ७	सोयजुआ तेमुणीवंदे. ८	आकंचणा तेमुणीवंदे. ९	बंभजुआते मुणीवंदे. १०

अवतरणः– नयसत्तगंति एटले सात नयनुं एकशो ने चोवीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– नेगम संगह ववहार उज्जुसू चेव होइ बोधव्वे ॥ सद्दे य समनिरूढे, एवंनूए यमूलनया ॥ ८५४ ॥ अर्थः– त्यां प्रथम नय शब्दनो अर्थ आवीरीते छे के अनंत धर्मात्मक वस्तु अवधारण पूर्वक एकादि कोइक नित्यत्वादिक धर्मे कहीने पोतानी बुद्धि प्रत्ये पमाडे तेने नय अनिप्रायनो विशेष कहिये. इहां जे नय नयांतरने सापेक्षपणे आपणपाने अनिप्रेत धर्मे स्याद्वादपूर्वक वस्तु पडिवजे ते परमार्थी वृत्ते संपूर्ण वस्तुपामे अने प्रमाण मांहे अंतरनवे.

एमज जे नयने निरपेक्षपणे आपणपाने अनिप्रेत धर्मे अवधारण पूर्वक वस्तुनुं जाणपणुं वांछे; तेज वस्तुना एकदेश ग्राहकपणा थकी नय कहिये. परंतु ते मिथ्यादृष्टी अयथावस्थितार्थ वस्तुना ग्राहकपणा थकी जाणवो. एज कारणे कह्योछे के सव्वेनयामिछावाइणोइति जे कारणे नयवाद ते मिथ्यावाद छे,

ते कारणे जिनप्रवचनना जे जाण ते मिथ्यावाद परिहारनी वांछाये सर्व स्याद्वा द पूर्वकज बोले. अने यद्यपि लोक व्यवहारे साक्षात् स्याद्वाद प्रयुंजे तथापि त्यां पण तेनुं ग्रहण करवुंज जोइये. उक्तंच अप्रयुक्तोपि सर्वत्र स्यात्कारोर्थात्प्रमीयते॥ विधौनिषेधेन्यत्रापि, कुशलश्चेत्प्रयोजकः ॥ १ ॥

अनुवाद वचन अने अतिदेशवचनने विषे पण ते नैगमादिक सात नयछे. तिहां नेकके० घणा प्रमाणे एटले महासामान्य अवांतर सामान्य विशेषादि विषयिक ए प्रमाणे करी वस्तुनुं विशेषपणुं ते मिणीतेके० मिणिये एटले जाणिये तेने नैगम कहियेः अथवा निश्चितछे ज्यां गम एटले मांहोमांहे जूदीजूदी सामान्यादिक वस्तुनुं ग्रहण ते नैगम कहिये. अथवा गमके० मार्ग ते जेनेविषे एक नथी तेने गम जाणवो. एटले घणाप्रकारे करी वस्तुनुं ग्रहणके० अंगीकार करे. ते आवीरीतेः– सत्तालक्षण महासामान्य, अवांतर सामान्य, द्रव्य गुण कर्मत्वादिक अंत्यविशेष सकल असाधारण स्वरूप अवांतर विशेष रूप थकी निवर्त्तन क्षम, ए सर्व मांहो मांहे विशंकलित स्वरूप माने. तेमाटे नैगम कहिये.

इहां शिष्य चालना करेछे के जो ए सामान्य विशेषनो अंगीकारक कह्यो, परंतु जे सामान्य ते द्रव्य अने विशेष ते पर्यायने कहिये तो ए द्रव्यास्तिक पर्यायास्तिक नय मतना अवलंबनपणा थकी तेने सम्यक्दृष्टि प्रतिपन्न जिनमतनी परे कहिये तोज रूडुं पण मिथ्या दृष्टी केम कहिये?

हवे एनो उत्तर कहेछे. ए मिथ्या दृष्टि ते सामान्य विशेषने मांहोमांहे जूदा जूदा मानेछे. जेम गुण अने गुणी, अवयव ने अवयवी क्रिया ने कारक. जेम एना भेदतेम त्यां पण भेद माने. तेमाटे कणादनीपरे एने मिथ्यादृष्टिज कहिये. ए नैगम नय कह्यो.

बीजो संगृह्णाति अशेष विशेषने परिहारे करी जगत्रयने सामान्यरूप पणे लिये ते संग्रह नय कहिये.

त्रीजो व्यवहरिये ते व्यवहार अथवा विशेषे करी अवहरिये निरा करिये एटले व्यवहारे करी सामान्य पणे निरा करिये. तेथी एने व्यवहार नय कहिये. जेम भ्रमरने विषे छता पांचेवर्ण छे, तथापि लोक व्यवहारे करी तेने कालो वर्णज कहिये. तेम ए नय जे छे ते अनेरावर्ण छतां पण तेने न माने, मात्र एकनीज मुख्यता करे.

चोथो रुजु शब्दे सरल. ते अतीत अनागत वक्र ने परिहारे वर्त्तमान क्षण वर्त्तिं सूत्रे निष्टंकितपणे वस्तु देखाडे, ते रुजु सूत्र अथवा रुजुसूत्र एटले रुजुशब्दे पूर्वोक्त वक्रना परित्याग थकी सन्मुख थयुं छे जे श्रुतज्ञान तेणे रुजुसूत्रे ते

श्रुत ज्ञान ग्रहण एटले अंगीकार करी शेषनुं अग्रहण कर्युं. ए नय अतीतनो विनष्ट अने अनागतना अनुत्पन्नपणाथकी अलब्धात्म लाजपणा ने लीधे अर्थ क्रियाने विषे असमर्थपणाना सद्भाव थकी वर्त्तमानज माने. वली जे पारकी वस्तु ते पण परमार्थ वृत्तिये अछता समान निःप्रयोजनपणाने लीधे जेम परनुं धन काम न आवे तेनीपेरे माने. वली लिंग, वचन, भिन्न पणे छतां एकज माने अने निक्षेपाचारे माने. ते रूजुसूत्रनय जाणवो.

पांचमो शब्दयते के० पडिवजिये शब्द वाच्येज जेनो अर्थ ते शब्द जाणवो. ते सांप्रत वस्तुना आश्रवा थकी सांप्रतपणे एनुं नाम छे. ए नय पण रूजुसूत्रनी पेरे अतीत अनागतने परिहारे सांप्रत वस्तु माने. अने ए पारकी वस्तु पण न माने तथा चार निक्षेपामांहे एक जाव निक्षेपोज माने. पण नाम, स्थापना, ने द्रव्य ए त्रण निक्षेपा पटादिकनी पेरे घटादि कार्यना करनार न थाय. माटे माने नही. वली ए नय ते लिंग तथा वचनना जेद थकी वस्तुनो पण जेद माने. जेम तटी ते जूदो अर्थ कहे अने तट ते जूदो अर्थ बोले. एमज वली एकवचन तथा बहुवचनादिक शब्दे जेद जाणवो. अने जे शक्र पुरंदरादिक शब्द ते पण सुरपतिप्रमुख शब्दने अभिन्न लिंग वचनपणाथकी तेनो अर्थ पण अभिन्नज कहे. तेथी ए एकार्थ जाणवो. ए पांचमो शब्दनय कह्यो.

छठो सं एटले एकीजावें शब्दनी प्रवृत्तिने विषे जे आरूढथयोछे, प्रवर्त्योछे ते समभिरूढ कहिये. ए नय पर्याय शब्दना जूदा जूदा अर्थ मानेछे ते आवीरीतेः—घटनात् घटः स्त्रीना मस्तकने विषे अरोह लक्षण चेष्टा करें तेवारे घट तेमज कुट एटले कौटिल वाच कछे. इहां नीचे पहोलो, उपर सांकडो एवा आकारनो धरनार ते कुट. एमज उन्न अने उंज धातु पूरणार्थ छे. तेवारे कुके० पृथ्वी तेने विषे रह्यो थकोउंजके० पूरिये ते कुंज कहिये. जेवारे जूमिकानेविषे रह्यो छतो पाणी प्रमुख साथे पूरिये तेवारे कुंज कहिये. एम समस्त पर्याय शब्दनी साथे नानाप्रकारे पडिवजे. अने वली एवुं कहे पण शब्दांतरे जे अभिधेय ते द्रव्यने पर्यायपणे अन्य शब्द वाच्य वस्तुरूपपणुं न पडिवजे. अने एकपणाने पडिवजे. तेथी सकल लोक प्रसिद्ध व्यवहारनो उछेद थाय. जेम शब्दनय लिंग वचनादिकने जेदे जेद कह्यो तेम एने पण पर्याय शब्दनो जेद अंगीकार कर्यो. ए छठो संमभिरूढनय कह्यो.

सातमो एवं शब्द प्रकारनुं वचन छे ते जेहवो व्युत्पत्तिनो प्रकार तद्रूप पणे जूत के० पहोचे ते एवंजूत नय कहिये. एवंजूत शब्द कहिये. ते साधवाने जे नय सम

थैवान थाय तेने पण एवंनूत कहियें. ए नय शब्दने अर्थ साथे विशेषित करेले. अर्थना वशथकी शब्दनुं निश्चितपणुं थाय. घट शब्दे तत्वथकी तेज के जे चेष्टावंत शब्दना वशथकी ते शब्द वाच्य निश्चितपणुं थाय. शेष ते आपणे अनिधेये शून्यपणा थकी न कहियें. एमज पांचेंद्रिय, विविध बलादिक दशविध प्राणने जे धारण करे ते प्राणीनेज संसारी जीव कहियें. पण शेष प्राण धारण व्युत्पत्तिये रहित सूत्रोक्त सिद्धनेविषे आत्मा कहियें. जे कारणे अतीतके० ज्ञान दर्शन सुखादिक पर्याय प्रते जाय. तेथी आत्मा कहियें. एवी शब्दनी व्युत्पत्ति त्यांज ले.ए सात मूल नय कह्या.

हवे ए नयोना नेदोनी संख्या कहेले. मूलः—एकेक्कोय सयविहो, सत्तनय सया हवंति एवंतु ॥ बीउविय आएसो, पंचेव सया नयाणंतु ॥८५५॥ अर्थः—नैगमादिक जेनुं प्रथम स्वरूप कह्युं ते सात नय मूल जाणवा. तेवारपछी नैगमनयना शोनेद एमज संग्रहना पण शो नेद एरीते एकेका नयना शो शो नेद करतां सात नयना सात शो नेद थायले. अने बीजोपण आएसो एटले आदेश शब्दे मतले. त्यां पंचेव के० पांचज नयना शो शो नेद थायले. ते आवीरीते के समनिरूढ ने एवंनूत ए बे नय शब्दपणाथकी शब्द नयमां अवतरे. तेवारे त्रण नय मली एकनी विवक्षा करियें तो पांच मूल नय थाय. तेना प्रत्येके शो शो नेद करतां पांच शो नेद थाय. अने अपिशब्दथकी ल शो तथा चार शो अने ब शो नेद पण थायले. ते आवीरीते. जो सामान्य ग्राहि नैगम नय संग्रह ने विषे प्रक्षेपियें अने शेष विशेष ग्राही नैगम जे ले ते व्यवहारमां प्रक्षेपियें तेवारें सातमांथी नैगमनो लोप कर्यो तेथी ल नयना ल शो नेद थाय. एमज नैगमनो लोप तथा समनिरूढ ने एवंनूत ए बे नय पूर्वे शब्द नयमां समवतार्या ले तेथी बाकीना संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र ने शब्द. ए चारमूल नयना शो शो नेद करतां चारशो नेद थाय. तेमज द्रव्यार्थिक ने पर्यायार्थिक ए मूल बे नयज ले. तेनी अपेक्षाये बशो नेदज थाय. तेमां नैगम, संग्रह ने व्यवहार ए त्रण नय द्रव्यार्थिकमां अंतरनवेले. अने शेष ऋजुसूत्र, शब्द, समनिरूढ ने एवंनूत ए चार नय पर्यायार्थिक नयमां अंतरनवेले. अथवा सात नयना असंख्याता नेदपण थायले. जावइया वयण पहा, तावइयाहुंति नयवाया इत्यादिवचनात्.

वस्तु अनंत धर्मात्मक ले, तेमां एक धर्म माने बीजा धर्म न माने; जेम दीवो एकांते अनित्यज माने तेने डुर्नय जाणवो. अने सर्वनय स्याद्वाद दीवो ते नित्यानित्यज माने ए प्रमाण ले. इति गाथा र्थार्थ॥८५५॥सात नयनुं द्वार समाप्त थयुं.

अवतरणः— वत्थग्गहण विहाणंति एटले वस्त्र लेवानी विधिनुं एकशो ने पची शमुं द्वार कहेछे. मूलः— जन्न तयट्ठाकीयं, नेयचुयं नेयगहिय मन्नेसिं ॥ आहड पामिच्चंचिय कप्पए साहुणोवत्थं ॥ ७५६ ॥ अर्थः— प्रथम वस्त्र त्रण प्रकार नांछे. एकतो एकेंद्रियना अवयवथी उत्पन्न थयां, जेम खुमो कपाश थकी थयो. ते जाणवो. बीजां विकलेंद्रियना अवयव थकी थयां एवां कौशेयादिक एटले कृमी जे जीवडा तेओथी उत्पन्न थनारां, जेवां के रेशमादिक जाणवां. त्रीजां पंचेंद्रियना अवयव थकी निष्पन्न थयां जे कंबल लोवडि प्रमुख. वली एक यथाकृति, एटले जेमांहे सीववानुं काम पडे नही. जेवुंमल्युं तेवुंज उपयोगमां आवे, बीजुं अल्प प रिकर्म ते जेमां एकज सीवणी थाय. त्रीजुं बहुल परिकर्म ते जेमां सीवणी घणी थाय अने ते घणा कटका करीने सीवेलुं होय. इत्यादिक भेद जाणवा. ॥७५६॥

तेमां पहेलुं यथाकृत मले तो अल्प परिकर्म न लेवुं. अने अल्प परिकर्म मल तुं होय तो बहुल परिकर्म न लेवुं. एम बेउने अभावे बहुल परिकर्म लेवुं. जेम जेम संयमनो व्याघात न थतो होय तेम तेम लेवुं. ए गच्छवासि लिये त्यां जे न तयट्ठा के० ते वस्त्र साधुने अर्थे क्रीत एटले वेचातुं मूल आपी लीधुं न होय. वली यतिने अर्थे वण्युं पण न होय. तथा नयगहिय के० जे वस्त्र आपणा पुत्र कलत्र कर्मकरादिक पासेथी छीनवी लीधेलुं न होय. वली अहड शब्दे अभ्याहृत ते स्व ग्राम ने परग्रामना भेदे करी बे प्रकारनुं छे.

त्यां जे हाटे वस्त्र थाय. पछी मनमां जाणे के यति वस्त्र वोहोरवा आवशे एम जाणी घेरे लावी राखे ते स्वग्राम अभ्याहृत जाणवुं. अने परग्राम अभ्याहृ त ते बीजा गामथकी लावी आपे ते परग्राम अभ्याहृत थाय.

प्रामित्य ते जे बीजा पासेथी उछीनुं लेइ साधुने आपे. इहां पिंड विशोधिना दोष समस्त. वली विशोधि कोटी अविशोधि कोटी जाणवी. त्यां जे साधुने अर्थेज वस्त्र वणाव्युं होय ते अविशोधि कोटी. अने जे धोवरावबुं प्रमुख साधुने अर्थे करावे ते विशोधिकोटी. इत्यादिक दोष रहित जे वस्त्र होय ते साधुने लेवुं कल्पे.

हवे कल्पनीय वस्त्रमां पण जे वस्त्र लेतां सारु नठारुं थाय ते देखाडेछे. मूलः— अंजण खंजण कद्दम, लित्ते मूस भक्खिय अग्गिविदड्ढे ॥ तुन्निय कुट्टिय पज्जवलीढे होइ विवागु सुह असुहोवा ॥ ७५७ ॥ अर्थः— अंजन ते सुरमो, खं जन ते दीपमल, अने कर्दम एटले कादव अथवा गाडाप्रमुखनी मली ते प्रसि द्ध छे. तेणे करी लिप्त एटले खरडायलुं वस्त्र होय, अथवा उंदरे करडेलुं होय,

तथा उदेहए करमेलुं होय, तथा आगमां बल्युं होय, तूंणेलु होय अथवा धोबी ये कूटतां थका कांकरी साथे कूटाणु होय, छिद्र पडयुं होय, वली पज्जव के० पुराणादिक पर्याये करी एटले जीर्णपणाए जे युक्तछे. एवा वस्त्रना ग्रहण थकी विपाक जे परिणाम ते जलो अथवा नूंडो जेवो होय ते विधि विशेषे देखाडे छे.

पंहेलो. जेवारे वस्त्रनो आपनार वस्त्र वहोरावबा आवे तेवारे ते वस्त्र त्यांज उखेडी जोइये. जो तेने छेडे कांइ सुवर्णादिक बांध्युं होय तो गृहस्थने कहे के आ गांठ उखेडी जूउ. तेवारे ते गृहस्थ पोतेज जोइने ते गांठमां बांधेली चीज लइ लीये. अने पोते साधु देखे तो पोतेज तेने आपे. यद्यपि गृहस्थने कहेतां थकां अधिकरण दोष थाय ते थोरुं समजवुं, पण जो नज कहे तो सबल उड्डाहादिक दोष प्राप्त थाय. अने सुवर्णादिक न होय तो अंजनादिक जोइ गुण दोष विचारणा करे.

मूलः—नवजाग कए वछे, चउरो कोणाय दोन्नि अंताय ॥ दोकणा वट्टीउ, मझेवछस्स एक्कंतु ॥ ७५७ ॥ अर्थः— नवजाग वस्त्रना करिये तेमां चार खूणा, अने दोन्निके० बे छेहेडा, तेमज बे नीचे तथा उपरनी किनारीना जाग. अने एक मझे के० वस्त्रनो मांहेलो जाग. एरीते नवजाग करिये. ॥७५९॥

मूलः— चत्तारि देवयाजागा, डुवेजागाय माणुसा ॥ आसुराय डुवेजागा, एगोपुण जाण रस्कस्सो ॥७५९॥ अर्थः—चारकुणाना चारजाग ते देवताना जाग जाणवा, बे छेडाना जाग ते मनुष्यना जाणवा, बे कीनारीना जाग ते असुर देवोना जाणवा. अने वचमांनो एक जाग ते राक्सनो जाणवो. ॥७५९॥

हवे एनुं फल देखाडेछे. मूलः—देवेसु उत्तमो लाजो, माणुस्सेसु य मझिमो ॥ आसुरेसु य गेलन्नं, मरणं पुण जाण रस्कस्से ॥७६०॥ अर्थः—चार देवताना जागने विषे जो कदाचित् पूर्वोक्त अंजनादिक लाग्यांहोय तो त्यां उत्तम लाज जाणवो. अने मनुष्यना जागमां जो पूर्वोक्त अंजनादिक लाग्यां होय तो सारूंपण नही ने मातुं पण नही. मध्यम फल जाणवुं. अने असुरना जागमां अंजनादिक लाग्यां होय तो ते वस्त्र वोहोरवा थकी ग्लानत्व रोगनी उत्पत्ति थाय. अने राक्सना जागमां अंजनादिक आवे तो मरण प्राप्ति जाणवी.॥इति गाथा पंचकार्थः॥७६०॥

अवतरणः— ववहारा पंचत्ति एटले पांच व्यवहारनुं एकशो ने छवीसमुं द्वार कहेछे. मूलः—आगमसुय आणा धारणाय जीयंच पंच ववहारा ॥ केवल मणोहि चउदस, दस नव पुव्वाइं पढमोछ ॥ ७६१ ॥ अर्थः— ववहरिये जीवादिक जेणेकरीने तेने व्यवहार कहिये. अथवा साधुने प्रवृत्ति निवृत्ति रूप ते व्यवहार. तेनां

कारण पण जे ज्ञान विशेष तेपण व्यवहार कहिये. ते व्यवहार पांच प्रकारेछे. ते मां प्रथम आगम व्यवहार ते आगम्यतेके० जाणिये जेणेकरीने पदार्थोने तेने आगम कहिये. बीजो जे सांजलीये ते श्रुतव्यवहार जाणवो. त्रीजो जेणेकरी आज्ञा, आदेश आपिये ते आज्ञाव्यवहार जाणवो. चोथो धारिये ते धारणाव्यवहार जाणवो. पांचमो जीत शब्दे आचार ते जीत व्यवहार जाणवो.

तेमां प्रथम जे आगम व्यवहार ते केवलज्ञानी मनःपर्यवज्ञानी, अवधिज्ञानी, चउदपूर्वधर, दशपूर्वधर, अने नवपूर्वधर एनो व्यवहार ते एज छ प्रकारनो छे. तेमां प्रथम इहां केवलीना ग्रहण थकी आलोचना केवली पासेथी लेवी. केवलीने अजावे मनःपर्यवज्ञानी पासेथी आलोचना लेवी. एम पाछला पाछलाने अजावे आगला आगला पासेथी आलोचना लेवी. त्यां केवली प्रमुख जे छे ते आगम व्यवहारी समस्त अतिचार पोतेज जाणे, तेनी पासे गयां छतां ते पोतेज अतिचार प्रगट करी आलोचना आपे. किंवा अन्यथा प्रकारे एवी आशंका चित्तमांहे आणे ते कहेछे.

मूलः—कहेहिं सव्वं जो वुत्तो, जाणमाणो विगूहई ॥ नतस्सदिंति पच्छित्तं, बिंतिअ सुछसोहय ॥८६१॥ अर्थः—किंवा अन्यथा प्रकारे एवी आशंका चित्तमांहे लावीने ते आगम व्यवहारी पुरुष जे आलोचनानो आपनार ते आलोचना लेनारने कहे के तुं तारा सर्व अतिचार कहे पण ते जाणमाणोके० पोताना दोष सर्व जाणतो थको पण जो मायाये करी विगूहईके० गोपवी राखे तो तेने प्रायश्चित्त आपे नही. अने बिंतिके० एवुं कहेके अन्यत्र स्थानके जइ प्रायश्चित्तनी शुद्धि करो. ॥८६१॥

मूलः—न संजरेइ जे दोसे, सप्नावा नय मायउ ॥ पच्चरकी साहए तेउ, मायणोउन साहए ॥ ८६२ ॥ अर्थः— वली जेने दोसके० अतिचार ते नसंजरइके० सांजरे नही, चित्तमां आवे नही. सप्नावाके० स्वजावेज न संजारे, परंतु नयमायउके० माया एटले कपटे करीज नथी केतो; एम नथी. तो तेवाने पच्चरकीके० केवल ज्ञानना धरनार ते लागेलां दूषण सर्व वर्णन करीने साहाएके० कहे, अने मायावंतने कहे नही. केमके ते एवुं जाणे जे एने कहीश तो पण पछी व्यर्थ थशे. तेमाटे मायावंतने कहे नही. अने स्वजावे जेने विसर्जन थया होय पण निष्कपटी होय तेने कहे. इहां चउद पूर्वधरने यद्यपि परोक्ष ज्ञान छे तोपण उपयोग दीधाथी जेटलुं केवली कहे तेटलुं ए पण कहे. इहां कोइ एवुं कहेशे के आगम व्यवहारी जाणे तो तेने एटलुंज कहिये जे मने आलोयणा आपो. पछी आपणां प्रायश्चित्त ते पोता

नी मेळे आपणने कहीने ते माफक आलोयणा पण आपशे, माटे आगम व्यव हारीने लागेला दोष विस्तारीने कहेवानी जरूर नथी. ॥ ७६३ ॥

एने उत्तर कहेछे के, ते रुडुं कह्युं परंतु आलोयणाथी घणा गुणछे. एथकी सम्यक् आराधना थाय अने आलोयणहारने वत्साहने अर्थे गुरु एम कहे के, हे वत्स, तुं धन्य जाग्यवंत छे के, एम मानने हणीने पोताना आत्माना हितने अर्थे पोतेज रहस्य प्रगट करेछे. ए वात महादुर्लजछे एम कहे तेथी ते समस्त प्रकारे निःशल्य थइने जे गुरु प्रायश्चित्त आपे ते हर्षवंत छतो करे. एम करतो थको अल्प काळमां निर्वाणपद पण पामे. ए प्रथम आगम व्यवहार कह्यो.

हवे बीजो श्रुत व्यवहार कहेछे. मूलः—आयारपकप्पाई, सेसं सव्वं सुयं विणिद्दिठं॥ देसंतरठियाणं, गूढपयालोयणाआणा ॥ ७६४ ॥ अर्थः— आचारप्रकल्प ते निसीथ सूत्रछे आदे जेने, एवा व्यवहारसूत्र, वृहत्कल्प, दशश्रुतस्कंध, अग्यार अंग, अने नवपूर्वथकी शेष पूर्व पण श्रुतव्यवहारमांहेज छे. ए सर्व विनिर्दिष्टके० कह्याछे.

हवे श्रुतव्यवहारी जे थाय ते प्रगटपणे आगलाना अजिप्राय जाणवाने अर्थे तेना मुख थकी त्रणवार दूषण कहेवरावे; पण एकवार न कहेवरावे. केम के श्रुतव्यवहारी जे होय ते एवुं पण न जाणे के आ जुठा मनथी आलोचेछे. किंवा साचा मनथी ए आलोचेछे, एवो तेनो अजिप्राय जाणी शके नही तेथी एकज वार न कहेवरावे. पेहेली वारे कहे छते एम कहेके मने निद्रा हती माटे सांजल्युंनही. तेथी बीजीवार कहेवरावे तेवारे फरी कहेके मे बराबर हैयामां धार्युं नही. माटे फरी त्रीजीवार कहेवरावे ते समये बरोबर कहेतो पछी ए निर्मायछे; अने जो विपरीत कहेतो समजवुं के आ परिणामे करी कुटिलछे. त्यारे तेनो पांच दिवससह वास कर्यो छतां आ मायावीछे के नथी? तेनी खातरी करी, जो मायावी छे एम जणाय तो अथवा जो जुठुं कहेतो प्रथम तेने जुठानुं प्रायश्चित्त आपी पछी आलोयणा आपे.

हवे त्रीजुं आज्ञाव्यवहार कहेछे. देसंतरके० जे बेहु आचार्य अने सूत्र अर्थना आसेववा थकी महागीतार्थ होय, पण जंघाबलना क्षीणपणाथकी विहारक्रम करी शकता नथी, अने दूर देशांतरे रह्या छे पण मांहोमांहे मळी शकता नथी. अने ते बेमां एक प्रायश्चित्त लेवा वांछे छे, अने तेवा गीतार्थ शिष्यने अजावे धारणा कुशल अगीतार्थ शिष्यने सिद्धांतनी जाषाये गूढार्थ अतिचार आसेवनाना पद कही बीजा आचार्य पासे मोकले. पछी ते आचार्य तेना अपराध श्रवण करी द्रव्य, क्षेत्र, काल, जाव तथा संघयण धृति बलादिक विचारी पोते त्यां जाय.

अथवा तथाविध गीतार्थ शिष्य तेनी साथे कहेवरावी मोकले, अथवा तेना अनावे जे आव्योछे तेनेज फरी अतिचार विशोधि कहीने मोकले, ए आज्ञाव्यवहार जाणवो.

हवे चोथो धारणाव्यवहार कहेछे. मूलः– गीयत्थेणं दिन्नं, सुद्धिं अवराहिऊण तह चेव॥दिंतस्स धारणा तह, उद्धियपयधरण रूवावा॥७६५॥ अर्थः–कोइक गीतार्थ संविग्न आचार्ये कोइएक शिष्यादिकने कोइक अपराधने विषे द्रव्यादिक चारे जोइने जे विशुद्धि दीधि होय, पछी ते शिष्य गुरुनी आपेली शुद्धि मनमांहे धारीने बीजा कोइकने तेवाज अपराधे तेज शुद्धि आपे. एम देतां थकां धारणा व्यवहार कहेवाय. तहकें० तेमज उद्धतपद धरणरूप अथवा धारणा ते आवी रीते. कोइएक वेयावच्चनो करनार शिष्य छे, पण ते समस्त छेद श्रुत योग्य नथी; ते वारे तेने आचार्य प्रसाद करीने केटला एक प्रायश्चित्तना पदनो उद्धार करीने कहे, पछी ते पदने ते शिष्य धारी राखीने अन्यने तेज पद मांहेली आलोयणा आपे. ते धारणाव्यवहार कहिये. ॥ ७६५ ॥

हवे पांचमो जीत व्यवहार कहेछे. मूलः–दवाइ चिंतिऊणं, संघयणाईणि हाणिमासज्ज ॥ पायच्छित्तं जीयं, रूढंवा जं जहिंगच्छे॥७६६॥ अर्थः–जे अपराध उपन्याथी पूर्वे साधुओ घणुं तप करीने तेनी शुद्धि करता हता तेज अपराध उपन्या छतां सांप्रत एटले हमणांने काले द्रव्यादिक चारने चिंतवी संघयण धृति तथा बलनी हाणी जाणी जे योग्य तपनुं प्रकार प्रायश्चित्त आपे, तेने समय जाषाये जीत एवो गीतार्थ महंत पुरुषो कहे छे. अथवा जे प्रायश्चित्त जे आचार्यना गच्छमां सूत्रथकी अधिक न्यून प्रवर्त्युं होय अने ते बीजा अन्य घणा गीतार्थोने मान्य होय तेने रूढ जीत व्यवहार कहिये. ए पांच व्यवहार मांहेला कोइ पण व्यवहारे सहित गीतार्थ थाय. तेनी पासेथी प्रायश्चित्त लहिये, परंतु अगीतार्थ पासेथी प्रायश्चित्त लेवा थकी दोषनी उत्पत्ति थायछे, उक्तंच, अगीउं नवियाणाइ, सोहिं चरणस्स देइऊणहियं ॥ तो अप्पाणं आलोयगंच पाडेइ संसारे ॥ १ ॥ इतिषट्गाथार्थः ॥७६६॥

अवतरणः– अहाजायंति एटले पांच प्रकारना यथाजात कहिये. तेनुं एकशो ने सत्तावीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– पंच अहाजायाई, चोलगपट्टो तहेव रयहरणं ॥ उण्णिय खोमिय निस्सेज्ज, जुअलयं तहय मुहपत्ती ॥७६७॥ अर्थः–यथाजात पणु जन्म श्रमण पणा आश्रयीने जाणवुं. त्यां जेवारे चारित्रनुं ग्रहण करे तेवारे ए पांच वानां थाय ते कहेछे. पहेलो चोलपटो, ते प्रसिद्धछे तेमज बीजो रजोहरण, त्रीजो औणिक, एटले उनसंबंधी, चोथो क्षौमीक एटले रुतसंबंधी अने नसीजनो युगल तेमां एक

नसीज तो उनिमांहे थाय. दांमी उपर त्रण विटलीजेनीवले ते पहेली नसीज. अने बीजी हाथने त्रीजे नागे आयाम दसीये करी सहित ते रजोहरण कहिये आगल दांमीये दसी न हती. ते उपरे वली बीजी सूत्र नसीज ते एक हाथ फाफेरुं प्रमाण आयामे थाय. ते त्रीजी जाणवी. अने ते उपर एक हाथ अने चार अंगुल प्रमाणे घणी वीटली वले ते बेसवाने काम आवे तेने चोथुं पादप्रोछन रूढीथी कहिये. तेमज पांचमी मुहपति ते मुखने ढांके. जे पोतके० वस्त्र ते मुखपोत्तिका ए एक वेंत ने चार आंगल प्रमाणनी जाणवी. ए पांच यथाजातकह्या. ॥ ७६७ ॥

अवतरणः– निसिजागरणविहित्ति एटले रात्री जागरण करवानी विधिनुं एक शोने अठावीसमुं द्वार वखाणेछे. मूलः–सव्वेवि पढमजामे, दोन्निवि वसहाणआयमा जामा ॥ तइउ होइ गुरूणं, चउछ सव्वे गुरुसुयइ ॥७६८॥अर्थः–सर्व साधुउ पेहेला पहोरने विषे सझायादिक करतां जागे, अने पेहेली रातनो बीजो एक पहोर अने पाछली रातनो पहेलो पहोर, ए बे पहोर ते वृषजना जाणवा. त्यां जे वृषजनी परे वृष ज एवा साधु गीतार्थ तेमां जे सूत्रना धरनार होय ते शयन करे, अने अर्थना जा णनार ते जागे. पन्नवणादि सूत्रार्थ परावर्त्तन करे. त्यां त्रीजे पहोरे वृषज शयन करे, तेवारे गुरुनुं जागवुं थाय. ते वखत गुरु उठी सूत्रार्थ गुणे, चिंतवे. अने चोथा पहोरे तो वली सव्वेविके० सर्वे उठीने वैरात्रिक एटले परोढीयानो काल ग्रहण करी कालिक श्रुत परावर्त्ते, तेवारे वली गुरु शयन करे. इहां ए कारणछे के प्रजाते निद्राघूर्णित नेत्रथका गुरु जव्यजीवोने उपदेश प्रमुख आपी शके नही, माटे ते गुरु चोथे पहोरे शयनकरे. ॥ ७६८ ॥

अवतरणः– अलोअणदायगन्नेसत्ति एटले आलोयणाना देनार जे गुरु तेने जोवानुं एकसो ने उंगणत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः–सल्लुद्धरणनिमित्तं, गीयस्सन्नेस णाउ उक्कोसो॥जोयण सयाइ सत्तउ, बारसवासाइं कायव्वो॥७६९॥अर्थः–सल्लुधर णनिमित्तके० सल्य उद्धरवासारु आलोयणा लेवाने अर्थे गीतार्थ गुरुनी गवेषणा करवा सारु जोवा निकलवुं. ते उत्कृष्ट खेत्र सातशें योजन सीम फरवुं, अने वरस आ श्री बारवर्ष सीम शोध करवी. एम आलोचना लेवाने अर्थे गुरु शोधवा सारु न्र मण करतो कदापि मरण पामे तोपण ते आराधकज कहेवाय. उक्तंच. आलोय णा परिणउ, सम्मं संपढिउ गुरूसगासे ॥ जइ अंतरावि कालं करेज्ज आराहउ तहवि ॥ १ ॥ हवे जो समस्त गुण सहित गुरु न पामे तो संविज्ञ गीतार्थ मा त्रने पण आलोयण कहेवी. जे कारण पणा माटे कह्युंछे के अपवाद पदे गीता

थी संविज्ञ पाक्षिक सिद्ध पुत्र प्रवचन देवताने अनावे सिद्धने पण आलोचना आपवी. परंतु सशल्य मरणते संसारनुं कारण छे. उक्तंच. संविग्गोगीयछे, असई पासछमाइ सारूवी ॥ इतिगाथार्थ. ॥ ७६९ ॥

अवतरणः— गुरुपमुहाणं कीरइ असुद्धसुद्धेहिजेत्तियं कालंति एटले गुरुजे आचार्यादिक तेनी अशुद्ध ते आधाकर्मादिक दोषे दूषित अने शुद्ध ते सप्ततालीस दोषे रहित एवा अशनादिके जेटला काल सुधी प्रति जागरणा करीये तेना अ र्थनुं एकशो ने त्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः— जावज्जीवंगुरुणो, सुद्धमसुद्धेहिवाविका यवं ॥ वसहे बारसवासा, अट्ठारस भिरकुणो मासा ॥ ७७० ॥ अर्थः— जावजीव सुधी चारे अशनादिक औषध प्रमुख सुजतां लेवां अथवा ते न मले तो असुज ता अहारादिक पंचक परिहाणे लेइने पण समस्त गछने आधारजूत सूत्रार्थना निर्णयना करनार एवा श्रीआचार्यनी प्रति जागरण जाव जीव सुधी श्रावके करवी.

एमज वृषनके० उपाध्यायनी बारवर्ष लगी प्रति जागरणा करवी. केमके एट ला काल पछी बीजो वृषन गछनार धारक थाय. तेमज सामान्य साधुनी अढार मास प्रति जागरणा करवी. पछी ते अनशननुं ग्रहण करे. ए रोगादिक कारणे प्रति जागरणा कही. अन्यथा आरोग्य शरीर छतां न करवी, ॥७७०॥ए व्यवस्था व्यवहार नाष्यने विषे सामान्य ग्लाननी क्रियाने अधिकारे कहीछे, तेज कहेछे.

उक्तंच छम्मासे आयरिउ, कुलंच संवछराइं तिन्नि नवे ॥ संवछरंगणोखलु, जा वज्जीवं नवे संघो अर्थः—इहां ए नावछे के छ महीनासुधी आचार्य चिकित्सा करा ववा वांछे. पछी अनशन लइ शके तो ले अने एटलामां साजो न थाय तो ते कु लने आपे. पछी ते कुल तेनी त्रण वर्ष परिचर्याकरे. तेम छतां पण निरोगी न था य तो वली संवछर सीम तेनी गण परिचर्या करे. तेथी पण निरोगता न थाय तो ते गण संघने आपे. पछी ते संघ तेनी जाव जीव पर्यंत परिचर्या करे. इतिगाथार्थ.

अवतरणः— उवहिधोयण कालोत्ति एटले उपधि धोवाना काल माननुं एक शो ने एकत्रीसमु द्वार कहेछे मूलः—अप्पत्तेवि अवासे, सवं उवहिं धुवंति जयणाए असईएउदगस्सउ जहन्नउ पायनिज्जोगो ॥ ७७१ ॥ अर्थः—अप्पत्तेके० वर्षाकाल आव्याविना जो पाणीनो योग मलेतो सवके०सर्व उपधि जेटलुं उपकरण थाय. ते ज यणाये करीने धोवुं अने उदकने अनावे जघन्यथी पात्रानां वस्त्र ते तो जरूर धोवांज.

इहां विशेष देखाडेछे. मूलः— आयरिय गिलाणाणं, मइलामइला पुणोवि धो इज्जा ॥ माहुगुरूण मवन्ना, लोगंमि अजीरणं इयरे ॥ ७७२ ॥ अर्थः— आचार्य,

सिद्धांत अने अर्थना वखाणनार अनेक गुण सहित होय, जेमनी पासे देशनादिक सांजलवा सारुं घणा लोक आवे, एनां उपलक्षण थकी उपाध्यायादिक पण लइये. एवाने जो मलीन वस्त्र होय तो तेथी लोकमां अश्लाघा थाय. तेमज ग्लानने मलीन वस्त्रना योग थकी टाढ वायराने योगे शीत उपजे, तेथी आहार पाचक थाय नही. घणी रोग वृद्धि थाय. ए कारणथकी वस्त्र मलीन होय तो अवर्णवाद दोष टालवाने अर्थे वस्त्र धोवां जोइये. शेष यतिना वस्त्र शेष काले धोवा थकीप्राणीनो विनाश तथा बकुश पणानो संजव थाय. इत्यादिक दूषण जाणी धोवां नही एमकोइ कहेशे तो वर्षाकाल आव्या थका पण ए दोष ढेज. एटले मूलथी धोवांज नही.

तेनो उत्तर कहेछे के त्यां जो न धोइये तो वर्षा काले मलने योगे फूलणी था य. तेथी घणा दूषण लागे. अने श्रीजिनेश्वरनो आज्ञा पण एमजछे. यद्यपि प्रा णीउनुं उपमर्द थाय तोपण जे सूत्रना वचन मान्य करी सूत्रोक्तमार्गे प्रवर्त्ते तो तेवा जयणाये प्रवर्त्तनारने दूषण नथी. जाजयमाणस्सजवे इत्यादि जगवंत जाषे ढे. इति गाथा द्वयार्थ ॥ ७७२ ॥

अवतरणः– जोयणजायत्ति एटले जोजनना जागनुं एकशो ने बत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः–बत्तीसं किर कवला, आहारो कुच्छिपूरउ जणिउ ॥ पुरिसस्स म हिलियाए, अठ्ठावीसं जवे कवला ॥ ७७३ ॥ अर्थः– बत्रीश कवल ते किल श ब्दे ए मध्यम निरतोछे, एटले कोइ दरिद्री घणुं खाय अने कोइ अल्प आहारनो धणी थोडा कवल करे, तेथी इहां ए कूखनो पूरनार प्रमाण कह्यो. ते पुरुषने ब त्रीश कवल अने महिलियाके० स्त्रीने अठ्ठावीस कवल प्रमाण थाय. ॥ ७७३ ॥

हवे एना जाग आवी रीते थाय कहेछे. मूलः– अद्धमसणस्स सवंजणस्स कुज्जा दवस्स दो जाए ॥ वायपवियारणठ्ठा ढप्नयं ऊणयं कुज्जा ॥७७४॥ अर्थः– ढ जाग उदरना करी तेमांहे अर्द्ध एटले त्रण जाग तो अशन मग कूर प्रमुखना तथा सवंजनस्सके०सालणो अने ढाशे करी सहितना कुज्जाके० करवा. अने इव्य के० पाणीना बे जाग करवा, वली वायुनो प्रतिचार एटले संचारवो तेने अर्थे ढ ठो जाग ते उणो करवो ॥ ७७४ ॥

हवे ए वात कालविशेषे देखाडेछे. मूलः–सीउ उसिणो साहारणोय कालो ति हा मुणेयव्वो ॥ साहारणंमि काले, तन्नाहारे इमा मित्ता॥७७५॥अर्थः– शीत उष्ण अने साधारणना जेदेकरी काल त्रण प्रकारे ढे. त्यां साधारण कालने विषे आ हारनी ए मात्रा कहीछे ॥ ७७५ ॥

मूलः—सीए दवस्स एगो, नत्ते चत्तारि अहव दो पाणो॥उसिणे दवस्स डुन्नी, तिन्नि विसेसाउ नत्तस्स ॥ ७७६ ॥ अर्थः— अति शीतकालनेविषे दवस्सके० पाणीनो एक नाग, अने नत्तेके० नक्तना चार नाग, मध्यम शीतकालनेविषे पाणीना बेनाग अने नक्तना त्रण नाग, तेमज मध्यम उष्णकालनेविषे पाणीना बे नाग अने नक्तना त्रण नाग, अति उष्णकालनेविषे पाणीना त्रण नाग अने नक्तना बे नाग मलीने पांच नाग नक्त अने पाणी, एणे पूर्णकरी बहो नाग वायुसंचारने अर्थे मुकवो ॥ ७७६ ॥

हवे अवस्थित नाग कहेछे. मूलः—एगो दवस्स नागो, अवहिओ नोयणस्स दो नागा, वड्ढंति वहायंतिव दोदो नागाउ एक्केक्के ॥ ७७७ ॥ अर्थः— एक द्रव्य एटले पाणीनो नाग, तथा अवस्थित निश्चित नोजनना बे नाग, अने बीजा बे नागछे ते वधे, अने हायंतिके० घटे एटले पानकमां वधे तो नोजनमां घटे अने नोजनमां वधे तो पानकमां घटे. इति गाथा पंचकार्थः ॥ ७७७ ॥

अवतरणः— वसहिसुद्धित्ति एटले वस्तिजे उपाश्रय तेनी सुद्धिनुं एकशो ने तेत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः— पट्ठीवंसो दो धारणाउ चत्तारि मूलवेलीउ ॥ मूलगुणेहि विसुद्धा, एसा हु अहागडावसही. ॥७७८॥ अर्थः— पृष्टीवंस शब्दे आमसर कहिये, अने दोधारणा शब्दे थुणी जेना उपर आमसर धरायछे. तेवी बेथूणी जाणवी. अने वली चत्तारिके० चारे खूणे मूलवेलिउके० न्हानी थूणीओ चार होय. ए सात वानां गृहस्थे पोताने अर्थे कर्यां होय तो मूलगुणविशुद्धि कहिये. अने जे गृहस्थ साधु आश्रि यतिने उद्देसे करे ते वस्ति निश्चयकी आधाकर्म कृत थाय.

हवे उत्तर गुणविशुद्धि कहेछे. मूलः— वंसग कडगो कंबण, छायण लेवण डुवारनूमीय ॥ परिकम्म विप्पमुक्का, एसामूलुत्तरगुणेसु॥ ७७९॥ अर्थः—उत्तरगुण बे नेदे छे. एक मूलोत्तरगुण अने बीजा उत्तरोत्तरगुण. त्यां प्रथम मूलुत्तरगुण ते जे न्हानी थुणी उपर आडी आपिये ते वंसग कहिये. अने आमा वरा आपिये ते कडग कहिये. वली उपर बांधवाने अर्थे कांब आपिये ते कंबण, तथा छायण ते उपर आच्छादन करवासारु जे मानादिक शिण आपिये; ए सर्वने छादन कहिये. अने उपर गारा प्रमुख साथे लेपन एटले लीपण करवुं, तथा द्वार पछवाडे ढांकवा सारुं नानुं मोटुं बारणानुं करवुं. पछी नूमीके० उंची नीची नूमी नागीने आंगणुं समुं करवुं. ए सात मूलोत्तरगुणनी परिक्रमणाये रहित जे उपाश्रय ते मूलोत्तर गुणनेविषे विशुद्धि कहिये. ॥ ७७९ ॥

हवे उत्तरोत्तरगुण विशुद्ध कहेछे. मूलः—दूमिय धूमिय वासिय, उज्जोइय बलि कडा अवत्ताय ॥ सित्ता संसट्ठाविय, विसोहि कोडिंगया वसही ॥ ८८० ॥ अर्थः—दूमिय तेने कहिये जे सकोमल लेपन करी कोमल जीतो करवी, अने धवलवुं एटले उज्वल करवुं. वली धूमियते सुंगधपणाने अर्थे अगर धूपादिके धूप करवो, तथा वासिय ते फूल प्रमुखे करी वासित करवो अने उज्जोइयके० रत्न दीवादिके करी ज्यां उद्योत कर्यो होय, बलिकडाके० बाकला तापसी प्रमुख बलि ज्यां करी होय अवत्तायके० छाण माटीये करी जूमिकाये तथा आंगणे ज्यां लेप कर्यो होय, सित्ताके० केवल पाणीये करी सिंचीहोय संसट्ठाके० बुहारिये करी पूंजीने कचरो प्रमुख दूर कर्यो होय. एटलां ए आठ वानां साधु उद्देसीने कर्यां होय तो विशोधिकोटिगत वस्ति कहिये.

अने प्रथम सात मूलगुण अने सात मूलोत्तरगुण ए चउद ज्यां यति आश्रयि कर्या होय तो ते अविशोधि कोटिगत वस्ति जाणवी. तेमज चउशालादिकनेविषे पण मूलोत्तर गुण विजाग जाणवा. पण ते इहां सूत्रमां जे कह्या नथी तेनुं कारण एछे के जे बहुल पणे साधु विहार करतां गामडानेविषे जाय त्यां जेवी सूत्रमांहे कही तेवी थाय. तेथी तेनुंज ग्रहण कीधुं. ॥ ८८० ॥

इहां वली विशेष देखाडेछे. मूलः— मूलुत्तरगुणसुद्धं, थी पसु पंमग विवज्जिअं वसहिं ॥ सेविज्ज सवकालं, विवज्जए होंति दोसाउ ॥८८१॥ अर्थः— प्रथम कह्यां जे मूलगुण ने उत्तरगुण तेणेकरीने विशुद्ध अने स्त्री, पशु, पंमग तेणेकरी विवर्जित एटले रहित एवीजे वस्ति तेने सेविज्जके० साधु सर्वकाल सेवे, जोगवे, पण एथी विपरीत जेमां मूलुत्तर गुण विशुद्धि न होय अने स्त्री पशु पंमगे सहित होय एवी वस्तिनुं सेवन कर्याथी साधुने दूषण प्राप्त थायछे. इतिगाथा चतुष्टयार्थ.

अवतरणः— संलेहणा डुवालस वरिसेत्ति एटले संलेषणा बार वर्ष सुधी करवी तेनुं एकशोने चोत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—चत्तारि विचित्ताइं, विगई निज्जूहियाइं चत्तारि ॥ संवछरे य दोन्निउ, एगंतरियंच आयामं ॥ ८८२ ॥ अर्थः— आगमोक्त विधियेकरी शरीरादिकनुं अपकर्ष एटले कृशपणुं करे तेने संलेषणा कहिये. ते जघन्य, मध्यम, अने उत्कृष्टना जेदे करी त्रण प्रकारे छे. तेमां जघन्य तो एक मास सीम, अने मध्यम एक वरस सीम. उत्कृष्ट बार वर्ष सीम जाणवी.

इहां प्रथम उत्कृष्टनी विवक्षा करेछे. चत्तारि के० प्रथमना चार वर्ष सीमतो विचित्र एटले चतुर्थ, अष्टम दशम, द्वादशादिक विचित्र प्रकारनां तप करे अने

पारणे सर्व काम गुणित आहार लिये. ते वार पछी बीजा चार वर्ष सीम. वली पूर्वोक्त विचित्र तप करे परंतु पारणे विगइ रहित निवी करे, उत्कृष्ट रस वर्जे. पछी वली बे वर्ष लगी चतुर्थ करे. पारणे आंबिल करे. एवी रीते दश वर्ष पुरां कस्या पछी बे वर्षमां जे करे ते कहेछे. ॥ ८८२ ॥

मूलः— नाइविगिठ्ठोय तवो, छम्मासे परिमियंच आयामं ॥ अवरेविय छम्मासे, होइ विगिठं तवो कम्मं ॥ ८८३ ॥ अर्थः—हवे अग्यारमा वर्षना छ मास सुधी चतुर्थ षष्ठ तप करे, अने पारणे आंबिल करे. परंतु कांइक उणो आहार लिये. वली आगला छ मासमां अष्टम, दशम अने द्वादशादिक तप करे अने पारणे आंबिल संपूर्ण करे. एटले अग्यार वर्ष पूरण थाय. ॥ ८८३ ॥

हवे बारमा वर्षनी करणी कहे छे. मूलः— वासंकोडी सहियं, आयामं कट्टु आणुपुव्वीए ॥ गिरिकंदरंच गंतुं, पाउवगमं पवज्जेइ ॥ ८८४ ॥ अर्थः— वासंके० बारमा वर्ष सीम कोटीसहित निरंतर आंबिल करे. जे कारणे निसीथनी चूर्णिमां कह्युं छे. डुवालसमंवरिसं निरंतरहायमाणं, उसिणोदएणं आयंबिलं करेइ तं कोमीसहियं नवति जेणं आयंबिलस्स कोडी कोडीएमिलइत्ति. एक आचार्य वली एम कहेछे के बारमे वर्षे चतुर्थ करीने पारणे आंबिल करे, इहां बारमा वर्ष संबंधी घणा मत छे; परंतु ग्रंथगौरवना नय थकी इहां लखता नथी. ॥ ८८४ ॥

हवे बारमे वर्षे आंबिल करे तेवारे नोजननो कवल न्यून करतो ज्यां सीम छेहेलो एक कवल थाय त्यां सीम करीने पछी ते कवलमां पण कवलना कणिया उछा करतो जाय.ते ज्यां सीम एक सीथे एटले एक कणीये आवे त्यां सीम जाणवी. एनुं उदाहरण कहेछे. जेम दीपकमां समकाले तेल ने वाटनो क्षय थाय तेम इहांपण शरीर अने आयुष्यनो क्षय समकाले थाय.

फरी बारमा वर्षना जेवारे छेहेला चार महिना रहे तेवारे एकांतरे तेलनो कोगलो नरी घणो वखत मुखमांहे राखी राखमांहे नाखि दिये. पछी उन्हा पाणी साथे कोगलो करे. जो एम न करे तो छेहेडे मोढुं लुखुं थाय मिलीजाय अने तेथी नवकार मात्रनो उच्चार न थाय. एरीते बार वर्ष संलेषणा करी पछी गिरिशब्दे पर्वत तेनी गुफामां जइने अथवा षट्काय जीव रहित एवा एकांत स्थानके जइ त्यां पादोपगमने नक्त परिज्ञाइ अथवा गिनी मरणादिक पडिवजे. इहां मध्यम थकी जे एक वर्ष कह्यो ते एकवर्षना बार महिना थाय; त्यां पण बारवर्षनी क्रिया ते महिनाउने अनुक्रमे बार महिनामांज पूरण करे. छ मासे बार पक्ष जाणवा.

अवतरणः— वसहेण वसहिगहणंति एटले ग्रामादिकने विषे उपाश्रय लेवुं ते वृषन ने आकारे लेवुं तेनुं एकशोने पांत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— नयराइएसु घिप्पइ, वसही पुव्वामुहं ठविय वसहं ॥ वामकडीइ निविठ्ठं, दीहीकय अग्गि मिक्कपयं ॥७७५॥ अर्थः—नगरादिकने विषे जे वस्ति एटले उपाश्रय लेवुं ते पूर्वाभिमुखे बेठेलो वृषन अने मावे पासे कुक्षिना जोरे निविष्टके० रह्योछे. वली दीर्घपणे लंबाइमां जेनो आगलनो एक पग करेलो होय. एवी नूमिनी कल्पना करी उपाश्रय लेवुं.

एवी वस्ति लेवा थकी जे फल थाय ते देखाडेछे. मूलः— सिंगक्खोडे कलहो, ठाणं पुण नेव होइ चलणेसु ॥ अहिठाणे पुटरोगो, पुछम्मिय फेडणं जाणं ॥७७६॥ मुह मूलंमिय चारी, सिरेयकउहेय पूयसक्कारो ॥ खंधे पिठीयनरो, पुट्टंमिय धायउ वसहो ॥ ७७७ ॥ अर्थः— सींगडाने स्थानके बेसतां थकां साधुने मांहोमांहे क्लेष थाय अने ते स्थाने यतिने वसवुं पण न थाय. एमज चरणने विषे तथा अधिष्ठान एटले पश्चिम गुरु प्रदेशने विषे वसतां यतिने पेट रोग थाय. अने पूछडानेविषे वसतां फेडणंके० उपाश्रयनुं पडवुं थाय एटले उपाश्रय तूटी पडे. एम तुं जाणंके० जाण ॥७७६॥ मुहमूलंमिके० मुखस्थाने वस्ता थकाचारेआहारादिकनो घणो लाजथाय. सिरेके० बन्ने सिंगडानी वचाले अने ककुद थूंनी त्यां जो वसे तो पूजा वस्त्रादिकनो सत्कार, अभ्युत्थानादिक थाय. तथा कांधे अने पुंठने स्थानके वसतां थकां नर एटले आवता जता यतिओनी वस्तिए व्याप्त थाय. अने पेट स्थानके वसतां थकां जेम वृषन धरायो होय एटले खुब खाइने पेट नर्युं होय तेम यतिपण आहारादिके तृप्त थको रहे. एरीते कल्पना करीने उपाश्रयमां रहेवुं. इतिगाथात्रयार्थ.

अवतरणः— उसिणस्स फासुयस्स, जलस्स सच्चित्तया कालोत्ति एटले उष्ण अने प्रासुक जल ने सचित्तपणाना कालनुं एकशो ने छत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— उसिणोदगं तिदंमु, कलियं फासुयजलंति जइकप्पं ॥ नवरि गिलाणाइ कए, पहरतिगोवरि वि धरियव्वं ॥ ७७७ ॥ अर्थः— उष्ण एटले ज्यां त्रण उकाला वाल्या होय, तेमां पहेले उकाले थोडाक जीव प्रासुक थाय, पण घणा रही जाय. अने बीजे उकाले घणा प्रासुक थाय अने थोडाज सचित्त रही जाय; तथा त्रीजे उकाले तो सर्व जीव अचित्त थाय.परंतु एवा त्रण उकाला वाल्या विना यतिने पान अग्राह्यछे. अने प्रासुक ते जे स्वकाय परकायादिक शस्त्र परिणाम थयो. एवो यतिने कल्पनीय होय, ते त्रण पहोर सुधी राखवुं पण उपरांत कालातिक्रांत दोषनो सं

नव थाय माटे न राखवुं. कदाचित् अपवादे राखे तो नवरके० एटलुं विशेषछे के ग्लानादिकने अर्थे त्रण पहोर उपरांत पण राखवुं. ॥ ८८८ ॥

मूलः– जायइ सचित्तया से, गिम्हंमि पहरपंचग स्सुवरिं ॥ चउपहरुवरिं सि सिरे, वासासु पुणोति पुहरुवरिं ॥ ८८९ ॥ अर्थः– गिम्हम्मिके० ग्रीष्मकाल उना लाने विषे अतिरुक्ष पणाने लीधे पांच पहोर उपरांत ते पाणी सचित्त थाय. अ ने सिसिरेके० सीतकालने विषे कालना स्निग्धपणा थकी चार पहोर उपरांत सचित्त थाय. अने ए कहेला काल पछी राखवुं पडे तो तेमां खार नाखीने राख वुं के जे थकी ते सचित्त न थाय. इति गाथा द्वयार्थ ॥ ८९ ॥

अवतरणः– तेरिच्छीउ माणवीउ देवीउय तिरिय मणुयदेवाणं जगुणातय मत्ताहियाउत्ति एटले तिर्यंच, मनुष्य, अने देवतानी स्त्रीउ ते जेना थकी जेटला गुणी अधिकछे तेनुं एकशो ने साडत्रीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– तिगुणा तिरूवअ हिया, तिरियाणं इत्थिया मुणेयव्वा ॥ सत्तावीस गुणा पुण, मणुयाणं तदहिआ चेव ॥ ८९० ॥ बत्तीसगुणा बत्तीसरूव, अहिआय तहय देवाणं ॥ देवीउ पन्नत्ता, जिणे हिं जिअरागदोसेहिं ॥ ८९१ ॥ अर्थः– त्रिगुणा एटले त्रणरुपे अधिक तिर्यंच थ की तिर्यंचनी स्त्री जाणवी. सत्तावीश गुणी सत्तावीशे अधिक मनुष्य थकी मनुष्य नी स्त्री जाणवी. ॥ ८९० ॥ बत्रीश गुणी बत्रीशे अधिक देवताथकी देवतानी स्त्री जाणवी, एरीते राग द्वेषना जीतनार श्री जिनवरे कह्युंछे. इतिगाथा द्वयार्थ. ८९१

अवतरणः– अछेरयाण दसगंति एटले दश आश्चर्यनुं एकशोने आडतरीश मुं द्वार कहेछे. मूलः–उवसग्ग गप्नहरणं, इत्थीतित्थं अनाविया परिसा ॥ कण्हस्स अवरकंका, अवयरणं चंदसूराणं ॥ ८९२ ॥ अर्थः– उपसृज्यतेके० धर्म थकी प्राणीने चलायमान करीये. इएके० एटला माटे उपसर्ग कहिये. देवमनुष्यादिक ना करेला उपद्रव ते ज्यां श्रीतीर्थंकर भगवान विहार करे त्यां सवाशो यो जनमांहे रोग मारी भय प्रमुख उपशमावे. समस्त सुर नर नागेंद्रने वंद्य एवा श्री महावीर परमेश्वर. तेना छद्मस्थ कालने विषे अने केवली कालने विषे. जे प्राकृत गोवालिया प्रमुख तेणे पण महोटा मरणांत उपसर्ग कस्या. ए प्रथम आश्चर्य जाणवुं.

बीजुं. एज श्री महावीर भगवानने देवानंदाना उदरमांथी ब्यासी दिवस व्य तिक्रमे थके इंद्रना आदेशथकी हरणीगमेषी; देवे गर्भ हरण करी त्रिसला रा णीनी कुखे संक्रमाव्यो. ए पण बीजुं आश्चर्य जाणवुं.

त्रीजुं. इत्थी तित्थंके० स्त्रीने तिर्थंकरपणुं उपन्युं एटले इहां ए भावछे के ती

थी शब्दे द्वादशांगी अथवा चतुर्विध संघ ते त्रिभुवनने अतिशायी निरुपम म हिमाना धणी एवा पुरुष थकीज प्रवर्त्तवुं जोइये. ते आ वर्त्तमान चोवीसीमां कुं जराजानी प्रजावती राणीनी पुत्री श्रीमल्ली एवेनामे कुमरी थई तेणेज उगणीसमो तीर्थंकर थइने तीर्थ प्रवर्त्ताव्युं. ए पण त्रीजुं आश्चर्य जाणवुं.

चोथुं. श्रीमहावीर जगवानने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं; तेवारे देवकृत समव सरणे बेसीने पोताना कल्प जणी देशना दीधी. पण ते देशना निष्फल थइ. केम के त्यां कोइये सम्यक्त्वादिकनो अंगीकार कर्यो नही, तेथी ए अजावित पर्षदा लक्षण चोथुं आश्चर्य जाणवुं.

पांचमु. द्रौपदीने व्यतिकरे श्रीकृष्णने धातकी खंममां अमरकंका नामनी न गरीनेविषे गमन थयुं, समुद्र उलंघी द्रौपदीने लइ आव्या. ए पांचमुं आश्चर्य.

बहुं. श्रीमहावीर देव कौसंबी नगरीये समवसर्या. त्यां चंद्रमा अने सूर्य जेनां शाश्वत विमान ज्योतिष चक्रमांछे. ते तेज विमानमां बेसीने वांदवा आव्या. इहां कोइक एवुं कहेछे के उत्तर वैक्रिय विमानमां बेसी वांदवा आव्या; परंतु तेम न जाणवुं. ए मूलगे विमाने बेसीनेज वांदवा आव्याछे. माटे ए बहुंआश्चर्य जाणवुं.

मूलः—हरिवंसकुलप्पत्ती, चमरुप्पाउ अठसय सिद्धा॥अस्संजयाणपूया, दसविय णं तेण कालेण ॥ ८८३ ॥ अर्थः— सातमुं हरि शब्दे हरिवर्ष क्षेत्र तेनो जुगलिउ तेनो वंश पुत्र पुत्रादिकनी परंपरा लक्षण जे कुल तेनी उप्पत्तीके० उपजवो ते हरिवंश कुलोत्पत्ति कहिये. तेनी कथा आमछे. के, आ जंबुद्वीपमांना जरतक्षेत्र नेविषे कौशांबी नगरीनो सुमुख नामे राजा हतो. एकदा प्रस्तावे वसंत ऋतुये ते राजा हाथी उपर आरूढ थइ ते नगरनी नजीकना वनमां रमवाने अर्थे जतो हतो. मार्गे जतां वीरकनामे कुविंदनी जार्या अत्यंत स्वरूपवान देखीने मांहो मांहे सराग दृष्टिये जोतां प्रीति जाव उत्पन्न थयो. तेथी राजा त्यां थकी आगल जाय नही. ते वारे सुमतिनामा प्रधान कहेवालाग्यो के हे स्वामि, समस्त सौजन आव्या बतां तमे आगल केम चालता नथी? ते सांजली राजा पोताना प्रधाननी लाज आणी आगल वनमां गयो. पण शून्य चित्त थको मनमांहे केवल ते स्त्री नुं चिंतवन छे तेथी कहींए पण चेन पामतो नथी. ते जोइने प्रधाने पुछ्युं के हे महा राज, तमे आज आवा शून्य चित्त केम देखाउछो? एम फरीथी फरी घणो आग्रह करी पुछ्या थकी पोताना मननी सर्व वात राजाये प्रधानने कही. ते सांजली प्र धान बोल्यो के, तमे कांइ चिंता करशो नही; हुं तमने ए स्त्री मेलवी आपीश.

पछी घेर आवी प्रधाने आत्रेयिकानामे परिव्राजिकाने बोलावी सर्व वात समजावी वनमालानी पासे मोकली. तेपण त्यां जइ जुएछे तो वनमाला पण विरहविव्हल थकी मुखे निश्वास नाखती क्षणेक बेसे, क्षणेक उठे, क्षणेक पडे एरीते महा विरहणी देखी तेने ते परिव्राजिका केहेवा लागी के हे वत्से, तुं आज एम दुःखितकेम देखायछे? ताहरु दुःख मने कहे तो हुं ते दुःखथी तने पार उतारुं. ते सांजली वनमालाये गुह्यनी वात कही. तेवारे परिव्राजिका बोली के हुंतने राजानी साथे काले मेलवीश, तुं कांइ चिंता करीश नही, पछी ते परिव्राजिकाये हर्षवंत थकी त्यांथी जई सर्व वात प्रधानने कही. प्रधाने जई राजाने सर्व वृत्तांत संजलाव्यो.

तेवार पछी प्रजाते परिव्राजिका वनमालाने राजा पासे तेडी आवी. राजाये हर्षवंत थइ अंतःपुरमां तेने राखी अने तेनी साथे ते पंच विध विषय सुख जोगववा लाग्यो. हवे वीरककुविंद घेर आव्यो ते वारे तेणे स्त्रीने दीठी नही. पछी पडोसी प्रमुखने पूछतो थको जार्याना विरहथी घेलो थयो थको आखा गाममां फरतो फरतो एक दिवसे राजाना प्रासाद नीचे आवी उजो रह्यो. तेवामां राजा अने वनमाला ए बन्ने जणां पण गोखमां आवी बेठां. राजाये वीरककुविंदने देखीने मनमां विचार्युंजे में अत्यंत लोकविरुद्ध अनार्यकार्य कीधुं. माटे मने धिक्कारछे. एम मनमां घणीज पोतानी निंदा करवा लाग्यो. तेवामां अकस्मात् उपरथी वीजली पडी तेथी बेउ जणां शुज ध्याने मरण पामि हरिवर्ष क्षेत्र युगलिया पणे उपन्यां. त्यां समस्त मनोवांछित कल्पवृक्ष पूरण करेछे तेथी सुखे रहेछे.

पछी वीरककुविंद ते बेहुनुं मरण जाणी अज्ञान तपस्या करी सौधर्म देवलोके किल्बिषया देवमां उपन्यो. अवधिज्ञाने ते युगलने देखी मनमां चिंतववा लाग्यो के ए युगलिया इहां तो मरशे नही अने ज्यारे मरण पामशे तेवारे पण देवलोके जाशे. माटे एने इहांथी उपाडीने अन्य स्थानके लइ जाउं. एम चिंतवी त्यां थकी अपहरण करी चंपानगरिये ते युगलने लाव्यो. त्यां राजा अपुत्रीउ मरण पाम्यो हतो तेथी ते देव, त्यानां लोकोने कहेवा लाग्योके हुं तमारा वास्ते राजाने लाव्योछुं. एने मांस मद्यनो आहार करावजो. एम कही तेने राजपणे स्थापन करी ते देव पोतानी शक्तिये करी तेमनुं आयुष्य तथा देह मान घटाडीने पोताने स्थानके गयो. पछी ते युगल थकी हरिवंश कुलोत्पत्ति थइ. ए आश्चर्य जाणवुं.

आठमुं पातालवासी चमरेंद्रनो उत्पात एटले उंच जवुं थयुं. ते आवीरीते. जरतक्षेत्रे विजेलनामा ग्रामने विषे पूरणनामे महा धनाढ्य रहेतो हतो. ते ए

क दिवसे रात्रे चिंतववा लाग्यो के, में पूर्वजनवे पुण्य कर्याछे; तेथी हमणां अत्यंत ऋद्धिनो धणी महासुखी थयोछुं. हवे गृहवास छांमी तपस्या करुं तो वली ज न्मांतरे विशेष फल पामुं. एवुं चिंतवी प्रजात समये स्वजन संबंधीने पूछी पोताना पुत्र पाटे स्थापी प्राणायाम नामा तापसी दीक्षा लेइ ते दिवसथकी जावज्जीव लगी छठ तपस्या करवानी प्रतिज्ञाकरी. अने पारणुं करवाने दिवसे एक लाकडानो चारपुडो गामडो राख्यो. ते गामडामां मध्यान्हसमये फरी जिक्षा लेइ ते मांथी पहेला पुडमां पडेली जिक्षा पंथीउने आपे, बीजा पुडमां पडेली जिक्षा काग प्रमुख पक्षिउने आपे, तथा त्रीजा पुडमां पडेली जिक्षा जलचर मत्स्य प्रमुख जीवोने आपे अने चोथा पुडमां पमेली जिक्षा पोते रागद्वेषरहित थको आरोगे. एरीते बार वर्ष पर्यंत तपस्या करी अंते मासनी संलेषणाये काल करी चमरचंचा राजधानीने विषे जुवनपति देवोनो इंद्र चमरेंद्र पणे उपन्यो. ते पोताना उपर सोधर्म इंद्रने देखी आमर्ष थकी देवोप्रत्ये बोल्यो के कोण दुरात्मा मारा मस्तकउपर रहीने शोजेछे? ते समये देव बोल्या के, पूर्व जन्मने विषे संपादन करेला पुण्येकरी सर्वना करतां अतिशय छे समृद्धि अने पराक्रम जेनुं एवो आ सौधर्माधिप छे. ते सांजली अतिशय क्रोधयुक्त थई बोल्यो के मारा परिवारे मारुं जो पण निवारण कर्युं तो पण युद्ध करवाने माटे इछा करनारो हुं अपराध करनारा आ इंद्रने शिक्षा करीश. एवुं बोली हाथमां परिघ धारण करी विचार करवा लाग्यो के कोइ पण प्रकारे ते इंद्रे मारो पराजव कर्यो उतां हुं कोने शरणे जाउं? एवो विचार करी सुसुमारनगरने विषे प्रतिमास्थित श्री महावीरनी समीप जई वंदनपूर्वक बोल्यो के हे जगवन्, तमारा प्रसादथी हुं इंद्रने पण जीतीश. ए प्रमाणे प्रार्थना करीलाख योजन प्रमाण विस्तीर्ण शरीर करी परिघायुध फेरवतो गर्जना करी देवोने त्रासउत्पन्न करतो गर्वे करी अंध थइ सौधर्मेंद्र सन्मुख धायो. पछी पोतानो एक पग सौधर्मावतंसक विमाननी वेदिकाने विषे अने बीजो पग सुधर्म सजानी उपर राखी परिघेकरी इंद्रकीलउपर ताडन करी अनेक प्रकारे इंद्रने आक्रोश करवा लाग्यो. सौधर्मेंद्रेपण अवधिज्ञाने तेने जाणीने कोपे करी देदीप्यमान एवुं वज्र छोड्युं. चमरपण पोतानी पाछल आवनारा वज्रने जोइ असमर्थ थइ विस्तार करेला पोताना शरीरनो उपसंहार करी शरणं शरणं एवुं बोली सूक्ष्म थइ श्रीमहावीर स्वामिना चरणनी वचमां प्रवेश करतो हवो. सौधर्मेंद्रपण अरहंत चरणने विषे प्रवेश करतो जाणी त्वराथी आवी ज्यांसुधि त्यां वज्र प्राप्त थयुं नथी

एटलामां वज्रनो उपसंहार करी श्रीमहावीर स्वामिनी पासे क्षमा मागी चम रेंद्रप्रत्ये बोल्योके, में तारा उपर वज्र मूक्युं ठतां पण तुं श्रीमहावीर स्वामिने शरण आव्यो तेमाटे में वज्रनो उपसंहार कर्यो. श्रीमहावीर स्वामिनी कृपाये त ने हवे जय नथी. एवीरीते ते चमरेंद्रनुं आश्वासन करीने पठी महावीरस्वामिने वंदन करी आज्ञा लेइ पोताना स्थानप्रत्ये गयो. पठी चरमेंद्र पण नाना प्रका रे करी श्रीमहावीरस्वामिनी स्तुति करी अने आज्ञा लेइ पोतानी चमरचंचाराजधा नीप्रत्ये गयो. ए आठमुं चमरोत्पात नामा आश्चर्य जाणवुं.

नवमुं. उत्कृष्टी अवगाहना वाला नवाणु दीकरा अने आठ पौत्रा तथा एक पोते श्रीआदीश्वर जगवान. एरीते बधा मली एकशो ने आठ. ते एक समये अ जिजित् नक्षत्रमां सिद्ध थया. ते एकज समये उत्कृष्टी अवगाहनावाला एकशो आठ त्यां सिद्धि पाम्या. ते नवमुं आश्चर्य जाणवुं.

दशमुं. असंयति आरंजी परिग्रहवंत अब्रह्मचारी गृहस्थना वेषे रहेला, तेनो पूजा सत्कार. ते असंयति पूजा नामे दशमुं आश्चर्य. ते आवीरीते ठे. श्री सुविधि नाथना निर्वाण पठी केटलोक काल व्यतिक्रम्यानंतर हुंमावसर्प्पणीना दोषने ली धे साधुउनो विछेद थयो. तेवार पठी जे स्थविर श्रावको हता; तेमनी पासे जई बीजा लोको धर्म पूठवा लाग्या. तेपण जेवुं जाणता हता तेवुं तेउने कहेवा लाग्या. तेथी लोकपण तेमने धनवस्त्रादिक देवा लाग्या. तेथी तेउ गर्वित थया थका पोता ना मनकल्पित नवीन शास्त्र बनावी कहेवा लाग्या के, जे कोइ पृथ्वी, सजा, मंदिर, सुवर्ण, रूपुं, लोह, कपास, गाय, कन्या, अश्व अने गज अमने आपे, ते आ लोके तथा पर लोके महा फल पामे. अने अमेज सुपात्र ठइये. एवो उपदेश सांजली लोके तेमने गुरु करी मान्या. एवी असंयतिनी पूजा चाली. प्रथम सदासर्वदा संयतिनी पूजा थती हती. तेथी विपरीतपणाये करीने श्रीशीतलनाथजिनना तीर्थसुधि आश्चर्य थयुं. एरीते ए दश आश्चर्य आ चोवीसीमां थयां वली अनंते काले थशे.॥ ८८३॥

हवे जे तीर्थंकरना वखतमां जे आश्चर्य थयुं ते कहेठे:- मूलः- सिरिरि सहसीयलेसुं, एक्कक्कं मल्लिनेमिनाहोय ॥ वीरजिणिंदे पंचउ, एगं सवेसु पाएणं ॥ ८८४॥ अर्थः- श्रीकृषजदेव अने श्रीशीतलनाथनी वारे एकेक आश्चर्य थयुं. तथा श्रीमल्लीजिनेश्वरने वारे एक थयुं अने एक श्रीनेमिनाथने वारे एक थयुं. अने श्री वी रजिनेंद्रने वारे पांच थयां. वली असंयतिनी पूजा लक्षण तो श्रीआदिनाथना वखत मां मरीचि कपिलादिकनी सांजलीये ठैए. एम घणुंकरीने बीजा तीर्थंकरोना वा

रामां पण प्रवाहे थाय छे. तेनो स्पष्ट रीते करी आगली गाथामां खुलासो कहेछे.

विशेषे नाम पूर्वक एज वात कहेछे. मूलः– रिसहे अठहिअसयं, सिद्धं सीय लजिणंमि हरिवंसो नेमि जिणे अवरकंका, गमणं कन्हस्स संपत्तं ॥ ८९५ ॥ इ डी तिबं मल्ली, पूआ अस्संजयाण नवम जिणे ॥ अवसेसा अछेरा. वीरजिणिंद स्स तिछंमि ॥ ॥ ८९६ ॥ अर्थ. श्रीरूषजदेवना वखतमां एकशोने आठ सिद्ध थया. श्रीशीतलजिनना वखतमां हरिवंशकुलनी उत्पत्ति थई. श्रीनेमिनाथना वख तमां अपरकंकानगरिये श्रीकृष्णनुं गमन थयुं. ॥ ८९५ ॥ अने स्त्रीनुं तीर्थ मल्ली नाथना वखतमां थयुं. नवमा जिनना वारामां असंयतिनी पूजा थई; अने अव शेष थाकतां आश्चर्य श्रीवीरपरमेश्वरना वारामां थयां. इति गाथा पंचकार्थ ८९६

अवतरणः– चउरोजासाउत्ति एटले चार जाषानुं एकशोने ओगणचालीस मुं द्वार कहेछे. मूलः– पढमाजासासच्चा, बीयाउ मुसा तयछिया तासिं ॥ सच्चामु सा असच्चा, मुसापुणो तह चउछित्ति ॥ ८९७ ॥ अर्थः– त्यां प्रथम जाषा ते सत्या कहिये. त्यां संतके० मूलुत्तरगुणयतिने सर्व विश्वने मुक्तिपद प्रापकपणा थ की अथवा संतविद्यमान जे जीवादिकपदार्थ तेना हेतुये जे बोलवी ते सत्या जा षा जाणवी. बीजी ए थकी जे विपरीत जाषा ते मृषा जाषा जाणवी. त्रीजी ए मां हेला सत्यने पण मले अने मृषाने पण मले; ते उजय स्वजाव सत्यामृषा जाषा जा णवी. चोथी असत्याअमृषा ते जे पूर्वोक्त त्रणे जाषाने न मले ते चोथी जाषा जाणवी.

हवे सत्यादिक चार जाषाना जेद कहेणहार उतो तेमां प्रथम सत्याना जेद कहेछे. मूलः– जणवय संमय ठवणा, नामेरूवे पडुच्चसच्चेय ॥ ववहार जाव जोगे, दसमे उवम्मसच्चेय ॥ ८९८ अर्थः– जे देशमां जे वस्तुनुं जेवुं नाम रूढी थी कहेवातुं होय अने तेज नाम परदेशमां जइने पण कोइ कहे तो तेने ज नपदसत्य कहिये. जेम कोंकणदेशमां पाणीने पिच्च नीर इत्यादिक कहेछे.

बीजुं संमयके० ते जे समस्त लोकने सम्मत. ते आवीरीते के कुमुद, कुवलय उत्पल अने तामरस इत्यादिकने विषे सरखे पंकज शब्दने संजवे. पण गोवा लादिक अरविंदनेज पंकज केहेछे. परंतु अन्यशब्दने सम्मत नही. तेनी परे बी जाने न कहिये. ए बीजुं सम्मतसत्य जाणवुं.

त्रीजुं ठवणाके० स्थापनासत्य. ते आवीरीते के जेम एकडो मांमीने तेना आगल एक मींडुं मांमीये तेवारे दश थाय, तेमज बे मींमां मांमिये तेवारे एक शो थाय, त्रण मींमा मांमिये तो हजार थाय. ए पण स्थापना जाणवी. तेमज मु

इा, मासो, तोल प्रमुख स्थापिये जे, आ अमुक पांचशेर किंवा दश शेरछे. ते पण स्थापना छे, अथवा आचार्यनी स्थापना करिये ते सर्व स्थापना सत्य जाणवुं.

चोथुं नामसत्य, ते नाम तथा कुलनी वृद्धि न करतो होय तोपण कोइकनुं कुलवर्द्धन एवुं नाम होयछे. एमज धननी वृद्धि न करतां छतां पण धनवर्द्धन नाम होयछे. इत्यादिक सर्व नामसत्य जाणवुं.

पांचमुं रूवेके० रूपसत्य, ते कपटे करी साधुनो वेष लीधो होय तोपण तेने साधु कहिये. एरीते नवाइया प्रमुख जेनो वेष धारण करे तेवारे ते वेषनुं रूप देखीने तेने ते नाम कहेछे ते रूपसत्य जाणवुं.

छठुं पाडुच्चके० प्रतीत आश्रीने सत्य कहेवायछे. जेम पांच अंगुली मांहेली अनामिकाने देखी मध्यमा अंगुलीने तेनी अपेक्षाये महोटी कहियेछैए. तेमज कनिष्ठिका आश्री अनामिकाने मोटीकहियेछैए. एम जेने जे आश्री कहिये ते प्रतीतसत्य जाणवुं.

सातमुं व्यवहारसत्य. ते पर्वत उपर तृणादिक बलतां देखीने एवुं कहेवामां आवे छे के पर्वत बलेछे. तेमज पाणीना वासणमांथी पाणी श्रवतुं देखीने कहेके पाणीनुं वासण श्रवेछे. इत्यादिक व्यवहारसत्य कहेवायछे.

आठमुं भावसत्य. ते ज्यां पांचे वर्णनो संभव छतां जे वर्णनी अधिकता होय ते वर्ण कहेवो. जेम भ्रमरमां पांचेवर्ण छतां श्याम कहेवायछे. तेमज बलाहिकाने उज्वल कहेवाय छे. ए भाव सत्य जाणवो.

नवमुं योगसत्य. ते जेम दंमना योगथकी दंमी कहेवाय. छत्रना योगथकी छत्री कहेवाय. लिंगना योगथकी लिंगी कहेवाय. तेना अभावे तथा अछते पण एज कहेवाय. ते योगसत्य जाणवुं.

दशमुं उपमासत्य. ते जेम महोटुं तलाव देखीने कहिए के ए समुद्र जेवुं महोटुं तलाव छे. ते उपमासत्य कहेवायछे. ए दश प्रकारनी भाषा सत्य कही.॥ ८९८॥

हवे मुसत्ति एटले मृषाभाषाना दश प्रकार कहेछे. मूलः–कोहे माणे माया, लोहे पेज्जे तहेव दोसेय ॥ हास भये अरकाइय, उवघाए निस्सिया दसहा॥ ८९९ ॥ अर्थः– मृषाभाषा दश प्रकारे ते आवी रीते छे. एक क्रोधनिसृत, एमज मानादिक शब्दोनी साथे निसृत शब्द सर्वत्र जोडवो. ते आवीरीते क्रोधेकरी अदासने दास कही बोलावे. क्रोधनिःश्रृत आश्रयो थको जो बीजो कोइ सत्य भाषण करे तोपण ए जुतुंज माने. तेमज बीजुं माने करी पोते अधन थको धनवंत कहे ते मान निःसृत जाणवुं. त्रीजुं बीजाने वंचवाने अर्थे इंद्रजालियानी पेरे कहे ते

मायानिःसृत जाणवुं. चोथुं लोजेकरी वाणीयानी पेरे वस्तु क्रय विक्रय कर तां असत्य बोले, ते लोजनिःसृत. पांचमुं पिज्जेके० अति प्रेमथकी बीजाने क हे के, हुं ताहरो दासछुं, इत्यादिक बोलवुं ते प्रेमनिःसृत जाणवुं. छठुं दोसेय के० द्वेषेकरी गुणवंत पुरुषने निर्गुणी कहे ते द्वेषनिःसृत. सातमुं छती वस्तुने क हेके, अमे नथी दीठी ते हास्यनिःसृत. आठमुं चोरप्रमुखने मुखथकी अति असंबंध वचन बोले ते जयनिःसृत जाणवुं. नवमुं अरकाइयके० आख्यानने विषे एटले वखाणने विषे रसपोषण, करवाने अर्थे कांइक कल्पित वचनो बोल वा थकी आख्यायिकानिःसृत थाय. दशमी उवघाएके० अचोरने चोर कहेवो, एम कहेवा थकी तेने उपघात थाय तेथी ए उपघातनिःसृत जाणवुं. ए दशे प्रकारे मृषाजाषा जाणवी. ॥ ७९९ ॥

हवे सच्चामुसत्ति कहेछे. मूलः– उप्पन्न विगय मीसग, जीव अजीवेय जीव अजीवे ॥ तह मीसगा अणंता, परित्त अद्धाय अद्धा. ॥ ८०० ॥ अर्थः– इहां मिश्र शब्द सर्वत्र जोडवो. तेवारे अणउपन्यानी साथे संख्या पूरण करवाने अर्थे मिश्रपणे कहिये, तेमां प्रथम उत्पन्नमिश्रा ते आवीरीते. जेम नगरादिकनेवि षे अधिक न्यून पुत्रोनो जन्म थयो छतां एम कहेवामां आवेछे के, आज दशदीक रानो जन्म थयो. इत्यादि जाणवी. बीजी. एज रीते विगत एटले मृतक साथे मि श्रपणे कहेतां थकां विगतमिश्रजाषा थाय, जेम आजे अमुक गाममां दशनो विनाश थयो, एमज त्रीजी जन्म अने मृतक बंनेनो परिमाण अधिक न्यून कहे ते त्रीजी मिश्रताजाषा जाणवी. चोथी घणी जीवती अने थोडी मृतक थयेली एवी कृमी नी राशी देखी घणा जीवो कहे, अने एवुं कहेके, अहो आ केवडी मोटी जीवरा शी छे!!! एम जीवमिश्र चोथी जाषा जाणवी. पांचमी घणी कृमी मरण पामे ली छे अने थोडी जीवती छे ते देखी कहेके, ए अजीवराशी छे, एम कहेतां थकां अजीवमिश्र कहेवाय. छठी जीव अजीव एटले तेमज वली तेज रा शी देखी अधिक न्यून छते एम कहेके, एमांहे एटली कृमी मरण पामी ने एटली जीवेछे. ते जीवाजीवमिश्रता जाणवी. सातमी तहमीसगा एटले अनंत काय नो ढगलो पडयो थको ते तेना पत्रादिक साथे मिश्रछतां पण एवुं कहेके, आ अनंत कायनो ढगलो पडयोछे. तो ते अनंतमिश्रता जाषा जाणवी. आठमी तेमज प्रत्येक वनस्पति घणी होय, अने ते थोडी अनंत काय साथे मिश्र थये ली होय, तेम छतां एवुं कहेके, ए प्रत्येक वनस्पतिकायनो ढगलो पडयोछे. ते

प्रत्येकमिश्र नाषा जाणवी. नवमी अद्धा ते कालविशेष रात्र दिवस प्रमुख जाणवी. त्यां कोइएक बीजा कोइने उतावलथी दिवसछते एवुं कहेके, उठ उ ठ रात्र पडी. अमुक काम करवानुं छे, अथवा रात्रि छतां कहेके, उठ उठ ज लदी दिवसोदय थई चूक्यो. ए अद्धामिश्र नामे नवमी नाषा जाणवी. दशमी ते मज दिवस अथवा रात्री तेनो एक देश ते अद्धद्धामिश्रित नाषा जाणवी. जेम प्रथम पहोर वर्त्तमान छते कहेके, मध्यान्ह थयो. इत्यादिक जाणवी. ॥ ए०० ॥

हवे असच्चा मोसत्ति ए चोथी नाषा बार प्रकारे कहेछे. मूलः—आमंतणि आणव णी, जायणि तह पुछणीय पन्नवणी ॥ पच्चरकाणी नासा, नासा इछाणु लोमाय ॥ ए०१ ॥ अर्थः— आमंत्रण करिये के, हे देवदत्त इहां आव. इत्यादिक जे आ मंत्रण ते त्रण प्रकारे छे. प्रथम, जे कोइने न मले; पण केवल व्यवहार मात्र प्रवृत्तिने माटेज छे. ते साचो पण नही; ने जुठो पण नही, ते असत्य अमृषा जाणवी. बीजी आज्ञा आपिये ते आज्ञापनी. त्रीजी जायणीके०कोइ एक कोइ पासेथी मागे. चोथी आगलाने पूछीये ते पूछणी. पांचमी नव्यजीवोने उपदेश देतांथकां एम कहेवाय के, जे प्राणी प्राणवध थकी निवृत्ते, ते नवांतरे सुखपामे. एनुं नाम प्रज्ञापनी. छठी निषेध वचन बोले ते प्रत्याख्यानी नाषा जाणवी. सातमी कोइएक कोइ कार्य करवाने प्रवृत्ते अने कोइ एकने पूछे तेवारे ते कहेके, मारे पण ते मान्य छे माटे तारी इछा आवे तेम तुं कर. ए इछा अनुलोमनाषा जाणवी. ॥ ए०१ ॥

मूलः— अणन्निग्गहियानासा, नासाय अनिग्गहंमि बोधवा ॥ संसयकरणी नासा, वोयड अवोयडा चेव ॥ ए०२ ॥ अर्थः— आठमी, घणां कामो करवानां होय अने कोइ पूछे के कयुं काम करुं? तेवारे कहेके तारे गमे ते काम कर. एम ज्यां कांइ कदाग्रह न होय ते अनन्निग्रहितनाषा जाणवी. नवमी, जे निश्चे थ की वचन बोलिये तेज करिए ए नाषा अनिग्रहिने विषे जाणवी. दशमी, सं शयिक एटले कोइये कोइने कह्युं के सैंधव लई आव अने सैंधव शब्दे लवण, वस्त्र, पुरुष, अश्व, प्रमुख कहेवायछे. एम विचारी सामाने संशय उत्पन्नथाय. ते संशयकरणीनाषा जाणवी. अग्यारमी, ज्यां बोलवा थकी वर्ण एटले अक्षर अ ने तेनो अर्थ तेपण प्रगट होय ते व्याकृत जाणवी. बारमी, तेमज जे अप्रगटप णे बोलिये ते अव्याकृत नाषा जाणवी. इति गाथा षट्कार्थ. ॥ ए०२ ॥

अवतरणः— वयण सोलसगंति एटले वचन सोलप्रकारनां तेनुं एकशोने चा लीसमुं द्वार कहेछे. मूलः—कालतियं वयणतियं, लिंगतिअं तह परोरक पच्चरकं ॥

उवणंय वणय चउक्कं, अप्नत्थं चेव सोलसमं ॥ ए०३ ॥ अर्थः–प्रथम कालत्रिक ते एक वर्त्तमाने करेछे ते. बीजो जूत ते जे पूर्वे कर्युं ते. अने त्रीजो जविष्य ते आगल करशे ते. वचन त्रिक. ते एक वचन, द्विवचन, ने बहुवचन. लिंगत्रिक ते पुरुष, स्त्री, ने नपुंसक लक्षण जाणवां. तेम परोक्षवचन, पच्चरकं के० प्रत्यक्ष वचन, उपनयअपनय वचन चार प्रकारे छे ते आवीरीतेः– उपनयगुण अने अपनय दोष. ते ज्यां बोलिये. जेम स्त्री स्वरूपवान छे परंतु कुशीलछे ते उपनय अपनयवचन जाणवुं. तथा कुरूपवान स्त्री छे परंतु सुशीलछे ते अपनयोपनय वचन जाणवुं. त्रीजुं, स्वरूपवान अने सुशील स्त्री ते उपनयोपनय वचन जाणवुं. चोथुं, कुरूपने कुशील स्त्रीछे ते अपनयोपनय वचन जाणवुं. ए पन्नर थया अने सोलमु अप्नत्थंके० अध्यात्मवचन ते मनमां एक होय अने बीजाने फसाववाने अर्थे बीजुं कहे ते सोलमुं अध्यात्मवचन जाणवुं. इतिगाथार्थ. ॥ए०३॥

अवतरणः– मासाण पंचजेयत्ति एटले मासना पांच जेदोनुं एकशोने एक तालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– मासाय पंचसुत्ते, नरकत्ते चंदिउंय रिउमासो ॥ आइच्चोविय अवरो, निवड्डिउं तहय पंचमउ ॥ ए०४ ॥ अर्थः– सूत्र जे श्री अरिहंत परमात्मानुं प्रवचन तेने विषे मास पांच कह्याछे. तेमां प्रथम जे नक्षत्रनी गणनाये थाय तेनी रीत कहेछेः– चंद्रमा चारके० संचरतो जेटले काले अनिजीतादिकथी विचरतो उत्तराषाढा नक्षत्र सुधी जाय तेने प्रथम नक्षत्रमास कहिये. बीजो चंदिउंयके० चंद्रथकी थाय ते अंधारा पडवा थकी आरंजीने अजवाली पूर्णिमा सुधी चंद्रमास केहेवाय. त्रीजो रिउंके० रुतु ते लोक रूढिये साठ अहोरात्रीये रुतु कहिये. तेनो अर्द्धमास एटले त्रीस अहोरात्री प्रमाणनो ते रुतुमास जाणवो. चोथो, आदित्य जे सूर्य तेहनुं अयन एकशो ने त्र्यासी दिवसनुं होय. तेनो छठो जाग ते आदित्यमास कहिये. पांचमो, अनिवर्द्धित ते तेर चंद्रमासे थाय. बार चंद्रमासे संवत्सर जाणवो; परंतु जेवारेएक वधे तेवारे तेने अनिवर्द्धित मास कहिए.

एनुंज प्रमाण विशेष देखाडे छे. मूलः– अहरत्त सित्तवीसं, तिसत्त सत्तढिजागनरकतो, ॥ चंदोअ उणत्तीसं, बसठिजागाय बत्तीसं ॥ ए०५ ॥ अर्थः– सत्तावीस अहोरात्री अने एक अहोरात्रीना शमसठ जाग करिये तेवा एकवीस जागे अधिक एक नक्षत्र मासथाय. अने मासना उगणत्रीस अहोरात्री तेना उपर एक अहोरात्रीना बासठ जाग करिये, एवा बत्रीस जागे अधिक एक चंद्रमास थाय.

मूलः– उउमासो तीसदिणो, आइच्चोवि तीस होइ अर्द्धंच ॥ अनिवड्डि उंअमा

सो, चउवीस सएण ठेएण ॥ ए०६ ॥ अर्थः— ऋतुमास ते संपूर्ण त्रीसदिवस प्रमाणनो जाणवो. तथा आदित्यमास ते त्रीस दिवस अने उपर एक दिवसना साठिया त्रीस नाग करिये तेटला प्रमाणनो जाणवो. अने अनिवर्द्धित मास ते चउवीसे अधिक एकशत ठेद एटले नाग. तेज देखाडेछे. ॥ ए०६ ॥

मूलः— नागाणिग वीससयं, तीसाएगाहिया दिणाणंच ॥ एए जह निप्पत्तिं, लहंति समयाउ तह नेयं ॥ ए०७ ॥ अर्थः— ते पूर्वोक्त एकशोने चोवीस नाग एक अहोरात्रना करिये तेवा एकशो एकवीस नाग अने एक दिवसे अधिक त्रीस एटले एकत्रीस दिवस. अर्थात् एकत्रीस दिवस ने एक अहोरात्रीना एकशो चोवीस नागमांहेला एकशोने एकवीस नाग उपर, एटलुं अनिवर्द्धित मासनुं प्रमाण जाणवुं. एरीते ए पांचमासनी जेम निःप्पत्ति एटले प्राप्ति थायछे ते समय के० सिद्धांत थकी जाणवी. इतिगाथा चतुष्टयार्थः. ॥ ए०७ ॥

अवतरणः— वरिसाण पंचनेयत्ति एटले वर्षना पांच नेदनुं एकशोने बेतालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः— संवछराउ पंचउ, चंदेचंदेनिवड्ढिए चेव ॥ चंदेनिवड्ढिए तह, बिसठिमासेहिं जुगमाणं ॥ ए०८ ॥ अर्थः— चंद्रादिक संवत्सर पांच कह्याछे. तेमां पूर्वोक्त चंद्रमासे जे नीपन्यो ते चंद्र संवत्सर जाणवो. तेनुं प्रमाण त्रणशें चोपन दिवस अने एक दिवसना बासठ नाग करिये तेवा बार नाग उपर जाणवा. तेमज बीजा चंद्रसंवत्सरनुं पण मान जाणवुं. हवे चंद्रसंवत्सरथी एक अधिक मास थाय एटले तेने अनिवर्द्धित संवत्सर जाणवो. तेनुं प्रमाण त्रणसे त्र्यासी दिवस अने एक दिवसना बासठ नाग करी तेमांना चुमालीश नाग एवो एक अनिवर्द्धितसंवत्सर जाणवो. एकत्रीश अहोरात्र अने एक दिवसना एकशो चोवीस नाग करिये ते मांहेला एकशो एकवीस नाग उपर, ए अनिवर्द्धित मासनुं मान जाणवुं. हवे पूर्वोक्त माने अनिवर्द्धित संवत्सर बे अने चंद्रसंवत्सर त्रण एवा पांच संवत्सरे एक युगमान थायछे. ते बासठ चंद्रमास प्रमाणक छे. सारांश. एक युगमां त्रण चांद्र संवत्सर. ते चांद्रसंवत्सरना प्रत्येक बारमास मली छत्रीश चांद्रमास अने बे अनिवर्द्धित संवत्सर. तेमां एक अनिवर्द्धित संवत्सरना तेर चांद्रमास. ए प्रमाणे बीजा वरसना पण तेर मली एकंदर छवीस मास अने पूर्वोक्त चांद्रमास छत्रीश मलीने बासठचांद्रमासे एक युगनुं मान थाय. ॥ए०८॥

अवतरणः— लोगसरूवंति एटले लोकना स्वरूपनुं एकशो ने तेतालीशमुं द्वार प्रगट करतो कहेछे. मूलः— माघवईइतलाइ, ईसीपप्ना रउवरिमतलंजा ॥

चउदसरज्जूलोगो, तस्साहोविछरे सत्त ॥ ए०ए ॥ अर्थः– माघवति जे अलोकने फरसेछे. सर्व अधस्तन नाग तेथकी मांमीने सिद्धसिलानो उपरलो नाग त्यांसुधी चउद राज मान लोकछे. तेने अधस्तन नागे विस्तारपणे जोइये. तेवारे सातराज कांइक उणाछे. परंतु सूत्रकारे अल्पपणाने लीधे तेनी विवक्षा करी नथी॥.ए०ए॥

मूलः– उवरिं पएसहाणी, ता नेया जीवनूतले एगा ॥ तयणुप्पएसवुड्ढी, पंचमकप्पंमि जा पंच ॥ ए१० ॥ अर्थः–त्यांथकी एटले ते अधस्तन प्रदेशथकी आरंनीने जेम जेम अंगुलनो असंख्यातमो नाग उंचा जइये, तेम तेम प्रदेश प्रदेशनी हाणी जाणवी. ते ज्यांसुधी संनूतला पृथ्वी एकराजनीछे त्यांसुधी जाणवी. तयणुके० तेवारपछी वली अंगुलने असंख्यातमे नागे वृद्धि जाणवी. ते ज्यांसुधी पांचमो देवलोक पांचराजनोछे, त्यांसुधी जाणवी. ॥ ए१० ॥

मूलः– पुणरवि पएसहाणी, सिद्धिसिलाएएक्कगा रज्जू ॥ घम्माए लोगमज्ञे जोयण असंखकोमीहिं ॥ ए११ ॥ अर्थः– पुनरपिके० वली ते पांचमा ब्रह्म देवलोक थकी प्रदेशनी हाणी थायछे. पहेलानी परे अंगुलने असंख्यातमे नागे प्रदेश घटे ते ज्यां सीम सिद्धसिला एकराजनी आवे त्यां सीम जाणवी. घम्मा के० रत्नप्रना पहेली पृथ्वी तेहने समनूतले अधोनागे असंख्यात योजननी कोडी उलंघी जाइये त्यां लोकनो मध्यनाग आवे. ॥ ए११ ॥

मूलः– हिछा होमुहमल्लग, तुल्लो उवरिंतु संपुम् विआणं॥ अणुसरय मल्लगाणं, लोगो पंचछिकायमउ ॥ ए१२ ॥ अर्थः– लोकने अधोनागे अधोमुख सरावलाने आकारे ते उपर वली संपुटने आकारे एटले एक सरावलुं तेना उपर बीजुं उंधुं सरावलुं दइये ते संपुट आकार स्थित के० रह्या जे सरावला तेने अनुंसारें आकार थाय. एम मल्लकने आकारे ए लोक जे पंचास्तिकाय मय ते होयछे.॥ए१२॥

मूलः–तिरियं सत्तावन्ना, उड्ढंपंचेव होंति रेहाउ ॥ पाएसु चउसुरज्जू, चउदसरज्जू य तसनाडी ॥ ए१३ ॥ अर्थः– तिरछी सत्तावन रेखा अने उन्नी पांच रेखा थाय. एम करतां प्रवाहे चार खांमूए एकराज अने चउदराज प्रमाण त्रसनाडी थायछे.

मूलः– तिरियं चउरो दोसुं, छहोसुंअठ दसयएक्केक्के॥बारस दोसुं सोलस, दोसुं वीसाय चउसुंपि ॥ ए१४ अर्थः–रुचक समनूतलाना नाग थकी उंचो बेहु पंक्तिये उगणत्रीस रेखा थकी उपरे तिरछा चार चार खांडूआ. तेमां चार त्रसनाडी मध्यगत होय. त्यां त्रसनाडी बाहिरे खांमवा नथी. तेवारपछी उपरनी बे पंक्तीनेविषे छ छ खांमूआ थाय. तेमां चार त्रसनामी मध्यगत जाणवा, अने त्रसनाडीनी बाहेर एक एक

एटले बे पमखामां एक एक. पछी एक एक पंक्तिमां वली आठ खांमूआ, त्यां बन्ने पासे बे बे खांडुआ वध्या. तेथी पछी वली दसयके० दश खांडुआ थया. त्यां बेहुपासे त्रण त्रण वध्या, ए एकेक पंक्तिये वध्या. पछी वली बार थया. बेउ पंक्तिने विषे चार चार खांडुआ बेउ पासे वध्या. पछी बेउ पंक्तिने विषे शोल शोल, त्यां छ छ वध्या. पछी चार पंक्तिने विषे वीस वीस खांडुआ त्यां चारे पंक्तिने विषे आठ आठ बाहेर वध्या. एम ऊर्ध्वलोकने विषे चउद पंक्तिये यथा संभवे वधता खांडुआ कह्या. ॥ ए१४ ॥

मूलः— पुणरवि सोलस दोसुं, बारस दोसुं पि होइ नायवा ॥ तिसु दस तिसु अठ छाय दोसुं दोसुंपि चत्तारि ॥ ए१५ ॥ अर्थः— वली उपरली बे पंक्तिउने विषे सोल सोल. वली बेउ पंक्तिने विषे बार बार होय ते जाणवा. पछी त्रण पंक्तिने विषे दश दश, वली त्रण पंक्तिने विषे आठ आठ तथा छछदोसुं के० बे पंक्तिनेविषे छ छ. वली बे पंक्तिनेविषे नाडीमां रहेला चार चार खांडुआ जाणवा. एटले ऊर्ध्व लोकनी वात कही. ॥ ए१५ ॥

हवे अधोलोके सात नरक पृथ्वीने विषे ऊर्ध्व अने अधोभागे जे खांडुआ छे ते कहेछे. मूलः— उयरिय लोय मज्ज, चउरो चउरोय सवहिं नेया ॥ तिग तिग डुग डुग एक्केक्क गोय जा सत्तमी पुढवी ॥ ए१६ ॥ अर्थः— उयरिट के० नीचे रुचकना मध्यभागथकी आरंभी चार चार खांडुआ सर्व साते पृथ्वी त्रसनाडीनी मांहे ऊर्ध्व अधोभागे जाणवा. त्रसनाडीनी बाहेर द्वितीयादिक पृथ्वीने विषे अनुक्रमे त्रण त्रण बे बे अने एक एक खांडुआ जाणवा. ते ज्यां सुधी सातमी पृथ्वी प्राप्त थाय, त्यांसुधी जाणवा. रत्नप्रभाये त्रसनाडीनी बाहेर खांमूआनो अभाव छे. त्यारपछी बीजी शर्कराप्रभाये उपरना तलनो आरंभ करी दक्षिण वाम भागनेविषे प्रति पंक्ति तीर्यक एवा त्रण त्रण खांडुआ ऊर्ध्व अधोभागे करी जाणवा. ते सातमी पृथ्वीना अधोभागसुधी जाणवा.

त्रीजी वालुकाप्रभाना ऊर्ध्वभागनो आरंभ करी बंने बाजुने विषे खांडुआ त्रण त्रणनी आगल वली त्रण त्रण खांडुआ जाणवा. ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पछी पंकप्रभाना ऊर्ध्वभागनो आरंभ करी बंने बाजुने विषे पूर्व खांडुआनी आगल बे बे खांडुआ जाणवा. ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पछी धूम प्रभाना ऊर्ध्वभागनो आरंभ करी बंने बाजुने विषे बबे खांडुआ जाणवा ते सातमी पृथ्वी पर्यंत. पछी तमःप्रभानो आरंभ करी बंने बाजुने विषे एक एक खांडुओ जाणवो ते सा

तमी पृथ्वी पर्यंत. पछी सप्तम पृथ्वीने विषे पूर्वें कहेला खांडुआनी आगळ दरेक पंक्तिने विषे एक एक खांडुउं थाय छे. एम उपर थकी नीचे आवतां जे खांडुआ थया ते कह्या. ए प्रमाणे अधोलोकने विषे ऊर्ध्व अने अधोजागे खांडुआ कह्या.

हवे नीचे थकी उपर जातां जेम वृद्धि थाय तेम देखाडेछे. मूलः— अडवी सा छवीसा, चउवीसा, वीस सोल दस चउरो ॥ सत्तासुं पुढवीसुं, तिरियं खंडुय गपरिमाणं ॥ ९१७ ॥ अर्थः— अठावीस, छवीस, चोवीस, वीस, सोल, दश, ने चार ए सात पृथवीने विषे अनुक्रमे तिरछो खांडुआनो परिमाण कह्यो.॥९१७॥

हवे अर्द्ध ऊर्ध्व ए बन्ने लोकना खांडुआनो मान कहेछे. मूलः— पंचसयबा रसुत्तर, हेठा तिसयाउ चउर अब्भहिया ॥ अद्द उड्ढं अठसया, सोलहिया खंडुआ सवे ॥ ९१८ ॥ अर्थः— पांचशेंने बार खांडुआ हेठाके० नीचे अधोलोकनेविषे जाणवा. अने त्रणशें ने चार खांडुआ उंचा ऊर्ध्व लोकने विषे जाणवा, ए अर्द्ध ने ऊर्ध्व बेना मली आठशें सोल खांडुआ थाय. ॥ ९१८ ॥

हवे चउदराज जेम थाय तेम देखाडेछे. मूलः— सत्तेवय रज्जूउं, एगा पंचेव लो गविछारो ॥ अहलोय तिरियमज्झा, एगा रज्जू अलोगंते ॥ ९१९ ॥ अर्थः— सा तराज, एकराज अने पांचराज लोकनो विस्तार जाणवो. तेमां अनुक्रमे अधोलो के सातराज, तिरछे लोके एकराज, मध्यलोके पांचराज अने तेवारपछी एकराज अलोकना अंतसुधी होय. ॥ ९१९ ॥

हवे त्रणप्रकारनो राज देखाडवाने अर्थे कहेछे. मूलः— बत्तीसं रज्जूउं, हिठा रु यगस्स होंति नायव्वा ॥ एगोणवीस मुवरिं, इगुवन्ना सव्वपिंडेणं ॥९२०॥ अर्थः— इहां त्रण प्रकारना रज्जुछे. पेहेला सुचीरज्जु. बीजा प्रतररज्जु अने त्रीजा घनरज्जु.तेमां जे आयामे चार खांडुआ अने बाहुले एक खांडुउं एम सुचीने आकारे थाय. ते सुचीरज्जु जाणवा. हवे सुचीरज्जूने सुचीरज्जुगुणो करिये तेवारे सोल खांडुआ प्रमाण प्रतररज्जु थाय.एज प्रतररज्जूने चारगुणो करीए तेवारे सोलखांडु आ,तेने चारे गुणतां चोशठ थाय. ते घनरज्जु जाणवो. जे उपरा उपर चार प्रतर थाय ते घनरज्जु जाणवो.

हवें पांचशें बार खांडुआ मान अधोलोके खांडुआनी राशीछे तेने प्रतररज्जु आणवाने अर्थे सोलेकरी भाग आपिये तेवारे बत्रीश प्रतररज्जुथाय. ते रुचक प्रदे श थकी नीचे जाणवा. तेमज ऊर्ध्वलोकना त्रणशें ने चार खांडुआ तेने शोले भा ग आपिये तेवारे उर्ध्वलोके ओगणीश प्रतररज्जु थाय. ते रुचक प्रदेश थकी उंचा जाणवा. अध उर्द्ध बे लोकने विषे सर्व मली एकावन्न थाय. ॥ ९२० ॥

हवे त्रण प्रकारना रज्जूनी संख्या देखाडेछे.मूलः-तिन्निसया तेयाला घणरज्जूपयररज्जु इगवन्ना॥सुइरज्जु पणसहस्सा,चत्ता रिसया यअडसीया॥७२१॥अर्थः-त्रणसें तेताली स घनरज्जुथाय,एकावन प्रतररज्जु थाय. पांच हजार चारशेने अठ्यासी शुचिरज्जुथाय.

मूलः- सुइरज्जू चउहिं खंमगेहिं सोलसयपयर रज्जूअ ॥ चउसठिखंमगेहिं, घ णरज्जू होइ विन्नेउ ॥ ७२२ ॥ अर्थः- शुचिरज्जु चार खांमूए थाय. सोल खांमूए प्रत ररज्जु थाय. अने चोसठ खांडुएकरी घनरज्जु थाय. एवा प्रकारे विन्नेयोके० जाणवा.

घनरज्जु कहेवाने अर्थे प्रकार देखाडेछे मूलः- दाहिणपासि डुखंमा, वामेसंधि ज्ञ विहिअ विवरीयं ॥ नाडीजुआ ति रज्जू, वड्डाहो सत्तउजाया ॥ ७२३ ॥ अर्थः- त्रसनाडीनी दक्षिण पासे बे खंमछे. ब्रह्मलोकना मध्यथकी नीचलो अने उपरलो ए बेउ लेई विपरीतपणे नीचेनो नाग उपरकरी उपरनो नाग नीचे करी वामेके० मावे पासे संधिज्जके० सांधिये पछी ते बंने खंम राजने विस्तारे त्रसनाडी सहित करिये. तेवारे सर्व त्रणराज विस्तारे थाय; अने उंचपणे तथा नीचपणे एकठा कस्या थका सातराज थाय. ॥ ७२३ ॥

मूलः- हेठाउ वामखंमं, दाहिणपासंमि ठवसु विवरीयं ॥ उवरिमतिरज्जुखंमं, वामे गणंमि संधेज्जा ॥ ७२४ ॥ अर्थः- अधोलोके त्रसनाडी थकी मावी बाजुये जे खंमछे ते लेइने विपरीतपणे जमणी बाजु जोडीये, अने उपरलो त्रण राजनो जे खंम ते मावीपासे जोडीये. इहां ए नावनाजे लोक ऊर्ध्व अध मली चउद राज प्र माणछे. तेमां नीचे विस्तारे देशे उणा सातराज प्रमाणछे. अने तिरछा लोकने म ध्य एक राज प्रमाण छे. ब्रह्मलोकने मध्य पांच राज प्रमाणछे, वली उपर लोकांते एकराज प्रमाणछे. अने बीजे ठेकाणे विस्तारनो नियम नथी. एवा लोकनो घन करवाने अर्थे प्रथम अर्द्ध संवर्त्ते. ते आवीरीते के, सर्व एकराज विस्तीर्ण त्रसना डीछे, तेनो जमणी बाजु ब्रह्मलोकना मध्यथकी उपरनो अने नीचेनो खंम लेइ त्रसनाडीनी मावी पासे विपरीतपणे जोडिये. एम करतां ऊर्ध्वलोक त्रणराज वि स्तारेथाय अने उंचपणे सातराज माठेरा थाय.

हवे अधोलोके त्रसनाडीनी मावी बाजुए जे खंम छे ते लेइ विपरीतपणे जम णी बाजुए जोडिये. एम करवाथी अधस्तन लोकनुं अर्द्ध देशोन चारराज माठेरा विस्तारे थाय. अने उंचाइमां सातराज जाजेरो थाय, पछी उपरनो अर्द्ध, बुद्धिये लेइ नीचे मावी बाजुए जोडिये. एम करवाथी विस्तारे कांइक सातराज माठेरा थाय छे. अने उंचपणे क्यांएक सातराज जाजेरा थाय तथा. क्यांएक सातराज

माठेरा थाय पछी ज्यां ऊर्णेरा सातराज ठे त्यां सातराज उपरना लेइ ज्यां उंणा ठे त्यां जोडिये. एम करतां सातराज घन थयो. ए व्यवहारनयना मते स्थूल दृष्टिपणा थकी जो लगारेक क्यांक उणाठे तोपण सातराज कहिये. ॥९२४॥

हवे ए घनपणे करेला लोकनी रज्जु संख्या कहेछे. मूलः– तिन्निसया तेयाला, रज्जूणं होंति सव्वलोगम्मि ॥ चउरंसो होइ जयं, सत्तण्हघणेणिमासंखा ॥ ९२५ ॥ अर्थः– सर्व चउदराज लोकनो घन करिये तेवारे त्रणसे तेतालीस राज थायछे. ते आवीरीते के, घन कस्याथी समस्त समचतुरस्र थयो. संवर्त्तित लोकने आयामे विष्कंभे बाहुल्य सर्व सात राज थाय. ते सातने सातवार गुणाकार करिये ते आवीरीते. सातने साते गुणतां उंगणपचाश थाय तेवा. सात उंगणपचाश आंकडा मांडीने एकंदर सरवालो करतां त्रणशे ने तेतालीस पूर्वोक्त रज्जु थायछे. ए सर्व व्यवहार नय आश्री कह्यो ठे. अने निश्चय नयथकी तो बशेंने उंगणचालीस घनरज्जू संभवेछे. तेज कहेछे. ॥ ९२५ ॥

मूलः– उवरिठ अहव ठप्पन्न पयर पत्नरकदिठिखंभाणं ॥ वग्गं कुणहि पिहुपिहु, संजोगे तिजयगणियपयं ॥ ९२६ ॥ अर्थः– उंचपणे नीचेथकी गणिये अथवा नीचे थकी उंचपणा सुधी ठप्पन्न पंक्तिनी संख्याठे अने तिरियं चउरो इत्यादि गाथाने विषे तिरछा खांभुआ कह्या ते प्रत्येके दीठ एवा खंभनो वर्ग करिये. वली तद्गुणो वर्ग करिये. चार चार गुणा इत्यादिक सर्व पंक्तिनो वर्ग जूदोजूदो करी पठी एकठा करिये तेवारे त्रणे लोकनो गणित पद (१५२९३) एटला खांभुआ थाय. एने चोसठने नागे दइये तेवारे बशेने उंगणचालीस घनरज्जु थाय. ॥९२६॥

एहिज अर्थ गाथाये करी देखाडेछे. मूलः– सहसेगारसडसया, बत्तीसहिया अहंमि खंभाणं ॥ समदीहपिहुबेहाण घणरज्जू चउरंसमाणेणं ॥ ९२७ ॥ अर्थ अग्यार हजार बशे ने बत्रीस एटला अधिका खांभुआ अधोलोके ठे. पण ते एहेवा ठे के सरखुं जेमनुं लांबपणुं पहोलपणुं ने जाडपणुं ठे. घनरज्जू एथकी थाय. चतुरस्र मान होय. ॥९२७ ॥

मूलः– चत्तारि सहस्साइं, चउसठि जुआइं उढलोगंमि ॥ पनरहसहस्स डुसयं, ठन्नउय जावमुलणंसि ॥ ९२८ ॥ अर्थः– चार हजार ने चोसठ सहित एटला खांभुआ ऊर्ध्वलोकने विषे ठे. बेउमली पन्नर हजार बशे ने ठन्नु थाय. ॥९२८॥

मूलः– चउसठिए विहत्तं, इगुवाला दोसया हविज्जेवं ॥ लोएघणरज्जूणं, तिरियं चउरोत्ति गाहत्तो ॥ ९२९ ॥ अर्थः– पूर्वोक्त संख्याने चोसठना आंक साथे वि

ह्संके० वेंचिये एटले नाग आपिये तेवारे बशे ने उगणचालीस थाय एम. लो कनेविषे एटला घनरज्जु थाय. एटले तिरियचउरो ए गाथामां जे खांकुआ कह्या छे. तेह्नो वर्ग करिये. तेवारे ए गाथार्थ जाणवो. ॥ ए१ए ॥

रुचकप्रदेश थकी जे देवलोक जेटलो दूरछे ते देखाडेछे. मूलः—छसु खंमगेसु यडु गं, चउसु डुगं दस सुहुंति चत्तारि॥चउसु चउक्कं गेविज्ज णुत्तराइं चउक्कंमि ॥ए२०॥ अर्थः— रुचकथकी उंचे मुखे छ खांमूए दोढराज थाय; त्यां सौधर्म ने ईशान ए बे देवलोकछे. ते थकी उपर चार खांमूए एकराज प्रमाणे खेत्र, तेमां वली सनतकु मार ने माहेंद्र ए बे देवलोकछे. आगल दश खांकुये अढीराजमां ब्रह्म. लांतक, शुक्र, ने सहस्रार लक्षण चार देवलोक छे. तेवार पछी वली चारखांकुए आनत प्राणत, आरण ने अच्युत ए चार देव लोकछे, ते पछी वली नवग्रैव्यक पंचानुत्तर विमान सिद्ध सिला ए सर्व चार खांकुए छे. ए सातराजमां सौधर्मादिक देवलोक कह्या. ॥ए२०॥

तिरछो राजमान देखाडतो लोक प्रमाण कहेछे. मूलः— सयंजुपुरिमंताउ, अ परंतो जाव रज्जुमाईउ ॥ एएण रज्जुमाणेण लोगो चउदसरज्जूउ॥ए२१॥ अर्थः—स यंजुरमण समुद्रनी पूर्वदिशिथकी मांमीने अवरांतके० ज्यां सुधी पश्चिम दिशिनो प्रांत छे त्यांसुधी एक राजनो मान जाणवो. ए राजने प्रमाणे लोक चउदराज प्रमाणछे. इतिगाथा त्रयोविंशतिकार्थ. ॥ ए२१ ॥

अवतरणः— सन्नाउतिन्नित्ति एटले त्रण संज्ञानुं एकशोने चुमालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः—सन्नाउतिन्नि पढमे छ दीहकालोवएसियानाम ॥ तह हेउवाय दिठी, वाउ वएसा तदियराउ ॥ए२२॥ अर्थः— संज्ञा त्रण कहिछे. त्यां जे सम्यक्प्रका रे ज्ञानपणु ते संज्ञा कहिये. तेमां पढमाके० पहेली ते इहां दीर्घके० अतीत अ नागत वस्तु विषयिक उपदेश कहेवोछे जेने विषे, ते दीर्घकालोपदेशिका एवे नामे संज्ञा जाणवी. तहके० तेमज वली बीजी हेतुके० कारण निमित्त तेह्नो वदन के० कहेवो ते विश्यिक उपदेशनी प्ररूपणा करवीछे जेने विषे ते हेतुवादोपदेशि का नामे संज्ञा जाणवी. त्रीजी ज्यां दृष्टी शब्दे सम्यक्त्वादिकनो वाद कहेवो ते विषयिक ज्यां उपदेशछे ते दृष्टिवादोपदेशिकी नामे संज्ञा जाणवी. ते तदियराके० तेथकी इतर जाणवी. एवुं स्वरूप केहेनार छतो सूत्रकार गाथा कहेछे. ॥ए२२॥

मूलः—एयं करेमि एयं, कयंमए इम महं करिस्सामि॥ सोदीहकालसन्नि, जो इय तिकालसन्निधरो ॥ ए२३ ॥ अर्थः— आ अमुक काम हुं करुंछुं, आ अमुक काम मे कर्युं अने ए अमुक हुं करीश. एरीते जे वर्त्तमान, जूत अने नविष्य एवा त्रण

कालनेविषे रेहेनारी वस्तुविषयक संज्ञाने धारण करनारो ते दीर्घकालिकी संज्ञाये करी संज्ञी. ए संज्ञाना धरनार ते गर्नज तिर्यंच अथवा मनुष्य, देव, नारकी ते मनःप र्याप्तियुक्त जाणवा. तेनेज त्रिकाल विषयिक विचारादिकनो संनव ठे. एमध्ये घणुं करीने सर्व अर्थ स्पष्टरूप प्राप्त थायठे. तेज कहेठे. जेम चक्षुवालो पुरुष दीपकना प्रकाशेकरी स्पष्ट अर्थप्राप्ति पामेठे तेम आ पण मनोपलब्धिसंपन्न थइने मनोरूप इव्यने आधारे उत्पन्न थएला विचारे करी एटले पूर्वपरानुसंधाने करी यथास्थित स्पष्ट अर्थने पामेठे. अने जेने तेवीरीतीना त्रिकाल विषयिक वि चार नथी ते असंज्ञी. एवुं सहज सिद्ध थायठे. ते असंज्ञी सम्मूर्छिम, पंचेंड्रिय अने विकलेंड्रियादिक जाणवा. ते अति स्वल्पमांस्वल्प मनोपलब्धी संपन्नत्वेकरी अ स्पष्ट अर्थ जाणेठे. तेज कहेठे. संज्ञी पंचेंड्रिय करतां सम्मूर्छिम पंचेंड्रिय अस्पष्ट अर्थ जाणेठे, तेना करतां चतुरिंड्रिय अस्पष्ट जाणेठे, तेना करतां तेंड्रिय अस्पष्ट जा णेठे, तेना करतां बेंड्रिय अस्पष्ट जाणेठे अने तेना करतां एकेंड्रिय अस्पष्ट जाणे ठे. तेने घणुकरी मनोइव्यनो असंनवठे. माटे केवल अव्यक्तज कोइ अत्यंत सूक्ष्म मन जाणवुं. जेनायोगे करी आहारादि संज्ञा अव्यक्तरूप उत्पन्न थायठे. ॥ ए३३ ॥

मूलः—जेउण संचिंतेउं, इठाणिठेसु विसयवत्थूसु ॥ वट्टंतिनियत्तंतिय, सदेहपरि पालणाहेउं ॥ ए३४ ॥ अर्थः— जे कोइ वली चिंतवीने इष्टानिष्ट जे कांई ठाया आतप आहारादिक विषय वस्तु तेनेविषे प्रवर्त्ते अने अनिष्टवस्तु थकी निवर्त्ते. ते सदेहके० स्वदेह एटले पोताना शरीरनुं पालण पोषण करवाने हेतुके० कारणे इष्टानिष्टने विषे प्रवर्त्तन निवर्त्तन करे. ॥ ए३४ ॥

मूलः— पाएण संपइच्चिअ, कालंमि नयाइ दीहकालंमि ॥ ते हेउवायसन्नी, निच्चेठा हुंतिहु असन्नी ॥ ए३५ ॥ अर्थः— प्राये सांप्रतके० वर्त्तमान काल विषयि क ज्ञानठे. इहां प्रायना ग्रहणथकी कोइक अतीत अनागतना जाण पण होय. परंतु दीर्घकाल विषयिक जाणे नही; ते बेंड्रियादिक हेतुवादोपदेशिकी संज्ञाये सं ज्ञी होय अने निचेष्टाके० जेकोइ उष्ण आतपादिकने विषे तेनो नाश थवा सारुं ठायादिकनी प्रवृत्ति निवृत्ति रहित एवा पृथीव्यादिक जीवोठे ते असंज्ञी जाणवा.

इहां ए नावजे बुद्धिपूर्वक पोताना शरीरनुं पालण करवाने अर्थे जे इष्ट अ निष्टथकी प्रवृत्ति निवृत्ति जाणे ते हेतुवादोपदेशिकीसंज्ञाये संज्ञी. ते बे इंड्रिया दिकज जाणवा. तेमज ए इष्टानिष्ट प्रवृत्ति निवृत्तिनुं चिंतववुं ते मनना व्या पार विना संनवतु नथी. मने करी पर्यालोचन ते संज्ञाठे. ते बेइंड्रियादिकने प

ण होय तेने पण प्रतिनियत इष्टानिष्ट विषय प्रवृत्ति निवृत्ति एनुं दर्शन छे ते कारण माटे बेइंद्रियादिक जीवोने हेतुवादोपदेशिकी संज्ञाये संज्ञीपणु प्राप्त थायछे. वली आहारादिक दश संज्ञा पृथिव्यादिकने पण आगल कहेशे. ते श्रीपन्नवणा मां कहिछे. पण ते अत्यंत अव्यक्तरूप मोहोदयथकी होयछे; अने वली अशोजन छे, तेनी अपेक्षाये त्यां पृथिव्यादिकने संज्ञीपणुं कहेवुं नही. लोकमां पण कोइक पासे थोडुं एक कार्षापण एटले सुवर्ण मात्रना अस्तित्वे करी ते धनवंत कहेवाय नही.

हवे दृष्टिवादोपदेशसंज्ञाये संज्ञी अने असंज्ञी ते कहेछे मूलः– सम्मद्दिट्ठी सन्नी संमे नाणे खउवसमिएय ॥ असन्निमिच्छत्तम्मि, दिट्ठीवाउवएसेण ॥ ए३६ ॥ अर्थः– जे क्षायोपशमिकज्ञानेकरी वर्त्तमान सम्यक्ज्ञानपणाथकी सम्यक्दृष्टि जाणवो. अने सम्यकज्ञानसंज्ञारहितपणा थकी मिथ्यादृष्टिअसंज्ञी जाणवो. यद्यपि मिथ्यादृष्टि पण घटादिक वस्तुने घटादिकपणेज जाणे छे अने केहेवामांपण घटने घटज कहेछे; तथापि तेने निश्चे नय अज्ञानी कहिये. केमके ते जगवंत जाषित यथावस्थित वस्तुनो अंगीकार करता नथी, इहां शिष्यपूछेछे के जो विशिष्टसंज्ञाये सहित सम्यक्दृष्टिने संज्ञी कहिये तो क्षायोपशमिक ज्ञान सहित केम कह्यो? क्षायिकज्ञाने तो विशिष्टतर संज्ञा होय छे तो ते केम न लीधो?

इहां उत्तर कहेछे के जे अतीत अर्थनुं स्मरण करवुं अने अनागतनी चिंतवना करवी तेने संज्ञा कहिये. अने श्रीकेवलीजगवानतो सदासर्वदा सर्वजाव जाणे ज छे. तो ते केवलीने कांई अतीत अर्थनुं स्मरण अने अनागतनुं चिंतन नथी. अने एनेतो स्मरण चिंतनछे. तेमाटे क्षायोपशमिकज्ञानी तेज सम्यक्दृष्टिसंज्ञी कह्यो.

वली शिष्य पुछेछे के प्रथम हेतुवादोपदेशे करी संज्ञी कहेवाने योग्यछे. कारण हेतुवादोपदेशे करी अल्पमनोपलब्धिसंपन्न एवा जे द्वींद्रियादिक तेने अविशुद्धतरपणुं छे माटे संज्ञीपणाए करी अंगीकार छे. पछी दीर्घकालोपदेशे करी हेतुवादोपदेशसंज्ञानी अपेक्षाए दीर्घकालोपदेशसंज्ञाना मनपर्याप्तियुक्तपणाथकी अतिशुद्धपणु छे. माटे पछी कहेवी. तो शावास्ते उत्क्रम उपन्यास करेछे?

तेनो उत्तर कहेछे. अहीयां समस्त सूत्रोनेविषे कोइ ठेकाणे पण संज्ञी अथवा असंज्ञी ग्रहण करेछे त्यां प्राये सर्व ठेकाणे दीर्घकालोपदेशे करी ग्रहण करेछे; पण हेतुवादोपदेशे करी अने दृष्टिवादोपदेशे करीने ग्रहण करता नथी. तेनी खातरी थवा सारुं प्रथम दीर्घकालोपदेशेकरी संज्ञीनुं ग्रहण कर्युं. उक्तंच सन्निति असंनित्तिय सव्वे सुयकालिउव एसेण; पायंसं ववहारो कीरइतेणाइउ सकउ. पछी

तेना अनंतरे अप्रधानत्वे करी हेतूपदेशे करी असंज्ञीनुं ग्रहण कर्युं ते पछी सर्व प्रधानत्वथी छेवट दृष्टिवादोपदेशसंज्ञानुं ग्रहण छे. इति गाथापंचकार्थः ॥ए३६॥

अवतरणः– सन्नाउ चउरोत्ति एटले चार प्रकारनी संज्ञानुं एकशो ने पिस्तालीसमुं द्वार कहेछे. मूलः– आहार जय परिग्गह, मेहुण रूवाउ हुंति चत्तारि ॥ सत्ताणं सएहाउ, आसंसारं समग्गाणं ॥ ए३७ ॥ अर्थः– एक क्षायोपशमिकी अने बीजी उदयिकीना जेदे करी बे प्रकारे संज्ञा जाणवी. तेमां क्षायोपशमिकी अनंतर कही आव्या. अने बीजी उदयिकी, सामान्यपणे चार प्रकारे छे, ते आहारादिक जाणवी. तेमां प्रथम क्षुधा वेदनीयना उदयथकी तथाविध आहारादिकनुं लेवुं ते प्रथम आहारसंज्ञा जाणवी. ए आहारसंज्ञा उपजवाना श्रीठाणांगमां चार कारण कह्यांछे. यडुक्तं चउहिंगणेहिं आहार संन्ना समुप्पज्जइ तं जहा उमकोट्ठयाए खुहा वेयणीयस्सकम्मस्सउदएणं मइए तदठोवउगेणं. प्रथम उमके० खाली कोठे आहारादिकनी कथा सांजलीने आहार उपर इछा थाय, बीजी क्षुधावेदनीय कर्मने उदये थाय, त्रीजी वली आहारनी वातो सांजलवानी मति उपजे, ते मतिना योगेकरी निरंतर पणे आहारनी चिंता थाय, अने चोथी जय मोहनीयना उदय थकी दृष्टि वदन रोमांचादिकनो विकार ते जय संज्ञा. तेनां उपजवानां चार स्थानक छे. हीणसत्तयाए, जयवेयणीयस्सकम्मस्स उदएणं, मईए तदठोवउगेणं, अर्थः– एक हीनसत्वे करी एटले बलना अजावे, बीजुं जयसूचक कर्मना उदये करी, त्रीजुं जयनी वात सांजलवी अने जयंकर दर्शनादिकथी उत्पन्न थएली बुद्धिए करी अने चोथुं आ लोकनेविषे जय लक्षणजे अर्थ तेना पर्यालोचने करी. चउहिंगणेहिं परिग्गहणा समुप्पज्जइ, अविमुत्तयाए लोजवेयणी० मइए० तदिठो.

लोजना उदयथकी संसारनेविषे आसक्त प्राणी सचित्त अचित्तादिक वस्तुनुं ग्रहण करे इत्यादिक लोजसंज्ञा जाणवी. आलावानो अर्थ सुगम छे. बीजी मैथुनसंज्ञा ते पुरुषवेदना उदयथकी मैथुनने अर्थे स्त्रीने देखवाने प्रसन्नवदन वेपथु प्रमुख सात्विक आठगुणोनुं करवुं. तेनां चार कारण छे. चियमंससोणियाए १ मोहणिज्जस्सकमस्सउदएणं २ मइए ३ तदिठो० ४ अर्थः– उपचित एटले पुष्ट पणे थयांछे एक मांस अने बीजो शोणितके० लोही ते जेना शरीरने विषे; तेना योगे सुरत कथादिक सांजली मैथुननुं चिंतन करे शेष पूर्ववत् जाणवां. एहवुं छे स्वरूप जेनुं ते चार संज्ञा समस्त एकेंद्रियादिक प्राणीने आ संसारमां ज्यां सुधी रहे त्यांसुधी थाय. एकेंद्रियादिकने ए प्रत्यक्ष देखायछे. उदाहरण, जेम वनस्प

ति प्रमुख प्रत्यक्ष प्राणी आहारने योगे नवपल्लव थायछे, नही तो सुकाइ जायछे; ते आहारसंज्ञा. वली वेली प्रमुख हस्तादिकने स्पर्शे पोताना अवयव संकोचेछे ते जयसंज्ञा. अने बीज पलाशादिक ज्यां धन होय त्यां जड मूके ते परिग्रह संज्ञा. वली कुरुबक, अशोक, अने तिलकादिकना वृक्षो ते स्त्रीना आलिंगने, पग ना प्रहारे, कटाक्षे अने विक्षेपादिके फूलेछे. ए मैथुनसंज्ञा जाणवी. ॥ ए३७ ॥

अवतरण.— सन्नाउदसत्ति एटले दशसंज्ञानुं एकशो ने छेतालीसमुं द्वार क हेछे. मूलः— आहार जय परिग्गह, मेहुण तह कोहमाण मायाय ॥ लोजोह लोग सन्ना, दसजेया सव्व जीवाणं ॥ ए३ए ॥ अर्थः— जेणेकरी जाणिये उल खियें के आ जीवछे ते संज्ञा कहिये. ते वेदनीय तथा मोहनीय आश्रित, ज्ञाना वरण दर्शनावरण क्षायोपशम आश्रित विचित्र आहारादिकनी प्राप्तिनी क्रिया ते दश प्रकारे छे. तेमां चार तो आहारादिक पूर्वेजे कहि आव्या तेज जाणवी. पांचमी क्रोधेकरी मुख नयन होठनुं स्फुरवुं इत्यादिक चेष्टाकरे ते क्रोधसंज्ञा जाणवी. छठी माने करी जे अहंकारनुं उछकपणुं ते मानसंज्ञा जाणवी. सातमी मायाये करी जुठुं बोलवुं ते मायासंज्ञा जाणवी. आठमी लोजेकरी सचित्तादिक द्रव्यनी प्रार्थना करवी ते लोजसंज्ञा जाणवी. नवमी मतिज्ञानना आवरणरूप कर्म तेना क्षयोपशमथकी शब्दार्थगोचर सामान्यावबोधक्रिया ते उघसंज्ञा जाणवी अने दश मी एमज विशेषावबोध क्रिया ते लोकसंज्ञा जाणवी.

ए अजिप्राय ठाणांगनी टीकानो छे. अने आचारांगनी टीकामांहे एम कह्युं छे के जे, अव्यक्त उपयोगे वेलिनी परे विस्तरवुं, उंचे चडवुं, ते उघसंज्ञा जाणवी. अ ने लोकसंज्ञा ते जे पोतानी मतिये योग्य विकल्पनारूप लौकिकाचरित. जेम अ नपत्यने गति न होय. श्वान ते यक्ष. ब्राह्मण ते देवता. काग ते पितामह, मोरने पंखवाहे गर्जसंजवे इत्यादिक. ए दशसंज्ञा सर्व संसारी जीवोने थाय. बीजा एम कहे छे. ज्ञानोपयोग ते उघसंज्ञा अने दर्शनोपयोग ते लोकसंज्ञा. आ द श संज्ञा जे छे ते आ अमुकजीव छे एवा ज्ञाननुं कारणरूप छे. एवी आ दश सं ज्ञा सर्व संसारीजीवोने जाणवी. अने सुख प्रतिपत्तिने अर्थे आ दश संज्ञा स्पष्ट रूप जाणवी. पंचेंद्रियोने अनधिकृत्ये करी व्याख्यान करेलीछे अने आ दश सं ज्ञा एकेंद्रियादिकने तो अव्यक्तरूप जाणवी. इति गाथार्थ ॥ ए३ए ॥

अवतरणः— सन्नाउपन्नरसत्ति एटले पन्नर संज्ञानुं एकशोने सडतालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः— आहारजय परिग्गह, मेहुणसुह डुरक मोहवितिगंछा ॥ तह

कोहमाणमाया, लोहे लोगेय धम्मोघे ॥ ए३ए ॥ अर्थः– ए पन्नर संज्ञामां दश संज्ञा तो पूर्वे कहीले तेज जाणवी. अने अग्यारमी शातानुं जे अनुभववुं ते सुख संज्ञा. बारमी अशातानुं जे वेदवुं ते दुःखसंज्ञा, तेरमी मोहसंज्ञा ते मिथ्यादर्शन रूप जाणवी. चउदमी विचिकित्सासंज्ञा ते चित्त अविप्लुत लक्षण जाणवी. पन्नरमी धर्मसंज्ञा ते क्षमादिकनुं सेवन करवुं. ए संज्ञाओ पण संसारी जीवोने. जाणवी, तथा श्री आचारांगने विषे वली विप्रलाप वैमनस्यरूप शोकसंज्ञा सोलमी पण कहिले. इतिगाथार्थ. ॥ ए३ए ॥

अवतरणः– सत्तसहिलरकण नेय विसुद्धं सम्मत्तं एटले सडसठ लक्षण नेदेकरी विशुद्ध सम्यक्त्वनुं एकशो ने अडतालीसमुं द्वार कहे ले. मूलः– चउ सद्दहणतिलिंगं, दसविणय तिसुद्धि पंचगयदोसु ॥ अठपनावण नूसण, लरकण पंचविह संजुत्तं ॥ ए४० ॥ लव्विह जयणा गारं, लनावणा नाविर्यं च लठाणं ॥ इयं सत्तसहिलरकण, नेयविशुद्धंच सम्मत्तं॥ए४१॥ अर्थः– चार संदहणा, त्रण लिंग, दश प्रकारनो विनय, त्रणशुद्धि, पांचदूषण, आठ प्रनावक, पांचनूषण अने पांच लक्षण तेणेकरी संयुक्त करिये, ॥ए४०॥ वली ल प्रकारनी जयणा, ल आगार, ल नावनाओ अने ल स्थानक ए सडसठ लक्षण नेदे करी विशुद्ध सम्यक्त्व जाणवुं.

हवे अनुक्रमे ए समस्त द्वार वखाणनार लतो प्रथम चार सद्दहणानुं द्वार वखाणे ले. मूलः– परमल संथवोवा, सुदिठ परमल सेवणावावि ॥ वावन्न कुदंसणव, ज्जणाय सम्मत्त सद्दहणा ॥ ए४२ ॥ अर्थः– परमके० तात्विक जे जीवादिक अर्थ नेदने विषे संसत्व के० जाणवुं. एटले त्यां अन्यास करे, ए प्रथम श्रद्धान जाणवुं. तेमज बीजुं सुदृष्ट के० रुडीरीते जेणे जीवादिक परमार्थ दीठाले एवा जे आचार्यादिक गुरु तेनुं सेववुं पर्युपासनानुं करवुं, ए बीजुं श्रद्धान जाणवुं. त्रीजुं व्यापन्न के० विनिष्ट थयुं ले सम्यक्त्व दर्शन जेनुं एवा नन्हव अने शाक्यादिक कुदर्शनी तेनुं वर्जवुं. ए त्रीजुं श्रद्धान जाणवुं. चोथुं सम्यक् शब्दे प्रशंसाने अर्थे अने अविरोधने अर्थे सम्यक् शब्दे जीव तेनो नाव ते सम्यक्त्व जाणवुं. अथवा प्रशस्त मोक्षने अविरोधि एवो जीवनो जे स्वनावविशेष ले एवा सम्यक्त्वनुं सद्दहवुं अस्तिपणे पडिवजवुं ते चोथुं श्रद्धान जाणवुं. ए तत्वबुद्धिए सर्दहे तेने सम्यक्त्व होय, अन्यथा अंगारमर्दकाचार्यने पण बाह्याकारे तो हतुं पण ए चार श्रद्धान हता नही; तेथी ते अर्थसाधक न थयो. ॥ ए४२ ॥

हवे त्रण लिंग वखाणेले. मूलः– सुस्सूसधम्मराउ, गुरुदेवाणंजहासमाहीए॥

वेयावच्चेनियमे. सम्मदिठिस्सलिंगाइं ॥ ए४३॥ अर्थः– जेथकी नलो बोध उत्पन्न थाय, एवां सफलतानां कारणनूत धर्म शास्त्र सांनलवानी वांछा थाय. ते जेम कोइ चातुर्यादिक गुणोत्तर तरुणनरने, किन्नर गायनना श्रवणनी जेवी प्रीति होय छे तेथकी पण सांनलवानी अधिक प्रीति होय. तरुणो सुहीवियट्टो इत्यादिक गाथोक्तथी अधिक शुश्रुषा करे ते प्रथम लिंग जाणवो. तथा बीजो कर्मादिक दोष थकी जो चारित्र धर्म करी शकतो नथी, तोपण अटवीथकी आवेलो महा दरिद्री अत्यंत नूख्यो एवो जे ब्राह्मण, तेने घेवर जमवा उपर जेवो अनिलाष थाय तेथकी पण अधिक धर्म उपर तेने राग थाय; ते बीजो धर्मराग नामा लिंग जाणवो. हवे त्रीजो लिंग, ते गुरु धर्मोपदेशना देवावाला जे आचार्यादिक अने देव आराध्यतम श्रीअरिहंत देव तेने जेवीरीते समाधिथाय तेवीरीते विश्रामणादिक पूजाप्रमुख करवानो जे नियम; एनो अनिग्रह ग्रहण करे. ए त्रीजो लिंग जाणवो.

इहां सूत्रमांहे "गुरुदेवाणं" एवा पाठथी प्रथम गुरुनुं ग्रहण कर्युं छे. ते गुरुनुं पूज्यपणुं जणाववाने अर्थे छे. कारण के श्रीअरिहंतदेव पण गुरुना उपदेश थकीज जणायछे. पण ते विना जणाय नही. माटे गाथामां प्रथम गुरु कह्या. ए त्रण सम्यक्तधारीनां लिंगछे. एणेकरी सम्यक्दृष्टि ओलखायछे. ॥ ए४३ ॥

हवे दश प्रकारनो विनय वखाणेछे. मूलः–अरिहंतसिद्धचेइय, सुएय धम्मेयसाहुवग्गेय ॥ आयरियउवज्झाए, सुयपवयणदंसणेवावि ॥ ए४४ ॥ अर्थः– प्रथम अरिहंत ते समवसरण मध्य मध्यासीन चोत्रीस अतिशय पांत्रीस वचनातिशये बिराजमान विहरता नगवंत तेने अरिहंत कहिये. बीजो आठकर्मनी, एकसो ने अठावन उत्तर प्रकृतिनो क्षय करी मोक्ष पाम्या ते सिद्ध कहिये. त्रीजो चैत्य, जे जिनेंद्रतुल्य जे प्रतिमालक्षण ते चैत्य कहिये. चोथो श्रुत, ते सामायिकादिक अथवा आचारांगादिक. पांचमो धर्म, ते क्षांति प्रमुख. छठो, ते क्षांत्यादिक धर्मनो आधार ते साधुनो वर्ग, समुदाय रूप. सातमो आचार्य. आठमो उपाध्याय. नवमो, प्रतित प्रवचन शब्दे संघ कहियेः दशमो, दर्शन शब्दे सम्यक्त्व कहिये. अने सम्यक्त्ववंत जे पुरुष तेने पण दर्शन शब्दे करी बोलेछे. ॥ ए४४ ॥

ए पूर्वोक्त दशपदोने विषे जें कर्त्तव्य छे ते कहेछे. मूलः– नत्तीपूआवन्नजणणं नासणमवस्सवायस्स ॥ आसायण परिहारो, दंसणविणउ समासेण ॥ए४५॥ अर्थः–एक बाह्य प्रतिपत्ति, ते आवता देखीने सन्मुख जावुं, तथा आसननुं देवुं, सेवा ते अंजलीबंधनुं करवुं. जाताने पठवाडे जावुं. इत्यादिक नक्ति करवी. बीजुं

पूजा, ते गंध, माल्य, वस्त्र, पात्र, अन्न पानादिकनुं आपवुं. त्रीजुं वर्णके० श्लाघा तेनुं जनन एटले ज्ञानादिक गुणना गणनुं बोलवुं. चोथुं अवर्णवाद, ते अश्लाघा तेनुं नासणके० गमाववुं परिहरवुं. पांचमुं आशातना, ते मन वचन काया संबंधीनी, तेनोपरिहार एटले वर्जवुं. ए दशे प्रकारे दर्शन कहेतां सम्यक्त्वनो विनय ते समासेणके० संक्षेपे कह्यो. ॥ ए४५ ॥

हवे त्रण शुद्धि कहेछे. मूलः—मुत्तूणजिणंमुत्तूण, जिणमयंजिणमयठिएमोत्तुं॥संसारकंत्तवारे, चिंतज्जंतं जगं सेसं ॥ ए४६ ॥ अर्थः— एक श्री वीतराग तथा बीजा जिनमत स्याद्वादरूप तीर्थंकर प्ररुपित जीवाजीवादिक तत्वरूप प्रवचन, तथा त्रीजा तेज परमेश्वरनां प्रवचन जेणे अंगीकार कर्यांछे एवा सुसाधु. ए त्रणने मूकीने बाकी जगतना सर्व पदार्थोने संसारना कवच तुल्य असार समान चिंतवे. एवुं जाण थाय.

पांच दूषण रहितपणु कहेछे. मूलः— संकाकंखविगंछा, पसंस तह संथवो कुलिंगीसु ॥ सम्मत्तस्स इयारा, परिहरियव्वा पयत्तेण ॥ ए४७ ॥ अर्थः— प्रथम शंका, ते वीतरागना वचन उपर संशयनुं करवुं. बीजो कांक्षा, ते अन्य दर्शननो अभिलाष करवो. त्रीजो विगंछा, ते साधुनी निंदाकरवी. चोथो अन्य दर्शननी प्रसंशा, ते श्लाघानुं करवुं. पांचमो, बौध शाक्यादिक परदर्शनीउ साथे संस्तव परिचय करवो. ए सम्यकत्वना पांच अतिचार ते मलिनताना कारण जाणी प्रयत्ने परहरवा.

हवे आठ प्रनाविक कहेछे. मूलः— पावयणी धम्मकही, वाईनेमित्तिउ तवस्सी य, विज्जा सिद्धोयकवी, अठेवपनावगा नणिया ॥ ए४८ ॥ अर्थः— प्रथम प्रवचन जे द्वादशांगीरूप ते जेने छे, तेने प्रावचनिक कहिये. ते जुगप्रधान जाणवो.

बीजो आगमधर्म कथी चार प्रकारे कथन करे, एक आक्षेपणी, बीजी विक्षेपणी, त्रीजी संवेगणी, अने चोथी निर्वेदनी. तेमां जे सांनलनारने तत्वप्रत्ये आक्षेप्यते एटले आकर्षिये तेने आक्षेपणी कहिये. तेना चारनेद छे. एक, आचार लोच अस्नानादिक, तेना प्रकाशवा थकी आचाराक्षेपणी. बीजी, प्रमादने लीधे जे दूषण लाग्यां होय तेना विनाशने अर्थे प्रायश्चित्त लेवुं ते व्यवहार. तेने कहेवे. आक्षेपे ते व्यवहाराक्षेपणी. त्रीजी, सांनलनारने संशय उत्पन्न थयाथी तेनो मधुर वचने करी संशय नाश पमाडवो तेने आक्षेपे ते प्रज्ञप्त्याक्षेपणी कहिये. अने चोथी, सांनलनारने गमती नयने अनुसारे पदार्थोनी प्ररुपणा करवी ते दृष्टिवादाक्षेपणी. ए आक्षेपणीना चार नेद कह्या.

हवे विक्षेपणीना चार नेद कहेछे. विक्ष ते नलामार्गे थकी माठे मार्गे प्रव

र्त्तावियेः अथवा माग मार्गे थकी नलामार्गे प्रवर्त्तावियेे ते विक्षेपणी. तेना चार भेद छे. तेमां प्रथम, स्वसमय कहेतो परसमय कहे. बीजी, परसमय कहेतो स्व समयंगवइत्तानवति. त्रीजी, समवायंकहेतो मिछावायं कहे. अने चोथी, मिछा वायं कहेतो समवायंगवित्ता नवति कहे.

हवे संवेगणीना चार भेद कहेछे. जेना सांभलवाथकी सांभलनारने संवेग उत्पन्न थाय ते संवेगणी. तेना चार भेदछे. एक इहलोक संवेगणी, बीजी परलोक संवेगणी, त्रीजी परशरीर संवेगणी अने चोथी आत्मसंवेगणी.

जे सांभलवाथकी सांभलनारने संसारथकी निर्वेद उपजावे ते निर्वेद. तेना चार भेद छे. प्रथम, इहलोगडुच्चिस्राकम्मा इहलोग डुहफल विवागसंजुत्तानवंति. बीजी, इहलोग डुच्चिस्रकम्मा परलोग डुहफल विवागसंजुत्तानवंति. त्रीजी, परलोग डुच्चिस्रकम्मा इह लोग डुहफल विवाग संजुत्ता नवंति अने चोथी, परलोक डुच्चिस्रकम्मा परलोग डुहफल विवाग संजुत्ता नवंति. जेम ए चतुर्भंगी थइ तेमज सुख संबंधीनी चतुर्भंगी थाय, ते आवीरीते. प्रथम, इहलोग सुच्चिन्नाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुता नवंति, बीजी, इहलोग सुच्चिन्नाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति. त्रीजी, परलोग सुच्चिन्नाकम्मा इहलोग सुहफल विवाग संजुत्ता नवंति अने चोथी, परलोग सुच्चिन्नाकम्मा परलोग सुहफल विवाग संजुता नवंति. हवे एनो अर्थ करेछे. इह लोकने विषे डुश्चीर्ण कर्यां जे चोरी प्रमुख कर्म ते इह लोकने विषेज डुःकर्म रूप वृक्षथकी उत्पन्न थयां, माटे आ नवेज डुःखनां आपनार थाय. ते चोर प्रमुखने थाय. एमज बीजो, परलोके नारकी जीवोने डुःख थाय; ते बीजो भंग.

त्रीजो, परलोकनां करेलां कर्म इहां भोगवे, जेम कोइ एक जन्मथी मांमी व्याधि दारिद्र प्रमुखे पीडित होय तेने जाणवो. चोथे भंगे नरक योग्य आयुपना बांधनार काक गृध्रादिकनी परे भावना करवी.

एमज सुच्चिन्न ते प्रथम तीर्थंकरने दानना देनार, बीजा सुसाधु, त्रीजा तीर्थंकर, अने चोथा देवना भावने विषे रह्या तीर्थंकरादिकनी पेरे भावना करवी. एवी क्षीराश्रव मध्वाश्रवादि लब्धे सहित सजल जलधरनी ध्वनिये करी समस्त लोकने प्रमोदनी करनार कथा करे, ते धर्मकथा जाणवी. ते धर्मकथिक बीजो प्रभावक जाणवो.

त्रीजो. वादी, प्रतिवादी, सभा, अने सभापति प्रमुख चार प्रकारनी पर्षदाने विषे जे प्रतिपक्षीनुं वचन उछापीने पोताना पक्षनुं वचन स्थापन करे; तेने निरूपवाद लब्धे संपन्न एवो वादी त्रीजो प्रभावक जाणवो.

चोथो. त्रिकाल विषयिक, लाभालाभ, सुख, दुःख, जीवितव्य मरणनो केहेवा वालो; ते निमित्ति प्रभावक चोथो जाणवो.

पांचमो. विकृष्ट अष्टमादिकथी मांडी वर्ष पर्यंत तपनो करनार; ते तपस्वी प्रभावक.

छठो. विद्या प्रज्ञप्ति प्रमुख शासनदेवता, ते जेने सहाय छे; ते विद्यावंत प्रभावक.

सातमो. अंजन, पादलेप, तिलिक, गुटिका, सर्वभूताकर्षण इत्यादिक सिद्धि छे जेने; ते सिद्ध प्रभावक जाणवो.

आठमो. संस्कृत प्राकृतादिक छए भाषाये करी गद्य पद्यादिकनो नवो बंध करे; ते कवि प्रभावक जाणवो. ए आठ प्रभावक श्री जिनशासननी प्रभावनाना करनार छे.

अथवा एज आठ प्रभावक प्रकारांतरे शास्त्रांतरथी कहिये छैए. उक्तंच. अइ से स इढि धम्म कहि, वाइ आयरिय खवगनेमित्ति ॥ विज्जारायगण सम्मउय तिब्ब पभाविंति ॥ १ ॥ अर्थः— अतिशय प्राप्तपणे थइछे जेने जंघा चारण विद्याचारणनी ऋद्धि तथा आशीविषजलौषधि, ते ऋद्धि अने अवधि मन पर्यवज्ञानादिक, ते अतिशेषर्द्धि इत्यादिक ऋद्धिये सहित, बीजो राजा जेने माननिक ते राजासम्मत्त अने महाजनने माननिक ते गणसम्मत्त जाणवो. शेष सुगम. ॥ ए४७ ॥

हवे सम्यक्त्वनां पांच भूषण कहेछे. मूलः— जिणसासणे कुसलया, पभावणा ययणसेवणाथिरया ॥ भत्तीयगुणासम्मत्त दीवया उत्तमापंच ॥ ए४ए ॥ अर्थः— जिनशासनने विषे कुशलता महापणपणुं, ते अनेक प्रकारे करी आगलाने प्रतिबोधिने श्रीजिनशासनने विषे दृढकरे. बीजुं, प्रथम कह्युं ते रीते श्रीजिशासननी प्रभावना करे. त्रीजुं, आयतन ते द्रव्य अने भावना भेदे करी बे प्रकारेछे. तेमां द्रव्यथी तो जिनभवनादिक अने भावथी ज्ञानादिकना धरनार साधुप्रमुख तेनी सेवना पर्युपासनानुं करवुं. चोथुं, थिरयते श्री अरिहंतना शासननेविषे चलचित्त थय लाने स्थिर करे अने पोते पण परतीर्थिनी समृद्धि देखी स्थिरपणे रहे; पण चलायमान न थाय. पांचमुं, भत्तिके० प्रवचननो विनय व्यावृत्तरूप प्रतिपत्ति. ए सम्यक्तिना पांच गुण ते प्रभासकके० उत्तम प्रधान गुण आभरण लक्षण पांच प्रकारनां छे. तेणे करी सम्यक्त्व दीपेछे, शोभेछे. ॥ ए४ए ॥

हवे सम्यक्त्वनां पांच लक्षण कहेछे. मूलः— उवसम संवेगोविय, निव्वेउ तहय होइ अणुकंपा॥अत्थिक्कंचियएए, सम्मत्ते लक्खणा पंच ॥ए५० ॥ अर्थः— जेनेविषे रह्युंथकुं सम्यक्त्वपणुं इये एटले लखिये; ते कारणे तेने लक्षण कहिये. तेमां प्रथम उपशम लक्षण छे. ते कोइये घणोज अपराध कस्यो होय तोपण तेना उप

र क्रोध करे नही ते उपशम, ते बे रीते छे. कोइकतो कषायना परिणामने विचारी कटुफल जाणी उपशम पामेछे अने कोइकने तो सहज स्वभावे उपशम थायछे. बीजो, मनुष्य तथा देवताना सुखने दुःखरूप जाणीने मोक्षसुखनो अभिलाष धरे. ते संवेग नामा गुण. त्रीजो, नारकी अने तिर्यंचादिक दुःखित प्राणी देखी संसार छांडवानी इच्छा करे; ते निर्वेद सम्यग्दर्शी. एटले दुःखादिके करी गहन एवा संसार कारागृहमां मोटा कर्मदंडपाशे करी नाना प्रकारे पीडित थकां तेनो परिहार करवा विषे समर्थ थई ममत्वरहित पणाना योगे करी निर्वेद युक्त थाय छे; ते निर्वेद. केटलाक ग्रंथकार संवेग के० वैराग अने निर्वेद के० मोक्षाभिलाष एवो विपरीतपणे अर्थ कहेछे. चोथो अनुकंपा, ते दुःखित प्राणिउने विषे पक्षपात रहितपणे करी तेनां दुःख निवारण करवानी जे इच्छा ते अनुकंपा. तेमां पक्षपाते करी पुत्रादिकने विषे अनुकंपा, अथवा आत्मारक्षणार्थे व्याघ्रादिकनुं नसेवन करवुं; तेपण पक्षपात अनुकंपा. ते, द्रव्य अने भावथीबे प्रकारनी छे. तेमां, शक्ति छतां पारकाना दुःखना प्रतिकारने अर्थे जे अनुकंपा ते द्रव्यानुकंपा. अने धर्मथी हीण थयेलाने दुःखी जोइने हृदयमां दया आणवी ते भावानुकंपा जाणवी. पांचमो आस्तिक्यके० पोताने सद्गति छे एवी मति जेने छे ते आस्तिक, तेनो जे धर्म ते आस्तिक्य. ते अन्यतत्वनुं श्रवण थयुं छतां पण जिनेश्वरभाषित तत्वमां निराकांक्ष प्रतिपत्ति जाणवी. आ उपशमादिक पांच सम्यक्त्व विषय लक्षणो जाणवां. एणे करी परोक्ष सम्यक्त्व उत्तम प्रकारेकरी उपलक्षित थायछे

हवे यत्ना छ प्रकारनी कहेछे, मूलः— नो अन्नतिच्छिए अन्नतिच्छि, देवेय तह सदेवेवि ॥ गहिए कुतिच्छिएहिं, वंदामि नवा नमंसामि ॥९५१ ॥अर्थः—अन्य तीर्थि ते परदर्शनी परिव्राजकभिक्षु भौतिकादिक तथा तेना देव जे रुद्र, विष्णु, अने सौगतादिक. तेम जे स्वदेव ते श्री अरिहंत देवनी प्रतिमा, ते कुतीर्थिउ जे सौगतादिक दिगम्बर अथवा बीजा कोइ पण दर्शन वाले ग्रहण करी होय तेने जे एम केहेके हुं वांदु नही, तथा मस्तके करी प्रणाम मात्र पण करूं नही. बीजो, नमस्कार ते प्रणामपूर्वक गुणनुं बोलवुं ते पण करुं नही. ॥ ९५१ ॥

मूलः— नेवअणालित्तो, आलवेमि नोसंलवेमि तह तेसिं ॥ देमि न असणाईयं पेसेमि न गंधपुप्फाइ ॥९५२॥ अर्थः—त्रीजुं, तेमज अन्य तीर्थिउना बोलाव्या विना बोलवुं नही. तेमां जे अल्पमात्र एक वखत बोलवुं तेने आलाप कहिये. तथा चोथो. वारंवार बोलावबुं तेने संलाप कहिये. ते पण करुं नही. अने पहेलो मिथ्यात्वी बोलावे तो तेनीसाथे अल्प बोलवुं पण घणो परिचय करवो नही. केमके

घणो परिचय करवाथी मिथ्यात्वनो उदय थाय. पांचमो, अन्य तीर्थिउने अशनादिक ते अन्न पान खादिम स्वादिम वस्त्र पात्रादिकनुं दान जे आपवुं ते अनुकंपाए आपुं पण अनुकंपा टालीने धर्मबुद्धिये आपु नही. उक्तंच. यतः सर्वेहिंपि जिणेहिं, डुज्जयजिय रागदोस मोहेहिं ॥ सत्ताणुकंपणठा, दाणंन कहिंच पडिसिद्धं ॥ १ ॥ बठो, ते अन्य तीर्थिउना देवोने तथा अन्य तीर्थिउए ग्रहण करेली जिन प्रतिमाने पण पूजाने अर्थे गंध पुष्प यात्रा स्नात्रादिक करुं नही. ए ब यत्नाये यत्नवंत थको ते जीव सम्यक्त्वने उलंघे नही. ॥ ९५१ ॥

हवे ब आगार वखाणेछे. मूलः– रायाजिउगोय गणाजिउगो बलाजिउगोय सुराजिउगो॥कंतारवित्ती गुरुनिग्ग होय ढंछिआउ जिणसासणंमि ॥ ९५२ ॥ अर्थः– प्रथम राजा, देशनो धणी तेनो अजिउग एटले बलात्कार तेणे करी कांइ अकार्य करवुं पडे, बीजो गण, ते स्वजनादिकनो समुदाय तेनो अनियोग, त्रीजो, पोता थकी बलवंत होय तेनो अनियोग, चोथो देव, कोइक शरीर अधिष्टी कांइक दूषण लगाडे ते सुराजिउग कहिये, पांचमो, कांतार शब्दे अरण्य अटवी, तेमां निर्वाह करवाने अर्थे अथवा कांतार शब्दे बाधा जाणवी. ते बाधा उपन्या थकी प्राणनो वर्त्तन एटले निर्वाह करवो ते कांतारवृत्ति जाणवी. बठो गुरु, ते माता पिता प्रमुख वडेरा जाणवा. यदुक्तं. माता पिता कलाचार्या एतेषां ज्ञातयस्तथा ॥ वृद्धा धर्म्मोपदेष्टारो गुरुवर्गः सतांमतः ॥ १ ॥ तेना निग्रह आग्रह थकी कांइ अकार्य करवुं पडे. ए ब छिंमी जिनशासनने विषे अपवादे कहिछे. ॥ ९५३ ॥

हवे ब जावना कहेछे मूलः– मूलं दारं पइठाणं, आहारो जायणंनिही ॥ डुबक्कस्सावि धम्मस्स, सम्मत्तं परिकित्तियं ॥ ९५४ ॥ अर्थः– प्रथम, जेम मूलरहित वृक्ष होय ते प्रचंम वायुये कंपाव्युं थकुं पृथ्वीने विषे पडी जाय; तेम धर्मरूप वृक्ष जे छे ते जो सम्यक्त्वरूप मूल थडथी रहित होय तो कुतीर्थिकरूप वायुये करी प्रेर्युंथकुं स्थिर रहे नही; एवी जावना जाववी. बीजी, जेम नगरने पोल प्रमुख द्वार थाय तेम धर्म रूप नगरने सम्यक्त्व ते द्वार समानछे. ए सम्यक्त्वरूप द्वार विना धर्मरूप नगरमां प्रवेश थाय नही. त्रीजी पइठाणं एटले धर्मरूप प्रासादने प्रतिष्ठान ते पिठिका समान सम्यक्त्व छे. जेम घर बांधतां नीचे सबल पिठिका होय ने उपर घर बांध्युं होय तो ते घर निश्चल थाय; तेम धर्मरूप घर ते सम्यक्त्वरूप पिठिकाये करी निश्चल थाय, एम जावना जाववी. चोथी आहारो, एटले आधारनी पेरे आधार. जेम समस्त जगतने पृथ्वी आधार जूतछे; तेम धर्म

रूप जगतने सम्यक्त्वरूप पृथ्वीनो आधारछे, एम जाववुं. पांचमी, नाजननीपरे नाजन, जेम नाजन जे गामडो तेमां क्षीरादिक वस्तु रही शकेछे; तेम सम्यक्त्व रूप नाजनमां धर्मरूप वस्तु रही शकेछे. छठी जेम निद्दीके० निधानजे नंमार ते थकी मणि मोक्तिक कनकादिक सर्वे पामिये; तेम सम्यक्त्वरूप निधानथकी ज्ञानादिक रत्नत्रय स्वर्गापवर्गादिक सुख सामग्री पामिये, बारव्रतरूप श्रावकनो धर्म, तेहनुं सम्यकत्व ते श्रीतीर्थंकरे एवुं कह्युंछे. हवे ए नाविये सम्यक्त्व मूलसमान, द्वार समान इत्यादिक तेथी ए नावना कहिये. ॥ ९९४ ॥

हवे छ स्थानक कहेछे. मूलः—अछि अनिच्चो कुणई, कयंच वेएइ अछिनिवाणं॥ अछिअमोरको वाउ, छसम्मत्तस्सछाणाई ॥ ९९५ ॥ अर्थः— चेतना लक्षण ते जीवछे. एवुं कहेवा थकी नास्तिकना मतनुं निराकरण कर्युं. ते प्रथम स्थानक. वली ते जीव नित्य उत्पत्ति विनाश रहित छे; ते बीजुं स्थानक. कुणईके० ते जीव मिथ्यात्व अविरति कषाय योगेकरी ज्ञानावरणीयादिक कर्मनो कर्त्ताछे; ते त्रीजुं स्थानक. ते जीव पोताना कयंके० करेलां शुनाशुन कर्मने वेदेछे, अनुनवेछे; ते चोथुं स्थानक. ते जीवने निरवाण ते सर्व राग दोष मद मोह जन्म जरा रोगादिक डुःख क्षयरूप जे अवस्था विशेष मोक्ष लक्षण पण छे; ए पाचमुं स्थानक जाणवुं. ते जीवने मोक्ष पामवानो उपाय सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्ररूप साधन, ते पण छे; ते छठुं स्थानक. ए छ सम्यक्त्वनां स्थानक जाणवां. एरीते चार सद्दहणादिक बार द्वारे करी सडसठ नेदे विशुद्ध सम्यक्त्व वखाण्युं. इतिगाथार्थ

अवतरणः— एगविहाइ दसंविहंसम्मं एटले एकविध आदेदेइने दशप्रकारना सम्यक्त्वनुं एकशोने उंगणपचासमुं द्वार कहेछे. मूलः— एगविह डविह तिविहं, चउहा पंचविह दसविहं धम्मं ॥ दवाइ कारगाइ, उवसमनेएहि वासम्मं ॥९९६॥ अर्थः— एकविध ते तत्वार्थश्रद्धान लक्षण सम्यक्त्व सामान्ये जाणवुं. द्विविध ते इव्य अने नावना नेदेकरी जाणवुं. तेमां जे विशोधिने विशेषे करी मिथ्यात्वना पुजल निर्मलकरे ते इव्यथी जाणवुं. अने श्री जिनोक्त तत्व सद्देहे तेने विषे रुचि करे ते नावथी जाणवुं, तथा आदिशब्दथकी प्रकारांतर जाणवो, ते निश्चय अने व्यवहारना नेद थकी पण बे प्रकारे सम्यक्त्व थायछे. तेमां देश काल अने संघयणने अनुमाने यथाशक्तिए साधुना अनुष्ठानरूप ते निश्चयिक जाणवो. अने जे जिनशासनने विषे प्रीतिनुं करवुं एवोजे आत्मानो शुन परिणाम; ते व्यवहार सम्यक्त्व कहिये. तेथकी पण परंपराये मोक्ष पामिये. उक्तंच; जं मोणं तं सम्मं, जं स

म्मं तमिह होइ मोणंतु ॥ निच्चयई ईरसउ, सम्मं सम्मत्त हेउत्ति ॥ १ ॥ ए व्य वहार नय ते पण प्रमाणछे. एना बलथकी तीर्थ प्रवर्त्ते; अन्यथा तीर्थनो विच्छेद थाय. यडुक्तं; जइ जिणमयं पवज्जह, तामाववहार निच्चए मुयह ॥ ववहारनयच्छेउ, तित्थुच्छेउजउ अवस्समिति ॥ १ ॥ तथा पुज्जलिक अने अपौज्जलिकना नेदे करी पण बे प्रकारनुं सम्यक्त्व छे. तेमां शुद्धपुंजना वेदवा थकी क्षायोपशमिक सम्य क्त्वनुं वेदवुं ते अपौज्जलिक सम्यक्त्व जाणवुं. अथवा निसर्ग अने अधिगमना नेदे करी बे प्रकारेछे. ते बेहु आगल वखाणशे. अने त्रिविध ते कारगाइके० कार क, रोचक, अने दीपक अथवा उपशमिक, क्षायिक, अने क्षायोपशमिकना नेद थकी पण त्रण प्रकारे जाणवो. अने चउहा इत्यादिक पदोनो अर्थ सुगमछे माटे लख्यो नथी. सम्मंके० आगममां जे प्रकार कह्योछे तेने मूकीने अविपरीत पणे पण स्वमति कल्पितनेदेकरी जाणवुं नही. ॥ ८५६ ॥

एज गाथा हवे विशेषे देखाडेछे. मूलः– एगविहं सम्मरुई, निसग्गनिगमेहिंतं नवे डुविहं ॥ तिविहं तं खइयाई, अहवा विहु कारगाईयं ॥ ८५७ ॥ अर्थः– सम्यक् ज्ञान संशयविपर्ययज्ञानने अनावे तेनुंज तत्वनिश्चय पूर्वक श्रीवीतरागनुं कहे लुं तत्वरूप सर्दहे; ते एकविध सम्यक्त्व कहिये. गुरुना उपदेशविना जेम नारकी प्रमुखने सम्यक्त्व छे; तेम सम्यक्त्व प्राप्त थाय ते निसर्ग जाणवुं. अने गुरुना उ पदेश थकी अथवा प्रतिमादिकना दर्शन थकी जे थाय ते अधिगम सम्यक्त्व जाणवुं. अने तिविहंके० त्रण प्रकारनुं जे क्षायकादिक अथवा कारकादिक तेनुं स्वरूप गाथाये कहेछे. ॥ ८५७ ॥

मूलः– सम्मत्तमीसमिच्छत्त कम्मरकयउ नणंति तं खइयं ॥ मिछत्तखउवसमा खा उवसमं ववइसंति ॥ ८५८ ॥ अर्थः– अनंतानुबंधी चार कषायनो क्षयकरी पछी मिथ्यात्व, मिश्र, अने सम्यक्त्व पुंज लक्षण त्रण प्रकारनां दर्शन मोहनीयकर्म नो सर्वथा क्षय थयाथी क्षायिक सम्यक्त्व तीर्थंकरादिक कहेछे. तेमज मिथ्यात्व मोहनीय कर्म उदय आव्यो ते विपाकोदय वेदि खपाव्यो; अने जे उदय नथी आव्यो, हजी सत्तामांछे तेने उपशमाव्यो. मिथ्यात्व मिश्र आश्रयी विष्कंनोदय. शुद्ध पुंज आश्रयी अपनीत मिथ्यात्व स्वनाव ते बीजुं क्षयोपशम सम्यक्त्व करि ये. एरीते ववइसंतिके० गीतार्थ कहेछे. ॥ ८५८ ॥

हवे उपशमिक सम्यक्त्व कहेछे. मूलः–मिछत्तस्सउवसमा, उवसमं तं नणंति समयन्नू ॥ तं उवसमसेढीए, आइमसम्मत्तलानेवा ॥ ८५९ ॥ अर्थः– मिथ्यात्व

मोहनीयकर्मनुं, विपाके तथा प्रदेशे ज्यां उपशम थयुंछे तेने उपशमिक सम्यक्त्व समयन्नूके० सिद्धांतना जाण पुरुष कहेछे. ते उपशमश्रेणी पडिवजे तेवारे सप्तक ने उपशमे थायछे. अथवा आइमके० प्रथम जीव जेवारे सम्यक्त्व लाजेवाके० पामे, ते पामवानो प्रकार लखियेछैये.

अनादि मिथ्यादृष्टि, कोइक जीव एक आयुकर्म वर्जिने शेष सातकर्मनी प्रकृति यथाप्रवृत्ति करणेकरी खपावे, ते ज्यां सुधी जेवारे पल्योपमने असंख्यातमे नागे ऊणी सागरोपम एक कोडाकोडी प्रमाण कर्मस्थिति थाय; तेवारे अपूर्वकरणे करी घन राग द्वेष परिणाम रूप वज्रनीपरे नेदन करवाने अतिदुर्लन, एवी कर्मग्रंथी नेदे. पछी अनिवृत्तिकरणे प्रवेश करे. त्यां समय समय अतिविशुद्ध परिणामे करी कर्म खपावतो उदय आव्युंछे जे मिथ्यात्व; तेने वेदे, अने अनुदीर्ण जे छे ते उपशम लक्षण अंतर मुहूर्त्त कालमान अंतर करण करे ते आवीरीते.

अंतर करण स्थितिथकी ते कर्म दलिक लेइने पहेली अने बीजी स्थितिनेविषे प्रक्षेपे, ते त्यांसुधी; ज्यांसुधी समय समय अंतर करणना दलिक अंतर मुहूर्त्तकाले समस्त क्षपावी अनिवृत्तिकरणने विषे वासित अने उदीरणने मिथ्यात्व अनुनव थकी खपाव्यो, अने अनुदीरण ते विशुद्ध परिणामना विशेषथकी विष्कंनतोदय ऊखर देश समान मिथ्यात्व विवर पामी उपशम सम्यक्त्व लहे. एम इहां थोडुंज लख्युंछे. विशेष विस्तार, वृत्तिथकी जाणवो. ॥ ९५९ ॥

हवे कारकादिक त्रण सम्यक्त्व कहेछे. मूलः— विहियाणुठाणंपुण, कारगमिहरोयगंतु सद्दहणं ॥ मिछद्दिठीदीवइ, जं तत्तेदीवगंतंतु ॥ ९६० ॥ अर्थः—जेवी रीते आगममांहे अनुष्ठान कह्युंछे; तेवीरीतेज शक्तिने अणगोपवतो थको जे अनुष्ठान करे तो, ते कारक सम्यक्त्व साधुने थाय. अने बीजुं जे सर्द्दहणारूप ते रोचक सम्यक्त्व श्रेणीकादिकनीपरे जाणवुं. तथा मिछद्दिठीके० पोते मिथ्यादृष्टिवंत अनव्य अथवा दुर्नव्य छतो पण अंगारमर्दकादिकाचार्यनीपरे धर्मोपदेशे करी बीजाने जिनोक्त तत्व दीपावे, तेथी ते सम्यक्त्व पमाडवानुं कारण थाय, तेथी कारणे कार्यनो उपचार करिये. आयुर्घृतं एवा न्यायथकी मिथ्यादृष्टिवंत छतां पण तेने दीपक सम्यक्त्व कहिये. ॥ ९६० ॥

हवे चार प्रकारनुं सम्यक्त्व कहेछे. मूलः— खइआईसासायण, सहियं तं चउविहंतु विन्नेयं॥तं सम्मत्त ब्भंसे, मिछत्तापत्तिरूवंतु ॥ ९६१ ॥ अर्थः— चार प्रकारना सम्यक्त्वमां तो पूर्वोक्त क्षायिकादिक त्रण सम्यक्त्व जाणवां. तेने चोथो सास्वाद

ने सहित करिये तेवारे चार थाय; परंतु ते सम्यक्त्व जेवारे अंतरकरणे उपशमिक सम्यक्त्वथकी पडेछे; अने हजी मिथ्यात्व पाम्योनथी, त्यांसुधीमां जघन्यथी तो एक समय अने उत्कृष्टो छ आवलि प्रमाण सास्वादन सम्यक्त्व कहिये. पछी ते जीव मिथ्यात्वे जाय. तेमाटे ज्यांसुधी मिथ्यात्व पाम्यो नथी, त्यांसुधी जघन्ये मिथ्यात्वनी आपत्तिके० पामवुं तद्रूप ए थायछे. ॥ ९६१ ॥

हवे पांचविध सम्यक्त्व कहेछे.मूलः– वेययसंमत्तं पुण, एयंचिय पंचहा विणिदिट्ठं ॥ सम्मत्तचरमपोग्गल, वेयणकाले तयं होइ ॥ ९६२ अर्थः– पूर्वोक्त चार सम्यक्त्व, तेमां वेदक सम्यक्त्वनुं उमेरण कस्याथकी पांच प्रकारनुं सम्यक्त्व थायछे; ते वेदक सम्यक्त्व. ते सम्यक्त्वनुं पुंज तेनुं चरमके० छेहेलुं पुद्गल वेदे, तेवारे थाय. ते आवीरीते छे; जे क्षपकश्रेणी पडिवज्याने अनंतानुबंधीनी चोकडी तथा मिथ्यात्व ने मिश्र पुंज खपावीने सम्यक्त्वना पुंजना पुद्गल उदीरी उदीरीने अनुभवे तेनिर्जरावतो छेहेले जे सम्यक्त्वना पुद्गल वेदे, तेवारे वेदक सम्यक्त्व कहिये.

इहां कोइ केहेशे के क्षायोपशमे अने वेदके पण सम्यक्त्वना पुद्गल वेदे तो एमां शुं विशेषछे? तेनो उत्तर आमछे के, क्षायोपशमे समस्त काल सम्यक्त्व पुद्गल वेदे अने वेदक सम्यक्त्वतो चरमके० छेला सम्यक्त्व पुद्गल वेदे; पण परमार्थे तो क्षायोपशमिकेज छे. चरम पुद्गलनो ग्रास छे, ने शेष पुद्गलनो क्षयछे. चरमग्रास वर्त्तिने तो मिथ्यात्वभावनुं अपगम एवा उपशमनो सद्भावछे. ॥ ९६२ ॥

हवे दश प्रकारनुं सम्यक्त्व कहेछेः–मूलः–एयं चिय पंचविहं, निस्सग्गा भिगमभेयउ दसहा ॥ अहवा निसग्गरुई, इच्चाइजमागमेभणियं ॥ ९६३ ॥ अर्थः– एज पूर्वोक्त पांच भेद जे कह्या, तेने एकेकना एक निसर्ग, अने बीजो अभिगम एवा बे बे भेदे करतां दश प्रकार थायछे. अथवा निसर्ग रुचि, उपदेश रुचि, इत्यादिक दश प्रकारनुं सम्यक्त्व जे आगम पन्नवणा प्रमुखनेविषे कह्युंछे तेज देखाडेछे.

मूलः– निसग्गुवएसरुई, आणारुइ सुत्त बीय रुइमेव॥अभिगम विञ्चाररुई, किरिया संखेव धम्मरुई ॥ ९६४ ॥ अर्थः– इहां रुचि शब्द सर्वत्र जोडवो. तेमां प्रथम निसर्ग, ते स्वभावे रुचि एटले श्रीजिनोक्त तत्वनेविषे जे अभिलाष ते निसर्ग रुचि जाणवी. बीजी, गुरुप्रमुखनो जे उपदेश, तेनाथी जेने रुचि होय ते उपदेश रुचि जाणवी. त्रीजी, आज्ञा ते सर्वज्ञना वचन उपर रुचि ते आज्ञारुचि. चोथी सूत्र ते आचारांगादिक अंग प्रविष्ट अने अंगबाह्य ते आवश्यक दशवैकालिकादिक तेना उपर रुचि ते सूत्ररुचि. पांचमी, बीजनी परे जे होय ते बीज, एटले एकवचन ते

अनेक अर्थनो उपजावणहार थाय ते बीजरुचि. छठी अभिगम विशिष्ट परिज्ञान, त्यां जे रुचि ते अभिगमरुचि. सातमी, समस्त द्वादशांगीने नयेकरी विचारी; तेथ की उपनी जे रुचि ते विस्ताररुचि. आठमी, संयमनुं जे अनुष्ठान, त्यां जे रुचि ते क्रियारुचि. नवमी, संक्षेपनेविषे रुचि, पण विस्तारार्थ न जाणे ते संक्षेपरुचि जा णवी. दशमी, श्रुतधर्म उपर रुचि ते धर्मरुची. ए दश रुचि, संक्षेपथी शब्दार्थ मात्रेकही.

हवे ए दश रुचिने विस्तारेकरी सूत्रकार कहेछे. मूलः–जो जिणदिठे नावे, चउ व्वि हे सद्दहाइ सयमेव ॥ एमेवनन्नहत्तिय, निस्सग्गरुइत्ति नायव्वो ॥ ए६५ ॥ अर्थः– जे कोइ जिनेश्वरना दीठेला नाव जे जीवादिक पदार्थ तेने द्रव्य, क्षेत्र, काल अ ने नावना नेदथकी चारप्रकारे अथवा नाम, स्थापना, द्रव्य, अने नाव ए चार प्रकारे ते कोइना उपदेशविना सयमेवके० पोतानी मेलेज जातिस्मरणेकरी अथवा पोतानी बुद्धियेकरी श्रीनगवंते दीठा जे नाव; ते तेमज छे, पण अन्यथा नथी. एवी रीते सर्द्दहे. ते प्रथम निसर्गरुचि जाणवी. ॥ ए६५ ॥

मूलः–एए चेवउ नावे, उवइठे जो परेण सद्दहइ ॥ छउमछेण जिणेणव, उवएसरु इत्ति नायव्वो ॥ ए६६ ॥ अर्थः– एज पूर्वोक्त चउद जीवादिक पदार्थ तेने छद्म स्थ अथवा केवलीनगवानना कहेला उपदेश थकी सर्द्दहे, ते बीजी उपदेशरु चि जाणवी. इहां सूत्रमां प्रथम छद्मस्थ कह्युं. तेनुं कारण के केवलीपण प्रथम छद्मस्थ होय, पछी केवली थाय. तेथी प्रथम छद्मस्थ कह्युं. अथवा उपदेशना आ पनार छद्मस्थ घणा होय, तेथी प्रथम तेनो उपदेश सांनलीने सर्द्दहे. ॥ ए६६ ॥

मूलः–रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होइ॥आणाएरोयंतो, सो खलु आणारुईनाम ॥ ए६७ ॥ अर्थः–राग, द्वेष, मोह, शेष मोहनीयनी प्रकृति अज्ञा न मिथ्यात्वरूप ते जेने देशथकी अपगतके० गया होय पण सर्वथा गया न हो य; एवो जे होय ते श्रीजिनेश्वरनी आज्ञाये कुग्रहना अनावथकी जिनोक्त वचन सत्यकरी माने. ते त्रीजी आज्ञारुचि जाणवी. ॥ ए६७ ॥

मूलः–जो सुत्तमहिज्जंतो सुएणमोगाहईउ सम्मत्तं॥अंगेण बाहिरेणय, सोसुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ए६८॥ अर्थः-जेप्राणी आचारांगादिक अंगप्रविष्टश्रुत अने अवश्यकादिक अंगबाह्यश्रुतने जाणता थका ते श्रुतेकरी सम्यक्त्व पामे. ते चोथी सूत्ररुचि जाणवी.

मूलः– एगपएणेगाई, पयाइ जो पसरईउ सम्मत्ते ॥ उदइव्व तिल्लबिंदू, सो बीयरु इत्ति नायव्वो ॥ ए६ए ॥ अर्थः– जे जीवादिक एक पद जाणीने तेज जाणेला पदेकरी अनेकपद जेने सम्यक्त्वने विषे पसरे. जेम उदकने विषे तेलनुं बिंदु पस

रे तेनीपरें प्रसारने पामे, ते पांचमी बीजरुचि सम्यक्त्वनेविषे जाणवी. ॥८६८॥

मूलः— सो होइ अभिगमरुई सुअनाणं जस्स अब्बउ दिट्ठं ॥ एक्कारस अंगाइं ॥ पयन्नगा दिट्ठि वाउय ॥ ८७० ॥ अर्थः— जेणे श्रुतज्ञानने अर्थ थकी दृष्टके० जाण्युंछे, एटले अग्यार अंगरूप तथा पयन्ना उतराध्ययनादिक दृष्टिवाद. इहां प्रकरण ते सूत्रथकी जुदां कह्यां ते प्रधानपणु जणाववाने अर्थे कह्यां. वली च शब्दथकी उववाइ प्रमुख उपांग, तेनो पण अर्थ जाण्योछे. ते छठी अभिगमरुचि थाय.

मूलः— दव्वाण सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा ॥ सव्वाहि नयविहीहिं, विच्छाररुई मुणेयव्वो॥८७१॥अर्थः— द्रव्य जे धर्मास्तिकायादिक छ, तेना समस्त पर्यायादिक जे भाव, तेनो प्रत्यक्षादिक समस्त प्रमाणे करीने जेने उपलब्ध के० जाणपणुं थयुंछे, तथा सर्व नयोनुं विधिये करीने जाणपणुं थयुंछे, ते विस्ताररुचि जाणवी.

मूलः—नाणे दंसणचरणे, तवविणए सव्वसमिइगुत्तीसु ॥ जो किरियाभावरुई, सो खलु किरियारुईनाम ॥ ८७२ ॥ अर्थः— ज्ञान, दर्शन, चारित्रनेविषे. अने तप, ते बार भेदनुं, विनय ते आचार्यादिक संबंधी, समिति ते इर्यादिक पांच, गुप्ति ते मनोगुप्त्यादिक त्रण, तेने विषे जे किरिया, त्यां जेनी भावथी रुचिछे; ते खलु के० निश्चये क्रियारुचि नाम जाणवुं. गाथामां चारित्र थकी तप प्रमुख जुदा आप्या. ते विशेषे ए मोक्षांगछे एवुं जणाववाने अर्थे आप्याछे. ॥ ८७२ ॥

मूलः— अणभिग्गहियकुदिट्ठी, संखेवरुइत्ति होइ नायव्वो ॥ अविसारउपवयणे, अणभिग्गहिउय सेसेसु ॥ ८७३ ॥ अर्थः— जेणे कुदृष्टि के० सौगतादिकनी दृष्टि ते अनभिगृहीत एटले अंगीकार करी नथी, तथापि श्रीवीतरागना प्रवचनने विषे अविशारद एटले अजाणछे, किंतु ग्राह्यो नथी. तेमज शेष कपिलादिकप्रणीत जे प्रवचन, तेनेविषे पण अनभिगृहीत छे. शेष ए बोलथकी सर्व दर्शनांतरनुं ज्ञान निषेध्युं. अभिके० अभिमुखपणे उपादेयपणे जे ग्रहणके० ज्ञान, तेज्यां नथी, तेने अनभिगृहीत कहिये. एम कुदृष्टिरूप समस्त दर्शनांतरना अंगीकारने जे चिलाती पुत्रनी पेरे निषेध्यो ए संक्षेपरुचि जाणवी. ॥ ८७३ ॥

मूलः—जो अत्थिकाय धम्मं सुअधम्मं खलु चरित्त धम्मं च ॥ सद्दहइ जिणाभिहियं, सोधम्मरुइत्ति नायव्वो ॥८७४॥ अर्थः—जे जीव अस्तिकायादिकनो धर्म जे गति उपष्टंभादिक, अने श्रुतधर्म जे अंगप्रविष्टादिक आगमनुं स्वरूप, तेमज चारित्रधर्म जे सामायिकादिक जे जिणके० श्रीतीर्थंकरदेवनो अभिहित के० कहेलो तेने सर्दहे, सत्यकरी माने, ते दशमी धर्मरुचि जाणवी. ए दशबोल जे कह्या ते शिष्यना परि

ज्ञानने अर्थे नेदेकरी देखाड्या. अन्यथा निसर्गरुचि, उपदेशरुचि, अने अधिगम रुचिने विषे ए सर्वबोलनो समावेश थायछे ॥ ९७४ ॥

हवे पूर्वोक्त क्षायिकादिक त्रण सम्यक्त्व, ते इहां प्रसंगथकी नरकादिक जीवोने विषे कहेछे. मूलः—आइपुढवीसु तीसं, खयउवसमवेयगं च सम्मत्तं ॥ वेमाणिय देवाणं पणिंदितिरिआण एमेव ॥ ९७५ ॥ सेसाण नारयाणं, तिरयछीणंच तिविह देवाणं ॥ नत्थिहु खइयं सम्मं, अन्नेसिं चेव जीवाणं ॥ ९७६ ॥ अर्थः— आदिके० पहेली रत्नप्रनादिक त्रण पृथ्वीमां क्षायिक, उपशमिक, अने वेदक ए त्रण सम्यक्त्व थाय. जे शुद्धसम्यक्त्व पुंजना पुद्गलने वेदे ते वेदक सम्यक्त्व जाणवो. अने तेनेज क्षायोपशमिक कहिये, अने उपशमिक क्षायिके उपशमिकत्वने विषे पुद्गल वेदवानो सर्वथा अनावछे. तेमाटे वली त्रण पृथ्वीने विषे क्षायिक, उपशमिक अने क्षायोपशमिक ए त्रणज संनवे. एनो संनव जेरीते होय तेरीते कहेछे.

जे नारकी अनादि मिथ्यादृष्टि प्रथम सम्यक्त्व पामे तेने अंतकरण काले अंतरमुहूर्त्तसुधी उपशमिक सम्यक्त्व होय. पछी सम्यक्त्वना शुद्धपुंज संबंधी पुद्गल वेदतो छतो क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पामे. अथवा मनुष्य तिर्यंच क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि नारकीमां उपजे तेने पारनाविक क्षायोपशमिकना लानथकी विराधित सम्यक्दृष्टि, छठी नरक पृथ्वीये ग्रहण करेला सम्यक्त्वे जाय. ए सिद्धांतिकनो मतछे.

अने कर्मग्रंथिकनो तो आवीरीते मत छे के, वैमानिक देव थकी अनेरा मनुष्य तिर्यंच तेज क्षायोपशमिक सम्यक्त्वे उपजे. परंतु ग्रहण करेला सम्यक्त्वे न उपजे. वली कोइक मनुष्य, नरक योग्य आयुष्य बांधी पछी क्षपकश्रेणी मांमे, ते बद्धायुष्कपणा माटे पुरी करे नही; मात्र दर्शन सप्तक खपावी क्षायिक सम्यक्त्व पामे; ते हवे मनुष्यना आयुष्य त्रूटवाथी मरण पामीने नरकमां उपजे. तेवारे प्रथमनी त्रण नरक पृथ्वीये क्षायिक सम्यक्त्व लाने, ते ताद्भविक मनुष्यनेज होय. मनुष्यना नवमां तेनो प्रारंन होय. जेम नारकीने तेम वैमानिक देवताने अने असंख्यात वर्षना आयुष्य वाला तिर्यंचने पूर्वोक्त त्रण सम्यक्त्व जाणवां.

त्यां वैमानिक देवोने उपशमिक अने क्षायिक ते नारकीनीपरे क्षायोपशमिक अने उपशमिक सम्यक्त्व पछी थाय. अथवा तिर्यंच मनुष्य क्षायोपशमिक सम्यक्दृष्टि थकां जो वैमानिकमां उपजे तो तेने पारनविक होय. मनुष्य बे प्रकारनां, एक संख्यातावर्षनां आयुष्यवालां अने बीजां असंख्यातावर्षनां आयुष्यवा

लां, तेमां संख्यातावर्षने आयुष्ये मनुष्यने उपशमिक नामा प्रथम सम्यक्त्वने लाभे होय. अथवा उपशम श्रेणीये होय. पछी क्षयोपशमिक ताद्भविक होय.

क्षायोपशमिक सम्यकदृष्टि देवता मनुष्यमां उपजे; तेवारे पारभविक क्षायोपशम होय. क्षपकश्रेणिये ताद्भविक क्षायिक होय. अने देवता तथा नारकी क्षायिकसम्यक्दृष्टि मनुष्यमां उपजे, तेवारे पारभविक क्षायक होय, अने असंख्याता वर्ष आयुष्क मनुष्यने उपशमिक क्षायक, ते देव तथा नारकीनी परे जाणवुं. अने क्षायोपशमिक तेवार पछी होय. ते ताद्भविक जाणवो. अने तिर्यंच तथा मनुष्य क्षायोपशमिक सम्यक् सहित वैमानिकमां जाय पण अन्य स्थानके न जाय. अने जेणे मिथ्यादृष्टि थकी आयुष्य बांध्युंछे; पछी क्षायोपशमिक सम्यक्त्व पाम्यो ते एमांज उपजे, तेवारे अवश्य मरण समये मिथ्यात्वे जइने उपजे. पारभविक क्षायोपशमिक एमां न उपजे. अने क्षायोपशमे सहित देवतामां उपजे. ए कार्मग्रंथिकनुं मत कह्युं.

सिद्धांतिक मते क्षायोपशम सहित पूर्वबद्धायुष्क थकाज क्षायोपशमिक लीधे एमां उपजे; तेवारे पारभविक पण लाभे. असंख्यातावर्षायुष्क तिर्यंचने त्रणे सम्यक्त्व होय. असंख्याता वर्षायुष्क मनुष्यनीपरे जाणवो. सेसाणंके० शेष त्रण पृथ्वी विना बाकीना नारकीनो असंख्यातावर्षायुष्क संज्ञी पंचेंद्रिय तिर्यंचने तेनी स्त्रीने, तथा तिविहके० त्रण प्रकारना देव जे भवनपति व्यंतर तथा ज्योतषी तेने नविके० नहोय, क्षायिक सम्यक्त्व एने ताद्भविक नहोय. केमके संख्येय वर्षायुष्क मनुष्यनेज तेनो प्रारंभ होय; अने पारभविकपणे नहोय. क्षायक सम्यक्दृष्टि एमां नउपजे. पण उपशमिक क्षायोपशमिक उपजे. अन्य जीवोने सम्यक्त्व नहोय.

एकेंद्रियादिक चार तथा असंज्ञी पंचेंद्री एमने ताद्भविक अने पारभविक ए बे मांहेलो कोइ न होय; अने सास्वादन सम्यक्त्व वली बादर पृथ्वी, आप, वनस्पति, बेंद्रि, तेंद्रि, चउरेंद्रि, असंज्ञीपंचेंद्रि, संज्ञीपंचेंद्रि एटलाने अपर्याप्तावस्थाये पारभविक होय. पर्याप्ति संज्ञीपंचेंद्रिने ताद्भविक पण लाभे. सूक्ष्मएकेंद्रिय अने बादर तेज, वायुमांहे सम्यक्त्वनो लेश जेने छे; तेने उपजवानो अभावछे. तेमाटे एमां सास्वादन न थाय. ए कर्मग्रंथिकनुं मत जाणवुं. अने सिद्धांतिक मतेतो एकेंद्रिय सर्वमांहे सम्यक्त्व कहे नही. जे कारणे श्रीपन्नवणा उपांगमां कह्युंछे. पुढविकाईयाणंपुछागोयमा पुढविक्काइया नो समदिठिनो सम्मामिछा दिठिमिछा दिठिविएवं जाववणस्सइकाइया इतिएकविंशति गाथार्थ. ॥ ९७५ ॥ ९७६ ॥

अवतरणः– कुल कोडीणं संखा जीवाणंति एटले जीवोनी कुलकोटीनी सं ख्या तेनुं एकशोने पचासमुं द्वार कहेछेः मूलः– बारस सत्तय तिन्निय, सत्तय कुलकोडिसय सहस्साइं ॥ नेया पुढवि दगा गिणि, वाऊणं चेव परिसंखा॥८७७॥ कुलकोडिसयसहस्सा, सत्त छयं नवय अठ्ठवीसंच ॥ बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदि य हरियकायाणं ॥ ८७८ ॥ अर्थः– बारलाख कुलकोटी पृथ्वीकायमांहे जाणवी. सातलाख कुलकोटी अपकायमांहे जाणवी. एरीते सतसहस्त्रलाख सर्वत्र जोडीये. तेवारे त्रणलाख तेउकायमांहे, सातलाख वायुकायमांहे, कुलकोडीना सतसहस्त्र लाख ते अनुक्रमे सातलाख बेंद्रियमांहे, आठलाख तेंद्रियमांहे, नवलाख चउरेंद्रि मांहे अने अठावीस लाख सर्वे वनस्पतिकायमांहे जाणवी. ॥ ८७७ ॥ ८७८ ॥

मूलः– अद्धत्तेरस बारस, दस दस नवचेव सय सहस्साइं ॥ जलचर पक्खि चउप्पय, उर भुय सप्पाण परिसंखा ॥८७९॥ अर्थः–साडाबारलाख कुल कोडी जलचरमां, बारलाख कोडी खेचर पक्षीने विषे जाणवी, दशलाख चतुष्पद एटले हस्ति, तथा घोडा प्रमुखमांहे जाणवी, दशलाख उरपरिसर्प्प ते परड कालंदर प्रमुखमां जाणवी तथा नवलाख भुजपरिसर्प्प गोह नोलियादिक मांहे जाणवी. ए रीते कुलकोडी लाख ए ब्रे बोल सर्वत्र केहेवा. ॥ ८७९ ॥

मूलः– छव्वीसा पणवीसा, सुर नेरइयाण सयसहस्साइं ॥ बारसयसयसहस्सा, कुलकोडीणं मणुस्साणं ॥८८०॥ अर्थः– छवीसलाख देवतामां, पचीसलाख नार कीमां अने बारलाख कुलकोडी मनुष्यमां जाणवी. ॥ ८८० ॥

हवे ए सर्वमली जेटला कुलकोडीना लाख थाय ते कहेछे. मूलः– एगाकोडा कोडी, सत्ताणउई नवेसयसहस्सा ॥ पन्नासं च सहस्सा, कुलकोडीणं मुणेयव्वा ॥ ॥ ८८१ ॥ अर्थः– एककोडाकोडी सत्ताणुं सतसहस्त्र पचासहजार. सर्वे म ली एटली कुलकोडी थाय. एकक्रोडने साडीसताणुंलाख कुलकोडीनी संख्या थाय. इतिगाथा पंचकार्थ. ॥ ८८१ ॥

अवतरणः– हवे जोणिलक्खाचुलसीइत्ति एटले चोरासी लाख योनीनुं एकशो एकावनमुं द्वार कहेछे. मूलः– पुढविदग अगणि मारुअ, एक्केक्के सत्तजोणि लक्खा उ ॥ वणपत्तेय अणंते, दस चउदस जोणिलक्खाउ ॥ ८८२ ॥ अर्थः– पृथ्वी, आ प, तेज, वायु ए चारमांहे एकेकने सात सात लाख योनिछे. अने प्रत्येक वनस्प तिमांहे दशलाख योनिछे. अनंत एटले साधारण वनस्पतिमांहे चउदलाख योनिछे.

मूलः– विगलिंदिएसु दोदो, चउरो चउरोय नारय सुरेसु ॥ तिरिएसु हुंति चउरो,

चउदसलरकाउ मणुएसुं ॥ एण्३ ॥ अर्थः– विकलेंद्रिय जे बेंद्रियादिक तेमांहे प्रत्येके बे बे लाख योनिछे. अने चारलाख नारकोने, तथा चारलाख देवोने, तथा शेष तिर्यंचमांहे चारलाख योनी जाणवी. वली मनुष्यनेविषे चउदलाख योनी जाणवी. योनी शब्दनो ए अर्थछे के, यु मिश्रणे यु धातु मिश्रणे अर्थ; तेथी एवो अर्थ थायछेके, जीव नवांतरे संक्रमे तेवारे तेजस कार्मण शरीरवंत थको औदारिक शरीर योग्य पुजलनी साथे मिश्र थाय. ते योनी कहिये. ॥ एण्३ ॥

इहां कोई कहेशे के अनंताजीवोने उत्पत्तिस्थानक पण अनंता जोइये. अथवा जीवोने सामान्य आधारनूत जे असंख्यात प्रदेशात्मक लोकछे; तो असंख्याता उत्पत्ति स्थानक थाय, एमपण न कहेवुं. केमके केवलीनगवान केवलदृष्टे करी घणा स्थानक पण वर्णादिक धर्मे सरखा जाणी तेने एक योनी कहेछे. ते कारण माटे अनंताजीवोनी पण चउरासी लाखज योनी जाणवी. तेज गाथाये करी कहेछे.

मूलः– समवन्नाइ समेया, बहवोविय जोणि लरक नेयाउ ॥ सामन्ना घिप्पंति हु, एक्कग जोणीय गहणेण ॥ एण्४ ॥ अर्थः– समके० सरखे वर्णे प्रमुखेकरी एटले वर्ण, गंध, रस स्पर्शादिकना समपणाथकी समेयाके० सहित एवा बहवोविके० घणाजे योनीना लाख तेना नेदथकी सामान्यपणे घिप्पंतिके० घणा सरिखे वर्णादिके पण एक योनीनुं ग्रहण करी लइये, योनी ते उत्पत्तिस्थानक समजवुं. जेम वृश्चिकादिकने गोबर; तेम ए जाणवुं. अने एक योनीनेविषे घणां कुल होय. एवा विशेषपणाने लीधे योनी अने कुल ए बे जूदां जाणवां. इति गाथात्रयार्थ.एण्४

अवतरणः– तिक्कालाई वितह्न विवरणंति एटले त्रैकालि इत्यादिक वृत्तिना अर्थनो विवरोकरवो एवुं एकशोने बावनमुं द्वार कहेछे. मूलः–स्रग्धरा वृत्तं. त्रैकाल्यं द्रव्यषट्कंनवपदसहितं जीवषट्कायलेश्या, पंचान्ये चास्तिकाया व्रतसमितिगतिज्ञानचारित्रनेदाः ॥ इत्येते मोक्षमूलं त्रिनुवनमहितैः प्रोक्तमर्हद्भिरीशैः, प्रत्येति श्रद्दधाति स्पृशति चमतिमान् यः सवै शुद्धदृष्टिः ॥एण्५॥ अर्थः–त्रणकाल ते अतीतादिक, द्रव्यषट्क ते धर्मास्तिकायादिक, नवपदते जीवादिक नवतत्व करी सहित, एकेंद्रियादिक पांच अनिंद्रिय नेला करवा थकी जीव षट्क थाय, एमज पृथ्व्यादिक काय छ, लेश्या ते कृष्णादिक छ, पांच अनेरा धर्मास्तिकायादिक अस्तिकाय जाणवा. वली व्रतते प्राणातिपात विरमणादिक पांच, समिति ते इर्यादिक पांच, गतिते नारकादिक चार, अने तेनी साथे सिद्धमोक्ष नेलिये तेवारे पांच थाय, ज्ञान ते मत्यादिक पांच, चारित्र ते सामायिकादिक पांच, ए प्रत्येके पांच पांच नेद इति. एणे सहित

करी, पूर्वोक्त त्रणकालादिक पदार्थ मोक्षनुं मूल ते त्रिभुवन केο त्रणलोकने म हित केο पूजनिक एवा श्रीअरिहंत तीर्थंकर ते केवाले? स्वनाविक कर्मक्षय सुरक्त एवा अतिशये आठप्रातिहार्ये विराजमान, एवा ईशैः केο आश्चर्यवंते कह्युंले. ते कारणे एने प्रत्येति केο स्वरूपथकी जाणे, जाणीने पढी श्रद्धातिकेο सर्दहे. पोताना आत्माने रुचावे. तेनुं स्ष्टशतिकेο सम्यक्प्रकारे सेवन करे, ते जीव स्फुटकेο प्रगटपणे शुद्धदृष्टि मिथ्यात्वमूलथी रहित पणाथकी शुद्ध सम्यक्त्ववंत जाणवो.

हवे एज सूत्रकार वखाणे ले. मूलः– एयस्स विवरण मिणं, तिक्काल मईय व ट्टमाणेहिं ॥ होइ नविस्स जुएहिं, दवछक्कं पुणो एयं ॥ ए७६ ॥ अर्थः– ए वृत्तिनुं विवरणकेο व्याख्यान करवुं; ते आवी रीते, त्रणकाल, तेमां अतीत जे थई गयो, वर्त्तते वर्त्तमान, होइकेο थाय, अने त्रीजो नविष्य ते थाशे, तेणेकरी युक्त ए काल त्रिक अने द्रव्यनुं षट्क. वली तेज हवे आगली गाथाये कहेले. ॥ ए७६ ॥

मूलः– धम्मत्थिकायदवं, दवमह म्मत्थिकायनामंच ॥ आगास काल पोग्गल, जीवादवस्सरूवंच ॥ ए७७ ॥ अर्थः– जीव अने पुजल जे पोतानी गतिक्रिया परिणीत ले, तेने तेज स्वनाव धरे, तेथी धर्म कहिये. अने अस्ति शब्दे प्रदेश, तेनो काय जे संघात, ते धर्मास्तिकाय द्रव्य कहिये; तेमज ए जीव तथा अजीवने विपरीत जे स्थिति क्रियापरिणीत द्रव्य ले, तेने स्थिति आपनार जे द्रव्य ते अधर्मास्तिकाय कहिये. त्रीजुं, समस्त लोकालोक व्यापी अनंत प्रदेशात्मक अमूर्त्तद्रव्यविशेष आकाश द्रव्य जाणवुं. चोथुं, समस्त वस्तुना समूहनुं कलन केο मान जेथकी थायले, ते कालद्रव्य जाणवुं. अथवा कलिये समय आवलिका मुहूर्त्तादिक प्रकारे करी सर्व सचेतन अने अचेतन वस्तु जेणेकरीने जाणिये ते काल कहिये. पांचमुं जे पूराय अने गलि जाय ते पुजल जाणवुं. लहो, जे जीव्या, जीवेले अने जीवशे; ते जीव जाणवो. तेज अस्तिकाय ते जीवास्तिकाय जाणवो. ॥ ए७७ ॥

इहां ए नावले के, जो धर्मास्तिकाय द्रव्य न होय तो; जीव पुजलने गतिपण नहोय, अने जो अधर्मास्तिकाय द्रव्य न होय तो जीव पुजलने स्थितिपण न होय तथा जो आकाशास्तिकाय द्रव्य न होय तो, जीवादिपदार्थोने आधार पण न होय. वली जो कालद्रव्य न होयतो बकुल, अशोक चंपकादिकने फूल फल पण न होय; तथा जो पुजलद्रव्य न होय तो घटपटादिकनी उत्पत्तिपण न होय, अने जो जीव द्रव्य न होय तो प्राणी प्राणिमात्रप्रत्ये चैतन्यपणुं न होय, ए ल द्रव्यनुं स्वरूप कह्युं.

हवे नवपदनुं स्वरूप कहेले. मूलः– जीवाजीवा पुन्नं पावासव संवरोय निज्जर

णा ॥ बंधो मुक्को इमाइ, नवपयाइं जिणमयंमि ॥ ८८८ ॥ अर्थः- जे सुखदुःख नें जाणे ते जीव; बीजुं तेथकी विपरीत ते धर्मास्तिकायादिक अजीव जाणवो. त्रीजुं शुभप्रकृतिरूप कर्मते पुण्य, चोथुं तेथकी विपरीत कर्म ते पाप जाणवुं. पांचमुं जेणेकरी शुभाशुभ कर्मरूप जल, ते जीवरूप सरोवरमां प्राप्त थाय; ते आश्रव जाणवो. छठुं गुप्त्यादिके करी ते पूर्वोक्त आश्रवनुं जे रुंधन करवुं ते संवर कहियेः सातमुं विपाके अथवा तप प्रमुखेकरी, देशथकी जे कर्मोने खपाविये, ते निर्ज्जरा जाणवुं. आठमुं कर्मोने जीवनीसाथे एकमेक करिये ते बंध जाणवुं. नवमुं समस्त कर्मोनो क्षयकरीने ज्यां जीव पोताना स्वरूपमां स्थित थाय, ते मोक्ष कहिये. एरीते ए नवपद श्रीजिनशासनने विषे कह्याछे.

इहां आश्रव, बंध, पुण्य अने पाप ए चार ते मुख्य संसारनां कारणछे, तेने हेय पणे जाणवां. अने संवर, तथा निर्ज्जरा एबेते मुख्य मोक्षनां कारणछे अने मोक्ष ते मुख्यपणे साध्यछे, तेमाटे ए त्रण उपादेय जाणवां.

एम शिष्यने हेय उपादेय जणाववाने अर्थे नवपदार्थ कह्या. अन्यथा संक्षेप अपेक्षायेतो जीवाजीवने विषे पुण्यपापादिकनो अंतर भाव संभवे. छित्व संख्याये श्री स्थानांगने विषे कह्युंछे. "उक्तंच जंहुत्ति वणं लोए, तं सवं दुप्पडोयारं" तंजहाजीवाचेव अजीवाचेवत्ति एना विस्तारे उत्तरोत्तर भेद करे तो अनंता थाय.

हवे जीव अजीवने विषे पुण्य पापनुं शी रीते अंतरभवे? ते कहेछे. पुण्यपाप रूप कर्मना जे बंधछे ते पुज्जल परिणामछे. अने पुज्जल अजीवछे ने आश्रव मिथ्या दर्शनरूप ते जीवनुं परिणामछे. वली संवरपण आश्रव निरोध लक्षण देश अने सर्वना भेदेकरी आत्मानुं परिणाम छे. निर्ज्जरा ते कर्मनो परिसाट एटले जे जीव पोतानी शक्तियेकरी कर्म दूर करे ते जाणवुं. तथा मोक्षपण समस्त कर्मरहित, तेपण आत्मानेज जाणवुं. वली अन्यत्र स्थानके पुण्य अने पाप ए बे बंधने विषे अंतर भवेछे तेवारे सात पदार्थ थायछे. ॥ ८८८ ॥

हवे जीव षट्क कहेछे. मूलः- जीव छक्कं इग बिति चउ पंचिंदिय अणिंदियसरूवं छकाया पुढविजला निल वाउ वणस्सइ तसेहिं ॥ ८८९ ॥ अर्थः- एकेंद्रियादिक पांच छठो अनेंद्रियजे समस्त कर्मेकरी रहित, वली शरीर अने इंद्रियादिक जेने नथी एवो सिद्धरूप जाणवो; ए जीव षट्क कह्यो. अने छकाय ते पृथ्वीकाय आदि देइने त्रसकाय पर्यंत थायछे ते जाणवी. ॥ ८८९ ॥

हवे लेश्या छ कहेछे. मूलः- छल्लेसाउ कन्हा, नीला काऊय तेयपम्हसिया ॥

कालविहीणं दवं, ठक्कं इह अत्थिकायाउ॥ ए००॥अर्थः-जेणेकरी जीवने अने कर्मने मांहोमांहे आश्लेशाय तेने लेश्या कहिये; जेम स्फटिकने कृष्णादिक द्रव्य साथें जोडिये तो तेवोज वर्ण देखाय, तेम जीवने पण जाणवुं. अन्य वली कृष्णा दिक द्रव्यने योगांतर्गत द्रव्य कहेछे. एक वली समस्त कर्मनी प्रकृतिनुं निस्पंदरूप क हेछे. वली कोइकतोकार्मण शरीरनी परें जूदा आठकर्मथकी कार्मण वर्गणा थकी नी पन्या.कृष्णादिक द्रव्य, तेने लेश्या शब्दे कहेछे. इहां तत्व केवली जाणे. इहां जीवने कृष्ण परिणामे कृष्णलेश्या जाणवी. एम बीजी नीलादिक लेश्याउ पण जाणवी.

कालविहीणंके० एक कालद्रव्येकरी रहित जे द्रव्यनो षट्क ते इहां अस्तिका य जाणवो. एटले ठ द्रव्यने एक कालद्रव्य रहित करिये, तेवारे पंचास्तिकाय थाय; अने एक कालद्रव्यने अस्तिकाय न कहिये. केमके प्रदेशनो समूह कालनेविषे नथी, जे कारणे कालनो अतीत समयते विनिष्ट, अने अनागत समय ते अनु त्पन्नपणे करीने प्रज्ञापक समय एक होय, एम कहेशोतो शिष्य कहेछे के; आव ली, मुहूर्त्त दिवसादिकनी प्ररूपणा ते मिथ्या थाशे अने आवलिका कहेशो तो असंख्याते समये एक आवलिका थायछे; तेवारे घणा प्रदेशनी उत्पत्ति थाशे तेनो उत्तर आमछेके, यद्यपि ए वात सत्यछे, तथापि आवलिकादिक जे छे, ते व्यवहार नय आश्री कहीछे पण निश्चे नय नथाय. ॥ ए०० ॥

हवे व्रत कहेछे. मूलः- पाणिवह मुसावाए, अदत्त मेहुण परिग्गहेहिं इमं ॥ पंचवयाइं जणिया पंचसमिईउ साहेमि ॥ ए०१ ॥ अर्थः- एक प्राणातिपात बी जुं मृषावाद, त्रीजुं अदत्तादान, चोथुं मैथुन; पांचमुं परिग्रह. ए पांचेने विरमण रूपे ले वां, ए पांच महाव्रत इहां श्री जिनशासनने विषे कह्यांछे. हवे पांच समिति कहुंछुं.

मूलः- इरिया जासा एसण, गहण परिठवण नामिया ताउ ॥ पंच गईउ नारय, तिरिय नर सुर सिद्धिनामाउ॥ए०२॥अर्थः-ईर्याजाषादिक पांच समिति जाणवी.ताउ के० तेनुं स्वरूप व्रत तथा समितिनुं स्वरूप ते पेहेलां पांसठ, ठासठ तथा शडसठमा द्वारमां सविस्तरपणे वखाण्युंछे तेथी इहां नाममात्रकह्युं, अने पांच, जे नारकादिक त्यांगम्यते एटले पोताना कर्मरूपदोरडे खेंचीने,प्राणीने जे स्थले पमाडिये;तेगति जा णवी. ते एक नारकी संबंधीनी, बीजी तिर्यंच संबंधिनी, त्रीजी मनुष्य संबंधीनी, चो थी देवता संबंधीनी, अने पांचमी ज्यां सर्वकर्मनो क्षय थाय ते सिद्धनी गति जाणवी.

ज्ञान पांच कहेछे. मूलः-नाणाइं पंच मइ सुय उवही मण केवलेहिं जणियाइं सामाइय छेय परिहारे सुहुम अहखाय चरणाइं ॥ ए०३ ॥ अर्थः- ज्ञान पांच

ते एक मति, बीजुं श्रुत त्रीजुं अवधि, चोथुं मनपर्यव अने पांचमुं केवलज्ञान तेणे करी नणियाके० कह्याछे चारित्रना नेद ते आवी रीतेछे. प्रथम सामाइयके० समपणु, राग द्वेषना अनावथकी जे समता ते समनावे आयके० जावुंछे ज्यां, ते समाय तेने विषे अथवा तेणेकरी जे निपन्युं ते सामायिक कहिये. अथवा सम जे ज्ञानादिक, तेनो ज्यां आयके० लान छे; ते सामायिक कहिये. यद्यपि ए समस्त चारित्र ते सामायिकज कहिये, तथापि छेदादिक विशेषणे विशेषिये; तेवारे नाना पणु नजे, ते इत्वर ने यावत्कथिकना नेदे करी बे प्रकारे थाय.

तेमां इत्वर ते जे थोडा कालसुधी होय. ते नरत ऐरवतादिक दश खेत्रोमां, प्रथम अने छेला तीर्थंकरना तीर्थमां ज्यांसुधी शिष्यने महाव्रतनुं आरोपण कर्युं न होय त्यांसुधी होय. अने यावत्कथिक ते यावज्जीव सुधीहोय. ते नरत ऐरवतना मध्यम बावीश जिनेश्वरना साधुने जाणवी, कारण, तेने उपस्थापना न थाय.

इहां कोइ पूछेजे, इत्वर सामायकनो पण उच्चारतो यावज्जीवसुधी उच्चरेछे, पछी उपस्थापनाने वखते ते छांमेछे. तेवारे केम प्रतिज्ञानंग न थाय? उत्तर कहेछे. प्रथम कह्युंछे जे समस्त चारित्र, अवशेष सामायिक कहिये. एम जे कोइ चारित्र आगल आगल छे ते विशुद्धरूपछे. तेमाटे पाछल पाछलनुं ते नंग न पामे.

तेम जे पूर्वपर्यायनो छेद करे, अने उपस्थापना महाव्रतनेविषे करे, ते छेदोपस्थापनीय चारित्र बे नेदेछे. एक सातिचार ने बीजुं निरतिचार, तेमां सातिचार ते जे अपराध उपन्याथी मूलगु चारित्र गमावीने नविन व्रत उच्चार कराविये. अने निरतिचारते जे, इत्वर सामायकवंत शिष्यने व्रतनेविषे आरोपण करिये, अथवा तीर्थांतरे संक्रमे. जेम श्री पार्श्वनाथना तीर्थथकी श्रीमहावीरना तीर्थनेविषे आवे तेवारे चतुर्याम धर्मथकी पंचयाम रूप धर्म पडिवजे. तेवारे थाय.

त्रीजुं परिहार विशुद्धि चारित्र बे प्रकारेछे. एक निर्विशमान अने बीजुं निर्विष्टकायिक. त्यां जे ए चारित्रनो सेवनार ते निर्विशमान. अने जेणे ते चारित्र विशेषे करी सेव्युं ते निर्विष्टकायिक जाणवो.

चोथुं सूक्ष्म लोनांशविशेषरूप संपराय के० कषाय छे जेनेविषे, ते सूक्ष्मसंपराय चारित्र. ते विशुद्धमान अने संक्लिशमानना नेदे करी बे प्रकारेछे. अने पांचमुं यथाख्यात चारित्र, ते सर्वोत्तमछे ए पांच चारित्र कह्यां इति गाथानवकार्थः ए टले वृत्तनुं वखाण कर्युं. ॥ ९९३ ॥

अवतरणः— सड्डपडिमाउत्ति एटले श्रावकनी प्रतिमाउं एकशोने त्रेपनमु

द्वार कहेछे. मूलः— दंसण वय सामाइय, पोसह पमिमा अबंज सच्चित्ते ॥ आरंजपेस उद्दिठ वज्जए समणजूएय ॥ ७७४ ॥ अर्थः— एकदंसणप्रतिमा, बीजी व्रतप्रतिमा, त्रीजी सामायक प्रतिमा, चोथी पौषध प्रतिमा, ते अष्टम्यादिक पर्व दिवसे अनुष्ठानविशेष जाणवी. पांचमी पमिमा के० काउसग्गनुं करवुं. ए पांचनेविषे प्रतिमा अनिग्रह जाणवो. छठी अब्रह्मसेवा ते नियमेकरी करवी. सातमीसचित्त वर्जन प्रतिमा, आठमी कृषिप्रमुख आरंन वर्जन प्रतिमा. नवमी प्रेष्य ते अनेरा नृत्यादिक पासेथी आरंन कराववानुं वर्जन करवुं, ते प्रतिमा जाणवी. दशमी उद्दिष्ट एटले श्रावक उद्देसीने जे अशनादिक करवुं. तेनुं वर्जन करवाथी प्रतिमा थाय. अने अग्यारमी प्रतिमामां तो श्रमणनूत एटले साधुवत् साधुनीपरे रहे, ते प्रतिमा जाणवी. इहां सूत्रमांहे दंसण इत्यादिक सर्वपदो आगल प्रतिमा शब्द जोडिये.

यद्यपि श्रीदशाश्रुत स्कंधमां ए प्रतिमाउनो कालमान साक्षात्कारे देखातो नथी. तथापि उपासकदशांगमांहे आणंद श्रावकने अधिकारे साडापांचवर्ष कह्याछे. तेथी तेज कालमान अनुष्ठान विशेषे सहित देखाडेछे. ॥ ७७४ ॥

मूलः— जस्संखा जो पडिमा, तस्संखा तीए हुंति मासावि ॥ कीरंतिसुवि कज्जा उ तासु पुव्वुत्तकिरियाउ ॥ ७७५ ॥ अर्थः— जे संख्याये जे प्रतिमा छे, तेज संख्याये तेनेविषे मास पण तेटलाज होय. जेम प्रथम प्रतिमा एक मासनी, बीजीबेमासनी, त्रीजी त्रणमासनी. एम यावत् अग्यारमी अग्यार मासनी जाणवी. एम ए सर्व अग्यारे प्रतिमानुं कालमान एकतुं करिये तो छासठ मास थाय. तेम पूर्वोक्तमान जाणवुं. कीरंती सुविकज्जाउके० प्रतिमानेविषे करवी, तेनेविषे ते पूर्वोक्त क्रिया. जेम दर्शन प्रतिमानेविषे दर्शन पालवुं. तथा बीजी व्रत प्रतिमाछे तो त्यां पेहेली प्रतिमानो वीधि जेदर्शनछे; ते दर्शन पण पालवुं. अने व्रत पण पालवां. एरीतेपेहेली पहेली प्रतिमानी क्रिया ते पण आगली आगली प्रतिमानेविषे करता जवुं.

एज प्रतिमानुं विशेष अनुष्ठान देखाडे छे. मूलः— पसमाइगुणविसिठं, कुग्गहसंकाइसल्लपरिहीणं ॥ सम्मउदंसण मणहं, दंसण पमिमा हवइ पढमा. ॥७७६॥ अर्थः— प्रसम शब्दे उपशम अने आदिशब्दथकी संवेद, निर्वेद, अनुकंपा आस्तिक्य लक्षण ए पांच सम्यक्तना गुण, तेणेकरी विशिष्टके० सहित थाय. तेमज कुग्रह जे माठा एवा सम्यक्त्वने विषे जे कदाग्रह तथा शंकादिक पांच अतिचार, तद्रूप सल्लथी परिहीणके० रहित थाय. एवुंजे सम्यक् दर्शन. ते पापरहित जाति योगादिक अपवादे रहित पाले, ते दर्शन प्रतिमा पहेली थाय. ॥ ७७६ ॥

हवे अनुक्रमे बीजी प्रमुख कहेछे. मूलः— बीया पुव्वयधारी, सामाइ कडोइ होइ तइयाए ॥ होइ चउब्बी चउदिसि, अट्ठमिमाईसु दिवसेसु ॥ एए७ ॥ अर्थः— बीजी प्रतिमाने विषे अणुव्रत ते स्थूल, प्राणातिपात विरमणादिक पांच, तथा ए नां उपलक्षणथकी त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत. ते पण वध बंधादिक अ तिचारे करी रहित, अपवादे वर्जित, सम्यक्प्रकारे पेहेली प्रतिमामां ग्रहण करेलां सम्यक्त्व सहित धारण करे; ते बीजी प्रतिमा जाणवी.

सामायिक जे सावद्ययोग वर्जन अने निरवद्ययोग सेवनरूप पौषधविना दर्श न तथा व्रत सहित छतो सदासर्वदा उजयकाल सामायिकनो करनार ते, त्रीजी प्रतिमानेविषे थाय. होइचउब्बी के० चोथी प्रतिमा थाय. चतुर्दश अष्टमी प्रमुख तिथिना दिवसोनेविषे पोसह करे. तेना प्रकार आगली गाथाये कहेछे. ॥एए७ ॥

मूलः—पोसह चउव्विहं पिय पमिपुन्नं सम्म सोउ अणुपाले ॥ बंधाई अइयारे, पयत्त उ वज्जइ इमासु ॥एए८॥ अर्थः—पोसह चार प्रकारनांछे. एक आहारवर्जनरूप पोसह, बीजुं शरीरसत्कारवर्जनरूप पोसह, त्रीजुं अब्रह्मसेवावर्जनरूप, अने चोथुं सावद्य व्यापारपरिवर्जनरूप. ए चार पोसह ते परिपूर्ण सम्यक्प्रकारे पाले. तु शब्द अवधा रणेछे. एटले एरीते पालण करेछे. ते वध बंधादिक साठ अतिचार अने पांच सम्य क्त्ना अतिचार; ते प्रयत्न एटले उद्यमेकरी आ चारने विषे वर्जे. ॥ एए८ ॥

मूलः— सम्ममणुव्वय गुणवय सिरकावयवंथिरोय नाणीयं ॥ अट्ठमि चउद्दसीसुंप डिमंठा ए गराईयं॥एएए॥अर्थः—एक सम्यक्त्व, बीजा अणुव्रत, गुणव्रत, ने शिक्षाव्रत वंत थको तथा उपनाउपसर्गें पण स्थिर शब्दे, अविचल सत्व वंतहोय. वली ज्ञानी होय प्रतिमाना कल्पानो जाण होय ते अष्टमि चतुर्दशिने विषे प्रतिमां का उसग्गे रहे, एकरात्री दिवशें पोसह लेइने रात्रे शून्य गृहे चतुःपथादिकें प्रतिमाए रहे.

मूलः— असिणाण वियडनोई, मउलियमो दिवसबंजयारीयं ॥ रत्तिं परिमाणक मो, पमिमावज्जेसु दिवसेसु॥१०००॥अर्थः—अस्नान एटले स्नाननुं परिवर्जन करनारो, अने विकटनोजी एटले दिवसे प्रकाशयुक्त स्थलने विषे जोजन करेछे ते. एमां पूर्वें रात्री जोजन विषे नियम कहेलो न हतो, ते सारु आ रीते कह्युं. मउलियडो त्ति एटले अबद्ध परिधान कच्छ एवो अर्थ. तेमज दिवसनेविषे ब्रह्मचारी एवो जेनो स्वजाव ते दिवस ब्रह्मचारी. ते रात्रीने विषे रति करेछे. परिमाण के० स्त्रीउना अने तेउना जोगनुं जेणे एक किंवा बे वखत एवुं प्रमाण करेलुंछे, ते परिमाणक त जाणवुं. हवे तेनो काल कहेछे. पडिमा वज्जेसुदिवसेसु के०काउसग्ग रहित अ

ने पर्वादिक रहित एवा दिवसोने विषे रति करे. ते चोथी पोसह पडिमा कही.

मूलः— झायइ पडिमाइठिउं, तिलोयपुज्जे जिणे जियकसाए ॥ नियदोसपच्च णीयं, अन्नं वापंच जामासा ॥ १ ॥ अर्थः— हवे पांचमी काउसग्ग प्रतिमा कहेछे. ए प्रतिमाने विषे स्थित थको काउस्सगमां, त्रणभुवनना पूज्य वली जितकषाय एवा जिनेश्वरनुं चिंतन करे. अथवा निजदोष एटले जे पोताना काम क्रोधादिक दोष छे तेना प्रत्यनिक एटले प्रतिपक्षीभूत, एवा जे क्षमाप्रमुख तेने ध्यावे, एम पांच मास सुधी करे तेवारे. ते पांचमि प्रतिमा थाय. ॥ १ ॥

मूलः— सिंगार कहविभूसुक्करिसं इत्थीकहंच वज्जितो ॥ वज्जइ अबंभमेगं, तंय छट्ठाइ छम्मासे ॥ २ ॥ अर्थः— छठी ब्रह्मचर्यप्रतिमा कहेछे. शृंगारनी कथा अने विभूषानो तथा स्नान, विलेपन धूप प्रमुखनुं उत्कर्ष एटले अधिकपणुं वर्जे. तथा स्त्रीनी कथा ते आवीरीते के, स्त्री एकली होय, तेनी साथे सराग वातो करवी; तेपण वर्जवुं, एक अब्रह्ममैथुन ते वर्जे. प्रथम तो दिवस वर्जिने, रात्रे स्त्री सेवननुं प्रमाण कर्युं हतुं; तेपण इहां पांचमी, पछी छठी प्रतिमाने विषे छम हीना सुधी त्याग कर्युं. तथा कामकथा चित्तविकारनी करनार, तेनो पण इहां प्रतिषेध कर्यो. एम जाणवुं. ए छ मासनी छठी प्रतिमा कही. ॥ २ ॥

सातमी प्रतिमा कहेछे. मूलः— सत्तमिसत्तवमासे, नवि आहारइ सचित्त माहारं ॥ जंजं हेट्ठिल्लाणं, तंतो चरिमाणसव्वंपि ॥ ३ ॥ अर्थः— सातमी प्रतिमा, सातमाससुधी सचित्त आहारने आहारेनहीं एटले सचित्त वस्तुनुं भोजन करे नहीं. अने जंजंहेट्ठिल्लाणंके० जे जे पाछली पूर्वोक्त प्रतिमानुं अनुष्ठान, तेते आगले आगले सर्व जाणवुं. एटले आगली प्रतिमानी क्रिया पण करतो रहे. ॥ ३ ॥

आठमी नवमी प्रतिमा कहेछे. मूलः— आरंभ सयं करणं, अट्ठमिआ अट्ठ मास वज्जेइ ॥ नवमा नवमासे पुण, पेसारंभेवि वज्जेइ ॥४॥ अर्थः— आठमी प्रतिमाये आठमास सुधी पोते आरंभनुं करवुं वर्जे. इहां शिष्यपूछेछे के, आरंभने करण करावणे सरखो दोषछे. माटे करावणनो दोष तेने थाय. तेने उत्तर कहेछे के; ए वात सत्यछे, तथापि करवा करतां कराववामां अल्प दोषछे; माटे थोडीपण आरंभनी निवृत्ति ते भलीज जाणवी. जेम महोटी व्याधि थइ छतां तेमां किंचित् मात्र पण उपशमे तेवारे सुख थाय छे; तेम इहां पण जाणवुं. तथा नवमी प्रतिमाये पहेलो घरनो कारभार बधो पुत्रादिकोने स्वाधिन करी, नवमहीना सुधी प्रेष्य दासादिकनो करेलो आरंभ पण वर्जे. दासादिक पासेने पण आरंभ करावे नहिं, इतिभाव ॥४॥

मूलः— दसमा दसमासे पुण, उद्दिठ्ठकयं तु जत्तुनविभुंजं ॥ सो होइयवुरु मुंमो, सिहिलिं वा धारए कोइ ॥ ५ ॥ अर्थः— दशमी प्रतिमाये उद्दिष्टकृत एटले तेना उद्देशी जे जक्तादिक कस्या होय तेपण जमे नही. तो शेष आरंजनुं वर्जन करवुं तेमां शुं केवुं? वली ते पुरुष केवो होय ते दशम प्रतिमा प्रतिपन्न जे होय ते कोई तो बुरेकरी मुंम करावे अथवा कोइ तो लगारेक चोटली धारण करेछे.॥५॥

मूलः— जं निहिय मह्नजायं; पुछंत सुयाण नवरि सोतछ ॥ जइ जाणइ तो सोहइ अह नवि तो बेइ नवियाणे ॥ ६ ॥ अर्थः— वली जे हिरण्यादिकने निहितके० जूमिकादिकमां राख्युं होय. एवो जे अर्थजात एटले इव्यनो समूह, तेना विषे तेना सुयाण के० सुत जे ठोकरा प्रमुख पूछे, तो तेने ते दशमी प्रतिमानो धरनार जो जाणेके अमुक जगाये इव्यछे. तो कहे. केमके जो जाणतो थको पण कहे नही तो, सुतादिकनी वृत्तिछेदादिक दोष थाय. पण जो न जाणतो होयतो कहेके हुं जाणतो नथी. ए प्रतिमा दशमाससुधीनी जाणवी. ॥ ६ ॥

हवे अग्यारमी प्रतिमा कहेछे. मूलः— खुरमुंमोलोएणय, रयहरण पडिग्गहंच गिण्हित्ता ॥ समणो हूउ विहरइ, मासे इक्कारसुक्कोसं ॥ ७ ॥ अर्थः— क्षुरे एटले अस्त्रेकरी मुंमित ते क्षुरमुंमित अथवा हस्तेकरीने अने लोचेकरी मुंम थइने रजोहरण तथा पात्रो तेना उपलक्षण थकी समस्त साधुना उपकरण लेइने श्रमणजूत एटले यतिनीपरे समस्त अनुष्ठान करतो, समिति गुप्त्यादिक पालतो, निक्षाने अर्थे गृह कुलादिकने विषे जइने एवुं कहेके प्रतिमा प्रतिपन्न श्रावकने निक्षा आपो. एवुं कहे त्यां फरताने कोइपूछे के तुं कोणछे? त्यारे ते कहेके, हुं श्रमणोपासक प्रतिमा प्रतिपन्न छुं. एरीते ग्राम नगरादिकने विषे, अग्यारमी प्रतिमा प्रतिपन्न ते अग्यारमास उत्कृष्टे विचरे विहारक्रम मासकल्पे करे. ए सर्व प्रतिमाउनुं उत्कृष्ट कालमान कह्युं; अने जघन्यतो प्रत्येक प्रतिमा अंतरमुहूर्त्त कालमान जाणवी. ते मरणे अथवा प्रवर्जितने थाय. अन्यथा नथाय. ॥ ७ ॥

मूलः— ममकारे वोछिन्ने, वच्चइ सन्नाइपल्लिदठुंजे ॥ तछवि साहुव जहा, गिन्हे फासुंतु आहारं ॥ ८ ॥ अर्थः— हजीसुधी ममकारनो विछेद थयोनथी, स्वजनादिक उपर ममत्वजावछे. तेथी ते कदापि स्वज्ञातिके०पोतानां स्वजनादिक देखवा सारु वच्चइके०जायतो अने जे शब्द छे ते पादपूरणने सारुंछे. तछविके०त्यांपण स्वजनादिकने आग्रहे ग्रहचिंता करे नहीं; तेमज स्वजनना स्नेहेकरी अनेषणीय आहार आग्रहपूर्वक जो आपे तोपण ते लिये नही. पण केवलीतथा यतिनीपरे शुद्ध आहार लिये.८

इहां आवश्यकनी चूर्णिमां आगली सात प्रतिमामांहे विशेषता कहिछे; ते आ वीरीतेछे. राईभत्त परिन्नाएत्ति पंचमी, सचित्ताहारपरिन्नाएत्ति छठी, दिया बंभयारि राउपरिमाणकडेत्ति सत्तमी, दियाराउविबंभयारी असिणाणएवो सिही केस मंस नह रोमणहेत्ति अरमी, सारंभ परिन्नाएत्ति नवमी, पसारंभ परिन्नाएत्ति दसमी, उ हिठ्ठभत्त समण भूएत्ति एकादशमी, ॥ ८ ॥ इतिगाथापंचदशकार्थ.

अवतरणः– धन्नाणं मबीयत्तत्ति एटले धान्यना अबीजपणानुं एकशो ने चोपनमुं द्वार कहेछे. मूलः–जव जवजव गोहुम सालि वीहिधन्नाण कोठ्याईसु॥ खिविकणं पिहियाणं, लित्ताणं मुद्दियाणंच॥ ए॥ अर्थः–एक यव, बीजा यवयव, तेए यवनोज विशेष जे गोधूम, त्रीजो साली कलमसाली प्रमुख, चोथुं व्रिहि ते सामान्य चोखा, एटला जातना धान्यने कोठाप्रमुखमांहे नाखीने, ढांकणाथी ढांकी छाण प्रमुखथी लेपनकरी, उपरांत माटी साथे मुद्रि मूक्या होय तो तेनी.॥ए॥

मूलः–उक्कोसेणठिइहोइ तिन्निवरसाणि लयणुएएसिं॥ विद्धंसिज्जइजोणी,तत्तोजायइ अबीयत्तं ॥१०॥ अर्थः–उत्कृष्टि स्थिति त्रणवर्षनी थाय. तेवार पछी अंकुर उपजवानुं कारण विद्धंसिज्जइके० विध्वंसथाय,विणसीजाय,पछी तेमां अबीजपणुं थइजाय.

मूलः–तिल मुंग मसूर कलाय मास चवलय कुलछ तुबरीणं॥ तह कसिणचणयवल्लाण कोठयाईसुखिविकणं ॥११॥ अर्थः–तिल, मग, पंचवलक प्रसिद्धछे, मसूर ते वाटलाकारे धान्यविशेष, अने कोइक चनकिका कहेछे, कलायते त्रिपुटनामा धान्यनो विशेष कलायरो, अथवा चवला ते प्रसिद्धछे. कुलछते, चोलाने आकारे ते चिपछ लीसा थायछे. तुंबरी ते तुअर, कसिण, चणयके० सिखरे रहित वाटला चणा जाणवा. वाल प्रसिद्धछे. एटली जातिनां धान्यने कोठी प्रमुखमां नाखी.

मूलः– कुलित्ताणं पिहियाणं लंछियाणंच मुद्दियाणंच॥ उक्किठठिई वरिसाण, पंचगंतो अबीयत्तं ॥ १२ ॥ अर्थः–ए पूर्वोक्त कोठीने पिहितके० ढांकणासाथे ढांकीने पछी ढांकणुं तथा कोठीनुं बारणो बेउने गोबरादिक साथे लीपीने लांछन के० लीटी प्रमुखनुं चिन्ह कर्युं होय, एवीरीते जे मुद्याछे. एवा धान्यनी उत्कृष्ट स्थिति पांचवर्षसुधी जाणवी. तेवारपछी तेमां अबीज पणुं थाय. ॥ १२ ॥

मूलः–अयसी लट्टा कंगू कोमूसगसण बरट्ट सिद्धछा॥ कोदव रालगमूलग बीयाणंकोठआईसु ॥ १३ ॥ अर्थः– अलसी, जेनुं तेल थायछे. लट्टाते कसुंबो, कंगूंते पीलाचोखा, कोमूसग ते कोदरा विशेष. सण ते छोतरासहित धान्यनो विशेष बरटी ते सपाद लक्षादिकनेविषे प्रसिद्धछे. सिद्धार्थ ते सरिसव, कोद्रव ते प्रसिद्धछे

रालकतेकांगूनो विशेष, मूलक ते शाकनो विशेष, तेना बीजने कोगदिकने विषे.

मूलः— निरिकत्ताणं एयाः; णुक्कोसठिईयसत्तवरसाइं ॥ होइ जहन्नेणपुणो. अंतमुहुत्तं समग्गाणं॥ १४ ॥ अर्थः— निरिकत्ताणंके० नाखीने पछी पूर्वोक्त विधि करी होय तो एनी उत्कृष्टस्थिति सातवर्षनी जाणवी ए सर्वेनी उत्कृष्ट स्थिति कही, अने जघन्यथी तो ए सर्व पूर्वोक्त धान्यनो अंतरमुहूर्त्ते अबीजपणानो काल व्यवहारे फासु थाय; परंतु निश्चेथी तो केवलीजाणे. तेमाटे साधु एलुं संघटादिक परिहरे. जेम तृषातेयतिने श्री वर्द्धमान नगवंते पाणीनी अनुज्ञा कही नथी. इति गाथा षट्कार्थ ॥१४॥

अवतरणः—खेत्ताणंअचित्तंति एटले खेत्र उलंघवाथी जे अचित्तपणुंहोय तेनो एकशोने पचावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—जोयणसयं तु गंता; अणहारेणं तु नंमसंकंता ॥ वायागणि धूमेहिय, विद्धत्थंहोइलोणाई ॥ १५ ॥ अर्थः—एकशोयोजन गये थके लवणादिक अचित्त थाय; ते अचित्त थवानां कारण देखाडेछे. अणहारेणंके०पोताना देशथी उत्पन्न थएला,साधारण सामर्थ्ये करी, तेनो अर्थ ए के, एकखेत्र थकी, अने थली जे टाढ तावडादिकना संबंधे, दररोजनी दररोज तेनी योनी विनाश पामति जाय; ते ज्यांसुधी एकशो योजन जाय त्यांलगे सर्वथा ते अचित्त थइ जायछे. ए निसीथनी चूर्णिना पाठथकी केइयपठंति. गाउयसयंतु इत्यादिक तेथी शोकोशमाने अचित्त थायछे. तेमज नंमके० एक वासण तेमांथी बीजा वासणमां संक्रातिके० घालवुं. एम एक वखारमांथी बीजी वखारमां नाखतां किंवा वायु अग्नि तडको तावडो धूमप्रमुखे करी, एकशो योजनथकी नजीक अथवा पोताना ज स्थानके पड्योथको पण अचित्त थायछे, एम लुणप्रमुख पृथ्वीकाय आदेदेइने वनस्पतिपर्यंत समस्त पदार्थोने जाणवो. इहां शास्त्रांतरे एटलुं विशेष कह्युंछे. सय जोयण जल मग्गे; थल मग्गे सट्ठिजोयणाणुवरिं ॥ हरडे पिप्पल मिरिया, समय अचित्ताणि नणियाइं ॥ १५ ॥

हवे अचित्तथका पण आचरण अनाचरणनो विनाग कहेछे. मूलः—हरियाल मणोसिलपिप्पली उखज्जूरमुद्दिया अनया ॥ आइन्नमणाइन्ना, तेविहु ए मेव नायव्वा ॥१६॥ अर्थः—हरियादिकने पण पूर्वोक्त कारणे अचित्तपणुं जाणवुं. शो योजनथी आव्या एक आचीर्ण, बीजा अनाचीर्णछे.तेमां पीपली अने अनयाके० हरडे, ए आचीर्णपणाथकी लेवा. तथा खजूर अने मुद्दियाके० द्राक्ष ए अनाचीर्ण जाणवां. तेमाटे ते अचित्तथका पण न लेवा; एम अन्यके० बीजा पण जाणवा.॥१६॥

हवे प्रासुकपणानां एज कारण देखाडेछे. मूलः—आरुहणे उरुहणे, निसिइ

एगोणाइणं च गाउएहं ॥ जोमाहारछे,उं उवक्कमेणं तु परिणामो ॥ १७ ॥ अर्थः— लवणादिकने गाडां उंटप्रमुख उपरे आरुहणेके० चडावतां, तेमज उरुहणेके० तेना उपरथी उतारतां; तेउपर वली बेसतां ते गोणके० वृषन्न प्रमुखनी गात्रोष्मता एटले शरीरनी उष्णता एटले बाफे करीने किंवा जे स्थानके पड्या हता, ते पृथ्वी संबंधी आहारना विछेदथकी उपक्रमजे; घणाकालनुं पोतानुं आयुष्य ते छेदी, थोडा कालमां पूरण करे; तेणेकरी परिणामे स्वकाय शस्त्रादिके करी अचित्त थाय. ते आ वीरीते. जेम खारुं पाणी ते मीठापाणीनो गुण नाश करनार छे ते स्वकाय शस्त्र. अने अग्नि, वृक्षनो नाश करनार छे ते परकाय शस्त्र, अने जेम मोहोलाएलुं पाणी शुद्ध पाणीनो नाश करेछे; ते उन्नय शस्त्र. ए शस्त्र ते सचेत्तपणांने अचित्ततापणां ना कारण थायछे. ॥ १७ ॥

अवतरणः—धन्नाइ चउवीसंति एटले चोवीस धान्यना नेदोनो एकशो ने छप्पन्न मुं द्वार कहेछे. मूलः—धन्नाइ चउवीसं, जव गोहुम सालि वीहि सहीय ॥ कोद्दव अणुआ कंगू रालय तिल मुग्ग मासाय ॥ १८ ॥ अयसी हरिमंथ तिउगड निप्फाव सिलिंद रायमासाय ॥ इक्कू मसूर तूवरी, कुलछ तह धन्नय कलाय ॥ ॥१९॥ अर्थः—जव, गोहुम, सालि, व्रीही, साठ दाहाडे नीपजे ते साठी, कोद्रव, जुआर, कांगुणी, राल, तिल, मग, अडद, अलसी, चणा, त्रिपुट, निप्फाव, वाल, मठ, इक्षु, मसूर, तुअर, कुलछ, करडी अने कलायरो. ॥ १८ ॥ १९ ॥

अवतरणः—मरणं सतरस नेयंति एटले सत्तर प्रकारनां मरणनो एकशोने स त्तावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—आवीइ उहि अंतिअ, बलायमरणं वसट्टमरणं च अंतोसल्लं तब्भव; बालं तह पंमियं मीसं ॥ २० ॥ छउमछमरण केवलि, वहाण सगिद्धपिट्ठिमरणं च ॥ मरणं नत्तपरिन्ना, इंगिणि पाउवगमणं च ॥ २१ ॥ अर्थः— आविचि, अवधि, आत्यंतिक, बलाय, वसार्त्त, अंतःशल्य, तद्भव, बाल, पंमित, मि श्र, छद्मस्थ, केवली, वेहायस, गृध्रपृष्ट, नक्तपरिज्ञा, इंगिनी अने पादोपगमन. ए आवीचि प्रमुख शब्द आगल मरण शब्द प्रत्येके जोडवो; तेवारे आवीचिमरणादि क अनुक्रमे जे नाम कह्यां ते जाणवां. ॥ २० ॥ २१ ॥

हवे एनुं वखाण करेछे. मूलः—अणुसमय निरंतर माविसन्नियंतं नणंति पंच विहं ॥ दव्व खित्ते काले, नवेय नावेय संसारे ॥ २२ ॥ अर्थः—अनु समय समय प्रत्ये निरंतरपणे मरे. इहां शब्दार्थ आमछे केः—आके० समस्त प्रकारे करी वीचि के० कल्लोल तेनीपरे, समयसमयने विषे जे आयुष्यने अनुनवियें छइये, तेने अनुलो

मपणे अने अनेरा आयुर्दलिकना उदयथकी; पहेला पहेला आयुष्यना दलिक, तेनुं चवन लक्षण अवस्था विशेष ज्यांछे; तेने आवीचि एवेनामे मरण. ते समयके० सिद्धांतना जाण पुरुषो पांच प्रकारे कहेछे. त्यां द्रव्यादि नव मरण ते आवीरीते. तेमां नारकादिक संबंधि, आयुष्यना दलिक एकठा कीधाछे; ते समय समय विचें टलेछे ते द्रव्य आवीचि मरण जाणवुं. एमज नारकादिकनी गतिनी अपेक्षाये क्षेत्र आवीचि मरण जाणवुं. तेम आयुष्य, दिवस, पल्योपमादि नर नारकादिकनेविषे जे छे; ते समय समयप्रत्ये घटेछे. ए काल आवीचि मरण जाणवुं. तथा नारकादिक नव चार प्रकारे छे, ते नव आवीचि मरण जाणवुं. तेम नारकादिकनां आयुष्य पण चार प्रकारे छे. ते नावावीचि मरण जाणवुं. ए पांच प्रकार संसारने विषे संनवे.॥२२॥

अवधिमरण कहेछे. मूलः– एमेव उहिमरणं, जाणिमउ ताणि चेव मरइ पुणो ॥ एमेव आइअंतिअ, मरणं नविमरइ ताण पुणो ॥ २३ ॥ अर्थः–जेम आवीचिमरण द्रव्यादिक पांच नेदे कह्युं. एमेवके० तेनीपरेज, उहिके० अवधिमरण जाणवुं. तेनुं स्वरूप कहेछे; अवधिके० मर्यादा, जे कोइ आयुष्यना दलिक नोगवी मरण पाम्यो हतो; तेज वली दलिक नोगवीने जेवारे मरण पामशे, ते वारे तेने ते द्रव्यावधिमरण जाणवुं. एम क्षेत्रादिकनी नावना करवी. हवे त्रीजुं आइअंतिअके० आत्यंतिक मरण. तेपण एरीतेज द्रव्यादिक पांच प्रकारेछे. परंतु एटलुं विशेषमरण, जे नारकादिकना आयुष्य संबंधी जे दलिक ते मरवा पछी वली ते नोगवे नहीं तेने ते आत्यंतिक द्रव्य मरण कहिये. तेम क्षेत्रादिक पण जाणवा.

हवे चोथुं बलवन्मरण कहेछे. मूलः–संयमजोगविसन्ना, मरंति जे तं बलायमरणं तु ॥ इंदियविसयवसगया, मरंति जे तं वसट्टं तु ॥२४॥ अर्थः–संयमना जे योग, व्यापार तेथकी खिन्न थयो; परंतु कुलनी लाजथकी मूकी शके नहीं, अने मनमां जाणेके, कोइरीते पण कष्टथी छूटिये तो सारुं. एम संयमानुष्ठान थकी चलतो मरण पामे. ते बलवन्मरण जाणवुं. ए मरण नग्नव्रती जे होय तेने थायछे. बीजा संयमयोगवालाने नथाय, पांचमुं वसार्त्त मरणते इंद्रिय जे चक्षु प्रमुख तेना विषय जे रूपादिक तेना वसे गयो थको, जे मरे ते वशार्त्तमरण जाणवुं. ए मरण जेम दीपशिखा देखी पतंगिउ मरण पामेछे. तेनीपरे जाणवुं. ॥ २४ ॥

सशल्यमरण कहेछे. मूलः–गारवपंकनिबुड्डा, अइयारं जे परस्स नकहिंति ॥ दंसण नाण चरित्ते, ससल्लमरणं हवइ तेसिं ॥ २५ ॥ अर्थः– ऋद्धि, रस, ने साता गारव ए त्रणेने कलुषपणानां कारणथकी पंक एटले कादव कहिये, तेनेविषे

जे निमग्न एटले बूडचाळतां, पोताना दर्शन ज्ञान चारित्रना, अपराधरूप अतिचार ते, आचार्यादिक आगल कहे नहीं. त्यां वांदणादिकआपतां तेना कहेला अनुष्ठानने करतो तेमां साता रहे नहीं; एवो थको जे मरण पामे तेने सशल्य मरण कहिये.

मूलः– मुत्तुं अकम्म नूमिय, नरतिरिएसुरगणेसु नेरइए ॥ सेसाणं जीवाणं, तप्नवमरणं तुं केसिंचि ॥ २६ ॥ अर्थः– अकर्मनूमिना उपन्या मनुष्य, तथा तिर्यंच अने चतुर्विध देवगण, तथा नारकी. एटला मूकी शेष जीवोने तन्नवमरण. सातमुं कोइएकने जाणवुं. ए गाथानो नावार्थ इहां टीकामां सम्यक्रीते पामता नथी अने उतराध्ययननी चूर्णिमां पण न वखाण्यो माटे गीतार्थ विचारजो. ॥२६॥

मूलः–मोत्तूण उहिमरणं, आवीइयं तिअं तिअं इचेव ॥ सेसा मरणा सव्वे, तप्नवमरणेण नायव्वा॥ २७ ॥ अर्थः– अवधि, आवीचि अने आत्यंतिक ए त्रण मरण मूकीने शेष समस्त जे मरणछे; ते तन्नवमरण जाणवां. ॥ २७ ॥

हवे बाल मरणादिक त्रण कहेछे. मूलः–अविरयमरणं बालं, मरणं विरयाण पंमिय बिंति ॥ जाणाहि बालपंमिय, मरणं पुण देसविरयाणं ॥ २७ ॥ अर्थः–हिंसादिक थकी जे विरम्या नथी; ते अविरति, तेने बालनी परे मरण जाणवुं, एमज वली सर्व सावद्यनी निवृत्ति जेणे अंगीकार करीछे, ते विरति, तेनुं मरण तेपंमितनी परें जाणवुं माटे; ते पंमितमरण कहिये. एरीते बिंतिके० तीर्थंकर कहेछे. वली बाल पंमितमरण, ते जेदेशथकी विरतिछे; एवानुं जे मरण ते मिश्रमरण जाणवुं. ॥२७॥

हवे छद्मस्थ अने केवली मरण कहेछे. मूलः–मणपज्जवोहिनाणी, सुअमइनाणी मरंति जे समणा ॥ छउमछ मरणमेयं, केवलिमरणं तु केवलिणो ॥ २९ ॥ अर्थः–अतिविशुद्धपणा थकी, प्रथम मनपर्यवज्ञान, तेमज अवधिज्ञान, श्रुतज्ञान ने मतिज्ञानना धरनार; एवा जे श्रमण तपने विषे जे श्रम करेछे; ते श्रमण कहिये. अने छद्मके० ज्ञानावरणादिक जे कर्म, तेनेविषे जे रहे ते छद्मस्थ जाणवो; तेनुं जे मरण ते बारमुं छद्मस्थ मरण जाणवुं. तेरमुं केवली मरण ते समस्त कर्म पुद्गलनो परिसाटन करीकेवलज्ञान पामी जे मरण करे, ते केवलि मरण जाणवुं. ॥२९॥

मूलः–गिद्धाइ नरकणं गिद्धि, पिछिउब्बंधणाइ वेहासं ॥ एए दोन्निवि मरणा, कारणजाए अणुन्नाया ॥ ३० ॥ अर्थः– गृद्ध ए प्रसिद्धछे, ते गृद्ध जेने आदिछे, एटले समली, शियाल प्रमुख, तेने जे, आपणादेहादिकनुं नक्षण एटले ते समली शियाल प्रमुखने अनिवारणादिके करी, तेणे नक्षण करवा योग्य जे हाथी उंट प्रमुखना कलेवरमां प्रवेश करी; जे नक्षण ते गृद्धादिनक्षण. हवे गृद्धादिकोनो स्पर्श

जेने ठेकाणे छे, ते गृध्रस्पर्शी, अथवा गृध्रनो जक्ष एटले पृष्ठ अने उदरादिक तथा कोणीए लगाडी तेमने खवरावबुं. ऊर्ध्व एटले ऊंचे वृक्षनी शाखादिकने विषे जे बंधन ते उद्बंधन छे; आदि जेने एवो तरु, गिरिशिखर तथा जृगुपातादिक जे पोतेज पोतानाज मरणने माटे करेलुं छे, ते उद्बंधनादिक. वेहायस मरण. आकाशनेविषे जे झंपापात करी मरण पामीए, ते वेहायस. उद्बंधने जे पूर्वे कह्युं; ते जो आकाशनेविषे थयुं होयतो, वेहायस जाणवुं.

इहां कोइ चालना करे छे के, गृध्रपृष्ठ जे पूर्वे कह्युं; तेने पण आत्मपातरूपत्वछे. माटे वेहायसने ठेकाणेज तेनो अंतर्नाव छे तेनो उत्तर. ते खरुंछे परंतु केवल आ वेहायस मरणनुं अल्प धैर्यवाला पुरुषे, निश्चय करवाविषे अशक्यत्व छे, ते कहेवा सारुं, गृध्रपृष्ठ अने वेहायस; ए बे जूदांजूदां कह्यां. वली शंका करेछे. नाविय जिणवयणाणं ममत्तरहियाण नछिहु विसेसो ॥ अप्पाणंमि परंमिय तो वज्जे पीड मुमुउवि ॥ १ ॥ एवो आगमछे. अने आ बे कहेलां मरण अत्यंत आत्मपीडा करनारांछे; पछी आगमने विरोध केम नथी? एजमाटे जक्त परिज्ञानादिकने विषे पीडा परिहार सारु चत्तारि विचित्ताइं विगइंनिज्जूहेयाइंचत्तारि॥ इत्यादि संलेषणाविधि, अने पानकादि विधि त्यां त्यां कहेलीछे. अने बंने ठेकाणे दर्शननुं मलिनपणुं प्राप्त थशे. एवी शंका छतां, तेनो उत्तर. ए कहेला गृध्रपृष्ठ वेहायस नामा मरण, दर्शन मलिन परिहारादिक कारण थयुं छतां, अथवा कारण प्रकार छतां उदायी राजाये जेम पूछ्युं तेम गीतार्थ आचार्ये जिन शासननी मलिनता परिहरवा सारु कीधुं. एमाटे पूर्वे कहेला मरणने शंकारूप दोष नथी. ॥३०॥

हवे जक्त परिज्ञातादिक त्रण मरण कहेछे. मूलः—जत्तपरिन्ना इंगिणि, पायवगमणंच तिन्नि मरणाइं॥ कन्निस मज्झिमछेठा धिइसंघयणेण्ड विसिठा॥३१॥ अर्थः- जक्तके० जोजन परिज्ञाछे ज्यां, ते जक्त परिज्ञा, बे प्रकारेछे; एक ज्ञपरिज्ञा बीजी प्रत्याख्यानपरिज्ञा. तेमां ज्ञपरिज्ञा ते. ज्यां एवुं जाणेके, ए अशनादिक, जीवे घणा वखत घणा अरोग्याछे. उक्तंच हिमवंत मलय मंदिर, दीवोदहि धरणि सरिस रासीउ ॥ अहियथरो आहारो, बुहिएणाहारिउहुज्जा ॥ १ ॥ इत्यादिक जाणीने आहारनो पच्चखाण करे; एमज प्रथम ज्ञपरिज्ञाये स्वरूप जाण्युं अने पछी तेने पच्चखाण परिज्ञाये चतुर्विध आहारनो पच्चखाण कर्यो, ए बे जेद कह्या; पछी जे मरण करे तेने जक्त परिज्ञा नामे पन्नरमुं मरण कहिये. सोलमुं इंगितेके० प्रतिनियत देशने विषे चतुर्विध आहारनो त्यागकरी, अनेरानी करेली परिक्रमणाने वर्जतो थको

जे गिरी गुंफादिकने विषे, उद्वर्त्तनादिक पोतेज करतो रहे, ते सोलमुं इंगिनी मरण करे. सत्तरमुं पादपके० वृक्ष तेनीपरे, उपगमनके० रहेवुं एटले जेवारे, अनशननो उच्चार करी, शयन करे, तेवारे जेरीते छेदेलुं वृक्ष जेम पड्युं, तेमनुं तेम पडी रहेछे, तेम ए पण उंची निचि भूमिकाये जे हाथ पगादिक ज्यां जेरीते प्रथमथी राख्यां ते त्यां तेजरीते पड्यां रहे; परंतु हाथ पगादिकने चलावे नहिं; एम जे मरण करे, ते पादोपगमन नामा सत्तरमुं मरण जाणवुं. ए त्रणे कनिष्ट, मध्यम अने उत्कृष्ट अनुक्रमे थायछे. यद्यपि धृति संयमने विषे, चित्तनुं स्थिरतापणुं संहनन वज्र ऋषभनाराचादिक, तेणेकरी त्रणे मरणने धीरपुरुष पडिवजे छे, एनुं फलपण वैमानिक तथा मुक्ति लक्षण त्रणेने सरखुं थायछे. उक्तंच. यतः– सव्वाविय अज्जाउ, सव्वेविअपढम संघयणवज्जा ॥ सव्वेवि देसविरया, पच्चक्खाणेण उ मरंति ॥ १ ॥ आ ठेकाणे प्रत्याख्यान शब्दे भक्त परिज्ञा कहिछे, ए विशेष धृतिमंत पुरुषने थाय; अने इंगिनी मरण ते वली विशिष्टतर धृति संघयणवंतने थाय परंतु साध्विने न थाय. एम पादोपगमन ते वली विशिष्टतम, धृतिवंत वज्र, ऋषभनाराच संघयणवालाने थाय. उक्तंच. पढमंमि असंघयणे, वट्टंते सेलकुट्टसामाणे ॥ तेसिंपि अवोछेउ चउदस पुव्वीण वोछेए ॥ १ ॥ तीर्थंकर पादोपगमन सेवे तेथी ए उत्तमछे. अने बीजा विशिष्ट साधु सेवे; यदुक्तं. सव्वेसव्वद्धाए, सवन्नू सव्वकम्मभूमीसु ॥ सव्वगुरु सव्वमहियासव्वेमेरुंमि अभिसित्ता ॥१॥ सव्वाहिंलद्धीहिं. सव्वेवि परिसहेपराजित्ता सव्वेविह अतिछयरा पाउवगयाउसिद्धिगया ॥ २॥ अवसेसा अणगारा, तीयपच्चुपन्नणागयासव्वे ॥ केईपाउवगया, पच्चक्खाणिंगिणीकेई ॥ ३ ॥ तेमाटे भक्तपरिज्ञा कनिष्ट छे तेथी ए जघन्य जाणवो. अने इंगिनी मध्यम जाणवो. तथा पादोपगमन ते ज्येष्ट सर्वोत्तम जाणवो. इतिगाथा दशकार्थः.

अवतरणः–पलिउवमंति एटले पल्योपमनां स्वरूपनुं एकशोने अठावनमुं द्वार कहेछे. मूलः–पलिउवमं च तिविहं, उद्धारद्धं च खेत्तपलियंच॥एकेकं पुण दुविहं बायरसुहुमं च नायव्वं ॥३१॥ अर्थः–पल्य एटले जेमां धान्य नाखिये, तेनी जेने उपमा छे, तेने पल्योपम कहिये; ते उद्धार, अद्धा अने खेत्रना भेद थकी, तिविहं के० त्रण प्रकारेछे. वली ए उद्धारादिक, एकेक ते बादर अने सूक्ष्मना भेदेकरी बे बे प्रकारेछे. एटले बादर उद्धार, पल्योपम, अने सूक्ष्म उद्धार, पल्योपम, तेमज अद्धा अने क्षेत्र ए बे पण बादर अने सूक्ष्म केहेवा. ॥ ३१ ॥

पल्योपमनुं स्वरूप कहेछे. मूलः–जं जोयण विछिन्नं, तं तिउणं परिरएण सवि

सेसं ॥ तावइयं उविद्धं, पल्लं पलिउवमं नामा ॥ ३३ ॥ अर्थः—जे एक योजन वि स्तारे वाटले आकारे कहेवाय, ते सविशेष त्रण योजन अनेएक योजननो बहो नाग कांइक न्यून, एटले परिरएणके० परीधिए थाय; अने तेटलोज उविद्धके०उंच पणे पण थाय. एवो पल्य एटले पालो तेनी जेने उपमा छे तेने पल्योपम जाणवुं,

एवुं पल्योपम कह्या पछी तेनुं कर्त्तव्य देखाडेछे. मूलः—एगाहिअ बेहिय ते हियाण उक्कोस सत्तरत्ताणं ॥ सम्मठ्ठ संनिचिअं, नरियं बालग्ग कोडीहिं॥ ३४ ॥ अर्थः—एक दिवसनो, बे दिवसनो, त्रण दिवसनो, उत्कृष्ट सात दिवस संबंधी नरणाके० लोम, तेनी साथे ते पूर्वोक्त पल्य संपूर्ण नखो, पछी ते संनिचित महा विचित पणे एवो कह्यो के, ते पल्य, जेम वायरे उडेनही, अग्निए बलेनही, पा णीये नीजे नही, एवी रीते वालाग्रनी कोटीये नखो. ॥ ३४ ॥

मूलः—तत्तो समए समए, एक्केके अवहियंमि जो कालो ॥ संखेज्जा खलु सम या, बायरउद्धार पल्लम्मि ॥ ३५ ॥ अर्थः—तत्तोके० तेवार पछी. समय समयनेवि षे तेमांथी एकेक वालाग्र अपहरिये. ते खाली करतां जेटलो काल थाय; तेटला समय निश्चेंथी बादर, उद्धार पल्योपमने विषे थाय, अर्थात् संख्याता समय थाय.

मूलः—एक्केक्कमउलोमं, कट्टुमसंखेज्ज खंममदिस्सं ॥ समछेयाणं तपए, सियाण पल्लं नरेज्जाहि ॥३६॥ अर्थः—ते नरणानो रोम, ते एकेक रोमना वली असंख्याता न्हाना न्हाना खंम करिये, ते ज्यां सुधी अदृश्यते एटले, जे मनुष्यमांहे निर्मल लोचन वालो, छद्मस्थ अतिसूक्ष्म, पुजलद्रव्य पोतानां चक्षुये देखीशके, तेनो असं ख्यातमो नाग मात्र जाणवो,जे न देखी शकाय; एवा सूक्ष्म खंम करे. अने खेत्र थी तो सूक्ष्म पनकनुं शरीर जेटलां खेत्रनेविषे रहीशके. तेथकी असंख्यातगुण खेत्रनुं अवगाहनार जे द्रव्य तेने प्रमाणे खंमकरे. वडेरा वली एम वखाणेछे के बादर, पर्याप्त, पृथ्वीकायिक जीवना शरीर सरखा छेदके० खंमछे; जेनां वली अनंत परमाणुंए जे नीपन्या छे; एवा वालाग्रे ते पल्य नरिये. ॥३६॥

मूलः—तत्तो समए,समए एक्केके अवहियंमि जो कालो॥संखेज्ज वास कोमी, सु हुमे उद्धारपल्लम्मि ॥ ३७ ॥ अर्थः—तत्तोके० त्यारपछी समये समये एकेका वालाग्रने अपहरता जे काल थाय, ते काल कहेछे. असंख्याता वर्षनी कोडी सूक्ष्म उद्धार पल्योपमनेविषे थायछे. ॥३७॥

मूलः—वाससए वाससए, एक्केके बायरे अवहि यम्मि ॥ बायर अद्धापलि यं, संखेज्जा वास कोडिउ ॥ ३८ ॥ अर्थः—ते पल्यमांथी शो शो वर्ष गयां छतां ए

केक बादर खंम काढाडीये; तोबादर अद्धा पल्योपममां संख्याता वरसनीकोडि थाय.

मूलः—वाससए वाससए, एकेके अवहियम्मि सुहुमंमि ॥ सुहुमं अद्धापलियं हवंति वासा असंखेज्जा ॥ ३७ ॥ अर्थः—शो शो वर्षे एकेक सूक्ष्म खंम काढाडीये, तो सूक्ष्म अद्धा पल्योपम असंख्याता वर्षनो थाय. ॥ ३७ ॥

मूलः— बायर सुहुमायासे, खेत्तपएसाणु समय मवहारे ॥ बायर सुहुमं खेत्तं उसप्पिणीउ असंखिज्जा ॥ ४० ॥ अर्थः—ते पल्यना जे आकाशप्रदेश ते वाला ग्रे करी स्पृष्ट छे; ते आकाश प्रदेशने अनुसमय समय प्रत्ये काढाडतां, जेटले काले ते पालो खाली थाय, तेटला काले बादर खेत्र पल्योपम जाणवुं. अने तेज पल्यना वालाग्रे करी स्पृष्ट तथा अस्पृष्ट जेटला आकाश प्रदेश छे, ते प्रतिसमय समय काढाडतां जेटलो काल थाय, ते सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम थाय. असंख्याति उत्सर्पिणी प्रमाणे तेना कालनुं मान जाणवुं. ॥ ४० ॥ इति गाथा नवकार्थः ॥

अवतरणः—आयरत्ति एटले सागरोपमना प्रमाणनुं एकशो ने उगणसाठमुं द्वार कहेछे. मूलः— उद्धार पल्लगाणं, कोडाकोडी नविज्ज दसगुणिया ॥ तं सागरोवमस्सउ, एकस्स नवे परीमाणं ॥ ४१ ॥ अर्थः—दशकोडाकोडी उद्धारपल्योपमे, एक सागरोपम थाय. जेने समुद्रनी उपमा छे तेने सागरोपम कहिये, अने तेवा एक सागरोपमनुं प्रमाण जाणवुं. ॥ ४१ ॥

मूलः—जावइउउद्धारो, अड्डाइ आण सागराण नवे ॥ ताव इया खलु लोए, हवंति दीवा समुदाय ॥ ४२ ॥ अर्थः—अढी उद्धार सागरोपममां जेटला समय थाय; तावइया के० तेटलाज माने. खलुइति निश्चे लोकनेविषे द्वीप अने समुद्रथाय.

मूलः— तह अद्धा पल्लाणं, कोडाकोडी हविज्ज दसगुणिया ॥ तं सागरोवमस्सउ परिमाणं हवइ एगस्स ॥ ४३ ॥ अर्थः—तेमज दशकोडाकोडी अद्धा पल्योपमे एक अद्धा सागरोपमनुं परिमाण थायछे. ॥ ४३ ॥

मूलः— सुहुमेणउ अद्ध सागरस्स माणेण सव्वजीवाणं ॥ कम्मठिई कायठिई नवठिई होइ नायव्वा ॥४४॥ अर्थः—सूक्ष्म अद्धासागरोपमना समय तेने मानेकरी सर्व जीवोनी कर्मस्थिति, कायस्थिति अने नवस्थिति होय एम जाणवुं. ॥ ४४ ॥

मूलः— इहखेत्तपल्लगाणं, कोडाकोडी हविज्ज दस गुणिया ॥ तं सागरोवमस्सउ, एकस्सनवेपरीमाणं ॥ ४५ ॥ अर्थः—दश कोडाकोडी क्षेत्र पल्योपमे एक क्षेत्र सागरोपमनुं प्रमाण थायछे. ॥ ४५ ॥

मूलः— एएण खेत्त सागर, उवमाणेणं हविज्ज नायव्वं ॥ पुढविदग अगणि मा

रुश्र, हरियत साणं च परिमाणं ॥ ४६ ॥ अर्थः—ए क्षेत्र सागरोपमनी उपमाने पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति अने त्रसजीवोनुं परिमाण जाणवुं. ए वात दृष्टिवादमां बहुलपणे कही छे. तेमांथी लगारेक देखाडी छे. इति गाथा षट्कार्थ.

अवतरणः— अवसप्पिणित्ति एटले अवसर्पिणीनुं एकशोने सातमुं द्वार कहेछे. मूलः— दसकोडा कोडीउ, अद्धा अयराण हुंति पुन्नाउ ॥ अवसप्पिणीए ताए नाया छच्चेव कालस्स ॥४७॥ अर्थः—अद्धासागरोपमनी दश कोडाकोडी पूर्ण थाय, तेवारे अवसर्प्पिणीथाय. अवसर्प्पिणी एटले आरानी घटती दशा तेनी अपेक्षाये आयुष्य, शरीर, कल्पवृक्षादिक शुभ भावोनी हाणी थाय, एम सर्वनी घटति दशा थाय; माटे अवसर्प्पिणी कहिये. तेनेविषे कालना भाग छ होयछे; तेनां नाम कहेछे.

मूलः— सुसम सुसमाय सुसमा, तईयापुण सुसम दुसमा होइ ॥ सुसम सुसमा चउत्थी, दूसम अइ दूसमा छठ्ठी ॥ ४८ ॥ अर्थः—एक सुषमसुषमा, बीजो सुषमा, त्रीजो सुषमदुषमा, चोथो दुषमसुषमा, पांचमो दूषमा अने छगो दुषमदुषमा ए अवसर्प्पिणीना छ आरानां नाम अनुक्रमे कह्यां. ॥ ४८ ॥

हवे ए छ आरानुं कालमान कहेछे. मूलः— सुसमसुसमाइ कालो, चत्तारि हवंति कोडि कोडीउ ॥ तिन्नि सुसमाइ कालो, दोन्निजवे सुसम दुसमाए ॥ ४९ ॥ प्रथम सुषमसुषमानेविषे, चार कोडाकोडी सागरोपम, बीजा सुषमानेविषे त्रण कोडाकोडी सागरोपम, अने त्रीजा सुषमदुषमानेविषे बे कोडाकोडी सागरोपम.

मूलः— एक्का कोडाकोडी, बायालीसाए जा सहस्सेहिं ॥ वासाण होइ ऊणा दुसमसुसमाए सो कालो ॥ ५० ॥ अर्थः— एक कोडाकोडी बेतालीस हजार वर्षे ऊणुं चोथा दुषमसुषमानुं एटलुं काल मान जाणवुं. ॥ ५० ॥

मूलः— अह दूसमाइ कालो, वास सहस्साइ एक्कवीसं तु ॥ तावइउ चेवजवे कालो अइ दूसमाएवि ॥ ५१ ॥ अर्थः— अथके० हवे पांचमा दुषम आरानो काल, एकवीश हजार वर्षे अने तावइउ के० तेटलुंज एकवीश हजार-वर्षनुं कालमान छगा अतिदुषमानुं पण जाणवुं. ॥ ५१ ॥ इतिगाथा पंचकार्थ.

अवतरणः— उसप्पिणित्ति एटले उत्सर्प्पिणीनुं एकशो ने एकशठमुं द्वार कहेछे, मूलः— अवसप्पिणीइ भागा, हवंतिउस प्पिणीए वि छएए ॥ पडिलोमा परिवाडी, नवरि विभाएसु नायव्वा ॥ ५२ ॥ अर्थः— जेरीते अवसर्प्पिणीना छ भाग कह्या, ते रीते उत्सर्प्पिणीना पण छज भाग जाणवा. मात्र एटलुं अधिकछे; जे पडिलोम के० उपरांठी, परिवाडी अनुक्रमे विभागे आराने विषे करवी. ते जेम अवसर्प्पिणि

ये प्रथम सुषमसुषमा अने घटता कालने योगे, छठो आरो डुषमडुषमा थाय. तेम उत्सर्पिणीमां वधता कालने योगे, पेहेलो डुषमडुषमा आरो थाय. अने छेहे डे, सुषमसुषमा छठो आरो थाय. ॥ ५२ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—दव्वे खेत्ते काले नावे पुग्गलत्ति एटले चार प्रकारना पुजल परावर्त्तनुं एकशोने बासठमुं द्वार कहेछे. मूलः—उस्सप्पिणी अणंता, पुग्गल परियट्टो मुणेय व्वो ॥ तेणंतातीअद्धा आणगयद्धा अणंतगुणा ॥ ५३ ॥ अर्थः—अनंति उत्सर्पिणी अने आ स्थले उपलक्षणथी अनंति अवसर्पिणी पण लेवी. एटले अनंति उत्सर्पिणी अने, अनंति अवसर्पिणीये, एक पुजल परावर्त्त जाणवो. तेवा अनंता पुजल परावर्त ते, अतीत अद्धाके० अतीतकालनेविषे थाय. अने तेथी अनंतगुणा वली अनागताद्धा के० अनागत कालनेविषे थाय. ॥ ५३ ॥

त्यां शिष्य आशंका करेछे के; श्रीनगवतिमां एम कह्युछे के "एणागयद्धाणंती यद्धाउ समयाहियत्ति," तो अतीतकालथकी, अनागत अद्धासमय अधिक कह्या. अतीत, अनागत ए बन्ने काल, अनादिने अनंतपणा थकी समानछे. अने नगवंतनो प्रश्न पण तेमांछे; ते अविनिष्ट समय अतीतकालमां, प्रवेश करेनहीं; किंतु अनागत अद्धामांहेज प्रक्षेपीये; तेमाटे अतीतकाल थकी समयाधिक अनागताद्धा थायछे. अने इहां तो अतीताद्धाथकी अनागताद्धा अनंतगुणा कह्या तो शीरीते विरोधता नथी? अर्थात् विरोधताज थायछे.

उत्तर कहेछे के; जेम अनागताद्धा अंतरहितछे, अने जेम अतीताद्धानी आदि नथी, एटले ते बन्नेने अंतना अनाव थकी सरखापणुं थयुं; हवे वर्त्तमान समये, अतीताद्धा, अनेअनागताद्धा सरखा थायछे.त्यारपछीसमयने अतिक्रमे अनागताद्धा उणी थाय, एम बे त्रण समय प्रमुखनुनोअतिक्रम करतां समपणुं थायनही, तेमाटे अतीताद्धा थकी अनागताद्धा अनंतगुणी कही. जे कारणे अनंतोकाल गये छते पण अनागताद्धानो क्षय न थाय; अने वर्त्तमाने एक समयरूप वर्त्तमानाद्धा पण छेज, ते सूक्ष्मपणाथकी, आंहि जूदो कह्यो नथी.

मूलः— पुग्गल परियट्टोइह, दव्वाइ चउव्विहोमुणेयव्वो ॥ थूलेयरन्नेएहिं, जह होइ तहा निसामेहा ॥ ५४ ॥ अर्थः— ए पुजल परावर्त्त ते इहां, द्रव्य क्षेत्र, काल अने नावना नेदथकी चार प्रकारे जाणवो. ते वली एकेको थूलेयरके० स्थूल अने सूक्ष्मना नेदथकी जेरीते थाय, तेरीते कहुंछुं ते सांनलो. ॥ ५४ ॥

प्रथम बादर, द्रव्य, पुजल परावर्त कहेछे. मूलः— उरालविउव्वातेय कम्म ना

साणपाणमणगेहिं ॥ फासेवि सवपोग्गल, मुक्काअहवायरपरट्टो ॥ ५५ ॥ अर्थः– एक औदारिक, बीजी वैक्रिय, त्रीजी तेजस, चोथी कार्मण, पांचमी भाषा, छठी आनपान (श्वासोश्वास) सातमी मन. ए औदारिकादिक साते वर्गणायेकरी चौद राज संबंधी समस्त पुद्गल, ते जेटले काले एकजीव स्वभावे भोगवी भोगवीने मूके; तेटले काले एक बादर पुद्गल परावर्त थायछे. ॥ ५५ ॥

मूलः– अहव इमो दवाई, उराल विउवि तेयकम्मेहिं ॥ नीसेस दवगहणंमि बायरो होइ परियट्टो ॥ ५६ ॥ अर्थः– अथवा इमोके० ए इव्यादिक एटले इव्य शब्द जे पुद्गल परावर्तने आदेछे, ते इव्यादिक कहिये. त्यां उरालके० औदारिक, वैक्रिय, तेजस अने कार्मण ए चार वर्गणायेकरी, एक जीवते नीसेसके० समस्त चौदराज लोक संबंधी; इव्य ग्रहणने विषे एटले पुद्गल भोगववानेविषे, पण बादर इव्य, पुद्गलपरावर्तन मतांतरे कह्योछे. ॥ ५६ ॥

इव्यथी सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्त कहेछे. मूलः– दवे सुहुम परट्टो, जाहेएगेण तहसरीरेण ॥ फासेवि सवपोग्गल, अणुकम्मेणं नणु गणिज्जा ॥ ५७ ॥ अर्थः–इव्यनेविषे सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्तन आवी रीते थायछे के, जेवारे एक औदारिकादिक शरीरपणे करी, समस्त लोकाकाश भावीपुद्गलने स्पर्शे भोगवे; ते पछी अनुक्रमे बीजो वैक्रिय, ते पछी त्रीजो, इत्यादिक गणिये तेवारे सूक्ष्म इव्य पुद्गल परावर्त्त थाय.

हवे क्षेत्रथी बादर पुद्गल परावर्त्त कहेछे. मूलः– लोगागासपएसा जेयमरं तेण एछजीवेण ॥ पुठा कमुक्कमेणं, खेत्तपरट्टो हवइ थूलो ॥ ५८ ॥ अर्थः– लोक चउदराज प्रमाणछे; तेमां जे आकाश प्रदेशछे, ते सर्व एक जीवे मरती वखते, अथवा शरीर ग्रहण करती वखते, एछके० आ लोकमांहे फरस्या; पण ते क्रमोत् क्रमे आगल पाछल फरस्या; तेवारे बादर क्षेत्र पुद्गल परावर्त्त थाय. ॥ ५८ ॥

हवे सूक्ष्म क्षेत्र पुद्गल परावर्त्त कहेछे. मूलः–जीवा जइया एगे, खेत्तपएसंमि अहिगंएमरइ ॥ पुणरवि तस्साणंतर, बीयपएसंमि जइ मरइ ॥ ५९ ॥ एवंतरतम जोएण सवखित्तंमिजइमउहोइ ॥ सुहुमो खेत्तपरट्टो, अणुक्कमेणं नणु गणिज्जा ॥ ६० ॥ अर्थः– जीव जेवारे कोइ एकज अधिगतके० विवक्षितप्रदेशनेविषे, मरण पामे; प्राण त्याग करे, वली गत्यंतरे आयुष्यनी परिसमाप्ते; ते प्रदेशथकी अनंतर एटले आंतराविना तेज प्रदेशनी पासेना बीजा आकाश प्रदेशे जइने मरण पामे.॥५९॥ एम तरतम योग त्रीजा प्रमुख प्रदेशने संयोगे, निश्चयथी ज्यांसुधी सर्वाकाश प्रदेश एकेक केडावेडेनो प्रदेश लेतां छेला आकाश प्रदेशे मरण पामे. एरीते क्रमेकरी, सर्व लोका

काशना प्रदेशो निश्चेथी अनुक्रमे मरण पामी बूटे, तेवारे सूक्ष्म क्षेत्रपुज्ञलपरावर्त्त थाय.

हवे बादर काल पुज्ञल परावर्त कहेबे. मूलः—उसप्पिणीइसमया, जावइया तेइनिय यमरणेण ॥ पुठाकमुक्कमेणं, कालपरट्टो नवे थूलो ॥ ६१ ॥ अर्थः—इहां अवसर्प्पिणी नां उपलक्षणथकी, उत्सर्प्पिणी पण लेवी; एटले उत्सर्प्पिणी, तथा अवसर्प्पिणी ए बेउना जेटला समय थाय, तेटला सर्व समय एक जीव निययके० पोताने मरणे करी, आगल पाबल करतां पुठाके० फरसे, तेवारे बादर काल पुज्ञल परावर्त्तथाय.

हवे सूक्ष्म काल पुज्ञल परावर्त कहेबे. मूलः—सुहुमो पुणउसप्पिणि पढमे सम यंमि जइ मउहोइ ॥ पुणरवि तस्साणंतर, बीए समयंमि जइ मरइ ॥ ६२ ॥ एवंतरतम जोएण सव्वसमएसु चेव एएसु ॥ जइ कुणइ पाणचायं, अणुक्कमेणं नणुगणि ज्ञा ॥ ६३ ॥ अर्थः—सूक्ष्मकाल पुज्ञलपरावर्त वलीआवीरीते थाय; के अवसर्प्पिणीने उत्सर्प्पिणीना समय मांहेला पहेला समयनेविषे जे एक जीव मरण पाम्यो होय, तेज जीव, पुणरविके० वली जेवारे ते समयथकी अनंतर बीजा समयनेविषे मरण पामे. तेमज त्रीजा समयनेविषे, एम तरतमयोगे करी, सर्व समयोनेविषे, जे जीव प्राण त्यागकरे; इहां पण समयनुं अनुक्रम गणिये; तेवारे सूक्ष्म काल पुज्ञल परावर्त थाय.

हवे नावथी बादर अने सूक्ष्म ए बन्ने पुज्ञल परावर्त्त कहेनार बतो, प्रथम अ नुनाग बंधस्थाननुं, परिमाण कहेबे. मूलः— एगसमयंमि लोए, सुहुमगणिजिया उजे उपविसंति ॥ ते हुंतिसंखलोय, पएसतुल्ला असंखिज्ञा ॥ ६४ ॥ तत्तो असंखगुणि या, अगणिक्कायाउतेसिकायठिउ ॥ तत्तो संजम अणुनाग बंधठाणाणसंखाणि ॥ ६५ ॥ अर्थः— एक समयनेविषे लोक शब्दे, जगत्रयमां, पृथ्वी कायिकादिक जीवो; अ ने बादर तेऊकाय जीव पण, सुहुम गणिजीयाउ; इहां प्रथमा विनक्ति ते सप्त मीने अर्थे बे, तेथी सूक्ष्म अग्नि कायिक जीवोनेविषे, जेटला पविसंतिके० उपजे, तेने हवे असंख्येयपणुं कहेबे. तेहुंतिके० ते असंख्येय लोकाकाश प्रदेश राशी प्रमाण थाय. इहां जे कोइ पृथ्व्यादिक थकी अथवा बादर तेऊकाय थकी, सूक्ष्म तेऊकायपणे, उपजे ते लेवुं. परंतु प्रथम उपन्या जे तेऊकाय तेज, वली तेवा पर्यायपणे उपजे, ते पूर्वप्रविष्टपणा थकी लेवा नही. सर्वस्तोक इहां एक समयोत्पन्न सूक्ष्म, अग्निकाय जीवो, तत्तोत्ति एटले ते एक समयने विषे उपना जे सूक्ष्म अग्निकाय जीवो तेथकी वली असंख्यात गुणे अधिक सुक्ष्म, अग्निकाय जीवो, पूर्वोत्पन्न जाणवा. केमके एक समये असंख्याता उपजे, तेथीवली अंतर मुहूर्त्तना समय जोइये तो एक समयथकी अंतर मुहुर्त्तोत्पन्न अग्नि कायिया जीवो.

घणा थाय. ते जीवोथकीवळी ते अग्निकायजीवोनीकाय स्थितिघणी थाय. कारणके सूक्ष्म अग्निकायिउजीव एक उपन्यो, ते पण अंतर मुहूर्त्त जीवतो रहेछे; अने तेज कायस्थितिए, ते जीव असंख्याति, उत्सर्प्पिणि अवसर्प्पिणिसुधी रहेछे; तेथकी वळी संयम स्थानकना अनुभाग बंधस्थानक; ते प्रत्येके असंख्येयगुणे अधिक जाणवा. केमके कायस्थितिनेविषे, असंख्याता स्थितिबंधना, सद्भावथकी अने एके कायस्थितिबंधनेविषे, असंख्येय अनुभागबंधनां स्थानक पामिये. अने संयमस्थान तेपण अनुभागबंधस्थान जेटलांजछे. तेमाटे इहां तेनुं ग्रहण कीधुं.

हवे अनुभागबंध स्थान ते शुं कहिये? तेनो शब्दार्थ कहेछे, एनेविषे जीव रहे, तेमाटे स्थान कहिये; अनुभाग बंधनुं स्थान ते अनुभागबंधस्थान कहिये. इहां ए भाव जे एक पण कषायने अध्यवसाये लीधा जे कर्मना पुद्गल ते विवक्षित एक समय नेविषे, बांध्यो जे रसनो समुदाय तेने, अनुभागबंधस्थान कहिये. ते हवे अनुभागबंधस्थान, ते असंख्येय लोकाकाश प्रदेशप्रमाण. अने अनुभागबंधस्थान ना नीपजावनारा कषायना, उदयरूप जे अध्यवसायना विशेष, तेपण अनुभागबंधनां स्थानक कहिये. केमके कारणनेविषे कार्यनो उपचार करिये. ते अनुभागबंधना, अध्यवसाय पण असंख्येय लोकाकाशप्रदेशप्रमाण होयछे. ॥६४॥ ६५॥

हवे बे भेदनो पुद्गलपरावर्त्त भावथी देखाडेछे. मूलः— ताणिमंतरेणजया, पुट्ठाणिकमुक्कमेण सव्वाणि ॥ भावम्मिबाय रोसो, सुहुमोय कमेण बोधव्वो ॥ ६६ ॥ अर्थः— ताणिके० ते सर्वे अध्यवसाय स्थानक आगल पाछल फरसी पूरा करे, तेवारे बादरभाव पुद्गल परावर्त्त थाय. अने जेवारे, सर्व जघन्य कषायोदयरूप अध्यवसाये वर्त्तमान छतो मरण पामे, तेवार पछी तेज जीव थोडो, अल्प काल अथवा अनंतो काल गये छते वळी प्रथमना सर्व जघन्य, कषायोदयरूप अध्यवसायस्थानकथकी, अनंतर बीजे अध्यवसायने स्थानके, वर्त्तमान छतो जे मरण पामे; तो ते गणतीमां लेवो. पण शेष उत्क्रम भावी, अनंता मरण वचमां थाय; ते गणतीमां लेवा नहीं. वळी एज रीते कालांतरे बीजा थकी, त्रीजे अध्यवसाये वर्त्तमान छतो मरण पामे; तो ते गणतीमां लेवो. परंतु वचमांनां मरण गणिये नही. एम अनुक्रमे सर्व अनुभाग बंध, अध्यवसायनां स्थानक, ते जेटले काले मरणे करी, स्पष्ट होय; तेटला कालविशेषे भाव सूक्ष्म पुद्गल परावर्त्त थायछे. इहां प्रथम बादरनी परूपणा ते सुखावबोधने अर्थे करीछे इतिगाथा द्वादशकार्थः.

अवतरणः— पन्नरसकम्मभूमीउत्ति एटले पन्नरकर्म भूमिनुं, एकशोने त्रेसठमुं

द्वार कहेछे. मूलः—भरहाइ विदेहाइं, एरवयाइं च पंच पत्तेयं ॥ भन्नंति कम्मभूमी, उधम्मजोगाउ पन्नरस ॥ ६७ ॥ अर्थः—कर्म जे कर्षण प्रमुख, अथवा मोक्षनुं अनुष्टानरूप जे कर्म; तेनी भूमिका तेने कर्मभूमि कहियें. ते भूमि पन्नरछे. भरत महाविदेह ने, ऐरवत. ए प्रत्येके, पांच पांचना सद्भाव थकी एने कर्मभूमि धर्मेने योगे, पन्नर कर्म्मभूमि कहियें. ॥ ६७ ॥ इतिगाथार्थः

अवतरणः— अकम्मभूमिउत्ती एटले अकर्म भूमिनी एकशोने चोसठमुं द्वार कहेछे. हेमवयं हरिवासं, देवकुरू तहय उत्तरकुरूवि॥रम्मयमेरन्नवयं, इय छभूमीउ पंच गुणा॥ ६८ ॥ एयाअकम्मभूमीउ, तीससय जुअल धम्मजणठाणं॥ दसविहकप्पमहद्दुम, समुब्भ भोगा पसिद्धाउ ॥ ६९ ॥ अर्थः— एक हेमवंत, बीजो हरिवर्ष, त्रीजो देवकुरू, तेमज चोथो उत्तरकुरू, पांचमो रम्यक् अने छठो ऐरवत ए एकेक भूमिका ने पांच गुणो करियें; तेवारे अकर्मभूमिना, त्रीस क्षेत्र थायछे. ते सयके० सदा युगलधर्मि एटले युगलिया जन तेहनुं स्थानक दश प्रकारनां कल्पद्रूम तेथकी उठ्यो जे भोग तेणेकरी प्रसिद्ध छे. परंतु त्यां कोइ कर्म नथी; माटे ए अकर्मभूमि कहियें. ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ इतिगाथाद्वयार्थ

अवतरणः—अठमयत्ति एटले आठमदनुं एकशोने पाशठमुं द्वार कहेछे. मूलः—जाइ कुल रूव बल सुय, तव लाभिस्सरिय अठमयमत्तो॥ एआइं चिय बंधइ, असुहाइं बहुंच संसारे ॥ ७० ॥ अर्थः—तेमां एक जाती ते माता संबंधिनी, तथा ब्राह्मणादिकनी. बीजुं कुल ते पिता संबंधी; उग्रादिक त्रीजुं रूप, ते शरीरनुं सुंदरपणुं. चोथुं बल ते शरीरनी सामर्थाइ, पांचमुं श्रुत ते अनेक शास्त्रनुं जाणपणुं. छठुं तप ते अनशनादिकनी सामर्थाई. सातमो लाभ ते इच्छित वस्तुनी प्राप्ति. अने आठमुं ऐश्वर्य ते प्रभुतापणुं. ए आठ मदे करी मत्त थयो छतो, जे जीव मातासंबंधीनो मद करे; ते भवांतरे हीन जाती थाय. वली विकट भवाटवीमांहे परिभ्रमण पण करे; एरीते शेष मद पण जाणवा. ॥ ७० ॥ इतिगाथार्थः

अवतरणः—डुन्निसया तेयाला, भेयापाणाइ वायस्सत्ति, एटले बशें ने तेतालीश भेद प्राणातिपातना तेनुं, एकशो ने छासठमुं द्वार कहेछे. मूलः— भूजल जलणा निलवण, बितिचउपंचिंदिएहिं नवजीवा ॥ मण वयण काय गुणिया, हवंति ते सत्तवीसत्ति ॥ ७१ ॥ एकासी ईसाकरण कारणाणुमइताडिया होइ ॥ सच्चियति कालगुणिया, दोन्निसया हुंति तेयाला ॥ ७२ ॥ अर्थः— पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति, बेंद्रि, तेंद्रि, चउरेंद्रि ने, पंचेंद्रि ए नव जीव कायने मन, वचन, अने

काया ए त्रणनी साथे, गुणाकार करिये; त्यारे नवेत्रिक सत्तावीस थाय. ॥ ७१ ॥ तेने वली करण, करावण अने अनुमतिये करी, त्रिगुणा करिये. तेवारे एक्यासी थाय. सद्भियके० तेवली अतीत, अनागत ने वर्त्तमान ए त्रणकाल साथे, गुण ता बशेंने तेताळीस थाय. ॥ ७२ ॥ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरणः– परिमाणं अठोत्तर सयंति एटले एकशोने आठ परिमाणनुं एकशो ने सडसठमुं द्वार कहेठे. मूलः–संकप्पाइ तिएणं, मणमाइहिंउ तहेव करणेहिं ॥ को हाइ चउक्केणं, परिणामेठोत्तरसयंच ॥७३॥ अर्थः–संकल्पशब्दे संरंज कहिये; आदि शब्द थकी समारंज, अने आरंज पण लेवो. एम संरंज, समारंज ने आरंज एत्रणने मन, वचन अने काय साथे गुणिये, तेवारे नव थाय; तेने करण करावण ने अनुमति ए त्रणसाथे गुणतां सत्तावीस नेद थाय. तेने क्रोधादिक चार कषाय साथे गुणतां, एकशो ने आठ परिणाम थायठे. इहां ए नावठे के प्रगटपणे थयो जे क्रोधनो परिणाम, तेथी आत्मा पोतानी कायाये करी, संरंज करे. तेमज मा नने परिणामे पोते करे, तेमज मायाने परिणामे पोतेकरे तेमज लोजने परिणामे पोते करे, ए रीते पोतेज करे तेना चार जंग थया; तेवाज कराववाना चार जं ग थाय. तेम वली अनुमोदनाए चार जंग थाय; ए त्रणे मली बार जंग थया, ते कायाथकी जाणवा. तेमज वचन थकी बार थाय; तथा मनथकी पण बार थाय; ते सर्वे मली संरंजना बत्रीश जंग थाय. तेम बत्रीश समारंजे थाय; तथा बत्रीश आरंजे थाय, सर्वे मली एकशो ने आठ परिणामथाय. ॥ ७३ ॥

हवे संकल्पादिकनुं स्वरूप कहेठे. मूलः–संकप्पोसंरंजो, परितावकरोजवे समा रंजो आरंजो उद्दवउ, सुद्धनयाणंचसव्वेसिं ॥ ७४ ॥ अर्थः–जे संकल्प ते संरंज, अने परितापनो करनार ते समारंज; तथा ज्यां प्राणीउने उपद्रव थाय ते आ रंज जाणवो. ए त्रण नेद, शुद्ध, नय, नैगम, संग्रह, अने व्यवहारने मान्यठे. ते शुद्ध, रूप, नय ए त्रण ठे. केमके कर्म्मेकरी, मलीन जे जीव, तेनो शोधन करे, तेमाटे शुद्ध नय. ते अनुयायि द्रव्यनो अंगीकार करे; ते कारणे जवांतरे की धांठे जे कर्म, तेनुं फल जोग माने अने धर्म देशनादिक प्रवृत्तियोगथकी तत्व वृत्ते शुद्ध थाय. तेमाटे ए त्रणनय शुद्ध ठे.

अने आगला चार नय ते अशुद्धठे; केमके ते मात्र पर्याय अंगीकार करेठे. अने पर्यायनो मांहोमांहे अत्यंत नेद, एमठतां कृतनाश दोष थाय. ते आवीरीते. मनुष्ये कीधुं जे कर्म ते देवता जोगवे, अने मनुष्यावस्थाथकी देवावस्था जूदीठे;

एम कस्याथकी मनुष्यपणे जे कर्म कर्युं तेनो अनाव थयो. केमके मनुष्यपणे ते कर्मनो उपनोग नथयो अने तेनुं फल नोगववामां, देवताने अणकस्यानो आगम थाय, ए अकृतागम अने कृतनाशादिक दोषना सद्भावथकी; धर्म, श्रवण, अनुष्ठानादिकनेविषे कोइ प्रवर्त्ते नही; एटला माटे, मिथ्यात्वशुद्धिनो अनाव थाय. ते अनावथकी ते शुद्धनय कहेवाय नही: अथवा शुद्धनयाणं इहां प्राकृतपणाथकी, पूर्व आकारनो लोप थयो; तेवारे सर्व अशुद्ध नयोने, ए संरंनादिक त्रण सम्मत छे. पण शुद्धनयने सम्मत नथी. तेमां प्रथमना त्रण नय, व्यवहारना अंगीकार थकी अशुद्ध अने आगला चारनय ते शुद्ध. निश्चयपणानाछे, माटे ते आश्रवाथकी आंही ए तात्पर्यछे के:-संरंनादि त्रणे, नैगमादिक त्रणे नयनेमान्य. अने रूजुसूत्रादिक, हिंसादिक विचार करतां, वाह्य वस्तुहिंसा अमान्य. तेनो मत एमछे जे आत्माज हिंसाध्यवसायने परिणत, तेज हिंसा पण मनुष्यादिक पर्यायनो, जे विनाश ते, हिंसा नथी. यतः "आया चेवउहिंसा" एवां वचनथी ते कारणे संरंनते तो हिंसा पण, समारंन ने आरंन तेने रूजुसूत्रादिक नयो ते, हिंसामाने नहीं. ॥७४॥ इतिगाथा द्यार्थ.

अवतरणः- बंनंअहदस नेयंति एटले ब्रह्मचर्यना, अढार नेदोनुं एकशो, अडशठमुं द्वार कहेछे मूलः-दिवा कामरइसुहा, तिविहं तिविहेण नवविहा विरई ॥ उरालिउवि तहा, तं बंनं अहदसनेयं ॥७५॥ अर्थः-दिवाके० स्वर्गनेविषे थयो, ते दिव्य. एटले वैक्रियशरीरसंबंधी कामिये, तेथी कामविषय तेनेविषे, रतिजे अनिष्वंग ते कामरति. तेहिज सुख, ते मने करी वैक्रियसंबंधी अब्रह्म करुं नहीं; बीजुं करावुंनही, त्रीजुं अनुमोदु नहीं. एम वचने करी पण त्रण नेद. तेमज कायाना पण त्रण नेद. एरीते नव प्रकारनी विरति तथा, वली उरालियके० औदारिक शरीरसंबंधी पण नवप्रकार थाय; मली अढार नेद थया. इतिगाथार्थ.

अवतरणः-कामाण चउवीसत्ति; एटले चोवीस प्रकारना कामनुं एकशोने उगणोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः-कामो चउवीसविहो, संपत्तो खलु तहा असंपत्तो ॥ संपत्तो चउदसहा, दसहा पुण होइ संपत्तो ॥७६॥ अर्थः-काम चोवीश प्रकारनो छे, तेमां प्रथम संप्राप्तने असंप्राप्तना नेदथकी, बे प्रकार छे. तेमां संप्राप्त ते, कामीजीवोने मांहोमांहे, संगमथी थाय. अने असंप्राप्त ते अनिलाषरूप जाणवो. तेमां संप्राप्त काम चउदप्रकारे, अने असंप्राप्त काम दश प्रकारेछे. ॥७६॥

हवे अल्प वक्तव्यता थकी प्रथम दशप्रकारे असंप्राप्त कहेछे. मूलः-तत्र असंपत्ता, चिंतातहसद्धसंनरणमेवा ॥ विक्कवयलज्जनासो, पमायउम्मायतप्नावे ॥७७॥

अर्थः—तत्रके० त्यां असंप्राप्तमांहे प्रथम भेद ते अर्थ जे अणदीठेली स्त्रीप्रमुख उ पर गुणने सांभरवे करी अभिलाष मात्र थाय. बीजो भेद चिंताछे. ते स्त्रीना रू पादिक गुण कहेवा, एवा अनुरागेकरी चिंतवे ते चिंता जाणवी. त्रीजो भेद श्र द्धा ते तेना संगमनो अभिलाष, चोथो संभरण ते जेनी साथे प्रीतिभाव थाय. तेहुं रूप आलेखी जूवे; तेम तेम मनने प्रमोद उपजे, ते संस्मरण जाणवुं. पांचमो भेद विक्कवय, ते तेना विरहथी उत्पन्न थयला दुःखेकरी आहारादिक उपर निरपे क्षपणुं थाय. छठो लज्जानासो, एटले गुरु माता पितादिकना समक्ष पण तेना गु णनुं वर्णन करे. सातमो प्रमाद, ते तेनेज अर्थे सर्वकार्यनेविषे प्रवर्त्तवुं. आठमो उन्माद, ते शून्यचित्तपणे करी बोलवुं. नवमो तद्भाव, एटले जे थांभलो प्रमुखदे खीने जाणेके ए तेज स्त्रीछे; एवा भावथी तेने आलिंगन आपे. ॥ ७७ ॥

मूलः—मरणं च होइ दसमे, संपत्तं पिअ समासउ वोछं॥ दिठीए संपाउ, दिठीसेवा यसंभासो ॥ ७८ ॥ अर्थः—दशमो मरण एटले सर्वथा प्राणत्यागलक्षण कहिये. ते इहां न कहेवुं. केमके तेना केहेवा थकी शृंगाररसना भंगनो प्रसंग थायछे. तेथी इहां मरणतो नही पण मरणतुल्य अवस्था ते निश्चेष्टपणेकरी कांइ जाणे नहीं, एवो थइ रहेछे. ए दशमो भेद जाणवो. हवे संप्राप्तपणे तेना समाके० संक्षेपे करी चउदभेद कहुंछुं. तेमां प्रथम, दिठके० लोचन तेनो संपात ते आवीरीते जे, स्त्रीना नयन वदन कुचादिक देखी सराग दृष्टिये तेनी सन्मुख जोवुं, ते दृष्टिसंपात, बीजो दृष्टिसेवा, ते स्त्रीना हाव भाव तेणेकरी प्रधानपणे स्त्रीनी दृष्टिसाथे पोतानी दृष्टिनुं मेलववुं. त्रीजो संभासो, ते उचितकालनेविषे स्त्रीनीसाथे कंदर्पनी वातो करवी.

मूलः—तहसिअ ललिउव गूहिअ दंत नहनिवाय चुंबणं चेव॥ आलिंगण मादा णं, करसेवणा णंगकीडाय ॥ ७९ ॥ अर्थः—चोथो हसिय ते वक्रोक्ति पूर्वक हा स्यनुं करवुं. पांचमो ललित एटले पासा प्रमुखे करी रमत करवी. छठो उपगूढ, एटले आकरां आलिंगन आपवां. सातमो दंतपात एटले अधरनेविषे दांतना घात करवा. आठमो नहनिवाय एटले स्तनने विषे नखघात करवा. नवमो चुंबन ते मुखसाथे मुखनुं मेलववुं. दशमो आलिंगन ते लगारेक स्पर्श करवो. अग्यारमो आदान एटले स्तनादिकनुं ग्रहण करवुं. बारमो कर शब्दे सुरतना आरंभनो यंत्र चोराशी भेद जे वात्सायनशास्त्रमां प्रसिद्धछे ते करवा. तेरमो आसेवन, क्रियानो आरंभ करवो. चउदमो अनंग ते क्रीडा प्रमुख संभोग टालीने अनेरे अंगे अर्थनी क्रियानुं करवुं. ॥ ७९ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ.

अवतरणः– दसपाणत्ति एटले दश प्राणनुं एकशोने सीतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः–इंदिय बल ऊसासा, पाण चउछक्क सत्तअठेव ॥ इगविगल असन्नि सन्नी, नवदसपाणाय बोधव्वा ॥७०॥ अर्थः–इंद्रिय ते स्पर्शन, रसन, घ्राण, चक्षु, अने श्रोत्र लक्षण पांच जाणवी. मनोबल, वचनबल ने कायबल ए त्रण बल जाणवां ए आठ थया. नवमो श्वासोश्वास, दशमुं आयुष्य, ए दशमांहे अनुक्रमे एकेंद्रिने चार, बेइंद्रियने छ, तेंद्रियने सात, चउरेंद्रियने आठ, असन्नी पंचेंद्रियने नव, अने संज्ञीपंचेंद्रियने मनोबले सहित दश प्राण थाय, एनो भावार्थ सुगमछे. एरीते दश प्राण जाणवा. ॥७०॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरणः–दस कप्प डुमत्ति एटले दशप्रकारना कल्पवृक्षनुं एकशो ने एकोत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः– मत्तंगयायभिंगा, तुडियंगा दीव जोइ चित्तंगा ॥ चित्तरसामणियंगा, गेहागारा अणियणाय ॥ ७१ ॥ अर्थः– एक मत्तांगद बीजो भृगांग त्रीजो त्रुटितांग चोथो दीपांग, पांचमो ज्योतिरंग, छठो चित्रांग सातमो चित्ररस, आठमो मण्यंग, नवमो गृहाकार अने दशमो अणियणा. एनां ए सामान्यपणे नाम कहीने हवे विस्तारे सूत्रकार गाथाये करी वखाणेछे. ॥ ७१ ॥

मूलः– मत्तंगएसु मज्जं, सुहपेज्जं भायणाय भिंगेसु ॥ तुडियंगेसुय संगय, तुडियाइं बहुप्पयाराइ ॥ ७२ ॥ अर्थः–मत्त शब्दे मद तेनुं अंग के० कारण, जे मदिरा, तेने जे आपे तेने मत्तंगद कहिये. तेनेविषे जे मद थाय ते केवो थाय? जेने सुहपेज्जं के० सुखे पीजीये एटले पान करिये. इहां ए भाव जे मत्तांगद नामा कल्पवृक्षने विषे जे फल थाय, ते विशिष्ट, बल, वीर्य, अने कांतिना हेतु थाय. विस्रसा परिणामे सुगंध, अनेक प्रकारनी मनोहर मदिराये करी संपूर्ण एवां फल फूटी फूटी तेमांथी मदिरा झरे. बीजो भृतके० भरवुं तेनां अंगजे वासण, तेने जे आपेछे ते भृतांग कहिये. केमके भरवानुं काम वासण विना थाय नही. ते वासणनां संपादक जे वृक्ष ते भृतांग जाणवां. जेम इहां मणी कनक रजत प्रमुखनां अनेक प्रकारे भाजन देखायछे तेम विस्रसा परिणामे अनेक प्रकारना थाल, कचोला, कलसीया करवा प्रमुख भाजन तेणे करी शोभेछे. जेम अन्य वृक्षो फलेकरी शोभेछे तेम ए वृक्ष, भाजने करी शोभेछे. त्रीजु त्रुटित शब्दे वाजित्र, ते तूर्य प्रमुख, तेना अंग प्रतिकार तेने विषे संगत मांहोमांहे जेने. जेनो शब्द संबंधपणे होय. एम वीणा पमह कंसाल कायली प्रमुख फल तेणेकरी विराजमान ते त्रुटितांग कहिये.

मूलः– दीवसिहा जोइस नामगाय एएकरेंति उज्जोयं ॥ चित्तंगे सुयमल्लं, चित्तर

साजायणङ्गए ॥ ७३ ॥ अर्थः—इहां दीप, ज्योति ने चित्र ए त्रणेने आगल अंग शब्द जोडिये; तेवारे दीपांग ज्योत्यंग ने चित्रांग एवा शब्द थाय. तेमां दीपांग चोथुंछे, ते कहेछे. दीप शब्दे प्रकाशनो करनार पदार्थ जाणवो. जेम इहां दीवी सुवर्णमय घणा तेजथी अने शबलवाटे करी दीपती देखायछे. तेम विस्रसा परिणामे करी प्रबल अजवालुं करतां रहे ते वृक्ष दीपांग नामे जाणवां, एक आचार्य वली दीपकनी शिखानीपरे रह्यां थकां दीपतां देखायछे तेने दीपशिख वृक्ष एम पण कहेछे. पांचमो ज्योति शब्दे अग्नि तेतो सुषमसुषमाने विषे थाय नहीं. तेमाटे जे ज्षणने प्रकाशक वस्तु सूर्यना मांमलानी परे पोताना तेजे करी प्रकाश करे ते ज्योत्यंग नामे कल्पवृक्ष जाणवुं. छगो चित्र शब्दे, विवक्षा प्रधानपणाथकी माल्य तेनां जे अंग एने विषे माला ते अनेक प्रकारना सरस सुरजि कुसुमे करी निस्पन्न एवी थाय. तेथी ए चित्रांग नामा कल्पवृक्ष जाणवुं. सातमो चित्ररस शब्दे नानाप्रकारना रस जे मधुरादिक, ते अति विशिष्ठ दाल. शालि, घृत, पक्वान, तीमण अने विविध प्रकारना घोल प्रमुख अपरिमित स्वादिष्टगुणेकरी सहित, जे इंड्रियो तेने कारणे थाय. एटले इंड्रियोने बल अने पुष्टिनी वृद्धिना करनार महा मनोहर जे खाद्य जोज्य पदार्थ तेणेकरी जरेला जे फलनां मध्यजागो तेवा फले करी विराजमान थकांज सर्वदा रहेछे, तेनुं नाम चित्ररस कल्पवृक्ष कहिये. ॥ ७३ ॥

मूलः—मणियंगेसुयजूसण वराइजवणरुक्खेसु ॥ तह अणियणेसुधणियं, वत्थाइं बहुप्पयाराइ ॥ ७४ ॥ अर्थः—आठमो मणीशब्दे रत्न जाणवुं तेणेकरी प्रधान जे आजरण, तेनां अनेक प्रकारनां अंग जे कारण ते छे जेनेविषे, तेने मण्यंग कहिये. एने विषे वरके० प्रधानजूषण एवां अनेक प्रकारनां कटक केयूर कुंमल चूडा रत्न मुड्रिका प्रमुख आजरणना विशेष विस्रसा परिणामने पामी थाय. तेमाटे एने मण्यंग वृक्ष कहिये. नवमो गेह शब्दे घर कहिये, तेनी पेरे छे आकार जेनो, तेने कहिये गृहाकार, एवे नामे जे जुवनवृक्ष त्यां विस्रसाने परिणामे करी ने उंचा आवास तेना उपरे सुखे चडवाने अर्थे पावडीउं, विचित्र चित्रसाला युक्त तेमां अनेक प्रकारे गोखला जालि छाजा वलि, तोरण मंमप, पडसी तावरा ने फरसबंधी ए सहित तल तेणेकरी शोजायमानछे, तेने गृहाकार कहिये, अने जवन वृक्षपण कहिये. तहके० तेमज दशमो अणियणेसु कहेतां अणीयण कल्पवृक्ष तेनेविषे धणीयं के० अत्यर्थे वस्त्र धवलां प्रमुख अनेक प्रकारनां थाय. इहां ए जावजे एनेविषे विस्रसा परिणामे अतिसूक्ष्म सुकुमाल देवदूष्य समान

महामनोहर अत्यंत निर्मल कांतिनां धरनार एवां वस्त्र थाय. एनेविषे निवास करनार जे युगलिया ते नग्न क्यारे पण न थाय. तेथी बीजुं ए वृक्षनुं अनग्नक एवुं पण एनुं नामछे. ॥ ७४ ॥ इति गाथार्थ ए दश कल्पवृक्षनुं द्वार वखाएयुं.

अवतरणः–नरत्ति एटले सात नरकनां नाम अने गोत्रनुं एकशोने बहुतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः–घम्मा वंसा सेला, अंजणरिष्ठा मघायमाघवई ॥ नरयपुढवीण मानाइं, हुंति रयणाइं गोत्ताई ॥ ७५ ॥ अर्थः–घम्मा, वंशा, शैला, अंजना, रिष्टा, मघा अने माघवती ए सात नरक पृथ्वीनां नामछे. ते क्रमेकरी कह्यां. त्यांजे अर्थ रहित अभिधान ते नाम कहिये. अने रत्नप्रभादिक ए एनां गोत्र कहिये. केमके जे अर्थ सहित होय तेने गोत्र कहेछे. तेज आगली गाथाये देखाडेछे. ॥ ७५ ॥

मूलः–रयणप्पह सक्करपह, वालुअपह पंकपहनिहाणाउ ॥ धूमपहतमपहाउ तह महातमपहापुढवी ॥ ७६ ॥ अर्थः–प्रथम घम्मानामे पृथ्वी तेनुं रत्नप्रभा एवे नामे गोत्रछे. त्यां रत्न जे कर्केतनादिक तेनी प्रभा ते बहुल पणे ज्यांछे तेथी रत्नप्रभा कहिये. एम शेषना पण नामार्थ जाणवा. बीजी शर्कराप्रभा, त्रीजी वालुकाप्रभा; चोथी पंकप्रभा ए नामे गोत्र जाणवां. प्रभानुं बहुलपणु सर्वत्र कहेवुं. पांचमी धूमप्रभा, छठी तमप्रभा, तेमज सातमी महातमप्रभा पृथ्वी जाणवी. इहां तमनाम अंधकारनुं छे. ॥ ७६ ॥ इति गाथा द्वयार्थ.

अवतरणः–नेरइयाणआवासत्ति एटले नारकीना आवासनी संख्यानुं एकशोने तडतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः–तीसायपणवीसा पन्नरस दस चेव तिन्निय हवंति ॥ पंचूणसयसहस्सं, पंचेवअणुत्तरा नरया ॥ ७७ ॥ अर्थः–त्रीसलाख नरकावासा घम्मानेविषे, पचीसलाख वंसानेविषे, पन्नर लाख शेलानेविषे, दश लाख अंजनानेविषे, त्रणलाख रिष्टानेविषे, पांचेऊणा एक लाख एटले नवाणुं हजार नवशेंने पंचाणुं अधिक मघानेविषे, अने सर्वोत्कृष्ट माघवतीनेविषे, पांच ज नरकावासा जाणवा. इहां आयुष्य अने वेदना ते सर्वोत्कृष्ट छे तेना सद्भावथकी उत्कृष्ट शब्द कह्यो. ॥ ७७ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः–वेयणत्ति एटले साते नरकने विषे वेदना संबंधीनुं एकशोने चूमोत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः–सत्तसु खित्तसहावो, अणोन्नदिरया य जा छठी ॥तिसु आइमा सुवियणा, परमाहम्मि असुरयाय ॥ ७८ ॥ अर्थः–साते, नरक पृथ्वीने विषे, क्षेत्रस्वभाव एटले क्षेत्रथकी उत्पन्न थयेली जे वेदना ते थाय. बीजी अन्योअन्य मांहोमांहे उदीरि लीधेली वेदना ते बे प्रकारे थाय छे. तेमां एकतो प्रहर

एकरी नारकी मांहोमांहे वढवाड करे ते, प्रहरणनी करेली वेदना पांचमी नरक पृथ्वीसुधी थाय. अने बीजी शरीरनी करेली वेदना; छठी नरकपृथ्वीसुधी होय. अने आदिमके० धुरली त्रण पृथ्वीनेविषे परमाधामिक देवोनी करेली वेदना पण थायछे. इतिगाथार्थ ॥ ७७ ॥

अवतरणः—आउत्ति एटले नारकीना आयुष्यनुं एकशोने पंचोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—सागरमेगंतिअसत्त दसय सत्तरस तहय बावीसा ॥ तेत्तीसं जाव ठिई, सत्त सु पुढवीसु उक्कोसा ॥७७॥ अर्थः—प्रथम नरकपृथ्वी रत्नप्रजा छे. त्यां एक सागरो पमायु बीजीये त्रण सागरोपम, त्रीजीये सात सागरोपम, चोथीये दशसागरोपम पांचमीये सत्तर सागरोपम, तेमज छठीये बावीस सागरोपम, अने सातमीये तेत्री श सागरोपमायु जाणवुं. ए स्थिति सात नरक पृथ्वीने विषे उत्कृष्टि कही.॥७७॥

मूलः—जा पढमाए जेठा, साबीआ एक णिठिआ जणिआ॥तरतमजोगोएगो, दस वास सहस्स रयणाए ॥ए०॥ अर्थः—जे प्रथम नरके उत्कृष्टि स्थिति एकसागरो पमछे, ते बीजी नरके कनिष्ठ एटले जघन्य जाणवी. एम आगली नारकीओनेवि पण पाछलीए उत्कृष्टि स्थिति ते आगलीये जघन्य जाणवी. ए तरतम योग्य जा णवो. अने पहेली रत्नप्रजापृथ्वीए जघन्य स्थिति दशहजार वर्षनी जाणवी.

अवतरणः—तणुमाणंति एटलेशरीरना माननुं एकशोने छोत्तेरमुं द्वार कहेछे.मूलः— पढमाए पुढवीए, नेरइयाणं तु होइ उच्चित्तं॥सत्तधणु तिन्निरयणी,छच्चेवय अंगुला पु स्सा ॥ ए१ ॥ अर्थः—पहेली नरक पृथ्वीये नारकीओनुं उच्चपणु एटले देहमान, सात धनुष्यने त्रण रयणीके०हाथ, तथा छ आंगुल उपर एटलुं देहमान थायछे. एने अतिदेशे बीजी नरकपृथ्वीए पन्नर धनुष्य, बे हाथ ने बार आंगल, त्रीजीए, एकत्रीश धनुष्य ने एक हाथ, चोथीए साडीबाशेठ धनुष्य, पांचमीए सवासो धनु ष्य, छठीए अढीसे धनुष्य. ॥ ए१ ॥

मूलः—सत्तमपुढवीए पुण, पंचेव धणुस्सयाइ तणुमाणं ॥ मझिमपुढवीसु पुणो, अणेगहा मझिमं नेयं ॥ ए२ ॥ अर्थः—सातमी नरक पृथ्वीए वली पांचसे धनुष्य देहमानछे अने मध्यमपृथ्वीए तो वली जे पहेली पहेली पृथ्वीए देहमानछे, तेथी आगली आगली पृथ्वीए बमणुं बमणुं करतां उत्कृष्ट शरीर मान थाय. एम म ध्यम अनेक प्रकारेछे. ते प्रथम गाथाए देखाडयुं. ॥ ए२ ॥

हवे उत्तर वैक्रिय शरीर कहेछे. मूलः—जा जम्मि होइ जव धारणिज्ज अवगाहणा इ नरएसु ॥ सा डगुणा बोधवा, उत्तरवेउवि उक्कोसा ॥ ए३ ॥ अर्थः—जे नरक पृ

थवीए जे नवधारणिय अवगाहना थाय, तेने बमणी करीए तेवारे ते ते नरकने विषे उत्तरवैक्रिय तेटली जाणवी. ॥ ए३ ॥

मूलः—नवधारणिज्जरूवा, उत्तरवेउव्वियायनरएसु ॥ उगाहणाजहन्ना, अंगुलअ संखनागोय ॥ ए४ ॥ अर्थः—नवधारणीयरूप थकी, उत्तरवैक्रिय नरक नरकने विषे जघन्य अवगाहना अंगुलनो असंख्यातमो नाग ते उत्पत्ति समयनेविषेज होय.

अवतरणः—उप्पत्तिनासविरहोत्ति एटले उत्पत्ति नाश अने विरह कालनुं एक शो ने सीतोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—चउवीसयंमुहुत्ता, सत्त अहोरत्त तह य पन्नरस॥ मासोय दोय चउरो, छम्मासा विरहकालोउ ॥ ए५ ॥ अर्थः—प्रथम नरक पृथ्वीए चोवीश मुहूर्त्त विरहकाल जाणवो. एटले एक नारकी उपन्या पछी बीजो उपजे तेनी वचमां विरह पडे, तो एटलो पडे. एम बीजी नरके सात अहोरात्री, त्रीजीए पन्नर दिवस, चोथीए एक, मास, पांचमीए बे मास, छठीए चारमास अने सातमीए छमासनो विरह काल जाणवो. ॥ ए५ ॥

मूलः—उक्कोसो रयणाइसु, सव्वासु जहन्नउ नवे समउ ॥ एमेवयउवट्टण, संखा पुण सुरसवरातुल्ला ॥ ए६ ॥ अर्थः—ए उत्कृष्टथी रत्नप्रनादिकने विषे विरहकाल कह्यो, अने सव्वासुके० सर्व पृथ्वीने विषे जघन्यथी एक समय विरह काल थाय. एमेवके० एप्रकारे उद्वर्त्तना विरह तेपण एक नारकी उद्वर्त्या पछी विरहपडे तो; एटलोज जाणवो. अने ए उत्पत्ति तथा उद्वर्त्तनानी जे संख्या ते देवोनी परे जाणवी. ते इगडुति संखमसंखा, एगसमये हुंतिहुचवंति इत्यादिक जाणवुं. ॥ ए६ ॥

अवतरणः—लेसाउत्ति एटले नारकीनेविषे लेश्यानुं एकशोने अठोत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः—काऊकाऊ तहकाऊनील नीलायनील कन्हाय ॥ कण्हाय तहा एवं, सत्तसु पुढवीसु लेसाउ ॥ए७॥ अर्थः—पहेली पृथ्वीए कापोत लेश्या, अने बीजीए पण कापोत लेश्या, त्रीजीए उपरले नरकावासे कापोत लेश्या, अने नीचले नरकावासे नील लेश्या जाणवी. चोथीए नील लेश्या, पांचमीए उपरना नरकावासे नील अने नीचेना नरकावासे कृष्ण लेश्या, छठीये तथा सातमीए कृष्ण लेश्या छे; परंतु छठी थकी सातमीए अत्यंत कृष्ण लेश्या जाणवी. एरीते सात पृथ्वीने विषे लेश्या जाणवी.

अवतरणः— अविहित्ति एटले नारकीने विषे अवधिज्ञाननुं एकशो ने उगणएंसीमुं द्वार कहेछे. मूलः—चत्तारि गाउआई, अछुठाइंति गाउअं चेव ॥ अड्डाइज्जा दोणिवि, दिवड्ढमेगंच नरएसुं ॥ए८॥ अर्थः—पहेली पृथ्वीये चार गाउ अवधि ज्ञान थाय, एम बीजीए साडात्रण गाउ, त्रीजीए त्रण गाउ, चोथीए अढीगाउ,

पांचमीए बेगाउ, छठ्ठीए दोढगाउ, अने सातमीए एकगाउ. ए सात पृथ्वीए अ वधिज्ञान जाणवुं. एम बार गाथाए करी सात द्वार कह्यां. ॥ ए७ ॥

अवतरणः—परमाहमित्ति परमाधामिकना स्वरूपनुं एकशोने एंसीमुं द्वार कहे छे. मूलः—अंबे अंबरिसीचेव सामेया सबलेइयं ॥ रुद्दोव रुद्दकालेय, महाकालेत्ति आवरे ॥एए॥ असिपत्ते धणू कुंभी, वालूवेयरणीइय ॥ खरस्सरे महाघोसे, पन्नरस परमाहमिआ ॥ १०० ॥ अर्थः—अंब आदेदेइने पन्नर परमाधामिकनां नामछे; ते क्रियाने अनुसारे जाणवां. ते आवीरीते. पहेलो अंब ते नारकीउने हणे, नीचा पाडे, उंचा आकाशे उछाले. ए अंब कहिये. बीजो जे नारकीने हणीने कातरणी संभासी प्रमुखनी साथे कडका करी, भठ्ठीमां पकववा योग्य करे ते, अंबरीख; इहां आंबरीख ते भठ्ठी कहिये; तेना संयोग थकी एनुं नाम पण अंबरीख छे. त्रीजो, जे राढू प्रमुखने प्रहारेकरी सातन पातनादिक करे, अने ते वर्णे श्या म छे. तेमाटे एनुं नाम पण श्याम छे. चोथो जे आंतरडूं काढे; हैया अने कलेजानुं विदारण करे अने वर्णे सबल काबरो थाय ते सबल नामे जाण वुं. पांचमु जे शक्ति कुंत अने तोमर तेणेकरी नारकीउने परोवे ते रौद्रपणाना योगे तेनुं नामपण रौद्र जाणवुं. छठ्ठो जे नारकीउना अंगोपांग भांगी नाखे; ते वली अत्यंत रौद्रपणाथकी, एनुं नाम उपरौद्र जाणवुं. सातमुं, जे कडाइ मां तावडी प्रमुखमां नारकीउने पकावे, तेमज एनो वर्णपण कालो होय, ते थी एनुं नाम काल कहिये. आठमुं अपरके० बीजा नारकीना न्हाना खं डकरी खवरावेय ने वर्णेपण महाकाला होय तेमाटे एनुं नामपण महाकाल जाणवुं. नवमो असि शब्दे खड्ग तेना आकारे पत्र, तेने वनके० विकुर्वि, पछी तेनेविषे रह्याजे नारकी, तेने ते असिपत्रने पातेकरी तिलतिल जेटला खंमकरे; तेमाटे एनुं नाम पण असिपत्र छे. दशमुं, जे धनुष्य साथे मूकी अर्द्धचंद्रादिक बा णेकरी नारकीना कान नाक प्रमुखनुं छेदन करे; तेथी एनुं नाम पण धनुष्य छे. इहां श्री जगवतिमांहे महाकाल पछी असिपत्र पछी कुंभ कह्योछे. तेमां जे खड्गेकरी तेउने छेदे ते असि, अने जे कुंभादिकमां पकवे ते कुंभ, बारमा जे कदंब फूल ने आकारे अने वज्रना आकारना भाजनो तेमां वैक्रिय तप्तवेलुनेविषे चणानी परे नारकीने शेके, माटे एनुं नाम पण वालुक छे. तेरमुं, जे विरूपके० मातुं छे तर ण जेनुं, ते त्रांबु जेवुं तपाव्युं होय ते थकी पण महाकलकलति रक्त लोहिये भ रेली नदी विकुर्वि तेमां नारकीउने जे कदर्थना करे, तेथी एनुं नाम पण वेतरण

छे. चउदमुं जे वज्रकंटके व्याप्त शाल्मली वृक्ष, त्यां नारकीउने आरोपी पुराणावस्त्र नी परे महाखर स्वरे आरडताने खेंचे, तेथी एनुं नाम पण खरस्वर. पन्नरमुं जे नयथ कीबीहीता नासता आरडता नारकीउनेपशुनीपरे वाडामां घाले तेनुं नाम महाघोषछे.

एरीते ए पन्नर जातना परमाधामिक, ते पूर्व जन्मनेविषे जे महाक्रूर कर्मना करनार, पापनेविषे रक्तछतां पंचाग्नि साधनरूप मिथ्यात्व कष्ट तप करी, रौद्र असुर संबंधिनी गतिनेविषे उत्पन्न थायछे, तेथी एनो एवोज स्वनाव होयछे के ते धुरनी त्रण नरकपृथ्वीनेविषे उत्पन्न थयेला नारकोउने त्यां आवीने अनेक प्रकारनी वेदना उदीरेछे, अने जेम इहां मेष महिष कूकडादिकने फूकावता जोइ देखनार ने हर्ष थाय; तेम तेउपण त्यां नारकीउने कदर्थना थती देखी हर्षित थया थका चेलोत्क्षेप अट्टहासादिक करे. घणुंशुं? पण जे ते परमाधामिकोने नारकीउने संताप करतां प्रीति उत्पन्न थायछे; तेवी प्रीति ते मनोहर नाटकना जोवाथ की तथा अंगना संनमादिकथी पण न थाय. इतिगाथा छयार्थ. ॥एए॥१००॥

अवतरणः— नरउवट्टाणलद्धि संनवोत्ति एटले नरकथकी उद्धर्यांने जेजे लब्धी नो संनव होय तेनुं एकशो ने एक्यासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—तिसुतित्र चउत्रीए, केवलं पंचमीए सामन्नं॥ छहीए विरइविरइ, सत्तमपुढवीइसम्मत्तं॥१०१॥ अर्थः—प्रथम नी त्रण नरक पृथ्वीना आव्या नारकीउ, तीर्थंकरपणुं पामे, पण चोथी नरक ना आव्या, तीर्थंकर न थाय. परंतु केवल ज्ञान पामे, अने पांचमीना आव्या नारकीउ ते श्रमणपणुं एटले सर्व विरतिपणुं पामे, पण केवल ज्ञान न पामे. छहीना आव्या नारकी देशविरति अथवा अविरति श्रावक थाय, पण सर्व विरतिपणुं पामे नही. सातमीना आव्या सम्यक्त्वपणुं पामे परंतु श्रावकादिक नाव पामे नही.

वली इहां विशेष देखाडेछे. मूलः—पढमाउ चक्कवट्टी, बीयाए रामकेसवा हुंति॥ तच्चाउ अरिहंता, तहंतकिरया चउत्थीउ॥१०२॥ अर्थः—पहेली पृथ्वीना आव्या चक्रवर्त्ती थाय. बीजीना आव्या राम एटले बलनद्र अने केशव एटले वासुदेव तथा प्रतिवासुदेव थाय. त्रीजीना आव्या अरिहंत थाय. तेम अंतक्रिया एटले मुक्तिगामि; ते चोथी पृथ्वीना आव्या थायछे. ॥ १०२ ॥

मूलः—उवट्टिया उ संता, नेरइया तमतमाउ पुढवीउ॥ न लहंति माणुसत्तं, तिरिक्खजोणिं च उवणमंति॥१०३॥ अर्थः—तमतमा पृथ्वीथकी उद्धर्त्यां छतां एवा जे नारकी ते मनुष्यपणुं न पामे, पण तिर्यंचयोनी पामे. ॥ १०३ ॥

मूलः—छहीउ पुढवीउ, उवट्टा इह अणंतरनवंमि॥ नज्जा मणुस्स जम्मे, संजम

जाजेणउ विहीणा ॥१०४॥ अर्थः—छट्ठी नरकपृथ्वीथकी उद्धर्त्या थका जे होय तेनी इहां अनंतर जवनेविषे मनुष्यजन्म संबंधि जजनाके० जजना करवी. एटले कोइक मनुष्यपणुं पामे अने कोइक न पण पामे. कदाचित् मनुष्य थाय तोपण संयम पामे नही. ॥ १०४ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थः.

अवतरणः—तेसु जेसिं उववाउत्ति एटले नारकीनेविषे जे जीवोनुं उपजवुं था य तेनुं एकशोने ब्यासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—असन्नी खलु पढमं दोच्चंच सिरीसि वात इयपरकी ॥ सीहा जंति चउत्थिं, उरगा पुण पंचमी पुढवी ॥१०५॥ अर्थः—अ संज्ञी मरण पामी पहेली पृथ्वीए जाय. गर्जज सरीसृप गोह नोलियादिक बीजी पृथ्वीए जाय. पंखी त्रीजीए जाय. सिंह तथा तेना उपलक्षणथकी सर्व चतुष्पद चोथी पृथ्वीसुधी जाय. उरग सर्पप्रमुख ते वली पांचमी पृथ्वीसुधी जाय. ॥१०५॥

मूलः—छट्ठिंच इत्थियाउ, मच्छा मणुयाय सत्तमिं पुढविं ॥ एसो परमुववाउ, बोध व्वो नरयपुढवीसु ॥ १०६ ॥ अर्थः—छट्ठी पृथ्वीसुधी स्त्रीनुं जावुं छे. मच्छ अने मनुष्य जे कोइ अत्यंत क्रूर अध्यवसायना धरनार होय ते सातमी नरक पृथ्वी सुधी जायछे. ए सात नरकपृथ्वीनुं परमके० उत्कृष्ट उपपातके० उपजवुं जाणवुं.

मूलः—वालेसुय दाढेसु, परकीसुय जलयरेसु उववन्ना ॥ संखिज्जा उठिईया, पु णोवि नरयाउया होंति ॥१०७॥ अर्थः--व्याल ते सर्प्पादिक तेनेविषे, तथा दाढी ते सिंहादिकने विषे, अने परकीसुके० खेचरने विषे, अने जलचर ते मच्छादिकने विषे जे नरकथकी आवीने उपन्या होय, तेपण जे संख्याता वर्षायुष्यनी स्थिति वाला होय ते क्रूर अध्यवसायना वशथकी पंचेंद्रियना वधपणाने योगे वली नरकनुं आयुष्य बांधी नरकमांज उपजे. ॥१०७॥ इतिगाथा त्रयार्थः.

अवतरणः—संखाउप्पजंतंताणंति एटले एक समयने विषे केटला नारकी उपजे ते नुं एकशो ने त्राशीमुं द्वार, तेमज उवट्टमाणाणंत्ति एटले एक समयनेविषे उद्वर्त्तमान ते नरकथकी एक समयनेविषे निकलतानी संख्यानुं एकशो ने चोरासीमुं द्वार ए बे द्वार नाश अने विरह कालनी गाथामां कह्यांछे, तेथी इहां कह्यां नथी.

अवतरणः—एगिंदियविगल सन्नि जीवाण कायठियत्ति एटले एकेंद्रिय, विक लेंद्रिय, अने संज्ञी जीव, ते पोतानीज कायनेविषे जेटलो काल रहे तेने कायस्थि ति कहिये. जेम, पृथ्वीकाय जीव मरणपामिने वली पृथ्वीकायमांज उपजे. ए कायस्थितिनुं एकशो ने पच्चासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—असंखो सप्पिणि सप्पिणीउ एगिंदियाणय चउन्हं॥ताचे वऊ अणंता वणस्सईएउ बोधवा॥१०८॥अर्थः—इहां काय

स्थिति ते संव्यवहारकजीव आश्री जाणवी. असंव्यवहारिकजीवोने तो अनादि एकज कायस्थिति होय तेथी मरुदेवादिकनी साथे व्यभिचार जाणवो नही. तथाच क्षमाश्रमणः॥तह्काय ठिईकाला दउवि सेसे पडुच्च किर जीवो॥नाणाइ वणस्सइणो, जे संववहार बाहिरिया ॥ १ ॥ अर्थः—जे असंव्यवहारिक जीवोने अनादि कायस्थितिछे, ते पण कोइक जीवने अनादि अपर्यवसान थाय. ते आवीरीते. जे जीव असंव्यवहारिक राशिथी निकळीने संव्यवहाराशिमां न आवे; अने कोइकने अनादि पर्यवसान, ते आवी रीते के, जे असंव्यवहारराशिथकी निकळीने संव्यवहारराशिमां आवे ते जाणवा.

इहां शिष्यपूछेछे के कहोने केवी रीते असंव्यवहारराशि मूकी संव्यवहारराशिमां पण आवे? तेने गुरु कहेछे के आवे. केमके, विशेषणवतीमां कह्युंछे. यडुक्तं सिझंति जेत्तियाकिरइह संववहार जीवरासीउ ॥ इत्तियणाइवणस्सइ, रासीउ तत्ति आतम्मि ॥१॥ इहां ए नावछे के, जे जीव असंव्यहारराशिमूकीने संव्यवहार राशिमां आवी सीजे; परंतु तोपण संव्यवहारराशिमांहे तेटलाज. जेने पृथ्व्यादिकनो व्यवहार प्राप्त थयो ते व्यवहारिक. अने जेओने एवो व्यवहार न होय ते जीव असंव्यवहारिक जाणवा. अने जे व्यवहारराशिमां एकवार आवी वळी निगोदमां जाय ते व्यवहारराशिमां पडचा तेथी तेने संव्यवहारिकज कहिये.

हवे सूत्रार्थ कहेछे. असंख्याता लोकाकाश, प्रदेश, अपहार, प्रमाण क्षेत्रे असंख्याति उत्सर्प्पिणीने अवसर्प्पिणी प्रमाण एकेंद्रिय पृथ्वी, अप, तेज वायु रूप चारेने कायस्थिति थाय. ताचेवक के० तेज उत्सर्प्पिणी अवसर्प्पिणी ते अनंति वनस्पतिनी पण कायस्थिति जाणवी. इहां चेव ए पद पूर्णार्थछे.॥१०७॥

मूलः— वास सहस्सा संखा, विगलाणठिईउ होइ बोधव्वा ॥ सत्तट्ठनवाउ नवे, पणिंदितिरिमणुय उक्कोसा ॥ १०७ ॥ अर्थः—संख्याता सहस्रवर्ष विकलेंद्रियनी कायस्थिति थाये. तथा सात आठ नव ते पंचेंद्रिय तिर्यंच अने मनुष्यने कायस्थिति थाय. ए उत्कृष्टथी कायस्थिति कही. ॥१०७॥ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—एगिंदियविगलसन्नी ए नवठियत्ति एटले एकेंद्रियादिक जीवोनी नवस्थितिनुं एकशोने उगाशीमुं द्वार कहेछे. मूलः—बावीसई सहस्सा, सत्तव सहस्स तिन्नि होरत्ता ॥ वाए तिन्नि सहस्सा, दसवाससहस्सिया रुक्का॥११०॥ अर्थः—बावीशसहस्र वर्ष पृथ्वी कायिकजीवनी नवस्थिति जाणवी. अने अपकायिक जीवनी सातहजार वर्ष, अग्निकायनीत्रण अहोरात्री, वायुकायजीवने त्रण हजार वर्ष, अने वनस्पतिकायने दशहजारवर्ष नवस्थिति जाणवी. ॥११०॥

मूलः– संवछराइं बारस, राइंदिय होंति अउणपन्नासं ॥ छम्मास तिन्निपलिया, पुढवाईणं वि उक्कोसा ॥१११॥ अर्थः–बारवर्ष बेंड्रियने, राइंदियके० रात्रदिवस ते उंगणपचाश दिवश तेंड्रियने जाणवा. चउरेंड्रियने छ महीना, अने पंचेंड्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यने त्रण पल्योपम ए पृथ्वी आदेदेइ सर्व जीवोनी उत्कृष्टि आयुस्थिति कही; परंतु ए निरूपद्रव्य स्थानके जे रह्याछे प्रवाहे तेने जाणवी. ॥१११॥

पृथिविकायने विषे श्लक्ष्णादिकने जूदो जूदो विशेष देखाडेछे. मूलः–सण्हाय सुद्ध वालुय, मणोसिला सक्कराय खरपुढवी ॥ एकं बारस चउदस, सोलस अढार बावीसा ॥ ११२ ॥ अर्थः–श्लक्ष्ण नाम पृथ्वी जे सपाट मारवाड प्रमुखनी तेने एक हजार वर्ष अनुक्रमे छ बोलने छबोल लगाडवा. शुद्ध शब्दे सूधी सुंवाली अने कोमल माटी तेने बारहजारवर्ष. वालूका शब्दे वेलू तेनेचौद हजार वर्ष, मणसिलने सोलहजारवर्ष, अने शर्करा शब्दे नानी कांकरी तेनेविषे अढार हजारवर्ष. खर पृथ्वी मोटी जे शिला पटादिक तेनी बावीशहजार वर्ष स्थिति जाणवी. ॥११२॥ इतिगाथा त्रयार्थ.

अवतरणः–एएसिंतणु माणंति एटले एना शरीरना माननुं एकशोने सत्याशीमुं द्वार कहेछे. मूलः– जोयण सहस्स महियं, उहिय एगिंदिए तरुगणेसु ॥ मछजुअले सहस्सं, उरलेसुय गप्नजाईसु॥११३॥अर्थः–हजारयोजन जाजेरुं सामान्यपणे एकेंड्रियनेविषे अने विशेष चिंताए तरुगणेसुके० प्रत्येक वनस्पतिनेविषे जाणवुं. पण ते समुद्रमांगो तीर्थादि गत वेली कमल अधिकरीने जाणवुं. केमके अनेरे स्थानके एटला उदारिकशरीरनो असंन्नवछे माटे.

तेमज मछनुं युगल जे गर्प्नज समूर्छिम लक्षण तेनेविषे पण हजारयोजननुं थाय. उरगपरिसर्पनेविषे एक हजारयोजन शरीरमानछे. पण ते गर्प्नजने होय. इहां शरीरमान उत्सेधांगुले कह्युंछे. अने समुद्र पद्मद्रहादिकमांहेला पाणीनुं मान ते प्रमाणांगुले थाय तेवारे प्रमाणांगुलने उन्नपणे, उत्सेधांगुलनी अपेक्षाए अत्यंत दीर्घपणुं होय. एवी आशंका निवारवाने अर्थे सूत्रकार कहेछे.॥११३॥

मूलः–उसेहंगुल गुणिअं, जलासयंजमिह जोयण सहस्सं ॥ तब्नुप्पन्नं नलिणं, विसेयं जणिय माणंति ॥ ११४ ॥ अर्थः–उत्सेधांगुलेकरी गणितपणे कह्यां जे हजारयोजन प्रमाण जलाश्रय, तेनेविषे उपन्युं जे नलिन कमल, ते जणितमान हजारयोजन जाजेरुं जाणवुं. एटले हजार योजन जलाश्रय छते कमल बाहेर रहे तेटलुं जाजेरुं कह्युं.॥११४॥

मूलः—जंपुण जलहिं दहेसुं, पमायण जोयण सहस्समाणेसुं॥उप्पज्जइवर पउ मं, तं जाण सुनूविया रंति ॥११५॥ जे कारणे समुद्र द्रहादिकनेविषे प्रमाणांगुले करी हजारयोजन प्रमाण पाणीमांहे उपजे जे वरप्रधान कमल, तेम श्रीदेविनो निवास कमल. ते तुं जाण, नूके० पृथ्वीनो विकार पण, वनस्पतिकाय न थाय.

अनेरां पाणीनां जे आश्रय, जेनेविषे उपद्रव नथी,एवा कोइकस्थानकनेविषे कह्या जे वेलि लता प्रमुख ते यथोक्त मान हजारयोजन जाजेरा तेणेकरी सहित जाणवा.

मूलः—वणणंतसरीराणं, एगनिल सरीरगं पमाणेणं ॥ अनलोदग पुढवीणं, अ संखगुणिया नवे वुड्ढी ॥ ११६ ॥ अर्थः—सूक्ष्म वनस्पतिनां अनंतां शरीर ए कठां करिए; तेवारे एक वायुकायनुं शरीर थाय. एम अनल शब्दे, तेउकायिक, दग ते अपकायिक पृथ्वीकायिकनी असंख्यात गुणि वृद्धि थाय. ते आवीरीतेः— असंख्यातां वायुकायनां शरीर एकठां करीए; तेवारे एक तेजसकायिक थाय. अ संख्याता तेजसकायिक प्रमाणे एक अपकायिकनुं शरीर थाय. असंख्याता अपका यिके एक पृथ्वीकायिकनुं शरीर थाय. ॥११६॥

हवे बेंद्रियादिकनुं देहमान कहेछे. मूलः—विगलिंदियाण बारस, जोयणा णि तिन्निचउरको साय ॥ सेसाणोगाहणउ, अंगुल नागो असंखिज्जो ॥ ११७ ॥ अर्थः—विकलेंद्रियमां, बेंद्रियने बार योजननी अवगाहना; अने तेंद्रियने त्रण को शनी अवगाहना, चउरेंद्रियने चार कोशनी अवगाहना, अने शेषाण एटले शेष शब्दे पृथ्वी, अप, तेज, वायु साधारण वनस्पति, समूर्छिम मनुष्य, समस्त अपर्या प्ता. तेने उत्कृष्टे आंगुलनो असंख्यातमो नाग अवगाहना देहमान जाणवुं.॥११७

हवे पंचेंद्रियनुं देह मान कहेछे. मूलः—गप्न चउप्पय छग्गाउ आइ नुयगेसु गाउय पुहुत्तं ॥ पक्खीसुधणुपुहुत्तं, मणुएसुय गाउआ तिन्नि ॥ ११८ ॥ अर्थः—ग र्प्नज पंचेंद्रिय चतुःपद गाय, बलद, घोडा, हाथीनुं शरीर छ गाउ मान थायछे, अने नुजगपरिसर्प्प जे गोह नोलियादिक तेने बे गाउथी मांमी नव गाउसुधी एटले गाउ पृथक्त्व शरीर मान थाय. तेम पंखी जे खेचर तेने धनुष्य पृथक्त्व शरीर थाय. अने मनुष्यने विषे त्रण गाउनुं देह मान थाय. इति गाथा सप्तकार्थ॥

अवतरणः— इंदिय सरूव विसयत्ति एटले इंद्रियनुं स्वरूप अने इंद्रियनो विष य तेनुं एकशो ने अठयासीमुं द्वार कहेछे. मूलः—कायंब पुप्फगोलय, मसूर अ इमुत्तयस्स कुसमंव ॥ सोयं चक्खूघाणं, खुरप्प परिसंठिअं रसणं ॥ ११९ ॥ अर्थः—

इंद एवो धातु ऐश्वर्यनेविषे. ते कारणे ऐश्वर्यना योगथकी इंद्र आत्मा अने सकल द्रव्य. तेनी उपलब्धिरूप परम ऐश्वर्यनुं चिन्ह अविनाभाव ते इंद्रि कहि ये. तेना बे प्रकारछे. एक द्रव्येंद्रि. बीजी भावेंद्रि. तेमां द्रव्येंद्रिय ते निवृत्ति अ ने उपकरणना भेदथकी वली बे प्रकारेछे. तेमां, निवृत्ति ते जे विशिष्ट संस्थान नुं विशेष ते जाणवुं. तेपण वली बे प्रकारे छे. एक बाह्यसंस्थान ने बीजो अ भ्यंतर संस्थान. तेमां, बाह्य ते कान पापमी प्रमुख, ते अश्व गज ने मनुष्यना विचित्रतापणाथकी उपदेशी न शकिये. अने अभ्यंतर निवृत्ति ते, समस्त जीवने समान ते आश्रयी. सूत्रमांहे संस्थान विशेष कहिये. केवल स्पर्शनेंद्रियनी निवृ त्तें प्रवाहे बाह्य अभ्यंतरनुं विशेष नथी. तत्वार्थनी मूल टीकाने विषे तेमज कह्युंछे.

उपकरण ते जे खड्गस्थानीय बाह्य निवृत्तिनी जे धार समान निर्मलतर पुद्ग ल समूहे नीपनी, अने अभ्यंतरनिवृत्ति ते धारनी शक्ति विशेष जाणवी. ए उप करणरूप द्रव्येंद्रिय अंतरंग निवृत्तिथकी कोइकरीतें अर्थांतर शक्तिने शक्तिमंते कोइक एकरीते भेदछे. एम कोइएक रीते भेदथके पण छती जे अंतर निवृत्ते द्रव्यादिक उपकरणने विघातनो संभव देखाडेछे.

अंतर निवृत्ते छतिये कदंब पुष्पादिकनी आकृते अति कठोरतर मेहने गाज वादिके शक्तिने उपघाते जाणवुं. तेप्रत्ये प्राणीउ समर्थ होय. शब्दादिकने भावें द्रिय ते पण बे भेदेछे. एक लब्धि, बीजो उपयोग, तेमां लब्धि ते जे श्रोत्रेंद्रिया दिकनुं विशेष, सर्व आत्माना प्रदेशने तदावरण कर्मना क्षयोपशमथकी थाय: अने उपयोग. ते पोत पोताना विषयनेविषे लब्धिरूप इंद्रियने अनुसारे आत्मा नो व्यापार, ते श्रोतादिकना भेदथकी पांच प्रकारेछे. ते आवीरीते'—कायंब शब्दे कदंब नामे वृक्ष तेनां फूलने आकारे मांसनो गोलक रूप श्रोत्रेंद्रिय जाणवी. अने मसूर ते धान्यनुं विशेष, तेना आकारे चक्षुइंद्रिय जाणवी. अने अइमुत्तय शब्दे अतिमुक्तक वृक्षनां कुसुम समान नासिकाइंद्रि जाणवी; एम श्रोत चक्षु ने ना सिका ए त्रण अनुक्रमे कह्या. तथा छुरपलाने संस्थाने रसनेंद्रिय जाणवी.॥११ए॥

मूलः—णाणागारं फासिं,दियंतु बाहल्लउ यसव्वाइं॥अंगुल असंखभागं, एमेव पुहुत्त उ णवरं ॥१२०॥ अर्थः—जे कारणे शरीरना असंख्याता भेदछे ते कारणे णा णागारंके० अनेकप्रकारना आकारे स्पर्शेंद्रिय होय पण एक संस्थाने न होय अने बाहुल्यपणे तो सर्वे इंद्रिउ अगुलने असंख्यातमे भागे होय. तथा पुहुत्तके० जाड

पणे पण एमेवके० एटलुंज जाणवुं. नवरंके० रसनेंद्रियने स्पर्शनेंद्रियनो विशेष ते सूत्रकर्त्ता पोतेज आगली गाथाये देखाडेछे. ॥ १२० ॥

मूलः—अंगुल पुहुत्तरसणं, फरसंतु सरीरविछडंजणियं ॥ बारसहिं जोअणेहि सोयं परिगिएहए सद्दं ॥ १२१ ॥ अर्थः—अंगुल पृथक्त्व रसनेंद्रिय कही छे अने स्पर्शनेंद्रिय शरीरने विस्तारे कहीछे; हवे ए इंद्रिउनो विषय कहेछे. बारसहिंके० बारयोजननो आवेलो शब्द मेघनो गर्जना प्रमुखनो ते श्रोत्रेंद्रिय परिगिएहएके० सांजले, पण एथी अधिक सांजलवानुं श्रोत्रेंद्रियमां बल नथी. ॥१२१॥

मूलः—रूवं गिएहे चरक, जोयणलरकाउ सायरेगाउ॥गंधं रसंच फासं, जोयणनव गाउसेसाए ॥१२२॥ अर्थः—सातिरेक लाखयोजन एटले लाखयोजन फाफेरामां रहेलुं रूप ते कट कूटयादिकने अजावे चक्षुइंद्रिय जोइ शकेछे, ए अजासुर इव्य आश्रीने कहिये. अने जासुर इव्य प्रमाणांगुले नीपन्या ते एकवीशलक्षयोजन त्यांथकी दूर जे क्षेपा आंक ते सर्व देखेछे. उक्तंच. इगवीसं खलु लरका चउतीसंचेव त ह सहस्साइं ॥ पंच सया जणिया सत्त त्तीसाए अइरित्ता॥इइ नयण विसयमाणं पुस्करदीवछवासिमणुआणं ॥ पुव्वेणय अवरेणय पिहंपिहं होइनायव्वं ॥जेम पुष्कर वरद्वीपनेविषे मानुषोत्तर पर्वतने नजीक रहेलाछे जे मनुष्य, ते कर्क संक्रांते सूर्य नुं मांमलो देखेछे. अने गंधके० घ्राणेंद्रिय, रसनेंद्रिय अने स्पर्शेंद्रिय ए त्रणेइंद्रियो ते सातिरेक एटले नवयोजन फाफेराना आव्या गंधादिक लइ शकेछे॥१२२॥

हवे इंद्रिउनो जघन्य विषय कहेछे. मूलः—अंगुल असंखजागा,सुणंति विसयं जह सुउमोत्तुं ॥ चरकुं तं पुण जाणे, अंगुलसंखेज्जजागोउ॥१२३॥ अर्थः—चक्षुरिंद्रिय मुकीने बाकीनी चार श्रोतादि इंद्रियो जघन्यतो अंगुलना असंख्यातमां जागथकी पोतपोताना विषय जे शब्दादिक तेने जाणे, अने चक्षु इंद्रिय ते अंगुलना संख्या तमा जागथकी. जाणे इहां पृथक्त्व प्रमाण ते चार इंद्रियने आत्मांगुले करी जाणवो, अने स्पर्शनेंद्रियने उत्सेधांगुले जाणवुं. अने विषय परिणाम सर्व इंद्रियनो आत्मांगुले जाणवुं. ॥ १२३ ॥

अवतरणः—लेसाउत्ति एटले लेश्या संबंधी एकशोनेनेव्यासीमो द्वार कहेछे. मूलः—पुढवीआउवणस्सइ, बायरपरितेसु लेस चत्तारि॥गप्नयतिरियनरेसु,छल्लेसा तिन्नि सेसाणं ॥ १२४ ॥ अर्थः—इहां बादरशब्द प्रत्येके जोडिये. प्रत्येक वनस्पतिनुं स्वरूप जणाववाने अर्थे अने व्यजिचार न आववा सारुं वली पर्याप्त एवुं विशेषण तेपण सामर्थ्यथकी जाणवुं. अन्यथा प्रकारे तेजोलेश्यानो अजावछे; तेकारणे

बादर पर्याप्त पृथ्वीकाय, अपकाय, वली प्रत्येक वनस्पतिमांहे धुरली चार लेश्या थाय तथा गर्नज तिर्यंच अने नरके० मनुष्यनेविषे छ ए लेश्याउ जाणवी, अने शेष तेउकाय, वाउकाय, सूक्ष्म, पृथ्वी, साधारण वनस्पति, अपर्याप्ता बादर पृथ्वी, अप, प्रत्येक वनस्पति, बेइंद्रिय, तेइंद्रिय, चउरिंद्रिय, समूर्छिम पंचेंद्रिय, जे मनुष्य तथा तिर्यंच तेने धुरली त्रण लेश्या थाय इति गाथार्थ. ॥ १२४ ॥

अवतरणः–एयाणंजगइति एटले ए पूर्वोक्त जीवोनी ज्यां गतिथाय तेनुं एकशो ने नेवुमुं द्वार कहेछे. मूलः–एगेंदिअजीवाणं, जंति नरति रिक्खेसुजु अलवज्जेसु॥ अमण तिरियाविएवं, नरयंमिवि जंति ते पढमे ॥१२५॥ अर्थः–एकेंद्रियजीवो ते युगलिया वर्जीने बाकीना मनुष्य तथा तिर्यंचमांहे जाय पण युगलियामां नजाय. अने अमणके० मनरहित एवां जे समूर्छिम तिर्यंच, ते पण एमज जाणवां पण मात्र ते ते असंज्ञी प्रथम नरकपृथ्वीसुधी जाय छे. ॥ १२५ ॥

मूलः–तह संमुछिम तिरिया,नवणाहिव वंतरेसु गछंति॥जं तेसिं उववाउ,पलिया संखिज्जआउसु॥१२६॥ अर्थः–तेमज संमूर्छिम तिर्यंच ते नवणाहिवके० नवनपति अने व्यंतरनेविषे जाय,केमके तेनुं उपपातके० उपजवाने स्थानके पल्योपमना असंख्यातमा नाग जेटलुं आयु थवुं जोइये,ते तेनेविषे थाय. पण ज्योतिषमांनजाय.

मूलः–पंचेदिअतिरियाणं, उववाउ क्कोसउ सहस्सारे॥ नरएसु समग्गेसुवि, वियलाअ जुअलतिरिनरेसु ॥१२७॥ अर्थः–पंचेंद्रिय तिर्यंचनुं उपपातके० उपजवुं ते उत्कृष्ट आठमा सहस्रार देवलोक सुधीथाय. तेथी आगले योग्यताना अनावथकी उपजवुं थाय नही. तथा नरएसुके० साते नारकीनेविषे पण जाय; अने विकलेंद्रिय तथा युगलिया वर्जिने बाकीना बीजा तिर्यंच तथा मनुष्य तेमांहे पण उपजे.

मूलः–नरतिरिअसंखजीवी, जोइसवज्जेसु जंति देवेसु॥नियआउयसमहीणाउएसु इसाणअंतेसु ॥ १२८ ॥ अर्थः–मनुष्य तथा तिर्यंच जे असंख्याता वर्षनां आयुष्य वालां होयते इहां विशिष्ट खेचर जे तिर्यंच पंचेंद्रिय ते अंतरद्वीपना तिर्यंचने मनुष्य युगलिया जाणवा. ते ज्योतिषि वर्जिने शेष देवोमां उपजे; एटले जे देवलोकमां एना आयुष्य जेटलुंज आयुष्य होय, अथवा तेथी न्यून आयुष्य होय; एवा देवलोकमां उपजे पण अधिक आयुष्य वाला देवलोकमां उपजे नही. ते ईशान देवलोक सुधी उपजे पण आगल न उपजे. ॥ १२८ ॥

मूलः–उववाउ तावसाणं, उक्कोसेणं तु जाव जोइसिआ॥ जावंति बंनलोगो, चरग परिवाय उववाउ ॥ १२९ ॥ अर्थः–तापसोउ उपपातके० उपजवुं ते उ

त्कृष्टे ज्योतषी सुधी थाय. पण आगल न थाय. अने चरक ते धाडीनी भिक्षाना लेनारा, अने त्रिदंडि अथवा चरक अने कछोटीआ ते परिव्राजका अने कपिल मुनिना संतानिया जे चरकने परिव्राजकछे तेओनुं उत्कर्षथी उपजवुं यावत् पांच मा ब्रह्मदेवलोक सुधी थाय. ॥ १२९ ॥

मूलः—जिणवय उक्किठ तवे, किरियाहिं अजव्व जव्व जीवाणं॥ गेविज्जेणुक्कोसोगई जहन्ना जव तिवइसु ॥१३०॥ अर्थः—श्रीवीतरागना वचनने अनुसारे साधुगुणे करी सहित समस्त समाचारी अनुष्टाने युक्त, पण सम्यक्त्वथी रहित मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंग ना धरनार, अजव्य अने जव्य जीव तेने केवल क्रियाना प्रमाण थकी उत्कृष्टे ग्रैवेय कनेविषे उपजवुं थाय, अने जघन्यथी जुवनपतिनेविषे उपजवुं थायछे. ॥१३०॥

मूलः—छउमत्थ संजयाणं, उववाउक्कोसउ य सव्वठे॥ उववाय सावयाणं, उक्को सेणं चुउ जाव ॥ १३१ ॥ अर्थः—छद्मस्थ यतिनो उत्पात उत्कष्टथी सर्वार्थसिद्धि नेविषे थाय. श्रावकनुं उत्कृष्टथी अच्युत नामा बारमा देवलोकनेविषे उपजवुं थाय.

मूलः—उववाउ लंतगंमी, चउदस पुव्विस्स होइ जहन्ना ॥ उक्कोसो सव्वठे, सिद्धिगमो वा अकम्मस्स ॥ १३२ ॥ अर्थः—चौदपूर्वधरनो उपपात जघन्यथी छ ठा लांतक देवलोके थाय; अने उत्कृष्टथी सर्वार्थसिद्धिमां थाय. अथवा अकर्मक जे कर्मेकरी रहित थाय तेने मोक्षनी गति प्राप्त थाय. ॥ १३२ ॥

मूलः—अवराहिअ सामन्नस्स साहुणो सावयस्सविजहन्नो॥ सोहम्मो उववाउ, व यजंगे वणय राईसु ॥१३३॥ अर्थः—चारित्र ग्रहणना दिवसथी मांडीने जेने लगा रमात्र पण चारित्रनी विराधना थई न होय, एवा अविराधित श्रमणने, अने तेमज श्रावक पण जे दिवसथी देशविरतिपणुं पाम्यो छे; ते दिवसथी पोताना ग्रहण करे ला व्रतने शुद्ध पाल्युं होय ते श्रावकने पण जघन्यथी सौधर्मदेवलोके उपपात थाय; तथा पोतपोताना व्रतजंग थएला साधु तथा श्रावकने जघन्यथी जुवनप ति अथवा व्यंतरमां उपपात थाय; अने उत्कृष्टे ज्योतषिमां उपजवुं थाय. ॥१३३॥

मूलः— सेसाण तावसाईण, जहसुवंतरे सुउववाउ ॥ जणिउजिणेहि सो पुण नियकिरिय ठियाण विसुेउ ॥१३४॥ अर्थः—शेष जे तापसादिक छे तेओनो जघन्ये व्यंतरनेविषे उपपात थाय. एम श्रीतीर्थंकरदेवे जणिउके० कह्युंछे. ते वली नि जके० पोतपोतानी क्रिया जे मोक्षनुं अनुष्ठान, तेनेविषे जे निरत होय तेने थाय. परंतु हीणाचारीने न थाय; एम जाणवुं ॥ १३४ ॥ इति गाथादशकार्थ.

अवतरणः—एएसिंजुत्तो आगइत्ति एटले ए जीवोनी ज्यांथकी आगति एटले आव

वुं थाय तेनुं एकशो ने एकाणुमुं द्वार कहेछे. मूलः—नेरइय जुयल वज्जा ॥ एगिंदि सु इंति अवरगइ जीवा॥विगलत्तेणं पुण ते, हवंति अनिरय अमर जुयला॥१३५॥ अर्थः— नारकी अने जुगलिया वर्जी अनेरी गतिना जीवो एकेंद्रियनेविषे आवे. वली ते सर्वे विकलेंद्रियपणे उपजे, परंतु नारकी, देवता अने युगलिया वर्जीने बाकीना सर्व जीवो उपजे पण ए त्रणनो त्यां उत्पात न थाय. ॥ १३५ ॥

मूलः—हुंति हुअमण तिरिक्खा, नर तिरिया जुअल धम्मिए मोत्तुं॥गब्भ चउप्पय जावं, पावंति अजुअल चउगइआ ॥१३६॥ अर्थः—हुंतिके० होय. असंज्ञीमनुष्य ने तिर्यंच. ने मनुष्य तथा तिर्यंच युगलिया मूकीने गर्भज चतुःपद, एने ग्रहणे बीजा पण तिर्यंच पंचेंद्रियपणुं युगलिया मूकी चारेगतिना जीव पामे. ॥१३६॥

हवे मनुष्य संबंधी कहेछे. मूलः—नेरइया अमराविअ, तेरिक्खा माणवा य जायंति॥ मणुयत्तेणंवचित्तु जुअलधम्मियनरतिरिक्खे ॥१३७॥ अर्थः—नारकी, देवता, गर्भज तिर्यंच अने मनुष्य, चारे ए मनुष्यपणे उपजे. पण युगलधर्मि वर्जिने बाकीना उपजे. अने युगल धर्मि मनुष्य तथा तिर्यंच देवगतिमां उपजे॥१३७॥इतिगाथात्रयार्थ.

अवतरणः—उप्पत्ति मरण विरहोत्ति एटले उपजताने अने मरताने एक सामयिकादिक विरहकालनुं एकशो ने बाणुमुं द्वार अने जायत मरंत संखाउत्ति एटले उपजता ने मरतानी संख्यानुं एकशो ने त्राणुमुं द्वार; ए बे द्वार साथे कहेछे. मूलः—भिन्न मुहुत्ते विगलेंदियाण संम्मुछिमाण य तहेव ॥ बारस मुहुत्त गब्भे, सवेसु जहन्नउसमउ ॥ १३८ ॥ अर्थः—भिन्नके० कांइएक माठेरो अंतर मुहूर्त्त काल ते विकलेंद्रियने निरंतर उपजताने विरह पडे, तो एटलो विरह पडे. संमूर्छिमने पण तेमज जाणवुं. तथा बार मूहुर्त्त गर्भज पंचेंद्रिय तिर्यंचने उपजतां विरह पडे अने बीजा सर्वेजीवोने जो उपजतां अथवा मरतां विरह पडे तो जघन्यथी एक समयनो विरह पडे. ॥ १३८ ॥

मूलः— उव्वट्टणावि एवं, संखा समएण सुरवरतुल्ला ॥ नर तिरिय संख सवे,सु जंति सुर नारया गब्भे ॥१३९॥ अर्थः—उद्वर्त्तनानी पण उत्पत्तिनीपरे संख्या जाणवी एक सामयिकीप्रमुख. देवतानी परे जाणवी मनुष्य तथा तिर्यंच संख्याता आउखावाला सर्वेनेविषे उपजे. देवता नारकी गर्भजनेविषें देवता एकेंद्रिमां पण आवे उपजे.

मूलः—बारस मुहुत्त गब्भे, मुहुत्त सम्मुछिमेसुचउवीसं॥उक्कोस विरहकालो, दोसु विअजहणउ समउ ॥१४०॥ अर्थः—बारमुहूर्त्त गर्भजने उपपात विरह जाणवो. अने चोवीशमुहूर्त्त सम्मूर्छिमनविषे उपपात विरह जाणवो. ए उत्कृष्टे विरहकाल

कह्यो. अने जघन्यथी तो गर्भज समूर्छिमनेविषे एक समय उपपात विरह थाय.

मूलः—एमेवय उवट्टण, संखासमएण सुरवरुतुल्ला ॥ मणुएसुंउववज्जे, संखाउ यमोत्तुसेसाउ ॥१४१॥ अर्थः—उद्वर्त्तना पण एमेवके० एमज. जेम उपपात कह्यो तेनीपरेज जाणवी. एक समय आदिनी संख्याते देवताने तुल्य देवतानी परे मनुष्य नेविषे सर्वे उपजे. असंख्याताद्युष्क मनुष्य तथा तिर्यंचना उपलक्षणथकी सात मी पृथ्वीना नारकी, तेजकाय अने वायुकाय, मूकी शेष उपजे. इतिगाथा, चतुष्टयार्थ.

अवतरणः—नवण, वइवाण मंतर, जोयसिय, विमाण, वासि, देवाण, ठिइत्ति, एटले चतुर्विध देव निकायनी स्थितिनुं एकशो ने चोराणुमुं द्वार कहेले. मूलः—नवणवइवाणमंतर, जोइसियविमाणवासिणोदेवा ॥ दसअठपंचछव्वीस, संखजुत्ता कमेणइमे ॥१४२॥ अर्थः—नवनपति, व्यंतर, ज्योतषि अने वैमानवासि देव तेणे पूर्वेनवने विषे कीधोले पुण्यनो समूह, तेना योगथीपाम्याले विशिष्ट नोगसुख, तेणे करी जे दिव्यंतके० शोने, तेने देव कहीए. एना अनुक्रमे नेद कहेले. दशनुवनपतिना, एम आठ व्यंतरना, पांच ज्योतषिना, छवीश वैमानवासीनानेद, ए संख्याये संयुक्त होय.

हवे दशप्रकारे नुवनपतिले तेनां नाम कहेले. मूलः—असुरा नागा विज्जू, सुवस्र अग्गीय वाउथणियाय ॥ उदही दीवदिसाविय, दसनेयानवणवासीणं ॥ १४३ ॥ अर्थः—ए नुवनपतिने कुमारनीपरे क्रीडा प्रियले, तेथी ए सर्वे असुरादिक शब्दनी आगल कुमार शब्द जोडिये. तेवारे एक असुरकुमार, बीजो नागकुमार, त्रीजो विद्युतकुमार, चोथो सुवर्णकुमार, पांचमो अग्निकुमार, छठो वायुकुमार, सातमो स्तनितकुमार, आठमो उदधिकुमार, नवमो द्वीपकुमार अने दशमो दिशिकुमार ए दशनेद नुवनवासीना कह्या. ॥ १४३ ॥

हवे व्यंतरना नेद देखाडेले. मूलः—पिसाय नूया जरका, यरस्कसा किंन्नरा यकिं पुरिसा ॥ महोरगागंधव्वा, अठविहावाणमंतरिआ ॥ १४४ ॥ अणपन्नियपणपन्नि, इसिवायनूइयवाइएचेव ॥ कंदीय महाकंदी, कोहंमेचेव पयगेय ॥ १४५ ॥ अर्थः—एक पिशाच, बीजा नूत, त्रीजा यक्ष, चोथा राक्षस, पांचमा किंन्नर, छठा किंपुरिस, सातमा महोरग, अने आठमा गंधर्व, ए आठ प्रकारना वाणमंतर देव ले. त्यां एम ने मनुष्यपणाथकी विगतके० गयोले अंतर, तेमाटे व्यंतर कहिए. अने वनना आंतरानेविषे थया ते वाणमंतर जाणवा, मकार अलाक्षणीक ले, वली ए आ ठ नेद व्यंतरना अणपन्नी इत्यादिक नाम प्रगटले. ॥ १४४ ॥ १४५ ॥

मूलः— इयपढम जोयणसए, रयणाएअठवंतरा अवरे ॥ तेसुइहसोलसेंदा, रु

यगअट्ठोदाहिणुत्तरउ ॥ १४६ ॥ अर्थः–ए पिशाचादिकथी जुदा आठ व्यंतर निकाय, इयके० इहां रत्नप्रजाना प्रथमना शो योजनमां होयछे, तेनेविषे शोल इं द्र छे, ते मेरुने नीचली गोस्तनाकार रुचकछे तेने नीचले दक्षिण उत्तरने विजागे जाणवा. ॥ १४६ ॥

हवे ज्योतषिनुं स्वरूप कहेछे मूलः–चंदा सूरा य गहा, नरकत्तातारयायपंचइमे॥ एगेमलजोइसिया, घंटायाराथिरा अवरे ॥ १४७ अर्थः–चंड्मा, सूर्य, ग्रह, नक्ष त्र अने तारा ए पांच ज्योतषि जाणवा. तेमां एक जे मनुष्यक्षेत्रमांछे, ते चलज्यो तषि जाणवा. बीजा जे मनुष्यक्षेत्रथी बाहेरछे, ते बाधियाघाट, जेम एकस्थानके रहेछे तेनीपरे एकस्थानके रहेछे, ते माटे ते स्थिरज्योतिषी जाणवा. ॥ १४७ ॥

हवे वैमानवासी देवो, चार गाथायेकरी कहेछे. मूलः–सोहम्मीसाणसणं, कुमार माहिंद बंनलोयतहा ॥ लंतयसुक्कसहस्सार, आणयपाणयाकप्पा ॥ १४८ ॥ तह आरणच्चुआविहु, इगिहिगेविज्ञ वरविमाणाइं॥पढमंसुदरसणंतस्स, बीइयंसुप्पबद्धंति ॥ १४ए ॥ तइयंमणोरमंतह, विसालनामंचसव्वउनद्दं ॥ सोमणसंसोमाणस, मह पीइकरंच आइव्वं ॥ १५० विजयंचवजयंतं, जयंतअपराजियंचसव्वट्ठं ॥ एचमणुत्तर पणगं, एएसिचउविहसुराणं ॥ १५१ ॥ अर्थः–सौधर्म, ईशान, सनत्कुमार, माहें द्र, ब्रह्म, लांतक, शुक्र, सहस्रार, आनंत, प्राणत, आरण अने अच्युत ए बारने विषे कल्प एवी संज्ञाछे, इहां जे देवता उपजे तेने इंद्र, सामानिक अने त्राय त्रिंसक इत्यादिक समस्त ठकुराईनोकल्पछे; तेथी इहां उत्पन्न थया जे देव, तेने कल्पो पपन्न कहिये. अने हवे इगिहके० ग्रैवेयकना, वर प्रधान विमाणकहुंछुं. ते लोकना मा पुरुषनेविषे ग्रीवाके० कंठने स्थानकेछे, माटे ते ग्रैवेयक कहिये. तेमां प्रथम सु दर्शन, बीजो सुप्रज त्रीजो मनोरम तेमज चोथो विशाल, पांचमो सर्वतोजद्र छठो सोमनस, सातमो सोमाणस, आठमो प्रीतिकर अने नवमो आदित्य. हवे पांच अनुत्तर विमान कहेछेः–एकविजय, बीजुं विजयंत, त्रीजुं जयंत, चोथुं अपराजि त अने पांचमुं सर्वार्थसिद्ध. ए अनुत्तर एटले समस्तमांहे उत्कृष्ट पांच विमान जा णवां एएसिंके०ए चतुर्विध देवनिकायनां नाम कह्यां. ॥१४८॥१४ए॥१५०॥१५१॥

हवे स्थिति कहेछे. मूलः– चमर बलिसार महियं, सेसांण सुराण आउ अं वोहं ॥ दाहिण दिवड्ढ पलियं, दोदेसूणुत्तरिल्लाणं ॥ १५२ ॥ अर्थः–चमरेंद्र दक्षि णदिशिनो अने बलिंद्र उत्तरदिशिनो इंद्र. तेने अनुक्रमे चमरेंद्रने एक सागरोपम अने बलिंद्रने पल्योपमने असंख्यातमे जागे अधिक एक सागरोपमस्थिति जा

एवी. हवे शेष नवनिकायना देवोनुं आयु कहेछे. दाहिणके० दक्षिण दिशिवालाने दि वड्ढके० दोढ पल्योपम आयु अने उत्तर दिशिवालाने देशोन बे पल्योपम आयुजाणवुं.

भवनपतिनुं आयुष्य कहिने हवे भवनपतिनी देवि तथा व्यंतरनी देविनी स्थिति कहेछे. मूलः— अद्धुट्ठ अद्ध पंचम, पलिउवम असुरजुअल देवीणं॥ सेसवण देवयाणय, देसूणद्ध पलिय मुक्कोसं ॥ १५३ ॥ अर्थः—दक्षिणदिशिनी देविने साडा त्रण पल्योपम अने उत्तरदिशिवाली देविने साढाचार पल्योपम, ए अनुक्रमे असुर युगल, ते चमरेंद्र बलिंद्रनी देविनुं आयु कह्युं. अने शेष नागकुमारादिक इंद्रनी उत्तरदिशिनी देविउनुं देशोन पल्योपम आयु छे. तथा दक्षिण दशिनी देविनुं अनेउत्तर दक्षिणवर्त्ति व्यंतरेंद्रनी देविउनी अर्द्ध पल्योपम उत्कृष्टि स्थिति थाय. ॥ १५३ ॥

हवे भुवनपति अने व्यंतरनी देविउना आयुष्यनी जघन्य अने उत्कृष्टी स्थिति कहेछे. मूलः—दसभवण वणयराणं, वास सहस्सा ठिई जहन्नेणं॥ पलिउवम उक्कोसं, वंतरियाणं वियाणिज्जा ॥१५४॥ अर्थः—भुवनपति तथा व्यंतरनी देविने दशहजार वर्ष जघन्यस्थिति छे अने व्यंतर देवोनुं उत्कृष्टथी एक पल्योपम आयुष्य जाणवुं.

हवे ज्योतषिनी आयुस्थिति कहेछे. मूलः—पलिअस्सवरिसलरकं, ससीणपलियं रवीणससहस्सं ॥ गहणखत्तताराणं. पल्लियमद्धंचचउभागो॥१५५॥अर्थः—एकपल्योपम ने एकलाख वर्ष अधिक चंद्रमानुं आयुष्य जाणवुं. अने एक पल्योपम एक हजार वर्षें अधिक सूर्यनुं आयुष्य जाणवुं. हवे ग्रहादिकनुं अनुक्रमे आयुष्य कहेछे. तेमां ग्रह जे मंगलादिक छे.तेनुं एक पल्योपमनुं आयुष्य जाणवुं. अश्विन्यादिक नक्षत्रोनुं अर्द्ध पल्योपम आयुष्य जाणवुं. तारानुं एक पल्योपमनुं चतुर्थांश आयुष्य जाणवुं.

मूलः—तद्देवीणवितद्दिइ, अद्धंअहियअतमंतदेवडुगं ॥ पाउजहन्नमट्ठसु, तारीण तारीणमट्ठंसे ॥ १५६॥ अर्थः—चंद्रमानी देविनुं अर्द्धपल्योपम ने पचाशहजारवर्ष, सूर्यनी देविनुं अर्द्धोपल्योपम ने पांचशे वर्ष उपर, ग्रहनी देविनुं अर्द्धोपल्योपम. ए देवोनी स्थितिथी एमनी देविना आयुनी स्थिति अर्द्ध थइ. हवे अहियंके० अधिको अंत्यनी देवि छिकनो ते आवी रीते के, नक्षत्रनी देवितुं अने तारानी देविनुं, अनुक्रमे पल्योपमनो चोथोभाग अने आठमोभाग कांइक विशेषाधिक जाणवो. अने जघन्य आयुष्य ते पादके० पल्योपमनो चोथोभाग जाणवुं. अने तारा तथा तारानी देविनुं जघन्यथी पल्योपमनो आठमोभाग स्थिति जाणवी. यदुक्तं. चउजुअले च उभागो जहन्नमडभाग पंचमए इति वचनात्. ॥ १५६ ॥

हवे सर्व विमानवासिनी आयुस्थिति कहेछे. मूलः—दोसाहिसत्तसाहिअ,

दसचउदससत्तरेवअयराइ ॥ सोहम्माजासुक्को, तउवरिएक्केकमारोवे ॥ १५७ ॥ अर्थः—सौधर्मदेवलोके बे सागरोपम, ईशाने साधिक बे सागरोपम, सनत्कुमारे सातसागरोपम, महेंद्रे साधिक सातसागरोपम, इहां साधिक अथवा न्यून आवे ते सर्वत्र पल्योपमनो असंख्यातमो नाग अविशेष जाणवो. पांचमा ब्रह्मदेवलोके दशसागरोपम, छठे चउद, सातमे सतर, एटले सौधर्मदेवलोकथी मांमीने सातमा शुक्रदेवलोकसुधी आयुस्थिति कही. तेथकी उपरांतना देवलोके एकेक सागरोपम वधारीये. ते आवी रीते जे, आठमे अढार, नवमे ओगणीश, दशमे वीश, अग्यारमे एकवीश ने बारमे बावीश, प्रथमग्रैवेयके त्रेवीश, द्वितीयग्रैवेयके चोवीश, तृतीयग्रैवेयके पचीश, चतुर्थ ग्रैवेयके छव्विश, पंचम ग्रैवेयके सत्तावीश, षष्ठग्रैवेयके अठ्ठावीश, सप्तमिये ओगणत्रीश, अष्टमीये त्रीश, अने नवमीये एकत्रीश सागरोपम आयुस्थिति जाणवी. तेवारपछी विजयादिक चार अनुत्तर विमाननेविषे बत्रीश सागरोपम आयुस्थिति उत्कृष्ट जाणवी. ॥ १५७ ॥

मूलः—तित्तीसयरुक्कोसा, विजयाइसुछिइजहन्न इगतीसं ॥ अजहन्नमणुक्कोसो, सव्वठ्ठेअयर तेतीसं ॥ १५८ ॥ अर्थः—तेत्रीश सागरोपम सर्वार्थसिद्धिनी उत्कृष्टि स्थिति कही छे. हवे जघन्य अजघन्योत्कृष्ट स्थिति सर्वत्र देखाडेछे. विजय, विजयंत, जयंत ने अपराजित ए चारविमाने जघन्य एकत्रीश सागरोपम अने सर्वार्थसिद्धिविमाने तेत्रीश सागरोपम ते अजघन्योत्कृष्टस्थिति जाणवी. ॥१५८॥

मूलः—पलिअंअहिअंसोहम्मी, साणेसुंतउद्धकप्पठिई॥ उवरिल्लंमिजहन्ना, कमेणजावेक्कतीसयरा ॥ १५९ ॥ अर्थः—सौधर्मे जघन्यस्थिति एक पल्योपम, ईशाने पल्योपम जाजेरी, तउके० तेवार पछी अधके० नीचेना देवलोके जे उत्कृष्टि स्थिति छे; ते आगले देवलोके जघन्यस्थिति जाणवी. एम क्रमके० अनुक्रमे त्रीजे देवलोके बे सागरोपम साधिक जघन्य स्थिति, चोथे सातसागरोपम, पांचमे साधिक सात सागरोपम, एम यावत् विजयादिक चारनेविषे एकत्रीश सागरोपम जघन्य स्थिति जाणवी. अने सर्वार्थे तो जघन्य स्थिति नथी. ॥ १५९ ॥

हवे देविनी स्थिति कहेछे. मूलः—सपरिग्गहेयराणं, सोहम्मी साणपलिअसाहीअं ॥ उक्कोससत्तपन्ना, नवपण पन्नायदेवीणं ॥ १६० ॥ अर्थः—देवि बे प्रकारनी छे. एक तो परिगृहित, ते एकज धणीनी स्त्री जाणवी. अने बीजी, अपरिगृहित ते वेश्यानीपरे कोइना पण उपनोगमां आवे. हवे, सौधर्म देवलोके परिगृहित देविनुं आयुष्य उत्कृष्टे एक पल्योपम, अने ईशानदेवलोके परिगृहितनुं साधिक पल्योपम. ए

जघन्यस्थिति कही; अने उत्कृष्टथी तो सौधर्म देवलोके परिगृहित देविनी सात पल्यो पम अने अपरिगृहित देविनी पचाश पल्योपम आयुस्थिति छे अने ईशानदेवलोके परिगृहितदेविनुं उत्कृष्ट नव पल्योपम, तथा अपरिगृहित देविनुं उत्कृष्ट पचावन्न पल्योपम आयुछे. ए देविनी स्थिति कही. इति ॥१६०॥ गाथानवकार्थ.

अवतरणः—नवणत्ति एटले नुवन गृहसंबंधि एकशो ने पंचाशमुं द्वार कहे छेः मूलः— सत्तेवय कोमीओ, हवंति बावत्तरी सयसहस्सा ॥ एसोनवण समा सो, नवण वईणं वियाणिज्जा ॥ १६१ ॥ अर्थः—सातकोडीने बहोतेर लाख ए टलो नवननो समासके० संक्षेप ते नुवनपतिनो जाणवो. ॥ १६१ ॥

हवे जूदाजूदा देखाडेछे. मूलः—चउसट्ठीअ सुराणं, नागकुमाराण होइ चुलसी ई ॥ बावत्तरिकणगाणं, वाउ कुमाराण छन्नउई ॥ १६२॥ दीव दिसा उदहीणं, वि ज्जु कुमारिंद थणिय अग्गीणं ॥ छण्हपि जुअलिआणं, बावत्तरिमो सय सहस्सा ॥ १६३ ॥ अर्थः—चोशठलाख असुरकुमारनेविषे, तेमां चोत्रीशलाख चमरेंद्रनां दक्षिणदिशिए, अने त्रीश लाख बलिंद्रना उत्तरदिशाये. सर्व मली चोशठ लाख विमानछे. एज रीते चउचउलक्क विहुणा तावइया चेव उत्तरदिशाए एटले दक्षि णदिशाथकी उत्तरदिशाना विमान दर एकेका कुमारना ते चार चारलाख ओ छाछे. ए यथोक्त माने देखाडेछे. चोराशीलाख नागकुमारमां, बहोतेरलाख सुवर्ण कुमारमां, छन्नुलाख वायुकुमारमां ॥१६२॥ द्वीपकुमार, दिशाकुमार, उदधिकुमार विद्युतकुमार, स्तनितकुमार, अने अग्निकुमार, ए छ युगलनेविषे दक्षिण अने उत्तर ना विनागथकी प्रत्येके बहोतेर लाख विमान थाय. ॥ १६३ ॥

हवे व्यंतरनां विमान अने ज्योतिषिनां विमाननी संख्या कहेछे. मूलः—इह संति वणयराणं, रम्मान्नोमनयरा असंखिज्जा ॥ तत्तो संखिज्जगुणा, जोइसियाणंवि माणाउ ॥ १६४ ॥ अर्थः— इहां संतिके० छे. वनचर जे व्यंतर तेना रम्यके० म हामनोहर नूमिनेविषे छे तेथी नोम कहिये. एवा असंख्याता नगर व्यंतर देवो नांछे अने तेथकी पण असंख्यातगुणे अधिक ज्योतषिनां विमान छे. ॥ १६४ ॥

हवे विमानवासी देवोना विमानोनी संख्या कहेछे. मूलः—बत्तीसट्ठावीसा, बारस अट्ठ चउ विमाण लक्काइं ॥ आरेण बंनलोया, विमाण संखा नवेएसा ॥ १६५ ॥ अर्थः—बत्रीशलाख विमान सौधर्मे, एमज अठ्ठावीशलाख ईशाने, बार लाख सनत्कुमारे, आठलाख माहेंद्रे, चारलाख ब्रह्मदेवलोके. ए ब्रह्म देवलोक सुधी विमानना लाखनी संख्या थायछे. ॥१६५॥

मूलः—पंचास चत्त ठच्चेव, सहस्सा लंत सुक्क सहसारे ॥ सय चउरो आणय प्पा, एएसु तिसारणच्चुयउं ॥ १६६ ॥ अर्थः—पचाशहजार लांतके, चालीशहजार शुक्रे, ठ हजार सहस्रारे, चारशें आनत तथा प्राणत ए बेनेविषे, त्रणशें आरण ने अच्युत ए बेनेविषे. ॥१६६॥

मूलः—इक्कार सुत्तरंहिट्ठिमेसु, सत्तुत्तरंच मज्झिमए ॥ सयमेगं उवरिमए, पंचेव अणुत्तर विमाणा ॥ १६७ ॥ अर्थः—एकशो ने अग्यार विमान नीचला त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो ने सात विमान मध्यना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, अने एकशो उपरना त्रण ग्रैवेयकनेविषे, तथा पांच विमानज, पांच अनुत्तर संबंधी जाणवां.

ए सर्व विमानोने एकठां करवाथी जेटलां थाय ते कहेठे. मूलः—चुलसीय सय सहस्सा ॥ सत्ताण उईनवे सहस्साइं; तेवीसं चविमाणा, विमाण संखानवेए सा ॥ १६८ ॥ अर्थः—चोराशीलाख सत्ताणुंहजार ने त्रेवीश. ए समस्त विमान वासी देवोनां विमानो, संख्याये थायठे. ॥ १६८ ॥ इतिगाथाष्टकार्थः.

अवतरणः—देहमाणंति एटले देहमाननुं एकशो ने ठन्नुमुं द्वार कहेठे. मूलः—जवण वण जोइसोहम्मी, साणे सत्तहुंति रयणिउं ॥ एक्केक हाणि सेसं, डुडुगेय डुग चउक्केय॥१६९॥अर्थः—जवनपति, व्यंतर, ज्योतिषि, सौधर्म अने ईशान, एटलांने सात रयणीशब्दे हाथनुं शरीर मान होय. तेवारपठी एकेक हाथनी हाणी करीए. ते आवी रीते. सनत्कुमार अने माहेंद्रे ठ हाथ, ब्रह्म अने लांतके पांच हाथ; तेपठीना वली बे देवलोकनेविषे चार हाथ, आनतादिक चारनेविषे त्रण हाथ.

मूलः—गेविज्जेसुं दोस्सिय, एगारयणी अणुत्तरे सुजवे ॥ जवधारणिज्जिएसा, उक्कोसाहुंति नायव्वा ॥ १७० ॥ अर्थः—नव ग्रैवेयकनेविषे बे हाथ, अने पंचानुत्तर विमाननेविषे एक हाथनुं शरीर जाणवुं. ए जवधारणीय अवगाहना उत्कृष्टे जाणवी.

हवे सर्व देवोनो उत्तरवैक्रिय अवगाहना कहेठे. मूलः—सव्वसुक्कोसा, जोयणाण वेउव्विया सय सहस्सा ॥ गेविज्जणुत्तरेसुं, उत्तर वेउव्वियानत्थि ॥ १७१ ॥ अर्थः— सर्वदेवोनेविषे उत्तरवैक्रिय लक्षयोजन होय. अने ग्रैवेयक तथा अनुत्तरविमाने उत्तरवैक्रिय न थाय. केमके जे उत्तरवैक्रिय ते तो गमनागमनने अर्थे अने परिवारने अर्थे करवी पडे; तेनुं प्रयोजन ए देवोने नथी; तेथी तेने उत्तरवैक्रियनो अजाव कह्योठे. ॥१७१॥

हवे जघन्यथी कहेठे. मूलः—अंगुल असंखजागो, जहस जवधारणि ज्जपारंजे संखेवा अवगाहण, उत्तरवेउव्विया सावि ॥ १७२ ॥ अर्थः—जघन्यथकी जव

धारणीय शरीर प्रारंन्न काळे अंगुळनो असंख्यातमो नाग होय, अने अंगुलनो संख्यातमो नाग शरीरनी अवगाहना ते उत्तर वैक्रियनी थाय. इतिगाथा चतुष्टयार्थ

अवतरणः– लेसाउत्ति एटले लेश्यानुं एकशोने सत्ताणुमुं द्वार कहेले. मूलः– किण्हा नीला काऊ, तेऊलेसाय नवण वंतरिया ॥ जोइस सोह म्मीसाण, तेउ लेसा मुणेयव्वा ॥ १७३ ॥ अर्थः–कृष्ण, नील, कापोत अने तेजो; ए चार लेश्या वाळा नवनपति तथा व्यंतरदेवो होय तथा ज्योतिषि, सौधर्म ने ईशान ए तेजो लेश्यावंत जाणवा. ॥ १७३ ॥

मूलः–कप्पेसणं कुमारे, माहिंदे चेव बंनलोएय ॥ एएसुपम्हलेसा ॥ तेणपरं सुक्क लेसाउ ॥ १७४ ॥ अर्थः–सनत्कुमार, माहेंद्र ने ब्रह्म; ए त्रण देवलोकनेविषे पद्मलेश्या होय, अने तेथी आगले बीजा बधा देवलोके शुक्ललेश्या होय. इति गाथा द्वयार्थ. ॥ १७४ ॥

अवतरणः–उहिनाणंति एटले अवधि ज्ञानना माननुं एकशो ने अठाणुमुं द्वार कहेले. मूलः–सक्कीसाणापढमं, दोच्चंचसणंकुमार माहिंदा ॥ तच्चंव बंन लंत ग, सुक्कसहस्सार चउत्थि ॥ १७५ ॥ अर्थः–सौधर्म अने ईशानना देवता, नीचे प्रथमनरकपृथ्वीसुधी देखे. अने सनत्कुमार तथा माहेंद्रना देवो, बीजी पृथ्वी सुधी देखे. अने ब्रह्म तथा लांतक देवलोकना देवो, त्रीजीनरकपृथ्वीसुधी देखे, अने शुक्र तथा सहस्रारना देवता, चोथी नरक पृथ्वी सुधी देखे. ॥१७५॥

मूलः–आणय पाणय कप्पो, देवा पासंति पंचमिं पुढविं ॥ तंचेव आरण च्चु य, उहीनाणेण पासंति ॥ १७६ ॥ अर्थः–आनत अने प्राणत देवलोकना देव पांचमी नरकपृथ्वीसुधी देखे. वळी तंचेवके० तेज पांचमी पृथ्वीसुधी आरण्य ने अच्युत विमानवासी, देवो अवधिज्ञाने करी देखे. ॥१७६॥

मूलः– छठ्ठिहिठिम मझिम, गेविज्जा सत्तमिं चउवरिल्ला ॥ संनिन्न लोग ना लिं, पासंति मणुत्तरादेवा ॥ १७७ ॥ अर्थः–छठी नरकपृथ्वीसुधी हेठिमित्रक अने मध्यमत्रिक, ए बे त्रिक एटले छठी ग्रैवेयकसुधीना देवता देखे, अने सातमी नरक पृथ्वीसुधी उपरली त्रण ग्रैवेयकना वासी देवो देखे. तथा अनुत्तरविमानवासी जे देवो छे, ते सन्निन्नके०कांइक मातेरी पोताना विमाननी ध्वजाथी उपरांत न देखे. तेमाटे ध्वजाथी उपरांते कणी बाकी समस्त चउदराजलोकनी नालीसुधी देखे.

मूलः–ए ए सिमसंखिज्जा, तिरियं दीवाय सागरा चेव ॥ बहुयरं उवरिमग्गा, उड्ढंच सकप्पथूनाई ॥ १७८ ॥ अर्थः–एएसिंके० ए देवोने असंख्याता द्वीप अ

ने समुद्रसुधी. तिर्छो अवधिज्ञान होय. बहुलतरके० अत्यंत अधिक, ते जेम जे म उपरना देवो तेम तेम ते बहुलतर एटले घणुं देखे; अने उंचो पोताना विमाननी ध्वजा सुधीज देखे. ॥१७८॥

मूलः—संखिज्ज जोयणा खलु, देवाणं अद्धसागरेऊणे ॥ तेण परम संखिज्जा जहन्न यंपन्नवीसंतु ॥ १७९ ॥ अर्थः— जे देवोनुं अर्द्धसागरोपम मातेरुं आयु होय ते देवोने संख्याता योजनसुधी अवधि थाय, अने तेथकी अधिक जेनुं आयु होय, तेने असंख्याता योजननुं अवधिज्ञान थाय. जघन्यतो पचीश यो जन अवधिक्षेत्र थाय. ॥ १७९ ॥

मूलः—नवणवइ वणयराणं, उड्ढं बहुउ अहोय सेसाणं ॥ जोइस नेरईयाणं, तिरियं उरालिउचित्तो ॥ १८० ॥ अर्थः—नवनपति अने व्यंतरने उंचु अवधि घ णुं होय, अने शेष दिशिए अवधिनो विषय अल्प होयछे. अने शेष जे वैमानिक देवोछे, तेने नीचुं अवधि घणुं होय, अने ज्योतषि ने नारकीओने तिर्छो घणो होय, अने शेष दिशाओनेविषे थोडो होय. वली औदारिक तिर्यंच अने मनुष्यने अ वधि ते नानाके० अनेक प्रकारे होय. कोइकतो नीचुं घणुं देखे, कोइक उचुं घणुं देखे, कोइक तिर्छो घणुं देखे, इत्यादिक जाणवुं. ॥१८०॥ इतिगाथा षट्कार्थ.

अवतरणः— उप्पत्तिए विरहोत्ति एटले उत्पत्तिना विरहनुं एकशो ने नवाणुमुं द्वार कहेछे. मूलः—नवण वण जोइ सोहम्मी, साणे चउवीसइ मुहुत्ताउ ॥ उक्को स विरहकालो, सवेसु जहन्नउ समउ ॥ १८१ ॥ अर्थः—नवनपति, व्यंतर ज्यो तषि सौधर्म अने ईशानना अंतसुधीना देवोने उत्कृष्टे चोवीश मुहूर्त्तनो उत्पत्ति विरह थायछे. अने जघन्यतो ए समस्त देवोने एक समय विरह काल होय.॥१८१॥

हवे सनत्कुमारादिकने उत्कृष्ट विरहकाल कहेछे. मूलः—नवदिण वीसमुहुत्ता, बारस दस चेव दिण मुहुत्ताउ ॥ बावीसा अद्धचिय, पणयाल असीइ दिवस सयं ॥ १८२ ॥ अर्थः—नवदिवस ने वीसमूहुर्त्त, सनत्कुमारे, बारदिवस ने दशमुहूर्त्त, माहेंद्रे. साडीबावीश दिवस ब्रह्मदेवलोके; पिस्तालीश दिवस, लांतकदेवलोके, एंशी दिवस शुक्रदेवलोके, एकशो दिवस सहस्रार देवलोके विरह काल जाणवो.

मूलः—संखिद्या मासा आणय, पाणएसु तह आरण अच्चुए वासा ॥ संखे वाविस्सेया, गेविद्धेसुं अउवोद्धं ॥ १८३ ॥ अर्थः—आनत प्राणातनेविषे संख्याता मास एटले अग्यारमास ने ओगणत्रीश दिवस सुधी संख्याता मास कहिए. वली आरण अने अच्युतनेविषे संख्याता वर्षनो उत्पत्ति विरहकाल निश्चेथकी जाण

वो. ज्यांसुधी शो वर्ष पुरां न थाय. त्यांसुधी संख्यातां वर्ष कहेवायछे. ॥ १७३ ॥ हवे ग्रैवेयकने विषे विरहकाल कहुंछुं.

मूलः—हिट्ठिमवास सयाइं, मज्झिम सहसाइं उवरिमेलक्खा ॥ संखिज्जाविसेया जाह्या संखेणतिसुंपि ॥ १७४ ॥ अर्थः—हेठिमत्रिकने विषे वर्षनां शइकमां संख्यातां जाणवां, मध्यमत्रिकनेविषे संख्यातां हजारवर्ष जाणवां, उपरली त्रिकने विषे संख्यातां लाप वर्ष जाणवां. एम यथा संख्यपणे त्रणेनेविषे जाणवां.॥१७४॥

मूलः—पलिया असंख जागो, उक्कोसो होइ विरह कालोओ ॥ विजयाइ सुनिद्दिठो, सव्वेसुजहण्णउ समउ ॥ १७५ ॥ अर्थः—पल्योपमनो असंख्यातमो जाग उत्कृष्ट विरहकाल ते विजयादिक चार विमाननेविषे होय. अने सर्वार्थसिद्धि नामा पांचमा विमाननेविषे पल्योपमनो संख्यातमो जाग कह्योछे. एमज ए सर्व देवोने जघन्य तो एक समय जगवंते कह्योछे. ॥ १७५ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थ ॥

अवतरणः—उवट्टणाए विरहोत्ति एटले उद्वर्त्तनानेविषे विरहकालनुं बशोमुं द्वार कहेछे. मूलः—उववाय विरहकालो, ए सोजह वत्तिउंय देवेसु॥ उवट्टणाविएवं, सव्वेसिं होइ विस्सेया॥१७६॥ अर्थः—उपपात विरहकाल ए देवोनेविषे जेम पूर्वोक्त वर्णव्यो, तेमज उद्वर्त्तना पण एवीज रीते सर्व देवोनेथाय एम जाणवुं. इति गाथार्थ.

अवतरणः—इमाण संखत्ति एटले ए देवता एकसमयमां केटला उपजे अने केटला चवे तेनी संख्यानुं बशेने एकमुं द्वार कहेछे. मूलः—एकोवि दोवि तिन्निव संखमसंखाय एग समएणं ॥ उववज्जं तेवइया ॥ उवट्टंताविं एमेव॥१७७॥अर्थः—एक अथवा बे अथवा त्रण एमज संख्याता असंख्याता पण एक समयनेविषे उपजे. अने उवट्टंताके० चवता पण एज रीते जाणवा. ॥ १७७ ॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरणः—जम्मि ए याणं गइत्ति एटले ज्यां ए देवो चविने जाय ते गतिनुं बशेने बीजुं द्वार कहेछे. मूलः—पुढवी आउ वणस्सइ, गप्ने पज्जंत संख जीवीसु सग्गचुआणवासो, सेसा पडिसेहिआ गणा ॥ १७८ ॥ अर्थः—पृथ्वी, अप, वनस्पति, अने गर्भज, पर्याप्ता, मनुष्य तथा तिर्यंच जे कोइ संख्याता आयुष्य वाला होय तेनेविषे स्वर्गथकी चविने देवो आवे, ए देवोने आववानां स्थानक छे. शेष थाकता स्थानक प्रतिषेध्याछे; माटे तेमां न उपजे. ॥ १७८ ॥

एज वात विशेषे देखाडेछे. मूलः—बायर पज्जत्तेसुं, सुराण जूदग वणेसु उप्पत्ति ॥ ईसाणं ताणं चिअ, तत्र विनउट्ट गाणंपि ॥ १७९ ॥ अर्थः—बादर पर्याप्ता पृथ्वी अप वनस्पतिमांहे जुवनपति आदे देइ ईशानदेवलोकसुधीना देवो

नी उत्पत्ति थाय. वली उक्तगके० सनत्कुमार आदेदेइ सहस्रारदेवलोकसुधी ना देवतानी, पचेंद्रिय तिर्यंच तथा मनुष्यमां उत्पत्ति छे. पण पूर्वोक्त पृथिव्यादि कमां उत्पत्ति न थाय. ॥ १७९ ॥

मूलः—आणय पभिईहिंतो, जाणुंत्तरवासिणो च वेऊणं ॥ मणुएसिं चिय जा यहि, नियमा संखेवजीवीसु ॥ १८० ॥ अर्थः—आनत देवलोक आदेदेइने अनु त्तरविमानवासी पर्यंतना देवो चवीने संख्याता आयुष्यवाला मनुष्योनेविषेज नि यमेके० निश्चेथकी उपजे. ॥ १८० ॥ इति गाथा त्रयार्थ.

अवतरणः—जत्तो आगईए संति एटले ज्यांना आव्या, देवता थाय ते आ गति कहिये तेनुं बशेंने त्रीजुं द्वार कहेछे. मूलः—परिणाम विसुद्धिए, देवाउ कम्मबंध जोगाए ॥ पंचंदियाउगच्छे, नरतिरिया सेस पडिसेहो ॥ १८१ ॥ अर्थः— परिणाम ते मननो व्यापार जाणवो, ते विशुद्धपणे थाय, अने अविशुद्धपणे थाय. त्यां जे विशुद्ध परिणाम ते देवगतिनुं कारण छे. तेमाटे सूत्रमां परिणाम विसुद्धिए एवो कह्यो. वली जो कदाचित् अतिविशुद्धमननो परिणाम होय तो ते परिणाम मोक्षने पमाडनारो थायछे. तेमाटे वली परिणामनी विशुद्धिनुं विशे षण, देवाउके० देवताना आयुष्यने योग्य जे कर्मबंध तेने योग्य जे विशुद्धि, तेणेकरी पंचेंद्रियमनुष्य ने तिर्यंच तेज देवतामां जाय. पण शेष दंमकना जीवो न जाय. तेने जवानो अजाव छे. ॥ १८१ ॥

मूलः—आईसाणाकप्पा, उववाउ होइ देव देवीणं॥तत्तोपरंतु नियमा,देवीणंनत्थि उ ववाउ॥१८२॥अर्थः—जवनपति आदेदेइने ईशानदेवलोकसुधी देव देविनी उत्पत्ति थाय. पण तेथी आगल निश्चेथकी देविनुं उपजवुं न थाय. अने देविनुं गमनाग मन सहस्रार देवलोक सुधी छे. ते दो कप्पकाय सेवी. इत्यादिक जाणवुं. इति॥१८२॥

अवतरणः—विरहो सिद्धिगइएत्ति एटले सिद्धगतिनेविषे उपजतांने विरहनुं ब शेने चोथुं द्वार कहेछे. मूलः—एक्कसमउ जहन्नो, उक्कोसेणं तुजावछम्मासा ॥ विरहो सिद्धिगईए, उव्वट्टण वजिया नियमा ॥ १८३ ॥ अर्थः—समये समये सि द्धगतिमां जीवो जायछे, परंतु जो विरहपडे तो जघन्यथी एक समयनो विरह पडे, अने उत्कृष्टथी तो छ महीनासुधी' पण कोई सिद्धगतिए जाय नही. ए सिद्धगति नो विरह कह्यो. अने सिद्धगतिमां निश्चेथकी सिद्धोने उद्वर्त्तना न होय. इतिगाथार्थ.

अवतरणः—जीवाण आहार गहण उसासत्ति एटले जीवोने आहार ग्रहण अने श्वासोश्वासनां प्रकार कहेवानुं बशे ने पांचमुं द्वार कहेछे. मूलः—सरिरेणो

आहारो, तयाइ फासेण लोम आहारो ॥ पक्खेवाहारोपुण, कावलिउ होइनायव्वो ॥ १९४ ॥ अर्थः—केवल तेजस कार्मण शरीरे, विग्रहे अथवा अविग्रहे उत्पत्ति देशनेविषे गयोथको प्राणी प्रथमसमय तो औदारिकादिक शरीर योग्य पुद्गल आ हारे. बीजे समये औदारिकादिक मिश्र आहारे. ज्यांलगे शरीर निस्पत्ति, त्यांलगे आहारे, अथवा उज शब्दे पोताना जन्मस्थानकने योग्य शुक्रमिश्रशोणितना पुद्गलनुं संघात, तेनो जे आहार ते उजा आहार जाणवो. तयाइके० त्वचाने स्पर्शे शीतल पवनादिकनी प्राप्तिए जेम तृषा उपशम पामे, ते लोमआहार कहिये. प्रक्षेप शब्दे मुखमांहे नाखवुं. ते कावलिक आहार होइके० होय. नायव्वोके० जाणवो.

मूलः—उयाहाराजीवा, सव्वेवि, अपज्जता मुणेयव्वा॥पज्जत्त गायलोमे, पक्खेवो होइ भ इयव्वा॥१९५॥अर्थः—जे गतिमां जीव जाय त्यां गयाछता तेज समयनेविषे उजा आहा री सर्व जीव अपर्याप्तावस्थाए जाणवा. अने जेवारे पर्याप्ता थाय तेवारे सर्वजीव सर्व काल वायु प्रमुखना स्पर्शेने करी निरंतर लोम आहारी होयछे अने प्रक्षेपाहारे तो भ जना करवी. केमके जेवारे कोलिउ ग्रहण करे तेवारेज कावलिक कहेवाय छे. ए रीते भजना जाणवी. एटले कावलिक कोइ वखतहोय पण, ने न पण होय.॥१९५॥

मूलः—रोमाहारा एगिंदियाय नेरइय सुरगणाचेव ॥ सेसाणं आहारो, रोमे पक्खेवउ चेव ॥ १९६ ॥ अर्थः—ते कारणे एकेंद्रिय लोमाहारी होय; तेमज नारकी अने चतुर्विध देवनिकाय पण लोमाहारी होय अने शेष समस्त जीवोने लोमाहार तथा प्रक्षेपाहार पण थाय. ॥१९६॥

मूलः—उयाहारामण भिक्खणोय सव्वेवि सुरगणा हुंति ॥ सेसाहवंति जीवा लोमाहारा मुणेयव्वा ॥ १९७ ॥ अर्थः—एमज देवताने अपर्याप्तावस्थासुधी उजा हार होय, अने पर्याप्ता थया छतां मनमां चिंतवन करे तेवो आहार पामे. देवो ना समूह एवा थाय, अने शेष जीवो लोमाहारी थाय एम जाणवुं. ॥ १९७ ॥

मूलः—अपज्जत्ताण सुराणं, णाभोगनि वृत्तिउय आहारो॥पज्जत्ताणं मण भक्खणेण आभोगनिम्माउ ॥ १९८॥ अर्थः—ज्यांसुधी अपर्याप्तास्थितिए देवता होय त्यांसुधी अनाभोगे निवर्तित एटले अनाभोगे नीपन्यो आहार थाय, अने पर्याप्ता थया प छी तो मनने वांछित आहारने ग्रहणे आभोगे निपन्यो आहार होयछे. ॥१९८॥

हवे उश्वासनी वात कहेछे, मूलः—जस्सजयसागराई, ठिइतस्सय तत्तिएहिंपक्खे हिं ॥ ऊसासोदेवाणं, वास सहस्सेहिं आहारो ॥१९९॥ अर्थः—जे देवताने जेट ला सागरोपम आयुस्थिति होय; ते देवताने तेटलां पखवाडियां गयेछते श्वासोश्वासनुं

ग्रहण.अने तेटलाज हजार वर्ष गया ठतां ते देवोने आहार लेवानो अनिलाष थाय.

मूलः—दसवास सहस्साइं, जहन्नमाउं धरंतिजेदेवा ॥ तेसिंचउब्राहारो, सत्तहि थोवेहि ऊसासो ॥ २०० ॥ अर्थः—दशहजार वर्ष प्रमाण जघन्यायुने जे देवो धारण करेठे, तेहने चतुर्थे आहारनुं ग्रहण जाणवुं. अने ते सात स्तोक काल प्रमाणे श्वासोश्वास लियेठे. ॥२००॥

मूलः—दसवास सहस्साइं, समयाहिय जाव सागरं ऊणं ॥ दिवसमुहुत्त पहुत्ता, आहारूसास सेसाणं ॥२०१॥ अर्थः—दशहजार वर्ष ते समयादिके अधिक करतां ज्यांसुधी सागरोपमथी उंठुं आयुष होय, तेवा देवोने दिवस पृथक्त्वे आहार होय. अने मुहूर्त्त पृथक्त्वे श्वासोश्वास लिये. एरीते शेष समस्तने जाणवुं. इति गाथाष्टकार्थ.

अवतरणः—तिन्निसयातेवठा पासंमीणंत्ति एटले त्रणशे ने त्रेशठ पाखंमीनुं बशो ने ठठुं द्वार कहेठे. मूलः—असिअसयं किरियाणं, अकिरिय वाईण होइचुलसीइ ॥ अन्नाणिय सत्तठी, वेणइयाणंच बत्तीसं ॥ २०२ ॥ अर्थः—प्रथम कर्त्ताविना क्रिया जे पुण्यबंधादि लक्षणठे ते संनवे नही. तेमाटे एवुं जाणीने जे क्रिया, आत्मसम वायनी कहेठे, एवुं जेनुं शीलठे ते क्रियावादि आत्मानुं अस्तित्वपणुं मानेठे. एवा क्रियावादि ते एकशो ने एंसी थायठे. ॥२०२॥

एमज बीजा उत्पत्तिने अनंतरे जे वस्तुना विनाशनो संनव; ते कारणे कोईपण पदार्थथकी क्रिया संनवे नही. आत्मादिकने नास्तिपणाना करनार ते एम कहेठे के क्षणिकाः सर्वसंस्काराः अस्थिराणांकुतः क्रिया ॥ इत्यादिकना बोलनार ते अक्रियावादि. ते चुलसिके० चोराशी नेदे थायठे.

त्रीजा जे अन्नाणियके० कुत्सित मातुं जे ज्ञान तेने अज्ञान कहिये. तेने ग्रहण करी जे प्रवर्त्ते ते अज्ञानी कहेवाय. एवा अज्ञानी ते चिंतव्याविना बंधनी विफलताना करनार ठे,ते एवुं कहेठे के, ज्ञान ते नलुं नथी. केमके, ज्ञान ठते मांहोमांहे विवादना योगथकी चित्त कलुषित थायठे, तेणेकरी दीर्घ संसारनी प्रवृत्ति थाय, ते आवीरीते जे, कोइक पुरुषे अन्यथा प्रकारे प्ररूपणा कीधी ठतां कोइक विवक्षित ज्ञानी ज्ञाननावे गर्वाध्मात चित्तथको तेना उपर चित्तनो कलुष नाव धारण करी वाद करवा मंमी जाय, ते वाद करतां करतां तो चित्तनो कलुषता नाव वृद्धि पामेठे. तेथकी अहंकारनी वृद्धि थाय, तेथकी अशुनकर्मनो बंध पडेठे, तेना योगे दीर्घ संसार थायठे; अने जो ज्ञान न जाणिये अने अज्ञाननेज आश्रयीए तेवारे ते अज्ञानना योगथकी अहंकारनो संनव थाय नही. तेथी अन्यत्र

पर चित्तनां मावां परिणाम थाय नही. तेथी कर्मबंध पण न थाय. अने जे कर्म, चिंतवीने करिए तेना दारुण विपाक ते अवश्य वेदवामां पण आवे, अने जे म नना व्यापारविना केवल काय अने वचने करी कर्मप्रवृत्ति मात्र करिए, त्यां मननुं तीव्र अध्यवसाय न होय, तेथी ते अवश्य वेदवामां पण न आवे. अने तेनो दा रुण विपाक पण न होय. केवल ओह्युक्त भींतनेविषे जेवी सुकी धुल लागे, तेवो तेने कर्मनो समागम पण थाय. ते पण रूडा अध्यवसायरूप पवने करी प्रेरयों थ को ते कर्मरूप रज पण जती रहे छे. तेमाटे मोक्षमार्ग प्रवृत्तक मुनिश्वरने अ ज्ञाननो अंगीकार करवोज नलोछे; परंतु ज्ञाननो अंगीकार करवो नलो नथी. अ ने जो ज्ञाननुं निश्चय करी शकिये तो ज्ञान नलुं छे, परंतु ते निश्चे करायज नही. केमके, सर्व दर्शनीओ जूदाजूदा ज्ञानने अंगीकार करेछे, तो तेमां कयुं ज्ञान अने कयुं अज्ञान? एवुं केम कहेवाय! एवा कारणोने लीधे अज्ञानपणे रहेवुं तेज नलुं छे. एवुं मानेछे ते अज्ञानवादि जाणवा. ते सत्तसट्ठिके० सडसठछे. ॥ २०२ ॥

हवे चोथा विणयके० विनयवादि ते केवल विनये करीज चाले ते बत्रीशछे. हवे जेम उद्देस तेम निर्देस एवा न्यायथकी प्रथम क्रियावादिनी एकशो ने एंशी नी संख्या पूरण करवाने अर्थे नंग आणवानो उपाय आगली गाथाये करी कहेछे.

मूलः– जीवाइ नवपयाणं, अहोठविऊंतिसय परयसद्दा ॥ तेसंपिअहोनिच्चा, निच्चा सद्दा ठविऊंति॥२०३॥ कालस्स हावि नियई, ईसर अप्पत्ति पंच विपयाइं॥ निच्चा निच्चाणमहो, अणुक्कमेणे ठविज्जंति ॥ २०४ ॥ अर्थः–जीवादिक नवपदार्थ अनुक्रमे पाटला उपर मांमिये. वली तेनी नीचे प्रत्येके स्वतः ने परतः शब्द मांमिये, तेनी नीचे वली नित्य अने अनित्य शब्द स्थापिये, वली ते नित्य ने अनित्य शब्दो ने नीचे अनुक्रमे काल स्वनाव नियत ईश्वर अने आत्मारूप पांच पद स्थापीये.

हवे ते नेदोना जेम अनिलाष छे तेम कहेछे. मूलः–जीवोइह अत्थिसउ, नीचो कालाउ इय पढम नंगो ॥ बीउंय अत्थिजीवो, सउंय निच्चोय कालोउ ॥ ॥. २०५ ॥ एवंपरउविहुदोन्नि नंगया पुवङग जुआ चउरो ॥ लहा कालेणेवं, स हाव पमुहावि पावंति ॥ २०६ ॥ पंचाहिविचोकेहिं, पत्ता जीवेणवासई नंगा॥ एवमजीवाईहिवि, इय किरिया वाइ असिय सयं ॥ २०७ ॥ अर्थः–इह अत्तिजी वः स्ततोनित्यःकालतः ए पहेला नांगानो ए अर्थ छे, इयके० आ जगत्रयमां अ स्तिके० छे. जीवात्म स्वतः पोताने रूपे छे. पण उपाधि अपेक्षाये न्हस्वदीर्घनी परे न जाणवुं. नित्यके० शाश्वतछे पण क्षणिक नथी. जे कारणे पूर्वोत्तरकालनेवि

षे अवस्थायीछे पण कालवादिने मते तो कालवादि ते कहिये के जे आ समस्त जगत्रयते कालनो करेलो छे एवुं कहेछे, केमके कालविना आंबा चंपक अशोकादिक फूलनो उद्गम न थाय. वली फलबंध, हिमपात, नक्षत्र, गर्भाधान, वर्षादिक ते पण कालविना होय नही. तेमज बाल, कुमार, यौवन, पलीनो आगम एवा अवस्थाना विशेष जे थायछे तेपण नियमित कालने विभागेज थायछे. पण ए सघलुं अवस्थाएज थाय. वली हांमली प्रमुख घणी सामग्री छती होय तोपण प्रथम समयनेविषेज मग प्रमुख सीजता देखाता नथी. किंतु काले करीज सीजेछे. तेथी जे कृतक ते सर्व काल कृत्येज जाणवुं, यदाहुः न कालव्यतिरेकेण, गर्भबालशुभादिकं ॥ यत्किंचिज्जाय ते लोके, तद सौकारणंकिल ॥ १ ॥ किंच कालादृतेनैव, मुग्न पंक्ति परीक्षते ॥ स्थाल्यादि संन्निधानेपि, ततःकालादसौमता ॥ २ ॥

बीजो भंग आवीरीतेछेः—अस्तिजीवःस्वतो अनित्यः कालतः एरीते बीजा पण भंगछे ते कहेछे. एवपरछंत्ति अस्तिजीवः परतोनित्यतः कालतः समस्त पदार्थने परपदार्थने स्वरूपे जाणपणुं जेम दीर्घनी अपेक्षाए ह्रस्वपणुं अने ह्रस्वनी अपेक्षाए दीर्घपणु; तेम आत्माने स्तंभ कुंभादिक देखी तेथकी अनेरो वस्तु विशेष त्यां आत्मानी बुध्दि प्रवर्त्ते. ते कारणे आत्मानुं स्वरूप ते पर थकी अवधारिए. ए स्वतः बे भंग, तेम परतः बे भंग लाध्या, तेवारे काल पदे चार भंग लाध्या; एम स्वभाव प्रमुखे पण चार चार भेद पामिए, तेवारे वीश भंग प्रत्येके जीवे लाध्या. एम अजीवादिके वीश वीश करतां नवपदे एकशो ने एंसी थाय. तेनो उच्चार आवीरीते करीये

एक अस्तिजीवः स्वतोनित्यः स्वभावतः बीजुं, अस्तिजीवःस्वतो अनित्य स्वभावतः त्रीजुं, अस्तिजीवः परतोनित्यस्वभावतः चोथुं, अस्तिजीवः परतो अनित्यः स्वभावतः॥ एनो अर्थ आमछेः—ते स्वभाववादी कहेछेके जे जे भाव संसारमां थायछे ते स्वभाव थकी थायछे, जेम माटी थकी घट थाय छे, तंतुथकी पट थायछे; पण माटी थकी पट थतुं नथी अने तंतुथकी घट थतो नथी. एवुं निश्चेपूर्वक जे होवुंछे ते स्वभावविना होतुं नथी. वली बीजा तो सर्व कार्य रह्यां पण जे मग प्रमुखते समस्त छती सामग्रीए पण करडू एटले कांगडु मग सीजे नही एटले चडे नही. तेनो तेज स्वभावछे तो एम जाणिये जे समस्त वस्तु स्वभाव कृतज होयछे. एम अस्तिजीव स्वतोनित्योनियतितः

हवे नियतवादि एम कहेछे के, नियति तत्वांतरे जेना वशथकी समस्त स्वभाव नियतरूपपणे प्रगट थाय. ते आवीरीते, जे जेवारे जे थकी थाय ते तेवारे ते

थकी नियतरूपपणे थयो देखायछे. अन्यथा प्रकारे कार्यकारणभावनी नियत व्यवस्था प्रति नियतरूप व्यवस्थाना प्रेरकने अभावथकी न थाय तो एवी नियत कार्ये नियतथकी कोण निवर्त्तावी शके?

ईश्वरवादी कहेछे. अस्तिजीवःस्वतो नित्यः ईश्वरतः इत्यादि चार भंग ईश्वरवादी आवीरीते कहेछे. समस्त जगत्रय ईश्वरकृतछे. अने ईश्वरने सर्व कोई माने. ईश्वर स्वतःसिद्ध, ज्ञान वैराग्य, धर्म, ऐश्वर्यवान्, वली प्राणीउने स्वर्ग अने अपवर्गनो प्रेरक छे.

हवे आत्मवादी कहेछे. अस्तिजीवः स्वतोनित्यः आत्मनः इत्यादि चार भंग आत्मवादी विश्व परिणतरूप एक आत्माज माने. ते एवुं कहेछे के एकज आत्मा भूत भूतनेविषे रह्यो छतो तेज एक प्रकारे पण देखायछे, अने अनेक प्रकारे पण देखायछे. जेम पाणीमां चंद्रमा देखाय तेनी परे जाणवुं. यडुक्तं. एकएव हि भूतात्मा भूतेभूते व्यवस्थितः ॥ एकधा बहुधा चेव दृश्यते जलचंद्रवत् ॥१॥ एरीते क्रियावादीना एकशो ने एंसी भेद देखाडया ए क्रियावादिना यंत्रनी स्थापना.

जीवः	अजीवः	पुण्यः	पापः	आश्रवः	संवरः	निर्जराः	बंधः	मोक्षः
स्वतः	परतः	स्वतः	परतः	स्वतः	परतः	स्वतः	परतः	स्वतः
नित्यः	अनित्यः	नित्यः	अनित्यः	नित्यः	अनित्यः	नित्यः	अनित्यः	नित्यः
कालतः	स्वभावतः	नियतितः	ईश्वरतः	आत्मनः	एवा	पांच	पद	जाणवा

हवे अक्रियावादीना चोराशी भंग आणवानो उपाय कहेछे. मूलः—इह जीवाइ पयाई, पुन्नं पावंविणा ठविज्जंति॥तेसिमहो भायम्मि, ठविज्जएस परसद्दडुगं॥२०८॥ तस्सवि अहो लिहिज्जइ, कालज हिछाय पयडुगसमेयं ॥ निय्य सहाव ईसर, अप्पत्ति इमं पयचउक्कं ॥ २०९ ॥ पढमे भंगे जीवो, नत्थि सउ कालउ तयणु बीए ॥ परउवि नत्थि जीवो, कालाइय भंगगा दोन्नि ॥ २१० ॥ एवं जइछाई हिवि पएहि भंग डुगं डुगं पत्तं ॥ मिलीया विते डुवालस, संपत्ता जीवतत्तेण ॥२११॥ एवमजीवाइ हिवि, पत्ता जाया तउय चुलसीई ॥ भेया अकिरिय वाई ण हुंति मे सव्व संखाए ॥ २१२ ॥ अर्थः—इहके० इहां ए अक्रियावादीना भेद आणवाना प्रक्रमनेविषे पुण्य अने पाप विना बाकीना जीवादिक सात पदार्थ स्थापन क

रीए, तेने नीचे वली स्वतः ने परतः ए बे शब्द स्थापीए, अने आत्माना अनावथकी नि त्य अने अनित्य शब्द मांमीए नही. वली स्वपर शब्दने नीचे कालतः यदृछातः एवां जेबे पद ते सहित नियत, स्वनाव, ईश्वर आत्मालक्षण चार पद लखिये, इहां जे य दृछावादी ते अक्रियावादी सर्व जाणवा. हवे विकल्पनो अनिलाष देखाडेछे.

पढमेके० पहेला नंगनेविषे नास्तिजीवः स्वतःकालतः बीजो नास्तिजीवः पर तःकालतः ए बे नंग, कालेकरी लाध्या. एम यदृछादिक पांच बोल ते प्रत्येके बेबे विकल्प पामे, त्यारे सर्वमली बार नेद थाय छे. एनो अर्थ पहेलानीपरे जाणवो. प रंतु एटलुं विशेष जे यदृछावादीने मते ते एम प्ररूपणा करेछे के, इहां पदार्थने संताननी अपेक्षाए प्रतिनियत कार्यकारणनाव न होय. किंतु यदृछाएज थाय. तेवा प्रमाणना अनावथकी जाणवुं. ते आवीरीते जे, कीडाना विशेषथकी कीडो थाय. एम छाणाथकी पण कीडो थाय, तेमज अग्निथकी अग्नि थाय, तेम अरणी थकी पण अग्नि उपजे, धूम्रथकी धूम्र थाय. अग्नि ते नीला इंधणने संयोगे प ण थायछे. तेमाटे निश्चित कार्य कारण नाव ते क्यांए न होय. यदृछाथकीज क्यां एक कांइएक थाय. एमज अंगीकार करवुं. पण एम नही जे डाहियारछे ते वस्तुनो सद्भाव अनेरी रीते देखी अनेरी रीते पोतानो आत्मा संक्लेश करे तेकरे नही. एम यद् छावादीना मते तो सर्व यदृछानुं करेलुंज थायछे. एटले जेम जीवपदे बार नंग लाध्या, तेम बीजा अजीवादिक छ पदनेविषे पण प्रत्येके बार बार नंग करता, बार सतां चोराशी नंग थाय छे. ए अक्रियावादीनी सर्व संख्या जाणवी.॥२१२॥

हवे अज्ञानीकना सडसठ नंग आणवानो उपाय देखाडवाने अर्थे बे गाथा क हेछे. मूलः—संतमसंतं संता, संतमवत्तव्वसय अवत्तव्वा॥असय अवत्तव्वंसय,सयवत्तव्वं च सत्तपया ॥ २१३ ॥ जीवाइ नवपयाणं, अहोकमेणं इमाइ उविकणं ॥ जह कीरइ अहिलावो, तह साहिज्जइ निसामेह ॥ २१४ ॥ अर्थः—पहेली सत्वं, बीजी असत्वं, त्रीजी सदसत्वं, चोथी अवक्तव्यं, पांचमी सदवक्तव्यं, छठी असद् वक्तव्यं, सात मी सदसद्वक्तव्यं, ए साते पदे सातनंग थया. एनो आम अर्थछेः—सत्व ते पोतानेरूपे विद्यमान, असत्व ते पररूपे अविद्यमान, सदसत्व ते पोतानेरूपे अने पररूपे पण वि द्यमानपणुं तथा अविद्यमानपणुं, त्यां यद्यपि ए समस्त वस्तुस्वरूपेकरी सदाए स दसत छे. तोपण क्यांएक कांइएक किवारेक प्रगटपणे प्रमाणना जाण कहेछे; ते थी ए त्रीजो विकल्प जाणवो. हवे तेज सत्व ने असत्व ते समकाल एक शब्दे बो लिए एवोतेनो केहेवावालो शब्द कोई नथी. तेमाटे अवक्तव्य. अने जेवारे एकनाग

सत, बीजो नाग अवक्तव्य. समकाले ए बेहु बोलिये तेवारे सदवक्तव्य थाय अने जे वारे एक नाग असत् अने बीजो नाग अवक्तव्य एवी समकाले विवक्षा करिये तेवारे असदवक्तव्य छठो नंगथाय. तथा जेवारे एक नाग सत्, बीजो नाग असत्, अपर वली अवक्तव्य. तेवारे सदसदवक्तव्यत्वं नंग थाए. ए सातविकल्प थकी बीजा विकल्प संनवे नही, बीजा सर्व विकल्पनो ए सातमांज अंतर्नाव जाणवो.

एनी कांइक नावना, एक घटपदार्थ आश्री देखाडिये छइयें. मुख, ग्रीवा, कपाल, कुक्षि बुध्नादिक ते पोताने पर्याए विद्यमान नावे करी विशेषित जे कुंन तेने कुंन कहिए, एटले सत्घट ए प्रथम नंग जाणवुं. तेम पटादिगत शरीरने ढांकवादि परपर्याएकरी असत्वपणे विवक्षित कुंन थाय नही. समस्त घटादिक पदार्थ परपर्याए करी जेवारे असत्वपणे विवक्षिए तेवारे सत्घट ते असत् घट थाय. ए बीजो नंग. वली ते घट स्वपर्याए, परपर्याए सद्नावे, असद्नावेकरी विशेषे समकाल कहेवाने इष्ट एवुं, त्रीजुं नंग अनिष्ट अवक्तव्यः पोताने पर्याए अने परपर्याए सत्व असत्व पणे करी, एके असंशयोत्पन्न वचने करी तेने समकाले कही न शकिये, ते अवक्तव्य. ए अवक्तव्य नामें चोथुं नंग. एम एकदेशे पोताने पर्याए करी सत्वपणे विवक्षिए, अने परउनय पर्याएकरी सत्व असत्वपणे समकाल असांकेतिक एक शब्दे कहेवासारु विवक्षा करीए, तेवारे ते कुंनसत् अवक्तव्य कहीए. ए पांचमुं नंग. एकदेशे घटपणाथकी सत् अन्यदेशे कहि न शकिये, तेवारे सत् अवक्तव्य. ए छठुं नंग. एक देशे परपर्याए असत्वपणे विवक्षीये. अन्यस्थानके स्वपर्यायें परपर्याय अने एम उनय पर्याये सत्वपणे विवक्षिए. अन्य वली एकदेशे परपर्याए असत्वपणे विवक्षिये, एवो कुंन सदसदवक्तव्य घट अघट अवक्तव्य थाय. ए सातमु नंग. एरीते सातनेद घटना कह्या, तेम पटादिकनी नावना पण करवी, ए सातपद पट्टकादि उपर स्थापन करी ते उपर जीवादिक नवपद स्थापिये. ॥२१३॥२१४॥

हवे अनिलाप कहेछे. मूलः—संतोजीवो कोजाण ईहवाकिंच तेण नाएण ॥ सेसपएहि विनंगा, इय जाया सत्त जीवस्स ॥ २१५ ॥ एवमजीवा ईणवि, पत्तेयं सत्त मिलिय तेसठी ॥ तह अन्ने विहुनंगा, चत्तारि इमे उ इह हुंति॥२१६॥ अर्थः—सन्जीवः कोवेत्ति किंवा तेनज्ञानेन ए प्रथम नंग जाणवुं. एनो अर्थ कहेछे. कोई कने विशिष्ट ज्ञान नथी, जे अत्येंद्रिय आत्माने जाण्यो. तोपण शुं ने न जाण्यो तो पण शुं? तथाहि जे नित्य सर्वगत अमूर्त्तिक ज्ञानादिक गुणोपेत होय, तो पण शुं?

अथवा एवा गुणोथकी रहित आत्मा छे तोपण शुं? अथवा तेना जाणवाथकी कया पुरुषार्थनी सिद्धि थवानी छे? तेथी अज्ञानपणामां रहेवुंज जलुं छे. असन्जीवः कोवेत्ति किंवा तेनज्ञातेन इत्यादिक शेष ढ पदछे, तेणेकरी सात जंग जीव पदार्थना थाय, एरीते बीजा अजीवादिक आठपदनेविषे पण सात सात जंग करतां त्रेसठ जंग थाय.

तेम वली अज्ञाननी प्ररूपणा विषे अनेरा पण चारजंग थाय. ते आवी रीते. मूलः— संती जावुप्पत्ती कोजाणइ किंच तीइनायाए; एवमसंती जावुप्पत्ती सदसंतिया चेव ॥२१७॥ तह अव्वतवाविङु, जावुप्पत्तीइमेहिमिलिएहिं ॥ जंगाण सत्तसट्ठी, जाया अन्नाणियाणइमा ॥२१८॥ अर्थः—सतीजावोत्पत्तिः कोजानाति किंवा नयाज्ञातया. १ असतीजावोत्पत्तिः कोवेत्ति किंवा नया ज्ञातया २ सदसतीजावोत्पत्तिः कोवेत्ति किंवा नया ज्ञातयान् ३ तद्दके० तेमज चोथा जंगने विषे अवक्तव्याजावोत्पत्तिः किंवा नया ज्ञातया ४

ए चार जंगनो तात्पर्यार्थ कहेछे: इहां जाव पदार्थनी संती कहेतां छतां विद्यमान उत्पत्तिके० उपजवानो प्रकार ते कोणजाणे? अने तेना जाणवाथी पण शुं? शेषविकल्प ते अछति जाव पदार्थनी उत्पत्ति २ एम छती अछती जावनी उत्पत्ति ३. चोथे जंगे अवक्तव्य जे कहेवाय नही, आगलो अर्थ प्रथमनो समस्त पद आगल कहिये, परंतु त्रण विकल्प तेज पदने अवयवनी अपेक्षाए होय, ए कारणपणामाटे इहां संजवे नही. एटले पूर्वोक्त त्रेसठमां आ चार जंग प्रक्षेपिए त्यारे अज्ञानीना जंग सडसठ थायछे: ॥ २१७ ॥ २१८ ॥

हवे विनयवादीना बत्रीश जेद बे गाथाये करी कहेछे. मूलः—सुर निवइ जइ न्नाई, थविरा वम माइ पियसु एएसिं ॥ मणवयण काय दाणेहिं चउविहो कीरए विणउ॥२१९॥अहवि चउक्क गुणिया, बत्तीस हवंति वेणइय जेया॥ सव्वेहिं पिंमिएहिं, तिन्नि सया हुंति तेवठ्ठा ॥ २२० ॥ अर्थः— १ सुर शब्दे देवता २ निवइ शब्दे राजा ३ यति ते साधु ४ ज्ञाति ते स्वजन ५ स्थविर ते वडेरा ६ अवम के० अनुकंपनीय कापडी प्रमुख ७ माता ८ पिता ए बे प्रसिद्धछे. ए आठनुं एक मन, बीजुं वचन, त्रीजुं काया, अने चोथुं दान ए चारे प्रकारे करी विनय करवो. ए आठने चारे गुणतां विनयवादीना बत्रीश जेद थायछे. ते विनयवादी एवुं बोलेछे के स्वर्ग अने अपवर्गनो जे मार्ग छे ते केवल विनयथीज थायछे. अने जे विनय छे ते नम्रवृत्ति करवी, तेमज अनुत्सेकपणु जाणवुं. एरीते पूर्वोक्त देवादिक आठने विषे करतो थको जीव स्वर्ग अने अपवर्गनो संजागी थाय. ए सर्वने पिंमिके० एकठा कर्याथी त्रणशें ने त्रेसठ पाखंमी थायछे. इति एकोनविंशति गाथार्थ.

अवतरणः—अठपमायत्ति एटले आठ प्रमादनुं वर्णने सातमुं द्वार कहेछे. मूलः—पमाउय मुणिंदेहिं, जणिउं अठनेयउ ॥ अन्नाणं संसउचेव, मिछानाणं तहेवय ॥ २२१ ॥ अर्थः—मुनिजे साधु, तेना इंद्र जे श्रीतीर्थंकर देव तेणे प्रमाद आठनेदे नणिउंके० कह्योछे. तेमां पहेलो अज्ञान शब्दे मूढपणुं, बीजो आ वात एमज छे किंवा अन्यथा प्रकारेछे? एवो जे संदेह ते संशय कहिए. त्रीजुं मिथ्या ते उपरांतु ज्ञान, तेना उपर प्रतिपत्ति होय. तहेवयके० तेमज. ॥ २२१ ॥

मूलः—रागो दोसो मइब्भंसो, धम्मंमिय अणायरो ॥ जोगाणं डुप्पणीहाणं, अठहा वज्जिअव्वउ ॥ २२२ ॥ अर्थः—चोथुं राग ते अभिष्वंग लक्षण जाणवुं, पांचमुं द्वेष ते अप्रीतिरूप, छठुं स्मृतिभ्रंश ते विस्मरण शीलपणुं, सातमुं धर्मने विषे अनादरपणुं, एटले आलसनुं करवुं, आठमुं योग ते मनोयोगादिकने डुष्टपणे धरवा. ए आठ प्रकारना प्रमादनुं वर्जन करवुं. ॥ २२२ ॥ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—नरहाहिवत्ति एटले नरतक्षेत्रना अधिपति जे चक्रवर्त्ती तेना नामोनुं वर्णने आठमुं द्वार कहेछे. मूलः—नरहो सगरो मघवं सणंकुमारोय रायसद्दूलो ॥ संती कुंथूअ अरो, हवइ सुनूमोय, कोरव्वो ॥२२३॥ नवमोय महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ॥ जय नामोय नरवई, बारसमो बंनदत्तोय ॥ २२४ ॥ अर्थः—एक नरत, बीजो सगर, त्रीजो मघवा, चोथो सनत्कुमार. ते राजाओमांहे शार्दूल समान, पांचमो श्रीशांति, छठो श्रीकुंथु, सातमो श्रीअर, आठमो सुनूम कौरव गोत्रमां उत्पन्न थयो, नवमो महापद्म, दशमो हरिषेण. राजाओमां शार्दूल एटले सिंहसमान, अग्यारमो जय एवे नामे मनुष्यनो पति, बारमो ब्रह्मदत्त. ए बार चक्रवर्त्तिनां नाम जाणवां. इति ॥ २२३ ॥ २२४ ॥ गाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—हलहरत्ति एटले बलदेवोनुं वर्णने नवमुं द्वार कहेछे. मूलः— अयलेविजयनद्दे, सुप्पनेयसुदंसणे ॥ आणंदे नंदणेपउमे, रामेआविअपछिमे ॥ ॥ २२५ ॥ अर्थः—एक अचल, बीजो विजय, त्रीजो नद्र, चोथो सुप्रन, पांचमो सुदर्शन, छठो आनंद, सातमो नंदन, आठमो पद्म, नवमो राम वली छेहेलो अपश्चिम शब्द मांगलिक्य वाची छे. ॥२२५॥ इति गाथार्थ.

अवतरणः— हरिणोत्ति एटले वासुदेवोनुं वर्णने दशमुं द्वार कहेछे. मूलः—तिविठूय डुविठूय सयंनू पुरिसोत्तमे पुरिस सीहे, तह पुरिस पुंमरीए, दत्ते नारायणेकिएहे ॥ २२६ ॥ अर्थः—एक त्रिपृष्ठ, बीजो द्विपृष्ठ, त्रीजो स्वयंनू, चोथो पुरिसोत्तम

पांचमो पुरुषसिंह, तेमज छठो पुरुषपुंडरीक, सातमो दत्त, आठमो नारायण, नवमो कृष्ण, ए नव वासुदेवोनां नाम कह्यां. ॥२२६॥ इति गाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—पडिवासुदेवेत्ति एटले प्रतिवासुदेवोनुं बशें ने अग्यारमुं द्वार कहेछे. मूलः—आसग्गीवे तारय, मेरय महुकेटके निसुंनेय ॥ बलिपह्राए तह रावणेय न वमे जरासिंधू ॥ २२७ ॥ अर्थः—पूर्वे जे त्रिपृष्ठादिक नव वासुदेव कह्या, तेना ए य थाक्रमे अश्वग्रीवादिक प्रतिशत्रु, ते सर्वे चक्रयोधी पोतानाज चक्रथी मरण पामे. तेथी ते प्रतिवासुदेव एटले पोतानुंज चक्र वासुदेवने हणवा सारु नाखे, अने पुण्योदयथकी ते चक्र आवी वासुदेवने प्रणाम करी तेना हाथमां बेसे, पछी तेज चक्र ते वासुदेव, प्रतिवासुदेव उपर नाखे, तेथी ते मरणपामे. ते प्रतिवासुदेवना नाम कहेछे. एक अश्वग्रीवा, बीजो तारक, त्रीजो मेरक, चोथो मधुकैटभ, पांचमो निशुंभ, छठो बली, सातमो प्रल्हाद, आठमो रावण, नवमो जरासिंधु इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः—रयणाइं चउदसत्ति एटले चक्रवर्तिना चौद रत्नना नामोनुं बशें ने बारमुं द्वार कहेछे. मूलः—सेणावइ गाहावइ, पुरोहि गय तुरय वड्ढई इछी ॥ चक्कं छत्तं चम्मं, मणिकागिणिखग्ग दंमोय ॥ २२८ ॥ अर्थः—सेनापत्यादिक जे पोत पोतानी जातीमां उत्तम होय तेने रत्न कहिए. एमां साततो एकेंद्रियछे. ते जेवारे जे चक्रवर्त्ती होय, तेवारे ते चक्रवर्त्तिना आत्मांगुले थाय. अने सात पंचेंद्रिय ते ते ज कालना जे पुरुष तेने उचित प्रमाणे होय.

तेमां प्रथम सेनापति ते समस्त सेनामांहे मुख्य होय. ज्यां चक्रवर्त्ती न जाय ते खंम सेनापति साध्य करे. चक्रवर्त्तिना खड्गप्रमुख हथीयार झाले. अश्वरत्न उपर चडे इत्यादिक काम ए सेनापतिनां जाणवां. बीजो गाथापतीते कौटंबिक समस्त सेनामांहे जे धान घृत प्रमुख वस्तु ते एना स्वाधीनमां रहेछे, ते चक्रवर्त्तिना हुकुमथी सर्वने आपे. ए कोठारीने स्थानके जाणवो. त्रीजो पुरोहित ते शांति कर्म जे चक्रवर्त्तिने करवुं ते करे, तेथी समस्त विघ्न उपशम पामे. चोथुं गजरत्न ते जेवारे तमिश्रा गुफाखंम प्रपातगुफा मांहे पेसवानुं काम पडे तेवारे गजरत्नने कुंनस्थले मणीरत्न बांधे. बीजुं पण जेवारे इछामां आवे तेवारे तेना उपर चढे. पांचमो अश्वरत्न ते जेवारे गुफाने बारणे जाय तेवारे कमाड खडकावे ने तावडतोब बार योजनसुधी पाछले पगे पाछो फरे. अनेरो अश्व होयतो बलती गुफानी बाफ थकी बली नस्म थाय, जेम कृत्रिम अश्वरत्नेकरी कोणी राजा त्रणखंम साधीने गुफाने बारणे नस्म थयो तेनी परे जाणवुं. छठो वार्द्धिकरत्न ते सूत्रधारना कर्मनो कर

नार उन्मग्न जलातिमग्नजलानाम नदी ते गुफामां जतां आडी आवे, त्यां पूल बांधे. तेम बीजा पण गृह नगरादिक करवाने अर्थे ते प्रवर्त्ते. सातमुं स्त्रीरत्न ते चक्रवर्त्तिना शरीर साथे संजोगना काममां आवे पण बीजी स्त्री तेनुं पराक्रम सहन करी शके नही. बीजी चोशठहजार अंतेउर तथा सवालाख पिंम विलासणी तेनी साथे वैक्रिय शरीरे संजोग करे. ए सात पंचेंद्रिय रत्न जाणवां.

हवे एकेंद्रिय कहेछे. आठमुं चक्र ते एक वाम प्रमाण होयछे. ते वामनुं स्वरूप आमछे के ज्यां पुरुष बंने बाहुप्रसारे तेने प्रमाणे. एवुं लोक प्रसिद्धछे. अने हजार यक्षे अधिष्ठित सर्व शत्रु निवारक सर्व वांछित कारक एवुं चक्ररत्न जाणवुं. नवमुं छत्र रत्न पण एक वाम प्रमाण जाणवुं. दशमुं चर्मरत्न ते बे हाथ प्रमाण. ए नवमुं छत्ररत्नने अधोजागे चर्मरत्न ए बन्नेने चक्रवर्त्तिना हाथनो स्पर्शथाय तो बारयोजन सुधी विस्तार पामेछे, अने तेमां चर्मरत्न उपर पहेले पहोरे साली वावे ते पाछले पहोरे जमे; ए चर्मरत्ननो महिमाछे. अग्यारमुं मणीरत्न ते चार अंगुल लांबु अने बे अंगुल पहोलुं. वैडूर्य रत्नमय उपर त्रणहांस होय, अने नीचे छ हांस होय. ते छत्र अने चर्मरत्नना मध्य छत्रने तुंबे मूक्यो छतो बार योजन सुधी कटकमांहे उद्योत करे. अने गुफामां प्रवेश करतां गजरत्ननी जमणी बाजुना कुंजस्थले बांध्योथको उद्योत करे, हाथीने मस्तके बांध्यो थको तिर्यंच अने मनुष्यना करेला सर्व उपद्रव हरण करे छे. अने सर्व रोगनो नाश करे. अने कांने बांध्यो थको संग्राममां जय करावे सदा अवस्थित यौवन होय. बारमुं कांगणीरत्न आठसौ वर्णिक प्रमाण समचउरस्त्र विषापहारी, ज्यां चंद्रसूर्यनी प्रजा प्रसार न करे त्यां गुफामांहे ए प्रकाश करेछे. वली चक्रवर्त्ति ओगण पचाश मांमला लखे ते ज्यांसुधी चक्रवर्त्ती त्यांसुधी रहे. तेरमुं खड्गरत्न बत्रीश अंगुल प्रमाण जाणवुं. चउदमुं दंमरत्न ते एक वाम प्रमाण. ते महायत्ने वापर्यो होयतो हजार योजन ऊंमो जाय. जूमिकानुं विदारण करे. ए चउद रत्न कह्यां. ते एकेक हजार यक्षे अधिष्ठित जाणवां॥२१७॥

मूल– चक्कं खग्गं च धणू, मणिय माला तहा गया संखो; एए सत्तउ रयणा सव्वेसिं वासुदेवाणं ॥२१९॥ अर्थः–एक चक्र अने बीजुं खड्ग प्रसिद्धछे, त्रीजुं मणी ते प्रसिद्धछे, चोथुं सारंग धनुष्य, पांचमी माला ते आजरण विशेष, छठी गदा कौमोदकीनामे, सातमो पांचजन्यनामे संख, तेनी ध्वनि बारयोजनमां थाय, ए सात रत्न सर्व वासुदेवोने होयछे. ॥ २१९॥

मूलः–चक्कं छत्तं दंमं, तिन्निवि एयाइं वाममित्ताइ ॥ चम्मं डुहछदीहं, बत्तीसं अं

गुलाइ असी ॥२३०॥ चउरंगुलो मणीपुण, तस्सद्धं चेव होइ विछिन्नो ॥ चउरंगुल प्पमाणा, सुवन्नवरकागिणी नेया ॥ २३१ ॥ ए बे गाथा प्रमाणनीछे ते प्रमाण पूर्वे कही आव्या माटे इहां वखाणता नथी. अने वासुदेवना रत्नसंबंधी महात्म शास्त्रांतरथी जोइ लेजो. ॥ २३० ॥ २३१ ॥ इतिगाथा चतुष्टयार्थः.

अवतरणः—नवनिहीउत्ति एटले नवनिधाननुं बशेने तेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—नेसप्पे पंडुयए, पिंगलए सवरयणमहापउमे ॥ कालेय महाकाले, माणवग महानिहीसंखे ॥ २३२ ॥ अर्थः—एक नैसर्प्प, बीजुं पांडूक, त्रीजुं पिंगलक, चोथुं सर्वरत्न, पांचमुं महापद्म, छठुं काल, सातमुं महाकाल, आठमुं माणवकनामे महानिधानने नवमुं संख ए नवनां सामान्य पणे नाम कह्यां. ॥ २३२ ॥

हवे जे निधानमां जे थाय छे ते कहेछे. मूलः—नेसप्पंमि निवेसा, गामागर नगर पट्टणाणंच ॥ दोणमुहमंडबाणं, खंधाराणं गिहाणंच ॥ २३३ ॥ अर्थः—नैसर्प्पनामा निधाननेविषे निवेसाके० स्थापवानो प्रकार पण ते केनुं तोके ग्राम आकरादिकनुं तेमां ग्रामते जेने फरति वाडीओ थाय ते जाणवुं अने आकरते ज्यां लूंण प्रमुख नीपजे ते जाणवुं. तथा नगरते ज्यां राज्यधानी थाय ते जाणवुं. पाटणते ज्यां जलने स्थलना मार्ग होय ते जाणवुं.द्रोणमुख मंडब ते ज्यां जलमार्गज होय अने अडी गव्यूतमां कोइ ग्राम न थाय ते जाणवुं. स्कंधवार शब्दे कटक जाणवुं जेम ते चक्रव्यूह गरूडव्यूहादिकनी रचनायें उतरे अने गिहके० घरनी मांडणी जेणे करी राजादिकना घर मांडीयें, ए सर्व प्रकार नेसर्प्प निधानमांहे होयछे.

मूलः—गणियस्सय गीयाणं, माणुम्माणस्स जं पमाणंच ॥ धन्नस्सय बीयाणं, उप्पत्ती पंडुए जणिया ॥ २३४ ॥ अर्थः—गणित ते दीनार एटले सोनामोर, नालियर, सोपारी प्रमुख तेनी गणित एटले संख्यानुं करवुं अथवा गणित ते संकलित व्यकलितादिक प्रकारें जेम गुणाकार जागाकारना भेद जे अंकविद्या; ते सर्व जाणवुं. तेमज गीत जे स्वर करणादिक गावाना प्रकार अने मानजे सेईप्रमुख जे नाथकी धान्यनुं माप करियें. उन्मान तुलाकर्ष प्रमुख जे धरिम तेना प्रकार प्रमाणना विशेष. वली धान्य चोवीस प्रकारनां बीज समस्त तेना उपजवाना प्रकार ते पांडुकनामा निधाननेविषे जणितके० कह्यांछे. ॥ २३४ ॥

मूलः—सवा आहरण विही, पुरिसाणं जाय जाय महिलाणं; आसाणय हत्थीणय, पिंगलगनिहिम्मि सा जणिया ॥ २३५ ॥ अर्थः—पुरुष अने स्त्री संबंधी

समस्त आजरण, तेम अश्व जे घोडा तथा हाथी नें योग्यआजरणनो विधि ते सर्व पिंगलकनामा निधाननें विषे कह्योछे. ॥ २३५ ॥

मूलः– रयणाइ सव्वरयणे, चउदस पवराइ चक्कवट्टीणं ॥ उप्पज्जंती एगेंदि याइं पंचेंदियाइंच ॥ २३६ ॥ अर्थः– सर्व रत्ननाम निधाननेविषे चक्रवर्त्तिना महा प्रधान चउद रत्न थाय. एमां सात एकेंद्रिय ने सात पंचेंद्रियनी उत्पत्ति वर्णवीछे. अनेरा कहेछे के एने प्रजावे महादीप्तिवंत थाय. ॥ २३६ ॥

मूलः–वत्थाणय उप्पत्ती, निप्पत्ती चेव सव्व जत्तीणं ॥ रंगाणय धाऊण य, सव्वा एसा महापउमे ॥ २३७ ॥ अर्थः–जेटलां वस्त्रछे ते सर्वनी उत्पत्ति, तेम ज वली वस्त्रगत जे जक्तिके० विशेष तेनी निष्पत्ति एटले नीपजवाना प्रकार, तथा रंग जे मजीठ कमिराग कसुंबो प्रमुख, तेनी उत्पत्ति. तथा धातु जे लोखंम त्रांबु प्र मुख सात धातु अथवा धोऊणय एवा पाठ थकी वस्त्रादिक धोवानी जे रीति ते आम के सुमो वस्त्र आवीरीते धोवुं. अने रेसमी वस्त्र एम धोवुं, उननुं वस्त्र आम धोवुं; इत्यादिकसर्व महापद्मनिधाननेविपे जाणवां. ॥ २३७ ॥

मूलः–काले कालन्नाणं, जव्वपुराणं च तिसुवि वंसेसु ॥ सिप्पसयं कम्माणिय, तिन्नि पयाए हियकराइं ॥ २३८ ॥ अर्थः–कालनामा निधाननेविषे समस्त काल ज्ञान ज्योतिषसंबंधि जे ज्ञान कह्युंछे ते. अने जव्यके० जे थशे; पुराणके० जे थयुं. एना उपलक्षणथकी वर्त्तमानकालसंबंधी तीर्थंकरना वंश, चक्रवर्त्तिना वं श, बलदेव वासुदेवना वंश, ए त्रणे वंश तेनेविषे जे वक्तव्यता अने तिसुविवंसेसु ए पाठथकी अनुक्रमे थयो, थशे अने वर्त्तमानकालना वर्षनी वातनुं कथन. अ ने क्यांएक जव पुराणं च तिसुकालेसु एवो पाठ छे; तेथी थशे, थयुं अने वर्त्तमान का लनुं शुजाशुज ज्ञाननुं कहेवुं. तेमज सिप्पसयं एटले घट, लोखंड, चित्र, वस्त्र, नापित शिला ए पांचना प्रत्येके वीश वीश जेद छे. तेवारे एकशो प्रकारनुं शिल्प, अने कर्म ते कर्षण तथा वाणिज्यादिक, ते जघन्य मध्यम अने उत्कृष्टना जेदथकी जे प्रजालो कना हितने अर्थे करवुं; ते सर्व कालनामा निधाननेविषे जाणवुं. ॥ २३८ ॥

मूलः–लोहस्सय उप्पत्ती, होइ महाकाल आगराणंच ॥ रुप्पस्स सुवन्नस्सय, म णि मोत्ति सिलप्पवालाणं ॥२३९॥ अर्थः–लोह अनेक प्रकारनुं छे; तेनी उत्पत्ति. वली रुपुं ने सोनुं प्रसिद्धछे. मणी ते चंद्रकांतादिक अने मुक्ता ते मोती. शिला स्फटि क प्रवाला ते विद्रुम तेना आकर ते सर्व महाकालनामा निधाननेविषे जाणवा.

मूलः–जोहाणय उप्पत्ती, आवरणाणंच पहरणाणंच ॥ सव्वाय जुद्ध नीई, मा

णवगे दंमनीईय ॥ २४० ॥ अर्थः—योद्धा जे शूरवीर पुरुषो छे तेनी उत्पत्ति अ ने आवरण, सन्नाह एटले खेटक प्रमुख, प्रहरण तरवार, कटारी, नाला, फरशी इत्यादिक हथीयारना विशेष. वली समस्त जे युद्धनी सामग्री तेनी नीति तथा दंमनीति ते साम, दाम नेद ने दंम एरीते चार प्रकारनी जे राजनीति कही छे. ते सर्व माणवकनामा निधाननेविषे जाणवी. ॥ २४० ॥

मूलः—नट्टविहि नामय विही, कवस्स चउविहस्स निप्पत्ती ॥ संखे महानिहिम्मिउ, तुम्मियं गाणंच सवेसिं ॥ २४१ ॥ अर्थः—नाट्य जे नरतादिक संबंधी तेनो विधि, अने नाटकविधि तेने कहिये जे अनिनय बंधादिकनो प्रकार, अने जेमां धर्म, अर्थ, काम ने मोक्षनुं वर्णन करेलुं होय; एवी चार प्रकारनी काव्य, अथवा संस्कृत प्राकृत अपभ्रंश संकीर्ण लक्षण. तेवी नाषाए निबद्ध अथवा गद्य, पद्य, गेय, चौर्ण्य, तेमां गद्य ते बूटो समराजिर इत्यादिक अने पद्य ते अनेक अनुष्टुबादिक जातिए करी पद रचना. तथा गेय ते गीतगोविंदादिक गीत, अने चोर्ण्य ते पदने चूरण करिए खंमिए ज्यां, ते नर्त्तु पार्वत्ति इत्यादिक. एवां चार प्रकारनां काव्य तेनी निष्पत्ति करवाना प्रकार ते संखनामा महानिधानमां छे. तथा तेमां वली त्रुटितांगके० त्रुटित वादित्र, तेनां अंग जेटला प्रकारनां छे, तेनी उत्पत्ति वखाण एटलां वानां लन्यमान थाय. एक आचार्य एम कहेछे के, जे जे निधानमांहे जे जे वस्तु कहिछे, ते ते वस्तु साक्षात् तेज निधानमांहेज उपजेछे. ॥ २४१ ॥

हवे ए नवे निधाननुं स्वरूप समस्त साधारणपणे कहेछे. मूलः— चक्कठ पइठाणा, अठुस्से हाय नवय विरकंने ॥ बारस दीहा मंजूस संठिया जएहवी पमुहे ॥ २४२ ॥ अर्थः—चक्र शब्दे पइडुं ते आठ पइडे तेनुं प्रतिष्ठानके० रहेवुंछे. अने अठुस्सेहाय के० आठयोजननुं उत्सेध एटले उंचपणुं छे जेनुं, तथा नव योजन विष्कंन एटले विस्तारछे जेनो. वली बार योजन दीर्घके० लांबपणेछे. मंजूषने संस्थाने एटले आकारे, ते जान्हवी जे गंगा तेने मुखे सदा सर्वदा रहेछे. ते जेवारे चक्रवर्त्ती उपजे ते नरतखंम साधी पाछो फरे तेवारे चक्रवर्त्तीनी साथे थइ चक्रवर्त्तीनी नगरीए आवीने पातालमां रहे. ॥ २४२ ॥

वली ते कहेवो होय ते कहेछे. मूलः—वेरुलीयमणिकवाडा, कणय मया विविहरयणपडिपुन्ना ॥ ससिसूरचक्क लरकण, अणु समवयणोववत्तीया ॥ २४३ ॥ अर्थः—वैमूर्यरत्नमय वरप्रधान कमाडछे जेनां, कनकमय एटले सूवर्णेकरी निष्पन्न नीतिछे तथा विविध प्रकारनां रत्न तेणेकरी परिपूर्ण एटले सहित चंद्रमा अने सू

थेनी परे चक्रने आकारे लक्षण एटले चिन्हछे जेने, वली अनुसमके० समी. वदनके० बारणांनी उपपत्तिके० घटनाछे ज्यां, अथवा अणुवम वइणो एवा पाठ थकी ज्यां उपमाये रहित वचननी घटना छे; एटले जेनुं स्वरूप वर्णन करवासारु वचननी रचना पण थाय नहीं, अर्थात् स्वरूप वर्णवी शकीये नहीं इतिभाव. अथवा अनुसमय समयप्रत्ये पुद्गलनुं जावुं. अने उपपत्तिके० आववुंछे एतावता समय समयनेविषे जेवा पुद्गल जायछे तेवा वली आवेछे. परंतु तेमां कांइ घटता नथी.

अने श्रीठाणांगमां अणुसमयुगबाहुवयणत्ति एह्वो पाठछे. ते अणुसमयके० अविषम, जुगके० जुसर तेने आकारे वाटलापणे करीने बाहके० बारसाख मुख नेविषे ज्यां. ते अनुसमय जाणवो. ॥ २४३ ॥

मूलः—पलिउवमट्ठिईया, निहिसिरि नामाय तह ते देवा ॥ जेसिं ते आवासा, अक्केया आहि वच्चाया ॥२४४॥ अर्थः—पल्योपमआयुनी स्थितिए अने जे निधाननुं जेवुं नाम तेवेज नामे ते निधाननेविषे त्यां देवता वासकरेछे. ते देव अन्य कार्यें रहित थका जेमनुं अधिपतिपणुं मूल्ये पण लाभे नहीं, एतावता ज्यां ठकुराइ अमोलिकछे.

मूलः—एए ते नव निहिणो, पभूयधण रयण संचय समिद्धा ॥ जेवस मुवग छंती, सव्वेसिं चक्कवट्टीणं ॥२४५॥ अर्थः—एएके० ए पूर्वेंजे नवे निधानोनुं स्वरूप वखाण्युं ते नवे निधान प्रभूतके० घणुं एवुं जे धन; अने रत्ननो संचय तेनी समृद्धिएकरी सहितछे, ते सर्व चक्रवर्त्तिउने नवे निधान प्राप्त थायछे॥ २४ ५॥इतिगाथा चतुर्दशकार्थी॥

अवतरणः— जीव संखाउत्ति एटले जीवनी संख्यानुं वर्णने चउदमुं द्वार कहे छे मूलः—नमिउं नेमिएगाइ जीवसंखं भणामि समयाउ ॥ चेयण जुत्ताएगे, भव सिद्धा इहाजीवा ॥ २४६ ॥ अर्थः—श्रीनेमिनाथप्रत्ये नमस्कार करीने एक आदेदेइने जीवनी जे संख्या ते श्रीसिद्धांतथकी भणामिके० कहुंछुं. तेमां चेतनाए युक्त जीव ए प्रथम प्रकार जाणवो. संसारमां रहेतें भवस्थ अने जे निर्वाण पद पाम्या तेसिद्ध. एरी ते बे प्रकारना जीवो जाणवा. ॥ २४६ ॥

मूलः—तसथावराय डुविहा, तिविहा थीपुंनपुंसग विन्नेया ॥ नारय तिरिय नरामर, गइ भेयाउ चउभेया ॥ २४७ ॥ अर्थः—अथवा त्रसने थावरना भेदेकरी बे प्रकारे जाणवा. स्त्री पुरुष ने नपुंसकना भेदे करी त्रण प्रकारे जाणवा. नारकादिक गतिना भेदे करी चार प्रकारे जाणवा. ॥ २४७ ॥

मूलः—अहवातिवेय अविगय, सरूवउवा हवंति चत्तारी ॥ एग बिति चउपणिं दिय रूवा पंचप्पयारा ते ॥ २४८ ॥ एएच्चियछअणिंदिय जुत्ता अहवा भू

जलग्गि निला ॥ वण तस सहिया ठप्पिय, ते सत्त अकाय संवलिया॥ २४ए॥ अथवा त्रण वेद ने चोथुं अवेद ते सिध्धना जीवो मली चार प्रकार थाय. एकेंद्रिया दिकना भेदे करी पांच प्रकार थाय ठे; ॥२४७॥ एज पांच प्रकारमां अनेंद्रिय जे सिध्धना जीवोठे ते भेलिये तेवारे ठ प्रकार थायठे. अथवा पृथिव्यादिक पांच त्रस जीवो सहित करतां ठ भेद थायठे. वली ए ठ कायने साथे सातमा अकायिक सिध्धना जीवो मेलव्याथी सात भेद थायठे. ॥ २४ए ॥

मूलः—अंमय रसय जराउअ, संसेयय पोयया समुच्छिमया ॥ उब्भिय तहोववा इय, भेएणं अठ्ठहा जीवा ॥२५०॥ अर्थः—अंमज एटले जे इंमाथकी उपजे एवा पंखी प्रमुख, बीजा, रसथकी उपजे ते रसज, सूक्ष्मजीव तक्रादिकना उपन्या जाण वा. त्रीजा, जरायुज जे जरामां उपन्या मनुष्यादिक जाणवा, चोथा, संस्वेद शब्दे परसेवो तेथकी जे उपन्या ते संस्वेदज यूका ठप्पई प्रमुख जाणवा, पांचमा, पोतजा ते हाथी प्रमुख जाणवा; ठठा, संमूर्छिम मक्षिका प्रमुख; सातमा उद्भेद जे भूमिका फोडीने उपजे ते उद्भेदज ते तीडप्रमुख जाणवा; तेम आठमा उत्पाते उपजे ते उत्पातज ते देव नारकी जाणवा. एरीते आठ प्रकारे जीवो जाणवा.॥२५०॥

मूलः—पुढवाइ पंच बि तिचउ, पणिंदि जुत्ताय नवविहा हुंति ॥ नारय नपुंस तिरि नर, तिवेय सुरथी पुमेवंच ॥ २५१ ॥ अर्थः—पृथ्व्यादिक पांच अने बेंद्रिया दिक चार तेणे युक्त नव प्रकारे जीवो थायठे. अथवा नारकी ते एक नपुंसक वेदेज थाय ठे. अने तिर्यंच तथा मनुष्यना पुरुष स्त्री ने नपुंसक एवा त्रण त्रण वेद ठे. ए सात थया. तथा देवता स्त्री ने पुरुष बे प्रकारेठे एमपण नव भेदज थायठे.

मूलः—पुढवाइ अठ असन्नि, सन्नि दस ते ससिध्ध इगदसउ॥ पुढवाइ यातसंता. अपज्ज पज्जत्त बारसहा ॥२५२॥ अर्थः—पृथ्व्यादिक पांच अने विकलेंद्रियादिक त्र ण ए आठ थया, नवमा असन्नी, दशमा सन्नी ए दशप्रकार थया; तेमज एनी साथे सिध्ध भेला करिए तेवारे अग्यार भेद थायठे. तथा वली पृथ्वीथी मांमीने त्रस प र्यंत ठ प्रकारना पर्याप्ता तथा ठ प्रकारना अपर्याप्ता करिए तेवारे बारभेद थायठे.

मूलः—बारस वि यतणुजुत्ता, तेरस सुहुमियरगिंदि बे इंदी ॥ तिय चउ अस न्नि सन्नी, अपजत्त पजत्त चउदसहा ॥ २५३ ॥ अर्थः—पूर्वोक्त बार भेद ते अ तनु जे सिध्ध तेणे सहित करतां तेर भेद थायठे. एक सूक्ष्म ने बीजा बादर ए बे भेद एकेंद्रियना तथा बेंद्रि, तेंद्रि, चउरेंद्रि, असन्नी, ने सन्नी ए सात पर्याप्ता ने सात अपर्याप्ता मली चउद भेद थाय. ॥ २५३ ॥

मूलः—चउदस वि अमल कलिआ, पनरस तह अंमगाइ जे अठ ॥ ते अपजत्तग पज्जत्त भेदउ सोलस हवंति ॥ २५४ ॥ अर्थः—पूर्वे चउद प्रकार कह्या ते अमलके० मलरहित जे सिद्धना जीवो छे ते सहित करतां पंदर प्रकार थायछे, तेमज अंमजादिक जे आठ प्रकार प्रथम कह्या हता तेना पर्याप्ता ने अपर्याप्ताना भेदे करी शोळ प्रकार थायछे. ॥ २५४ ॥

मूल.—सोलसवि यकायजुत्ता, सतरस नपुमाइ नव अपज्जत्ता ॥ पज्जत्ता अ ठारस, अकम्म जुअ ते इगुणवीसं ॥२५५॥ अर्थः—पूर्वोक्त शोळ ने अकाय एट ले कायरहित सिद्ध जीवोयुक्त करतां सत्तर भेद थायछे. अने नपुमाइके० पूर्वे नारकी नपुंसकादिक नव भेद कह्या हता ते नवने पर्याप्ता ने अपर्याप्ताना भेदे कर तां अढार भेद थया; एनेज अकर्मक सिद्ध सहित करतां ओगणीश भेद थया.

मूलः—पुढवाइ दस अपज्जा, पज्जत्ता हुंति वीस संखाए ॥ असरीर जुएहि ते हि वीसई होइ एगहिया ॥ २५६ ॥ अर्थः—पूर्वेजे पृथ्व्यादिक दश भेद कह्या तेनेज पर्याप्ता अपर्याप्ता करतां वीश संख्याए थायछे. तेने अशरीर जे शरीररहित सिद्धना जीवो छे तेना सहित करतां एकवीश भेद थायछे. ॥२५६॥

मूलः—सुहुमिअरजूजलानिल, वाउवणाणंत दस सपत्तेआ ॥ बितिचउ असन्नि सन्नी, अपज्ज पज्जत्त बत्तीसं ॥ २५७ ॥ पृथ्व्यादिक पांच ते सूक्ष्म तथा बादरना भेदे करी दश थायछे, एमां अणंतकाय आवी अने अग्यारमो प्रत्येक वनस्पति तथा बेंद्रियादिक त्रण अने असंज्ञी तथा संज्ञी मळी शोळ भेद ने पर्याप्ता तथा अपर्याप्ताना भेदे करी बत्रीश थायछे. ॥२५७॥

मूलः—तह नरय भवण वण जोइ कप्पगेविज्जणुत्तरु प्पन्ना ॥ सत्तदस उपण बारस, नवपण छप्पन्न वेउव्वा ॥ २५८ ॥ अर्थः—नारकी रत्नप्रभादिकना सात भे द, भवनपति असुरादिकना दश भेद, व्यंतर यक्षादिक आठ, अथवा अणपन्नी आ दिक आठ ए बे मांथी एक अष्टक गणीए. ज्योतिष चंद्रादिक पांच, कल्प ते सौध र्मादिक बार. ग्रैवेयक हेठिमादिक नव. अने अनुत्तर ते विजयादिक पांच विमान. ए छपन्न भेद वैक्रियना थया. ॥ २५८ ॥

मूलः—हुंति अडवन्न संखा, तेनर तेरिछ संगया सवे ॥ अपज्ज पज्ज भेहिं, सोलसउत्तर सयं तेहिं ॥ २५९ ॥ अर्थः—ते पूर्वोक्त वैक्रियना छपन्न भेदनी संख्या मां नरके० मनुष्य अने तिर्यंच मेळवीए तेवारे सर्व अठ्ठावननी संख्या थायछे. ए नेज पर्याप्ता अपर्याप्ता करतां एकशो ने शोळ भेद थाय. ॥२५९॥

मूलः—सन्नी डुग हीण बत्तीस संगयं तंसयं ठयत्तालं ॥ तंजव्वा नवगदूर नव आसन्न नवंच ॥ २६० ॥ अर्थः—प्रथम सुहुम्मियर गाथाए करी बत्रीश नेद जे पूर्वे कह्या हता तेमांथी संज्ञी ने असंज्ञी ए बे हीन करिए तेवारे त्रीश नेद थाय. ते एक शो ने शोल वैक्रियनी साथे मेलवतां एकशो ने ठेतालीश नेद थायछे. एमां वली कोइ नव्य, कोइ अनव्य, अने कोइ दूरनव्य ते गोशालादिक जाणवा, अने जे कोइ तेज नवे अथवा बीजे त्रीजे नवे मोक्ष जवानाछे ते आसन्ननव्य जाणवा. ॥२६०॥

मूलः—संसारनिवासीणं, जीवाण सयं इमं ठएतालं ॥ अप्पंच पालियवं, सिव सुहकंखीहि जीवेहिं ॥ २६१ ॥ अर्थः—संसारनिवासी जीवोना ए एकशो ने ठेतालीश नेद जाणवा. ते अप्पंचके० पोताना आत्मानीपरे जहममपिअं डुरकं इत्यादिक जाणीने ए एकशो ने ठेतालीश प्रकारना जीवोने जे कोइ शिव सुखनी वांठना करनार जीवोछे तेणे पोतानी आत्मानीपरे पालवा. ॥ २६१ ॥

हवे ए कुलक एज शास्त्रकारनो करेलो एवो जणाववाने अर्थे गुरुना नाम सहित पोतानुं नाम जणावेछे. ते प्रयोजन पूर्वक गाथा कहेछे. मूलः—सिरिअम्म एव मुणिवइ, विणेय सिरिनेमि चंदसूरीहिं ॥ सपरहियठं रइयं, कुलयमिणं जीव संखाए ॥ २६२ ॥ अर्थः—श्रीआम्रदेव नामे मुनिपति जे आचार्य तेना विनेयके० शिष्य श्रीनेमिचंद्रसूरि तेणे पोताने तथा परने अर्थे ए जीव संख्याना कुलकनी रचना करीछे, एटले सत्तर गाथाए करी कुलक वखाण्यो. ॥ २६२ ॥

अवतरणः—कम्माइं अठति एटले आठकर्मनुं बशोने पन्नरमुं द्वार कहेछे. मूलः—पढमं नाणावरणं, बीयं पुण दंसणस्स आवरणं ॥ तइ यंच वेयणीयं, तहा चउठं च मोहणिअं ॥२६३॥ पंचममाउं गोयं, ठठं सत्तमगमंतरायमिह ॥ बहुत म पयडित्तेणं, नणामि अठम पए नामं ॥ २६४ ॥ अर्थः—पहेलुं ज्ञान जे मत्या दिक तेने जे आवरे ते ज्ञानावरण कहिए. बीजुं दर्शन जे लोचन तेने आवरे ते दर्शनावरण कहिए. त्रीजुं जेणे करी सुख अने डुःख वेदिये तेने वेदनीय कहिए, तेम ज चोथुं जेणेकरी आत्मा मोह पामे तेने मोहनीय कहिए. पांचमुं आयु बांध्युं ठतुं अवश्य उदय आवे तेथी तेने आयुकर्म कहीए. ठठुं गूय ते नाना महोटा शब्देकरीने कहिये ते गोत्र कर्म जाणवुं, सातमुं जे विघ्न करे ते अंतराय कर्म जाणवुं. इहां जि नशासननेविषे, हवे जेनी घणी प्रकृतिछे तेणे करीने नणामिके० कहीशुं, आठमा स्थानकनेविषे जे नमयंतिके०नमाडे तेनाम कर्म. इति गाथा द्वयार्थ.॥२६३॥२६४॥

अवतरणः—तेसिउत्तर पयडीणं अडवन्न सयति एटले आठकर्मनी उत्तर प्रकृ

तिनुं वर्शें ने सोलमुं द्वार कहेछे. मूलः--पंचविह नाण वरणं, नवन्नेया दंसण स्स दोवेए॥अठावीसं मोहे, चत्तारिय आउए हुंति ॥ २६५ ॥ गोयम्मि डुन्निपंचं तराय तिगहियं सयं नामे ॥ उत्तर पयडीएवं, अठावन्नं सयं होइ ॥२६६॥अर्थः-- मतिज्ञानादिक पांच ज्ञानने आवरे तेथी पांच प्रकारे ज्ञानावरणीय जाणवुं. बीजुं चार प्रकारना दर्शनने जे आवरे तथा पांच प्रकारनी निद्रा जेनाथकी उदय आ वे ते नवप्रकारे दर्शनावरणीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं साता अने असाताना नेद थकी बे प्रकारे वेदनीय कर्म जाणवुं. चोथुं सोल कषाय अने नव नोकषाय तथा त्रण दर्शन मोहनीय मली अठावीस प्रकारे मोहनीय कर्म जाणवुं. नरकादिक गतिना नेद थकी आयुकर्म चारन्नेदे जाणवुं. उंच नीचना नेद थकी गोत्र कर्म बे नेदे जाणवुं. दानांतरायादिकना नेद थकी अंतराकर्म पांचप्रकारे जाणवुं. अने नाम कर्म एकशोने त्रण प्रकारे जाणवुं. ॥ २६५ ॥ २६६ ॥

हवे उत्तर प्रकृतिना प्रत्येक नाम कहेछे. मूलः--मइसुय उहीमण केवलाणि जीवस्स आविरिज्जंति ॥ जस्स प्पनावउंतं, नाणावरणं नवेकम्मं ॥२६७॥ अर्थः-- चारप्रकारनो व्यंजनावग्रह अने अर्थावग्रह, ते पांचइंद्रिय अने बठुं मन ते अवग्रह, इया, अपाय ने धारण ए एकेकना चार चार नेद करतां ब चोक चोवीश नेद थायछे, तेनी साथे चार व्यंजनावग्रह नेला करिये तो मति ज्ञानना अठावीश नेद थायछे. अक्षरश्रुत, अनक्षरश्रुत, संज्ञीश्रुत, असंज्ञीश्रुत, सम्यक्श्रुत, असम्यक्श्रुत, सादिश्रुत, अनादिश्रुत, सपर्यवसितश्रुत, अपर्यवसितश्रुत, गमिकश्रुत, अगमिकश्रु त, अंगप्रविष्टश्रुत, अनंगप्रविष्टश्रुत, एरीते चउदप्रकारनां श्रुतछे. अथवा पक्षवइत्या दिक वीशप्रकारनां श्रुत ते आवीरीतेछे. पर्यायश्रुत, पर्यायसमासश्रुत, अक्षरश्रुत, अक्षरसमासश्रुत, पदश्रुत, पदसमासश्रुत, संघातश्रुत, संघातसमासश्रुत, प्रतिप त्तिश्रुत, प्रतिपत्तिसमासश्रुत, अनुयोगश्रुत, अनुयोगसमासश्रुत, प्राभृतश्रुत, प्राभृ तसमासश्रुत, प्राभृतप्राभृतश्रुत, प्राभृतप्राभृतसमासश्रुत, वस्तुश्रुत, वस्तुसमासश्रुत, पूर्वश्रुत, पूर्वसमासश्रुत, एरीते वीशन्नेद श्रुतज्ञानना जाणवा, तथा अनुगामि, अननुगामि, वर्द्धमान, हीयमान, प्रतिपाति ने अप्रतिपाति ए ब नेद अवधिज्ञानना जाणवा. तथा कजुमति अने विपुलमतिना नेद थकी बे प्रकार मनपर्यवज्ञानना जाणवा, अने केवल ज्ञाननो एकज नेद छे. अन्य ज्ञानोनेविषे जेटलुं क्षयोपशम होय तेटलुं ज्ञान थायछे, अने सर्वथा ज्ञानावरणीयना क्षयथकीज जेनुं उपजवुं थाय ते केवलज्ञान. ए पांच ज्ञानना नेद सामान्ये कह्या. हवे गाथार्थ कहेछे. जीवस्सके०

जीवने ए ज्ञानने आवरिये रुंधिये जेना प्रजावथकी ते ज्ञानावरणीय कर्म कहिये.

मूलः—नयणे यरोहि केवल, दंसण आवरण यं नवे चउहा ॥ निद्दापयला हि उहा, निद्दाय डुरुत्त थीणद्धी ॥ १६८ ॥ अर्थः—नयन शब्दे चक्षु तेनुं आवरण जे लोचन तेने आवरे ते चक्षुदर्शनावरणीय; अने इतर जे बीजी अन्य इंद्रियतुं ज्ञान हणे ते अचक्षुदर्शनावरणीय. अवधिदर्शनने आवरे ते अवधिदर्शनावरण कहे वाय. एम केवलदर्शनने आवरे ते केवल दर्शनावरण. एरीते दर्शनावरणीय चार नेदे थाय. हवे पांच निद्रा कहेछे. त्यां प्रथम सुखे चीपटीना वजाडवा थकी जागी उठे ते निद्रा, बीजी घणा धका थकी जागृत थाय ते निद्रानिद्रा; त्रीजी डुरुक्ता ते एक निद्रा बीजी निद्रानिद्रा एम इहांपण द्विरुक्त प्रचला ते बेग अने उनाथका निद्रा आवे ते प्रचला समजवी; तथा चोथी चालतां हालतां निद्रा आवे ते प्रच ला प्रचला जाणवी. पांचमी स्त्यानर्द्धि ते जे दिवसे वात चिंतवी होय ते रात्रिए करे, राजाना हस्तिना दंतुसल काढनार शिष्यनीपरे जाणवुं. ए निद्रामां वासुदेवना बलथकी अर्द्ध बल होय छे. ए नव प्रकार थया ॥ १६८ ॥

मूलः—एयमिह दरिसणा वरण मेयमा वरइ दरिसणं जीवे ॥ सायमसायंच डुहा, वेयणियं सुह डुहनिमित्तं ॥ १६ए ॥ अर्थः—ए नव प्रकारनुं दर्शनावरण ते जीवनो पूर्वोक्त दर्शनगुणछे तेने आवरे ढांकी मूके. वली शाता अने अशाताना ने दे करी बे प्रकारे वेदनीय कर्म ते सुख तथा डुःखनुं निमित्त कारण छे. ॥ १६ए ॥

हवे मोहनीयकर्म कहेछे. मूलः—कोहो माणो माया, लोनोणंताणुबंधिणो च उरो ॥ एवमपच्चरकाणा, पच्चरकाणाय संजलणा ॥ १७० ॥ अर्थः—क्रोध, मान, माया अने लोन ए चार जे अनंता संसारनुं अनुबंध करे ते जेने उत्पन्न थया छतां ज्यांसुधी ते प्राणी जीवतुं रहे त्यांसुधी तेनीसाथे रहे, अने नरकगतिना कारण थाय. स म्यक्त्वनुं रुंधन करे एटले सम्यक्त्व आववा न आपे. तेमां अनंतानुबंधी क्रोध ते प र्वतनी स्फुट समान जाणवो अने अनंतानुबंधी मान ते पाखाणना थांनला स मान जाणवुं. तथा अनंतानुबंधी माया ते महानिवड वांशना मूल समान जाण वी, तथा अनंतानुबंधि लोन ते कृमिना रंग समान जाणवो. ॥ १७० ॥

एवंके० एरीते वली अप्रत्याख्यानीयानावरण जे अणुव्रतरूप पच्चखाणने आ वरे एना उदयथी जीव कोइ पच्चखाण करी शके नही ए उपना थका एकवर्ष सु धी रहेछे, तिर्यंचनी गतिना कारण थाय तेमां अप्रत्याख्यानी क्रोध ते पृथ्वीना स्फुट समान जाणवो, अने अप्रत्याख्यानी मान ते अस्थि समान जाणवुं, वली

अप्रत्याख्यानी माया ते मेंढाना शिंगडा समान जाणवी. तथा अप्रत्याख्यानी लोभ ते कादव समान जाणवो.

हवे जे जीवना सर्व विरतिरूप गुणने आवरे ते प्रत्याख्यानावरण जाणवुं, ए उपन्या छतां चार मास सुधी रहेछे, ए मनुष्यनी गतिनुं कारण थाय छे. तेमां प्रत्याख्यानी क्रोध ते वेलुनी रेखा समान जाणवो, अने प्रत्याख्यानी मान ते काष्ट समान जाणवुं. तथा प्रत्याख्यानी माया ते गोमूत्रिका समान जाणवी. वली प्रत्याख्यानी लोभ ते खंजन समान जाणवो.

हवे संज्वलन ते किंचितमात्र दीपे, उपरांत उपशमि जाय. ते उपन्या छतां घणामां घणो रहे तो पन्नर दिवससुधी रहे छे. देवनी गतिनुं कारण थाय, यथाख्यात चारित्रनुं रुंधन करे. तेमां संज्वलनो क्रोध ते पाणीनी रेखासमान जाणवो. अने संज्वलन मान ते नेत्रनी लाकडी समान जाणवुं; अने संज्वलननी माया ते वृक्षनी अवलेहिका समान जाणवी अने संज्वलननो लोभ ते हलदना रंग समान जाणवो.

मूलः—सोलस इमे कसाया, एसो नव नोकसायसंदोहो ॥ इत्थी पुरिस नपुंसग, रूवं वेयत्तयं तंमि ॥२७१॥ अर्थः—ए सोल कषाय कह्या. हवे वली नव नोकषायनो संदोहके० समूह देखाडेछे. इत्थी शब्दे स्त्री, तेनो जे वेद ते स्त्रीवेद जाणवो. जेना उदयथकी पुरुषप्रत्ये अभिलाष थाय छे. बीजो पुरुषवेद ते, जेना उदयथकी स्त्रीप्रत्ये अभिलाष थाय ते जाणवो. त्रीजो नपुंसकवेद, जेना उदयथकी पुरुष तथा स्त्री बंने प्रत्ये अभिलाष थाय. कारिस, तृण, ने नगर दाह समान अनुक्रमे एवे स्वरूपे ए त्रणे वेद जाणवा. ॥२७१॥

मूलः—हासरइ अरइ भय सोयं डुगंछ त्तिहास छक्कमिमं ॥ दरसिण तिगंतु मिछ,त्त मीस संमत्त जोएण ॥ २७२ ॥ अर्थः—कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्या विना नयन विकार उपजे, हास्य आवे, ते हास्यमोहनीय जाणवी. तेमज कोइक सुखनुं कारण उपन्ये अथवा कारण उपन्याविना स्वभावे सुखनुं वेदवुं ते बीजुं रतिमोहनीय कर्म जाणवुं. त्रीजुं ए थकी विपरीत ते अरतिमोहनीयकर्म जाणवुं. चोथुं इह लोकादिक सकारण अथवा कारण विना मनमां भय उत्पन्न थाय ते भयमोहनीयकर्म जाणवुं. पांचमुं इष्टवियोगादिक जनित अश्रुपात शोक उपजे ते शोकमोहनीयकर्म जाणवुं. छठुं बीभत्सगंधने योगे प्राणीने जुगुप्सा उपजे ते जुगुप्सामोहनीयकर्म जाणवुं. ए हास्य षट्क जाणवुं. हवे दर्शन त्रिक ते, मिथ्यात्व मिश्र ने सम्यक्त्वरूप अविशुद्ध अर्द्धविशुद्ध ने शुद्ध पुंजत्रिक रूप जा

णवा. अनुक्रमे मिथ्यात्व ते श्रीवीतराग प्रणीत तत्वने सद्दहे नही, अने मिश्रने प्रनावे श्री जिनोक्त तत्व उपर राग पण न होय अने द्वेष पण न होय. सम्यक्त्व ते जीवादिक तत्वनेविषे रुचिनुं करवुं. ए समकितने योगे मळ्या त्रण थाय. ॥२७२॥

मूलः–इयमोह अठवीसा, नारय तिरि नर सुराउय चउक्कं ॥ गोयं नीयं उच्चं,च अंतरायंतु पंचविहं ॥ २७३ ॥ अर्थः–एरीते मोहनीयकर्मनी अठावीश उत्तर प्रकृति कही अने नारकी, तिर्यंच, मनुष्य तथा देवताना आयुष्यना नेद संबंधी आयुकर्मनी उत्तरप्रकृति चार कहीछे. उंच अने नीचना नेदथकी गोत्र कर्मनी उत्तर प्रकृति बे प्रकारेज जाणवी. अने अंतराय पांच प्रकारेछे तेज सूत्रकार कहेछे.॥२७३॥

मूलः–दाउं नलहे लाहो, न होइ पावइ न नोग परि नोगो ॥ निरउविय सत्ता होइ अंतराय प्पनावेण ॥ २७४ ॥ अर्थः–छति सामग्रीए तथा छतां पात्रने संयोगे दान आपी शके नही ते दानांतराय जाणवुं. छति वस्तुए आपनार आपतो होय पण जेना उदयथी प्राणीने ते वस्तुनी प्राप्ति न थाय ते लाभांतराय जाणवुं. नोगनी छति सामग्रीये पण नोगवी शके नही ते नोगांतराय जाणवुं. तेमज नली गृहणी प्रमुख उपनोगनी सामग्री छतिए पण उपनोगवी न शके ते उपनोगांतराय जाणवुं. शरीरे गाढो निरोगी पुष्ट छतो पण अशक्त, तृण मात्र नांजी न शके ते वीर्यांतरायनो प्रनाव जाणवो. ॥२७४॥

हवे नामकर्मनी प्रकृति जेटले प्रकारे थाय ते अनुक्रमे देखाडेछे. मूलः–नामे बायालीसा, नेयाणं अहव होइ सत्तठी ॥ अहवा विहु तेणउई, तिग अहिय सयं हवइ अहवा ॥ २७५ ॥ अर्थः–नामकर्मनेविषे बेतालीश उत्तरप्रकृतिना नेद अथवा सडसठ होयछे, अथवा वली त्र्याणु पण थायछे, अथवा एकशोने त्रण पण थायछे, तेमां प्रथम बेतालीश प्रकृति कहेछे. ॥ २७५ ॥

मूलः–पढमा बायालीसा, गइ जाइ सरीर अंगुवंगेय ॥ बंधण संघायण संघयणय संठाण नामंच ॥ २७६ ॥ अर्थः–प्रथम बेतालीश प्रकृति ते आवीरीते गति,जाति, तनु ते, औदारिकादिक, अंगोपांग, बंधन, संघातन, संघयण, संस्थान, नाम

मूलः–तह वन्न गंध रस फास नाम अगुरु लहुअंच बोधव्वं ॥ उवघाय पराघाया, णुपुव्विकसास नामंच ॥ २७७ ॥ आयावुज्जोयविहाय गई तसथावरानिहाणं च ॥ बायर सुहुमं पज्जत्ता पज्जत्तंच नायव्वं ॥२७८॥ पत्तेयं साहारण, थिर मथिर सुनासुनंच नायव्वं ॥ सूनगदूनगनामं, सूसर तह दूसरंचेव ॥ २७९ ॥ आएज्जम णाइज्जं, जसकित्ती नाम अजस कित्तीय ॥ निम्माणं तित्थयरं, नेयाणवि हुंतिमेने

या ॥ २७० ॥ अर्थः—तेमज वर्ण, गंध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, उपघात, पराघात, आनुपूर्वी, श्वासोश्वासनाम, आतप, उद्योत, विहायोगति, त्रस, थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, जाणवा. प्रत्येक, साधारण, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, जाणवुं. सुभग, डुर्भगनाम, सुस्वर, डुस्वर, आदेय, अनादेय, यशःकीर्त्तिनाम, अयशःकीर्त्तिनाम, निर्माण अने तीर्थंकरनामकर्म, ए बेतालीश भेदनां नाम कह्यां.॥२७०॥

हवे ए बेतालीश भेदना वली प्रतिभेद थाय ते कहेछेः—मूलः—गइ होइ चउपयारो, जाईविय पंचहा मुणेयवा ॥ पंचय हुंति सरीरा, अंगोवंगाइ तिन्नेव ॥२७१॥ अर्थः—गम्यते एटले जवुं प्राणी ए जे एनेविषे एटला माटे एने गति कहिये. ते देवादिकना भेदथकी चार प्रकारे छे. जाति ते एकेंद्रियादिकना भेद थकी पांच प्रकारे जाणवी. शरीर ते औदारिक, वैक्रिय, आहारक, तेजस ने कार्मण एपांच जाणवां. अंगोपांग ते तेजस तथा कार्मण ए बे शरीरने होतां नथी, माटे औदारिकादिक त्रण शरीरनांज होय छे तेथी त्रणज जाणवां. ॥२७१॥

मूलः—छस्संघयणा जाणसु, संगणा विय हवंति छच्चेव ॥ वन्नाईण चउक्कं, अगुरुलहु वघाय परघायं ॥ २७२ ॥ अर्थः—संहनन ते वज्रऋषभ नाराच, ऋषभनाराच, नाराच, अर्द्धनाराच, कीलिका, अने सेवार्त्तरूप ए अस्थि रचना विशेष जाणवां. संस्थान ते समचतुरस्र, न्यग्रोध, सादि, वामन, कुब्ज अने हुंमक एवे नामे छ होयछे. वर्णादिक चार ते आवीरीते. वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श. अगुरुलघु ते जेना उदयथकी प्राणीनुं शरीर भारी अने हलवुं पण न थाय तेअगुरु लघु. अने उपघात नाम कर्म तेने कहिए; जेना उदयथी जीव उपघात एटले विनाश पामे ते विनाश पण पोतानाज शरीरे करी थाय. जेम पडजीभप्रमुख निकले, ते जाणवुं. पराघात नाम कर्म ते जेना उदयथी पोताथकी बलवंत जे होय तेने पण डुर्निरीक्ष्य होय; कोइ सन्मुख जोइ शके नही, कोइ सांमो बोली शके नही.॥२७२॥

मूलः—अणुपुव्वी चउभेया, उस्सासं आयवंच उज्जोयं ॥ सुहअसुहा विहगगई, तसाय वीसंच निम्माणं ॥ २७३ ॥ अर्थः—आनुपूर्वीपण गतिनीपरे चार प्रकारे जाणवी. पण एटलुं विशेषछे के जीवे जे गतिनुं आयुष्य बांध्युं होय ते गतिनेविषे दोरिए बांधि वृषभादिकने जेम खेंची लइ जइए तेम खेंचीने लइ जाय ते चारगति आश्री चार अनुपूर्वी जाणवी. जेना उदयथकी जीव श्वासोश्वास लेवानी समर्थाइए करी सहित थाय ते उश्वास नाम कर्म जाणवुं. जेना उदयथकी पोते अतापवंत थको पण अनेरा जीवोने ताप उपजावे. जेम सूर्यनुं मांमलुं

पृथ्वी कायिक जीव ते पोते शीतलथका परने ताप उपजावे ठे, तेनी परे ताप उपजावे ते आतप नाम कर्म जाणवुं, जेना उदयथकी जीवना अंग उद्योतवंत थाय; जेम देवता यतिने उत्तरवैक्रिये ज्योतिषि तथा खजूआ प्रमुखना शरीर दीपे ते उद्योत नाम कर्म जाणवुं. शुभने अशुभ विहायो गति तेमां शुभ विहायो गतिना उदय थकी गज वृषभादिकनी परे भली गति थायठे. अने अशुभ विहा योगतिना उदयथकी खर शूकरादिकनी परे माठी गति थायठे.

त्रसादिक वीश ते त्रस दशक तथा स्थावर दशक. तेमां त्रसनाम कर्मना उद यथकी प्राणी बे इंद्रियादिक भाव पामे; बादरना उदयथकी जीव बादरपणुं ल हे. जे पोतपोतानी पर्याप्ति पूरण करे ते पर्याप्तनाम कर्म, प्रत्येक भाव प्राणी पामे ते प्रत्येकनामकर्म, जेना उदयथकी दांत प्रमुखने स्थिरपणुं थाय ते स्थिर नाम कर्म, जेना उदयथी नाभीनी उपरना अंगने शुभपणुं होय ते शुभनामकर्म, जेना उदयथकी समस्त प्राणीने इष्टथाय ते सौभाग्यनाम कर्म, जेना उदयथकी मनोहर स्वर थाय ते सुस्वरनाम कर्म, जेना उदयथकी तेनुं वचन समस्त लोकने ग्राह्य थाय ते आदेयनाम कर्म अने जेना उदयथकी यशःकीर्त्तिए करीसहित थाय ते यशःनाम कर्म. ए त्रस दशको कह्यो. ए थकी विपरीत स्थावर दशक ठे. जेना उदयथकी जीव पृथ्व्यादिकपणु पामे ते स्थावर नामकर्म, एम सर्व दशेबोल विपरीतपणे जाणवा. एटले सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अस्थिर, अशुभ ते ना भीथकी नीचे पादादिक, अवयव, अशुभ होय, दौर्भाग्य ते डुर्भाग्यना उदयथकी जीव डुर्भाग्य थाय, डुस्वर, अनादेय, अयश ते कोइनुं घणुज भलुं कस्या थका पण यश मले नही. ए थावर दशक कह्यो. निर्माण ते सूत्रधारनी परे आप आ पणा अंग जे ठामो ठाम रहे ते जाणवुं. ॥ २०३ ॥

मूलः—तिज्ञयरेणं सहिया, सत्तठीए हवंति पयडीउ ॥ सम्मामीसेहिविणा, तेव न्ना सेस कम्माणं ॥ २०४ ॥ अर्थः—ए पूर्वोक्त प्रकृतिने तीर्थंकरनाम कर्मे करी सहित करिए तेवारे नामकर्मनी शडसठ प्रकृति थायठे. तथा शेष सात कर्मनी जे पंचावन प्र कृति ठे तेमांथी सम्यक्त्व अने मिश्र विना शेष कर्मनी त्रेपन प्रकृति थायठे. ॥ २०४ ॥

मूलः—एवं वीसुत्तरसय, बंधेपयडीण होइ नायवं ॥ बंधण संघायाविय, सरी रगहणेण इह गहिया ॥ २०५ ॥ अर्थः—एम सडसठ तथा त्रेपन मेलव्याथकी आठे कर्मनी एकशो ने वीश प्रकृति बंधनेविषे थायठे ते जाणवी. इहां कोइ कहेशेके प्रथ म जेवारे बेतालीश प्रकृति कही तेवारे तेमां बंधन अने संघातन प्रकृति कही; अ

ने हमणां सडसठमांहे ते केम गणता नथी? तेने कहेछे के बंधन ने संघातन ते शरीरने ग्रहणे इहां लीधांछे. माटे ए पृथक् ग्रहण कर्यांछे ॥ २७५ ॥

हवे त्याणु जेद देखाडेछे. मूलः—बंधण जेया पंचव, संघाया विय हवंति पंचे व ॥ पणवस्रा दोगंधा, पंचरसा अठ फासाय॥२७६॥ अर्थः—बंधनना पांच जेद. त्यां जे औदारिकादिक पुजल बांध्याछे, अने बांधिए छइए तेने तेजस अने कार्मण साथे जेम लाख संश्लेष द्रव्य तेनी परे मेलववुं ते औदारिक बंधन. एमज वैक्रिय, आहारक, तेजस अने कार्मणना जेदे करी पांच प्रकारे जाणवुं. तेम संघात ते पण पांच प्रकारे थायछे. त्यां जेम दंताली तृणना समूहने एकठा करेछे तेम जे औदारिकादिक पुजलने एकठा करेछे ते संघात कहिए. ते औदारिकादिक पांच जाणवा; अने वस्राके० वर्ण पांच. कृष्ण, नील, रक्त, पीत, अने श्वेतना जेदे जाणवा. सुरजी अने डुरजी ए बे गंध जाणवी. तिक्त, कटु, कसायल, आम्ल ने मधुर ए पांच रस जाणवा. गुरु, लघु, मृडु, खर, शीत, उष्ण, स्निग्ध ने रुक्ष, ए आठ स्पर्श जाणवा.

मूलः—दस सोलस छवीसा, एया मेलेवि सत्त सठीए ॥ तेणउई होइ तउ, बंध ण जेयाउ पन्नरस ॥ २७७ ॥ अर्थः—बंधन पांच अने संघात पांच ए दश थया तथा सोलसके० सोल ते आवीरीते के वर्णादिक वीश प्रकृतिथकी सामान्यप णे प्रथमनी सम्डसठमां वर्ण चतुष्क आवी गयुंछे ते, वीशमांथी वर्ण चतुष्क काढी नाखिये तेवारे सोल प्रकृति रहेछे; ते पूर्वोक्त पांच बंधन ने पांच संघात साथे मेलवतां छवीश थाय. ते वली सम्डसठ साथे मेलवी थकी त्राणुं थाय छे.॥२७७॥

हवे एकशोने त्रण जेद देखाडेछे. बंधनना पन्नर जेद ते आवीरीते थाय छे. मूलः—वेउव्वाहारो रालियाण संगतेय कम्मजुत्ताण ॥ नवबंधणाणिइयर, डुसहिया णं तिन्नि तेसिंच॥२७८॥ अर्थः—वैक्रिय, आहारक ने औदारिक एना संगके० पोत पोताना त्रण. ते आवीरीते, वैक्रिय वैक्रिय बंधन, आहारक आहारक बंधन, औदारिक औदारिक बंधन, ए त्रण थया तथा तेजस ने कार्मणे युक्त ते आवीरीते. वैक्रिय तेजस बंधन, वैक्रिय कार्मण बंधन, आहारक तेजस बंधन. आहारक कार्मण बंधन, औदारिक तेजस बंधन, ने औदारिक कार्मण बंधन ए सर्वे मली नव बंधन थयां. अने इतर ते तेजस कार्मणरूप, ए बे सहित त्रण थाय, ते आवीरीते, वैक्रिय तेजस कार्मण बंधनरूप, आहारक तेजस कार्मण बंधन, औदारिक तेजस कार्मण बंधन ए बार थया. तिन्नितेसिंके० वली तेजस ने कार्मणना त्रण ते आवी रीते; तेजस तेजस बंधन, तेजस कार्मणबंधन, कार्मण कार्मण बंधन ए पन्नर थया.

मूलः—सवेहिं वि छहेहिं, तिगअहिय सयंतु होइ नामस्स॥ इय उत्तरपयडीणं, कम्मछग अछवन्नसयं॥१७०॥ अर्थः—एम सर्व ए पन्नर बंधन ते पूर्वोक्त पंचक रहित करी मेळविये तेवारे एकशोने त्रण नाम कर्मनी उत्तर प्रकृति थायछे, एम उत्तर प्रकृति सर्व अछगके० आठेकर्मनी मळी एकशोने अछावन्न थायछे. इति पंचविंशति गाथार्थ.

अवतरणः—बंध उदय उदीरणा सत्ताणंकिंपिसरूवंति एटले कर्मना बंध उदय उदीरणा अने सत्तानुं किंचित् स्वरूप कहेवानुं बशेने सत्तरमुं द्वार कहेछे. मूलः—सत्तछछेग बंधा, सत्तुदया अछसत्तचत्तारि॥ सत्तछछ पंच डुगं, उदीरणा ठाण संखेयं॥१७०॥अर्थः—पेहेलो सात, आठ, छ अने एक ए चार स्थानक बंधनेविषे होय, सत्ता अने उदयनेविषे, आठ, सात अने चार ए त्रण स्थानक होय. तथा सात, आठ, छ, पांच अने बे उदीरणानेविषे होय. ए स्थानकनी संख्या कही. ॥१७०॥

मूलः— बंधेछ सत्तणाउग, छविह मोहाउ इगविहंसायं॥ संतोदएसु अछउ, सत्त अमोहा चउ अघाई॥ १७१ ॥ अर्थः—बंध ते जीव आठकर्मनुं करे, अने जेवारे सात कर्मनुं बंध करे, तेवारे आयु वरजीने करे, जेवारे छ कर्मनुं बंध करे तेवारे मोहनीय तथा आयु ए बे वरजीने शेष छनुं बंध करे. जेवारे एकनुं बंध करे तेवारे एक सातावेदनीयनुंज बंध करे. एवं बंधस्थाननी संख्या कही. हवे संतोदएसुके०सत्ता अने उदयनेविषे कहिए छैए. त्यां सत्ताये अने उदये आठ कर्म होय. अने मोहनीयरहित सात होय. अने चार घनघातिकर्मे रहित होय तेवारे शेष चार सत्ता अने उदये थाय. ॥ १७१ ॥

हवे उदीरणाना स्थानकनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—अछउदीरइसत्तउ, अणाउछविह मवेयणियआऊ॥ पण अवियण मोहाउग अकसाइ नाम गोत्तडुगं॥१७२॥ अर्थः—मिथ्यात्व गुणठाणाथी मांमीने प्रमत्तगुणठाणासुधी जीव निरंतरपणे आठकर्मनी उदीरणा करे, अने केवल जे नवसंबंधी आयुष्य अनुजवेछे ते जेवारे आवलिकाविशेष थाय तेवारे आयुष्यने आवलिका प्रविष्टपणाये करीने उदीरणानो अजाव. तेथी सात कर्मनुं उदीरक होय. वली सम्यक् मिथ्यादृष्टि गुणस्थानके प्रवर्त्तमान थको सदा आठ कर्मनुं उदीरकहोय; जे कारण माटे आवलिका विशेष आयुष्यछते मिश्रगुण ठाणानो असंजव छे, ते आवीरीते अंतरमुहूर्त अवशेष आयुष्ये मिश्र गुणठाणाथकी पड्यो थको जीव सम्यक्त्वे अथवा मिथ्यात्वे जाय माटे; तथा अप्रमत्त अपूर्वकरण अने अनिवृत्ति बादर ए गुणठाणानेविषे वेदनीय अने आयुष्य वरजी शेष छ कर्मनुं उदीरक थाय. वेदनीय ने आयुषनेविषे

अति विशुद्ध अध्यवसायपणे करी उदीरणायोग्य अध्यवसाय स्थानकनो अभाव छे, पण सूक्ष्म संपरायगुणठाणे ज्यांलगे मोहनीय आवलिकाविशेष नथाय त्यां लगे आवलिकाविशेषे मोहनीयने उदीरणाना अभावथकी छ कर्मनुं उदीरक थाय.

अने उपशांत मोहे वेदनीय, मोहनीय तथा आयु वर्जी पांचनुं उदीरक, त्यां वेदनीयने आयुषानुं कारण प्रथम कह्युं; अने मोहनीयना उदयना अभावथकी उदिरे नही, तथा अकषाइ क्षीणमोह बारमे गुणठाणे ज्यांसुधी ज्ञानावरण दर्शनावरण अंतराय आवलिका प्रविष्ट न होय, त्यांलगी पांचनुं उदीरक; अने ते जेवारे त्रणे आवलिका प्रविष्ट थाय तेवारे तेनी उदीरणाना अभावथकी नाम अने गोत्र ल क्षण बे कर्मनुंज उदीरणहार होय. त्यां कारण ए छे के घातीयां चारकर्ममूलथी क्षीण थयां, तेहनी उदीरणा रही नथी; अने वेदनीयने आयुषानी पण उदीरणा न थाय; त्यां कारण पूर्वोक्तज जाणवुं. अने अयोगीगुणठाणे योगना अभावथकी उदीरणा न करे. अजोगि अणुदीरगोजयवं इति वचनात्. ॥ १९१ ॥

हवे सामान्यपणे बंधादिकनेविषे प्रकृतिनी संख्या कहेछे. मूलः—बंधेवि सुत्त रसयं, सयबावीसंतु होइ उदयंमि॥ उदीरणाए एवं, अडयाल सयंतु संतंमि॥१९२॥ अर्थः—नवा कर्मनुं ग्रहण ते बंध, तेने सामान्यपणे एकशोने वीश प्रकृतिनो बंध छे. विपाकेकरी कर्मना पुज्ञलनुं वेदवुंछे ज्यां, तेने उदय कहिए. त्यां एकशोवीश कर्म प्रकृति उदयावलिकाये थाय. अणपाम्या कर्मने उदयावलिकानेविषे आणवो ते उदीरणा. त्यांपण एमज एकशो ने बावीश कर्मप्रकृतिनी उदीरणा थाय. सत्ता तेने कहिए जे छतानो भाव ते सत्ता-कर्मनी स्थिति पोतेज जाणवी. ते एकशो ने अठावन, तेमां पंदर बंधनछे तेमांथी दशबंधन जूदां काढीए, शेष पांच बंधन राखिए तेवारे एक शो ने अमतालीश प्रकृति सत्ताए जाणवी. एनो यंत्र देखाडेछे. इतिगाथा चतुष्टयार्थ ॥

ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ए	वेदनी २	मोहनी २६	आयु ४	नाम ६७	गोत्र २	अंतराय ५	बंधनेविषे १२०
ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ए	वेदनी २	मोहनी २७	आयु ४	नाम ६७	गोत्र २	अंतराय ५	उदय अने उदीरणाए १२२
ज्ञाना वर्ण ५	दर्शना वर्ण ए	वेदनी २	मोहनी २७	आयु ४	नाम ए३	गोत्र २	अंतराय ५	सत्तानेविषे १४७

अवतरणः—कम्मठिई साबाहत्ति एटले कर्मनो अबाधाकाल तेणेकरी सहित कर्मनी स्थितिनुं वर्णने अढारमुं द्वार कहेछे. मूलः—मोहे कोडाकोडी, सत्तरी वीसं नामगोयाणं ॥ तीसयराण चउण्हं, तेत्तीस यराइं आउस्स ॥ १०४ ॥ अर्थः—मोहनीयकर्मनी स्थिति सित्तेर कोडाकोडी सागरोपमनी तथा नाम अने गोत्रनी वीश कोडाकोडी; अने इतरके० बीजा ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय अने अंतराय ए चार कर्मनी प्रत्येके त्रीश कोडाकोडी सागरोपमनी स्थिति जाणवी. अने आयुकर्मनी तेत्रीश सागरोपमस्थिति जाणवी. ॥ १०४ ॥

मूलः—एसा उक्कोस ठिई, इयरा वेयणिय बारसमुहुत्ता ॥ अठ्ठनाम गोत्ते सुसेस ए संमुहुत्तंतो ॥ १०५ ॥ अर्थः—ए आठकर्मनी उत्कृष्ट स्थिति कही. अने इयराके० इतर ते जघन्य स्थिति तो वेदनीय कर्मनी बार मुहूर्त्त, अने नाम तथा गोत्रकर्मनी आठ आठ मुहूर्त्त. शेष ज्ञानावरणीय, दर्शनावरनीय, मोहनी, आयु ने अंतराय ए पांचकर्मनी जघन्यस्थिति एक एक अंतरमुंहूर्त्तनी जाणवी. ॥ १०५ ॥

मूलः—जस्स जइ कोडिकोडीउ तस्स तेत्तिय सयाणि वरसाणि ॥ होइ अबाहाकालो, आउंमि पुणो नवति नागो ॥१०६॥ अर्थः—जे कर्मनी जेटली कोडाकोडी स्थिति तेने तेटला वर्षना शैकडा अबाधाकाल होय, अने आयुकर्मनो अबाधाकाल नवनो त्रीजो नाग होय. केमके आयुष्यनो बंध वर्तमान आयुशने त्रीजे नागे थाय. यडुक्तं ॥ सोवक्कमाउ आपुण, सेसति नागे हवा नवमनागे ॥ सत्तावीसे मेवा, अंत मुहुत्तंति मेवावि ॥ १०६ ॥ इति गाथा त्रयार्थ.

अवतरणः—बायालीसाउ पुन्नपयडीउत्ति एटले बेंतालीश पुंण्यप्रकृतिनुं वर्णो ने ओगणीशमुं द्वार वखाणेछे. मूलः—सायं उच्चागोयं, नरतिरि देवाउ नाम एयाउ॥ मणुअडुगं देवडुगं, पंचिंदिअ जाइ तणुपणगं ॥ १०७ ॥ सातावेदनीय, उच्चैर्गोत्र, मनुष्यायु, तिर्यंचायु, अने देवायु, हवे एमां नाम कर्मनी जेटली प्रकृति छे ते कहेछे. मनुष्यगति, मनुष्यानुरूपूर्वी, देवगति, देवानुपूर्वी, पंचेंद्रियजाति, औदारिक वैक्रिय, आहारक, तेजस ने कार्मण ए पांच शरीर जाणवां. ॥ १०७ ॥

मूलः—अंगोवंगतिगंपिय, संघयणं वज्जरिसहनारायं ॥ पढमंचिय संठाणं, वन्नाइ चउक्क सुपसत्थं ॥१०८॥ अर्थः—आद्यना त्रण शरीरना अंगोपांग, वज्र रूषननाराच संघयण, समचतुरस्त्र संस्थान, सुप्रशस्त के० नलो वर्ण, गंध, रस ने स्पर्श.॥१०८॥

मूलः—अगुरुलहु पराघायं, उस्सासं आयवंच उज्जोयं ॥ सुपसत्था विहगगई, तस्साइ दसगंच निम्माणं ॥ १०९ ॥ अर्थः—अगुरुलघु, पराघात, श्वासोश्वास,

आतप, उद्योत, सुप्रशस्त, शुभविहायोगति, त्रसदशक, ते आवीरीते. त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, शुभग, सुस्वर, आदेय, ने यश ए त्रसदशक अने निर्माण.

मूलः—तिञ्चयरेणं सहिया, पुन्नप्पयडीउ हुंति बायाला ॥ सिवसिरि कडक्खियाणं, सयावि सत्ताण मेयाउ ॥ ३०० ॥ अर्थः—तीर्थंकरनाम कर्म सहित बेतालीश पुण्य प्रकृति होयछे ते मोक्ष लक्ष्मीए जेनेसन्मुख जोयुंछे. एवा प्राणी तेने ए सदा थायछे.

अवतरणः—बासीई पाव पयडिउत्ति एटले ब्यासी पाप प्रकृतिनुं बशोने वीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—नाणंतराय दसगं, दंसण नवमोह पयइ छवीसा ॥ अस्सायंनिरयाउं, नीयागोएण अडयाला ॥ ३०१ ॥ अर्थः—मतिज्ञानावरण, श्रुतज्ञानावरण, अवधिज्ञानावरण, मनपर्यवज्ञानावरण, केवलज्ञानावरण, दानांतराय, लाभांतराय, भोगांतराय, उपभोगांतराय, वीर्यांतराय, तथा चार दर्शन ने पांच निद्रामली नवप्रकारे दर्शनावरण कर्म. तथा सम्यक्त्वने मिश्रटाली शेष छवीश प्रकृति, मोहनीयनी असातावेदनीय, नरकायु, ने नीचैर्गोत्रेकरी सहित अडतालीश भेद थया.

मूलः—नरयडुगं तिरियडुगं, जाइ चउक्कंच पंच संघयणा ॥ संठाणा विय पंचउ वन्नाइ चउक्क मपसछं ॥ ३०२ ॥ अर्थः—नरकगति, नरकानुपूर्वी, तिर्यंचगति, तिर्यंचानुपूर्वी, एकेंद्रियजाति, बेइंद्रियजाति, त्रेंद्रियजाति, चउरेंद्रियजाति, ऋषभनाराचादिक पांच संघयण, न्यग्रोधादिक पांच संस्थान, अप्रशस्त वर्णादिक चार.

मूलः—उवघाय कुविहयगई, थावर दसगेण हुंति चउतीसा ॥ सव्वाउ मिलियाउ, बासीई पावपयमीउ ॥ ३०३ ॥ उपघातनाम, अशुभविहायोगति, थावर दशक कहेछे, थावर, सूक्ष्म, अपर्याप्त, साधारण, अथिर, अशुभ, दौर्भाग्य, दुःस्वर, अनादेय अने अयश ए दश मेलविए तेवारे नरकद्विकादिथकी मांमी इहां सुधी चोत्रीश थायछे. अने अडतालीश प्रथमनी सर्व मेलवतां ब्यासी पाप प्रकृति थायछे. इतिगाथात्रयार्थः

अवतरणः—भाव छक्कंच पडिभेयं एटले प्रतिभेदे करी सहित छ भावनुं बशोने एकवीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—भावाछ ओवसमिय, खइय खउवसम उदय परिणामा ॥ दुनवहारिगवीसा, तिगभेया सन्निवाउय ॥ ३०४ ॥ अर्थः—विशिष्टहेतुथकी स्वभावथकी अथवा प्राणीने ते ते स्वरूपे होय ते भाव परिणामनुं विशेष जाणवुं. अथवा ए उपशमादिक पर्याये जे होय ते भाव जाणवो. इहां च शब्द अवधारणने अर्थे छे, त्यां पहेलो भस्म छन्न अग्निनीपरे जे अवस्था प्रदेशे होय पण उदयनो अभाव एवो उपशम ते मोहनीयनोज थाय पण शेष कर्मने उपशम न थाय. ते कारणे मोहनीयने उपशमे थयो ते उपशमिकभाव जाणवो. बीजो मोहनीयना क्ष

यथकी थयो ते क्षायिक नाव. त्रीजो केटलाक कर्मनो क्षय अने केटलाकनो उपश म तेणे करी थयो ते क्षायोपशमिकनाव. चोथो आठ कर्मने पोताना उदयनेविषे पहोंच्योछे तेनो पोताना स्वरूपे करी अनुनववो ते उदय; तेणेकरी निपन्यो ते उदयिकनाव जाणवो. पांचमो परिणमवुं ते कोइक रीते प्रथमनी अवस्थाने मूकी आगली अवस्थानेविषे जावुं ते परिणाम तेने विषे जे निपन्यो ते परिणामिक नाव जाणवो. छठो सम्यक्प्रकारे करी निपतन के० एकठो मलवो ज्यांछे ते सन्निपात, घणा नाव एकठा मल्याछतां ए छठोनाव निष्पन्न थायछे. एमां पांच नावना अनुक्रमे बे, नव, अढार, एकवीश ने त्रण ए नेद जाणवा; अने ए सर्व नाव एकठा मलवाथकी छठो सन्निपातनाव केहेवायछे. ॥ ३०४ ॥

उपशमिकना बे नेद अने क्षायिकना नव नेद कहेछे. मूलः—सम्मचरणाणि पढमे, दंसणनाणाइ दाण लानाय ॥उवनोग नोग वीरिय, सम्मचरित्ताणि य बिईए ॥३०५॥ अर्थः—दर्शन सप्तकना उपशमथकी सम्यक्त्व थाय अने चारित्र मोहनीयने उपशमे चारित्र थायछे. ए बे नेद पढमेके०पहेलो उपशमिकनावनेविषे थायछे. तथा दंसण नाण ए सूत्र ते सूचकमात्र तेथी दर्शननाण शब्दे केवल दर्शन ने केवल ज्ञान लेवुं तथा दानादिक पांच प्रकारनी लब्धी ते पंचविध अंतरायना क्षयथकी थायछे. एम क्षायिकसम्यक्त्व पण सप्तकना क्षयथी थायछे, एम क्षायकचारित्र ते पण चारित्रमोहनीयना क्षयथकी थायछे. ए नव बोल बीजे क्षायक नावे थायछे.

हवे क्षायोपशमिकना अढार नेद कहेछे. मूलः—चउनाणा नाणतिगं, दंसणतिगं पंचदाण लद्धीउ ॥ सम्मत्तं चारित्तं,च संजमा संजमो तइए ॥३०६॥ अर्थः—मत्यादि चार ज्ञान तथा मत्यादिक त्रण अज्ञान, दर्शनत्रिक ते चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन ने अवधिदर्शन लक्षण जाणवुं. तथा दान, लान, नोग, उपनोग ने वीर्य ए पांच लब्धी; इहां ए विशेषछे के क्षायिकनावनेविषे कोइ कहेशे के दानादिक पांच लब्धि पूर्वेक्षायिक नावे कही, तो इहां वली क्षायोपशमिक नावे केहेता थका विरोध उपजेछे. त्यां ए उत्तर जे; दानादिक लब्धी बे प्रकारे छे; अंतराय कर्मना क्षय थवाथी क्षायकलब्धी केवलीने थाय. तथा क्षायोपशम लब्धि जे कही ते छद्मस्थने थायछे. ए पन्नर थया अने सोलमुं सम्यक्त्व पण सप्तकने क्षायोपशमे थायछे. अने सत्तरमुं क्षायोपशमे धुरला चारित्र सामायिकादिकचार थायछे; तेमज अढारमुं संयमासंयम रूप देशविरतिचारित्र ते अप्रत्याख्यानावरण कषाय मोहनीयने क्षयोपशमे थाय. ए अढारनेद त्रीजा क्षायोपशमिक नावना थया. ॥३०६॥

हवे उदयिक नावना एकवीश नेद कहेछे. मूलः—चउगइ चउक्कसाया, लिंगति अं लेसछक्क मन्नाणं ॥ मिछत्तम सिद्धत्तं, असंजमो तह चउत्थंमि ॥२०७॥अर्थः— गतिप्रमुख सर्वे चोथे उदयिक नावे थायछे. त्यां गतिचार ते नामकर्मना उदयथकी जीवने होय. अने चार कषाय ते कषायमोहनीयना उदयथी थाय, लिंग त्रण पण मोहनीयना उदयथी संनवे, अने लेश्या छ ते जे कहेशे के योगपरिणाम ते लेश्या तेने मते तो योग त्रणनुं उपजावनार जे कर्म तेना उदयथी लेश्या समजवी. अने जे कहेशे के कर्म निष्पंद लेश्याछे तेने अनिप्राये तो आठकर्मना उदयथकी लेश्या समजवी. जेम संसारीने असिद्धपणु ते आठ कर्मना उदयथकी होयछे. एक वली कषायनो निष्पंद ते लेश्याछे एम कहे छे; तेना अनिप्राये तो कषाय मोहनीयना उदयथकी थायछे. ए सत्तर थया अने अढारमुं अज्ञान, ओगणीशमुं मिथ्यात्व वीशमुं असिद्धपणु अने एकवीशमुं अविरति असंयमपणुं. तेमां अज्ञान ते विपरीत बोधरूप जे मति अज्ञानादिक त्रण ते ज्ञानावरण मिथ्यात्व मोहनीयना उदयथकी थाय. अने प्रथम जे अज्ञानत्रिक क्षायोपशमिक नावे कह्यो हतो ते वस्तुना अवबोध मात्रनी अपेक्षाये समस्त वस्तुनुं जाणपणुं विपरीत नावे तथा अविपरीत नावे ते ज्ञानावरणी कर्मने क्षयोपशमेज थाय. अने जेने समस्तपणे विपर्यस्त लक्षण अज्ञानपणु होय ते ज्ञानावरण. अने ते मिथ्यात्व मोहनीय कर्मनाज उदयथी संनवे. एटला माटे अज्ञाननेविषे क्षायोपशमिक अने उदयिक ए बंने नाव संनवे छे, तेमां विरोध न जाणवो. मिथ्यात्व मोहनीयना उदयथकी असिद्धत्वपणुं, अने आठकर्मना उदय थकी असंयम, अविरतिपणु, ते अप्रत्याख्यानावरण कषायना उदयथकी थाय; एटला बोलना उपलक्षणथकी निद्रा पांच अशातावेदनीय हास्य रति अरति प्रमुख अनेरा पण पोतपोताना कर्मने उदयिक नावे चोथा नावनेविषे संनवता जाणवा. ॥ २०७ ॥

हवे पारिणामिक नावना त्रण नेद कहेछे. मूलः—पंचमगंम्मिय नावे, जीवो नवत्त नवया चेव ॥ पंचएहवि नावाणं, नेया एमेव तेवन्ना ॥२०८॥ अर्थः—पांचमा नावनेविषे जीवत्वपणु अनादि पारिणामिक नावेछे. एमज बीजुं अनव्यत्वपणु अने त्रीजुं नव्यत्वपणुं पण अनादि पारिणामिक नावे छे. एनां उपलक्षणथकी घृत गोल सालिप्रमुख ने तेमज मदिरादिकने नव पुराणादिक अवस्थानाविशेष, तेमज वर्षधर, पर्वत, नवन, विमान, कुट, रत्नप्रनादिकना पुजलनुं विघटवुं. नवा पुजलनुं लागवुं इत्यादिक सर्व तथा वली गंधर्व नगर, हसितहसता सरखो देखाय. उल्का

पात कपिके० वानर, गाज, धूंहरि, दिग्दाह, वीजली चंद्रमाने सूर्यने फरतुं कुंमालुं देखाय. ग्रहणे इंद्रधनुष्य थाय. ते सर्व सादि पारिणामिकजावे ठे अने लोकअलोकनी स्थिति धर्मास्तिकायादिक ए सर्वअनादि पारिणामिकजावे जाणवा. एरीते पंचएहवि के० पांचे जावना बे, नव, अढार, एकवीश ने त्रण मल्याथी त्रेपन जेद होयठे.

हवे ठहो सांनिपातिक जाव ते प्रथम पांच जाव कह्या तेने जेवारे बेने संयोगे, त्रणने संयोगे, चारने संयोगे इत्यादिक आगमोक्त प्रकारे करी पांच प्रकारना जे जाव ते मल्या ठतां ठवीश जेद थायठे. ते आवीरीतेः—द्विकसंयोगे दशजंग, त्रिकसंयोगे दश, चतुःसंयोगे पांच अने पंचसंयोगे एक मली ठवीशजंग थाय. तेमां द्विकसंयोगे दश थाय तेनीरीत कहेठे. एक उदयिक ने उपशमिक, बीजो उदयिक ने क्षायिक. त्रीजो उदयिक ने क्षायोपशमिक, चोथो उदयिक ने पारिणामिक, पांचमो उपशमिक ने क्षायिक, ठहो उपशमिक ने क्षायोपशमिक, सातमो उपशमिक ने पारिणामिक, आठमो क्षायिक ने क्षायोपशमिक, नवमो क्षायिक ने पारिणामिक, दशमो क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. हवे त्रिकसंयोगे दश जंग कहेठे. एक उदयिक, उपशमिक ने क्षायिक, बीजो उदयिक, उपशमिक ने क्षायोपशमिक, त्रीजो उदयिक, उपशमिक ने पारिणामिक, चोथो उदयिक, क्षायिक ने क्षायोपशमिक, पांचमो उदयिक, क्षायिक ने पारिणामिक, ठहो उदयिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक, सातमो उपशमिक, क्षायिक ने पारिणामिक, आठमो उदयिक, क्षायिक ने पारणामिक, नवमो उपशमिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. दशमो क्षायिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. हवे चतुःसंयोगे पांच जंग कहेठे. एक उदयिक, उपशमिक, क्षायिक ने क्षायोपशमिक. बीजो उदयिक, उपशमिक, क्षायिक ने पारिणामिक. त्रीजो उदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. चोथो उदयिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक. पांचमो उपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिकने पारिणामिक. ए सर्व मली पचीश जंग थया. ठवीशमो पंचकसंयोगे एक जंग थाय ते सुप्रसिद्धठे; ए ठवीश तो जंगनी रचना मात्रे देखाडया, परंतु जे संजवी जांगा एमां परमार्थिक ठ ठे ते आवीरीतेः—एक द्विक संयोगे, बे त्रीक संयोगे, बे चतुष्क संयोगे, एक पंचसंयोगे. एना प्रकारांतरे पन्नर जंग थायठे ते सूत्रनो करनार देखाडेठे. ॥२०८॥

मूलः—उदयय खाउवसमिअ, परिणामेहिं चउरो गइ चउक्के ॥ खइय जुएहिं चउरो, तदजावे उवसमजुएहिं ॥ २०९ ॥ एक्केक्को उवसमसिढि, सिद्धकेवल सुएवम

विरुद्धा ॥ पन्नरस सन्निवाइय, जोयावीसंअसंनविणो ॥ ३१० ॥ अर्थः—उदयिक क्षायोपशमिक ने पारिणामिक ए त्रणे नांगे निपन्यो जे सांनिपातिक ते गतिना नेदथकी चिंतवतो चार प्रकारे थाय. ते आवीरीतेः—तेमां उदयिकादिक त्रण नेद ते प्रथम तो नरकगति साथे देखाडेछे. नारकीनी गतिनेविषे योजना करवी ते आम, उदयिक नारकीपणुं. क्षायोपशमिक इंद्रियादिकजाणवुं. अने पारिणामिक ते जीवत्वादिक. एम शेष त्रण गतिनेविषे पण योजना करवी. हवे खइय जुएहिं ए टले एज उदयिकादिक क्षायिके सहित सांनिपातक नेद जे थायछे तेपण गतिना नेदथकी चार प्रकारे बोलिये.ते आवीरीतेः—उदयिकीतोनारकगति छे.तथा क्षायिक सम्यक्त्वछे,अने क्षायोपशमिके इंद्रियादिकछे,तथा पारिणामिक नावे जीवत्वादिक छे, एम वली शेष त्रण गतिनेविषे नावना करवी. प्रकारांतरे वली चतुष्कसंयोगे चार नेद कहेछे. तद्नाव इति ; एक क्षायिकने अनावे उपशमनावयुक्त उदयिकनो सांनिपातक चतुष्कसंयोगे एम अनिलाषछे. उदयिक, उपशमिक, क्षायोपशमिक पारणामिक ए पण पहेलानी परे गतिना नेदथकी चार प्रकारे नाववुं, नवरं एटलुं विशेष जे उपशमिक ते सम्यक्त्व जाणवुं. हवे जे एक संख्याये सांनिपातिक नेद उपजे. उपशमश्रेणी सिद्धकेवलीनेविषे अविरुद्ध होय. ते देखाडेछे. एक उदयिक, बीजो उपशमिक, त्रीजो क्षायिक, चोथो क्षायोपशमिक, पांचमो पारिणामिक. एने संयोगे निपन्यो एक नेद जे कोइ क्षायिक सम्यक्दृष्टिछतो उपशमश्रेणी पडिवजे तेने उदयिक मनुष्यपणुं, अने उपशमिक चारित्र, तथा क्षायिक सम्यक्त्व वली क्षायोपशमिक इंद्रियादिक जाणवा; अने पारिणामिकनावे जीवत्वपणु जाणवुं. अने सिद्धनेविषे द्विकसंयोगलक्षण एक नेद सांनिपातिक होय ते आवीरीतेः—क्षायिक ने पारिणामिक तेमां क्षायिकनावे सम्यक्त्व अने केवल ज्ञानादिकजाणवा, तथा पारिणामिक नावे जीवत्वादिकजाणवुं,तथा केवलीने एक त्रिकसंयोगलक्षण सांनिपातिक नेद होय ते आवीरीतेः—उदयिक क्षायिक ने पारिणामिक,त्यां उदयिके मनुष्यत्वादिक जाणवुं, अने क्षायिके केवलज्ञानादिक जाणवुं, पारिणामिके जीवत्व नव्यत्वपणुंछे. एम गति प्रमुखनेविषे छ संयोगनी चिंताने प्रकारे अविरोध मांहोमांहे विरोधने अनावे पन्नर सांनिपातिक नेद छठानावना विकल्प थाय अने बाकीना वीश नंग ते असंनवी संयोग मात्रे होय, परंतु जीवनेविषे ते क्यारे पण पामिये नही.

हवे एज छ नंग, जे जे जीवनेविषे संनवे ते सूत्रकार कहेछे. मूलः— डगजोगो सिद्धाणं, केवलि संसारियाण तिगजोगा ॥ चतुजोगजुअं चउसुवि, गईसुमणुआ

ए पणजोगो ॥ ३११ ॥ अर्थः-द्विकसंयोगे दश नंग थायछे, तेमां क्षायिक पारिणामिक ए बे नावे निपन्यो जे नवमो द्विकसंयोग ते सिद्धनेविषे संनवे छे. शेष नव संयोग प्ररूपणा मात्रेज छे. अनेरा जीवोने उदयिकी ते गति जाणवी, अने क्षायोपशमिक इंड्रिय जाणवा, तथा पारिणामिक नावे जीवितव्य जाणवुं, एवा त्रण नाव जघन्यथी पण थाय. केवलिके० केवलीने अने संसारी जीवोने त्रिकयोग, त्यां दश त्रिकयोगमांहे केवलीने उदयिक क्षायिक ने पारिणामिक एवा त्रण नावे निपन्यो,पांचमो नंग संनवेछे. अने उपशमिक ते मोहनीय आश्रितपणाये करीनेछे माटे मोहनीयनो जेने क्षय थयोछे; एवा केवलीने ते संनवे नहीं. एम क्षायोपशमिक पण इंड्रियादि आश्रितपणाये करीने अनेंड्रियने थाय नही. संसारी चतुर्गतिक जीवोने उदयिक, क्षायोपशमिक ने पारिणामिक ए त्रण नावथी निपन्यो छठोनाव त्रिकसंयोगी नांगो लाने, शेष आठ ते प्ररूपणा मात्र क्यांयपण संनवे नहीं.

हवे चतुष्कसंयोगे निपन्या जे पांच नंग तेमांना बे नंग चार गतिनेविषे संनवे ते आवीरीते.-उपशमिक, सम्यक्दृष्टिने उदयिक, उपशमिक क्षायोपशमिक ने पारिणामिक ए चार नावे निपन्यो त्रीजो नांगो होय,अने क्षायिक सम्यक्दृष्टिने उदयिक क्षायिक क्षायोपशमिक ने पारिणामिक एवो चोथो नंग संनवेछे, ते चारे गतिनेविषे पामिए अने मणुआणके० मनुष्यने पूर्वोक्त पंचकयोगे निपन्यो नंगो संनवेछे, पणते जे क्षायिक सम्यक्दृष्टि छतो उपशमश्रेणी पडिवजे, तेनेज होय. परंतु अनेराने संनवे नहीं. एटले ए जीव आश्री सर्व नाव कह्या. ॥३११॥

हवे कयाकर्मे करी कयोनाव संनवे? ते कहेछे. मूलः-मोहस्सेवोवसमो, खाउवसमो च चउघाईणं ॥ उदयरकयपरिणामा, अछण्हविहुंति कम्माणं ॥ ३१२ ॥ अर्थः- आठकर्ममांहे विपाके अने प्रदेशे मोहनीयने उपशम थाय; परंतु शेष कर्मने नथाय. इहां सर्व उपशमनी विवक्षा करिए परंतु देशथकी उपशम लेवुं नहीं. ते सर्व कर्मने संनवे अने उदयावलिकाये प्रविष्ट अंशने क्षये अनुदयावलिकाये प्रविष्ट तेहने उपशमे, विपाकोदयने रुंधवाथकी निपन्यो ते क्षायोपशमिक. ते चउण्हके० चार ज्ञानावरणादिक घातिकर्मने थाय, परंतु शेषकर्मने क्षायोपशमिक नथाय. वली ए चारमां पण केवलज्ञानावरण केवलदर्शनावरण तेणेकरी रहितने ज ते बेहुने विपाकोदयने रुंधवाथकी क्षायोपशमनो असंनव छे.

हवे उदय रकय परिणामा एटले उदयिक,क्षायिकने पारिणामिक ए त्रण नाव ते आठ कर्मने संनवे. त्यां उदयते विपाके अनुनववुं,ए समस्त कर्मोनो सर्वजीवोने संसार

मां देखायछे; क्षय ते अत्यंत उच्छेद, ते मोहनीयने सूक्ष्म संपराय गुणठाणाना चरम समये अने शेष त्रण घातियाकर्मोनो क्षय, ते क्षीण कषाय बारमा गुणठाणाना चरमसमयनेविषे होय, अने अघातिकर्मनो क्षय चउदमा अयोगी केवली गुणठाणाना चरमसमयनेविषे संभवे.

तेम परिणमवुं ते परिणाम, जीवना प्रदेश साथे एकठुं थवुं, अथवा तेवा तेवा द्रव्य, क्षेत्र, कालना अध्यवसायनी अपेक्षाए तेम तेम संक्रमणादिक रूपपणे जे परिणमवुं ते परिणाम. इहां ए तात्पर्यछे के मोहनीयने, उपशमिक, क्षायिक, क्षायोपशमिक, उदयिक ने पारिणामिक. ए पांच भाव संभवे. अने ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अंतराय, ने आयु एनेविषे क्षायिक उदयिक ने परणामिक ए त्रण भाव संभवेछे. ॥ ३१४ ॥

हवे गुणठाणानेविषे पांच भाव कहेछे. मूलः—सम्माइ चउसु तिग चउ, भावा चउ पणुवसामगुवसंते ॥ चउखीणापुव्वेतिन्नि सेस गुणठाणगेगजिए ॥ ३१५ ॥ अर्थः—अविरतिसम्यक्दृष्टि, देशविरति, प्रमत्त ने अप्रमत्त लक्षण, चार गुणठाणानेविषे त्रण अथवा चार भाव लाभे त्यां क्षायोपशमसम्यक्दृष्टिने ए चारे गुणठाणे त्रण भाव लाभे, ते यथा संभवपणे देखाडीए छैए.

उदयिक भावेगति. क्षायोपशमिक भावे, इंद्रिय ने सम्यक्त्वादिक जाणवा. पारिणामिक भावे जीवत्वछे, अने क्षायिकसम्यक्दृष्टिने तथा उपशमिकसम्यक्दृष्टिने चार भाव लाभे, तेमां त्रण तो पूर्वोक्तज. अने चोथुं उपशमिकने उपशमिक सम्यक्त्व लक्षण भाव होय, एमज क्षायिकने क्षायिकसम्यक्लक्षण चोथो भाव होय. वली चउपणके० चार अथवा पांच भाव उपशमिकने उपशांतनेविषे होय, त्यां अनिवृत्ति बादर अने सूक्ष्मसंपराय ए बेऊ गुणठाणे जे जीव वर्त्ते ते उपशमिक कहिए अने उपशांतमोह गुणठाणे वर्त्ते ते जीव उपशांत होय. त्यां अनिवृत्ति बादर अने सूक्ष्मसंपराय ए बे गुणठाणे चार अथवा पांच भाव होय तेमां त्रण जे प्रथम कह्या तेज जाणवा. अने चोथुं उपशमिक सम्यक्त्व तथा अन्यने क्षायिक सम्यक्त्वरूप होय, अने पांचमुं, नवमे दशमे अने अग्यारमे ए त्रण गुणठाणे दर्शनसप्तकना क्षयथी क्षपकने क्षायक चारित्ररूप होय अने उपशमश्रेणी पडिवजताने उपशमिक चारित्रना सद्भावथकी जाणवा तथा चउखीणके० चारभाव क्षीणमोह गुणठाणानेविषे अने अपूर्वकरण गुणठाणे होय, त्यां त्रण पहेलानीपरे जाणवा, अने चोथुं क्षीणमोहे क्षायिक सम्यक्त्व चारित्ररूप अने अपूर्वकरणे क्षायिक सम्यक्त्वरूप

अथवा उपशमिक सम्यक्त्वरूप होय. अने तिन्निसेस एटले त्रण जाव ते शेष गुण गणा जे मिथ्यादृष्टि, सास्वादन, मिश्रदृष्टि, सयोगी अने अयोगी लक्षणनेविषे होय, त्यां मिथ्यादृष्टि आदेदेइने त्रण गुणगणानेविषे उदयिक, क्षायोपशमिक पारिणामिक ए त्रण जाव होय अने सयोगी तथा अयोगीनेविषे उदयिक, क्षायिक ने पारिणामिक ए त्रण जाव होय. ए त्रण प्रमुख जाव जे कह्या ते एकजीवनी अपेक्षा ए जाणवा, पण नाना प्रकारना जीव आश्री कहीए तेवारे संजवी सर्व जाव होय.

अवतरणः- जीवचउ दसत्ति एटले जीवना चउद स्थानकनुं बशें ने बावीशमुं द्वार कहेछे. मूलः-इह सुहुम बायरेगिंदि बि ति चउर असन्नि सन्निपंचिंदि ॥ पज्जत्तापज्जत्ता, कम्मेण चउदस जियगणा ॥ ३१४ ॥ अर्थः- ए जिनशासननेविषे एकेंद्रिय ते सूक्ष्म ने बादरना जेदथकी बे प्रकारे कहीछे. त्रीजुं बेंद्रिय, चोथुं तेंद्रिय, पांचमुं चउरेंद्रिय, छठुं जेने मन नही ते असंज्ञीपंचेंद्रिय अने सातमुं जे मन सहितछे ते संज्ञीपंचेंद्रिय. ए बे जेद पंचेंद्रियना जाणवा. ए सात पर्याप्ता ने सात अपर्याप्ता मली अनुक्रमे चउद जीवनां स्थानक होयछे.॥३१४॥इतिगाथार्थः॥

अवतरणः-अजीव चउदसगंति एटले अजीवना चउद जेदोनुं बशें ने त्रेवीशमुं द्वार कहेछे. मूलः-धम्माधम्मागासा, तियतिय जेया तहेव अद्धाय॥खंधा देस पएसा, परमाणुअजीव चउदसहा॥३१५॥अर्थः-धर्मास्तिकायादिकनुं स्वरूप त्रैकाल्यव्रतना वखाणमांहे द्रव्य षट्कने अधिकारे कह्युं छे. इहां जेद कहियेछैये. एक धर्मास्तिकाय, बीजो अधर्मास्तिकाय,त्रीजो आकाश ए त्रणेना स्कंध,देश ने प्रदेश एवा त्रण त्रण जेद करतां नव जेद थाय छे. दशमो अद्धाके०काल जे समय, आवली मुहूर्त इत्यादिक समस्त वस्तुनी कलनानो करनार जाणवुं, अने स्कंध, देश, प्रदेश तथा परमाणु ए पुजलना चार जेद मली अजीवना चउद जेद थया.॥३१५॥इति गाथार्थः

अवतरणः-गुणगण चउदसगोत्ति एटले चउद गुणगणानुं बशें ने चोवीशमुं द्वार कहेछे. मूलः-मिछे सासणमिस्से, अविरयदेसे पमत्त अपमत्ते॥नियट्टि अनियट्टि सुहुम उवसम खीणसजोगि अजोगिगुणा ॥ ३१६ ॥ अर्थः-इहां संसारमां वसता जीवने अनादि मोहलक्षण, मिथ्यात्व सदा सर्वदा छेज, परंतु जेवारे व्यक्त मिथ्यात्व जे कुदेव उपर देवनी बुद्धि. कुगुरु उपर गुरुनी बुद्धि, अधर्मे उपर धर्मनी संज्ञा; ए प्रगट मिथ्यात्वनो जे उदय थाय ते गुणस्थानकपणे जाणवो, ए मिथ्यात्वगुणस्थानक कह्युं.

बीजुं सास्वादन ते आवीरीते के, जीवने पोते अनादि मिथ्यात्व मोहनीयछे; प

रंतु जेवारे तेनो उपशम थाय, तेवारे जीव उपशम, सम्यक्त्व, प्रथम पामे, अने वली इहां जे अनंतानुबंधिया कषाय उपशमाव्या हता; तेना उदयथी उपशमिक सम्यक्त्वथकी पडताने हजी जीव मिथ्यात्वे गयो नथी, एवुं ब आवली सुधी सास्वादन नामे बीजुं गुणस्थानक होय.

त्रीजुं मिश्रगुणस्थानक, ते आवीरीते के, मिश्रमोहनीय कर्मना उदयथकी सम्यक्त्व अने मिथ्यात्व उपर सरखी बुद्धिहोय, जेम घोडी अने गर्दजना संयोगथकी वेसरनी जाती उत्पन्न थाय. अथवा जेम गोल अने दहीना संयोगथकी बे रस होयछे. तेम श्री वीतरागना धर्मनेविषे अने अन्यदर्शनीना धर्मनेविषे पण श्रद्धा होय; ए अंतरमुहूर्त्त काल सुधी रहेछे, एने विषे वर्तमान छतो जीव परजवनुं आयुष्य पण बांधे अने मरण पण पामे नहीं. पण सम्यक्त्वे अथवा मिथ्यात्वे आवी पोताना पूर्वबद्धायुष्यने अनुसारे परजवे जाय. ए त्रीजुं मिश्रगुणगणुं कह्युं.

चोथुं अविरतिगुणस्थानक ते आवीरीते छेः—श्रीवीतरागना जाषिततत्वनेविषे रुचि थाय, ए उपशमादिक गुणेसहित अपार्द्ध पुजल परावर्त संसार छते नव्य जीव पामे; देव गुरु अने संघनी नक्ति अने उन्नति जेम थाय तेम करे, तेंत्रीश सागरोपमसाधिक एनी स्थिति छे. अने अप्रत्याख्यान नामे जे कषाय तेना उदयथकी थोमीपण विरति करी शके नहीं अने सम्यक्त्व पण होय, तेथी ए चोथुं अविरतिसम्यक्दृष्टिगुणस्थानक कहिये.

पांचमुं देशविरतिगुणस्थानक छे, ते आवीरीते के, ए गुणगणानेविषे प्रत्याख्यानावरण कषायना उदयथकी जीव सर्वविरतिपणुं करी शके नही, अने देशथकी विरति होय, इहां श्रावक संबंधी छ कर्म, प्रतिमा व्रत एनेविषे तत्पर थाय, आर्त्त ने रौद्र ध्यान घणुं होय, अने धर्म ध्यान थोडुं होय. देशोकणी पूर्वकोमी ए गुणगणानी स्थिति जाणवी. ए देशविरति नामे पांचमुंगुणस्थानक जाणवुं.

छठा प्रमत्तगुणस्थाननुं लक्षण आमछे के, इहां संज्वलन कषायना उदयथकी प्रमाद संजवेछे, एनेविषे रह्योथको जे यति ते प्रमत्तयति कहेवाय छे, अने वली नोकषायना उदयथकी आर्त्तध्यान घणुं होय, अने धर्मध्यान थोडुं संजवे छे. प्रमादना बहुलपणाये करी मिथ्यात्वे मोहितथको श्रीजिनोक्तआगम पूर्ण वेदे नहीं, एनी अंतरमुहूर्त्तनी स्थिति छे. ए प्रमत्त यतिनुं छहुं गुणगणुं जाणवुं.

सातमुं अप्रमत्तगुणस्थानक देखाडेछे. इहां संज्वलन कषायना मंद उदयपणे करीने प्रमादहीन होय, तेथी ए गुणगणे वर्तमान छतो बंने श्रेणीनो आरंज

करे. एने अप्रमत्त यति कहिये. इहां कालमान छद्म प्रमत्तादिक गुणठाणाथी लेइने बारमासुधी साते गुणस्थानकनेविषे अंतरमुहूर्त होय, इहां आवश्यकना अन्नावथकी पण ए सदा शुद्धात्मा जाणवुं.

आठमुं निवृत्तिगुणस्थानक एटले इहांथकी वली पाछुं निवर्त्ते, तेथी ए निवृत्तिगुणस्थानक समजवुं. अने नवमाथकी निवर्त्ते नहीं तेथी एनुं नाम अनिवृत्ति छे, दशमुं सूक्ष्मलोजना विद्यमानपणाये करीने एनुं नाम पण सूक्ष्मसंपराय छे. अग्यारमुं उपशांतमोह गुणस्थानक; एनेविषे उपशमश्रेणीनुं पडिवजण हार आवीने घणी जवस्थिति छते वली इहांथी पाछुं पडयुंथकुं मिथ्यात्वे जाय, अने जेने थोडी जव स्थिति होय तथा तद्भव मोक्षगामि होय ते पाछो पड्यो थको सातमा गुणठाणा सुधी आवे. अने क्षपकश्रेणीवालो ते दशमाथकी बारमे जाय पण अग्यारमे गुणठाणे आवे नही.

क्षीणपणे थयोछे मोह ज्यां ते क्षीणमोह नामा बारमुं गुणठाणुं जाणवुं.

तेरमुं सयोगी नामे गुणठाणुं ते इहां मन, वचन अने काययोगना सद्भावथकी सयोगीगुणठाणुं केवाय छे. एनुं कालमान देशोन पूर्वकोटी प्रमाण जाणवुं. ए केवलीनुं गुणठाणुं कहेवाय छे.

चउदमुं अयोगी गुणठाणुं ते आवीरीते; अ इ उ ऋ लृ एवा पांच ह्रस्व अक्षरनो उच्चार करतां जेटलुं वखत थाय तेटलुं एनुं कालमान जाणवुं. तेने इहां छती कायाए कायानो जाव छे तो पण तेने आगले तुरत कायानो क्षय थशे; ते कारणे एने काया संबंधी कार्यना अन्नावथकी ए अयोगी कहेवाय छे. एनेविषे वर्त्ततो शुक्लध्याननो चोथो जेद ध्यातो छेहेला समयनेविषे वेदनीयादिक तेर प्रकृति खपावी सिद्ध जगवंत थाय. ए चउदगुणठाणा कह्या. ॥ ३१६ ॥ इति गाथार्थ. ॥

अवतरणः—मग्गण चउद्दस गोत्ति एटले चउदमार्गणाना स्थाननुं बशेने पचीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—गइ इंदिएयकाए, जोए वेए कसाय नाणेय ॥ संजम दंसण लेसा, जवसम्मे सन्नि आहारे ॥३१७॥ अर्थः—एक, गतिचार ते देव, नर, तिर्यंच, ने नारकी, बीजी इंद्रिय, पांच, तेमां स्पर्शन लक्षण इंद्रिय जेने ते एकेंद्रिय, एम बेंद्रिय, तेंद्रिय, चउरेंद्रिय, पंचेंद्रियलक्षण पांचे जाणवी. त्रीजी काय ते पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति ने त्रस लक्षण छ जाणवी. चोथी योगमार्गणा ते मन, वचन ने काय लक्षण त्रण, जेदेछे पांचमी वेदमार्गणा ते पुरुष, स्त्री ने नपुंसकना जेदथकी जाणवी. छठी कषायमार्गणा ते क्रोध, मान, माया ने लोनरूप जाणवी, सातमी ज्ञान

मार्गणा ते मति, श्रुत, अवधि, मनपर्यव ने केवल ए पांच ज्ञान तथा मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान ने विभंगज्ञान ए त्रण अज्ञान मली आठ भेदे छे; आठमी संयम मार्गणा ते सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहारविशुद्धि, सूक्ष्मसंपराय, यथाख्यात, देशसंयम ने असंयमना भेदे सात प्रकारेछे. नवमी दर्शनमार्गणा ते चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन ने केवलदर्शनना भेदे करी चार प्रकारे जाणवी. दशमी लेश्यामार्गणा ते कृष्ण, नील, कापोत, तेजो, पद्म ने शुक्ल रूप छ प्रकारे जाणवी. अग्यारमी भवमार्गणा ते भव्य ने अभव्य लक्षण बे प्रकारे जाणवी. बारमी सम्यक्त्वमार्गणा ते उपशम, सास्वादन, मिश्र, क्षायोपशमिकने क्षायक ए पांच भेदे जाणवी. तेरमी सन्निमार्गणा ते संज्ञी ने असंज्ञीना भेदे जाणवी. चउदमी आहार मार्गणा ते आहारक अने अनाहारक रूप बे भेदे जाणवी. ज्यां जीवपदार्थनुं शोध करवुं ते मार्गणा मूल चउद जाणवी.तेना प्रतिभेद करिये तेवारे बासठ थाय ते कह्या. इति॥

अवतरणः—उवउगा बारसत्ति एटले बार उपयोगनुं बत्रीशमुं द्वार कहेछेः—मूलः—मइ सुअ उही मण केवलाणि मइ सुअ अन्नाण विभंगा ॥ अचरकु चरकु अवही, केवल चउदंसणुवउगा ॥ ३१८ ॥ अर्थः—मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान, मनपर्यवज्ञान, केवलज्ञान, मतिअज्ञान, श्रुतअज्ञान, विभंगज्ञान, चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, अने केवलदर्शन. ए चार दर्शन अनाकार रूपछे ते मेल्यां थका बार उपयोग थायछे. ॥ ३१८ ॥ इति गाथार्थ. ॥

अवतरणः—जोगा पन्नरसत्ति एटले पन्नर योगनुं बत्रीने सत्तावीशमुं द्वार कहे छे. मूलः—सच्चं मोसं मीसं, असच्च मोसं मणो तह वईय ॥ उरल विउवा हारा, मीस कम्मयग मिय जोगा ॥३१९॥ अर्थः—सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, मिश्र मनोयोग, असत्यामृषामनोयोग, जेम ए चार मनना, तेमज चार वचनना योगछे ते कहेछे. सत्यवाग्योग असत्यवाग्योग मिश्र ते सत्य, असत्य, वाग्योग, असत्यामृषावचनयोग. एवं आठ थया; अने सात औदारिकादिक कायना ते आवीरीते. औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रिय, वैक्रियमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र, कार्मण योग. ए सात भेला करिए तेवारे पन्नर योग थाय. ॥ ३१९ ॥ इतिगाथार्थ ॥

अवतरणः—परलोयगई गुणठाणंगेसुत्ति एटले जे गुणस्थानकनी साथे जीव परलोके जाय अने जे गुणस्थानक अहीयां होय पण जीवनी साथे परलोके न जाय ते नुं बत्रीने अठ्ठावीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—मिछे सासाणेवा, अविरयभावम्मि अहिगए अहवा ॥ जंति जिआ पारलोयं, सेसेक्कारस गुणे मोत्तुं॥३२०॥ अर्थः—मिथ्यात्वगुणठा

णु; सास्वादनगुणठाणुं अथवा अविरति नाव गुणठाणुं ते अधिगत एटले पामे ठते ए त्रण गुणठाणां जीवनी साथे परलोकनेविषे जाय. शेष अग्यार गुणठाणा न जाय. इहां एटलुं विशेष जे मीसे खीणसजोगे, नमरंते कारसेसुयमरंति ॥ जेसु वि तिसु गइ एसुं, परलोय गमोन अहेसु ॥ १ ॥ ३२० ॥

अवतरणः—गुणठाणा कालमाणंति एटले चउद गुणठाणानुं कालमान कहेवानुं बशे ने ओगणत्रीशमुं द्वार कहेठे. मूलः—मिळत्तम नवाणं, अणाइय मणंत यंच विन्नेयं ॥ नवाणंतु अणाई, सपज्जवसिअंचसम्मत्तं॥३२१॥ ठावलियं सासाणं, समहिय तेत्तीस सायर चउळं ॥ देसूण पुव्वकोडी, पंचमगं तेरसंच पुढो ॥ ३२२॥ लहुपंचरकरचरमं, तईयं ठठाइ बारसं जाव ॥ इय अठगुणठाणा, अंतमुहुत्तापमाणेणं ॥ ३२३ ॥ अर्थः—अनव्यजीवोने अनादि अनंत मिथ्यात्व जाणवो अने नव्यजीवोने अनादि सपर्यवसित जाणवुं सम्यक्त्व पामे ठते मिथ्यात्व नथाय, अने ज्यां नव्यजीव पण सम्यक्त्व न लहे त्यांसुधी अनादि मिथ्यात्वमांहेज जीव वसतो जाणवो. अने ठ आवलिका सास्वादनगुणस्थानकनुं कालमान जाणवुं. ते त्रीश सागरोपम साधिक अविरति सम्यक्दृष्टि चोथा गुणठाणानुं कालमान जाणवुं. अने देशेकणी ते आठवर्षे कणी पूर्वकोडी कालमान ते पांचमुं देशविरति, अने तेरमुं सयोगी ए बे गुणठाणानेविषे पुढोके० प्रत्येके होय. लघुके० ह्रस्व अ, इ, उ, ऋ, ऌ, एवा पांच अक्षर उच्चारसम कालमान चउदमा गुणठाणानुं जाणवुं. हवे नही कह्यां एवां जे त्रीजुं, ठठुं, सातमुं, आठमुं, नवमुं, दशमुं, अग्यारमुं, बारमुं, ए आठ गुणठाणानो काल अंतरमुहूर्तप्रमाण प्रत्येके जाणवो. इति गाथात्रयार्थ.

अवतरणः— नरय तिरिनर सुराणं उक्कोस विउव्वणा कालोत्ति एटले नारकी तिर्यंच मनुष्य ने देवता एने उत्कृष्टविकुर्वणा करेली जेटलो काल रहे तेनुं बशो ने त्रीशमुं द्वार कहेठे. मूलः—अंतमुहुत्तं नरएसु होइ चत्तारितिरिय मणुएसु ॥ देवेसु अद्धमासो, उक्कोस विउव्वणाकालो ॥३२४॥ अर्थः—नारकीनेविषे नारकीनी करेली विकुर्वणा एक अंतरमुहूर्त्तसुधी रहे. एम चार अंतरमुहूर्त तिर्यंचने अने मनुष्यनेविषे एनी करेली विकुर्वणा चार अंतरमुहूर्त सुधी रहेठे. अने देवतानेविषे विकुर्वणा करी ठतां पन्नर दिवस सुधी रहेठे. ए उत्कृष्ट विकुर्वणानुं कालमान जाणवुं.॥३२४॥

अवतरणः—सत्त समुग्घायत्ति एटले सात समुद्घातनुं बशेने एकत्रीशमुं द्वार कहेठे. मूलः—वेयण कसाय मरणे, वेउव्विय तेय एय आहारे ॥केवलिअसमुग्घाए, सत्त इमे हुंति सत्ताणं ॥ ३२५ ॥ अर्थः—समवहत ते आपणा आत्माना प्रदे

शवुं मोकलुं करवुं ठे ज्यां; ते समुद्घात कहिए. ते एरीते. एक वेदना, बीजी कषाय, त्रीजी मरणांतिक, चोथी वैक्रिय, पांचमी तेजस, ठही आहारक, अने सातमी, केवली समुद्घात. ए साते समुद्घात संज्ञीने थाय. ॥३२५॥

हवे शेषजीवोने समुद्घात कहेठे. मूलः—एगिंदीणं केवलि, आहारग वज्जिया इमे पंच ॥ पंचाविय वेउव्वा, विगला सन्नीण चत्तारि ॥ ३२६ ॥ अर्थः—एकेंद्रिय जीवोने, एक केवली, बीजी आहारक; ए बे समुद्घात वर्जीने शेष पांच समुद्घात थायठे. विगलेंद्रियने अने असंज्ञीने वैक्रिय समुद्घात वर्जी शेष चार समुद्घात थायठे. ए गाथा पन्नवणा जीवसमास अने पंचसंग्रहादिक शास्त्रांतर साथे विघटति देखायठे; सूत्रकारे केवा अभिप्रायथी कह्युंठे ते तेज जाणे. ॥ ३२६ ॥

हवे केवली समुद्घातनुं स्वरूप कहेठे. मूलः—केवलिय समुग्घाउ, पढमे समयम्मि विरयए दंमं ॥ बीए पुणो कवामं, मंथाणं कुणइ तइयम्मि ॥ ३२७ ॥ अर्थः—केवली जेवारे समुद्घात करे तेवारे पहेला समयनेविषे दंम विरचेके० करे, बीजे समये पोताना जीवना प्रदेश विस्तारी कपाटने आकारे करे, त्रीजे समये मंथाणंके० जेणेकरी दहीने मथिए तेने आकारे करे. ॥ ३२७॥

मूलः—लोयं नरइ चउत्थे, पंचमए अंतराय संहरइ ॥ ठठे पुण मंथाणं, हरइ कवाडंपि सत्तमए ॥ ३२८ ॥ अर्थः—चोथा समयनेविषे समस्त लोक पोताना प्रदेशे नरे, ए रीते नरीने पठी पांचमा समयनेविषे आंतरा संहरे, ठठे समये वली पूर्वे जे पोताना प्रदेशे मंथाणुं कर्युं ठे तेने संहरे, सातमा समयनेविषे जे कपाटने आकारे प्रदेश कर्या हता तेने संहरे. ॥ ३२८ ॥

मूलः—अठमए दंमंपिहु, उरलंगो पढम चरमसमएसु ॥ सत्तम ठठ बिइज्जेसु होइ उरालमिस्सेसो ॥ ३२९ ॥ अर्थः—आठमा समयनेविषे जे प्रथम समये दंमाकारे प्रदेश करेला हता तेने संहरे, पण इहां पहेलाने ठेला समयनेविषे औदारिक शरीर थाय. सातमा ठठा अने बीजा समयने विषे औदारिक मिश्र थाय.

मूलः—कम्मण सरीरजोई, चउठए पंचमे तइज्जेयं॥जं होइ अणाहारो, सो तम्मि तिगे समयाणं, विसेसाणं॥एमपाठांतरठे. ॥३३०॥ अर्थः—केवल कार्मण शरीर योगी ते चोथा पांचमा ने त्रीजा समयनेविषे होय. जे कारणे ते त्रण समयनेविषे अनाहारक ठे, ज्यां अनाहारक कह्या त्यां केवलीणोसमुहया एटले केवली केवल समुद्घात करे, तेवारे ए त्रण समयनेविषे अनाहारक होय. ३३० इतिगाथा षट्कार्थ.

अवतरणः—ठपज्जत्तीउत्ती एटले ठ पर्याप्तिनुं बशे ने बत्रीशमुं द्वार कहेठे.

मूलः—आहारसरीरिंदिय, पज्जत्ती आणपाण नासमणे ॥ चत्तारिपंच छप्पिय, एगेंदिय विगलसन्नीणं ॥ ३३१॥ अर्थः—आहारादि पुद्गल लेवाने परिणमाववानुं कारणजे आत्माने शक्तिनुं विशेष ते पर्याप्ति कहीए. त्यां पहेली आहारपर्याप्ति, बीजी शरीरपर्याप्ति, त्रीजी इंद्रियपर्याप्ति, चोथी आणपाण ते श्वासोश्वासपर्याप्ति, पांचमी नाषापर्याप्ति अने छठी मनपर्याप्ति. तेमां धुरली चार पर्याप्ति एकेंद्रियने होय, विकलेंद्रियने पांच होय अने असन्नीने नाषायुक्त पांच होय; तथा जे संज्ञी तेने मनसहित छ होय.

हवे एनुं कालमान कहेछे. मूलः—पढमा समयपमाणा, सेसा अंतोमुहुत्तियाय कमा ॥ समगंपि हुंति नवरं, पंचमछठाउअमराणं ॥ ३३२ ॥ अर्थः—पहेली आहार पर्याप्ति एक समय प्रमाणछे, अने शेष थाकती पर्याप्ति अंतरमुहूर्त्त प्रमाणनी अनुक्रमे प्रत्येके जाणवी. इहां कोइ कहेशे के, पहेली आहारपर्याप्ति एक समये थाय; एवात केम जाणिये? ते उपर नगवंत श्रीआर्य श्यामाचार्ये पन्नवणाना आहारपदना बीजा उद्देसाने विषे एवुं सूत्र कह्युंछे. आहारपज्जत्तीए अपज्जत्तएणंनंते किंआहार ए अणाहार ए गोयमानो आहारए अणाहारए. इहां ए नाव जे आहार पर्याप्ते अपर्याप्तोजीव विग्रहगतिएज जाय; परंतु उपपात क्षेत्रनेविषे अणाहारक न होय त्यां आव्यो जीव पहेलेज समये आहारनुं परिग्रहण करे, ते कारणे एक सामायिकी आहार पर्याप्ति होय. अने जे उपपात क्षेत्रे आव्यो पण आहारपर्याप्ते अपर्याप्तो थाय तो एवुं सूत्र कह्युंछे. सिअआहारएसिअअणाहारएत्ति. जेम शरीरादिक पर्याप्तिनेविषे सूत्र पाठ आवो कह्यो छे. सिअ आहारए सिअ अणाहारएत्ति एटले ए प्रथम समयज आहार पर्याप्तिनी सिद्धि थइ. हवे शेषप्रत्येकेअंतरमुहूर्त्तप्रमाणे कही. ए सामान्य पणे सूत्रकारे कह्युं ते पण औदारिक शरीर आश्री कह्युं जाणवुं. अने वैक्रिय आहारकने पांच पर्याप्ति समय समयनी थाय. शरीरपर्याप्ति ते अंतरमुहूर्त्त प्रमाण छे.

हवे देवताने विशेष कहेछे. समगंपिके० समकालेज पांचमी नाषापर्याप्ति अने छठी मनःपर्याप्ति ए बन्ने थाय. नवरं इहां ए विशेषछे. जे सिद्धांतमां पंचविहाए पज्जत्तीएत्ति; एवा कथनथकी पांचे समकाले जोइये अने इहां छ कही ते कांइ बहुश्रुतानिमत अनिप्राय कोइ जाणवो. अथवा क्यांएक छ पण कहीछे ३३२ इतिगाथा द्वयार्थ.

अवतरणः—अणहारगत्ति एटले अनाहारक चारनुं बशेने तेत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—विग्गहगइमावन्नी, केवलिणो समुहया अजोगीय ॥ सिद्धाय अणाहारा, सेसा आहारगा जीवा ॥३३३॥ अर्थः—एकतोविग्रहगते जेवारे जीव प्राप्त थाय, तेवारे

अणाहारक जाणवुं. बीजुं केवली केवल समुद्घात करे तेवारे त्रण समय आहार न लिये माटे अणाहारक होय. त्रीजुं अयोगी केवली अयोगी चउदमे गुणठाणे अ णाहारक होय. चोथा तेमज सिद्धभगवंत सदा अणाहारक छे अने शेष समस्त जीव आहारक जाणवा. ॥ २३३ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—सत्तभयठाणाईति एटले सात भयना स्थानकनुं वर्णने चोत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—इहपरलोयायाणमकम्हा आजीव मरण मसिलोए ॥ सत्तभ यठाणाइ, इमाइ सिद्धांतभणियाइं ॥ २३४ ॥ अर्थः—इहलोकभय तेने कहिये जे मनुष्यने मनुष्यथकी भय उपजे. बीजुं एमज मनुष्यने तिर्यंचादिकथी भय उप जे ते परलोकभय जाणवुं. त्रीजुं आदानभय ते आदान एटले ग्रहण तेनुं भय एटले कोइ कहेशे ताहारुं धन, राजादिक लइ लेशे ए आदानभय जाणवुं. चोथुं अ कस्मात्भय ते वीजली प्रमुखनुं जाणवुं. पांचमुं आजीविकानुं भय ते दुःकाल पड्यो हवे केम जीवता रहीशुं? ते जाणवुं. छठुं कोइके कह्युं जे ताहरुं मरण अ मुक दिवसे थशे; तेनाथी जे भय उत्पन्न थाय ते मरणभय जाणवुं. सातमुं अ यश ते लोकापवादनुं भय जाणवुं. ॥ २३४ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः—छप्पासाउ अप्पसत्थाउत्ति एटले छ अप्रसस्त भाषाउनुं वर्णने पात्रीस मुं द्वार कहेछे. मूलः—हीलिय खिंसिय फरसा, लिआउ तह गारहत्थिया भासा ॥ छट्ठी पुण उवसंता, हिगरणउल्लाससंजणणी ॥२३५॥ अर्थः—जे भाखिये बोलिए ते भाषा कहिये, तेमां अप्रशस्त कर्मबंधना कारणे करीने माठी भाषा ते छ प्रकारे थायछे. तेमां पहेली हेलित तेने कहियेके जे रीशेकरी अवगणना पूर्वक वाचक ज्येष्ठ आर्य इत्यादिक कहे ते जाणवी. बीजी खिंसित ते जे जन्म कर्म प्रमुख उघाडां पाडवां. अर्थात् जाहेर करवां, ते. त्रीजी परुष दुष्टादिक कर्कश वचननुं बोलवुं ते. चोथी अली क ते शुं दिवशे प्रचला करेछे के इत्यादिक प्रश्ननेविषे प्रचला नकरुंछुं एवुं बोलवुं ते जा णवी. पांचमी गृहस्थनी ए भाषाते गारहत्थिया बेटा बाप मामा भाणेजा इत्यादिक व चन कहे ते जाणवी. छट्ठी पुणःके० वली उपशांतके० उपशम तेनुं अधिकरण ते क लह कहिये तेनो उल्लासके० प्रवर्त्तावबुं तेहनी जननीके० उपजावनारी एटले एवुं व चन बोले के जे वचने करी अणछतो क्लेश उत्पन्न थाय इतिगाथार्थ. ॥ २३५ ॥

अवतरणः—भंगागिहिव्वयाणंति एटले गृहस्थना व्रतना भांगानुं वर्णने छत्रीस मुं द्वार कहेछे. मूलः—दुविहा अठविहावा, बत्तीसविहाय सत्तपणतीसा ॥ सोलसय सहस्सनवे, अठसयजुत्तरा वइणो ॥ २३६ ॥ अर्थः—दुविहाके० बे प्रकारे अथ

वा आठ प्रकारे अथवा बत्रीश प्रकारे अथवा सातसेने पांत्रीश प्रकारे अथवा शो लहजार आठसेने अठोत्तर व्रतिना भंगा होय. इहां वइणो एवा वचनथकी व्रत शब्दे नियमविशेष ते जेने छे तेवा व्रती सामान्य श्रावक ग्रहण करवा. पण देशविरति इहां लेवा नही. अविरति सम्यक्दृष्टि एने पण सम्यक्त्व प्रतिपत्ति लक्ष ण नियमना सद्भावथकी सम्यक्त्वधारी व्रती इहां जाणवा. ॥ ३३६ ॥

हवे एज भेद प्रत्येके वखाणनार छतो सूत्रकार धुरला त्रण भेद कहेछे. मूलः— डुविहा विरियाविरया, डुविहं तिविहाइए अठहा हुंति ॥ वयमेगेगं छविह, गुणियं डुगमिलियबत्तीसं ॥ ३३७॥ अर्थः—विरति जेने छे ते विरति अने जे व्रत न जाणे अने व्रतनो अंगीकार करे नही, वली व्रत पालवानो उद्यम न करे ते अविरति सत्य कि श्रेणीक तथा कृष्णादिक जेने क्षायिक सम्यक्त्व प्राप्त थयुं एवा श्रावक जाण वा. ए बेहु भंगे पहेलुं द्विविधपणु कह्युं; हवे जे अज्ञान अने अनभ्युपगम अयत्नादि क ए त्रण पद कह्यां ए त्रण पदे करी आठ भांगा होय, ते आठ भंगमांथी धुरले सात भंगे निश्चे थकी अविरति जाणवुं. कारणके व्रत घुणाक्षरन्याये पाल्यां पण फलवंत न थाय. किंतु सम्यक्ज्ञानने सम्यक्ग्रहणपूर्वक पाल्याथका सफल थाय छे अने आठमे भंगे देशविरति ते एकादि व्रतनो लेनार ज्यांलगे छेहलो अनुमति मात्रनुं सेवनार शेष पाप तेणे सर्व पच्चख्यो, अने अनुमति पण त्रण प्रकारे छे; तेमां जे कोइ पोते अथवा अनेरे कोइ बीजे कर्युं जे पाप तेनी श्लाघा करे, सा वद्ये करी निपन्यो जे आहारादिक ते पोते जमे तेवारे तेने प्रतिसेवा अनुमति होय, अने जेवारे पुत्रादिकनुं करेलुं पाप सांभले ते सांभलीने अनुमोदे,परंतु तेने निवारे न ही तेवारे प्रतिश्रवणानुंमति बीजो भेद जाणवुं. अने त्रीजुं वली जेवारे सावद्यारंभने विषे प्रवर्त्त्या छे जे पुत्रादिक, तेहनेविषे मात्र ममता भाव सहितछे, परंतु अनेरु सांभले नही,अने अनुमोदे पण नही,तेवारे संवासानुमति ते त्रीजो भेद जाणवो. हवे जे कोइ संवासानुमति मात्रनो सेवनार ते चरम भांगे देशविरति अने जे सं वासानुमति थकी विरत्या थका होय तेने यति कहिये. एणे कारणे विरति ने अ विरतिना भेदथकी बे प्रकारे कहिये.

हवे आठ प्रकार कहेछे. डुविह तिविहाइके० त्यां द्विविधपणु करण करावणरूप अने त्रिविध ते मन वचन अने कायने भेदे जाणवुं. ते द्विविध त्रिविध ए एक भंग जाणवो. तेज जे भांगाना समूहनेविषे आदिके० धुरेछे ते द्विविध त्रिविधा दि कहिये. ते द्विविध त्रिविधादि भंगे करी आठ प्रकारे श्रावक जे आगल डुविह

अने एगविह ए बे गाथामांहे कहेशे, ते सोपयोगपणा लगीने इहां वखाणिये ठैये. इहां व्रतनो पडिवजणहार ते श्रावकना घणा जंगना विशेषथकी कोइएक कांइक प डिवजे. त्यां पहेलो द्विविध ते करण करावणना जेदथकी जाणवो. त्रिविध ते मन वचन कायाये करी जाणवुं. एम पढमके० पेहेलो जंगो होयठे. इहां जावना एमठे के मन वच न अने कायाये करीने स्थूलहिंसादिक पोते न करे, अने अनेरा पासे करावे नही, अने अपत्यादिक परिग्रहना सद्भावथकी अनुमतिने निषेधी नथी ते पुत्रादिके करेली हिंसादिकनेविषे हजी तेने अनुमति लागेठे. अन्यथा प्रकारे जेने एटलुं प ण न होय तो परिहगृही अने अपरिगृही, प्रवर्जित अने अप्रवर्जितनो मांहोमांहे जेद नथाय. अने वली जे श्रीजगवती प्रमुख सिद्धांतमांहे गृहस्थने त्रिविध त्रिवि धनुं पच्चखाण कह्युं ते विशेष विषइउ जाणवुं ते आवीरीते ठे.

जे कोइ दीक्षा लेनार होय अने पुत्रादिकना पालवाने अर्थे विलंब करतो थ को प्रतिमा पडिवजे. अथवा जे कोइ विशेषे करी स्वयंजुरमण समुद्रना माठला नुं मांस तेनु पच्चखाण करे. एम हाथीना दांत, चित्रानां चर्म अथवा स्थूलहिंसा दिक कोइक अवस्थाना विशेपनेविषे पच्चखे तेज त्रिविध त्रिविधे एवुं पच्चखाण करे, ए अल्पविषयपणाथकी इहां विवक्ष्यो नथी. वली द्विविध द्विविधे ए बी जो जंग जाणवो. इहां आगले पदे त्रणजांगा कह्या ठे त्यां एक जेवारे मने करीने वचने करी न करे तेमज करावे नही, तेवारे मनेकरी हिंसादिकने अजिप्राये रहि त अने वचने पण हिंसादिकनुं वचन अणबोलतो ठे; केवल शरीरे करी असन्नी नीपरे हिंसादिक करेठे. बीजुं जेवारे मनेकरी अने कायायेकरी नकरे अने न करा वे तेवारे चित्तनी अजिसंधिरहितथको शरीरे करी डुश्चेष्टितादिक परिहरतो अना जोगादिकथकी वचनेकरीने हणु एवुं कहे. त्रीजुं एमज जेवारे वचन अने काया येकरी न करे न करावे तेवारे केवल मनने अजिप्राये करे अने करावे. पण इहां अनुमति त्रणेने ठेज. एम शेषविकल्प पण जाववा. एरीते मूल जंग ठ थया ते ठ ना उत्तर जंग एकवीश थाय, ते आगल कहेशे. उक्तंच॥ डुविह तिविहाविठच्चिय, तेसिं जेया कमेण मे हुंति ॥ पढमेको डुन्नितिश्रा, डुगेगदोठक्कइगवीसं ॥ १ ॥ अने उ त्तरउगुण सत्तमउके० जेणे त्रण गुणव्रत ने चार शिक्षाव्रत लक्षण उत्तरगुण पडिवज्या ठे. ए सातमो जेद जाणवो. अने अविरति सम्यक्दृष्टिनो आठमो जेद जाणवो, ए आठ जेद देखाड्या.

हवे बत्रीश जेद देखाडेठे. वयमेगगंके० एक एक व्रतने स्थूल प्राणातिपात वि

रमणादि लक्षण मूल पांच महाव्रत छे तेने पूर्वोक्त छ प्रकारे गुण्याथका त्रीश थाय. अने एक उत्तरगुणप्रतिपत्तिनो, बीजो अविरति सम्यक्दृष्टिनो. ए बे नेद मेलविये तेवारे बत्रीश नेद थायछे ते आवीरीतेः–

पहेलुं प्राणातिपात विरमण स्थूल व्रत कोइये छ नंगामांहे पहेले नंगे पडिवज्युं, कोइएके बीजे नंगे पडिवज्युं, कोइए त्रीजे नंगे पडिवज्युं, एम यावत् कोइए छठे नंगे पडिवज्युं, एरीते पहेला प्राणातिपात विरमण व्रतना छ नंग जाणवा. तेमज मृषावाद विरमणादिक पांचे मूल व्रतोना छ छ नंग मेलविये तेवारे त्रीश नंग थाय. अने आवश्यकमां एम कह्युंछे के कोइएके पांचे अणुव्रत एकठां लीधां त्यां द्विविध त्रिविधादिक छ नंगछे. अने वली बीजो कोइ चार व्रतनुं ग्रहण करे त्यांपण छ नंगछे. ते ज्यांसुधी कोइएक एक अणुव्रतनुं ग्रहण करे त्यां पण छ नंग जाणवा. ए आवश्यकना अनिप्रायथी नंग देखाड्या. ॥ ३२७ ॥

हवे ग्रंथकर्त्ता सातशें पांत्रीश नंगनी प्ररूपणा करनार छतो श्री नगवतीने अनिप्राये नव नंगी कहेछे. मूलः–तिन्नितिआ तिन्निडआ, तिन्निक्केक्काय हुंतिजोगेसुं ॥ तिडएक्कंतिडएक्कं, तिडएक्कं चेव करणाइ ॥३२८॥ अर्थः–योग ते मनोयोगादिक त्रण नेविषे करण करावण ने अनुमतिरूपे करी त्रण त्रगडा ने त्रण बगडा अने त्रण एकडा हुंतिके० होय. योगनेविषे अनुक्रमे त्रण त्रगडा थापी नीचे त्रण बगडा, ते नीचे त्रण एकडा करण मन वचन कायाए स्थापिए. हवे कोइक गृहस्थ मने करी सावद्य योग करे नही, करावे नही, तथा अनेरो करतो होय तेने अनुमोदे नही; तेवारे ए मन साथे त्रण नंग थाय. एम वचन साथे त्रण नंग तथा कायासाथे पण त्रण नंग करतां मूल नव नंग थया. तेना उत्तरनंग उंगणपचाश थाय; ते नीचे लखाशे त्यांथी जोवा. ॥३२८॥

इहां शिष्य पूछेछे के वचन अने काया एणे करी तो करण करावण ने अनुमति देखायछे; परंतु मनने करण करावण ने अनुमति केम थायछे? तेने गुरु कहेछे. काया अने वचने करी निर्व्यापारथको पण मनथकी एवुं चिंतवे जे अमुक सावद्य योग करुं; तेवारे मनेकरी करण थयुं. अने मने करी एम जाणे के अमुक सावद्य योग करावुं, तेपण तेनुं इंगित जाणी तेवा अनिप्राये प्रवर्त्ते तेवारे मने करी करावण थयुं. अने जेवारे सावद्य करी मनमां चिंतवे जे आ में सारुं कर्युं तेवारे मने करी अनुमति थइ. एरीते मननां नंग देखाडतां उंगणपचाश नंग देखाड्या जाणवा.

सांप्रत प्रकारांतरे सूत्रकार एज देखाडेछे. मूलः–मणवयणकायजोए, करणे

करावणे अणुमईए ॥ एकगङगतिगजोगे, सत्तासत्तेव इगुवन्ना ॥ ३३ए ॥ अर्थः— इहां प्राकृतपणाथकी विभक्तिनुं विपरीतपणुं तेथी मन, वचन ने काय साथे योग संबंध बते करण करावण ने अनुमति तेणे कारणे एक द्विक त्रिक साथे योग कीधा बतां सात सातका थायछे ते आवीरीतेः—

एक स्थूलहिंसादिक मने न करे, बीजुं वचने न करे, त्रीजुं कायाये न करे. ए त्रण एक संयोगे थया. हवे द्विकसंयोगे कहेछे. चोथुं मन ने वचने न करे, पांचमुं मने ने कायाये न करे, बहुं वचन ने कायाये न करे, हवे त्रिक संयोग ते मन वचन ने कायाये न करे, ए सातमो भंग थयो. ए सात भंग करणे थया. तेमज बीजा सातभंग करावण थकी थाय. तथा त्रीजा सातभंग अनुमतिये थाय. तथा चोथा सातभंग वली करणने करावण थकी थाय. तथा पांचमा सात भंग, करण ने अनुमतिये थाय. तथा बहा सात भंग करावण अने अनुमतिये थाय. तथा सातमा सात भंग ते करण करावण ने अनुमति ए त्रणे एकग करतां थाय. एरीते सातो सतियु उंगणपच्चाश भंग देखाड्या.

हवे सुखे जाणपणुं थवामाटे ए उंगणपचाशभंगनो उच्चार जेवीरीते थाय तेवीरीते लखी देखाडिये छैये १ मनेकरी करुं नही २ मनेकरी करावुं नही ३ मने करी अनुमोडुं नही ४ मनेकरी करुं नही करावुं नही ५ मनेकरी करुं नही ने अनुमोडुं नही ६ मनेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही ७ मनेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही ८ वचनेकरी करुं नही ए वचनेकरी करावुं नही १० वचनेकरी अनुमोडुं नही ११ वचनेकरी करुं नही करावुं नही १२ वचनेकरी करुं नही अनुमोडुं नही १३ वचनेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही १४ वचनेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही १५ कायायेकरी करुं नही १६ कायायेकरी करावुं नही १७ कायायेकरी अनुमोडुं नही १८ कायायेकरी करुं नही करावुं नही १ए कायायेकरी करुं नही अनुमोडुं नही २० कायायेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही २१ कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही २२ मनेकरी वचनेकरी करुं नही २३ मनेकरी वचनेकरी करावुं नही २४ मनेकरी वचनेकरी अनुमोडुं नही २५ मनेकरी वचनेकरी करुं नही करावुं नही २६ मनेकरी वचनेकरी करुं नही अनुमोडुं नही २७ मनेकरी वचनेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही २८ मनेकरी वचनेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही २ए मनेकरी कायायेकरी करुं नही ३० मनेकरी कायायेकरी करावुं नही ३१ मनेकरी कायायेकरी अनु

मोडुंनही ३२ मनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही ३३ मनेकरी कायाये करी करुं नही अनुमोडुं नही ३४ मनेकरी कायायेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही ३५ मनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही ३६ वचनेकरी कायायेकरी करुं नही ३७ वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही ३८ वचनेकरी कायायेकरी अनुमोडुं नही ३ए वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही ४० वचनेकरी कायायेकरी करुं नही अनुमोडुं नही ४१ वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही अनुमोडुं नही ४२ वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही ४३ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही ४४ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही ४५ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी अनुमोडुं नही ४६ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही ४७ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही अनुमोडुं नही ४८ मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करावुं नही अनुमोडु नही ४ए मनेकरी वचनेकरी कायायेकरी करुं नही करावुं नही अनुमोडुं नही.

हवे ए उंगणपचाश भंगना एकशो ने सडतालीश भंग देखाडवा सारुं सूत्रकार गाथा कहेछे. मूलः—पढमेक्को तिन्नितिआ, दोन्नि नवा तिन्नि दोनवा चेव ॥ कालतिगेणय गुणिआ, सीयालं होइ भंगसयं ॥ ३४० ॥ अर्थः—पहेलो एक पछी त्रण त्रगडा पछी बे नवडा वली एक त्रगडो पछी वली बे नवडा एम अनुक्रमे मांमिये; पछी काल त्रिक साथे गुणाकार करिये एटले अतीत काले जे कस्या तेनी निंदा करवी, वर्त्तमाने करवानुं संवर करवुं, अने अनागत ने पच्चरकाणे. यडुक्तं. अईयं निंदामि पडुप्पन्नं संवरेमि अणागयं; पच्चखामि एम करतां एकशोने सडतालीश भंग थायछे. इहां एक भंग ते त्रिविध त्रिविधे थाय, तथा त्रिविध द्विविधे त्रण भंग थाय, तथा त्रिविध एकविधे त्रण भांगा थाय, अने द्विविध त्रिविधे त्रण भांगा थाय द्विविध द्विविधे नव भंग थाय, द्विविध एकविधे नव भंग थाय, एकविध त्रिविधे त्रण भंग थाय एकविधे द्विविधे नव भंग थाय एकविध एकविधे नव भंग थाय छे एम भंग जाणवा. एम सातशें नें पांत्रीश पण श्रावकना भेद होय तेज कहेछे.

मूलः—पंचाणुवयगुणियं, सीयाल सयंतु नवरि जाणाहि ॥ सत्तसया पण तीसा सावयवयगहणकालंमि ॥ ३४१ ॥ अर्थः—ए पूर्वोक्त एकशो सडतालीश भंगनुं पांचे अणुव्रतनेविषे प्रत्येके सद्भाव छे. ते श्रावकने व्रतग्रहणकालनेविषे पांच अणुव्रतना अंगीकारने प्रस्तावे पांच अणुव्रतनी साथे एकशो समतालीशनो गुणाकार करिये तेवारे नवरिके० अनंतर तुं जाण के सातशेने पांत्रीश भंग थाय छे. ॥ ३४१ ॥

हवे ए भंग यथार्थपणे जेणे जाण्या तेज पञ्चखाणनेविषे प्रवीण जाणवा एम कहेछे. मूलः—सीयालं भंगसयं, जस्स विसुद्धीइ होइ उवलद्धं ॥ सो खलुपञ्चक्खाणे, कुसलो सेसा अकुसलाउ ॥३४२॥ अर्थः—ए पूर्वोक्त एकशो ने सडतालीश भंग ते जस्सके० जेने विशुद्ध निर्मलकारी पणे करी होय तेने विशुद्धपञ्चखाण कहिये. अने तेज पञ्चखाणनेविषे उपलब्ध एटले जाणपणे थया तेज खलुइति निश्चेकरीने पञ्चखाणनेविषे कुशल माह्या जाणवा अने शेष थाकता ते चतुर जाणवा नही.

हवे मूल छ भंगना उत्तर एकवीश भंग देखाडेछे. मूलः—डुविहतिविहाइ छविय, तेसिं भेया कमे णिमे हुंति ॥ पढमेक्को डुन्नितिया, डुगेग दो छक्क इगवीसं ॥३४३॥ अर्थः—द्विविध त्रिविध जेनी आद्यमांछे एवाजे छ भंग तेसिंके० तेना भेद ते कमेणके० अनुक्रमे इमेके० ए हुंतिके० थायछे. पढमेक्कोके० पहेलुं एको, पछी बीजा बे कोष्ठकमां त्रण त्रण वली एक कोष्ठके बगडो मांमीये एवुं एककोष्ठक, पछी बे कोष्ठके छ छ मांमिये तेवारे सर्व एकवीश भंग होयछे. ए स्थापनानो उच्चार आवीरीते करिये. द्विविध त्रिविधे एक भंग, द्विविध द्विविधे त्रण भंग, द्विविध एकविधे त्रणभंग एकविध त्रिविधे बे भंग, एकविध द्विविधे छ भंग, एकविध एकविधे छ भंग.

हवे डुविह तिविहाइ इत्यादिक भंगना समूहे करीने श्रावकने योग्य पांच अणुव्रतादिकनी संतति तेना भंगनी देवकुलिका सूचवी ते देवकुलिका एकेक व्रत प्रत्ये कही. जे षड्भंगी एकवीश भंगी नवभंगी उगणपचाश भंगी तेणे करी निपजे अने सर्व देवकुलिकाने विषे प्रत्येके त्रण त्रण राशी थाय ते आवीरीते; धुर मां गुणराशी, वचमां गुणकराशी अने छेहडे गतागत राशी.

त्यांपहेली एजदेवकुलिकानेषड्भंगीप्रमुखनेअनुक्रमे विवक्षित व्रतना भंगनीसर्वसंख्या रूप एवंकारके०जे राशी ते देखाडणहार छतोपहेलो षड्भंगीए एवंकारनी राशी देखाडेछे.

मूलः—एगवए छब्भंगा, निद्दिष्ठा सावयाण जे सुत्ते ॥ ते च्चिय वयवुड्ढीए, सत्तगुणा छ जुआ कमसो ॥ ३४४ ॥ अर्थः—श्रावकना एक व्रतनेविषे छ भंग जे आवश्यकादिक सूत्रनेविषे कह्या तेज मृषावादादिक एकेक व्रतनी वृद्धिए सातगुणा अने छ ए सहित कर्या छता अनुक्रमे भंगना राशीनी संख्या उपजावे. इहां भावार्थ एम छे के पहेला प्राणातिपात व्रतनेविषे छ भंग, ते अवधे स्थापिने सातगुणा करीए; ते वारे बेंतालीश थाय. तेमां छ भेलिये तेवारे अडतालीश थया. वली एने सातगुणा करीने छ भेलिये: एम अनुक्रमे करतां अग्यारमी वेलाए १३८४१२८७२०० एटला आवे. अने ६ ४८ ३४२ इत्यादिक बारेराशी उपर नीचे एवीरीते थापीये तेवारे

आदि देवकुलिकानी नूमिका समान देखाय, तेने खंमदेवकुलिका एम कहिए. एट ले षम्नंगीनी देवकुलिका जेम उपजे तेम देखाडी. ॥ ३४४ ॥

हवे एकवीश नंगनी देवकुलिका देखाडेछे. मूलः–इगवीसं खलु नंगा, निदिठा सावयाण जे सुत्ते ॥ तेच्चिअ बावीसगुणा, इगवीसं पक्खिवेयव्वा ॥३४५॥ अर्थः–निश्चेयकी एकवीश नंग जे श्रावकने सूत्रमां कह्याछे, तेनेज बावीशगुणा करीने तेमांहे एकवीश नेलिये. इहांपण एकवीशादि अनुक्रमे अग्यार वार गुणाकार करतां अग्यारमी वेलाए १२०५५००२६३१०४०११५ थाय. एम एकवीश नंगीये बीजी देवकुलिका होय. ॥ ३४५ ॥

हवे नव नंगिये जे थाय ते देखाडेछे. मूलः–एगवएनवनंगा, निदिठा सावयाण जे सुत्ते ॥ तेच्चिय दसगुणकाउं, नवपक्खेयम्मि कायव्वा ॥३४६॥ अर्थ.–एक व्रतनेविषे नव मूल नंग जे श्रावकने कह्याछे, तेने दशगुणा कर्याथका नेवुं थाय; तेमां नव मेलविये तेवारे नव्वाणुं थाय. एम अनुक्रमे बीजीवार नव्वाणुंने दशे गुणतां नवशेने नेवुं थाय. तेमां नव नेलिये तेवारे नवशे ने नव्वाणुं थाय. एम अग्यारमि वेलाए ९९९९९९९९९९९९ एम ए त्रीजी देवकुलिका एमां नव नंगीना नंग देखाड्या.

हवे उगणपचाश नंगनी संख्या देखाडेछे. मूलः–इगवन्नं खलु नंगा, निदिठा सावयणा जे सुत्ते ॥ तेच्चिअ पन्नासगुणा, इगुवन्ना पक्खि वेयव्वा ॥३४७॥ अर्थः–निश्चेयकी उगणपचाश नंग श्रावकने सूत्रमांहे जे कह्या. छे तेनेज पचाश गुणाकरी उगणपचाशमांहे नेलविये तेवारे २४९९ थाय. एम अनुक्रमे करतां अग्यारमी वेलाए २४४१४०६२४०९९९९९९९९९९९९ एटला नंग थाय. ए चोथी उगणपचाश नंगनी देवकुलिका कही. ॥ ३४७ ॥

हवे पांचमी एकशोने सडतालीश नंगनी देवकुलिका देखाडेछे. उक्तंचः–सीयालं नंगसयं, वयवुड्ढयालसय गुणंकाउं ॥ सीयालसएण जुअं, सव्वग्गं जाण नंगाणं॥ ॥ १ ॥ अर्थः–एगाथा बीजी क्यां क्यां प्रत्यंतरे देखाती नथी; परंतु पांचमी देवकुलिका एणेकरी थाय. ते कारणे वखाणिये छैये. एकशोने सडतालीश नंगा व्रतनी वृद्धे छे, तेने एकशो अडतालीशगुणाकरीने एकशोने सडतालीश युक्त करिए तेवारे सव्वग्गके० एवंकारे ते तूं जाण. एम गुरु शिष्य प्रत्ये कहेछे, एनी नावना एम छे के एकशो सडतालीश, तेने जेवारे व्रतनी वृद्धिये एकशोने अडतालीश गुणा करीए; पछी एकशोने सडतालीशे युक्त करीए तेवारे २१९०३ नंग थया.

एम वृद्धिये करतां अग्यारमी वेलाए ११०४४३६०७७१९६११५३३५६९५७६९५ एटला थाय ए संख्याए पांचमी देवकुलिका जाणवी.

ए पांचे देवकुलिका कही ते पांचे खंडदेवकुलिका जाणवी. सांप्रत संपूर्ण देव कुलिकानो अवसर त्यां व्रत व्रत प्रत्ये एकेक देवकुलिकाने सद्भावे करी षड्‌भंगी प्रमुख नेविषे प्रत्येके प्रत्येके बार बार देवकुलिका उपजे तेवारे बारपंचां शाठ सर्वे म ली देवकुलिका थाय. ते सर्वे देवकुलिका इहां कहिये, तो घणो विस्तार थाय; तेथी लगारेके देशमात्र देखाडवासारुं षड्‌भंगीनेविषे बारमी देवकुलिका कहेनार छतो ग्रंथकार एक द्विकादि संयोगना कहेनार जे पहेली त्रण राशी कही हती ते मांहे ली गुणाकारक राशी आणवा सारु उपाय कहेछे.

मूलः—एगाईएगुत्तर, पत्तेयपयंम्मि उवरिपखेवो ॥ एक्केकहाणिअवसाण संखया हुंति संयोगा ॥३४०॥ अर्थः—जेटला पदोनो एक द्विकादिक संयोग आणवावांछि ए, तेवे प्रमाणेज एक आदेदेइने एकोत्तर वृद्धिए करीने उपर उपर क्रमे क्रमे स्थापना स्थापिये. एम आंकनी स्थापनाकरी प्रत्येके व्रत बारनेविषे उपरे पखेवोके० उपरला जे आंक तेमां नीचला घालिये एरीते एक्केकहाणि एटले एकेक उपरना आंकनी हाणी करतां वृद्धि कहिये; ते जेम थाय तेम आंकने घालवे करवी, ते ज्यांलगे अवसाणसंखयाके० छेहेडे समस्त आंकनुं प्रक्षेपरूप एतावता सर्वे आंक पूरा घाल्या तेवारे जे आंक थाय तेटला अनुक्रमे एक बे त्रण प्रमुखपदनुं मेलववुं त द्रूप थाय तेसंयोग कहिये. ते आवीरीतेः—

पहेलो एक आगल बीजो ते ज्यांसुधी छेहेडे बार आंक आवे, हवे एको, बग डामां प्रक्षेपे तेवारे त्रण थाय. ते त्रण उपरला त्रण मांहे घालिये तेवारे छ था य, ते उपरला चारमांहे घालिये तेवारे दश थाय. एम दशने पांचमां घालतां पन्नर थाय, पन्नरने छमां नाखतां एकवीश थाय, तेने सातमां नाखतां अठ्ठावीश थायः तेने आठमां नाखतां छत्रीश थाय. तेनेनवमां नाखतां पिस्तालीश थाय,तेने दशमां ना खतां पंचावन्न थाय, तेने अग्यारमां नाखतां छासठ थाय. हवे उपरे बार छेहेडे आ व्या ते तेमज राखिये. जेकारणे कह्युं के एक्केकहाणि एवा वचनथकी ए गुणका रक राशीनी स्थापनाछे.

वली प्रकारांतरे करी देखाडेछे. उनयमुहंरासिडुगं एनुं वखाण करेछेः इहां य द्यपि बारमी देवकुलिका कहेवा मांडी तो पण संक्षेपने अर्थे पंच अणुव्रत आश्री जावना एम छे उनयमुहंके० बेडुए करी बे राशी मांडिये, ते आवीरीते. एक

१२३४५ बीजी ५४३२१ इहां करण गाथानो व्यापार न करवो; परंतु द्विकसंयोगे दश ते आम जे, नीचेछे एकडो, तेना आगल बगडो, ते बगडा साथे उपरले चोगडो, तेना धुरे छे पांचडो, ते पांचे वेंहेचिये तेवारे अढी अढी आवे, तेने उपरला चोगडासाथे गुणाकार करिए तेवारे चार अढीए दश. ए द्विक संयोगी थया.

ते हवे दशने बगडा आगल त्रगडोछे तेनी साथे वेंचिए तेवारे सत्रिया त्रण नाग थाय, तेनी साथे उपरलो त्रगडो गुणिये तेवारे त्रिक संयोगे पण दश थया. ते त्रगडा पछी चोगडो छे तेनी साथे दशने वेंचिये तेवारे अढी आव्या, ते उपरना बगडा साथे गुणिये तेवारे अढी दू पांच थया. ए पांच नंग चतुसंयोगे थया. ते वली चोगडा पछी पांचडो छे तेनी साथे वेंचतां एकज आवे तेने उपरला एकमा साथे गुणतां एकेकुं एक आवे, एटले पंच संयोगे एकज नंग थाय. ॥३४८॥

वली प्रकांतरे करी कहेछे. मूलः—अहवा पयाणि ठविउं, अरके घेत्तूण चारणं कुज्जा॥ एक्कगडुगाइजोगा, नंगाणं संखकायव्वा ॥३४ए॥ अर्थः—अथवा शब्द प्रकारांतरे छे. पयाणिके० विवक्षित व्रत लक्षण ते स्थापिने पछी अरकेघेत्तूणके० अक्षत लेइने अनुक्रमे एक द्विकादिक व्रतनेविषे उच्चारणके० मेलवो करिए, तेवारे एक द्विकादिकना योग थकी नंगनी संख्या करवी. इहां नावना एमछे; पांच पदोने एकेक संयोगे पांच नांगा, तेनी स्थापना ११११‍१ द्विक संयोगे दश; ते आवीरीते. एक चारणाए चार नंग, द्विक चारणाए त्रण नंग, त्रिक चारणाए बे नंग, चतुष्क चारणाए एक. ए पहेली स्थापना एम. हवे त्रिक संयोगे दश. तेमां एक चारणाये छ, द्वितीय चारणाए त्रण, तृतीय चारणाए एक. ए बीजी स्थापना. हवे चतुष्क संयोगे एक चारणाए चार द्वितीय चारणाए एक एम पांच थाय. एनी त्रीजी स्थापना, अने पांचने संयोगे चारणानो अनाव छे माटे एकज नंग होयछे. कोइ पहेलुं व्रत आदेदेइने अंगीकार करे ते ज्यां पांचमो व्रत त्यांसुधी ए चोथी स्थापना. हवे बारमी देवकुलिका तेनी गुणकारकराशी देखाडेछे. ॥३४ए॥

मूलः—बारसछावत्तीविय, वीसहिया दोय पंच नव चउरो॥ दोनव सत्तय चउदोन्नि नवय दोनवय सत्तेव ॥ ३५० ॥ बार, छाशठ, बशेंने वीश, तथा पांच, नव, चार, ते. ४ए५ तथा बे, नव, सात, जोपण सूत्रमां एमछे तो पण आंकनी वांकी व्रति थायछे तेथी ७ए२ समजवा. ए गाथार्थे ए देवकुलिका पाछलछे त्यांथकी जोइ परीक्षा करजो.

मूलः—पण नव चउरो वीसाय दोन्निछावट्ठि बारसेक्कोय ॥ सावयनंगाणमिमे, सव्वाणवि हुंति गुणकारा ॥३५१॥ अर्थः ए पण एमज क्रमे करी जाणवुं. एम आ

गल पण श्रावकना भंग जे ७ पहेला अने पछी छत्रीश, एम बशेने सोळ इत्यादिक बारमी देवकुलिकाने अनुक्रमे करीने गुणाकारक राशी जाणवी ॥ ३५१ ॥

हवे गुण्यराशि कहेछे. मूलः—छच्चेवय छत्तीसा, सोल डुगं चेव छ नव डुगमिक्कं॥छ सत्त सत्तसत्तय, छप्पन्न छसढि चउछके॥३५२॥छत्तीसा नवनउई,सत्तावीसाय सोलछन्नउई॥ सत्तय सोलस भंगा, अठमगाऐ वियाणाहि ॥३५३॥ छाणउई छाहत्तरि, सत्तडुसुन्नि क्क हुंति नवमंमि ॥ छाहत्तरि इगसठी, छायालासुन्न छ च्चेव ॥३५४॥ छप्पन्न सुन्न सत्तय, नवसत्तावीस तहय छत्तीसा ॥ छत्तीसा तेवीसा, अडहत्तरि छहत्तरिगवीसा ॥३५५॥ अर्थः—ए चार गाथाए करी कहियें ते आवीरीतेः—पहेला छ, बीजा छत्रीस त्रीजा बशोने शोल, चोथा बारशें छन्नुं, पांचमा सातहजार सातशो ने छहोंत्तेर, छठा छेताळीश हजार छशें ने छपन्न, सातमा बे लाख ओगणाएंशीहजार नवशो ने छत्रीश, आठमा शोळलाख ओगणाएंशिहजार बशो ने शोल, नवमा एकक्रोड सित्तोतेर हजार छशेने छन्नु, दशमो छक्रोड चार लाख बासठहजार एकशोने छहोंत्तेर, अग्यारमा छत्रीशक्रोड सत्तावीशलाख सत्ताणुहजार ने छपन्न, बारमा बे अब्ज सत्तर क्रोड समसठलाख ब्याशी हजार त्रणशोने छत्रीश. ॥ ३५२ ॥ ३५३ ॥ ३५४ ॥ ३५५ ॥

हवे ए राशिने आणवानो उपाय देखाडेछे. उक्तंच पढमवएछप्भंगा, छहिंगुणि याय बारसवेलाणा ॥ संजोगेहिय गुणिया, सावयवयभंगया हुंति ॥ १ ॥ अर्थः— पहेला व्रतनेविषे छ भंग तेने छ गुणा करिये तेवारे छत्रीश थायछे; वळी छत्रीशने छ गुणा करिए तेवारे बशोने शोळ थाय. एम वारंवार ज्यांसुधी बारगुण्य राशि संपूर्ण थाय, त्यांसुधी करिये. ते हवे छ ने छत्रीश प्रमुख गुण्यराशि अनुक्रमे बार छास छ प्रमुख बारसवेलाणा एटले बारे स्थानक गुणाकारक राशिसाथे गुणतां छतां ३२,१,२३७६,२४३५२०,३,२६४१०८५२०,४,६१५८५८२५,४३११०१४०६,२ ३१७०८३१२,७,८३१४०८८२०,८,२२१७५८३१२०,८,३८८०७६७६१६,१०, ४३५३५६४६६७२,११,२१७६८२३३६,१२, एरीते श्रावकने व्रतना भंग थायपण विस्तारना भयथकी सूत्रकारे कह्या नथी. अने व्रतिनो करनार शिष्यना अनुग्रहने अर्थे चार गाथाये देखाडे छे. बाहत्तरी १ छसत्तरि, २ तेवीसा २ सुन्नडुपणसीयाळा ३ वीसा पनरसचउसवि ४ डुनवपणसीइपन्नरछय ५ ॥ १ ॥ चोयालसयंदसइक्कतीसचउ ६ बारतिनवसयराय ॥ इगडुड ७ वीसानवनव, चालीसा एगतेयासी ८ ॥२ ॥ वीसइगवीसनवसयरि एगबावीस ९ सोलछगसत्त ॥ छसन्नसुन्ननवनव, तिन्निअदसम म्मि ठाणम्मि १० ॥३॥ बाहत्तरिछायाळा, छप्पन्नतिपन्नतिचउ ११ छत्तीसा॥तेवीसाअ

छहत्तरि, छहत्तरीएगवीसाय ॥१३४॥ एम एकवीश भंगी प्रमुखमां भांगाने नाखवे प्रत्येके बार बार देवकुलिका जाणवी. सर्वमली सात देवकुलिका थाय.

हवे डुविह तिविहाइणछाहाहुंति एवुं जे प्रथम कह्युं हतुं ते वखाणिये छैये. मूलः—डुविहतिविहेण पढमो,डुविहडुविहेण बीयउ होइ ॥डुविहं एगविहेणं,एगविहं चेव तिविहेणं ॥३५६॥ एगविहं डुविहेणं, एकेक्कविहेण छट्ठउ होइ ॥ उत्तरगुणसत्त मउ, अविरयउ अठमो होइ ॥३५७॥ अर्थः—द्विविध त्रिविधे पहेलो भंग, द्विविध द्विविधे बीजो भंग, द्विविध एकविधे त्रीजो भंग, एकविध त्रिविधे चोथो भंग, एकविध द्विविधे पांचमो भंग, एकविध एकविधे छठो भंग अने जेणे उत्तरगुण पडिवज्यो ते सातमो भंग अने अविरतिनो आठमो भंग होय. ए बे गाथा प्रथम वखाणी छे; माटे इहां शब्दार्थमात्र स्थानकने अशून्य राखवासारु लख्योछे. ॥३५६॥३५७॥

हवे पांच अणुव्रतनी देवकुलिका कहेवासारु पहेली एकादिक संयोगना परिमाणनी कहेनार गुणाकारक राशि कहेछे. मूलः—पंचण्हमणुवयाणं, एक्कगडुगतिगचउक्कपणगेहिं॥ पंचगदसदसपणए कगोयसंजोय नायव्वो ॥३५८॥ अर्थः—पांच अणुव्रतने अनुक्रमे एक संयोगे, द्विक संयोगे, त्रिक संयोगे, चतुःसंयोगे, पंचक संयोगे पंचकादिक एटले पांच दश दश पांचने एक संयोगे. ए गुणाकारक राशि जाणवी.

हवे पंचम देवकुलिकानी गुण्य राशि कहेछे. मूलः—छच्चेवय छत्तीसा,सोलडुगं चेव छनवडुगएक्कं ॥ छस्सचसत्तसत्तय, पंचण्हवयाणगुणणपयं ॥३५९॥ अर्थः—पहेला छ पछी नीचे छत्रीश, बसोने सोल, बारशोने छन्नु, सातहजार सातशोने छोतेर पांच व्रतना ए गुणवाना पद गुण्यराशि जाणवी. ॥३५९॥

हवे त्रण गाथाए करी पांचमी देवकुलिकानी आगतराशि कहेछे. मूलः—वयए क्कगसंजोगा एहुंति पंचण्हतीसई भंगा ॥ डुगसंजोगदसण्हंपि तिन्निसछासया हुंति॥ ॥३६०॥अर्थः—पांच व्रतने एक एक संयोग द्विविध त्रिविधादिक छ भंग थाय अने छ ने पांचगुणा करिये तेवारे त्रीश थाय; एकेक संयोगे पांच अणुव्रतना त्रीश भंग. थया एम एक व्रतनेविषे द्विकसंयोगे दश भंग होयछे, तेना उत्तरभंग त्रणशो ने साठ होय. ॥ ३६० ॥

मूलः—तिगसंजोग दसण्हं, भंगसयाएक्कवीसईसछा ॥ चउसंजोगप्पणगे, चउसछिसयाणिअसीयाणि ॥३६१॥ अर्थः—त्रिकसंयोगे दश भंग होय तेना वली उत्तर भंग एकवीशशें ने साठ थाय अने चतुःसंयोगे पांच भंग तेना विषे उत्तरभंग छ हजार चारशो ने एंशी थायछे. ॥३६१॥

मूलः—सत्तत्तरीसयाइं छहत्तरीइंतु पंचगे हुंति ॥ उत्तरगुणअविरयमे लिआण जाणाहि सव्वग्गं ॥३६१॥ अर्थः—सातहजार सातशोने छोतेर. एटला पंचकसंयोगे एक भंग तेना उत्तर भंग थाय. अने उत्तरगुण तथा अविरतिना बे भेद मल्या ते वारे अनंतरोक्त त्रीश प्रमुख भंग तेनी सर्व संख्या जाण.

हवे ए त्रण गाथानी भावना एमछेकेः—कोइएक पांच अणुव्रत पडिवजे ते पांच एकेक संयोगे थाय. अने एक एक संयोगे द्विविध त्रिविधादिक छ भंग थाय; तेने छ गुणा करतां छत्रीश थाय. एक संयोगे एटला थया, एकनेविषे द्विकसंयोगे छत्रीश तेवारे थुरलाव्रत संबंधी एक थुरलो भंग छेज अने मृषावादना छ भंग.॥३६१॥

हवे सर्वाग्रे सर्व संख्याये जे थाय ते कहेछे. मूलः—सोलसचेव सहस्सा, अठ्ठस याचेव हुंति अठहिआ ॥ एसो वयपिंडछो, दंसणमाईउ पडिमाउ ॥ ३६२ ॥ अर्थः—सोलहजार आठशोने आठ ए तेने पूर्वोक्त पांच व्रतनो समुदाय अर्थ जाणवो. अने दर्शनादिक प्रतिमाना अभिग्रहनो विशेष छे पण ते व्रत कहिये नही. ॥३६३॥

हवे बारव्रतना सर्व मली जेटला भंग थाय ते कहेछे. मूलः—तेरसकोडिसयाइं, चुलसीइजुआई बारसयलरका॥सत्तासीइ सहस्सा,दोयसया तह डुरग्गाय॥३६४॥अर्थः—तेरसो कोडी ते चोराशी कोडिए करी सहित वली बारलाख सत्ताशीहजार बसोने बे अधिका एटले संक्षेपकरी गाथानो अर्थ लख्योछे के जे विस्तारथी थाय. तेणे बृहद्वृत्ति थकी जोवुं. अने नष्टउद्दिष्टादिक जे जाणवानी वांछा करे तेणे गुरु सेवा करवी एटले गुरु एनो भावार्थ शीखवशे. ॥३६४॥ इतिगाथा पंचत्रिंशिकार्थः॥

अवतरणः—अठारस्सपावठाणाइंति एटले अढार पापस्थानकनुं बशो ने साडत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—सव्वं पाणाइवायं, अलियमदत्तं च मेहुणंसव्वं॥ सव्वं परिग्गहं तह, राईभत्तं च वोसिरिमो ॥३६५॥ अर्थः—सर्व प्राणातिपात ते एकेंद्रिय आदे देइने पंचेंद्रिय पर्यंत जे जीव ते प्राणीउंनो अतिपात एटले विनाश ते प्राणातिपात जाणवुं, बीजुं क्रोधादिके करी अलिक जे जूठुं बोलवुं ते मृषावाद जाणवुं, त्रीजुं ज्यां अण दीधी पारकी वस्तुनुं लेवुं ते अदत्तादान, चोथुं स्त्री पुरुष लक्षण तेनुं जे कर्म ते मैथुन नर देव अने तिर्यंच संबंधी जाणवुं, पांचमुं परिके० समस्त प्रकारे ग्रहिए तेने परिग्रह कहिए. ते समस्त धन धान्यादिकजे छे ते अपरिमाणपणे राखिए. ते अमे वोसरिये छे. तहके० तेमज छठुं रात्री संबंधीजे भक्त अशनादिक ते रात्रीभक्त जाणवुं. तेने पण अमे वोसरिये छे. ॥ ३६५ ॥

मूलः—सव्वं कोहं माणं, मायं लोहं च रागदोसेय॥कलहंअब्भरकाणं, पेसुन्नं परपरी

वार्य ॥ ३६६ ॥ अर्थः—सातमो समस्त क्रोध, आठमो मान, नवमी माया, दशमो लोन ए चार प्रसिद्धछे, अग्यारमो राग ते अनिष्वंग लक्षण, बारमो द्वेष ते अप्रीति लक्षण, तेरमुं कलह वचन ते कलहादिक अनेक प्रकारे छे, चउदमुं अन्याख्यान ते अनेरातणे कारणे अणहुंता दूषणनुं आपवुं, पन्नरमुं पैशुन्यपणु तेने कहिये जे चाडि चुगलीनु करवुं, सोलमुं परपरिवाद ते बीजानां दूषण जे बीजाने पठवाडे कहीयें.

मूलः—माया मोसं मिछा, दंसणसल्लं तहेव वोसरिमो॥अंतिमऊसासम्मि, देहंपि जिणाइपच्चरकं ॥ ३६७ ॥ अर्थः—सत्तरमुं मायामोस एटले स्थापणमोसो अथवा मायायेकरी सहित जे मृषावाद, जे बीजाने ठगवाने अर्थे करिए ते मायामृषा कहिये, अढारमुं मिथ्यादर्शन जे कुगुरु कुदेवने कुधर्म लक्षण ते रूप शल्य ते मिथ्यादर्शन शल्य कहिए, ए अढार पापस्थानक कर्म बंधनां कारण जाणी ए थी अमे वोसरिये छइये. तेमज वली अंतिमके० छेहेला श्वासोश्वासने विषे ए अमारो देह पण जिनादि एटले जिनशब्दे श्रीअरिहंत आदिशब्दथकी सिद्ध केवली तेने प्रत्यक्षे एवो देह पण वोसराविये छैये. ॥ ३६७ ॥इतिगाथा त्रयार्थ ॥

अवतरणः—मुणिगुण सत्तावीसंति एटले मुनि जे साधु तेना सत्तावीशगुणनुं वर्णने आडत्रीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—छव्वय छकायरस्का, पंचिंदिय लोहनिग्गहो खंती॥ नावविसुद्धी पडिलेहणाइ करणे विसुद्धीय ॥ ३६८ ॥ अर्थः—प्रथम छ व्रत तेमां पांचतो प्राणातिपात विरमणादिक ने छठुं रात्रीनोजन विरमण जाणवुं, अने छ काय ते पृथ्वीकायादिक पांच तथा छठुं त्रसकाय, एरीते छकायना रक्षक तथा स्पर्शादिक पांच इंड्रियो,ने छठो लोन तेनो निग्रह एटले रुंधवुं, ए अढार थया, ओगणीशमुं क्षमानुं करवुं, वीशमुं नावनी विशुद्धि, एकवीशमुं प्रतिलेखनादिक जे साधुनुं करण कर्त्तव्य तेनेविषे विशुद्धि निर्मायपणु. ॥ ३६८ ॥

मूलः—संजम जोएजुत्तय, अकुसल मण वयण काय संरोहो॥ सीयाइपीडसहणं, मरणं उवसग्गसहणं च ॥३६९॥ अर्थः—बावीशमुं संयमना जे योगके०व्यापार तेणे करी सहितपणु अने अकुशल एटले माठा जे मन वचन अने कायाना व्यापार तेनुं संरोहके० रुंधन करवुं, ए मनादिक त्रणछे, माटे त्रण नेद थया; तेथी सर्व मली पच्चीश गुण थया. छवीशमुं वली शितादिक पीडानुं सहन करवुं, सत्तावीशमुं मरणांत जे देवादिकना करेला उपसर्ग उत्पन्न थाय तेनुंसहन करवुं, इति गाथाद्वयार्थ.

अवतरणः—एगवीसं सावयगुणाणंति एटले श्रावकना एकवीश गुणोनुं वर्णने उंगणचालीशमो द्वार कहेछे. मूलः—धम्मरयणस्स जुग्गो,अरकुद्दो,रूववं पगइसोमो॥

लोयप्पियउअक्रूरो,निरू असढो सदक्खिन्नो ॥३३०॥ अर्थः—परतीर्थीकना प्रणीत जे अनेरा धर्म ते धर्मोमांहे प्रधानपणाथकी जे रत्नीपरे रत्न तेने धर्मरत्न कहिये; ते श्रीजिनेंद्रनो प्रणीत देशविरति प्रमुख जे धर्म तेने योग्य एवा लक्षणे सहित जे थाय तेहिज देखाडेछेः—एक अरकुद्दो तेमां क्षुद्र शब्दे तुच्छस्वजाव कहिए; ते जेमां न होय ते अक्षुद्र. गंजीर होय तेनी सूक्ष्ममति होय. तेणेकरीने ते सुखे धर्मनो प्रति बोध पामे, बीजुं रूववं ते संपूर्ण अंगोपांगपणायेकरीने मनोहर आकारनो ध रनार ते रूडे आचारे प्रवर्त्ते; तेरीते प्रवर्त्ततो थको नव्यजीवोने धर्मनेविषे गौरव उपजावतो प्रजावक थाय. इहां कोइ कहेशे के नंदिषेण हरिकेशीबल प्रमुख ने कुरूप छतां पण धर्मनी प्रतिपत्ति सांजलियेछइये; तो केम तमे रूपवंतनेज अधिकारी कहोछो? तेनो उत्तर कहेछे. इहां रूपवंत बे प्रकारेछे. एक सामान्य रूपवंत ने बीजो अतिशय रूपवंत; तेमां जे संपूर्ण अंगोपांग पांचेइंद्रिये परवम्यो होय ते सामान्य रूपवंत कहिए, तेवुं नंदिषेणादिकने विषे पण हतुं तेथी अविरोधछे, तथा वली शेष गुण होय तो मात्र एक कुरूपपणानो दोष न जाणवो. अतिशयरूपना धर नार तो श्री तीर्थंकरज होय, यतः॥सव्वसुराजेरूवं, अंगुठ्ठपमाणयंविउव्विज्ञा ॥ जि णपायंगुठ्ठपइ. नसोहए जह तहिंगालो ॥ १ ॥ एवा वचन थकी यद्यपि श्रीजगवंत समस्त रूपनिधान थाय तोपण जे रूपे देशकाल वयने विषे वर्त्तमान छताने जेने लोक रूपवंत कहे ते इहां लेवो,त्रीजुं पगइसोमोके० प्रकृति एटले स्वजावेज सोम्य अ ज्ञिपण आकारनो धरनार होय, जेने देखवाथी लोकोने विश्वास उपजे, प्रवाहे एवाने विषे पाप व्यापार संजवे नही अने तेवा प्राणीनो सुखेथी बीजा पण आश्रय करे. चोथुं लोगप्पियउ एटले इहलोक अने परलोकनेविषे जे विरूद्धाचरण तेना वर्जवा थकी दानादिक गुणेकरीने लोकने प्रिय होय ते धर्मनेविषे बहु मान उपजावे, पां चमुं अक्रूरो एटले त्यां जे मावा अध्यवसायनो धरनार होय ते पारकां छिद्र जोय ते पुरुषनुं सपाप चित्त होय अने तेना करेला अनुष्ठान पण सफल नथाय, माटे ते अक्रूरज होय. छठुं नीरू एटले इहलोक तथा परलोकना अपायथकी बीहितो रहे एवो जे होय ते कारण छते पण निःशंकपणे पापनेविषे प्रवर्त्ते नही, सातमुं अशठ एटले कपटे करी रहित छतो अनुष्ठाननो करनार होय, केमके जे प्राणी कपटे करी सहित होय ते परने वंचवानेविषे चतुरपणाने लीधे सर्व लोकोने अविश्वासनुं स्था नक थाय, आठमुं सदक्खिन्नो एटले पोताना कार्यने परिहारे पारकां कार्य करवाने विषे रसिक चित्त होय ते समस्त लोकने अनुवर्त्तनीय थाय. ॥ ३३० ॥

मूलः—लज्जालुउ दयालू, मझ्झो सोमदिठि गुणरागी॥सक्कहसपरकजुत्तो, सुदीहदंसी विसेसन्नू ॥ ३७१ ॥ अर्थः—नवमो लज्जानो धणी ते अकार्य करवानी वातमां लज्जा पामे, पोते जे व्रत नियम अंगीकार कर्यांछे ते नांखे नही, दशमो दयालु एटले दयावंत होय. दुःखी प्राणियोने देखी तेनां दुःख नांगवाने विषे अनिलाष करे. केमके जे दयाछे ते धर्मनुं मूलछे. यतः दीनहीनं जनं दृष्ट्वा, दया यस्य न जायते॥ सर्वज्ञनाषितोधर्म्मः स्तस्य चित्ते न विद्यते॥१॥ अग्यारमो मझ्झो एटले मध्यस्थ होय, राग द्वेषे करी रहित छे जेनी बुद्धि, एवो जे होय ते अरक्तअद्विष्टपणा थकी सर्वेने वल्लन होय,बारमो सोमदिठि एटले कोइने पण उद्वेगनो करनार न होय एवो जे होय ते प्राणीउने दर्शनमात्रे करी प्रीति उपजावे, तेरमो गुणरागी एटले गुण जे गांनीर्यपणुं, थिरतापणुं, धैर्यपणुं, औदार्यपणुं इत्यादिकनेविषे राग करे एवोजे होय ते गुणना पक्षपातपणाने लीधे जे ज्ञानादिक गुणे सहित गुणवंत होय तेनेविषे रागकरे, निर्गुणनी अपेक्षा करे; चउदमो सक्कहसुपरकजुत्तो एटले सदाचारीपणाये करी नलीज वात करे पण नूंमी वात मात्र नज करे ते सक्कह एवा जे मित्र तेणे सहित अथवा धर्मबाधानो परिहरणहार जे परिवार तेणे करी युक्त होय. एवाने कोइ उन्मार्गे पमाडी शके नही. एक वली नली कथानो करनार ए जुदो गुण कहेछे अने सुपक्षयुक्त एटले नला विनयादिक गुणे सहित एवा परिवारे युक्त ए जूदो गुण मानेछे; अने तेने बदले मध्यस्थ अने सोम्यदृष्टि ए बे ने एक गुणकरी मानेछे, पन्नरमो सुदीहदंसी एटले घणा विचारकरी जे कार्य परिणामे रुडुं होय तेवा कार्यनो करनार परिणामिकी बुद्धिये सहित थको इह लोक संबंधी जे कार्यकरे ते पण विचारीने करे, सोलमो विसेसन्नु एटले सारा ने माठाना विनागनो जाण होय पण जे गुण दोषना विनागनो जाण न थाय. ते दोषने गुणपणे करे, अने गुणने दोष पण करे. ॥ ३७१ ॥

मूलः—वुड्डाणुगो विणीउ, कयन्नुउ परहियच्चकारीय॥तहचेव लद्धलरको, इगवीसगुणो हवइ सड्ढो ॥३७२॥ अर्थः—सत्तरमो वृद्धानुग एटले वृद्धते जेनी गुण उपार्जवाने अर्थे परिणत मतिछे तेनो अनुग एटले सेवनार एटले वडेरानो सेवनार तेनो कथनकारी जे होय तेने आपदा न आवे; यतः यदेकः स्थविरो धत्ते, नतत्तरुणकोटयः॥नृपं यो लत्तया हंति, वृद्धवाक्यात्सपूजितः ॥१॥ ए दृष्टांत जाणवुं. अढारमो विणीउ एटले विनीत गुरुजनने गौरवना करनार एवा विनीतने सर्व समीहित संप्राप्ति होय ते दुर्विनीतने नथाय. यतः वीणीउ आवइइसिरि लहइ विणीउ जसंच किंत्तिंच ॥ न

कयाइ इविणीउं सकज्जं सिद्धिं समाणेइ ॥१॥ उगणीशमो कयन्नुउं एटले कराखुगुण नो जाण. एटले कोइके थोमो पण इहलोक संबंधी अथवा परलोक संबंधी उप कार कीधो होय तो तेनो करेलो उपकार उलवे नही अने जे कृतघ्नी होय ते इहां सर्वत्र निंदा पामे. वीशमुं परहियत्थकारिय एटले परने कारणे हितार्थनां कामनो कर नार होय अने पहेलुं जे सदाक्षण कह्युं ते अनेराना कह्याथी काम करे अने इहांतो परने हीतार्थकारी ते पोतेज बीजाना हितने अर्थे प्रवर्त्ते. एटलो ए बे ने मांहोमांहे नेदछे. जे स्वनावेज परना कह्याविना परहितार्थकारी थाय ते निरीह पणाये करीने अन्यने धर्मने विषे स्थापे; एकवीशमुं तहेवके० तेमज वली लद्धल रकोके० लब्ध, लक्ष एटले लाध्योछे लक्ष जेणे एटले शिखवाने योग्यजे अर्थ अनु ष्ठान विशेष ते लब्ध लक्ष. एतावता पूर्वाभ्यस्तनी परे सर्व धर्मकृत्य तत्काल आ दरे एवो जे होय ते एवाने वांदणां पमिकमणां पमिलेहण प्रमुख शिखावी शकिये. एवा ए एकवीशगुणेकरी सहित श्रावक थाय. ॥२७१॥ इतिगाथात्रयार्थ ॥

अवतरण'—तेरिच्छीणुक्किछगप्नठियत्ति एटले तिर्यंचने उत्कृष्टे गर्नस्थितिनुं बसोने चालीशमुं द्वार अने माणुस्सीणुक्किछगप्नछिइति एटले मनुष्यनीस्त्रीनी उत्कृष्टीगर्नस्थि तिनुं बसोने एकतालीशमुं द्वार तथा तग्गप्नस्सकायछिइत्ति एटले ते मनुष्यनीस्त्रीना गर्ननी कायस्थितिनुं बशोने बेतालीशमुं द्वार ए त्रण द्वार दोढगाथायेकहेछे. मूलः— उक्किछगप्नठिई, तिरियाणं होइ अठ्वरिसाइं॥गप्नठिई मणुस्सीणु क्किठा होइ वरिसबा रसगं॥२७३॥ गप्नस्सयकायठिई,नराण चउवीसवरिसाइं॥२७४॥अर्थः—तिर्यंचने उ त्कृष्टथी गर्ननी स्थिति आठ वर्ष थाय अने आठ वर्ष उपरांतपछी खरी पडे अथ वा प्रसव थाय, अने मनुष्यनी स्त्रीने गर्न संनव थाय;तेकोइक जीवने घणीज पापनी राशिने उदये एवा वात पित्तादिकने दोषे अथवा देवताए मंत्रादिके थंभ्यो थको गर्न मांहे बार वर्ष उत्कृष्टे स्थिति होय; जेम सिद्धराय जेसिंघदेने बार वर्ष गर्नमांहे सावकि माताये मंत्रे करी बांधी राख्यो सांनलिये छैये, पछी एक योगिये उपाय करीने छोडाव्योछे तेथी नामने आदे सिद्धि ए बे अक्षर नाखीने सिद्धराज जे सिंघदे नाम दीधुं. ए नवस्थिति जाणवी.

अने कायस्थिति ते गर्नमांहे मनुष्यमां कोइ जीव आवी उपन्यो ते पूर्वोक्त प्रकारे बार वर्ष जीवीने त्यांज मरण पामि वली कर्मना वशथकी तेज कले वरमांहे गर्नावासे ते जीव उपन्यो. वली पण त्यां बार वर्ष जीवतुं रहे ए काय स्थिति उत्कृष्टे चोवीश वर्षनी नावना जाणवी. इति सार्द्धगाथार्थ.॥२७३॥२७४॥

अवतरणः—गप्ननिय जीव आहारोत्ति एटले गर्भने विषे रह्यो थको जीव जे आहारनुं ग्रहण करे तेनु बशोने तेतालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—पढमे समए जीवा, उप्पन्ना गप्नवासमप्नंमि ॥ उयं आहारंती, सव्वप्पणयाइअ पूयव ॥२७५॥ अर्थः—पहेले समये जीव गर्भावासमां उपन्या छतां जे मातानुं शोणित अने पितानुं वीर्य ए उज आहारनुं ग्रहणकरे ए वात दृष्टांत पूर्वक देखाडेछे, सर्वात्मनाके० समस्त आत्माना प्रदेश तेणेकरीने पूयवके० पुडानीपरे जेम पुडाने तेलेनरी कढाइमां नाखिये पछी ते पुंडो समस्त प्रदेशे तेलनुं ग्रहण करे तेम जीव पण आहार लिये.

मूलः—उयाहारा जीवा, सव्वे अपज्जत्तगा मुणेयव्वा ॥ पज्जत्ताउण लोमे, परके वे हुंति नई यव्वा ॥२७६॥ अर्थः—उजाआहारी जीव ते सर्व अपर्याप्ता छता जाणवा. अने पर्याप्ता थया पछी लोमाहारी होय अने प्रक्षेपाहारनी नजना जाणवी. इति गाथार्थ॥

अवतरणः—रिउरुहिरसुक्कजोए जत्तियकालेण गप्नसंनूईति एटले स्त्रीनुं रुधिर ऋतु संबंधी अने पितानुं शुक्र वीर्य तेने योगे जेटले काले गर्भनो संनव थाय तेनुं बशोने चुमालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—रिउसमयएहायनारी, नरोवनोगेण गप्नसंनूई॥बारसमुहुत्तमप्ने, जायइ उवरिं पुणो नेय ॥२७७॥ अर्थः—महिनामहिनाने प्रांते त्रण दिवस सुधी निरंतरपणे स्त्रीने योनिद्वारे लोही श्रवेछे, तेने ऋतु कहिये; ते त्रण दिवस ऋतु समय कहिए. ते थकी उपरांत शुद्धिने अर्थे स्त्री स्नान करे तेवार पछी पुरुषनी साथे संयोग मलवाथी गर्भनी संनूति एटले उपजवुं थाय; ते बार मुहूर्त्त एटले चोवीश घडी सुधी होय, केमके बार मुहूर्त्त सुधी शुक्र ने शोणित बेहु अविध्वस्त पणें थाय. पछीविध्वंस पामे तेथी उपरांत न संनवे. इति गाथार्थ॥

अवतरणः—जित्तियपुत्तागप्नेति जेत्तियपुत्तोयपियरोय पुत्तस्सति एटले जेटला पुत्र गर्भने विषे थाय तेनु बशोने पिस्तालीशमुं द्वार अने जेटला पिता पुत्रने थाय तेनुं बशोने छेतालीशमुं द्वार एवा अर्थ जणावतो एक गाथाये करी बे द्वार कहेछे. मूलः—सुय लरकपुहुत्त होइ, एगनरत्नुत्तनारिगप्नंमि ॥ उक्कोसेणं नवसय, नरत्नुत्तबीइ एगसुउ ॥२७८॥ अर्थः—सुतके० बेटा ते लाख पृथक्त्व थाय पण ते क्यां थाय के एके नरे नोगवी जे नारी तेनागर्भनेविषे थाय. तेमां एकबे अथवात्रण जीवता रहे. बीजा थोडासा कालमां विनाश पामे. उक्कोसेणंति एटले कोइएक दृढ संघयणनी धरनारी महा कामातुर स्त्री होय अने ते बार मुहूर्त्तमां नवशें पुरुष नोगवे तो ते स्त्रीनेविषे जे पुत्र थाय तेना नवशें पिता जाणवा; एटले ते नवशें पितानो एक पुत्र जाणवो.

अवतरणः—महिला गप्नअनवण कालोत्ति पुरिस अबीयकालोत्ति एटले

महिला जे स्त्री तेने गर्भ न होवानो काळ अने पुरुषने अबीजपणाना काल संबंधी बशो ने सडतालीशमुं द्वारकहेछे मूलः—पणपन्नाइ परेणं,जोणीपमिलाइएमहिलियाणं ॥ पणहत्तरीयपरउ,होइ अबीउ नरोपायं ॥ २४९ ॥ वाससयाउयमेयं,परेण जा होइ पुव्वकोडीउ॥तस्सद्धे अमिलाया,सव्वाउयवीसभागोय ॥२५०॥ अर्थः—पंचावन्न वर्ष उपरांत स्त्रीनी योनी पमिलाए एटले संकोच पामे, त्यां घणी स्त्रीने योनि संकोच पामता पहेलां पण ऋतु बंध थई जायछे; तथापि कोइने बंध थइ न जाय, तोपण पंचावन्नमे वर्षेतो अवश्य बंध थायछे. ऋतु आवे तोपण तेथी गर्भोत्पत्ति न थाय अने पंचावन्नमा वर्षथी उपरांत तो ऋतु पण न आवे ने गर्भ पण नथाय. तेमज पणहत्तरिके० पंचोत्तेर वर्ष उपरांते प्राय अबीज नर थाय ॥ २४९ ॥

हवे ए केटला वर्षना प्रमाणना आउखावालाने थाय? ते बीजी गाथाए देखाडेछे. एकशो वर्षना आयुष्यना धणी हमणांना काळना जे मनुष्यछे तेने ए काळमान गर्भसंभववनुं कह्युं; अने जे सो वर्षना आयुष्यथी उपरांत बसो अथवा चारसोथी मांडी ज्यांसुधी उत्कष्टे पूर्वकोडी सुधी जो आयुष्य होय तो तेने अर्धे अर्धा आयुष्यसुधी अम्लान एटले स्त्रीनी योनी गर्भधारण करवाने समर्थ होय, पछी गर्भ धरवाने समर्थ न होय. अने जेने एकवार प्रसव छे, एवी युगलियानी स्त्री तेने सदासर्वदा अवस्थितयौवनपणुज होय. सव्वाउयके० सर्व पुरुषोने एटले पूर्वकोडी आयुष्यना धणी अथवा तेथी उंछा आयुष्यना धणी जे होय; एवा पुरुषोने जेने जेटलुं आयुष्य तेने ते आयुष्यनो वीशमो भाग टाली बाकीना काळमां सबीजपणु जाणवुं. अने वीशमे भागे अबीजपणु होय ॥ २५० ॥ इति गाथाद्वयार्थ ॥

अवतरणः—सुक्काइण पमाणंति एटले शुक्रादिकना माननुं बसोने अडतालीशमुं द्वार कहेछे. मूलः—बीयंमुंसुक्कंतहसो णियंचगणंतुजणणिगब्भंमि ॥ उयंतुउववंज्जस्स कारणंतस्सरूवंतु ॥२५१॥ अर्थः—बीज कहिये कारण, ते शरीर ते संबंधी पितानुं शुक्र तेमज शोणित एटले मातानुं लोही ए बेउ; तेमज स्थानक ते क्षेत्र भूमिकानी परे माताने गर्भे उदरमांहे, त्यां जे शुक्रने शोणितनो समुदाय ते उज कहिये. एवो उज ते शरीर उपष्टंभनो हेतुके० कारण जाणवुं. तस्सरूवंतुके० ते शरीरनुं स्वरूप ते आगली गाथाए देखाडेछे. ॥ २५१ ॥

मूलः—अट्ठारसपिट्ठकरंडयस्स संधीउहुंतिदेहम्मि ॥ बारसयं सुलियकरंडया इह तहछपंसुलिए ॥२५२॥ होइकडाएसत्तंगुलाइं जीहापलाइ पुण चउरो॥अच्छीउदोपलाइ, सिरंतु भणियं चउकवालं ॥२५३॥ अर्थः—मनुष्यना शरीरनेविषे पृष्ठ करंडक

एटले वंशपृष्ठादिक गंठी रूपते अढार थायछे, अनेसांधा पण अढार थायछे, ए जेम वांशनी गांठ थाय तेम जाणवा. हवे जे अढार सांधाछे तेथकी बार पांशली नीकली ते बन्ने पासे आवरी हैयाने मध्ये लागी ने पालाने आकारे परिणमे, एज कारणे कहेछे. तहबारपंसुलीए जेम बार पांसलीरूप करंमके० वांसो थाय तेम वली छए पांसुलीए होइकडाहोके० कमाहो ते शेष छ सांधाथकी थाय, तेज बे पसवाडा आवरी बेउ पसवाडे हैयाथकी नीची ढली कूखथकी उपर मांहोमांहे अणमल ती होय ते कडाह कहिये.

हवे जीभ जे छे ते लांबपणे आत्मांगुले सात अंगुल प्रमाण थाय, अने तो लिये तेवारे मगधदेश प्रसिद्ध पल तेवा पलने माने चार पल थाय; अने अछि के०आंख ते बे पल्य प्रमाण थाय अने सिरके०मस्तक ते जणिअंके०श्री अरिहंत देवे कह्युं. चउकवालंके०चार कपाले हाम्हने खंम्हे करी निपजे. ॥३०२॥ ॥३०३॥

मूलः—अछुठ पलंहियय, बत्तीसं दसणअछिखंमाइ॥कालिज्जयंतु समए, पणवीस पलाइनिदिठं ॥ ३०४ ॥ अर्थः—अछुठके० साडात्रण पलप्रमाण हैयुं होय अने बत्तीसके० बत्रीश दसनके० दांतना अस्थिके० हाडकांना कटका होय. एम कालि ज्जंके० कालजु ते समयपएके० सिद्धांतमांहे पच्चीश पलने माने कह्युंछे. ॥३०४॥

मूलः—अंताइ दोन्नि इहइं ॥ पत्तेयं पंचपंचवामाउ ॥ सठिसयंसंधीणं, मम्मा णसयंतु सत्तहियं ॥ ३०५ ॥ अर्थः—आंत्र ते दोन्नीके० बेज इहइंके० शरीर नेविषे पण प्रत्येके पांच पांच वाम कहिए पुरीस प्रमाण. अने एकसोने सा ठ सांधा ते आंगुली प्रमुखना मेलापक स्थान जाणवां, मर्म्म ते शाखाप्रमुख एकसोने साते अधिक होय. ॥ ३०५ ॥

मूलः—सठिसयंतु सिराणं, नाभिप्पभवाण सिरमुवगयाणं॥रसहरणनामधेज्जाण जाणणुग्गहविघाएसुं ॥३०६॥ अर्थः—पुरुषना शरीनेविषे सातशे नसोछे तेमां सि रा जणिये नसा ते एकसोने साठ नाभिथकी प्रभवके० उत्पति छे जेनी. अने मस्त कप्रत्ये उपगत एटले जे प्राप्त थइछे ते रसहरीए, एटला माटे रसहरणी एवुं नामधेयके० नामछे जेनु, जाणके० जेने अनुग्रह अने विघाते भलुं अने मातुं जे कांइ थाय ते कहेछे. ॥ ३०६ ॥

मूलः—सुह चरकुघाण जीहा, णणुगहो होइ तहविघाउय ॥ सठिसयं अन्नाणवि, सिराण होगामिणीण तहा ॥३०७॥ अर्थः—श्रोत ते कान, चक्षुते नेत्र, घ्राण ते ना सिका, जीहा ते जीभ इत्यादिक इंद्रियोने एने अनुग्रहे भलुं होय, अने एनेज विघाते

मातुं होय. जेम ए उर्ध्वगामिनी कही तेमज सन्धिसपंके० एकसोने सात अनेरी पण नसो ते अधोगामिनी जाणवी. ॥ ३७७ ॥

मूलः—पायतलमुवगयाणं, जंघाबलकारिणीणणुवघाए ॥ उवघाएसिरिवियणं, कुणंतिअंधत्तणंच तहा ॥ ३७८ ॥ अर्थः—जे पादतलप्रत्ये नीची गइछे तेउने अनुपघाते विनाश अणहुंते जंघानुं बल थाय. पीडा प्रमुखने बलनी करनार थाय अने तेनेज उपघाते शिरपीडा, अनेचक्षुने अंधपणु प्रमुखनी करनार थाय.॥३७८॥

मूलः—अवराणगुदपइट्ठाण होइ सउसयंतहसिराण ॥ जाणबलेण पवत्तइ, वा ऊमुत्तं पुरीसंच ॥ ३७९ ॥ अर्थः—अपरके० बीजी वली गुदनेविषे जे रहीछे तेपण एकसोने सात होयछे, जेना बलेकरी वायु, मूत्र अने पुरीषके० वडिनीति प्रवर्त्तेछे.

मूलः—अरिसाउ पंडुरोगो वेगनिरोहोय ताणयविघाए ॥ तिरियगमाणसिराणं, सउसयं होइ अवराणं॥३८०॥ अर्थः—एने उपघाते हरस थाय, पांडूरोग, वेगके० मूत्र वडिनीतिनुं रुंधन थाय.तेम तिर्यगामिनी नस ते वली एकसो ने सात थाय.

मूलः—बाहुबलकारिणीउ, उवघाए कुच्छिउयरवियणाउ ॥ कुवंति तहन्नाउ, पणवीसं सिंभधरणीउ ॥ ३८१ ॥ अर्थः—ते बाहुने बलनी करनार अने एनाज उपघाते कुक्षी उदर तथा पेटनी वेदना थाय, तेम बीजी पच्चीश नसो ते सिंभके० श्लेष्मनी धरनार छे अने तेनेज उपघाते श्लेष्म थाय. ॥ ३८१ ॥

मूलः—तह पित्तधारिणीउ, पणवीस दसय सुक्कधरणीउ ॥ इयसत्तसिरसयाइं, नाभिप्पभवाइं पुरिसस्स ॥३८२॥ अर्थः—तेमज पित्तनी धरनार पच्चीश नस थाय छे. वली दश नसो ते शुक्र एटले वीर्यनी धरनार. एरीते सातसो सिराके० नसो ते नाभीथकी प्रभवके०उपजवुंछे जेउनुं, ते पुरुषनेजाणवी.ए पुरुष आश्री नसो कहीछे.

हवे स्त्री तथा नपुंसकना शरीरमांहे पुरुष जेटलीज होय किंवा विशेष होय? ते कहेछे. मूलः—तीसूणाइं इत्थीण वीसऊणाइ हुंति संढस्स ॥ नवण्हारूणसयाइ, नवधमणीउय देहंमि ॥ ३८३ ॥ अर्थः—त्रीशे ऊणी सातशे नसो ते स्त्रीना शरीरनेविषे होय, अने वीशे हीन सातसो नसो नपुंसकना शरीरे थाय छे; वली नवसो स्नायुके० न्हानी नसो जेनी साथे अस्थि बांध्यांछे ते जाणवीयो. अने नवधमणीके० रसवह नाडी एटले जेना प्रभावथकी रस गमो गमे परिणमे एवीछे. ३८३

मूलः—तहचेव सव्वदेहे, नवनउईलरक रोमकूवाणं ॥ अद्धुट्ठाकोडीउ, समंपुणो केसमंसूहि ॥ ३८४ ॥ अर्थः—तेम वली सर्वमली देहनेविषे नव्वाणुलाख रोमकूपछे अने साडात्रण क्रोड, नव्वाणु लाख, केश मस्तकना निमाला, तेणे सहित

जाण. अने स्मश्रुके० दाढी तथा मुछना निमाळा तेणे पण सहित जाणवा.॥२९४॥

मूळः—मुत्तस्स सोणियस्सय, पत्तेयं आढयंवसाएउ ॥ अद्धाढयंजणिंतिय, पत्थंमछुलयवत्थस्स ॥ २९५ ॥ अर्थः—मूत्र अने शोणित ते लोहीनुं मागध देश प्रसिद्ध मान विशेषरूप आढो थाय, ते आवीरीतेः—समो हाथ धान थकी जखो तेने असइ कहीए, एवी बे असइए एक पसइ थाय, तेवी चार पसइए एक सेइ थायछे, तेवी चार सइए एक कुलव थाय, अने चार कुलवे एक पाथो थायछे, अने चार पाथे आढो थाय, चार आढे द्रोण थाय, इत्यादिक एवो आढो वशानो ते श्रुतना जाण कहेछे, पछंके० एक पाथा प्रमाणे मस्तुलक नाम माथानुं भेजुं जाणवुं, अने एक वळी एम कहेछे के मेद फेफसादिने मस्तुलक कहिये. ॥ २९५ ॥

मूळः—असुइ मलपछ छक्कं, कुलउ कुलउय पित्त सिंभाणं ॥ सुक्कस अद्ध कुलउ, दुठं हीणा हियं होज्जा ॥२९६॥ अर्थः—अशुचि जे मल तेना छ पाथा जाणवा. तथा पित्त अने श्लेष्मनुं प्रत्येके कुलव कुलव जाणवुं, वळी शुक्र जे सातमी धातु तेनो अर्द्धो कुलव जाणवो. इहां आढ प्रस्थादि मान जे कह्युं ते बाल कुमार युवान ते आश्री दोअसईउ इत्यादिक क्रमे पोत पोताने हाथ प्रमाणे जाणवुं. हवे उक्त मान थकी शुक्र शोणितादिक ज्यां उछां अधिकां थाय त्यां ते वातादिके दूषित जाणवां.

हवे स्त्री पुरुषना शरीरने विषे श्रोत्र संख्या कहीने उपसंहार कहेछे. मूळः—एक्कारसइछीए, नवसोयाइं हवंति पुरिसस्स ॥ इयकिं सुइत्तणं अठिमंस मलरुहिर संघाए ॥२९७॥ अर्थः—बे कान, बे आंख, बे नाकना द्वार, एकमुख, बे स्तन, एक पायु एटले गुदस्थान अने उपस्थ ते योनि, ए अग्यार स्त्रीने मनुष्यगति आश्रयी श्रोत संख्या जाणवी; अने तिर्यंचणीमां जे छालीप्रमुख बे थान वाळी होय तेने अग्यार होय, तथा गाय प्रमुख चार थान वाळीने तेर होय, शूकरी प्रमुख आठ थान वाळीने सत्तर श्रोत होय. ए निव्याघाते एक थानवाळी छाळीने दश होय. त्रण थान वळी गायने बार होय. बे स्तन टाळीने नव पुरुषने होय. शेष पूर्वोक्तज जाणवुं. एवो अस्थिके० हाड मांस लोहीनो संघातके० समूहछे जेनेविषे; एवा शरीरने विषे शुं शुचिपणु कहेवाय? अपितु कांइज नही; ए अपवित्रज छे. इति गाथ सप्तदशकार्थ.

अवतरणः—समत्ताइ उत्तम गुणाण लाहंतरंतु उक्कोसं एटले सम्यक्त्वादिक उत्तमगुणांतरनो लाभांतर उत्कृष्टे केटले काले थाय, तेनुं बसोने ओगणपच्चाशमुं द्वार कहेछे. मूळः—सम्मत्तंमिउलद्धे, पलियपुहुत्तेण सावउ होइ ॥ चरणो वसमखयाणं, सायरसंखंतरा हुंति ॥ २९८ ॥ अर्थः—सम्यक्त्व लाध्या पछी पल्योपम पृ

यक्त्वे श्रावक थाय. इहां ए नाव के जेटली कर्मनी स्थिति छतिये सम्यक्त्व लन्य मान थयुं होय,तेवार पछी अप्रतिपत्ति सम्यक्त्वे देवता ने मनुष्यमांहे उत्पत्ति थाय ते कहेछे. यतः–एवंअप्परिवडिए,सम्मत्तेदेव मणुअजम्मेसु॥ अनयरसेढिं वज्जं, एग नवेणंच सवाइं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व सहित नव पल्योपम स्थितिक, देवतामांहे उप न्यो जीव जेटली स्थिति खपावे तेटली वली बीजीकर्मनी स्थिति नवी बांधे; तेमाटे देशविरतिपणु देवतामां न पामे, अने पल्योपम पृथक्त्व लक्षण कर्मनी स्थिति ख पावी छते, देशविरति पामे. अथवा तीव्र शुन परिणामना वशथकी जेणे कर्मनी घणी कर्मनी स्थिति खपावीछे एवा जीवने एक नवनेविषे पण अन्यतर श्रेणीवर्जी शेष सर्व थाय, इहां श्रेणी वर्जी कह्युं ते सिद्धांतने मते एक नवनेविषे बे श्रेणी न था य. कोइ उपशमश्रेणी कोइ क्षपकश्रेणी पडिवजे. ए नावार्थ छे.

हवे चरण शब्दे सर्व विरतिरूप ते देशविरति पाम्या पछी संख्याता सागरोपम पूर्वकर्मस्थितिमांथी क्षय जाय तेवारे सर्वविरतिपणु पामे. एम चारित्र पाम्या पछी संख्याता सागरोपम पूर्वली कर्म स्थितिमांथी क्षय थए छते उपशमश्रेणी करे, तेवारपछी संख्याता सागरोपम कर्मस्थिति खपावे थके क्षपकश्रेणी पडिवजे,ते कारणे कह्युं जे चारित्र, उपशमश्रेणी ने क्षपकश्रेणी ए सर्व प्रत्येके संख्याता संख्याता सागरोपम कर्मस्थिति खपाव्याने आंतरे थाय. ॥ ३७७ ॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः–नलहंतिमाणुसत्तं सत्ताजेणतवुव्वट्टत्ति एटले ज्यांथकी निकल्याथका जीव मनुष्यपणु न लहेके० नपामे तेनुं बसोने पच्चाशमुं द्वार कहेछे. मूलः–सत्तमि महि नेरईया, तेऊवाऊ अणंतरुव्वट्टा ॥ नलहंति माणुसत्तं, तहा असंखाउ आ सवे ॥ ३७७ ॥ अर्थः–सातमी नरकपृथ्वीना नारकी त्यांथकी उद्वर्त्या छतां मनु ष्यपणुं पामे नही, एमज तेऊकाय अने वाउकाय थकी निकल्याछता अनंतर मनु ष्यपणुं न पामे, तेमज असंख्यातावर्षना आउखावाला मनुष्य तथा तिर्यंच जेटला छे ते सर्व अनंतर नवे मनुष्यपणु न पामे. ॥ ३७७ ॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः–पुव्वंग परिमाणंति एटले पूर्वांगना परिमाणनुं बशेने एकावन्नमुं द्वा र कहेछे. मूलः–वरिसाणं लखेहिं, चुलसी संखेहिं होइ पुव्वंगं ॥ एयंचिय एयगुणं, जायइ पुव्वं तयंतु इमं ॥ ४०० ॥ अर्थः–चोराशीलाख वर्षे एक पूर्वांग थाय. तथा एज चोराशीलाखने एज चोराशी लाख गुणा करिये तेवारे एक पूर्व थाय. तयं तुइमंके० ते ए आगलि गाथाए देखाडेछे. ॥ ४०० ॥

अवतरणः–माणं पुव्वस्सत्ति एटले पूर्वना माननुं बशेने बावनमुं द्वार कहेछेः

मूलः–पुव्वस्सउ परिमाणं,सयरं खलुवासकोडि लरकाउ ॥ छप्पन्नं च सहस्सा,बोधव्वा वास कोडीणं ॥ ॥ ४०१ ॥ अर्थः–पूर्वनुं परिमाण खलु इति निश्चे साथे सित्तेरला ख कोम्भी छपन्नहजार कोडी. एटली वर्षनी कोडी जाणवी. ॥ ४०१ ॥ इतिगाथार्थ.

अवतरणः–लवण सिहमाणंति एटले लवणशिखाना परिमाणनुं बशेंने त्रेप नमुं द्वार कहेछे. मूलः– दस जोयणाण सहसा, लवणसिहा चक्कवालउ रुंदा ॥ सोलस सस्हस उच्चा, सहस्समेगं तु उगाढा ॥४०२ ॥ अर्थः–लवणसमुद्रनी शिखा ते लवणसमुद्रनो बे लाख योजन पट पहोलाइए छे, त्यां पंचाणुं हजार योजन जंबु द्वीपनी जगती थकी परहां जइये अने लवणसमुद्रनी जगतिथकी पंचाणु हजार योजन उरहां आवीए. वचमां दशहजार योजन प्रमाण लांबी ए शिखाछे. ते जेम स्फटिकनो पाटो होय, तेम चक्रवालनी परे एटले पइडाने आकारे रुंदके० विस्ता रे छे. अने उंचपणे सोलहजार योजनछे तथा अवगाढके० उंमपणे एकहजार योजन धरतिमांहेछे. ॥४०२॥ इतिगाथार्थ. ॥

अवतरणः–उस्सेहंगुल मायंगुल पमाणंगुल पमाणंति एटले उत्सेधांगुल, आ त्मांगुल ने प्रमाणांगुलना प्रमाणनुं बसोने चोपन्नमुं द्वारकहेछे. मूलः–उस्सेहंगुलमा यं, गुलंच तइयं पमाणनामंच ॥ इयतिन्निअंगुलाइंवा वारिज्जंति समयंमि ॥४०३ ॥ अर्थः–उत्सेध शब्देकरी देवादिकना शरीरनुं उंचपणुं तेनो निर्णय करवासारुं प्र सिद्ध जे अंगुल तेने उत्सेधांगुल कहिये, अथवा उत्सेध शब्दे अणंताणं सुहुम प रमाणुं पोग्गलाणं, समुदय समिइ समागामण एगेववहार परमाणू इत्यादिक क्रमे करी जे उछ्रयके० वृद्धि ते थकी थयोजे अंगुल ते उत्सेधांगुल जाणवुं अने वक्षमाण लक्षणे सहित पुरुषनुं पोतानुं जे अंगुल ते बीजुं आत्मांगुल जाणवुं, त्रीजुं पमाणके० प्रमाणांगुल ते आवीरीतेः–परम प्रकर्षरूप जे प्रमाण प्राप्त अंगुल ते प्रमाणांगुल जाणवुं.ए थकी बीजुं कोइ आंगुल महोटुं नथी अथवा लो कने व्यवहारे राज्यादिकनी स्थिति प्रमाण तेनुं प्ररूपणद्वार प्रमाणभूत आ अवसर्प्पिणी काले श्री आदिदेव भरत चक्रवर्त्ति एवा प्रमाणभूत पुरुष तेनुं जे अंगुल ते प्रमाणांगुल जाणवुं. भरतने, आत्मांगुलने अने प्रमाणांगुलने सरखापणुं जाणवुं. ए रीते त्रणे अंगुल सिद्धांतनेविषे वापरिये. हवे समस्त प्रमाणनी आ दि कहेछे; जेणे अंगुल जाणतां सुलभ थाय, ते रीत आगल कहेछे. ॥ ४०३ ॥

मूलः–सत्थेण सुति रकेणवि, छेत्तुंभत्तुं च जं किरनसक्का ॥ तं परमाणुं सिध्धा, वयंति आइं पमाणाणं॥४०४॥ अर्थः–अत्यंत तीक्ष्ण शस्त्रेकरी पण जे कोइ रीते

छेदाय नही, कटको पण त्रोडीने जूदो करी शकाय नही, नेदाय नही, तेनेमांहे नेदी बीजे पासे कोइ काढी शके नही. एवाने सिद्धपुरुष जे ज्ञानना धणी ते परमाणु कहेछे. ते केहवुं छे समस्त जेटलां प्रमाण छे तेनी आइके० आदि एटले धुरे जाणवुं.

हवे आगल प्रमाणनां विशेष देखाडेछे. मूलः—परमाणू तसरेणू, रहरेणू, अग्गयंचवालस्स॥ लिरकाजूयाय जवो, अठ्ठगुण विवढ्ढिआ कमसो ॥४०५॥ अर्थः—एवा अनंते सूक्ष्म परमाणुए एक बादर परमाणु जाणवुं. तेवा आठ बादर परमाणुए एक त्रसरेणु, आठ त्रसरेणुए एक रथरेणु, आठ रथरेणुए एक वालाग्र, आठ वालाग्रे एक लीख, आठ लिखे एक युका, आठ युकाए एक यव. एम अनुक्रमे आठगुणा परमाणुआ थकी करिये, एटले एम सातवार आठगुणा करतां जेटला बादर परमाणुआ थाय ते कहेछे.

मूलः—वीस परमाणु लरका, सत्ताणउई नवे सहस्साइं ॥ सयमेगं बावन्नं, एगमिउ अंगुले हुंति ॥४०६॥ अर्थः—वीशलाख सत्ताणुहजार, एकशोने बावन, एटला परमाणु एक आंगुलनेविषे होय. अर्थात आठयवे एक उत्सेधांगुल थायछे. ४०६

मूलः—परमाणुं इच्चाइं, कमेण उस्सेह अंगुलं नणिअं॥ जं पुण आयंगुलमेरिसेणतं नासिअं विहिणा ॥ ४०७॥ अर्थः—धुरापरमाणु इत्यादिक अनुक्रमे करी उत्सेधांगुलनु मान श्रीतीर्थंकर देवे कह्युं, अने बीजुं वली जे आत्मांगुल कह्युंछे ते आम थाय. तेज विधि देखाडतो गाथा कहेछे. ॥ ४०७ ॥

मूलः—जे जम्मि जुगे पुरिसा, अठ्ठसयंगुल समूसियाहुंति ॥ तेसिं जं नियमंगुल, मायंगुलमेत्तं होइ ॥४०८॥ अर्थः—जे युगनेविषे जे पुरुष पोताना आंगुले करी एकसोने आठ आंगुल ऊंचो होय ते पुरुषना पोताना अंगुल ते इहां आत्मांगुल थाय.

हवे जे अधिका ओछा थाय तेनी केवीरीते वातछे? ते कहेछे. मूलः—जेपुणएयपमाणा, ऊणा अहियाय तेसिमेयंतु ॥ आयंगुलं नजणइ, किंतुतदा नास मेवत्ति ॥ ४०९ ॥ अर्थः—जेकोइ पुनःके० वली ए प्रमाणथकी ओछुं अथवा अधिकुं होय; तेनुं जे अंगुल ते आत्मांगुल न कहेवाय; किंतु ते आत्मांगुल आजास जाणवुं. इहां व्याकरणमां आजास प्रत्यय कुत्साहने एटले निंदाने अर्थे छे. एतावता ए अंगुल कांइ गणनामांहे न होय. ॥ ४०९ ॥

ए रीते आत्मांगुल कहीने हवे प्रमाणांगुलनुं स्वरूप जणावतो गाथा कहेछे मूलः—उस्सेहंगुलमेगं, हवइपमाणंगुलंसहस्सगुणं ॥ उस्सेहंगुलदुगुणं, वीरस्सायंगुलंनणियं ॥ ४१० ॥ अर्थः—उत्सेधांगुल एक थकी नवइके० होय, प्रमाणांगुल सहस्रगुणो थायछे. ते आवीरीतेः—चउसयगुणं पमाणं एवां वचनथकी चारसे

गुणो विस्तारे थाय, अने अढी गुणो जाडपणे होय. ते चारसे अढी गुणा करिये तेवारे सहस्रगुणंके० हजार गुणु प्रमाणांगुल थाय, अने उत्सेधांगुलथी बमणुं श्री वर्द्धमान स्वामिनुं अंगुल कह्युंछे,ए गाथानो अर्थ मात्र देखाड्यो.इहां उत्सेधांगुल ने प्रमाणांगुलनी वक्तव्यता टीकामां घणीछे, परंतु ग्रंथ वधे माटे जावना मात्र देखा डियेछैये.अढी उत्सेधांगुले जेनु विष्कंज एवा प्रमाणांगुलने विषे त्रण श्रेणि कल्पिए, तेमां पहेली उत्सेधांगुले एक अंगुल विष्कंज, ने चारसे आंगुल दीर्घ एटले लांबी करिये.एवीज बीजी पण पंक्ति एटलाज प्रमाणनी करिये अने त्रीजी श्रेणी दीर्घपणे चारसो अंगुल प्रमाण अने विष्कंजे अर्द्धअंगुल प्रमाण करिये,एना दीर्घपणाथकी बे जाग करी तेने परस्पर मलविये तेवारे एक अंगुल प्रमाण विष्कंज थाय, अने बसें अंगुल दीर्घ एवी त्रीजी श्रेणी थइ.तेवारपछी ए त्रणे राशीने लंबाइ ए मेलवी छता एक हजार उत्सेधांगुले दीर्घपणे थाय अने एक उत्सेधांगुल विष्कंज थाय ए प्रमाणांगुलनी शुद्ध सूची जाणवी. ए सूचि आश्रयी उत्सेधांगुलथकी प्रमाणांगुल हजार गणुं जाणवुं, अने तत्ववृत्ते चारशे गुणुंज थाय ॥ ४१० ॥

मूलः–आयंगुलेण वत्थु, उस्सेहपमाणउमिणसुदेहं ॥नगपुढविविमाणाइं, मिणसुप माणंगुलेणं तु ॥ ४११ ॥ अर्थः–जे आंगुलेकरी जेनुं प्रमाण करायछे ते कहेछे. आ त्मांगुलेकरी वस्तुनुं प्रमाण करायछे. ते वस्तु त्रण प्रकारनीछे. एक खात, बीजी उच्छ्रित एटले उंची करेली अने त्रीजी उजय तेमां खात ते कूप जूमि, गृहना तलावा दिक ते टांका जाणवां. उच्छ्रित ते धवलगृहादिक अनेउजय एटले जूमि अने गृहा दिके युक्त धवलगृहादिक मपायछे अने उत्सेधांगुलेकरी देवादिकोना शरीरनुं माप थायछे, अने नग एटले मेरु इत्यादिक पर्वत अने पृथ्वी तथा देवादिकोनां विमान जे सौधर्मावतंसकादिक आदि शब्द थकी जुवन नरकावासा द्वीप समुद्रादिक ते नुं प्रमाणांगुलेकरी परिमाण थायछे॥ ४११ ॥ इतिगाथा नवकार्थः ॥

अवतरणः–तमसकाय सरूवंति एटले तमस्कायना स्वरूपनुं बसोने पंचावनमुं द्वार कहेछे. मूलः–जंबुद्दीवाउ असंखेज्ज इमा अरुणवर समुद्दाउ ॥ बायालीस सह स्से जगईउजलं विलंघेउ ॥ ४१२ ॥ अर्थः–ए जंबुद्वीपथकी तिरछा असंख्याता द्वीप समुद्र अतिक्रमि जातां त्यां अरुणवर समुद्र छे तेनी जगतीथकी बेताली स हजार योजन अवगाहिये तेणे प्रदेशे अरुणवर समुद्रनां पाणी उपर थकी महा अंधकाररूप अपकायमय तमस्काय निकल्योछे. ॥ ४१२ ॥

मूलः–समसेणीएसत्तरस एकवीसाइजोयणसयाइं ॥ उच्चसिउतमरूवो, वल

यागारोअउक्काउ ॥ ४१३ ॥ अर्थः-ते तमस्काय समश्रेणीये सरखी, नीतने आकारे सत्तरशेने एकवीश योजन प्रमाण उच्चत्वके० विस्तर्यो छे. अंधकाररूप वलयाकारे अपकाय विस्तर्योछे. ॥ ४१३ ॥

मूलः-तिरियं विउरमाणो, आवरयंतो सुरालय चउक्कं ॥ पंचमकप्पे रिट्ठंमि पत्थडे चउदिसिं मिलिउ ॥ ४१४ ॥ अर्थः-ते तमस्काय तिर्छो विस्तरतो अने वली सौधर्मादिक चार देवलोक आवरतो उंचो निकल्यो, ते पांचमा ब्रह्मनामा देवलोकना रिष्ठनामा त्रीजा पाथडासुधी जइ त्यां चारे दिशाए मल्यो आवरी रह्योछे.

हवे ते तमस्काय केवा आकारेछे? ते कहेछे. मूलः-हेठामल्लय मूलट्ठिइ ठिउ उवरि बंभलोयंजा ॥ कुक्कड पंजरगागार संठिउसो तमक्काउ ॥ ४१५ ॥ अर्थः-हेठाके० हेठे मल्लकके० सरावलुं जेवुं थाय.तेने आकारे नीचे सांकडो अने उपर ब्रह्मदेवलोक सुधी कूकडाना पांजराने आकारे रह्योछे, ते तमस्काय एटले तम शब्दे अंधकार, ते संबंधी पुद्गल जे काय कहिये राशि समूह तेने तमस्काय कहिये.

हवे एनो विष्कंभ ने परिधनुं प्रमाण कहेछे.मूलः-दुविहो सेविरकंभो, संखिज्जो अवि तह असंखिज्जो ॥ पढमंमिय विरकंभो, संखेज्जा जोयण सहस्सा ॥४१६॥ परिहिए ते असंखा, बीए विरकंभ परिहि जोएहिं ॥ हुंति असंख सहस्सा, नवरंमि होइ वित्थारो॥ ॥४१७॥ अर्थ-:दुविहोके०बे प्रकारे तेनो विष्कंभ,संख्यातोछे तेमज असंख्यातो पण छे;त्यां पहेलो विष्कंभ ते संख्याता सहस्र योजन प्रमाण छे,अने उपरे यावत् असंख्याता सहस्र योजन प्रमाण छे अने परिहिएके०परिधिए मूलथकी आरंभी सर्वत्र ते संख्याता सहस्र योजन प्रमाण छे.इहां संख्यातपणु ते त्यांसुधी जाणवुं; ज्यांसुधी वलयनेआकारे छे. अने बीजो विष्कंभ अने परिधीनो योग वलयाकारथकी उंचो ए तमस्काय विस्तरेछे. तेवारे नवरंके० केवल असंख्याता सहस्र योजन एनो विस्तार होयछे.

हवे टीकाकार एनुं महत्व आगमार्थवेदीना मुखथकी एवीरीते जणावेछे के, जे देवता त्रण चपटी वगाडतां जेटली वार थाय तेटली वारमां जंबुद्वीपने एकवीश वखत प्रदक्षणा देतो फरे तेवो देवता छ महीने संख्याता योजन विस्तारसुधी जाय, परंतु ते आगल जइ शके नही तो बीजानी शी वात? जेवारे परदेविना सेवणहार अथवा रत्नादिकनी चोरी प्रमुख अपराध करे तेवारे ते देवता बीजा बलवंत देवताथकी बीहीता थका नाशीने त्यां पेशे. ते त्यां गया पछी बीजा देवता त्यां बीकनेलीधे जइ शके नही; केमके त्यां जतां तेने गतिनो विघात थाय ॥ ४१७ ॥ इतिगाथा षट्कार्थ ॥

अवतरणः-अणंत छक्कत्ति एटले छ अनंतानुं वर्णने छपन्नमुं द्वारकहेछे. मूलः

सिद्धा निगोय जीवा, वणस्सई काल पोग्गलाचेव ॥ सव्वमलोगागासं, छप्पेएएं तथा नेया ॥ ४१८ ॥ अर्थः—एकतो सिद्धना जीवो जे पूर्वे अनंते काले अनंता सिद्ध थया अने अनंते आगामिक काले अनंता सिद्ध थशे ते जाणवा. तेमज बीजा निगोदना जीव. ते पण अनंता छे. त्रीजा वनस्पति ते निगोद अने साधारण वनस्पतिकायिक जीवो ते पण अनंताछे. चोथो काल जे छे ते पण अनंति उत्सर्प्पिणी तथा अवसर्प्पिणिरूप थइ गयो अने अनागत काले पण अनंतो थशे. तेमज पांचमा पुद्गल परमाणुआ पण अनंताछे. एम छठुं सर्व अलोकाकास तेपण अनंतुछे. ए छ वानां अनंतां जाणवां. ॥ ४१८ ॥ इतिगाथार्थः

अवतरणः—अष्टंगनिमित्ता एंति एटले आठ प्रकारना निमित्तनुं बशेंने सत्तावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—अंगं सिविणं च सरं, उप्पायं अंतरिक्ख भोमं च ॥ वंजण लक्खणमेवय, अठ्ठपयारंइहनिमित्तं ॥ ४१९ ॥ अर्थः—एक अंग, बीजुं स्वप्न, त्रीजुं स्वर, चोथुं उत्पात, पांचमुं अंतरिक्ष, छठुं भौम, सातमुं व्यंजन, अने आठमुं लक्षण, ए आठ प्रकारनां निमित्त जाणवां. इहां निमित्त जे अतीत अनागत ने वर्त्तमान भाव तेने जाणपणानां कारण तेने निमित्त कहिए. एरीते ए आठे निमित्तनां नाम कह्यां हवे सूत्रकार अंगादिक आठ बोल गाथाये करी वखाणेछे. ॥ ४१९ ॥

मूलः—अंगप्फुरणा एहिं, सुहासुहं जमिह भन्नइ तमंगं ॥ तह सुसिविणयड सिविणएहिं जंसिविण यंतित्तयं ॥ ४२० ॥ अर्थः—अंगने ग्रहणे इहां अंगना अवयव पण लेवा. ते अंगना अवयवने फरकवेकरी शुभाशुभ अतीतादिक विषयिक निमित्त जाणे; ते जाणीने बीजाने कहे के मस्तक फरकेतो पृथ्वीनो लाभ थाय, अने निलाड फरकेतो स्थानकनी प्राप्ति थाय. इत्यादिक शरीरनो जे जे अवयव फरके ते उपर विचारणा करे. ते पुरुषने जमणे पसवाडे अने स्त्रीने डावे पसवाडे फरकेतो भलो कहिये; नही तो मातो कहिये. तो ए पहेलुं अंगनिमित्त जाणवुं. हवे बीजुं स्वप्ननिमित्त ते आवीरीते के, देव, गुरु, भाइ, बेटो, उत्सव, कमलनुं छत्र ए स्वप्नमां देखे तेमज कोट ते गढ, हाथी, वृक्ष, मेघ, पर्वत, प्रासादादिक उपर पोते चडथोछे; एम स्वप्नमां देखे तेमज समुद्रनुं तरवुं, मदिरा, अमृत, दहि, दुधनुं पान स्वप्नमां करे अने चंद्रमा सूर्यनां ग्रहण देखीने जागृत थाय तो एम जाणवुं के, ए स्वप्नने प्रमाणे तुरत मुक्ति थशे. इत्यादिक ए सर्वे स्वप्ने करी कहिये. ए बीजुंस्वप्ननिमित्त कह्युं. ॥ ४२० ॥

हवे त्रीजुं स्वरनिमित्त कहेछे. मूलः—इठ्ठमणिठ्ठं जंसरं, विसेसउ तंसरंति विन्नेयं रुहिरवरिसाइ जम्मिं, जायइ भन्नइ तमुप्पायं ॥ ४२१ ॥ अर्थः—इहां इष्ट ते भलुं

अने अनिष्ट जे मातुं इत्यादि जे स्वरना विशेषथकी जाणिए ते स्वर, एक षड्ज बीजो ऋषभ, त्रीजो गांधार, चोथो मध्यम, पांचमो धैवत, छठो पंचम, सातमो निषाद ए नेदो थकी साते प्रकारे छे. ते सांजली विचारणा करे. जेम षड्जना सांजलवा थकी सुखे निर्वाह थाय. जे कार्य करीए ते विनाश न पामे. गाय प्रमुख चतुःपद मित्र, पुत्र, स्त्री प्रमुखने वल्लन होय. इत्यादिक जाणी करी कहे अथवा जे शकुन जूए छे ते ना स्वर उपर सारु मातुं कहे ते त्रीजुं स्वरनामे निमित्त जाणवुं. हवे चोथुं उत्पातनिमित्त कहेछे. रुधिर शब्दे लोहि वसो आदि शब्द थकी हाम, मांस, मज्जा, धान्य, अंगार प्रमुखनी वृष्टि ज्यां थाय, ते देखी कहेके इहां जय प्राप्त थशे. इत्यादिक बीजापण उत्पात देखीने निमित्त कहे ते चोथुं उत्पातनिमित्त जाणवुं. ॥ ४२१ ॥

मूलः—गहवेयनूअअट्टहासपमुहं जमंतरिक्खं तं ॥ नोमं च नूमिकंपा, इएहिनज्जइ वियारेहिं ॥४२२ ॥ अर्थः—ग्रहनो वेध जेवारे थाय, चंद्रमानुं मांकलुं बृहस्पति प्रमुख नेदें, एमज नूतनुं हास्य अकस्मात् आकाशे कलकलाट शब्द उठे; एमज प्रमुखना ग्रहण थकी गांधर्व नगरादिक देखाय त्यां जो कालोवर्ण देखाय तो दुःकाल थाय, लाल देखाय तो गायने कष्ट थाय, अव्यक्तवर्ण होय तो कटकनो नंग थाय, अने महा स्निग्ध सप्राकार सतोरण उत्तर दिशि आश्री थाय तो गाम तथा राजाने जयकारी थाय. इत्यादिक अंतरीक्ष एटले आकाश ते संबंधी कोइ लक्षण देखीने सारु माठुं कहे ते पांचमुं अंतरीक्षनिमित्त जाणवुं. छठुं नौम ते नूमिकंपादिके करी. ते आवीरीते. नूमिकामांहेथी अत्यंत महोटो शब्द निकले, निर्घात पडे, नूमिकंप थाय. इत्यादिक देखाय त्यां जाणवुंके ते देशना राजा प्रधान सेनापति अने देशने नय थशे. ते छठुं नौमनिमित्त जाणवुं. ॥ ४२२ ॥

मूलः—इह वंजणं मसाई, लंछणपमुहं तु लक्खणं नणियं ॥ सुहअसुहसूयगाइं, अंगाइआइअहावि ॥४२३॥ अर्थः—इहके० आ शास्त्रनेविषे व्यंजन शब्दे मसा प्रमुख ते देखीने एम कहेके एने अमुक स्थानके मसो अथवा तल पड्योछे, माटे अमुक शुनाशुन थशे. तेमज लांछन ते लसण प्रमुख लक्षण कह्युंछे ते आवीरीते. लांछन ते कंकुना पाणी सरखुं दूटीथकी नीचे लक्षण होय तो अथवा मसो होय तो ते घणुज सारु. एवा नाव देखी शास्त्रने प्रमाणे कहे ते व्यंजननामा सातमुं निमित्त अने लक्षण नामा आठमुं निमित्त जाणवुं. इहां व्यंजन ते मसा तिला प्रमुख अने स्वस्तिक प्रमुख ते लक्षण कहिए. एम ए शुनाशुनना करनार अंग आदेदइने आठ प्रकारनां निमित्त होय. ॥ ४२३ ॥

निसीथमां कह्युं छे के जे मानादिक ते लक्षण जाणवुं, अने मसादिकने व्यंजन कहिए अथवा शरीरनी साथे उपन्यां ते लक्षण जाणवां, अने पछी उपजे ते व्यंजन कहिए. तथा वली निसीथमां पुरुष विशेष लक्षणनो विनाग एम कह्योछे. प्राकृत मनुष्यने बत्रीश लक्षण कह्यांछे, बलदेव तथा वासुदेवने एकशोने आठ लक्षण कह्यांछे, चक्रवर्त्तिने तथा तीर्थंकरने एक हजार ने आठ लक्षण कह्यांछे, ते जे हाथ, पग, मुख, नख, नेत्र अने गात्रनेविषे थायछे अने प्रगटपणे देखायछे, ए बाह्य जाणवां अने सत्व स्वनावादिक अभ्यंतर घणां होय. ॥४२३॥इतिगाथा॥

अवतरणः—माणुम्माण पमाणंति एटले मान ने उन्मानना प्रमाणनुं बशेने अठावनमुं द्वार कहेछे. मूलः—जलदोणमद्धनारं, समुहाइसमूसिउच्चजो नवउ ॥ माणुम्माणपमाणं, तिविहं खलु लक्खणं ऐयं ॥४२४॥ अर्थः—जे पुरुषना प्रमाणथकी लगारेक महोटी होय एवी कुंडीमां पाणी नरीने तेमां पुरुषने नाख्योथको जल के० पाणीनुं द्रोण के० मानविशेष ते सवाघडाने द्रोण एवुं कहेवायछे. तो एटलुं पाणी बाहेर निकले अथवा द्रोणे उणी कुंमी मांहे पुरुषने बेसाडीए ते कुंमी पूराये ते पुरुषमानोपेत जाणवुं. ए माननुं मान; अने उन्मान ते आवीरीतेः—

अर्द्धनार जे सार पुजलेकरी नीपन्योछे तेणे कारणे तुलाए चड्यो थको जे अर्द्धनार होय ते पुरुषउन्मानोपेत जाणवुं. हवे ते नारनुं मान इहां आमछे, षट्सर्षपैर्यव स्त्वेको, गुंजैकाच यवैस्त्रिनिः॥ गुंजा द्वयेन वल्लःस्यात् गद्याणोतेच षोडश ॥१॥ पलेच दश गद्याणा, स्तेषांसा र्द्धशतमणः॥मणैर्दशनिरेकाच, घटिका कथिता बुधैः॥२॥ घवैट निर्दशनिस्तानि, रेकोनारः प्रकीर्त्तितः॥तदर्द्धयो तुलेन्मर्त्यः सउन्मानयुतो मतः ॥ ॥ ३ ॥ हवे प्रमाण ते कहेछे. आठपरमाणूए एक तसरेणू इत्यादि क्रमे नीपन्यो जे आंगुल, ते आपणे आंगुले करी जेनुं मुख बार आंगुल होय ते प्रमाणयुक्त मुख कहेवाय. ते आपणा प्रमाणोपेत मुखथकी समूसिउके० उंचपणे नवगुणु जेनु शरीर होय एटले बार नवां आछोत्तरशो. एम एकशो आठ अंगुल प्रमाण होय तेने उत्तम पुरुष जाणवा. अने श्री तीर्थंकरने मस्तके बार अंगुलनुं उष्णीष थाय. तेमाटे नगवंत पोताने अंगुले एकशोने वीश अंगुल होय. एमज मध्यम पुरुष ते छन्नु अंगुल प्रमाण होय, जघन्य पुरुष ते चोराशी अंगुल प्रमाण होय. ए प्रस्तावथकी वात कही. मान उन्मान प्रमाण तेना तिविहंके० त्रण प्रकारे खलु इति निश्चे सहित लक्षण ए जाणवां. इतिगाथार्थ ॥ ४२४ ॥

अवतरणः—अठारस नरकनोआइंति एटले अढार प्रकारना नक्ष्य नोजननुं ब

शेने ओगणसाठमुं द्वार कहेछे. मूलः—सूउदणो जवन्नं, तिन्निय मंसाइ गोरसो जूसो ॥ नरकागुलजावणिया, मूलफला हरियगं माणो ॥४२५॥ अर्थः—एक सूप शब्दे दाल, बीजो उदन शब्दे कूर, त्रीजो जवन्न शब्दे यवनी खीर अने तिन्नियके० त्रण प्रकारनु मांस, ए छ थयां, अने सातमुं गोरस शब्दे दुध तथा दही प्रमुख, तथा जूसादि चार ते आठ नव दश ने अग्यार थया, अने बारमुं हरितअंग, तेरमुं माणो. ४२५

मूलः—होइरसालूय तहा, पाणं पाणीय पाणगं चेव ॥ अठारसमोसागो, निरुवहउ लोइउ पिंमो ॥४२६॥ अर्थः—चउदमुं रसालुं, तेमज पन्नरमुं, सोलमुं सतरमुं ने अढारमुं ए सूत्रकार सूत्रमांहेज वखाणशे; तेथी नाम इहां लख्यां नथी. निरुपहतके० निर्दोष, लोइयोके० जे निर्विवेकी लोकोछे तेउमां ए प्रसिद्ध पिंमके० आहार जाणवो.

हवे मांसादिक वखाणेछे. मूलः—जल थल खयहरमंसाइ तिन्निजूसो उजीर याइ छुउ ॥ मुग्गरसोजरकाणिय, खंमीखज्जयपमुरकाणि ॥४२७॥ अर्थः—जलचर ते माछलां प्रमुख, अने थलचर ते हरणादिक, खेचर ते तेतर प्रमुख. ए त्रण जातनां मांस अने जूशब्दे जीरुं प्रमुख कटुकद्रव्य, तेणे करी सहित. मगनो रस ते जूष जाणवुं. अने नरकाणिके० नद्ध ते खाजादिक दहीथरां प्रमुख, जे उपर पांत खांमनी देखाय ते जाणवी. ॥ ४२७ ॥

मूलः—गुलजावणिया गुलपप्पलडीउ गुलहाणियाउवा नणिया ॥ मूल फलंएक्कपर्य, हरिय मिह जीरयाईयं ॥ ४२८ ॥ अर्थः—गुलजावणी शब्दे जे पूर्वदेशने विषे प्रधान गोलेकरी नीपनी एवी गोलपापडी, अथवा गोले मिश्रपणे कीधी जे धाणी ते गोलधाणी जाणवी. वली मूल अने फलनो एकज नेद ए अग्यारमो जाणवो. तेमां मूल शब्दे अश्वगंधा प्रमुख, फल ते आंबा प्रमुख, तथा हरित शब्दे इहां जीरादिकनां पान तेणे करी नीपजाव्युं ते जीरकादिक. आदि शब्द थकी एवा बीजा पदार्थो पणलेवा

मूलः—माउवत्थुल राईण, नज्जियाहिंगु जीरयाइ छुआ ॥ सायर साजू जामज्जियत्ति तल्लरकणं चेयं ॥४२९॥ अर्थः—माक शब्दे, मांना, वस्तुल राजिकाके० राजगरा प्रमुखनी नाजीते हींग अने जीरा प्रमुखे करीने जे नलीपरे संस्कारी होय, साके० ते नाजी रसाला कहिए; अने लोकनेविषे मार्जिता एवी प्रसिद्धछे. तेनुं लक्षण आगल देखाडेछे.

मूलः—दो घयपला महुपलं, दहिय स्सद्धाढयं मिरिय वीसा ॥ दसखंम गुलपलाइं, एसरसालू निवइ जोगो ॥ ४३० ॥ अर्थः—बे पल घृतना, मधनुं एक पल, दहीनुं अर्द्धो आढो, वीश मरी वाटेली, दश खांम अथवा गोलनां पल जाणवां. एटला पदार्थो मलेथके रसालु कहेवायछे, पण ते केवो होय ? निवइके० नृपति

एटले राजा तेने योग्य. एना उपलक्षणथकी मोहोटा ईश्वरने पण उचित होय.

मूलः—पाणंसुराइयं, पाणियं जलं पाणगं पुणोइब्ब ॥ दक्का वाणिय पमुहं, सागो सोतक्क सिद्धंजं ॥४३१॥ अर्थः—पान ते सुरा मदिरा आदे देइने बीजा पण सर्व मद जाणवा. पानक ते इहां द्राखवाणी, साकरनां पाणी, एलची वासित गाढा सुरभि सीतल, कपुरवासित एवा स्वादवंत जाणवां. अने सागोके० शाक, सालणो ते जे तक्रके० छासथी नीपन्यां वडां प्रमुख जाणवां. ॥४३१॥ इतिगाथा सप्तकार्थः ॥

अवतरणः—छठाणवुड्डिहाणत्ति एटले छ स्थानकनी वृद्धि तथा हाणीनुं बशें ने सातमुं द्वार कहेछे. मूलः—वुड्डी वा हाणीवा, अणंत असंख संख भागेहिं ॥ व त्थूणसंख असंख अणंतगुणणेण यविहेया ॥४३२॥ अर्थः—वृद्धि अथवा हाणि ते षट् स्थानकमांहे त्रण स्थानक भागाकारे वृद्धि अने हानी होय, तथा त्रण स्थानक गुणा कारे वृद्धि अने हानी होय. अणंतके० त्यांपहेला भागाकारे एम छे के अनंतभाग वृद्धि, असंख्यातभागवृद्धि, संख्यातभागवृद्धि. अने गुणाकारे पण वस्तुनुं एम. संख्यातगुणवृद्धि, असंख्यातगुणवृद्धि, अनंतगुणवृद्धि. जेम वृद्धि तेम हानी पण केहेवी. इहां सर्वोत्कृष्ट देशविरतीनी विशुद्धि स्थानकथकी सर्व जघन्य सर्व विरतिनुं विशुद्धिनुं पहेलुं स्थानक अनंत गुणे अधिक जाणवुं. एम अनंतगुणे वृद्धि करवी एनुं विस्तरार्थ कर्म प्रकृति प्रमुख ग्रंथना पटथकी जाणवुं. इतिगाथार्थ ॥ ४३२ ॥

अवतरणः—अवहरिउंजाइ नेवतीरंतित्ति एटले जेने कोइ अपहरि न शके तेनुं बशेंने एकशछमुं द्वार कहेछे. मूलः—समणी मवगयवेयं, परिहार पुलाय मप्पमत्तं च ॥ चउदसपूविं आहारगंच नकयाइ संहरइ ॥ ४३३ ॥ अर्थः—एक साध्वीउ जे निरतिचार चारित्रनी धरनारीउ होय ते, बीजो अपगतवेद, एटले जेणे वेद खपाव्यो होय एवा केवली; त्रीजा परिहारविशुद्धि चारित्रना धरनार, चोथा पुलाकलब्धी ना धणी, पांचमा अप्रमत्त संयतगुणठाणानेविषे जे वर्त्तता होय ते, छठा संपूर्ण चउदपूर्वना जाण, अनेसातमा आहारक शरीरना धरनार. ए सातने कोइ संहरेनही.

अवतरणः—अंतरदीवत्ति एटले अंतर द्वीपनी वक्तव्यतानुं बशेने बाशठमुं द्वा र कहेछे. मूलः—चुल्लहिमवंत पुवा, वरेण विदिसासु सायरं तिसए ॥ गंतूणं तर दीवा, तिन्निसए हुंति विछिन्ना ॥ ४३४ ॥ अर्थः—महा हिमवंत पर्वतनी अपेक्षाए न्हानो तेथी चूल जे हिमवंत नाम पर्वत ने अपरे जंबु द्वीपनी जगति अने लवण समुद्रना पाणीनो ज्यां स्पर्श थायछे; तेपाणीनां स्पर्शथकी विदिशिए त्रणशे यो

जन समुद्रमां जइए, ज्यां बे बे गजदंताने आकारे दाढ निकलीछे, ते उपर चार अंतरद्वीप त्रणशे योजनने विस्तारेछे. ॥ ४३४ ॥

द्वीपनी परिधीनुं प्रमाण अने नाम कहेछे. मूलः—अउणावन्ननवसए, किंचूणे परिहि तेसिमे नामा॥एगो रुअ आनासिअ,वेसाणी चेवनंगूली॥४३५॥ अर्थः—नवशें उंगणपच्चाश योजन कांइक मांठेरा एटली परिधीनुं प्रमाण छे. अने तेसिके० तेनां नाम आवीरीतेछे. एक रुचक, बीजो आनाषिक. त्रीजो वेषाणिक, चोथो लांगुलिक.

मूलः—एएसिं दीवाणं, परउ चत्तारि जोयणसयाइं॥ उगाहिऊण लवणं, सपडिदी संचउसयेपमाणो ॥ ४३६॥ अर्थः—ए जे पूर्वे चार द्वीप कह्या तेथकी आगल चारशे योजन लवण समुद्र अवगाहिये, त्यारे सपडिदिसंके० तेनीउपरे प्रत्येके पूर्वादि विदिशिनेविषे चारसे योजनने प्रमाण. ॥ ४३६ ॥

मूलः—चत्तारंतरदीवा, हयगयगोकन्नसंकुलीकन्ना ॥ एवं पंचसयाइं,छसयसत्तछन वचेव ॥४३७॥ अर्थः—चार अंतर द्वीपछे तेनां नाम,हयकर्ण, गजकर्ण, गोकर्ण अने संकुलीकर्ण एटले बे चतुष्क थया. हवे त्रीजा आदेदेइ पांच अंतर द्वीपना चतुष्क जगती थकी जेटलो लवणसमुद्र अवगाहि रह्याछे ते कहेछे. एवंके० एमज लवणसमुद्रमां पांचशे योजन जगतीथकी आगल जइये त्यां त्रीजुं चतुष्क जाणवुं, एम छशे योजन जइए त्यां चोथुं चतुष्क छे, अने सातसें योजन अवगाहिये त्यां पांचमुं चतुष्क छे, तथा आठशे योजन अवगाहिये त्यां छठुं चतुष्क छे; अने नवशे योजन अवगाहिये त्यां सातमुं चतुष्क छे. ॥ ४३७ ॥

मूलः—उगाहिऊणलवणं, विरकंनो गाहसरिसया नणिया॥ चउरो चउरो दीवा,इमे हि नामेहि नायवा ॥ ४३८ ॥ आयंसमिंढगमुहा,अयोमुहागोमुहायचउरेए ॥ अस्समुहा हत्थिमुहा,सीहमुहा चेव वग्घमुहा॥४३९॥ अर्थः—अनुक्रमे पांचशें प्रमुख योजन लवणसमुद्र अवगाहीए त्यां विष्कंन, तेनो जेटलो समुद्र अवगाहिये तेटलोज तेनो विस्तार पण जाणवो.एवा चार चार द्वीपो ते एवानामे करी जाणवा. एकआयंस ते आदर्शमुख, बीजो मेंढमुख, त्रीजो अयोमुख, चोथो गोमुख.ए त्रीजा चतुष्कनां चारनाम कह्यां,एटले बार द्वीप थया. तथा एक अश्वमुख,बीजो गजमुख, त्रीजो सिंहमुख चोथो व्याघ्रमुख. ए चोथा चतुष्कनां नाम जाणवां. एटले सोल थया.

मूलः—तत्तोयआसकन्ना, हरिकन्नअकन्नकन्नपावरणा ॥ उक्कमुहामेहमुहा, विज्जुहाविज्जुदंताय ॥४४०॥ तेवार पछी एक अश्वकर्ण, बीजो हरिकर्ण, त्रीजो अकर्ण चोथो कर्णप्रावरण, एवानामे पांचमुं चतुष्कछे एटले वीश थया. तेवार पछी उल्का

मुख, मेघमुख, विद्युन्मुख ने विद्युद्दंत एवानामे छठ्ठुं चतुष्क छे एटले चोवीश थया.
मूलः—घणदंतलठ्ठदंताय गूढदंतायसुद्धदंताय॥वासहरेसिहरंमिय, एवंचिअअठ्ठ वीसावि ॥४४१॥ अर्थः—एक घनदंत, बीजो निगूढदंत, त्रीजो लष्टदंत, चोथो शुद्ध दंत एवे नामे सातमुं चतुष्क जाणवुं एटले अठ्ठावीश थया. जेम एअठ्ठावीश चूल हिमवंते कह्या; एवंके० एमज वर्षधर सिखरिनाम पर्वत तेने विषे पण बीजा अ ठ्ठावीश छे; त्यां पण तेटलुंज लवणसमुद्रनुं अवगाहवुंछे. ॥ ४४१ ॥
इत्यादिक अर्थ सूत्रकार देखाडेछे. मूलः—तिन्नेव हुंति आई, एगुत्तरवढ्ढियाउनवस याउ ॥ उगाहिऊणलवणं, तावइयंचेव विछिन्ना ॥४४२॥ अर्थः—जेम हिमवंतने विषे जगतीथकी त्रणसे योजन लवण समुद्रनुं अवगाहवुं कह्युं; तेम इहांपण ज गतीथकी त्रणशे योजन जइये त्यां त्रणसे योजन प्रमाण द्वीप होय, एम पहेलुं चतुष्क आदेदेइने ज्यांसुधी एकोत्तर वृद्धे चारशे, पांचशे, छशे, सातशे आठशे, नवशे योजनसु धी लवणसमुद्र अवगाहीये त्यांसुधीजाणवुं. अने विस्तार पण तेनो तेटलोज जाणवो. अने जेटलो समुद्र अवगाहिये त्यां तेटलाज शैकडा योजनना द्वीपना चतुष्क जाण वा. ए रीते ए पण एवेज नामे अठ्ठावीश द्वीप थाय. बेहु मली छपन्न अंतर द्वीप थायछे.
हवे एनेविषे जे युगलिया वसेछे तेनी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—संति इमेसुनराव ज्ज रिसहनारायसंहणणजुत्ता ॥ समचउरंससंठाण संठियादेवसमरूवा ॥ ४४३ ॥ अर्थः—एनेविषे जे नरके०.मनुष्य संतिके० छे ते केवाछे? तो के वज्र रुषभनाराच संघयण तेणेकरी सहित छे. वली समचतुरस्र संस्थानेसंस्थिछे, वली देवता समा न रूपना धरनार छेः ॥ ४४३ ॥
मूलः—अठ्ठधणुस्सयदेहा, किंचूणाउ नराणइत्थीउ॥ पलिअअसंखेज्जइभाग आउ आलरकणोवेया ॥ ४४४ ॥ अर्थः—आठशे धनुष्यनुं उंचपणुं जेमना शरीरनुं छे, उ पलक्षण थकी चोशठ पृष्टीकरंमक होय, एकांतरे आहारनो अभिलाष थाय, उगणा एंसी दिवस अपत्यपालना होय. इत्यादि. उक्तंच जोयणवसमंसंतणु, पिठ्ठकरंमाणमे सिचउसठ्ठी ॥ असणंचउत्थंमीउं, गुणसीदिणवच्चपालणया ॥ १ ॥ वली शरीर प्र माण जे पुरुषने कह्युं तेथकी कांइक ओछु स्त्रीने थाय. एनुं जीवितव्य पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण आयुष्यछे.ते समस्त लक्षणेकरी उपेत एटले सहित होय.
मूलः—दसविहकप्पद्दुम पत्तवंछिया तहनतेसु दीवेसु ॥ ससिसूरगहणमंकुण, जू आमसगाइयाहुंति ॥ ४४५ ॥ ॥ अर्थः—दशप्रकारनां पूर्वोक्त जे कल्पद्रुम तेथकी पाम्युंछे वांछित जेणे. वली ते छपन्न अंतर द्वीपनेविषे चंद्रमा अने सूर्यना ग्रहणनो

उत्पातरूप न थाय. तेमज मांकण जू मसा, आदि शब्दथकी मनुष्यने क्लेशना करनार एवा दुष्ट वृश्चिक सर्प्प मांस प्रमुख पण न होय. इतिगाथा द्वादशकार्थ. ॥

अवतरणः—जीवाजीवाणअप्पबहुअंति एटले जीव अने अजीवनुं अल्प बहुत्व ते संबंधी बत्रोने त्रेसठमुं द्वार कहेछे. मूलः—नरनेरइयादेवा, सिद्धा तिरिया कमेण इह हुंति ॥ थोवअसंखअसंखा, अणंतगुणिया अणंतगुणा ॥४४६॥ अर्थः—नर ते सर्वस्तोक. एम पांचे बोल अनुक्रमे कहेवा; एटले नरथकी नारकी असंख्यातगुणा छे, अने नारकीथकी देवता असंख्यातगुणा छे; तथा देवताथकी सिद्ध अनंतगुणा जाणवा. सिद्धथकी तिर्यंच अनंतगुणा जाणवा. ॥ ४४६ ॥

मूलः—नारीनरनेरइया, तिरिछिसुरदेविसिद्धतिरिआय ॥ थोव असंखगुणा चउ, संखगुणाणंतगुण दोन्नि ॥४४७॥ अर्थ.—नारीके० मनुष्यनी स्त्री सर्वस्तोक, ते नारीथकी नर जे मनुष्य ते असंख्यातगुणा,एमां संमूर्छिम मनुष्य पण लेवा. नरथकी नारकी असंख्यातगुणा, नारकीथकी तिर्यंचनी स्त्री असंख्यातगुणी, तिर्यंचनी स्त्रीथकी देवता असंख्यातगुणा, ते देवोथकी देविउ संख्यातगुणीउ बत्रीसगुणीछे माटे. हवे बे अनंतगुणा ते आवीरीते, देविथकी सिद्ध अनंतगुणा, सिद्धथकी तिर्यंच अनंतगुणा.

मूलः—तसतेउपुढविजल,वाउकायअकायवणसइसकाय॥थोवअसंखगुणा हिय, तिन्नि दोणंतु गुण अहिया ॥४४८॥ अर्थः—त्रस कायिक बे इंद्रियादिक थोडाछे तेथकी तेउकाय असंख्यातगुणा छे. हवे त्रण एकबीजाथी विशेषाधिक छे ते कहेछे. तेजकायथी पृथ्वीकाय विशेषाधिक, पृथ्वीकायथकी अपकायिक विशेषाधिक, तेथकी वायुकायिक विशेषाधिक, हवे बीजा अनंतगुणा छे ते देखाडेछे. वायुकायिकथकी अकायिक जे सिद्धते अनंतगुणा जाणवा, सिद्धथकी वनस्पतिकायिक अनंतगुणा ते थकी सकायिक विशेषाधिक छे. ॥ ४४८ ॥

मूलः—पण चउ ति दुअ अणिंदिअ,एगिंदिअ सइंदिया कमा हुंति॥थोवा तिन्नि यअहिया, दोणंतगुणा विसेसहिया ॥४४९॥ अर्थः—पंचेंद्रियादिक ते अनुक्रमे स्तोकादिक होय ते आवीरीते. पंचेंद्रियस्तोक तेथी आगल त्रण अधिक तेमां पंचेंद्रियथकी चउरेंद्रिय अधिक, चउरेंद्रियथकी तेंद्रिय अधिक, तेंद्रियथकी बेंद्रिय अधिक, ते थकी वलीअनेंद्रिय जे सिद्धतेअनंतगुणाछे.अनेंद्रियसिद्धथकीएकेंद्रिय अनंतगुणाछे.केमके वनस्पतिकाय सिद्धथकीअनंतगुणीछे माटे.एथकी सइंद्रिय नवस्थित विशेषाधिक जाणवा. ४४९ एम जीवनुं अल्प बहुत्व कहीने हवे जीव अजीवनुं अल्प बहुत्व कहेछे.

मूलः—जीवा पोग्गल समया, दव्वपएसाय पज्जवाचेव ॥ थोवाणंताणंता, विसेस

अहिआ डुवेणंता ॥ ४५० ॥ अर्थः—प्रथम सर्वथकी जीव थोडा, तेथकी त्रण प्रकारना पुद्गल जे प्रयोगपरिणतिरूप तथा मिश्रपरिणति अने विश्रसापरिणत ए त्रणे जीव द्रव्यथकी अनुक्रमे अनंतगुणे अधिक जाणवा, ते पुद्गलथकी वली कालना समय अनंतगुणा छे. ते समयथकी द्रव्यधर्मास्तिकायादिक ते विशेषाधिक छे. हवे डुवेणंता एटले बे वली अनंता छे ते आवीरीते, द्रव्योथकी द्रव्योना प्रदेश जे निर्विभाग भाग लक्षण, ते अनंतगुणा छे. केमके एक अलोकाकाश द्रव्यना प्रदेश ते सर्व द्रव्योना प्रदेशथकी अनंतगुणाछे. तेथकी सर्व पर्याय अनंतगुणाछे. केमके प्रदेश प्रदेशनेविषे अनंत अगुरुलघुपर्यायनासद्भावथकी जाणवा. इतिगाथापंचकार्थ

अवतरणः—युगप्रधान सूरिसंखत्ति एटले युग प्रधान आचार्यनी संख्यानुं बशोने चोसठमुं द्वार कहेछे. मूलः—जो डुप्पसहोसूरी, होहिंति जुगप्पहाण आयरिया ॥ अज्जसुहम्मप्पभिई, चउरहिआ डुन्निअसहस्सा ॥ ४५१ ॥ अर्थः—आ अवसर्प्पिणिए पांचमा डुषमानामा आराने छेहडे बे हाथ प्रमाण शरीर, चोवीश वर्षनुं आयु अने जेना तपेकरीने घणां कर्मो खप्यांछे तेणेकरीने अणाहाररूप मुक्ति जेने ढूंकडी थइछे, अने मात्र दशवैकालिक सूत्रनो धरनार छतो पण चउद पूर्वधरनी पेरे शक्रने पण पूजनीक एवो समस्त आचार्योंने प्रांते थशे; एवा जे श्री डुप्पसहनामा सूरि ते ज्यांलगे थशे, अने पहेला श्री सुधर्मस्वामि आदेदेइ समस्त प्रवचनना जाण थया, तेने आदेलेइने ए भरत क्षेत्रनेविषे युग प्रधान आचार्य बे हजार ने चारे करी अधिक एटला थशे. एक आचार्य वली एम केहेछेके बे हजार ते चारे करी, रहित करिये एटले एक हजार नवसेंने छन्नु थशे. अने उक्तंच ॥ इत्तंआयरियाणं, पणपन्ना हुंति कोडिलरकाउ ॥ कोडिसहस्से कोडी, सएय तह इत्तिया चेव ॥ १ ॥ एवुं श्री महानिशीथमांहे पंचावन कोडीप्रमुख कह्याछे, ते सामान्य आचार्य आश्री जाणवा. त्यांज वली एम कह्युंछे के एमां केटलाक गुरु श्री तीर्थंकर सरखा गुणगणसहित थशे. ॥ ४५१ ॥ इति गाथार्थ.

अवतरणः—उसप्पिणीअंतिमजिण तित्थपमाणंति एटले उत्सर्प्पिणी काले चरम जिनना तीर्थना प्रमाणनुं बशोने पांसठमुं द्वार कहेछे. मूलः—उस्सप्पिणिअंतिमजिण, तित्थंसिरिरिसहनाणपज्जाया ॥ संखेज्जाजावइया, तावयमाणं धुवं भविही ॥ ४५२ ॥ अर्थः—उत्सर्प्पिणीकालनेविषे अंतिमजिण श्रीभद्रकृत तेनो तीर्थ ते श्रीऋषभ देव पहेलो तीर्थनाथ समजवो. तेनो ज्ञानपर्याय एक हजारवर्षे उणो पूर्वलाख एवा ज्ञानपर्याय ते जेटला संख्याता थाय, तेप्रमाण उत्सर्प्पिणीकाले चोवीशमो श्री भद्रकृत

एवेनामे तीर्थंकर थशे तेनो तीर्थ तेटलेज प्रमाणे संख्यात पूर्व लक्षरूप ध्रुवके० निश्चेथी थशे ॥ ४५१ ॥ इति गाथार्थ.

अवतरणः—देवाणप्पवियारोत्ति एटले देवोने मैथुनना स्वरूपनुं बशेने बासठमुं द्वार कहेछे. मूलः—दोकायप्पवियारो,कप्पाफरिसेणदोनिदोरूवे ॥ सद्देदो चउरमणे नत्थि वियारो उवरि अत्थि ॥४५३॥ अर्थः—सौधर्म ने ईशानरूप बे देवलोक तिहां कायायेकरीने देवताने मैथुननी सेवाछे; तथा सनत्कुमार ने माहेंद्र नामा बे देव लोकनेविषे कामाभिलाष उत्पन्न थयाथी देवांगनानी साथे स्पर्श करेछे; एम ब्रह्म अने लांतक नामा बे देवलोकनेविषे देवांगनानुं रूप देखवाथकीज कामाभिलाष पूरण थायछे. अने शुक्र तथा सहस्रारवासी देवताउने देवांगनाना शब्द सांभलवाथीज मैथुननी इच्छा पूरण थायछे. अने आनंत, प्राणत, आरण्य ने अच्युत लक्षण ए चारे देवलोकनेविषे रहेनारा देवो मात्र मने करीनेज विषय सेवा करे; पण त्यां स्त्रीनो विचारके० गमन ते त्यां संभवे नही. ॥ ४५३ ॥

हवे ग्रैवेयकादिकनी वात कहेछे. मूलः—गेविज्जणुत्तरेसुं,अप्पवियारा हवंति सव्व सुरा ॥ सप्पवियारठिईणं, अणंतगुणसोरकसंजुत्ता ॥ ४५४ ॥ अर्थः—ग्रैवेयक अने अनुत्तरविमानवासी देवोनेविषे अप्रविचार मैथुनरहित सर्व सुरके० देवता छे, ते सप्रविहार स्थिति कामसहित स्थितिना धरणहार जे समस्त देवोछे ते देवो तथा देवी थकी ए देवता अनंतगुण अधिक जे सुख, तेणे करी संयुक्त होय छे. इतिगाथा र्थार्थ

अवतरणः—कण्हराइण सरूवंति एटले कृष्णराजीना स्वरूपनुं बशेने सडसठमुं द्वार कहेछे. मूलः—पंचमकप्पेरिट्ठंमि पत्थडेअट्ठकण्हराईउ ॥ समचउरंसरकाडिय ठिईउ दोदो दिसि चउक्के ॥४५५॥ अर्थः—कृष्ण शब्दे सचित्त अचित्त पृथ्वी परिणामरूप राजीकाके० शाश्वत आकारे रही जे पंक्ति तेने कृष्णराजी कहिये. ते पांचमा देवलोकनेविषे अरिष्टनामे त्रीजो पाथडो तेने विषे पूर्वोक्त शब्दार्थ एवी आठ कृष्णराजीछे; परंतु समचउरंस आषाढाने आकारे स्थितिके० रहेलुंछे जेहनुं, एवी दोदोके० प्रत्येके चार दिशिने विषे बे बे कृष्णराजी रहीछे. ॥ ४५५ ॥

मूलः—पुव्वावरउत्तरदाहिणाहिं मज्झिल्लयाहिपुट्ठाउ ॥ दाहिणउत्तरपुव्वा, अवरा उ वहि कण्हराईउ ॥४५६॥ अर्थः—पूर्वदिशि अने अपरके०बीजी पश्चिमदिशिए जे कृष्णराजीछे ते उत्तर अने दक्षिणे आयतके० लांबी जाणवी.एमज उत्तरनी बे कृष्णराजी छे ते पूर्व अने पश्चिमे लांबी अने दक्षिणनी बे कृष्णराजी पण पूर्व पश्चिमने लांबी छे; अने मज्झिल्लयाके० पूर्वदिशिनी मांहेली अने दक्षिणनी बाहिरली ते मांहोमांहे सं

लग्नछे. एमज दक्षिणनी मांहेली अने पश्चिमनी बाहेरली मांहोमांहे संलग्नछे. तथा पश्चिमनी मांहेली अने उत्तरनी बाहिरली माहोमांहे संलग्नछे. तथा उत्तरनी मांहेली ने पूर्वनी बाहेरली मांहोमांहे संलग्नछे. एम सर्व कृष्णराजीउ मांहोमांहे संलग्नछे; ते स्थापनाथकी परीक्षा करवी. पण इहां ते स्थापना करी नथी. ॥ ४५६ ॥

हवे वली एना कुंणाना विभागनुं स्वरूप देखाडेछे. मूलः—पुव्वावरांछलंसा, तंसापुण दाहिणुत्तराबज्झा ॥ अभिंतरचउरंसा, सव्वावियकण्हराईउ ॥ ४५७ ॥ अर्थः—पूर्व दिशिनी अने अपराके० पश्चिम दिशिनी ए बेउ छलंसके० छ हांस होय. तथा दक्षिण ने उत्तरनी कृष्णराजी त्र्यंसपणे बाहेरली अने अभ्यंतर चउरंस छे. तें सर्व पूर्वादिक चारे दिशीनी कृष्णराजी चउरंसछे. ॥ ४५७ ॥

हवे एनुं प्रमाण कहेछे. मूलः—आयामपरिक्खेवेहिं,ताणविअसंखजोयणसहस्सा॥ संखेज्जसहस्सा पुण,विक्खंभे कण्हराईणं ॥ ४५८ ॥ अर्थः—आयाम शब्दे दीर्घपणुं अने परिक्षेप शब्दे परिधि कहिए. तेणेकरी ते कृष्णराजी सर्वस्थानके असंख्यात सहस्र योजन प्रमाणछे. इहां एम केहेवुं जे कोइक देवता त्रण चपटी वगाडतां जेटलो वखत थाय तेटला वखत मांहे ए जंबुद्वीपने फरतो एकवीश वार प्रदक्षणा करे; एवी शक्ति वालो देवता छ महिनासुधी फरे तो पण पार पामे नही; तो अनेरो बीजो शीरीते पार पामे? एटली दीर्घके० लांबी छे. अने संखेज्जके० संख्याता सहस्र योजन पुनःके० वली विष्कंभे एटले विस्तारे पहोलाइए कृष्णराजी थाय.

हवे ईशानादिक विदिशि तथादिशिनेविषे विमाननुं विशेष कहेछे.मूलः—ईसाणदिसाईसुं,एयाणं अंतरेसु अठसुवि ॥ अठविमाणाइ तहा, तम्मज्झेएक्कगविमाणं ॥४५९॥ अर्थः—ईशानकुण आदेदेइ पूर्वादिदिशिने अनुक्रमे चार विदिशिछे,अने चारदिशि एम आठेने विषे आठ विमान छे. तहाके० तेमज आठ विमानोने मध्यभागे एक विमान छे

हवे ते विमानोनां नाम कहेछे. मूलः—अच्चिंतहच्चिमालिं, वइरोयण पंभंकरय चंदाभं ॥ सूराभं सुक्काभं, सुपइठाभंच रिठाभं ॥ ४६० ॥ अर्थः—ईशानकूणे अर्चि नामे विमानछे; अने पूर्वदिशिए अर्चिमाली विमान छे ने अग्निकूणे वैरोचन विमानछे; दक्षिणदिशिए प्रभंकर विमानछे, नैरुतकूणे चंद्राभ विमानछे, पश्चिमदिशिए सूर्याभ विमानछे, वाय्यकूणे शुक्राभ विमानछे, उत्तरदिशिए सुप्रतिष्ठाभनामा विमानछे अने वचमां मध्यनुं नवमुं रिष्टाभनामा विमान छे. ए विमानोनां नाम कह्यां.

हवे ए विमानोनेविषे जे देवता वसेछे तेमनी स्थिति, तेमना भव अने नाम कहेछे. मूलः—अठायरठिईया,वसंतिलोगंतियासुरा तेसु ॥ सत्तठभवभवंन्ना. गिज्जंति

इमेहिंनामेहिं ॥४६१॥ सारस्सय माइच्चा, वन्नी वरुणाय गद्दतोयाय ॥ तुसिआ अ वाबाहा, अग्गिवाचेव रिठाय ॥ ४६२ ॥ अर्थ.—जेमनी आठ सागरोपम आयुष्यनी स्थितिछे एवा लोकांतिक देवो ते विमानोनेविषे वसंतिके० वसेछे. वली सात अ थवा आठभवे संसारनो अंतकरीने जेमने मोक्षे जवुंछे एवा देवो वसेछे तेमनां नाम कहेछे. एक सारस्वत, बीजो, आदित्य, त्रीजो वन्हि, चोथो वरुण, वली पांचमो गर्द तोय, छठो तुषित, सातमो अव्याबाध, आठमो अग्नेय अने नवमो अरिष्ट नामे जाणवो.

हवे ए देवोना परिवारनी संख्या कहेछे. मूलः—पढमजुअलंमि सत्तउ, सया णि बीयंमि चउदससहस्सा ॥ तइए सत्तसहस्सा, नवचेव सयाणि सेसेसु ॥४६३॥ अर्थः—पहेलो सारस्वत ने आदित्यए युगल एटले बन्नेनो एकठो सातसे देवोनो प रिवार जाणवो. एम वन्हि ने वरुण ए बीजा युगलने चउदहजारनो परिवार जाण वो. त्रीजो युगल जे गर्दतोय अने तुषित एने सात हजारनो परिवार जाणवो. अ ने शेष जे त्रण विमान रह्यां, तेमने नवसेनो परिवार छे. ४६३ इतिगाथानवकार्थः॥

अवतरणः—सझायस्सअकरणंति एटले सझाय न करवो अर्थात् असझाइनुं बशेने अडशठमुं द्वार कहेछे. मूलः—संजमघा उप्पा ए सा दिव्वे वुग्गहेय सारीरे ॥ म हियासच्चित्तरउ, वासंमिय संजमे तिविहं ॥४६४॥ अर्थः—इहां प्रथम अस्वाध्यायि कनो शब्दार्थ वखाणेछे; ते आमछे. आ शब्दे मर्यादायेकरी सिद्धांतोक्त न्याये करी अध्याय एटले भणवुं अने सुष्ठु शब्दे भलो जे अध्याय ते स्वाध्याय कहिये. अने ते स्वाध्यायिक ज्यां नथी ते अस्वाध्यायिक कहिये. ते रुधिरधूली प्रमुख, मूल बे प्र कारेछे. तेमां एक आत्मसमुत्थ. अने बीजो परसमुत्थ त्यां आत्मसमुत्थ ते जे सझायनो करनार. तेना शरीरथकी उठके० प्रगटपणे जे थयो ते आत्मसमुत्थ जा णवो; अने पर ते आत्माथी अनेरो तेथकी समुत्थके० उपन्यो ते परसमुत्थ.

त्यां बहु वक्तव्यपणाने लीधे पेहेलो परसमुत्थ पांचप्रकारेदेखाडेछे. एक संयम शब्दे चारित्र तेनो ज्यां घात एटले विनाश थाय ते जाणवो, बीजो उत्पातनेविषे थयो ते उत्पातिक, त्रीजो सादिव्व जे देवतानो प्रयूंजवो, चोथो वुग्गह एटले व्युद्ग्रह शब्दे संग्राम कहिये, पांचमो शरीरथकी नीपन्यो ते शारीर. ए पांच प्रकारना अस्वाध्या यिकनेविषे सझाय करतां यतिने आज्ञाभंगादिक दोष थाय.

हवे ए संयमघातादिक पांचे विवरीने वखाणेछे. तेमां प्रथम संयमघाती अस्वा ध्यायिक ते त्रण प्रकारेछे. तेज देखाडेछे. एक महिका, बीजी सचित्तरज अने त्री जी वर्षा. ए त्रण संयमोपघाती अपस्वाध्यायिकछे. ॥ ४६४ ॥

हवे एज महिकादिक त्रण वखाणवाने अर्थे सूत्रकार गाथा कहेछे. मूलः—महिया उगप्नमासे, सच्चित्तरउय ईसिआयंबे ॥ वासे तिन्निपगारा, बुब्बुय तवज्जफुसिएय ॥४६५॥ अर्थः—प्रथम महियाके० धूहरि ते प्रसिद्धछे. ते क्यां थाय? तोके गप्न मासेके० कार्त्तिकमासथी मांमीने माहा महिनासुधी ए गर्नमासमांहे धूहरि पड ती सघलो समकाले अपकाय नावित करे. बीजो सचित्तरज ते कहिये जे वायरा नी उराडी सूक्ष्म धूल ते सचित्तरज पडतीथकी त्रणदिवस उपरांत समस्त पृथ्वी कायिक नावित करे, ते जेवारे पडे तेवारे दिशिइषत् लगारेक ताम्रके० राती थाय. हवे त्रीजी वर्षा, इहां वास एटले वरसवुं. तेने विषे त्रण प्रकार होय ते कहेछे. एक बुब्बुदके० ज्यां वर्षादपडे ते थकी परपोटा थाय ते वर्षा बुब्बुद कहिये. बीजो मेह वरसे अने परपोटा न थाय एवो जे मेह ते तद्वर्षक कहिये. त्रीजो फुसीआ शब्दे न्हाना न्हाना वर्षादना गंटा ज्यां पडे ते फुसीआ कहिये.

ए त्रण प्रकारनी वृष्टि ठते जेमां जेटलो काल असवाइ होय ते कहेछे. जे वर्षादमां परपोटा थाय तेवो वर्षाद आठ पहोर सुधी निरंतर वरसे तो उपरांत असवाइ थाय. वली एक आचार्य एम कहेछे के त्रण दिवस उपरांत असवाइ थाय छे. अने जेवारे परपोटे रहित वर्षाद वरसे तेवारे पांच दिवस उपरांत असवाइ थायछे. तथा जे वारे फुसीआ पडे तेवारे सात अहोरात्र उपरांत असवाइ जाणवी.

ए संयमोपघातिक जे नेद ते सर्वने इव्यादिक चार प्रकारे परहरवुं कहेछे. मूलः— दवे तंचिअदवं, खेत्ते जहिपडइजच्चिरंकालं ॥ ठाणाइनासनावि, मोत्तुंउस्सास उम्मेसे ॥ ४६६ अर्थः—इव्येतो तेज इव्य जे सचित्तरज वर्षादिकनुं वरसवुं. बीजुं खेत्रे तो जेटला खेत्रनेविषे धूहरी प्रमुख पडे तेटले खेत्रे, त्रीजुं कालथी तो जेटला कालसुधी धूहरी पडे. चोथुं नावे तो एक श्वासोश्वास ने मेषोन्मेषवर्जि शेष अनेरु ठाणाइके० स्थानादिक वर्जे. इहां आदि शब्दथकी गमन आगमन पडिलेहण प्रमुख अने वली नासके० नाषानुं बोलवुं; उपलक्षणथीतो सर्व कायानी चेष्टाने परिहरे, ए निःकारणे वर्जे; परंतु जे ग्लानादि संबंधी कार्य उपजे तो जयणाये करी हाथनी संज्ञाये, आंखनी संज्ञाये, चक्षुनी संज्ञाये, आंगुलीनी संज्ञाये कहे अथवा मुखे वस्त्र आपी बोले, वर्षाकल्प उढीने जाय एटले संयमोपघात असवाइ वखाण्यो.

हवे उत्पातिक वखाणेछे. मूलः—पंसूअमंसरुहिरे, केससिलावुट्ठि तहरउग्घाए॥ मंसरुहिरे अहोरत्तं अवसेसेजच्चिरं सुत्तं ॥ ४६७ ॥ अर्थः—इहां वृष्टि शब्दे पांशु वृष्टि, मांसवृष्टि, एम रुहिरेके० रुधिरवृष्टि, केशवृष्टि, शिलावृष्टि, इहां वृष्टि शब्द सर्वत्र

जोडिये. तेमां प्रथम पांशुवृष्टि ते जे अचित्तरज पडे, तेमज मांसना खंड पडे ते मांसवृष्टि जाणवी. रुहिरके० लोहिना बिंडु पडे ते रुधिरवृष्टि जाणवी. केश निमा ला जे उपरथी पडे ते केशवृष्टि जाणवी. शिला शब्दे पाखाणनी वृष्टि अथवा शिलारूप करा पडे ते शिलावृष्टि जाणवी. तेम रजोद्धात ते ज्यां दिशि रजस्वला सर्वत्र धूंधला अंधकार सरखुं दशे दिशाए थाय. हवे त्यां असवाइ थाय ते कहेछे.

मांस रुधिरनी वृष्टि एक अहोरात्र थाय तो ते थया पछी एक अहोरात्र व र्जिने सज्झाय करिये. अने अवशेषके० बीजी जे पांशुवृष्टि प्रमुख छेते जच्चिरंके० ज्यां लगे ते थाय त्यांलगण नंदिप्रमुख सूत्र गुणिये नही. शेष समस्त क्रिया करिये.

सांप्रत पांशु ने रउग्घाय ए बे पद वखाणतो छतो तेनेविषे अस्वाध्यायिपणु पण कहेछे. मूलः—पंसूअच्चित्तरउ, रयस्सलाउ दिसा रउग्घाउ ॥ तच्छसवाएनिव्वाय ए यसुत्तं परिहरंति ॥४६८॥ अर्थः—पांशु शब्दे धूमाडा सरखी लगारेक धोली ते पांशु अचित्तरज कहिए. अने रउग्घायके० रजस्वला तेने कहिये के ज्यां सर्व दिशिउने विषे समस्त प्रकारे अंधकार देखाय तेने रजोग्घात कहिये. तच्छके० त्यां हवे सवात एटले वायरे सहित अथवा निर्वात एटले वायरे रहित तो पण ज्यां लगी ते रज पडे त्यां सुधी सूत्र परिहरे एटले सिद्धांतनो सज्झाय करे नही. एटले उत्पातिक द्वार वखाण्युं. ॥ ४६८ ॥

हवे सादिव्व ए वखाणेछे. मूलः—गंधव्वदिसाविज्जुक्कुग गज्जिएजूवजक्खआलित्ते ॥ एक्केक्कपोरसिंगज्जियंतुदोपोरसीहणइ ॥ ४६९ ॥ अर्थः—गंधर्वनगर ते संध्यासमय नेविषे चक्रवर्त्ति प्रमुखना नगरने उपरे उत्पातनो करणहार नगर अट्टाल प्राका रादिक रच्युं देखाय ते गंधर्व कहिये. बीजुं दिशा शब्दे दिग्दाह ए आगल वखाणशे. तेमज अकाले वीजली तथा उल्कापात अने प्रकाश सहित आकाशनेविषे रेखा दे खाय; वली गज्जिए ते मेघनी गर्जनानीपरे अव्यक्त ध्वनि थाय ते जाणवी. अने जूवए आगल कहेशे. तथा जक्खआलि ते जे एक दिशिये वचाले वचाले वीजली ना झबुका सरखो प्रकाश देखाय ए गंधर्व नगर आदेदेइ जे कह्या तेमां ए क एक पहोरसुधी सज्झा करिये नही. अने गर्जितमां बे पहोर हणे. इहां ए विशेष छे जे गंधर्वनगर ते देवकृतज थाय अने शेष दिग्दाह प्रमुखजे छे तेनी भजना जाणवी एटले कोइकवारे देवकृतज थाय, अने कोइवारे स्वभावेज थाय, तेमां जे स्वभावे थाय त्यां सज्झाय परिहरवो नही पण ए देवकृतजछे एवुं जाणी न श काए ते माटे सज्झाय करिये नही. ॥ ४६९ ॥

हवे दिग्दाह् वखाणियेंछैए. मूलः—दिसिदाहुछिन्नमूलो, उक्कसरेहापगाससंजुत्तो ॥ संझाछेयावरणो, उजूवउसुक्कदिणतिन्नि ॥ ४७० ॥ अर्थः— पूर्वादिक एक दिशिने विषे छिन्नमूलके० नीचो न होय अने उंचो बलता नगरनीपरे प्रकाश देखाय ते दिग्दाह् कहियें. अने उल्कापात ते कहीए ज्यां रेखा एटलेलीटी प्रकाशेकरीसहित जेम ताराउ पडते देखाय. हवे जूहुउ वखाणेछे. संझाछेयावरणोके० संध्याने छेदनुं आवरण ते चंद्रमाछे ते आवीरीतेः—सांझ समये संध्या कहियें तेना विजागनो छेद जेणे करियें ते काल कहियें. तेहनो आवरणहार चंद्रमा ते चांदरणा पखवाडामां ज्यांसुधी चंद्रमा रहे त्यांसुधी जाणवुं. एटले बीज त्रीज चोथ त्यांसुधी जुहुउ कहियें. इहां संध्याछेदने अणजाणवे करी कालवेलानुं जाणपणु न होय तेथी ते दिवसनी संध्याए प्रादोषिककाल कल्पे नहीं, सूत्रपौरसी करियें नहीं.

हवे जेम ए देवकृतछे तेम बीजा पण देवकृत देखाडेछे. मूलः—चंदिम, सूर, वरागे, निग्घाए गुंजिए अहोरत्तं ॥ संझाचउपाडिवए, जंजहिसुगिम्हए नियमा ॥ ॥ ४७१ ॥ चंदिमके० चंद्रमानुं अने सूरके० सूर्यनुं उपरागके० ग्रहण ते जे दिवसे थइने निवर्त्युं एटलुं बाहेर थकी लहियें. वली अभ्रे सहित अथवा अभ्रे रहित एवा आकाशनेविषे निर्घात एटले गाज समान ध्वनि निकले अने गुंजित ते पण गाजवुं तेनोज विकार जाणवो. ए बन्ने जेवारे थाय तेवारे ते वेला ए आरंभीने अहोरात्र एटले आठ पहोर सुधी असद्याय ग्रहण करियें तथा निर्घात गाजवानी असद्या कही. हवे चउके० चार संध्या ते सूर्यना अस्त वखते अने उदयनी वखते तथा मध्यरात्रिये अने दिवसना मध्यान्हे ए चार वखते प्रत्येके बे बे घडीसुधी सद्याय करवी नहीं. ए अन्य शासननेविषे पण निषेध्युंछे. यतः संध्याकाले च संप्राप्ते, कर्म्मचत्वारिवर्जयेत् ॥ आहारंमैथुनं निद्रा, स्वाध्यायंच चतुर्थकं ॥ १ ॥ हवे एनुं फल कहेछे. यतः आहाराज्जायतेव्याधि, मैथुनाच कुलक्षयः ॥ दरिद्रताच निद्रायां, स्वाध्यायान्मरणं नवेत् ॥ २ ॥ एरीते अन्यदर्शणीउमां पण सद्यायनो निषेधछे, परंतु बीजी क्रियानो निषेध नथी.

हवे पडिवाए इहां पडवाना ग्रहण थकी पडवाने अंतना चार महामह जणाव्या ते आगली गाथाए कहेशे. हवे जंजहिंके०जे गाम नगरादिकनेविषे अनेरो पण पशुवधादिक उछव थाय तेपण नियमके० निश्चेसुं लहियें. एतावता ज्यां जेटला कालसुधी पशुवधादिक प्रवर्त्ते त्यांलगे त्यां सद्याय करवो नहीं. ॥ ४७१ ॥

हवे चार महामह कहेछे. मूलः—आसाढी इंदमहो, कत्तियसुगिम्हएय बोधव्वे॥

एए महामहा खलु एएसिं जाव पाडिवया ॥४७२॥ अर्थः—आषाढ महीनानी पूर्णिमा, वली इंदमहो शब्दे इंद्रोत्सव ते आसो महीनानी पूर्णिमा अने कार्त्तिकी पूर्णिमा तथा ग्रीष्म शब्दे चैत्रनी पूर्णिमा ए चार पूर्णिमा, ते बोधव्वेके० जाणवी. एनाज चार पडवा तथा महामहोत्सव जेहनेविषे थाय ते महामह समस्तमांहे एअतिशयवंत छे. जे देशमां जे दिवसथकी जेटला काल सुधी महामहोत्सव प्रवर्त्ते, ते देशमां ते दिवसथी आरंभीने तेटला कालसुधी असझाइ जाणवो. यद्यपि समस्त महामह पूर्णिमा लगीज थाय एवी प्रसिद्धिछे, तथापि पडवानेविषे पण उत्सव प्रवर्त्ते, तेथी पडवो पण वर्जीये. ए कारणेज कह्युं के एएसिंजावपाडिवयाके० ए पूर्वोक्त चारना ज्यां लगे पडवा थाय त्यांसुधी जाणवुं. ॥ ४७२ ॥

हवे चंद्र तथा सूर्यनुं ग्रहण आश्रयी जघन्य अने उत्कृष्ट सझायनो विघात काल कहेछे. मूलः—उक्कोसेण डुवालस, चंदोजहन्नेण पोरिसीअठ ॥ सूरो जहन्न बारस, पोरसिउक्कोस दोअठा ॥४७३॥ संगहनिबुड्ड एवं, सूराइजेण हुंति होरत्ता ॥ आयं नंदिणमुक्को, सो बिय दिव सोय राईय ॥४७४॥ अर्थः—उत्कृष्टचंद्रमा बारपहोर हणे अने जघन्ये आठ पहोर हणे ते आवीरीतेः—उगतो चंद्रमा जो राहुए ग्रह्यो उगे तो चार पहोर रात्री अने चार पहोर दिवसना एम आठ पहोर थाय; अने जो चंद्रमा ग्रह्योज आथमे तो चार पहोर दिवसनाअने चार पहोर रात्रिना तथा चार पहोर वली बीजा दिवसना एम बार पहोर थाय. अथवा उत्पाते सघली रात्रिनुं ग्रहण होय अने ग्रह्योज आथम्यो त्यां ग्रहणनी रात्रीना चार पहोर अने अहोरात्र ते वली बीजो दिवश तेना आठ पहोर एम बार पहोर थाय. अथवा वादलाए आकाश छायुं होय तेणे करी जाण्युं नही जे कई वेलाये ग्रहण थयुं? अने ग्रह्यो आथमतो देखी प्रभात समये जाण्युं; तेवारे ते आखीरात्र अने बीजा आठ पहोर थाय. एम पण बार पहोर चंद्रमाने ग्रहण थाय.

हवे सूर्यने ग्रहणे एम जाणवुं ते कहेछे. सूरोजहन्नके० सूर्यने ग्रहणे जघन्ये बार पहोर अने उत्कृष्टे दोअठा एटले सोल पहोर थायछे ते आवीरीते. सूर्य ग्रह्यो थकोज आथम्यो तेवारे चार पहोर रात्रिना अने वली अहोरात्रि बीजो एम मली बार पहोर थाय. हवे सोल पहोर ते आवीरीते, सूर्य राहुए ग्रह्योज उदय पाम्यो अने उत्पातना वशथकी ग्रह्योज आथम्यो, तेवारे बे अहोरात्र असझाय जाणवो ए ग्रह्यो उगे अने ग्रह्यो आथमे तेना ए सोल पहोर देखाड्या.

अन्यथा सूराई जेणहुंतिहोरत्तं एटले सूर्य अने चंद्रमाने अहोरात्रेज होय, तेवारे

दिवसे ग्रहण थयुं अने दिवसेज मूकाणु तेवारे तेटलो दिवस अने आगली सामी रात्रीआवे तेटलीज अहोरात्र चंद्रमानेग्रहणे पण जाणवां.चंद्रमा नउगेतो असझाइ.

अनेरा वली एम कहेछे के आइन्नंतिके० ए आचीर्णछे. दिणमुक्कोके० जे वेला ए ग्रहण थयुं तेवारे मूकाणा पछी ते दिवस ने ते रात्री अने नवो सूर्यउगे त्यारे अहो रात्र पूरण थयो. तथा चंद्रमानेपण एम रात्रेज ग्रह्यो रात्रेज मूकाणो तेवारे ते शेष रात्री वर्जीये. तेमाटेज कह्युं के साव्वियदिवसोयके० तेज दिवस अने रात्रे पण तेज रात्रिये असझाइ थाय. ॥ ४७४ ॥

हवे वुग्गह वखाणेछे. मूलः—वुगाह दंभियमाई, संखोभे दंभिएव कालगए ॥ अणरायएय सभए, जच्चिर नंदोच्चहोरत्तं ॥ ४७५॥ अर्थः—विग्रह ते वढवाड अने दंभी ते गामादिकना धणी ते संग्रामने अर्थे उद्युक्त थयाछे तेनां कटक ज्यांलगे उपशमेनही;आदिशब्द थकी सेनापति प्रमुखने विरोध छे त्यांसुधी असझाइ जाणवी.

एम प्रसिद्धजे बे स्त्रीओ ते पोतामां वढवाड करती होय अथवा मल्लयुद्ध थ तुं होय, वली बे गामना तरुण पुरुषो घणा मल्या छता पाखाण प्रमुखे वढवा ड करेछे, अथवा बाहुए करी ढिंक पाटु अरस परस एक बीजाने मारता वढेछे अथवा होलिए प्रसिद्ध कलह थायछे, ते ज्यांलगे उपशमे नही त्यांलगे असझाइ.

केमके दंभी सेनापत्यादिकने कलहे अनेक कौतिक थाय ते माटे व्यंतर देवो एक ठा थाय ते पोतपोताना पक्ष करे तेवारे सझाय करतां छल नाखे अने लोकने प ण अप्रीति उपजे अने कहे के अमे इहां बीहीता रह्याछये, शुं जाणिये जे कांइ आपदा आवी प्राप्त थशे, ते ए श्रमण कांइ दुःख जाणता नथी. बेठा भणेछे. एवो लोकापवाद थाय एम संक्षोभ विग्रहसंबंधी कह्यो.

हवे दंभी एवकालगएके० दंभीक जे राजा ते कालगत एटले मरण पामे छते अणरायएके० अनेरो राजा ज्यांसुधी नथाय त्यांसुधी प्रजाने महा संक्षोभ होय, संकोच अने चलचित्त थाय, तेथी सझाय करवो नही. वली सभएके० जेवारे म्ले छादिकनो भय थाय तेवारे पण सझाय न करवो.

हवे ए विग्रहादिकनेविषे असझाइनो विधि कहेछे. जच्चिरंके० ज्यांसुधी अनि दोच्चके० अनिर्भयपणु थाय, अस्वस्थपणु होय त्यांसुधी असझाइ जाणवो. अने पछी स्वस्थता थइ छतां पण एक अहोरात्र सझाय न करवो. ॥ ४७५ ॥

हवे संक्षोभ दंभि कालगए. एणे अनेरु पण सूचव्युं छे तेज कहेणहार छ तो गाथा कहेछे. मूलः—तद्दिवसभोइआइ, अंतोसत्तण्हजावसझाउं ॥ अणहस्सय

हविसयं, दिठिविवित्तम्मि सुवंतु ॥४७६॥ अर्थः—जोइय शब्दे गामनो स्वामि मर ण पामे. आदिशब्दथकी आगल जे महत्तरकादिक कहेशे तेनो परिग्रह एजाव जाणवो. सात घरोमांहे जो कोइ कालगत थयो तोते दिवसके० अहोरात्रसुधी असवाइ जाणवो.

वली इहां प्रसंगे अनेरा पण असवाइ कहेछे. अणहस्सके० कोइ अनाथ शो हाथमांहे मरण पामे त्यां साधुने यतना कहेछे. सवातर जे उपाश्रयनो धणी तेने कहे अथवा अनेरो बीजो कोइ तथाविध श्रावक होय तेने वात कहे जे अमने अनाथमृतके सवायनो अंतराय कर्यो छे. ते एम कह्या छतां पण जो ते श्रावक परठवे नही तो बीजी कोइ वस्तिए जतो रहे, अने कदाचित् बीजुं कोइ उपाश्रय न होय तो रात्रे कोइ नदेखे तेचारे ते अनाथ मृतकने वृषभ अन्यत्र परठवे. वली ते कले वर कुतरा सृगालादिके फाडी फाडी चुंथी नाख्यो होय तो ते जोइने समस्त प्रकारे परठवे.एम यत्नकरवे थके अशठ सुध ते सवाय करे तो प्रायश्चित्तनो विजागी न थाय.

हवे तद्दिवसजोइआइ ए गाथामां आदि शब्दथकी जे कह्या हता ते वखाणेछे.

मूलः—मयहर पगए बहु पक्खिएयसत्तघरअंतरमयंमि ॥ निडुक्कत्तियगरिहा, नपढं ति सणीयगंवावि ॥ ४७७ ॥ अर्थ.—महत्तर शब्दे जे गाममांहे प्रधान, प्राकृतके० जे गामनो अधिकारी होय तथा बहुके० घणा जेने स्वजनादिक पक्षछे, ते बहु पाक्षिक जाणवो. तथा च शब्दथकी सवातरे अथवा बीजे कोइ सामान्य आपणी वस्ति आ श्री सात घरमांहे मृतक थयेथके ते दिवस अहोरात्रीसुधी असवाइ थाय. इहां का रण कहेछे. निडुक्कत्ति आए एटले निर्डुःखी एवी गर्हानो संजवछे ते कारणे सवाय क रे नही; अने जो करे तो सणीयगंके० तेम करे जेम कोइ सांजले नही. वली ज्यांसुधी स्त्रीनुं रुदन सांजलिए त्यांसुधी पण सवा वर्जवो कह्योछे. एटले विग्रह द्वार वखाण्यो,

हवे शारीरिकनो अवसर तेना बे जेदछे. एक मनुष्यसंबंधी बीजो तिर्यंचसंबंधी. तेमां तिर्यंचसंबंधी ते वली जलजादिकना जेदथकी त्रण प्रकारेछे. ते वली एक एक द्रव्यादिकना जेद थकी चार चार प्रकारेछे. ते सूत्रनो करनार पोतेज देखाडेछे.

मूलः—तिरिपंचेदियदव्वे, खेत्ते सठिहत्थ पोग्गलाइन्नं ॥ तिकुरुछमहंतेगा, नगरेबाढं तु गामस्स ॥४७८॥ अर्थः—विकलेंद्रियने लोही नथाय, माटे तिर्यंच पंचेंद्रिय तेनो रुधिर प्रमुख पडे तेज द्रव्यथी वर्जवुं अने खेत्रे तो ज्यां पडयो त्यांथी साठ हा थसुधी असवाइ करे. ए खेत्रे अने ज्यां यति रहेछे त्यां तिर्यंचसंबंधि पुजलके० मांस तेणेकरी आकीर्णके० व्याप्त थयोछे. कुतरा प्रमुखे गामो गमे गाममां नाख्युंछे तो ते तिकुरछके० त्रण कुरथ्या ते त्रण नानी शेरी ते ज्यां आंतरो होय ते स्थानके

सझाय करिये. अने महंतेगाके० महंत महोटी शेरी होय तो एकज वर्जवी. प्रवाहे नगरनी शेरी महोटी थाय; केमके ज्यां थइने राजा चतुरंग सेना सहित जाय.

एवी एक शेरीने अंतरे सझाय करवो. अने जो ते गाम सर्वत्र मांसे व्याप्त थयुं होय, अने शेरी त्रण पण न लाने तेवारे गामस्सबाहिंतुके० गामने बाहेर जइ सझाय करे एटले द्रव्य अने खेत्रनी वात कही. ॥ ४७८ ॥

हवे काल अने नावनी वात कहेछे. मूलः–कालेति पोरिसिडव, नावे सुत्तं तु नंदिमाईयं ॥ सोणियमंसं चम्मं, अठीविय अहव चत्तारि ॥ ४७९ ॥ अर्थः– कालथकीतो लोही प्रमुख दीठा थका त्रण पहोर सुधी असझाइ कह्योछे, ए अ ल्प लोही प्रमुखे जाणवुं. अने उंदर प्रमुख बिल्लाडीए मार्यो होय त्यां आठ पहो र असझाइ थायछे. तथा नावथी तो नंदिप्रमुख सूत्र गुणिये नही. एम द्रव्यादि कना नेद थकी चार प्रकारनो असझाइ कह्यो अथवा एम पण चार प्रकारेछे ते देखाडेछे. सोणिय एटले एक शोणित शब्दे लोही, बीजुं मांस त्रीजुं चर्म्म ए प्रसि द्धछे चोथुं अस्थि ते हाम. एवा नेदथकी पण चार प्रकारछे. एटले लोही, मांस चर्म्म ने हाम ए चारे पूर्वोक्त असझाइमां लेवां, मात्र एक लोहीज लेवुं बीजां न लेवां एम समजवुंनही. ॥ ४७९ ॥

हवे विशेष देखाडेछे. मूलः–अंतोबहिंचधोयं, सठीहडाउ पोरिसी तिन्नि ॥ मह काइअहोरत्तं, रत्ते वूढेयसुंद्धतु ॥ ४८० ॥ अर्थः–जे अंतोके० साठहाथमांहे कोइ पण स्थानके मांस धोयुं होय अने धोइने बाहेर नाख्युं पण तेना कोइएक अव यव पड्या होय तो त्रण पहोर सझायनेविषे परहरवा. एम मांस पकवे त्यां पण असझाइछे; पण साठ हाथ थकी बाहेर मांस धोयुं रांध्युं पकव्युं होय तो असझा इ न थाय. हवे आठ पहोर कह्या हता तेनी नावना देखाडियेछैये. महकाइ अहोर त्तं एनो अर्थ प्रथम कह्योछे. इहां एक आचार्य वली एम कहेछे के मार्जारे उंदर लीधो अने फाड्या विनाज तेने मात्र मारीनाखीने अन्य स्थानके लइगयो अथ वा त्यांज गली गयो तो असझाइ न थाय.

अनेरा वली ए वात मनमाने कहेछे के कोणजाणे कांइ फाड्यो अथवा न फा ड्यो लइगयो. एक वली एम कहेछेके, ज्यां मांजारादिक विना पोतानी मेलेज मरण पाम्यो अथवा कोइएके मार्यो परंतु अनिन्न रह्यो; ज्यांसुधी ते नेदाय नही अने तेनुं रुधिरादिक पृथ्वीउपर पडेनही त्यांसुधी असझाइ नहोय एम कहेछे. परंतु ते पक्ष

जलो नथी. केमके सोणियमंसं इत्यादिक चार प्रकारनी असवाइ कही तेथी अभिन्न तोपण कलेवर पडे सवाय करवो नही.

रत्तवूढेयके० ज्यां सात हाथमांहे लोही पड्युं होय ते स्थानक उपर पाणी नो प्रवाह वह्यो होय तेणे करी ते लोही धोवाइ जाय पछी तो त्यां त्रण पहोरमां पण भूमिका शुद्धथई; माटे सवाय करिए. ॥ ४८० ॥

इहां तिर्यंचनी असवाइनो प्रस्तावछे तेथी बीजीपण असवाइ देखाडेछे. मूलः– अंमगमुझियकप्पे, नयभूमि खणंति इयरहा तिन्नी ॥ असवाइयप्पमाणं, मछियपाया जहिंवुड्डे ॥ ४८१ ॥ अर्थः–सात हाथमांहे इंमुं पडे ते इंमुं हजी फुटयुं नथी तो उपाडी परठवीने सवाय करिये. अने ते इंमुं जो पडतांवारज फुटयुं अने तेनुं कलल भूमिकाये पड्युं ने भूमिका खणी नही तो सवाय न करिये. अने इयरहा तिन्निके० अन्यथा प्रकारे भूमि खणी जे लाग्युंहतुं ते दूर कर्युं तो पछी त्रण पहोर सीम असवाइ जाणवो.

हवे कप्पे ए बोल वखाणेछे. कल्पके० वस्त्र ते उपर पड्युं जे इंमुं ते पडतांने फुटी पड्युं. तेनुं कललके० बिंडु ते वस्त्रने लाग्युं ते सात हाथ बाहेरे जइ धोइये तो असवाइ नथाय, अने सात हाथनी मांहेली कोरे धोइये तो असवाइ जाणवो.

इंमाने बिंडुनुं लोही केटलुं पडेतो असवाइ थाय? एवुं प्रमाण कहेछे. मछियके० माखीना पग ज्यां बुडे एटले पण असवाइ जाणवो. ॥ ४८१ ॥

वली असवाइनो भेद देखाडेछे. मूलः–अजराउतिन्निपोरिसि, जराउआणंजरे पडिएतिन्नि ॥ रायपहविंडुपडिए, कप्पेवूढेपुणोनछि ॥ ४८२ ॥ अर्थः–अजरायुके० हाथणी प्रमुख तेने प्रसवे जरा पडे नही त्यां त्रण पहोर असवाइ जाणवो, अने जरायुनी जरा पडी ए पण त्रण पहोरज जाणवा. अने वली जो लागी रहेतो अहो रात्र छेदी पछी त्रण पहोरसुधी असवाइ जाणवो.

रायपहके० राजमार्गनेविषे रक्तनुं बिंडु पडे तो पण सवाय करवो कल्पे छे. इहां कारण एछे जे आवता जता मनुष्यादिक तेने पगेकरी तत्काल उपडीजाय अने इहां भगवंतनी आज्ञाये पण प्रमाण छे तेथी दोष नथी अने राजमार्गविना सात हाथमां बिंडु पडे तो उपर वर्षादिकना योगेकरी धोवाइजाय. अथवा उपलक्षण थकी अग्निनायोगेकरी बले एटले सवायने माटे शुद्ध थाय. एटले तिर्यंचसंबंधी असवाइ वखाण्यो.

हवे मनुष्य संबंधी असवाइ वखाणेछे. मूलः–माणुस्सयं चउद्धा, अछिंमुत्तूण सयमहोरत्ति ॥ परियान्नविवन्ने, सेसे तिय सत्तअठेव ॥ ४८३ ॥ अर्थः–मनुष्य

संबंधी असझाइ ते द्रव्य थकी तो पूर्वोक्त मांस चर्म लोही अने हाडना नेद थकी चार प्रकारेछे. त्यां अढिमोत्तूणके० अस्थि जे हाड ते मूकीने शेष त्रणने खे त्रथकी एकशोहाथ सुधीमां अने काल थकी एक अहोरात्रसीम सझाय करवो नही.

अने जो मनुष्य अथवा तिर्यंच संबंधी असझाइनुं कोइ कारण जो त्यां पड्युं होय ते परियावन्नके० परिणामांतर प्राप्तपणे करीने स्वनावेज विवरणनूत खेरना कांटानी परे वर्णांतरने प्राप्त थयो तो त्यां असझाइ न थाय. अने ए परियावन्नमूकी शेष त्रण दिवस सात दिवस आठ दिवस असझाइछे. ॥ ४८३ ॥

एहज वात सूत्रकार देखाडेछे. मूलः—रत्तुक्कडाउ इत्थी, अठदिणे तेण सत्तसुक्क हिए ॥ तिन्निदिणा नपरेणं, अणुउगंतं महारत्तं ॥ ४८४ ॥ अर्थः—गर्जना आधा नना कालनेविषे जो कदाचित् स्त्री रक्तोत्कट थाय तो ते स्त्रीयें पुत्रिका प्रसवे छते आठदिवस असझाइ जाणवी; पण नवमे दिवसे सझाय करवो अने दारक जे स्त्री ते शुक्रादिकपणे होय ने ते पुत्र प्रसव करे तेवारे त्यां सात दिवस असझाइ जाण वो अने आठमे दिवसे सझाय करिए.

स्त्रीने महीने महीने ऋतुआवे ते संबंधी लोही दीठा पछी त्रण दिवससुधी अ सझाइ जाणवो अने त्रणदिवस उपरांत लोही न रहे तो त्यां असझाइ न थाय. जे कारणे ते अणउगके० ऋतुनुं लोही केवाय नही. किंतु ते महारक्त कहिये. त्रण दिवस जेवुं लोही थाय तेवुं लोही पछी न थाय. ते पोताने स्वनावेज परियाव न्नविवन्न होय ते माटे सझाय कालने न हणे. ॥ ४८४ ॥

हवे प्रथम जे अढिमुत्तूण एटले हाड मूक्युं होय एम कह्युं हतुं तेनी वात कहेछे. मूलः—दंतेदिठिविगिंचण, सेसठीवारिसेववरिसाइं ॥ दड्ढठीसुनचेवइ, कीरइ सझायपरिहारो ॥ ४८५ ॥ अर्थः—दांतदीठे एटले बालकादिकने दांतपडे ते दांत सो हाथथकी बाहेर विगिंचणके० परठववो अथवा दांत पड्यो अने दीठोनही तो ए स्थानक रुडीरीते जोइए तेम जोता थकां दांत लाने नही तो, ए स्थानक शुद्ध छे एवी कल्पनाए करी सझाय करिये. अन्य वली एम कहेछे के तेनो काउसग्ग करीने पछी सझाय करवो. हवे दांत टालीने शेष अस्थिनी वात कहेछे. शेष बी जां हाड शो हाथमां पड्यां थकां त्यां बार वर्षनो असझाइ जाणवो अने ते हाड जो बल्यां होय तो त्यां असझाइ थाय नही. ॥ ४८५ ॥ इति गाथार्थ ॥

अवतरणः—नंदीसर दीवठिइत्ति एटले नंदीश्वर द्वीपनी स्थितिनुं वर्णने उगणो तेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—विरकंनेकोडिसयं, तिसठकोडीउ लरकचुलसीइ ॥ नंदीसरो

पमाणं, गुलेणइयजोयणपमाणं ॥ ४७६ ॥ अर्थः—नंदि शब्दे समृद्धि ते उदार जिनमंदिर उद्यान पुष्करणी पर्वत प्रमुख जे घणा पदार्थ तेना सार्थने अद्भुतप णेकरी ईश्वर तेने नंदीश्वर कहिए. ते नंदीश्वर द्वीप आ जंबुद्वीपथकी आठमो द्वी पछे. ते वलयने आकारेछे. विष्कंभे एनुं प्रमाण एकशो त्रेसठ कोडी चोराशी ला ख योजन एटला योजन प्रमाणांगुले करी एनुं प्रमाण छे. ॥ ४७६ ॥

हवे इहां अंजनगिरि प्रमुखनी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—एयंतोअंजणरयण सामकरपसरपूरिउवंता ॥ बालतमालवणामलि, जुयवघणपम्हलकलियव. ॥४७७॥ अर्थः—एयंके० ए नंदीश्वरद्वीपमांहे जे अंजनगिरि छे ते केवाछे? तो के श्या मवर्णे जे रत्नना विशेष तेनांजे करपसरके० किरणना समुह तेणेकरी पू रिअके० पूर्याछे उपांतके० छेहेडा जेना. वली बालके० नवां एवां जे तमाल ना मा वृक्ष तेना वननी आवलीके० श्रेणी तेणेकरीने सहित. वली घनके० मेघ ते नां पटल तेणे करी कलितके० सहितनीपरे सहितछे. ॥ ४७७ ॥

मूलः—चउरो अंजणगिरिणो, पुव्वाइदिसासु ताणमेक्केके॥चुलसीसहस्सउच्चो, उ गाढोजोयण सहस्सं ॥४७८॥ अर्थः—पूर्वली गाथाए जे विशेषण कह्यां ते विशेष णेकरीने विशेषित एवा चार अंजनगिरि एवे नामे पर्वतछे. ते पूर्वादिक चारदिशि नेविषेछे. ताणंके० ते अंजनपर्वतोनुं एकेकनेविषे प्रमाण चोराशीहजार योजन उंचपणे छे अने अवगाह भूमिकाने विषे एक हजार योजनछे ॥ ४७८ ॥

मूलः—मूलेसहस्सदसगं, विक्कंभेतस्सउवरिसयदसगं ॥ तेसु घणमणिमयाइं, सिद्धाययणा इंचत्तारि ॥४७९॥ अर्थः—मूलमां दश हजार योजन प्रमाण विष्कंभ छे अने तेना उपर दश सय जोजन छे. वली त्यां अंजनगिरिने विषे घणमणिके० घणां नाना प्रकारनां रत्न तेणे करी नीपजाव्याएवा सिद्धायतन चार प्रासाद छे.

हवे ए सिद्धायतननुं प्रमाण कहेछे. मूलः—जोयण सयदीहाइं, बावत्तरि ऊ सियाइ रम्माइं ॥ पन्नास विछडाइं, चउद्दवाराइं सधयाइं ॥ ४८० ॥ अर्थः—ते प्रासाद एकशो योजन दीर्घके० लांबपणे अने बहोत्तेर योजन ऊसियके० उंचपणे वली रम्मके० महा मनोहर अने पन्नासके० पच्चाश योजन विस्तारेछे. वली जेनेविषे चार बारणांछे तथा सधयाइके० ते प्रासादो ध्वजाएकरी सहित छे. ४८०

मूलः—पइदारं मणि तोरण, पेच्छा मंमव चिराय माणाइं ॥ पंचधणुस्सय ते सिअ, अट्ठोत्तर सयजिण जुआइं ॥४८१॥ अर्थः—ते एकेका प्रासादनां चार चार बार णांजे ते एकेकुं बारणुं सोल योजन उंचुछे, अने आठ योजन पहोलुंछे. ते प्रति द्वार एट

ले बारणा बारणाप्रत्ये मणीचंद्रकांत प्रमुख तेनां तोरणछे अने प्रेक्षामंम्प नाटक करवाने अर्थे जे मंम्प तेणेकरी बिराजमान एटले शोजनिक, एवां प्रासाद वली जेनुं पांचसे धनुष्य उंचपणुं देहमाननुंछे, एवा एकशोने आठ जिन तेणेकरी युक्तछे. इहां जिन अने जिनप्रतिमाने नेद समजवो नही. तेमाटेज सूत्रकारे मूल पाठमां जिनयुक्त कह्याछे. ॥ ४ए१ ॥

मूलः—मणिपेढिया महिंदद्य यायपुरकरिणि यायपासेसु ॥ कंकेल्लि सत्तवन्नय, चंपय चुअवन्नजुत्ताउ ॥ ४ए२ ॥ अर्थः— वली ते सिद्धायतन मणिपेढियाके० रत्नमय वेदिका तेणेकरी मांहेलीकोरे सहित छे, अने प्रासाद उपर महाइंद्रध्वजो छे तेणे करी सहित छे. वली पुष्करणी वापि ते पसवाडानेविषे कंकल्लिके०अशोक सप्तपर्ण, सहकारनी जाति,चांपो प्रसिद्धछे, तथा च्यूत ते आंबा तेनां वन तेणेकरी प्रयुक्तके० सहित एवी वापिओछे तेनां नाम कहेछे. ॥ ४ए२॥

मूलः—नंदुत्तरायनंदा, आणंदानंदिवद्धणानामा ॥ पुरकरिणीउ चउरो, पुवंजण चउदिसीसंति ॥ ४ए३ ॥ अर्थ—हवे चारदिशिने विषे चार वापिछे तेमनां नाम कहेछे. पूर्वदिशिये नंदोत्तरानामे वापीछे, तेमज दक्षिणे नंदा, पश्चिमे आनंदा अने उत्तरदिशिए नंदिवर्द्धना. ए चार पुष्करणी ते इहां पूर्वदिशिनो जे अंजनगिरिछे तेनी चारे दिशाए जाणवी. वली ए वापिनुं विशेष कहेछे. ॥ ४ए३ ॥

मूलः—विरकंनायामेहिं, जोयणलरकपमाणजुत्ताउ ॥ दस जोयणू सियाउ, चउदिसि तोरण वणजुयाउ॥ ४ए४ ॥ अर्थः—विष्कंन्ने अने आयामे लाख योजन प्रमाण युक्तछे अने दश योजन उंमपणेछे. चार दिशिए तोरण अने वन तेणेकरी सहितछे.

हवे वापिमांहे दधिमुखछे तेनी वात कहेछे. मूलः— तासिंमझे दहिमुह, मही हरा डुद्ध दहि असियवन्ना ॥ पुरकरिणी कल्लोला, हणणुब्नवफेण पिंमुव ॥ ॥ ४ए५ ॥ अर्थः—ते वापिनीमांहे दधिमुख एवे नामे करी पर्वतछे ते स्फटिकना छे. तेणे कारणेज कहेछे,डुद्ध अने दहीनीपरे सितके०धवले वर्णे छे इहां उपमा देखाडे छे. ए पुष्करणी वापि संबंधी जे पाणीना कल्लोल तेना आहणवा थकी उपन्यां जे फीण तेना पिंमनीपरे. ॥ ४ए५ ॥

मूलः—चउसहि सहस्सुच्चा, दसजोयण सहसविब्नमा सवे ॥ सहस्स महोगगाढा, उवरि अहो पल्लया गारो ॥ ४ए६ ॥ अर्थः—चोसठ हजार योजन उंचा अने दश सहस्र योजन प्रमाण विस्तारे सघला दधिमुख एक हजार योजन पृथ्वीमां

हे उवगाढके० रह्याछे. तथा उपर अने नीचे सरखा, तेणे कारणे पल्लगके०पालो जे धान्य नाखवानुं ठाम विशेष, तेने आकारेछे. ॥ ४९६ ॥

हवे प्रासादनी वक्तव्यता अने रतिकरनी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—अंजणगिरि सिहरेसुय, ते सुविजिण मंदिराइ रुंदाइ ॥ वावीणमंतरालेसु पव्वयडुगं डुगं अच्छि ॥४९७॥ अर्थः—प्रथम कह्या जे अंजनगिरि पर्वतो, तेमना शिखरोनेविषे अने ते सुविके० दधिप्रमुख पर्वतोनेविषे जिणके०श्रीवीतरागनां मंदिरके० प्रासाद ते रुंदके० विस्तीर्ण; ते आम जे. एकशो योजन लांबां अने पच्चाश योजन पहोलां,तथा बहोत्तेर योजन उंचां. वली तेनां चार बारणांछे,ते एकेक बारणुं सोल सोल योजन ऊचुं अने आठ आठ योजन पहोलुं,एनुं घणुं कथन शास्त्रांतरथकीजाणवुं.॥४९७॥

हवे वापि वापिना आंतरानेविषे बे बे पर्वतोछे तेमनां नाम अने स्वरूप कहेछे. मूलः—ते रइकराभिहाणा, विदिसिविआ अठ पउमरायाभा ॥ उवरि छियजिणं दसिणाण घुसिण रस संगपिंगव्व॥ ४९८ ॥ तेरतिकर एवेनामे पर्वतो वापिने आंतरे दिशि विदिशिनेविषे रह्या एकेक दिशि आश्रयी बे बे करतां आठनी संख्या थाय छे. पण ते केवाछे? तोके पद्मरागशब्दे राते वर्णे जे मणी तेनीपरे छे आभाके० कांति जेमनी. इहां उपमा कहेछे. उवरिछिअके० ते रतिकरनामा बत्रीश पर्वतोनी उपर रह्याछे जे शाश्वत जिनेंद्र, तेनुं जे स्नान, तेणेकरी कुंकुम जल तेने संगे करी जाणे गुलाबी रंगना थयाछे. ॥ ४९८ ॥

वली ते केहेवाछे? मूलः—अच्चंतमसिणफासा, अमरेसरविंदविहियआवासा ॥ दसजोयणसहस्सुच्चा, उव्विद्धागाउअसहस्सं ॥ ४९९ ॥ अर्थः—अत्यंत मसृणके० सुकुमालछे स्पर्श जेनो अने अमरेसरके० देवोना ईश्वर एवा जे इंद्र तेने विहितके० कर्युंछे आवासके० रहेवापणु ज्यां, एटले अनेक इंद्र ते देवना समुदाये परवस्याथका त्यां आवी प्रासादनी वंदनाकरी क्रीडा करेछे. तेनुं प्रमाण ते दश हजार योजन उंचा अने एक हजार गाऊ भूमिमांहे उद्विद्ध. ॥ ४९९ ॥

हवे तेनु संस्थान कहेछे. मूलः—झल्लरिसंठाणठिआ, उच्चत्तसमाणविछडासव्वे॥ते सुवि जिणभवणाइं, नेयाइं जहुत्तमाणाइ ॥५००॥ अर्थः—झालरने संस्थाने ठिआके० रह्याछे. ते सर्वेनो विस्तार उंचपणे करी सरखोछे अने तेनेविषे पण श्री वीतरागनां भुवनछे तेनुं यथोक्त जेवुं पूर्वे मान कह्युं तेहज मान इहां पण जाणवुं.

हवे जेम पूर्वदिशिना अंजनगिरिनी वाव्य नंदोत्तरादिक नामे कही, तेम शेष त्रणदिशिना अंजनगिरिनी वापिनां नाम पण कहेनार थको दक्षिणनी चार वा

व्यनां नाम कहेछे. मूलः—दाहिण दिसाइ नहा, विसालवावीअ कुमुयपुरकरणी ॥ तह पुंमरीगणीमणि, तोरणआरामरमणीआ ॥ ५०१ ॥ अर्थः—दक्षिणदिशिए पूर्वे नी बाजुए नंदानामे वाव्यछे, एम अनुक्रमे दक्षिणनी दक्षिणे विसाल नामे वाव्य छे, अने दक्षिणनी पश्चिमे कुमुदानामे वाव्यछे, अने दक्षिणनी उत्तरदिशिए पुंमरिग णी नामे वाव्यछे. परंतु ए समस्त वाव्य मणिमय, तोरण, आराम, वन—तेणे करी रमणीय महामनोहर छे. ॥ ५०१ ॥

पश्चिमदिशिना अंजनगिरिनी वाविनां नाम पूर्वादिक चार दिशिना क्रमे करी देखाडेछे. मूलः—पुरकरिणिनंदिसेणा, तहाअमोहायवाविगोथूना ॥ तहयसुदंसणवावी, पछिमअंजणचउदिसासु ॥ ५०२ ॥ अर्थः—पश्चिमदिशिनो जे अंजनगिरिछे तेनी पूर्वदिशिए नंदिसेना नामे पुष्करणी वाव्यछे, दक्षिणे अमोघानामे वाव्यछे, पश्चिमे गोथूनानामे वाव्यछे तेमज उत्तरदिशिए सुदर्शना नामे वाव्यछे. ए पश्चिमदिशिनो जे अंजनगिरि—तेनी चारेदिशिने विषे वापिउंछे तेमनां नाम कह्यां.॥५०२॥

हवे उत्तरदिशिना अंजनगिरिनी चारेदिशानी वापिनां नामो कहेछे. मूलः—विजयायवेजयंती, जयंतिअपराजिआउवावीउ ॥ उत्तरदिसाइपुवत्त वाविमाणाउबारसवि ॥ ५०३ ॥ अर्थः—पूर्वदिशिए विजयानामे वापिछे, दक्षिणदिशिए वैजयंती, पश्चिम दिशिए जयंती अने उत्तर दिशिए अपराजिता. एरीते उत्तरदिशिनो अंजनगिरि—तेनेविषे ए पूर्वोक्त वापिने प्रमाणे ए सर्वमली बार थइ. ॥ ५०३ ॥

हवे समस्त वापिउंनुं सरखुं विशेषण कहेछे. मूलः—सव्वाउवावीउं, दहिमुहसेलाणठाणनूयाउ अंजणपमुहंगिरिते, रसगंविक्काइचउदिसंपि ॥ ५०४ ॥ अर्थः—सर्व वापिउ ते दधिमुख प्रमुख जे पर्वतो तेमने स्थानकनूत छे. ए एकेक दिशिए एक एक अंजनगिरि, चार चार दधिमुख अने आठ आठ रतिकर मली तेर छे. अंजनपर्वत प्रमुख विक्काइके० वर्त्तेछे; ते सुधां तेर तेर पर्वतो चारेदिशाए छे.॥५०४

हवे सर्व उपसंहार देखाडेछे. मूलः—इय बावन्नगिरीसर, सिहरठिअवीयरायबिंबाण ॥ पूयणकएचउविह, देवनिकाउ समेइसया ॥५०५॥ अर्थः—एम तेरने चार दिशिएकरी चार गुणा करिए तेवारे बावन्न पर्वतो थाय. तेमनां जे शिखर—त्यां स्थिर रह्यांछे जे श्री वीतरागनां बिंब तेनी पूजाने अर्थे नुवनपति प्रमुख चतुर्विध देवनिकायना देवो ते समेइके०आवेछे, सयाके० सदा सर्वदा आवेछे एम जाणवुं.

इहां जीवानिगम दीवसागरपन्नत्ति अने संघयण प्रमुख ग्रंथ साथे अन्यथा पणु देखायछे. ते मतांतर जाणवुं. यडुक्तं ॥ अंजणगिरीसुदोसुं, सोलससुंदहिमुहेसु

लेसेसु ॥ बत्तीसरइकरेसुं, नंदीसरदीवमझंमि ॥ १ ॥ जोयणसयदीहाइं, पन्नासंवि छडाइंसवाइं ॥ बावन्नरूसियाइं, बावन्नोहोंतिजिणजवणा ॥ २ ए बे गाथा शास्त्रोक्त सोपयोग जणी लखीछे. ॥ ५०५ ॥ इति गाथा विंशतिकार्थः

अवतरणः–लद्धीउत्ति एटले अठावीश लब्धीनुं बशेने सीतेरमुं द्वार वखाणेछे मूलः–आमोसहिविप्पोसहि, खेलोसहिजल्लओसहीचेव॥ सव्वोसहि संभिन्ने उही रिउविउलमइलद्धी॥५०६॥ चारणआसीविसकेवलीयगणधारिणोयपुव्वधरा ॥ अरहंत चक्कवट्टी, बलदेवावासुदेवाय॥५०७॥ खीरमहुसप्पिआसव, कोठयबुद्धी पयाणुसारी य ॥ तह बीयबुद्धितेयग, आहारगसीयलेसाय ॥५०८॥ वेउव्विदेहलद्धी, अक्खीणमहाणसीपुलायाय ॥ परिणामतवविसेसं, एमाइ हुंति लद्धीउ ॥ ५०९ ॥ इत्यादिक ए चारे गाथा सुगम छे, नवरं एटलुं विशेष जे, एमाइके० इत्यादिक शब्द थकी अनेरी पण शुज, शुजतर, शुजतम परिणामना विशेष थकी अने तपना प्रजावे करी लब्धीउ थायछे. एनां नाम मात्र गाथाए करी कहीने हवे एनुं स्वरूप वखाणनार छतो

प्रथम पांच लब्धीनुं स्वरूप बे गाथाये करी कहेछे. ॥५०९॥ मूलः–संफरिसणमामोसु, मुत्तपुरीसाणविप्पुसोवावि ॥अन्नेविडित्तिविठा, जासंतिपइतिपासवणं॥५१०॥ एएअन्नेअबहू जेसिं सव्वेवि सुरहिणोवयवा ॥ रोगोवसमसमछा, ते हुंति तउसहिंपत्ता ॥५११॥अर्थः–संस्पर्शना शब्दे करी आमर्ष हाथ प्रमुखनुं स्पर्शवुं तेहज उसह, ते आमर्षौषधि एहज लब्धि जाणवी. इहां लब्धि अने लब्धिवंतने मांहो मांहे जेद जाणवो नही. अने लब्धि शब्द प्रत्येके जोडिए. ए आमर्षौषधि ए संपदा यतिनीछे, एम सर्वत्र जाणवुं. इहां ए जाव छे के ज्यां यतिने हाथने स्पर्शवे करीने अनेक प्रकारना रोग उपशमे. एम मूत्रने पुरीस ते वडीनीति कहिये, तेना विप्पुसोके० अवयव, ते पण रोग हरवाने समर्थ होय, ते वप्पौषधि नामा बीजी लब्धि जाणवी. हवे आगला बे पद ते पांतरछे, तेनो ए अर्थ जे अन्नेके० अनेरा वली एम कहेछे. विडत्तिके० विष्टा कहेछे अने पइत्तिके० प्रश्रवण ते मूत्र कहेछे. एएके० जेम ए बे कह्यां तेम त्रीजी अनेरा पण खेल शब्दे श्लेष्म तेहज छे जेनुं औषध ते त्रीजी खेलौषधि लब्धि जाणवी. चोथी जलशब्दे मल ते दांत, कान, नासिका, नेत्र, जीन तथा शरीरनो मल ते सुरजीयुक्त होइने रोग उपशमावे छे. ए जेनुं औषध ते चोथी जलौषधिलब्धि जाणवी. एमज पांचमी नख केश प्रमुख शरीरना कहेला अणकहेला जे अवयव ते पण जेना उसहके० औषध समानछे, ते पांचमी सर्वौषधि नामा लब्धि जाणवी. एम ते तदौषधि प्राप्त कहिये. वली एनुं ए विशेषछे जे वरसादनुं पाणी तथा जेना अंग

ना संग थकी नदीनुं पाणी पण समस्त रोग हरण करे, तेमज विषेकरी मूर्छागत थयां एवां जे प्राणी तेना अंग ते पण तेना वायरे करी निर्विष थाय, तथा विष संयुक्त अन्न पण तेमना मुखमां पेतुं थकुं विषरहित थाय, वली विषम व्याधिए पीडया एवा जे प्राणी तेवा प्राणी पण जेना वचननें सांभलवे करी अथवा दर्शन एटले देखवे करी व्याधिरहित थइ जाय. ए सर्व सर्वौषधि लब्धिनो प्रभाव जाणवो.

हवे बही लब्धि कहेछे. मूलः—जोसुणइसव्वउंसुण, इसव्वविसए उसव्वसो एहिं ॥ सुणइबहुएविसद्दे ,भिन्नेसंभिन्नसोएसो ॥ ५१२ ॥ अर्थः—बही जेकोइ सर्व इंद्रिए सांभले, सर्व इंद्रिउनो विषय गमेते एक इंद्रिए करी जाणे, सांभले. चक्रवर्त्तिना कटकनो कोलाहल बतां पण शंख भेरी, पणव पट्टहादि एकवा करी वजाव्यां बतां पण ते सर्वना जूदा जूदा शब्द ने जाणे; ए बही संभिन्नश्रोतलब्धि जाणवी. अने सातमी अवधिज्ञानी लब्धि ते मुहूर्त्त द्रव्य विषयिक ज्यां ज्ञान ते अवधिज्ञा नलब्धि सूत्रकारे सुगम अने प्रसिद्धपणाने लीधे कही नथी. ॥ ५१२ ॥

आठमी मनःपर्यवलब्धि कहेछे. मूलः—रिउसामन्नंतम्मत्त गाहिणीरिउमईम णोनाणं ॥ पायं विसेसविमुहं, घडमेत्तं चित्तियं मुणइ ॥५१३॥ अर्थः—अढी आंगुले हीन जे मनुष्यक्षेत्र—तेने विषे रह्या जे संज्ञीपंचेंद्रियजीवो—तेमना मनमां चिंतवे ली वातने सामान्यपणे जाणे ते ऋजुमतिनुं ज्ञान कहिए. पण ते ज्ञान केवुंछे ? तोके पायंके०प्रवाहे विशेषथकी विमुखके०उपरांतुंछे. केमके जेवारे कोइ घडो चिंतवे तेवारे एवुं कहेके एणे घडो चिंतव्योछे;एटलुं जाणे. पण तेना देश कालादिकना कह्या जे विशेष ते नजाणे. एटले आ घट अमुकदेशनो करेलोछे. इत्यादिक विशेष नजाणे.

हवे मनपर्यवना बीजा भेदनी नवमी लब्धि कहेछे. मूलः—वत्थुं वत्थुविसेसण, नाणंतग्गाहिणीमईविउला॥ चिंतअमणुसरइघडं, पसंगउपज्जवलएहिं ॥५१४॥अर्थः— विपुलके० विस्तीर्ण संपूर्ण मनुष्यक्षेत्रमांहे वस्तु जे घटादिक तेनुं विशेष ज्ञान जे दे श कालना प्रमाण संख्यानुं स्वरूप तग्गाहिणीके० तेनी ग्रहण करनार मति, ते विपुलमति कहिये. एनुं ए विशेषछे जे विशुद्धतरपणाये करीने चिंतव्यो जे घट तेने अनुसरे, जाणे अने प्रसंगथकी ते घट संबंधी पर्यायना सइकडा तेणेकरी सहित एटले अमुक घट द्रव्यथकी सोनानो रूपानो अथवा त्राबानो माटीनो, एम काल थकी वसकालादिकनो, क्षेत्रथकी पाटलीपुरादिकनो अनेभाव थकी नवपूराणादिक पर्याय ते सर्व जाणे. एरीते आठमी ऋजुमतिलब्धि अने नवमी विपुलमतिलब्धि

कही अने दशमी चारणलब्धि छे तेनुं स्वरूप प्रथम जंघाचारण ने विद्याचारणना द्वारमां वखाण्युंछे माटे इहां वखाणता नथी. ए दशमी जंघाचारणलब्धि थई.५१४॥

हवे अग्यारमी आसीविष लब्धि कहेछे. मूलः—असीदाढातग्गय, महाविसासीवि साडुविहनेया ॥ ते कम्मजाइनेएण णेगहाचउविहविगप्पा ॥ ५१५ ॥ अर्थः—आसी शब्दे दाढ कहिये, तग्गयके० ते दाढने विषे जेने गतके० रह्युंछे विष ते आसी विष, ते कर्म अने जातिना नेदेकरी बे प्रकारेछे. त्यां पेहु कर्मेकरी ते पंचेंद्रिय, तिर्यंच, मनुष्य अने सहस्रार देवलोकसुधीना देवता तेमने ए तपश्चर्यादिक अनुष्ठाने करीने अथवा अनेरे गुणे करीने आसीविषादिक साध्य क्रिया करे, शापे करी मारे, देवता अपर्याप्तावस्थाये ते लब्धिए सहित होय. केमके पहेला मनुष्यना नवनेविषे आसीविषलब्धिवंत होय, पछी तेना संस्कार लगीने ते लब्धिमंतज कहिए; परंतु पर्याप्तावस्थाए तेने ते लब्धि न कहिए. यद्यपि देवता शापेकरी, बीजानेमारे छे तो पण ते लब्धि न कहेवय. ए तो स्वनावे नवप्रत्येक समर्थाइ समस्त देवोने छेज, परंतु गुणप्रत्येक समर्थाइ थाय ते विशेष जाणवी. तेनेज शास्त्रमां लब्धि कहिये.

हवे बीजो जातिना नेद थकी कहियेछे छैए. ते अनेक प्रकारेछे, पण तेना चउविहंके० चार प्रकारना विकल्प नेद होय ते आवीरीते. एक वृश्चिक, बीजो मेडुर त्रीजो सर्प्प ने चोथुं मनुष्य एना नेदथकी ते बहु,बहुतर,बहुतम अने अतिबहुतम तेनुं वली विशेष आमछे. वीछीनुं विष अर्द्ध नरत खेत्र प्रमाण शरीर व्यापे, बीजुं मेडुरनुं विष संपूर्ण नरतखेत्र प्रमाण व्यापे. सापनुं विष जंबुद्वीप प्रमाण व्यापे अने मनुष्यनुं विष सर्व मनुष्यखेत्रसुधी व्यापे. ए अग्यारमी लब्धी कही॥५१५

हवे बारमी केवलीनी लब्धि, तेरमी गणधरनी लब्धि, चउदमी पूर्वधरनी लब्धि, पन्नरमी अरिहंतनी लब्धि, सोलमी चक्रवर्त्तिनी लब्धि, सत्तरमी बलदेवनी लब्धि, अने अढारमी वासुदेवनी लब्धि. एटली लब्धिउ प्रसिद्धछे.

हवे खीराश्रवादिक लब्धि कहियेछैए. मूलः—खीरमहुसप्पिसाउ, वमाणवयणा तयासवा हुंति ॥ कोठयधन्नसुनिग्गल, सुत्तछाकोछबुद्धीया ॥ ५१६ ॥ अर्थः—खीर शब्दे दूध ते इहां चक्रवर्त्तिनी लाख गायने अर्द्धे अर्द्धे अनुक्रमे जे एक गाय संबंधी दूध ते सर्कराने चतुर्ज्जातक साथे मिश्रित ते जेम जमतां थका मनने अने शरीरने सुख उपजावे,तेम ए खीराश्रवलब्धिवंतनुं वचन पण खीरनीपरे आके०समस्त प्रकारे श्रवे ते खीराश्रवलब्धि कहिए. एमजे मधुके०साकर प्रमुख मधुर द्रव्यनीपरे श्रवे ते मध्वाश्रवलब्धि जाणवी; तथा जे चक्रवर्त्तिनी गाय तेनु घृत तेनीपरे व

चन श्रवे ते सर्पिराश्रव, उपलक्षणथी इक्षुरस जेवुं वचन श्रवे ते इक्षुरसाश्रवः एमज अमृताश्रव एवीरीते जेना शब्दने पूर्वोक्त खीरादिकनी उपमा छे; ते तदाश्रव साधु होय. ए उंगणीशमी लब्धि कही. कोष्ठयके० जेम कोठाने विषे सुनिर्गलके० घणा धान्य नलीपरे थका रहेछे; तेम जेनेविषे सूत्र अने अर्थ परोपदेशादिके अवधार्याछे तेनुं जेने विषे अविसारवेकरी रहेवुंछे ते कोष्ठबुद्धिलब्धि कहिए. ए वीशमी लब्धि जाणवी. ॥ ५१६ ॥

हवे एकवीशमी पदानुसारिणी लब्धि कहेछे. मूलः—जो सुत्तपएणं बहु, सुयमणुधावइपयाणुसारीसो॥जोअत्थपएणत्थं,अणुसरइसबीयबुद्धीउ॥५१७॥ अर्थः—इहां पदानुसारिणीलब्धि त्रण प्रकारेछे, एक अनुश्रोतपदानुसारिणी, बीजी प्रतिश्रोतपदानुसारिणी अने त्रीजी उन्नयपदानुसारिणी. त्यांजे धुरापदनो अर्थ अथवा पद सांनलीने अनेराथकी छेहेला पदने अर्थनी विचारणानेविषे जेमनी महा मह्योटी बुद्धि होयछे ते अनुश्रोतपदानुसारिणीलब्धि कहिये. एमज जे छेलापदना अर्थने सांनलवे करी प्रतिकूलपदे करी धुरलापदसुधी विचारणाए चतुर होयछे ते प्रतिश्रोतपदानुसारिणी लब्धिजाणवी. एमज जे मध्यपद तेविचाले एक पद सांनले पछी पहेलाने छेहेलासुधी सर्व पद पदार्थनुं परिज्ञान जेने थाय ते उन्नयपदानुसारिणीलब्धि कहिये. हवे सूत्रार्थ एमछे जे कोइ सूत्रना एक पदे करी घणा श्रुत प्रत्ये अनुधावे प्रवर्त्ते ते पदानुसारणीनामा एकवीशमी लब्धि जाणवी.

हवे बीजबुद्धि कहेछे. जेम नलो कर्षणी घणीज रुडीरीते कमायली नूमिनेविषे समस्त नूमिना गुण पाणिए सहित एवा खेत्रनेविषे बीज वावे, पछी ते बीज अनेक बीजनुं आपनार थाय, तेम ज्ञानावरणियादिक क्षयोपशमना अतिशयथकी एक अर्थ रूप बीजने सांनलवे करी अनेक अर्थरूपीआ बीजोनो पडिवजणहार थाय; ते बावीशमी बीजबुद्धिनामा लब्धि जाणवी. जेम नगवंतना गणधर ते उत्पाद, व्यय ने ध्रुवलक्षणत्रिपदानुसारी त्रिपदि पामीने द्वादशांगीरूप प्रवचन रचनामां चतुर होयछे; तेम इहां एक पदने जाणपणे अनेरा पदांतरनुं जाणपणु होय ते पदानुसारिणीलब्धि कहेवाय. अने एक पदार्थने जाणपणे अनेक अर्थ जाणे ते बीजबुद्धिलब्धि कहेवाय. एनुंमांहोमांहे एटलुंविशेषछेते कह्युं.

हवे तेजोलेश्यादिक चार लब्धि सुगमपणा थकी सूत्र कारे कही नथी; तो पण एनुं कांइक स्वरूप लखिये छैए. त्यां तेजोलेश्यालब्धि ते क्रोधना अधिकपणाथकी पोताना शत्रुने सुखे बालवाने समर्थ एवी अग्निनी जाल मूकवानी जे श

कि, अनेक योजनने आश्रीत वस्तुविशिष्टने बाले ए षष्ठ तपे करी पारणे वसनख कुल्मासना बाकुलानी एक मुठी अने चळूजर पाणीने लीए तेने ठ महीनामां तेजो लेश्या लब्धि उपजे, ते त्रेवीशमी तेजोलेश्यालब्धि कहिए.

चोवीशमी आहारकलब्धि ते आहारक शरीर करवानी शक्ति, एक हाथ प्रमाण शरीर तीर्थंकरनी रूद्धि देखवासारु चउद पूर्वधर करे ते आहारकलब्धि जाणवी

पच्चीशमी शीतलेश्यालब्धि ते पुण्यना वशथकी जे प्रसादनुं स्थानक ते प्रत्ये शीत एवुंजे तेजनुं विशेष ते तेजोलेश्याने हणवाने अर्थे मूकवानी शक्ति.

ठव्वीशमी वैक्रियलब्धि ते वैक्रिय शरीर करवानी शक्ति, ते अनेकप्रकारेठे. एक अणुत्व, बीजुं महत्व, त्रीजुं लघुत्व, चोथुंगुरुत्व, पांचमी प्राप्ति, ठठी प्रकाम्य, सातमी ईशित्व, आठमी वशित्व, नवमीअप्रतिघातित्व, दशमी अंतरधान, अग्यारमी कामरूपत्वादिकना नेदथकी अनेक प्रकारेठे. तेमां अणुत्व ते न्हानुं शरीर करे जेणेकरी कमलना तंतुउना ठिद्रमांहे प्रवेशकरी त्यां चक्रवर्त्तिनानोग पण नोगवे, एवी शक्ति ते अणुत्वशक्ति कहिए, बीजी मेरुपर्वतथकी पण महोटुं शरीर करवानी समर्थाइ ते महत्व जाणवी. त्रीजी वायुथकी पण अत्यंत न्हाना शरीरनुं करवुं ते लघुत्व जाणवी. चोथी वज्रादिकथकी पण नारी शरीरने करवे करीने इंद्रादिक जे प्रकृष्ट बलवान तेने पण डुस्सह ते गुरुत्व. पांचमी नूमिकाए बेगथकां पण मेरुपर्वतना अग्रने सूर्यना मांमलाने स्पर्शवानी शक्ति ते प्राप्ति जाणवी. ठठी ज्यां पाणीने विषे नूमिकानी परे जे गमनकरवानी शक्ति अने नूमिकाने विषे पाणीनी परे उन्मज्जन निमज्जन करे ते प्राकाम्य जाणवी. सातमी त्रण लोकनुं प्रन्नुतापणु श्रीतीर्थंकर चक्रवर्त्ति इंद्रादिकनी रूद्धिनुं विस्तारवुं ते ईशित्व जाणवी. आठमी समस्त जीवोने वश करवानी जे शक्ति ते वशित्व जाणवी. नवमी पर्वतनेविषे निःसंगपणे जवुं ते अप्रतिघातित्व जाणवी. दशमी पोताना रूपना अदृश्यपणानुं करवुं ते अंतर्धान जाणवी. अग्यारमी समकाले अनेक प्रकारनां रूप करवानी जे समर्थाइ ते कामरूपत्व शक्ति जाणवी. ॥ ५१७ ॥

हवे सत्तावीशमी अखीणमहाणसी लब्धि कहेठे. मूलः—अरकीण महाणसिया, निरकं जेणाणियं पुणो तेण ॥ परिनुत्तंचिय खिज्जइ, बहुएहिंविन उण अन्नेहिं ॥ ५१७ ॥ अर्थः—महान शब्देकरी ज्यां अन्न रांधीए ते रसोडुं तेहने विषे आश्रीतपणाए करीने अन्नने पण महानश कहिए. हवे जेणे अंतराय कर्मना क्षयोपशमथकी थोडुं पण अन्न कोइए निक्षाए करी आप्युं ठता ते पोते जमे तो खू

टीपडे पण अन्य घणा जणो जो ते अन्न जमवा बेसे तोपण खूटे नही ते अखी
णमहाणसिकालब्धि कहिए. ए श्रीगौतमादिकने प्रसिद्धपणे हती.

हवे अठावीशमी पुलाकलब्धि तेणे करी युक्त जे यति होय, ते यति संघ प्र
मुखनुं कार्य उपन्ये थके चक्रवर्त्तिने पण चूर्णकरे ते पुलाकलब्धि कहिए.

एमाईके० इत्यादि ए अठावीश लब्धि कही, अने आदिशब्दथकी मन वचन
अने कायने बलेकरी प्राणीने शुन, शुनतर अने शुनतम परिणामना वशथकी
अने असाधारण तपना प्रनावथकी बीजी पण अनेकप्रकारनी लब्धि थायछे. त्यां
प्रकृष्ट ज्ञानावरण वीर्यांतरायना क्षयोपशमने विशेषे करीने समस्त श्रुत समुद्र
एक अंतरमुहूर्त्तमांहे अवगाहवो, तेनेविषे जेनुं मन होय ते मनोबलीलब्धि कहि
ए. तेमज अंतरमुहूर्त्तमां सर्व श्रुतने उच्चार करवानी जे शक्ति तेणेकरी जे सहित होय,
वली पद वचन अलंकारे सहित वचनने उंचेस्वरे निरंतर बोलतांथकां पण तेनो
घांटो रहीजाय नही ते बीजी वाग्बली लब्धि कहिए. तेमज त्रीजी वीर्यांतरायना
क्षयोपशमथकी प्रगटपणे थयुं जे असमान काय बलेकरीने बाहुबलनी पेरे जे
काउसग्गे रहेतां वर्षाकाले पण श्रमे रहित होय ते त्रीजी कायबली लब्धिजाणवी.
तेमज घणा कर्मना क्षयोपशमथकी प्रगटथयो जे प्रज्ञानो प्रकर्ष तेणेकरी द्वादशां
गी चउदपूर्वादिक श्रुत तेनें नण्याविनाज एटले अणनण्योथको पण जेरीते च
उदपूर्वना धारक मुनिउ अर्थनी प्ररूपणा करे तेनीपरे महा कठिण विचारोनेविषे
पण जेनी अति निपुण प्रज्ञाके० बुद्धि होय, ते प्राज्ञश्रमण कहिए. एकवली
दशपूर्व श्रुत नण्याछे अने रोहणी प्रज्ञप्ति इत्यादिक महाविद्यायेकरी आरीसामां
हे अंगुठिए नींते षड्गमांहे देवोने अवतारी पछी तेने पूछी समस्त कालनो निर्णय
करे. धणी ऋद्धिना अवशवर्त्ती विद्याने वेगना धरणहार ते विद्याधरश्रमण क
हिए. इत्यादि योगशास्त्रांतरनी वृत्तिमांहे आदि शब्दथकी लब्धिना विशेष कह्यां
छे. एटले ए लब्धिउ कही. ॥ ५१८ ॥

हवे नव्यपुरुषने अने स्त्रीने ए पूर्वोक्त लब्धिउ मांहेली जेटली लब्धिउ होय ते
कहेछे. मूलः—नवसिद्धि अपुरिसाणं, एयाउ हुंति नणिय लद्धीउ ॥ नवसिद्धिय
महिलाणवि, जत्तिय जायंति तंवोछं ॥५१९॥ अर्थः—नवके० सिद्धपणु जेने थवानुं
छे ते नवसिद्धिक जाणवा. ते नवसिद्धिक पुरुषोने ए पूर्वोक्त समस्त लब्धिउ होय.

हवे नव सिद्धिक स्त्रीने जेटली लब्धिउ होय तेटली कहेछे. मूलः—अरहंत च
क्कि केसव, बलसंनिन्नेय चारणे पुवा ॥ गणहर पुलाय आहारगं च नहु नविय

महिलाणं ॥ ५२० ॥ अर्थः—एक अरिहंत, बीजी चक्रवर्त्ति, त्रीजी वासुदेव, चोथी बलदेव, पांचमी संभिन्नश्रोता, छठी विद्याचारणादिक, सातमी पूर्वना धरणहार, आठमी गणधर, नवमी पुलाक, दशमी आहारक शरीर करवानी लब्धि. ए दश लब्धि भव्य स्त्रीने नथाय. शेष अढार लब्धि थाय. अने श्रीमल्लिनाथने स्त्रीपणे तीर्थंकरपणुं जेप्राप्त थयुं. ते तो अछेरु जाणवुं. ॥ ५२० ॥

हवे अभव्य पुरुष तथा स्त्रीने जे लब्धि थाय ते बे गाथाए करी कहेछे. मूलः—अभविय पुरिसाणं पुण, दसपुव्विल्लिउकेवलित्तंच ॥ उज्जुमई विउलमई, तेरस एआउ न हु हुंति॥५२१॥ अभविय महिलाणं पुण, एयाउ न हुंति भणीय लद्धीउ॥महुखीरासवलद्धी, विनेय सेसाउ अविरुद्धा॥५२२॥अर्थः—अभव्य पुरुषोने दश तो पूर्वोक्त अरिहंतादिक जे कही ते, अने अग्यारमी केवली लब्धि, बारमी ऋजुमतिलब्धि तेरमी विपुलमति लब्धि. ए तेर लब्धि नथाय. ॥५२१॥ अने अभव्य स्त्रीने पण, एहज तेर लब्धि नथाय; तथा मधुआश्रव अने खीराश्रव ए पण नथाय. अने शेष लब्धिउ ते अविरुद्धछे. थायतो थाय. ॥ ५२२ ॥ इति गाथा सप्तदशकार्थ ॥

अवतरणः—तवत्ति एटले तपनुं बशेने एकोतेरमुं द्वार कहेछे. मूल.—पुरिमड्ढेकासण निव्विगइय आयंबिलोववासेहिं ॥ एगलया इय पंचहिं, होइ तवो इंदियजउत्ति ॥ ५२३ ॥ अर्थः—तपावेके० अशुभकर्मने बाले तेने तप कहीए. ते अनेक प्रकारे छे; तथापि तेमां मूल इंद्रियजय नामा तपछे. केमके श्रीवीतरागनो धर्म पण एवेज नामेछे; तेथी ए तप पण एज नामे जाणवुं. ते कहेछे. पेहेला दिवसे पुरिमड्ढ, बीजे दिवसे एकासणु, त्रीजेदिवसे नीवी, चोथेदिवसे आंबिल अने पांचमेदिवसे उपवास. ए पांचे पच्चरकाणे करी एकलता श्रेणी परिपाटी. ए सर्व शब्दो एकार्थिकछे. एवी पांचेलताए पांच इंद्रियोने दमन करवुं माटे इंद्रियजय नामा तप थाय. इहां एभाव जे पांच दिवसे एक इंद्रियनो जय करनार होय, तेमाटे एम पच्चीश दिवसे पांच इंद्रियोनो जय थाय. इहां श्री जिनशासननेविषे जे तप करीए ते सर्व इंद्रियना जयनुं करनार थाय छे, परंतु पूर्वाचार्ये एने एज नामे कह्युं छे. ॥ ५२३ ॥

हवे इंद्रियजय कह्या उपरांते योगशुद्धि करवी जोइए तेज तप कहेछे. मूलः—निव्विगइयमायामं, उपवासो इय लयाइ तिहिं भणिउ॥ नामेण जोगसुद्धी.नवदिणमाणो तवो एसो ॥ ५२४ ॥ अर्थः—पेहेले दिवसे नीवी, बीजे दिवसे आंबिल, त्रीजे दिवसे उपवास, ए एकलता एवी त्रण लताए योग शुद्धिनामा तप भणिउके० कह्युंछे. त्यां

योग ते मनोयोगादिक त्रण तेनो व्यापार विशेष, तेनी जे शुद्धि निरवद्यपणुं जे थकी थाय ते योगशुद्धि जाणवी. एनुं तप नव दिवस मान होय छे. ॥ ५२४ ॥

हवे योगशुद्धि थइ छतां ज्ञानादिक त्रणनी प्राप्ति थाय तो जली जाणवी. ते थी ते ज्ञानादिक त्रणनुं तप कहेछे. मूलः–नाणंमि दंसणंमिअ, चरणंमिअ तिन्नि तिन्निपत्तेयं ॥ उववासातप्पूआ, पुवंतन्नामग तवंमि ॥ ५२५ ॥ अर्थः–ज्ञाननेविषे, दर्शननेविषे अने चारित्रनेविषे प्रत्येके त्रण त्रण उपवास करवा; अने तेनी पूजा पूर्वक करतां तेवेज नामे तप थाय छे. ते आवी रीते. पेहेलुं ए त्रणमां मुख्य ज्ञानछे, तेने आराधवाने अर्थे त्रण उपवास अने तेनी पूजा पूर्वक करतां ज्ञान नामे तप थाय. तेमां सिद्धांतनी पूजा. पुस्तकने पहेरामणी वीटणा प्रमुख ज्ञान साधनोपा य चडाविए अने ज्ञानवंत पुरुषने एषणीय वस्त्र, पात्र, अन्न, पानादिके पूजा क रवी, एमज दर्शन आराधवाने अर्थे त्रण उपवास करवा. त्यां दर्शन प्रजावक जे संमत्यादिक ग्रंथ अने सद्गुरुनी पूजा करवी. एमज चारित्रनेविषे पण चारित्रवंत नी पूजा करीए. एरीते करतां ज्ञानतप, दर्शनतप ने चारित्रतप थाय. ॥ ५२५ ॥

ज्ञानादिक त्रिकनो धणी कषाय जय करे तो जलुं. तेमाटे कषायजय नामा तप कहेछे. मूलः–एक्कासणगं तह, निव्विगइयमायंबिलं अजत्तठो ॥ इय होइ लयच उक्कं, कषायविजये तवे चरणे ॥ ५२६ ॥ अर्थः–एकासणु, नीवी, आंबिल ने उप वास, ए चार एकलताए थाय. एम क्रोधादिक चार कषायना जयनेअर्थे चार लता एकरी चार चोक सोल दिवस पर्यंत कषायविजयनामा तपश्चरणा करीए. हवे ज्ञा नादिकना धणी कषायनो जय करी पछी विविध प्रकारनां तप करे, तेथी तेना प्रकार देखाडतो थको ग्रंथकार प्रथम चारगाथाये करी कर्मसूदन नामा तप कहेछे. ॥ ५२६॥

मूलः–खमणं एक्कासणगं, एक्कगसित्थंच एगठाणंच॥एक्कगदत्तिं निव्विअ, मायंबिल मठकवलंच ॥ ५२७ ॥ एसा एगालहिआ, अठहिंलईयाहिं दिवसचउसठी ॥ इय अ ठकम्मसूमण, तवंमि जणिया जिणिंदेहिं ॥५२८॥ अर्थः–पहेले दिवसे उपवास, बीजे दिवसे एकासणुं, त्रीजे दिवसे एकलसित्थो, चोथे दिवसे एकठाणुं, पांचमे दिव से एकदाति, छठेदिवसे नीवी, सातमे दिवसे आंबिल, आठमे दिवसे आठ कवल. ए आठ पच्चखाणे एकलता थइ. एवी आठे लताए एटले आठे अठियुं चोसठ दि वसे थाय एम आठ पच्चखाण कर्मसूदन नामा तपनेविषे श्रीजिनवरेंद्रे कह्या. एरीते ए तपकरी छहेले स्नात्रपूजा श्रीजिनवरेंद्रने पहेरामणी प्रमुख आपीए. आगले

वळी विशिष्ट बळीमांहे सुवर्णमय कुहाडी ते कर्मरूपीयां तरुवर छेदवाने अर्थें ढोइवो एरीते कर्मनुं सूदनके० विनाश थायछे. ॥ ५२७ ॥ ५२८ ॥

हवे न्हानु सिंहनिःक्रीडितनामा तप कहेछे. मूलः—इगडुगइगतिगडुगचउ, तिग पणचउछक्कपंचसत्तछगं ॥ अठगसत्तगनवगं, अठगनवसत्तअछेव ॥ ५२९ ॥ छगस त्तगपणछक्कं, चउपणतिगचउरडुगतिगंएगं ॥ डुगएक्कगउववासा, लहुसीहनिकीलिय तवम्मि ॥ ५३० ॥ अर्थः—एक उपवास करी पारणु करे, एम बे उपवास करी पारणु करे, एम सर्वे उपवासे आगळ पारणु जाणवुं. पछी एक उपवास, त्रण, बे, चार, त्रण, पांच, चार, छ, पांच, सात, छ, आठ, सात, नव, आठ, नव, सात, आठ, छ, सात, पांच, छ, चार, पांच, त्रण, चार; बे, त्रण, एक, बे, एक, उपवास, ए आगळे जे कहेछे तेनी अपेक्षाए न्हानुं, अने सिंहना निःक्रीमितके० गमननी परे ए होय, तेथी ए तपपण सिंहनिःक्रीडित जाणवुं, जेम सिंह जतो थको दूर जइने वळी पाछो ते प्रदेशे जुएछे, तेनी पेरे जे तपने विषे पच्चखाण कर्यो तेहज वळी पण करीने पारणुं करी वळी आगळा तपनुं आसेवन करे तेथी ए न्हानुं सिंहनिः क्रीडिततप—तेने विषे हवे उपवासना दिवसो अने पारणाना दिवसोनी संख्या कहेछे,

मूलः—चउपन्नं खमणसयं, दिणाणि तह पारणाणि तेत्तीसं ॥ इहपरिवाडिचउक्के, वरिसडुगं दिवसअडवीसा ॥ ५३१ ॥ अर्थः—एकशोनेचोपन्न उपवासना दिवस अ ने तेत्रीश पारणां, एम ए एक परिपाटी एटले श्रेणी थइ, एवी जेवारे चार परि पाटी थाय तेवारे तेनेविषे बे वर्ष अने अठ्ठावीश दिवस थायछे. ॥ ५३१ ॥

हवे ए चार परिपाटीने विषे पारणानुं स्वरूप कहेछे. मूलः—विगईउ निविगइ यं तहा अलेवाडयंच आयामं ॥ परिवाडिचउक्कमिय, पारणएसुं विहेयव्वं॥ ५३२॥ अर्थः—पहेली श्रेणीए विगइ जमे ते दिवशे सर्वे कामगुणित रसोपेत जमे. बीजी श्रेणीएनीवी अने त्रीजी श्रेणीए अलेपकारी वाल चणादिक जे जमतां थकां हस्त पात्र प्रमुखने लेप लागे नही. चोथी श्रेणीए आंबिल करे. एम चारे श्रेणीनेविषे पारणाने दिवसे करवुं एटले लघुसिंहनिःक्रीडित तप कह्युं. ॥ ५३२ ॥

हवे महासिंहनिःक्रीडितनुं स्वरूप कहेछे. मूलः—इगडुगइगतिगडुगचउ, तिगप णचउछक्कपंचसत्तछगं ॥ अडसत्तनवडदसनव, एक्कारसदसयबारसगं ॥ ५३३ ॥ अर्थः—इहां पण एकादिक उपवासनी संख्या कहेछे. एक उपवास, बेउपवास, एक उपवास, त्रण उपवास, बे उपवास, चार उपवास, त्रण उपवास, पांच उपवास, चार उपवास, छ उपवास, पांच उपवास, सात उपवास, छ उपवास, आठ उप

वास, सात उपवास, नव उपवास, आठ उपवास, दश उपवास, नव उपवास, अग्यार उपवास, दश उपवास अने बार उपवास. ॥ ५३३ ॥

मूलः—एक्कार तेर बारस, चउदस तेरसय पनर चउदसगं ॥ सोलस पन्नर सोला, होइ विवरीयमिक्कत्तं ॥५३४॥ अर्थः—अग्यार उपवास, तेर उपवास, बार उपवास, चउद उपवास, तेर उपवास, पन्नर उपवास, चउद उपवास, सोल उपवास, पन्नर उपवास, सोल उपवास, एनेज वली विपरीत करवा एटले जेम चडता कह्या तेम वली पूर्वली रीते पाछा वलता करवा, एम करतां छेहेडे एक उपवास थायछे. ॥ ५३४ ॥ इहां एकथी चडता तथा सोलथी वलता करतां बधा आंक चार चार वखत आवे छे, पण मात्र शोलना आंक बे वखत तथा पन्नरना आंक त्रण वखत आवे छे; ते बधा मली बशे बहोतेर दिवस उपवासना थाय तथा एकसठ दिवस पारणा नाथाय तेवारे एक परिपाटी थायछे. ॥ ५३४ ॥

मूलः—एएउ अनत्तठा, इगसठीपारणाण मिह होइ ॥ एसा एगा लइया, चउग्गुणा ए पुण इमाए ॥ ५३५॥ अर्थः—एटला ए पूर्वोक्त अनकार्थके० उपवास जाणवा, अने इहां एकशठ पारणां थाय ते जाणवां, एटले एक लता एक उली थइ, अने एवी चार लताउ करिए माटे एनेचारगुणी करतां जे दिवसोनी संख्या थाय ते कहेछे.

मूलः—वरिसछगंमासडुगं, दिवसाइ तहेव बारस हवंति ॥ एछमहासीहनिकी, लियंमि तिव्वे तवच्चरणे ॥५३६॥ अर्थः—छ वर्ष बे महीना ने बार दिवस थाय. इहां महा सिंहनिःक्रीमितनामे तीव्र जे आसेवतां डुर्लज एवा तपश्चरणनेविषे एटला दिवसोनी संख्या छे ते जाणवी. एटले महासिंहनिःक्रीडित नामा तप कह्युं.॥५३६॥

हवे बे गाथाये करी मुक्तावलीनामे तप कहेछे. मूलः—एगो डुगाइ एक्कग, अंतरिया जाव सोलस हवंति ॥ पुण सोलस एगंता, एगंतरिआ अप्पन्नत्तठा ॥५३७॥ पारणयाणं सठी, परिवाडिचउक्कगंमि चत्तारि ॥ वरिसाण हुंति मुत्ता, वली तवे दिवससंखाए ॥ ५३८ ॥ अर्थः—एक उपवास करी वली पारणु करीए, बे उपवास करी पारणु करीए, वली एक उपवास करी पारणु करीए. पछी त्रण उपवास करी पारणु करीए, वली एक उपवास करी पारणु करीए एम चढतां चढतां एकेकने आंतरे यावत् सोल उपवास सुधी करीए. एरीते छेला सोल उपवासनुं पारणु करी वली पाछा फरीए, ते आवीरीते के सोल उपवास करी पारणु करीए, फरी एक उपवासने पारणु करीए, तेमज, पन्नर उपवास करी पारणु करीए, फरी एक उपवास करी पारणु करीए वली चउद उपवास करी पारणु करीए, पछी एक उपवास ने पार

णु एम पाछा आवतां छेहेडे एक उपवास ने उपर पारणु करीए, एम एक उप वासने आंतरे वधता उतरता उपवास थाय ते सोळ सुधी चमतां अर्द्ध मुकाव ली थाय; अने प्रतिलोमे पूरण मुक्तावली थाय त्यारे सर्व मली त्रणशे उपवास थायछे. ॥ ५३७ ॥ हवे बीजी गाथाए पारणाना दिवसोनी संख्या अने सर्व दिव सोनी संख्या कहेछे. पारणयाणंसठीके० साठ पारणां एक परिपाटीनेविषे थायछे, एरीते चार परिपाटीनेविषे चार वर्ष संपूर्ण थाय. एटले ए मोतीना हारनी परे मुक्तावली तप छे ते कह्युं. ॥ ५३८ ॥

हवे रत्नावली तप कहेछे. मूलः—इग दु तिकाहलियासुं, दाडिमपुप्फेसु हुंति अठ तिगा ॥ एगाइसोलसंता, सरिआजुअलंमि उववासा ॥ ५३९ ॥ अंतम्मि तस्स पय गं, तहं कम्म एमिक महपंच ॥ सत्तयसत्तयपणपण, तिन्निक्कं तेसुतिगरयणा ॥ ५४०॥ पारणय दिणहासी, परिवाडिचउक्कगे वरिसपणगं ॥ नवमासा अठारस, दिणाण रय णावलितवम्मि ॥५४१॥ अर्थः—जेम रत्नावलिने आजरण विशेष कहेछे, तेम रत्ननी पंक्ति सरखुं जे तप ते रत्नावलीतप कहीये. जेवी रत्ननीपंक्ति ते बंने नणीनी बाजूए प्रथम सूक्ष्म अनेपछी स्थूल एवा विजागे करी काहलिका नामे सुवर्णना बे अवयवे क री युक्त होयछे, तेमज ते दाडमनां पुष्पोए करी बंने बाजुए शोनित. त्यारपछी सरल बंने तरफनी बाजुनी जे सेरो तेणेकरी शोजनारी अने नीचेना नागनेविषे स्थापन करे ला पदके करी अत्यंत अलंकृत होयछे एवुं जे तप, पट्टादिकनेविषे बतावेला आकारने धारण करेछे, तेने रत्नावली कहेछे. त्यां एक, बे, त्रण एनीमध्ये अधो जागना अनुक्रमे काहलिका स्थापन थायछे. त्यारपछी बंने दाडिम पुष्पना नणी नी बाजुए प्रत्येके आठ त्रिक अने ते बंने नणीनी बाजुए रेखा चतुष्टे करी नव नव कोष्टक करवा, मध्ये शून्य करी नीचे नीचे अंक स्थापन करेछे. त्यारपछी पंक्तिनेविषे सरिकायुगलने विषे एक छे आदिजेमां, अने सोल जेमां छेवटे छे एवां स्थान कर वां, ते सरिकायुगलनेनीचे पदक ते आठ पंक्तिए चोतरीश अंकना स्थान एवुं कोष्ठक थायछे. तेमां पहेली पंक्तिनेविषे एक अंकस्थान, बीजी पंक्तिनेविषे पांच अंकस्था नो, त्रीजी पंक्तिनेविषे सातअंकस्थानो, चोथी पंक्तिनेविषे पण सात अंकस्थानो, पांचमी पंक्तिनेविषे पांच अंकस्थानो, उठी पंक्तिनेविषे पांच अंकस्थानो, सातमी पंक्तिनेविषे त्रण अंकस्थानो, आठमी पंक्तिनेविषे एकज अंकस्थान, एवां ए चोतरी श कोष्टकनेविषे त्रण त्रण अंक स्थापन करवा. हवे स्थापन कहेछे.

अहीयां आ नावार्थछे के रत्नावली तपनेविषे प्रथम एक उपवास करेछे. त्यारप

ठी बे उपवास करेछे, त्यारपछी त्रण उपवास करेछे. ए एक काहलिका ए मध्ये स र्व ठेकाणे पारणां जाणवां. त्यारपछी आठ ठेकाणे बंने तरफनी बाजुए त्रण त्रण उपवास करेछे, एणे करी काहलिकानी नीचे दाडिमपुष्प उत्पन्न थायछे. त्यार पछी एक उपवास करेछे. त्यार पछी बे उपवास करेछे, त्यारपछी त्रण उपवास करेछे, त्यारपछी चार उपवास करेछे, त्यारपछी पांच उपवास करेछे, त्यारपछी छ, सात, आठ, नव, दश, अग्यार, बार, तेर, चौद, पंदर, सोल उपवास करेछे. एवी दाडमनापुष्पनी नीचे एक सरिका थायछे, त्यारपछी चोतरीश अष्टम करेछे. ए णेकरी पदकउत्पन्न थाय छे. त्यारपछी सोल उपवास करेछे. त्यारपछी पंदर, चौद, तेर, बार, अगीआर, दश, नव, आठ, सात, छ, पांच, चार, त्रण, बे अने एक पर्यंत उपवास करेछे. ए बीजी सरिका (सेर) थायछे. त्यारपछी वली आठ अष्टम थायछे. एणेकरीने पण बीजा दाडमनां पुष्प उत्पन्न थायछे. त्यारपछी त्र ण उपवास करेछे, त्यारपछी बे उपवास करेछे अने त्यारपछी एक उपवास क रेछे, एणेकरी बीजी काहलिका उत्पन्न थायछे. एवुं थयुं छतां परिपूर्ण रत्नावली सिद्ध थायछे. आ रत्नावलीतपनेविषे काहलिकाना तपना दिवसो बार अने दा डमना पुष्पना बंने जणीनी बाजुना मली अडतालीश दिवस तथा बंने सेरने विषे बे बाजुना सोलनी संकलनाए दिवस बसें बोतेर अने पदकनेविषे चोतरीश अष्ट मोना दिवस एकसोने बे थायछे. ए सर्व एकत्रकर्या छतां चारसे चोतरीश दिवस था यछे. अने अठ्यासी पारणाना दिवस थायछे. बंनेने एकत्र कर्या छतां पांचसें बावी स दिवस थायछे. एनी वर्षसंख्या करीए तो एक वर्ष पांच मास बार दिवस था यछे. ए तप पण पूर्व सरखा चोपट्टे करी युक्त थायछे. ते चारे गुण्या छतां पांच वर्ष नव मास अने अढार दिवस थायछे. ॥ ५३९ ॥ ५४० ॥ ५४१ ॥

हवे कनकावली तप देखाडेछे. मूलः—रयणावलीकमेणं, कीरइ कणगावलीतवो नवरं ॥ कज्जा डुगाइ तिगपए दाडिमपुप्फेसु पयगेय ॥ ५४२ ॥ अर्थः—कनकावली एट ले सुवर्णमय मणीउथी उत्पन्न थएलुं नूषण ते कनकावली, तेना आकारनी स्था पनाए करी जे तप तेने कनकावली एवुं कहेछे. ए कनकावली तप, रत्नावली तपना क्र मेकरीने करेछे; परंतु केवल दाडमपुष्पना अने पदकनेविषे त्रिकोनी स्थापनाने विषे बे उपवासनी सूचना करनारा द्विक करवा. बाकी संपूर्ण रत्नावली सरखुंज जाणवुं.

हवे पारणा संबंधी विधि कहेछे. मूलः—परिवाडिचउक्के वरि, सपंचगंदिणडुगूणमास तिगं ॥ पढमतिवुत्तो कज्जो, पारणयविहीतवप्पणगे ॥ ५४३ ॥ अर्थः—परिवाडिके० श्रेणी

तेना चोकडाने विषे पांच वरस अने उपर बे दिवसेकरी उणा त्रण महीना थाय ते, प ढमके० प्रथम कह्युं जे लघुसिंहनिःक्रिडित तथा महासिंहनिःक्रीडित नामा तप तेने विषे कह्योछे जे पारणानो विधि, तेमज मुक्तावली, रत्नावली कनकावली एने विषे पण जाणवी. ए पांचेने ए सरखोज पारणानो विधि जाणवो. ए रत्नावली कनकावली कही

हवे नद्रादिक तप कहेछे. मूलः—नद्दाइतवेसु तहा, इयालया इगडुगतिन्निचउपं च ॥ तह तिचउपंचइगदो, तह पणइगदोन्नितिचउक्कं ॥५४४॥ अर्थः—नद्रा आदेदेइ ने तपनेविषे लतादिक एमज थाय. प्रथम एक उपवास एमज बे, त्रण, चार, पांच, एटले एकलता थइ. ते थकी बीजी लता ते त्रण, चार, पांच, एक, बे. ए बीजी उ ली थइ, वली पांच, एक, बे, त्रण, चार, ए त्रीजी उली जाणवी. ॥ ५४४ ॥

मूलः—तह डुतिचउपणगेगं, तह चउपणगेगडुन्नितिन्नेव ॥ पणहत्तरिउववासा, पारणयाणंतु पणवीसा ॥५४५॥ अर्थः—तहके० तेथकी वली चोथी पंक्ति बे, त्रण, चार, पांच ने एक, वली ते थकी पांचमी पंक्ति ते चार, पांच, एक, बे ने त्रण, ए पांच उली कही. ते एकेकी उलीनेविषे पन्नर पन्नर उपवास थायछे. एम पंचोतेर उ पवास अने एक ओलीए पांच पारणां करतां पच्चीश पारणाना दिवसो थायछे.॥५४५॥

हवे महानद्रप्रतिमा कहेछे. मूलः—पनणामि महानद्दं, इगडुगतिगचउपण छ सत्तेव ॥ तह चउपणछगसत्तय, इगडुति तह सत्तइक्कंदो ॥ ५४६ ॥ तिन्निचउपंचछ क्कं, तह तिगचउपणछसत्तगेगंदो ॥ तह छगसत्तगइगदो, तिगिचउपणतहडुगंतिचउ ॥ ५४७ ॥ पणछगसत्तिक्कंतह, पणछगसत्तिक्कदोन्नितियचउरो ॥ पारणयाणिगुव न्ना, छन्नउअसयंचउछाणं ॥५४८॥ अर्थः—एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ ने सात, तथा शब्द थकी इहां पण उलीनुं धुर जाणवुं. ए प्रथम उली. चार, पांच, छ, सात, एक बे, त्रण. ए बीजी उली. सात, एक, बे, त्रण, चार, पांच, छ, ए त्रीजीउ ली. त्रण, चार, पांच, छ, सात एक, बे, ए चोथी उली. छ, सात, एक, बे, त्रण, चार ने पांच ए पांचमी उली. बे, त्रण, चार, पांच, छ, सात ने एक ए छठी उली. तेम ज पांच, छ, सात, एक, बे, त्रण ने चार ए सातमी उली थइ. एरीते सात उली त पनी करीए. ते साते उलीमां उगणपच्चाश पारणांना दिवसो थायछे. अने एके की उलीमां अठावीश अठावीश उपवास थाय छे. साते उलिमां एकशोने छनुं चउ छके० उपवास थाय छे. ॥ ५४६ ॥ ५४७ ॥ ५४८ ॥

हवे नद्रोत्तर प्रतिमा कहेछे. मूलः—नद्दोत्तरपडिमाए, पणछगसत्तट्ठनव तहा सत्त॥ अडनवपंचछ तहा, नवपणछगसत्तअट्ठेव ॥५४९॥ तह छगसत्तट्ठनव पण, तह ठन

वपणछसत्तनवगा ॥ पणहत्तरिसयसंखा, पारणगाणंतु पणवीसा ॥५५०॥ अर्थः– पांच, छ, सात, आठ ने नव; एटला उपवासे प्रथम उली जाणवी. इहां पण तथा शब्दथकी उलीनो प्रारंभ जाणवो. सात, आठ, नव, पांच ने छ; ए बीजी उली जाणवी. तथा नव, पांच, छ, सात ने आठ; ए त्रीजी उली जाणवी. छ सात आठ नव ने पांच; ए चोथी उली जाणवी. आठ, नव, पांच, छ ने सात ए; पांचमी उली थायछे. इहां एकेकी उलीए पांत्रीश उपवास थायछे, तेवी पांच उली करवी; तेवारे अन्नकार्थिके० उपवास ते एकशोने पंचोतेरनी संख्या थायछे. तथा एकेकी उलीए पांच पांच पारणां करतां पांचे उलीए पच्चीश पारणांनी संख्या थायछे.॥५४९॥५५०॥

हवे सर्वतोभद्र प्रतिमा कहेछे. मूलः–पडिमाइसव्वभद्दाए पणछसत्तठनवदसिक्कारा ॥ तहअडनवदसइक्कारस पणछसत्तयतहिक्कारा ॥ ५५१ ॥ पणछगसत्तगअड नव, दस तह सत्तठनवदसेक्कारा ॥ पणछ तहा दसइक्कार पणछसत्तठनवयतहा ॥ ॥५५२॥ छगसत्तडनवदसगं, इक्कारसपंचतहनवगदसगं ॥ इक्कारसपणछक्कं, सत्तठय

भद्र तपनुं यंत्र.

१	२	३	४	५
३	४	५	१	२
५	१	२	३	४
२	३	४	५	१
४	५	१	२	३

भद्रोत्तर प्रतिमानुं यंत्र.

५	६	७	८	९
७	८	९	५	६
९	५	६	७	८
६	७	८	९	५
८	९	५	६	७

महाभद्रप्रतिमा स्थापना.

१	२	३	४	५	६	७
४	५	६	७	१	२	३
७	१	२	३	४	५	६
३	४	५	६	७	१	२
६	७	१	२	३	४	५
२	३	४	५	६	७	१
५	६	७	१	२	३	४

सर्वतोभद्रप्रतिमानुं यंत्र.

५	६	७	८	९	१०	११
८	९	१०	११	५	६	७
११	५	६	७	८	९	१०
७	८	९	१०	११	५	६
१०	११	५	६	७	८	९
६	७	८	९	१०	११	५
९	१०	११	५	६	७	८

रत्नावली नामा तपनुं यंत्र.

काहलिका. दाडिमपुष्प. सरिका.

१	२	३	३	३	३	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

३	०	३
३	३	३
३	३	३
३	०	३

ए रत्नावली तपनी स्थापना; एम कनकावली तप नेविषे पदके त्रणने ठेकाणे बगडा करवा. अने अंत गडदशामाहे रत्नावलीनुं पदक बगडे अने कनकाव लीनुं त्रगडे कह्युंछे. ए रत्नावलीनी स्थापनाछे.

१	२	३	३	३	३	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६

काहलिका. दाडिमपुंष्प. सरिका.

३	३						
३	३	३	३	३			
३	३	३	३	३	३		
३	३	३	३	३	३	३	३
३	३	३	३	३	३		
३	३	३	३	३			
३	३						

पदक.

इह तवे होंति ॥५५३॥ तिन्निसया बाणउआ, इहुववासाण होंति संखाए॥ पारण याणुणवन्नाण नद्दाइतवा इमे नणिया ॥५५४॥ अर्थः—सर्वतोनद्रनामा प्रतिमाने विषे पण पांच, ब, सात, आव, नव, दश ने अग्यार ए एक पंक्ति, इहां सर्वत्र तह शब्दथकी पंक्तिनुं धुर जाणवुं. तथा आव, नव, दश, अग्यार, पांच, ब, सात ए बीजी पंक्ति जाणवी. तथा अग्यार, पांच, ब, सात, आव, नव, दश, ए त्रीजी पंक्ति जाणवी. तथा सात, आव, नव, दश, अग्यार, पांच ने ब ए चोथी पंक्ति जाणवी, तथा दश, अग्यार, पांच, ब, सात, आव ने नव ए पांचमी पंक्ति जाणवी. तथा ब, सात, आव, नव, दश, अग्यार ने पांच ए बही पंक्ति जाणवी. तथा नव, दश, अग्यार, पांच, ब, सात ने आव ए सातमी श्रेणी जाणवी. इहां एकेकी श्रेणीए बपन्न बपन्न उपवास करतां सात श्रेणीमां त्रणसेने बाणु उपवासनी संख्या थाय बे. अने एकेकी श्रेणीए सात सात पारणां करतां उगणपच्चाश पारणां थायबे. ए नद्रादिकतप श्रीतीर्थंकरदेवे नणियाके० कह्यांबे. परंतु ए नद्रादिकतपनेविषे पारणां पूर्वोक्त पांचे तपनी परे प्रत्येके जाणवां; अने चतुर्विधपणु पण प्रत्येके जाणवुं.

हवे जेथकी समस्त सुखनी संपदाउ थाय अथवा ए तपना आसेववाथकी एवी वस्तु कोइपण नथी के जे एनुं सेवन कखाथी न संपजे. अर्थात् सर्व वस्तुनी संपत्ति थाय, ते कारणे एनुं नाम पण सर्वसंपत्तिसुख नामा तप बे. तेज कहेबे. मूलः—पडिवइयाएक्कविय, डुगं डुइज्ञाण जाव पन्नरस ॥ खमणेहमावसाउ, होइ तवो सव्वसंपत्ती ॥ ५५५ ॥ अर्थः—ए तप पमवाथकी आरंनीने पडवानो एक उपवास करीए. बीजना दिवसथी बे उपवास करीए, बीजा पक्षना त्रीजना दिवसथी त्रण उपवास करीए; ते ज्यां सुधी बेहेला पुनेमना अथवा अमावास्याना दिवसथी पन्नर उपवास करीए त्यांसुधी पन्नर पक्ष थायबे अने एकशोने वीश उपवास थाय. ए तप कृष्णपक्षमां अथवा शुक्लपक्षमां करायबे. एमकरतां सर्वसंपत्तिनामा तप थायबे.

हवे रोहिणीतप कहेबे. मूलः—रोहिणिरिक्कदिणेरो, हिणीतवे सत्तमासवरिसाइं॥ सिरिवासुपुज्जपूआ, पुव्वं कीरइ अजत्तद्दो ॥५५६॥ अर्थः—सत्तावीश नक्षत्रबे तेमां प्रथम अश्विनीनक्षत्रथकी रोहिणी नामा नक्षत्र चोथुंबे; ते नक्षत्र जे दिवसे आवे ते दिवसे रोहिणीनामक देवताविशेष, तेना आराधवाने अर्थे सात वर्ष ने सात महिना सुधी श्रीवासुपूज्यजिनेश्वरनी प्रतिमानी प्रतिष्ठा पूजापूर्वक रोहिणी नक्षत्रना दिवसे उपवास करीने ए तप करीए. ॥ ५५६ ॥

हवे मौनएकादशीतप कहेबे. मूलः—एक्कारससुअदेवी, तवम्मि इक्कारसीइ मोणे

णं ॥ कीरंति चउत्थेहिं सुअदेवीपूअणापुव्वं ॥५५७॥ अर्थः—अग्यार एकादशीसुधी श्रुतदेवीनी पूजापूर्वक मौनपणु धारण करी चउत्थ तपे करी श्रुतदेवी आराधवाने अर्थे शुक्ल एकादशीए निरंतर ए तप करीए. उजमणे रुपाना घंट अगीयार तथा जातजातनां फल आपीए. ॥ ५५७ ॥

हवे सर्वांगसुंदर नामा तप कहेछे. मूलः—सव्वंगसुंदरतवे, कुणंति जिणपूअखंतिनियमपरा ॥ अठुववासे एगंतरं बिलेधवलपक्खंमि ॥५५८॥ अर्थः—ए तपना करवाथकी समस्त अंगनेविषे प्रधान सुंदरपणु होय, ते कारणे एनुं नाम पण सर्वांगसुंदरनामा तप छे; अने एनेविषे आठ उपवास अने एकांतरे आंबिल ते धवलके० चांदरणापक्षनेविषे श्रीवीतरागनी पूजापूर्वक करे, अने क्षांतिके० क्षमा मार्दव आर्जवादिक नियमनेविषे पण परिचय करे. ॥ ५५८ ॥

हवे निरुजसिख तप कहेछे. मूलः—एवं निरुजसिहोविहु, नवरं सो होइ सामले पक्खे ॥ तम्मिय अहिउकीरइ, गिलाणपडिजागरणनियमा ॥५५९॥ अर्थः—एम निरुजसिह एटले निरोगपणानेविषे शिखा समान, एटले ज्यां ए तप होय त्यां रोग नहोय; अथवा निरुज एटले निरोगपणु तेहज छे प्रधान फलनी विवक्षाए शिखा के० चोटलीनी परे ज्यां, ते निरुजशिख एवे नामे तप जाणवुं. ए तपनेविषे पण पूर्वोक्त सर्वांगसुंदर नामा तपनी परे आंबिल अने उपवास एकांतरे करीए. नवरंके० एटलुं विशेषजे ए तप सामलेके० अंधारे पखवाडीए थाय,अने वली एने विषे ग्लाननी प्रतिजागरणा वैयावच्च लक्षण, तेनुं अभिग्रह होय एटलुं अधिक जाणवुं. ॥ ५५९ ॥

हवे परमभूषणतप कहेछे. मूलः—सो परमभूसणो होइ जस्स आयंबिलाणि बत्तीसं ॥ अंतरपारणयाइं,भूसणदाणंच देवस्स ॥५६०॥ अर्थः—ए तपना करवाथकी शक्र चक्रवर्त्ति आदिकनेविषे योग्य जे भूषण एवा हार कुंमल केयूरादिक अनेक आभरण पामीए, तेथी ए तपनुं नाम पण परमभूषणछे. एनेविषे बत्रीश आंबिल करवा, ते जो लागट करवानी समर्थाइ नथाय तो एकांतरितपणे पारणा करीए. एम संपूर्ण तप करी पोतानी शक्तिने अनुसारे श्रीवीतरागदेवने योग्य मुगट तिलकादिक भूषण चढावीए. ॥ ५६० ॥

हवे आयतिजनकतप कहेछे. मूलः—आयइजणगो चेवं, नवरंसव्वासु धम्मकिरियासु ॥ अणिगूहियबलवीरिय, पवित्तिजुत्तेहि सो कज्जो ॥ ५६१ ॥ अर्थः—आयति शब्दे करी परभव जाणवो. त्यां जे विशिष्टफलनो जनकके० उपजावणहार तेथी एनुं नाम आयतिजनक कहीए. एमां पण पूर्वोक्त रीते बत्रीश आंबिल लागट की

री शके नही तो एक दिवस आंबिल करी पारणुं करीए. नवरंके० एटलुं विशेष जे समस्त जे वंदनक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय, साधु साध्वीनुं वैयावच्च, ते धर्मक्रिया नेविषे बल अने वीर्यनी प्रवृत्तिने जेणे अणिगूहियके० गोपवी नथी, पण तेणे करी सहितछे. एरीते ए तप करवुं. ॥ ५६१ ॥

हवे सौजाग्यकल्पवृक्ष नामा तप कहेछे. मूलः—एगंतरोववासा, सव्वरसं पारणंच चित्तंमि ॥ सोहग्गकप्परुरको, होइ तहादिज्जए दाणं ॥५६२॥ अर्थः—कल्पवृक्षनीपरे कल्पवृक्ष सौजाग्य फलनादानने विषे कल्पवृक्ष समान ते सौजाग्यकल्पवृक्ष कहीए.ए कांतर उपवास, एकाशणाने दिवसे सर्व रस पारणु कामगुणित जमवुं. ए चैत्र महि नानेविषे सौजाग्यकल्पवृक्ष एवे नामे तप होय छे. त्यां साधु साध्वीने दान आपवुं.

वली कहेछे. मूलः—तवचरणसमत्तीए, कप्पतरू जिणपरोससत्तीए ॥ कायव्वो ना णाविह, फलविलसिरसाहियासहिउं ॥ ५६३ ॥ अर्थः—ए तपनुं चरणके० आसे ववुं तेने समाप्ते एटले ए तप पूर्ण थये थके पोतानी शक्तिने अनुसारे एक थाल मां चोखानुं कल्पवृक्ष करीने श्रीवीतराग आगल मूकीए, पण ते केहेवुं के नाणा विहके० नानाप्रकारनां फल तेणेकरीने विलसति जे शाखा तेणे युक्त होय॥५६३॥

हवे तीर्थंकर मातृतपनी विधि कहेछे. मूलः—तिज्ञयरजणणिपूआ,पुव्वं इक्कासणाइ स त्तेव॥ तिज्ञयरजणणिनामग,तवंमि कीरंति नद्दवए॥५६४॥अर्थः—तीर्थंकरनी माता-ते नी पूजापूर्वक जाद्रवाशुद सातमथकी मांमीने तेरश सुधी सात एकाशणां करवां ते सात वरस सुधी,कोइक कहेछे के त्रण वरस लागट सात सात एकाशणांकरवां, पछी उ जमणु करवुं; तेमां प्रधान चोवीश पकवानना थाल आपवा; सपुत्र एटले जे पुत्र सहित होए तेवी चोवीश श्रावकाने जमाडवुं; पीलां वस्त्र करी आपीए, उत्सव क रीए ए जिनमातानामा तप ते जाद्रवा महीनामां करीए. ॥५६४॥

हवे समवसरण तप कहेछे. द्वारकाइति प्रसिद्धनाम छे मूलः—एक्कासणाइएहिं, नद्दवयचउक्कगंमिसोलसहिं ॥ होइ समोसरणतवो, तप्पूआपुवविहिएहिं ॥ ५६५॥ अर्थः—ए तप एकाशणादिके करीने एटले चार एकाशणां,चारनिवी, चार आंबिल, चार उपवास अने त्यां एक उलीए एक एकाशणुं, उपर निवी, उपर आंबिल, पछी उपवास करवो. एम एक श्रेणी थाय. एवी चार उली करीए तेवारे सोल दिवस थाय. तेमां छेल्लो उपवास पर्यूषणाने दिवसे आवे तेवीरीते ए तप करवुं. एवीरीते समवसरण तप होयछे. तप्पूआके० ते समवसरणनी पूजापूर्वक चारवर्षपर्यंत कीधे छते ए तपनेविषे सर्व मली चोशठ दिवस थाय. ए तप ते समवसरणना

एकेका द्वारनो आश्रय करीने प्रत्येक द्वारने स्थानके चारचार दिवसनुं तप करे छे, तेथी द्वारका एवी एनी प्रसिद्धि छे ॥ ५६७ ॥

हवे नंदीश्वरतप कहेछे. मूलः—नंदीसरपडपूआ, नियगसामत्थसरिसतवचरणा होइ अमावस्सतवो, अमावसावासरुद्दिठो ॥५६६॥ अर्थः—नंदीश्वर द्वीपसंबंधी जे प्रासाद ते पट उपर लखीने नंदीश्वरना पटनी पूजापूर्वक नियगके० पोतानी समर्थाइ सरखुं तप करवुं; अने दीवालीनी अमावास्याथकी आरंभी उपवास करीए; ए अमावास्याए तप उपवास लक्षण करवुं; तेथी ए अमावासी लक्षण तप कहेवाय छे. ए तप सातवर्षपर्यंत थायछे. अमावास्यानो वासरके० दिवस तेनेविषे उद्दिष्टके० कह्युंछे. एनेविषे बावन उपवास, उजमणे बावन वस्तु फल देवां, नंदीश्वर द्वीपनी पूजा करवी. ॥ ५६६ ॥

हवे पुंमरीकतप कहेछे. मूलः—सिरिपुंमरीयनामग, तवंमि एकासणाइ कायवं॥ चित्तस्स पुन्निमाए, पूएअव्वातप्पडिमा ॥ ५६७ ॥ अर्थः—श्री पुंमरीक नामे जे तप तेनेविषे एकाशणादिक तप करीए. ते चैत्री पूनेमना दिवसे करीए. एम एकाशणु आदेदेइने उपवासपर्यंत बारवर्ष लगण लागट करीए. एक कहे छे के सात वरस करीए; ते वरसो वरस बार उपवास अने तिहां पुंमरीकने केवलज्ञान उपन्युं, ते कारणे तेनी प्रतिमा पूजवी. ॥५६७॥

हवे अक्षयनिधितप कहेछे. मूलः—देवग्गठविअकलसो, जो पुन्नो अरकयाएमुठीए ॥ जो तठ्ठसत्तसरिखो, तवो तमरकयनिहिंबिंति ॥ ५६८ ॥ अर्थः—श्रीजिनदेव आगले शुभ मुहूर्ते कलश थापी दर दिवसे मूठीभर चोखा नाखतां जे दिवसे कलश पूराणो, ते दिवसे पोतानी शक्तिने अनुसारे एकाशणु ब्याशणु करीए. ए तपने अक्षयनिधितप, एवुं गीतार्थ कहेछे. इहां ए आम्नायछे के पर्यूषणाथकी पन्नर दिवस आगल ए तप मांमीए; पछी अथवा अधिके दिवसे मुहूर्त्त जोइने पारणां करवां, पछी वासक्षेपादिक विधिपूर्वक अविछिन्नधाराए संपूर्ण कलश करी उपाडीए, अने जिन आगल धरीए. ॥५६८॥

हवे चंद्रायणतप ते यवमध्य वज्रमध्यना भेदे करी बे प्रकारे कहेछे. मूलः—वड्ढइ जहाकलाए, एक्काका एणुवासरं चंदो॥ संपुणोसंपुज्जइ, जासयलकलाइ पवंमि ५६९ अर्थः—जेम चंद्रमा एकेक कलाए करीने वृद्धि पामेछे, पडवाए बीजे, त्रीजे, एम कलाए वधतो जाय, ते ज्यांसुधी समस्त कलाए करी पूर्ण पूनेमने दिवसे थाय.

मूलः—तह पडिवयायइक्को, कवलो बिइआइपुन्निमा जाव॥ इक्किक्कवलवुड्ढी, जा

तेसिं होइ पन्नरसगं ॥५७०॥ अर्थः–पूर्वोक्त चंद्रमानी वृद्धि पामती कलानी पेरे पडवाए एक कवल, बीजना दिवसे बे कवल, एम वधारतां पूनेमना दिवसे पन्नर कवल, एरीते चांद्रणे पखवाडीए एकेका कवलनी वृद्धि करतां ज्यांसुधी पन्नर कवल थाय.

मूलः–एक्केक्कं किएहंमिय, पक्खंमि कलं जहा ससी मुयइ॥ कवलोवि तहा मुच्चइ, जामावस्साइसोएक्को॥ ५७१ ॥ अर्थः–अंधारा पखवाडीआनेविषे चंद्रमा एकेक कलाए दररोज हीन थतो जाय छे, तेम अंधारा पक्षमांहे पडवाना दिवसे पन्नर कवल लेइ बीजनादिवसे चउद कवल लीए, एम त्रीजे तेर कवल, एरीते दररोज एकेक कवल मूकतां अमावास्याए एक कवलनो आहार करे. ॥५७१॥

मूलः–एसा चंदप्पडिमा, जवमज्झा मासमित्तपरिमाणा ॥ एएिंहतु वज्जमज्झं, मास प्पडिमं पवक्खामि ॥ ५७२ ॥ ए चंद्रनामे प्रतिमा जे यवमध्य, ते मात्र एक मास प्रमाण कही. एएिंहके० हवे वज्रमध्य मास प्रतिमा कहीशुं. यवमध्य चंद्रायणने उजमणे रूपानो चंद्रमा अने सोनाना बत्रीश यव आपीए. ॥५७२॥

हवे वज्रमध्य चंद्रायण ते आवी रीते. मूलः–पन्नरसपडिवयाए, एकगहाणीइ जावमावस्सा॥एकेणं कवलेणं, जाया तह पडिवयावि सिआ॥५७३॥ अर्थः–अंधारे पखवाडे पडवाना दिवसे पन्नर कवल, पछी बीजना दिवसे चउद कवल, त्रीजना तेर कवल. एम एकेकनी हाणी करतां ज्यां अमावास्या थाय त्यां एक कवल होय. तेम आगल चांदरणे पखवाडे पडवाने दिवसे एक कवल होय. ॥ ५७३ ॥

मूलः–बीयाइयासु इक्कग, वुड्ढी जा पुंन्निमाइपन्नरस॥ जवमज्झवमज्झाउ, दोविपडिमाउजणियाउ ॥ ५७४ ॥ अर्थः–पछी बीज आदेदेइने जे तिथीउ आवे त्यां एकेक कवलनी वृद्धि करतां जवुं, ते जेवारे पूनेमनो दिवस आवे तेवारे पन्नर कवलनो आहार थाय. एटले यवमध्य ने वज्रमध्य ए बेउ प्रतिमा जणियाके० कही. ए वज्रमध्यने उजमणे रूपानो चंद्रमा अने वज्र आपवां. ॥५७४॥

हवे दाति संख्या प्रतिमा त्रण गाथाए करी कहेछे. मूलः–दिवसे दिवसे एगा दत्ती पढमंमि सत्तगे गिज्झा॥ वड्ढइ दत्तीसहस त्तगेण जा सत्तसत्तमए॥५७५॥ अर्थः–दिवस दिवसनेविषे एकेक दाती ते पढमके० पहेला सातकाने विषे गिज्झाके० लेवी. एम अन्नना ग्रहणथकी पाणीनी दाती पण एकेकज सात दिवस सुधी लेवी, पछी सातका सातकासाथे दातीनी पण वड्ढइके० वृद्धि करवी. एटले बीजे सातके दिवसे दिवसे बे बे दाती लेवी. एम त्रीजे सात के सातदिवससुधी त्रण त्रण दा

ती लेवी, ते ज्यांसुधी सातमे सातके सात सात दात्ती दिवसे दिवसे लेवाय, त्यांसुधी जाणवी. ॥ ५७५ ॥

मूलः—इगुवन्नवासरेहिं, होइ इमा सत्तसत्तमीपडिमा ॥ अठ्ठमियानवनव मियायदसदसमिया चेव ॥ ५७६ ॥ अर्थः—सातो सत्तीसुं उगणपचाश दिवसे सप्तमी प्रतिमा होय. हवे आगल अठ्ठमअठ्ठमिआ, नवमनवमिया अने दसमदसमिया एवेनामे त्रण प्रतिमानेविषे जे होय ते कहेछे. ॥५७६॥

मूलः—नवरं वड्ढइ दत्ती, सहअठ्ठगनवगदसगवुड्ढीहिं ॥ चउसठ्ठीइक्कासी, सयंचदिवसाणिमासुकुमा ॥ ५७७ ॥ अर्थः—नवरंके० एटलुं विशेष जे इहां दात्ती ते वड्ढइ के० वधे ते आवीरीते के सहअठ्ठगके० आठका नवका ने दशका साथे जेम एनी वृद्धि तेम दातीनी पण वृद्धि थाय, तेमां आठमी प्रतिमाए छेला आठे दिवसे आठ आठ दाती लेवी, एम नवमनवमिकाए छेला नवे दिवस सुधी नव नव दाती लेवी तथा दसमदसमिकाए छेला दश दिवससुधी दश दश दाती लेवी. ॥५७७॥

हवे एनेविषे दिवसनी संख्या केटली थाय? ते कहेछे. आगो अठ्ठुं चोसठ दिवस अष्टअष्टमी प्रतिमानेविषे थाय. एम नवे नवे एक्याशी दिवस नवम नवमिका प्रतिमानेविषे थाय, अने दशम दशमिकाना एकशो दिवस पूर्णअनुक्रमे थाय. ए दात्तीनी संख्या सूत्रकारे अंतगमदशांगने अभिप्राये कहीछे. त्यां पण एमज कह्युंछे, अने व्यवहार नाष्यना न्यायथी तो सित्तेर प्रमुख दिवस थायछे; अने दातीनी संख्या वृत्तिकारे एम कहीछे. सत्तसत्तमिआ ए पहेली प्रतिमाए एकशोने छन्नु दाती थाय, एम बीजीए बशेने अठ्ठाशी थाय, त्रीजीए चारशेने पांच थाय, चोथीए पांचशेने पच्चाश थायछे. अने ए चारे प्रतिमाना मली नवमास ने चोवीश दिवसनी संख्या थायछे, अने चउदशेने उगणचालीश दातीनी संख्या थायछे. यदुक्तं॥चउवीसदिवस अहिआ, नवमासासवइछदिवसाणि॥चउदसयागुण याला, दत्तीणं हवइ इहसंखा॥१

हवे वर्द्धमानआंबिल नामा तप बे गाथाए करी कहेछे. मूलः—एगाइयाणिआंबिलाणि इक्किक्कवुड्ढिमंताणि ॥ पर्यंतअभ्भत्तठाणि जाव पुन्नं सयं तेसिं ॥५७८॥ एयं आयंबिलवद्धमाण नामं महा तवच्चरणं ॥ वरिसाणि इछ चउदस, मासतिगं वीसदिवसाणि॥ ५७९ ॥ अर्थः—एक आदेदेइने आंबिल एकेक वृद्धिमंतके० वधता होय. इहां ए जावछे जे प्रथम एक आंबिल, पछी एक उपवास, पछी बे आंबिल वली एक उपवास, पछी त्रण आंबिल वली एक उपवास; एम वधतां छेहले एकसो आंबिल करीने तेने पारणे एक उपवास करे; एम सर्वमली एकशो उपवास थाय

अने पांच हजार ने पच्चाश आंबिल थाय. ए वर्द्धमानआंबिल नामा महातपनुं आसेवन करवुं; ते चउदवर्ष त्रण मास ने उपर वीश दिवसे पूर्ण थायछे.॥५७०॥

हवे गुणरत्नसंवत्सरनामा तप ते सात गाथाए करी कहेछे. मूलः–गुणरयण वच्छरंमि सोलसमासा हवंति तवचरणे ॥ एगंतरोववासा, पढमे मासंमि कायव्वा ॥ ५८० अर्थः–गुणरत्नसंवत्सर नामा तप ते सोल माससुधी आसेववुं, त्यां पहेला महीनानेविषे एकांतरे उपवास करवा. ॥५८०॥

मूलः–गायवं उक्कडआसणेण दिवसे निसाइ पुण निच्चं॥वीरासणिएण तहा,होअव्व मवावडेणंच॥५८१॥ अर्थः–गायवंके०रहेवुं, उकडू आसणे दिवसनेविषे अने वली रात्रीने विषे तो सदाइ वीरासणिके०वीरासने रहेवुं अने अप्रावृतके०वस्त्रेरहित थवुं.

मूलः–बीयाइसुमासेसुं, कुज्जाएगुत्तराइवुड्ढीए ॥ जा सोलसमेसोलस, उपवासा हुंति मासम्मि ॥ ५८२ ॥ अर्थः–हवे बीजा महीना प्रमुखनेविषे जे करवुं ते कहे छे. एकोत्तरादिकनी वृद्धिए उपवास करवा ते ज्यांसुधी सोलमे महीने सोल उपवास थाय त्यांसुधी करवा. इहां ए जावार्थ छे के पहेलामासे एक एक उपवास करीने उपर पारणु करीए, बीजा मासे बे बे उपवास ने पारणु, त्रीजा मासे त्रण त्रण उपवास ने पारणु करीए, चोथा मासे चार चार उपवासने पारणु करीए. तेवारें चोथा आखा महीनामां चोवीश उपवास ने छ दिवस पारणांना थायछे, एम मासेमासे चढताचढता उपवासने उपपारणु ते यावत् सोल मासपर्यंत करवा.

हवे उपवासनी संख्या अने दिवसनी संख्या ते अन्य कर्तृकी गाथाये देखाडे छे. उक्तंच ॥ पन्नरस वीस चउवीस चेव चउवीसपन्नवीसाय ॥ चउवीसएगवीसा, चउवीसासत्तवीसाय ॥ १ ॥ अर्थः–पन्नर, वीश, चोवीश, चोवीश, पचीश चोवीश, एकवीश चोवीश, सत्तावीश, ॥ १ ॥ उक्तंच ॥ तीसातित्तीसावय, चउवीसछव्वीसअछवीसाय ॥ तीसाबत्तीसाविय, सोल समासेसु तवदिवसा ॥ २ ॥ अर्थः–त्रीश, तेत्रीश, चउवीश, छवीश, अछावीश, त्रीश, ने बत्रीश. ए अनुक्रमे सोल महीना नेविषे एटला तपना दिवसो थायछे. ॥२॥ हवे पारणाना दिवसो महीना महीना आश्री कहेछे. उक्तंच ॥ पन्नरसदसछप्पं चचउरपंचसुयतिन्नितिन्नित्ति ॥ पंचसु दो दोय तहा, सोलसमासेसुं पारणगा ॥३॥ अर्थः–पन्नर, दश, आठ, छ, पांच, चार, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, त्रण, बे, बे, बे, बे, बे, ए सोल महीनानां पारणां जाणवां. जे महिने अष्टमादिक तपना दिवस पूराय नही तेवारे आगला महीनाना दिवसो लेवा. ॥ ३ ॥

हवे अनुष्ठान प्रकारे सर्व दिनमान कहेछे. मूलः—जं पढमगंमि मासे, तमणुट्ठाणं समग्गमासेसु ॥ पंचसयाइदिणाणं, वीसूणाईइमम्मि तवे ॥५७३॥ अर्थः—जे प्रथममासनेविषे अनुष्ठान कह्युं तेहज अनुष्ठान समग्रमासनेविषे थाय. पांचशे दिवस वीशे उणा, तेवारे चारशे एंसी दिवस ए गुणरयणसंवत्सरतपनेविषे थायछे. इहां गुणरत्न एवुं नामसार्थकज छे परंतु निरर्थक नथी, केमके निर्ज्जरादिक जे गुण—तद्रूप जे रत्न—ते जेनेविषेछे; माटे गुणरत्नसंवत्सर ते सत्रिहाइ संवत्सरे एटले एक संवत्सरने तेना उपर वली एक संवत्सरनो त्रीजो भाग एटले बधा मली सोल महीने पूर्ण थाय. तेथी गुणरयणसंवत्सर कहीए. ॥ ५७३ ॥

हवे प्रवचनरूप समुद्र ते अपारछे, त्यां जे तप कह्यांछे तेपण घणां कह्यांछे, अने तेना आसेवनार पण खंदक प्रमुख पुरुष विशेष घणा सांभलीए छइए, ते जूदा जूदा केटला कहिए? परंतु दिशि मात्र देखाडीने हवे शेष तपो विशेषनुं अतिदेश कहीएछैए.

मूलः—तह अंगोवंगाणं, चिइवंदणपंचमंगलाईणं ॥ उवहाणाइ जहाविहि, हवंति नेयाणि तह समया ॥५७४॥ अर्थः—तथा शब्द समुच्चयने अर्थेछे, अंग जे आचारांगादिक अने उपांग जे उववाई प्रमुख,चैत्यवंदना,इरियाविहि,शक्रस्तव, स्थापना, अरिहंतनी स्तवना, नामार्हंतनी स्तवना, श्रुतस्तव, सिद्धस्तव रूप पंचमंगलादिकना उपधानादिक,आदि शब्द थकी अनेरा पण तपना विशेष जे छे ते जे विधिए होय ते सर्व सिद्धांत थकी जाणवा. एम त्रेसठ गाथाए करी तपना भेद वखाण्या, तथा विधिप्रपाते योगविधि तपोरत्नमालिका, इत्यादिक शास्त्रांतरथकी अनेरां तपो जाणवां. ॥ ५७४ ॥ इति गाथा त्रिषष्टिकार्थ ॥

अवतरणः—पायालंकलसति एटले पाताल कलशनी वक्तव्यतानुं बशेने बहोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—पण नउइ सहस्साइं, उगाहित्ताचउद्दिसिं लवणं ॥ चउरो लिंजरसंठाण संठिया हुंति पायाला ॥ ५७५ ॥ अर्थः—लवणसमुद्र बे लाख योजन विस्तारेछे, ते लवणसमुद्रनी चारेदिशाए जंबुद्वीपनी जगतिथकी पंचाणु हजार योजन अवगाहिए, त्यां बहु मध्यदेशे चार आलिंजरके० महोटुं मटकुं—तेना संस्थाने संस्थितके० रह्यांछे, एवा चार पातालकलश होयछे. ॥ ५७५ ॥

हवे ए चारेनां नाम ने ठींकरी एनुं जाडपणु कहेछे. मूलः—वलयामुहकेयूरे जुयगे तह ईसरेय बोधवे ॥ सव्ववईरायाणं, कुड्डाएएसिदससइया ॥५७६॥ जोयणसहस्सदसगं, मूले उवरिंच होइ विच्छिन्ना ॥ मझ्झेयसयसहस्सं, तित्तियमित्तंच उगाढा ॥५७७॥ अर्थः—एक वलयमुख अथवा वडवामुख, बीजुं केयूर, त्रीजुं युतक, तेम

चोथुं इश्वर एवे नामे चार कलशछे. ते बोधव्वा के० जाणवा. सर्व वज्ररत्नमय एवी एनी ठींकरी ते हजार योजन जाडी छे; एनुं प्रमाण कहेछे. एक प्रदेशनी श्रेणीथकी विष्कंन्ने वधतां वधतां मूलमां अने उपरे दश हजार योजन, एम वधतां वधतां मध्यविचाले शतसहस्र एटले लाख योजन प्रमाण, अने तित्तियमित्तंके० तेटली मात्राए लाख योजन प्रमाण नूमिकामांहे ऊगाढके० खूत्याछे. उपरे पण दश ह जार योजनने विस्तारे छे. ॥५७६॥५७७॥

हवे एने आश्रित देवो जे छे तेमनी स्थिति अने तेमनां नाम कहेछे. मूलः—पलि उवमहिईआ, एएसिं अ हवईसुराइणमो ॥ कालेयमहाकाले, बेलंबपन्नंजणेचेव ॥ ॥५७८॥ अर्थः—एक पल्योपमनी स्थितिना धरनार एना अधिपति ते इणमोके० हवे कहीए बैए. तेमां पूर्वदिशाए काल, दक्षिणदिशाए महाकाल, पश्चिमे बेलंब, अने उत्तरे प्रन्नंजन. ए पाताल कलशाना धणी जे चार देवता छे तेमनां नाम कह्यां

हवे लघुपाताल कलशानी वक्तव्यता कहेछे. मूलः—अन्ने विय पायाला, खुड्डालिं. जरगसंतिआ लवणे ॥ अठसया चुलसीआ, सत्तसहस्साय सवेसिं ॥५७९॥ अर्थः—अ नेरा पण पाताल कलशछे ते खुड्डके० न्हाना आलिंजरके० मटका तेना संस्थाने लव ण समुद्रनेविषे छे. इहां ए नावजे जेम पंचाणुहजार योजन जंबुद्वीपनी जगती थकी आघा जइये तेम लवणसमुद्रनी जगतिथकी पण पंचाणुहजार योजन उ रहां आवीए; त्यां वचमां दशहजार योजन विस्तारे चक्रवाल प्रदेशे महोटा क लश कह्या. ते बेहुने आंतरे वली न्हाना कलशछे एटले ए चारे कलशाए जेटली नूमिका रुंधी छे ते मूकीने वचमां सर्व सातहजार आठशेने चोराशी कलशा छे. हवे एनी नव पंक्ति महोटा कलशाना मुखथकी बीजा मुखसुधी छे, तेमां पहे ली पंक्तिए बशेने पन्नर, बीजी पंक्तिए बशेने शोल. एम परिधि जेम जेम वधे ते म तेम एकेक कलश पण पंक्तिए वधे; ते ज्यांसुधी नवमी पंक्ति त्यांसुधी बसेंने त्रे वीश थया. ए नवे पंक्तिनो सरवालो करतां एकेक महोटा कलशनेविषे उगणीशे ने एकोत्तर कलश थायछे. ए चार कलशे करी चउगुणा कर्याथी पूर्वोक्त सात ह जार आठसेने चोराशी थाय.ए न्हाना कलशोना अधिपति जे देवता, तेमनी आयु स्थिति अर्द्ध पल्योपम होयछे. ॥ ५७९ ॥

हवे एना विस्तारनुं प्रमाण कहेछे. मूलः—जोयणसयविछिन्ना, मूलुवरिं दससयाणिमझंमि ॥ उगाढायसहस्सं, दसजोयणियायसिंकुड्डो ॥५८०॥ अर्थः—महोटा जे चार कलशा कह्या तेथकी ए न्हाना कलशा शोमा अंशे होय, तेवारे शो योजन

ने विस्तारे मूळे अने उपरे छे, तथा एक हजार योजन विचाळे; एम नूमिमांहे ह जार योजन अवगाढ छे, अने दश योजननी कुड्डोके० ठींकरी जाणीछे. ॥५५०॥

हवे समस्त कळशनेविषे वायुप्रमुखनी स्थिति कहेछे. मूळः—पायालाणविनागा, सवाणवि तिन्नितिन्नि बोधवा ॥ हिठिमनागे वाऊ मझेवाऊअउदगंच ॥५५१॥ उव रिं उदगं नणिअं, पढमगबीएसु वाउसंखुन्निउ ॥ उड्डंवामे उदगं, परिवढइ जलनि ही खुन्निउ ॥५५२॥ अर्थः— सर्व पाताळ कळशाना त्रण त्रण विनाग बोधवाके० जाणवा. त्यां महोटा पाताळ कळशा तेने एकने नागे तेत्रीश हजार त्रणसे ते त्रीश योजन अने एक योजननो त्रीजो नाग उपर, अने न्हाना कळशने त्रणसे तेत्रीश योजन अने उपर एक योजननो त्रीजो नाग, एटली जग्यामां समस्त कळ शोनेविषे अनेक प्रकारना वायु संमूर्छाएछे, अने क्षोन पण पामेछे. जेम मनुष्या दिकना उदरमां श्वास वात संमूर्छेछे अने क्षोन पण पामेछे, तेम त्यांपण जे वारे महोटा कळशानेविषे वायु क्षोन पामे तेवारे जगना स्वनावथकी न्हाना कळ शानेविषे पण वायु क्षोन पामे, अने ते वारे वेळी, गाउ गाउ उंची वधे. एम समस्त कळशानेविषे पूर्वोक्त त्रण नागमांहेला हेठला नागनेविषे वायु होय अने मझे के० विचला नागमां पूर्वोक्त योजनना प्रमाणनेविषे वायु अने जळ होय; तथा उ परला त्रीजा नागनेविषे केवळ पाणी नणियंके०कह्युं छे. पहेला नाग अने बीजा नागनो वायु जेवारे खोन्यो एटले उछल्यो थको उड्ढंके० उंचो चाले तेवारे पाणीने वमेके० नाखे तेथी जळनिधिके०समुद्र पण क्षोन्यो थको समुद्रनुं जळ पण वधे.५५२

हवे उपशमे वाये जे थाय ते कहेछे. मूळः—परिसंठिअंमि पवणे, पुणरवि उदगं तमेव संठाणं ॥ वड्ढेइ तेण उदही, परिहा यणु कमेणंवा ॥५५३॥ अर्थः—परिसंस्थि तके० वळी समस्त प्रकारे वायु उपशमे तेवारे वळी तेहीज उदक तेज संस्थाने ते फरी कळशामांहे पाछुं प्रवेश करे; ते कारण माटे अनुक्रमे करी हियमान तथा वधे त्यारे जळ क्षोन पामे ते अहोरात्रे नियत काळे बे वखत अने पक्षमांहे चतुर्दशी प्रमुख तिथीनेविषे पण अनुक्रमेकरीने वृद्धि हानी थाय. ॥५५३॥ इति गाथा सप्तकार्थः.

अवतरणः—आहारगसरूवंति एटले आहारक शरीर करे तेना स्वरूपनुं बशो ने तहोतेरमुं द्वार कहेछे. मूळः—समउ जहन्नमंतर, मुक्कोसेणं तु जावछम्मासा ॥ आहारसरीराणं, उक्कोसेणं नवसहस्सा ॥५५४॥ अर्थः—आहारक शरीर एकवार की धुं अने वळी कार्यना वशथकी करे तो जघन्यथी एक समयनो आंतरो पडे, अने उत्कृष्ट तो ज्यां लगे छमहीना अने जीवसमासमांहे वरस पृथक्त्व कह्युं

छे ते मतांतर जाणवुं. आहारक शरीरवाला करनार उत्कृष्टे सम काले नव हजार लज्यमान थाय. अने जघन्यथी एक बे त्रण होय; ॥ ५९४ ॥

हवे संसारमां वसतो जीव जेटला वखत आहारक शरीर करे ते कहेछे. मूलः चत्तारिय वाराउ, चउदस पुव्वीकरेइ आहारे ॥ संसारंमि वसंतो, एगनवे डुन्निवाराउ ५९५ अर्थः—चार वखत चउदपूर्वनो धारक मुनिराज आहारक शरीर करे. शेष श्रुतना धरनारने ए आहारक शरीर करवानी शक्ति न होय, तेथी चउदपूर्वधरनुं ग्रहण कर्युं, अने संसारमां वसतो एक जवनेविषे बे वखत आहारक शरीर करे. हवे आन्हियतेके० प्रयोजनना वशथकी करीए, नवुं शरीर नीपजावीए ते आहारक कहीए.

तेथी तेज प्रयोजन देखाडेछे. मूलः—तित्थयररिद्धिदंसणछमडोवगहणहेउंवा संसयवुछेयछं, गमणं जिणपायमूलंमि ॥ ५९६ ॥ अर्थः—समस्त लोकने आश्चर्यनी उपजावणहार अष्ट महाप्रतिहार्य प्रमुख श्री तीर्थंकरनी रुद्धि ते जोवाने अर्थे आश्चर्य उपन्याथका अथवा तेवा तेवा नवा अर्थ तेना लेवाने कारणे अथवा कोइ एक अति गहनार्थनो संदेह उपन्ये थके तेनो निश्चे करवाने अर्थे कोइएक महाविदेहनो वासी श्री वीतरागना चरणकमलने आगल आहारक शरीर करी पहोंचे, पछी जगवंतने देखी समस्त पोतानुं कार्य कीधे छते वली ते पूर्व प्रदेशे जे औदारीक शरीर थापणनीपरे मूक्युं हतुं ते, पोताना प्रदेशनी जालीबद्ध तेज अवस्थाए थको मागी लीधेला उपकरणनीपरे आहारक शरीर मूकी मूलगा प्रदेशना समूहनेविषे प्रवेश करे. एना प्रारंज अने मूकवाना कालसुधी अंतरमुहूर्त्त जाणवुं, ॥५९६॥ इति गाथा त्रयार्थ ॥

अवतरणः—देसाअणारियत्ति एटले अनार्यदेशोना नामोनुं बसें ने चुमोत्तेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—सगजवणसबरबब्बर, कायमुरुंडुडगोणपक्कणया ॥ अरवागहोणरोमय, पारसखसखासिआ चेव ॥ ५९७ ॥ डुंबिलयलउसबुक्कस, जिल्लंधपुलिंद कुंचजमररूआ ॥ कोपावचीणचंचुअ, मालवदविडाकुलछाय ॥५९८॥ केक्कयकिरायहयमुह, खरमुहगयतुरयमिंढपमुहाय ॥ हयकन्नागयकन्ना, अन्नेवि अणारिया बहवे ॥ ५९९ ॥ पावायचंमकम्मा, अणारियानिग्घिणा निरणुतावि ॥ धम्मुत्तिअरकराइ, सुइणेविनजक्कणताए ॥ ६०० ॥ अर्थः—शकदेश, यवनदेश, शबरदेश, बाबरदेश, काय, मुरुंम, उड्ड, गोण, आख्यानक, हुण, रोमक, पारस, खस, कौशीक, डुबिल, लकुश, बुकस, जिल्ल, अंध्र, पुलिंद, कौंच, च्रमररुची, कपोत, चीण, चंचुक, मालव, द्रविम, कुलार्थ, कैकेय, किरात, हयमुख, खरमुख, गजमुख, तुरंगमु

ख, सिंहमुख, हयकर्ण, गजकर्ण, ए सिवाय बीजा पण अनार्य आयातके० एय एटले धर्म थकी जे दूर थया एटले आर्य थकी विपरीत ते अनार्य जाणवा. ए अपेय वस्तुना पान करनार, अभक्ष्यना भक्ष करनार, अगम्य गमनना करनार. शास्त्रमांहे जे निषेध एवी वेष भाषा आचारादिकना करनार एवा अनार्य देश ते बहुवेके० घणाछे, वली ते केवाछे? तोके महा पापना करनार, प्रचंड रौद्रकर्मने विषे तत्पर एवा अनार्य निग्घणाके० अत्यंत निर्दय, पाप करीने पछी अनुताप न करे, जेने धर्म एवा अक्षर पण सांभल्यामां आव्या नथी. इतिगाथाचतुष्टयार्थः ॥

अवतरणः—आयरियदेसत्ति एटले आर्य देशोना नामोनुं बसेने पंचोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—रायगिहमगह चंपा, अंगा तह तामलित्तवंगाया ॥ कंचणपुरं कलिंगा, वाणारसिचेवकासीआ ॥६०१॥ अर्थः—एक राजगृहनगर ने मगधदेश, बीजी चंपानगरी ने अंगदेश, तेमज त्रीजी तामलिप्तानगरी ने वंगदेश, चोथुं कांचनपुरनगर ने कलिंग देश, पांचमुं वाणारसीनगर ने काशीदेश. ॥६०१॥

मूलः—साकेय कोसलागय, पुरंच कुरुसोरियं कुसट्टाय ॥ कंपिल्लंपंचालं, अहिछत्ता जंगला चेव ॥ ६०२ ॥ अर्थः—छट्ठी साकेतनगरी ने कोशलदेश. सातमुं गजपुरनगर ने कुरुदेश, आठमुं सौरीपुरनगर ने कुशावर्त्तदेश, नवमी कंपिलनगरी ने पंचालदेश, दशमी अहिछत्ता नगरी ने जंगलदेश. ॥६०२॥

मूलः—बारवईय सुरट्ठा, महिल विदेहाय वच्छकोसंबी ॥ नंदिपुरं संडिल्ला, भद्दिल पुरमेव मलयाय ॥ ६०३ ॥ अर्थः—अग्यारमी द्वारावतिनगरी ने सोरठदेश, बारमी मिथुलानगरी विदेहदेश, तेरमी कोसंबीनगरी ने वच्छदेश. चउदमुं नंदनपुरनगर ने शांडिल्यदेश, पन्नरमुं भद्दिलपुरनगर ने मलयदेश. ॥ ६०३ ॥

मूलः—वइराड मच्छ वरुणा, अच्छा तह मुत्तियावइदसन्ना ॥ सुत्तीमईयचेई, वीयभयं सिंधुसोवीरा ॥६०४॥ अर्थः—सोलमुं मच्छनगर ने वैराटदेश, सत्तरमी वरुणनगरी ने अच्छदेश, अढारमी मृत्तिकावतीनगरी ने दशार्णदेश, उगणीशमी शुक्तिमतिनगरी ने चेदिदेश, वीशमुं वीतभयनगर ने सिंधुसौवीरदेश. ॥ ६०४ ॥

मूलः—महुराय सूरसेणा, पावा भंगीयमासपुरिवट्टा ॥ सावत्थी अकुणाला, कोडी वरिसं च लाढाय ॥६०५॥ अर्थः—एकवीशमी मथुरानगरी ने सूरसेनदेश, बावीशमी पापानगरी ने भंगीदेश, त्रेवीशमी मासपुरीनगरी ने वर्त्तदेश, चोवीशमी श्रावस्तिनगरी ने कुंणालादेश, पचीशमुं कोटीवर्षनगर ने लाटदेश. ॥ ६०५ ॥

मूलः—सेयंवियायिनयरी, केइय अद्धं च अयरियं भणियं ॥ जत्थुप्पत्तिजिणाणं,

चक्कीणं रामकिण्हाणं ॥ ६०६ ॥ अर्थः—पढी श्वेतंबिकानगरी ने कैकेयदेश, ए अर्द्ध आर्यदेश कह्योछे, ज्यां जिनके० तीर्थंकर, चक्रवर्त्ति, बलदेव, वासुदेव प्रमुख उत्तम पुरुषोनुं उपजवुंछे ते आर्यदेश जाणवा. ते साडीपचीश देशछे तेमनां नाम कह्यां. ए बहुश्रुत संप्रदाए प्रमाणछे, अने आवश्यकनी चूर्णिमां एवी व्यवस्था कहीछे के जे जुगलीआना खेत्रे हकारादि नीतिथाय ते आर्य, एटले जरतखेत्रवर्त्ति तेहज आर्य अने उपलक्षणथकी महाविदेहना अंतवर्त्ति विजय मध्य खंडादिकनेविषे छे ते पण आर्य जाणवा. ॥ ६०६ ॥ इति गाथा षट्कार्थ ॥

अवतरणः—सिद्धएगतीसगुणत्ति एटले सिद्धना एकत्रीशगुणोनुं बशेने छोतेरमुं द्वार कहेछे. मूलः—नवदरसणंमि चत्तारिआउए पंचआइमे अंते ॥ सेसे दोदो जेया खीणनिलावेणइगतीसं ॥ ६०७ ॥ अर्थः—नवदर्शनावरणीयना जेद, चार प्रकारनुं आयु, पांच प्रकार ज्ञानावरणीयना, पांच प्रकार अंतके० छेल्लुं जे अंतरायकर्मछे तेना जाणवा. शेष थाकता चारकर्म. तेमां वेदनीयना बे जेद, अने मोहनीय ते दर्शन तथा चारित्र मोहनीयरूप बे प्रकारे, अने नामकर्म ते शुज अशुज नाम रूप, तथा गोत्रकर्म ते उंच नीच गोत्ररूप. ए सर्व मली एकत्रीश जेद थाय. ते जेवारे क्षीण अजिलाष ए.बधाने क्षीण शब्द धुरे आपीने बोलीए एटले क्षीण चक्षुदर्शनावरणीय, क्षीण अचक्षुदर्शनावरणीय एम सर्वत्र कहेवुं. ते ज्यांसुधी क्षीण नीच गोत्र कहिए त्यांसुधी एकत्रीश गुण सिद्धना थायछे. ॥ ६०७ ॥

अथवा प्रकारांतरे वली बीजा पण सिद्धना एकत्रीश गुण कहेछे. मूलः—पडिसेहणसंठाणे यवन्न गंध रस फास वेएय ॥ पण पण डुपणहतिहा, एगत्तीसमकाय संग रुहा॥६०८॥अर्थः—एटलानो प्रतिषेध करवा थकी एटले तेमां एक लांबो, बीजो वाटलो, त्रीजो पहोलो, चोथुं त्रिखुणु, पांचमु चउखुणु ए पांचतो संस्थान जाणवां अने गंध बे, कृष्णादिक वर्ण पांच, रस पांच, स्पर्श आठ, वेद त्रण, ए अठावीशनो निषेध करवाथी अठावीश गुण उपन्या. उगणत्रीशमुं अकाय ते शरीररहितपणु, त्रीशमु असंग ते स्वजनादिके रहितपणु, एकत्रीशमुं अरु के० जन्मेकरी रहित, ए एकत्रीशगुण श्री आचारांगमांहे संस्थानादिक एमज कह्यांछे. यडुक्तं सेनदीहे न वट्टे नतंसे इत्यादिक एटले ए सिद्धना एकत्रीशगुण कह्या.ए सिद्धना एकत्रीश गुणोनुं प्रतिपादक द्वार कहेवा थकी अत्यंत मंगल शिष्य प्रशिष्यादिकने अविछेदादिकनुं कारण कर्युं, ए अंत मंगलिक कहीने बशेने बहोतेरमुं द्वार समाप्त कर्युं. ॥६०८॥

हवे ए प्रकरणनो करनार पोताना वंश प्रकटन पूर्वक पोतानुं नाम देखाडतो वली ए प्रकरणनेविषे कारण अने पोताने अनुद्धतपणुं कहेनार थको एवुं कहेछे.
मूलः—धम्मधरुद्धरणमहा,वराह जिणचंदसूरिसीसाणं ॥ सिरिअम्म एवसूरीण पाय पंकयपराएहिं ॥६०ए॥ सिरिविजयसेनगणहर; कणिठ जसदेवसूरिजिठेहिं ॥ सिरिने मिचंदसूरिहिं सविणयंसिस्सजणिएहिं ॥६१०॥ अर्थः—धर्म जे श्री वीतराग देवनो नापित तेज जीवा जीवादिकना धरवाथकी धरा जे पृथ्वी तेनुं उद्धरणके० विना शने परिहारे यथावस्थितपणे राखवुं. त्यां महावराह समान श्री जिनचंदसूरि तेना शिष्य श्री अम्रादेवसूरि तेना चरणकमलना पराग समान ॥ ६०ए ॥ श्री विजयसेन नामा गणधर ने न्हाना श्रीयशोदेवसूरि तेना महोटा गुरुनाइ एवा श्रीनेमिचंद्र सूरि तेणे सविनयपणे पोताना शिष्यना कथन थकी. ॥६१०॥

मूलः—समयरयणायराउ; रयणाणंपिवसमुद्धराइं ॥ निउणनिहालणपुवं; ग हिउं संजत्तएहिंवा ॥ ६११ ॥ अर्थः—समय जे सिद्धांत तेज अलब्धपारपणा थकी रत्नाकरके० समुद्र कहीए, ते सिद्धांतरूप समुद्र थकी रत्ननीपरे जेम समु द्रमांथी रत्न लइए तेम सिद्धांतरूप समुद्रथकी अर्थे करी सहित बशेने बोत्तेर द्वार निपुणमतिपूर्वक लेइने संयात्रिकके० नाखुदानी परे. ॥ ६११ ॥

मूलः—पवयण सारुद्धारो, रइउसपरा विबोह कज्जंमि ॥ जं कंचि इह अजुत्तं' बहुस्सुआ तं वि सोहंतु ॥ ६१२ ॥ अर्थः—ए प्रवचन सारोद्धार रच्यो सारके० प्रधान पद तेनो उद्धारके० एकठा करीने रचना कीधी. पोताने तथा बीजाने अ वबोधने अर्थे द्वारने अनुक्रमे करी प्रवचनना प्रधान पदने एकठा कस्याछे. इहां जे कांइ अयुक्त कहेवाणु होय ते बहुश्रुत गीतार्थ विसोहंतुके० शोधजो. शो धीने निर्दोष करजो. ॥ ६१२ ॥

हवे जे वात जेम थवानी होय ते तेमज थाय तोपण नला आशयथकी फल छे. तेथी नला अर्थने विषे आशंसा करवी. एवुं देखाडवाने अर्थे आशंसाकहेछे.
मूलः—जावजइं जुवणत्तय, मेयंरवि ससिसुमेरुगिरिजुत्तं॥ पवयणसारुद्धारो, तावनंदउ बहु पढिज्जंतो ॥ ६१३ ॥ अर्थ.—ज्यांलगे स्वर्ग मृत्यु ने पाताल लक्षण ए त्रण जुवन जयवंत वर्ते, एने केवे सूर्य चंद्रमा ने सुमेरु पर्वत समस्त ने मध्यवर्त्ति सुदर्शननामे मेरुपर्वत तेणेकरी सहित ते ज्यांलगे जयवंता वर्त्ते त्यां लगे ए प्रवचन सारोद्धार प्रकरण ते नंदउके० सर्व समृद्धि पामो. बहु घणा एवा

जे साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका तेमणे जणतो थको उपलक्षणथकी जणाव तो थको चिंतवतो थको सांजलतो थको समृद्धि पामो. ॥ ६१२ ॥ इतिगाथार्थः.

अथ प्रशस्ति.

अर्हं॥विनिहितदोषः सततं, नव्यव्रजवारिजातकृतबोधः॥ गोजिःसकलपदार्थप्रकट यिता जयति वीररविः ॥ १ ॥ गौतमसुधर्ममुख्याः प्रख्या आसन्गणाधिपा गुरवः ॥ तत्क्रमवर्ती श्रीजिनचंद्रश्चंद्रइतियुगप्रवरः॥२॥तस्मिन् गणपे विजयिनि दिल्लीनाथप्रबो धतपनिष्ठे॥ श्रीमति जिनसिंहाजिध सूरिवरे जयति युवराज्ये ॥ ३ ॥ श्रीमत्सागर चंद्रसूरयइतिख्याताः क्षितौ धीधनाः पंचानां परमेष्ठिनामिह चये प्राप्तास्तृतीये पदे॥ दत्तं श्रीजिनजद्रसूरिसुगुरोः सूरेः पदं यैरजूत्तेषां शुद्धगुणान्वये विजयिनो व्यक्ता इमेज ज्ञिरे ॥ ४ ॥ श्रीमद्विराजःसुंदयो दयोदयासागरावराविडुषां ॥ श्रीज्ञानमंदिराव्हास्त्र योप्यमी वाचकवतंसाः ॥ ५ ॥ श्रीदेवदेवतिलकोपाध्यायाश्चक्रवर्तिनोऽज्ञानां ॥ त च्छिष्यानूचानाः श्रीमंतो विजयराजाव्हाः ॥ ६ ॥ वाचंयमजननिकरे कोटीरसमाः स मागमार्थज्ञाः त–च्छिष्यपद्ममंदिरगणिरर्थप्रदीपमिमं ॥ ७ ॥ बालावबोधमकरोदवि बुधबोधाय निजकविवृध्यै ॥ यदशुद्धमत्रकिंचित्तज्ज्ञैःशोध्यं घृणावद्भिः ॥ ८ ॥ सुगुण गणिकनकसारोमेहाजलसाधुसाधुरिणमल्लौ ॥ लिखनसुशोधनकर्मण्येते साहाय्यक र्तारः ॥९॥ विषमपदार्थः पूर्वं साहहमीरोपरोधतश्चक्रे ॥ ततएतर्हि समग्रोप्यर्थनया लेखि साध्वीनां ॥ १० ॥ वर्षेशशिबाणरसात्रिदृग्जमाने सहःसिते पक्षे ; लक्ष्मीघस्त्रे वारेगुरौ च पूर्णीकृतोग्रंथः ॥ ११ ॥